राजकुमार सिद्धार्थ
से
तथागत बुद्ध

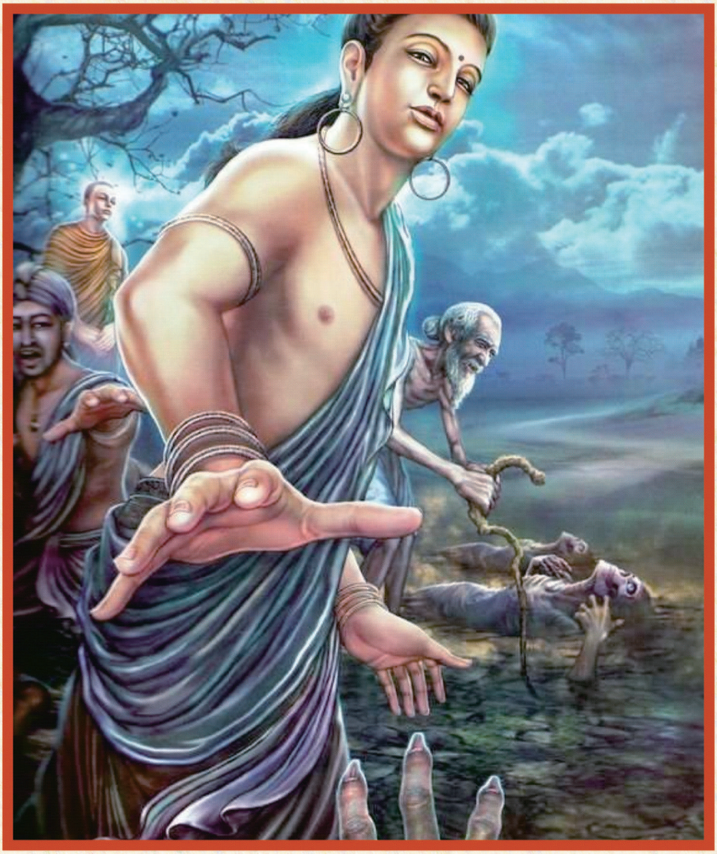

चार निमित्त देखना (बुढ़ापा, रोगी, मृतशरीर और श्रमण)

कन्थक अश्व के मदद से चन्न के साथ राजकुमार सिद्धार्थ
अनोमा नदी पार करते हुए

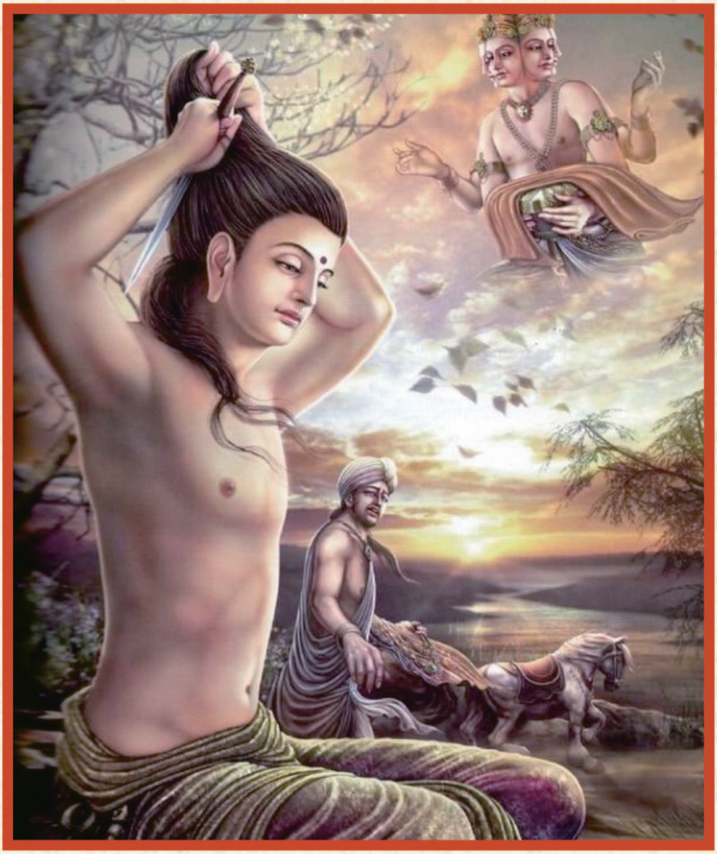

नेरंजना नदी के किनारे सिद्धार्थ बोधिसत्व
द्वारा अपना केशाछेदन

बुद्ध गया जैश्री महाबोधि के नीचे मार दिव्य पुत्रियाँ
तन्हा, रति, राग तीनों द्वारा बुद्ध की तपस्या
को भंग करने की कोशिश करना

वाराणसी ऋषिपत्तन मृगदाय (सारनाथ) में पंचवग्गीय
शिष्यों को धम्मचक्क पवत्तन सूत्र की देशना

राजकुमार सिद्धार्थ से तथागत बुद्ध

रचना एवं संकलन

सद्धर्म कीर्ति श्री देवानन्दाभिदान त्रिप्तिटकाचार्य

पूज्य भन्ते डॉ. डी. रेवत महानायक महाथेर

(चीफ संघनायक ऑफ इण्डिया,
संरक्षक महाबोधि सोसाइटी ऑफ इण्डिया)

एवं

श्री मनोज कुशवाहा (अधिवक्ता)

(कानूनी सलाहकार महाबोधि सोसाइटी ऑफ इण्डिया)

The Corporate Body of the Buddha Educational Foundation
11F., 55, Sec.1, Hang Chow South Road , Taipei, Taiwan, R.O.C.
Tel: 886-2-23951198 , Fax: 886-2-23913415
Email: overseas@budaedu.org
Website:http://www.budaedu.org
This book is for free distribution, it is not for sale.
यह पुस्तिका विनामूल्य वितरण के लिए है बिक्री के लिए नही ।

प्राक्कथन

जानकारी के अभाव के कारण किसी सर्वज्ञ बुद्ध की जीवन कहानी पूर्ण रूप से कहने का अधिकार किसी सर्वज्ञ बुद्ध को छोड़कर और किसी भी अन्य व्यक्ति को नहीं है क्योंकि सर्वज्ञ बुद्ध बनने के लिए सारासंख्यकल्पलक्ष्य दस पारमिता, दस उप पारमिता तथा दस परमत्त पारमिता इस प्रकार तीस पारमिताएँ पूर्ण करना अनिवार्य होता है । दस पारमिताएँ इस प्रकार हैं—1) दान, 2) शील, 3) नैष्क्रम्य, 4) प्रज्ञा, 5) वीर्य, 6) क्षान्ति, 7) सत्य, 8) अधिष्ठान, 9) मैत्री और 10) उपेक्षा ।

बोधिसत्व सिद्धार्थ भारतवर्ष में ही पैदा हुए और बुद्धत्व भी भारतवर्ष में ही प्राप्त किया । राजा धर्माशोक के समय में पूरा भारतवर्ष बौद्धमय हो गया था। लेकिन कर्मकाण्ड के माध्यम से जीवनयापन करने वाले कुछ स्वार्थी तत्त्वों के कारण एवम् कुछ सत्ता लोभी राजाओं के कारण भारतवर्ष से बौद्ध धर्म का पतन हो गया। इसके विपरीत करुणा, मैत्री, समानता व मध्यम मार्ग की देशना करने वाले भगवान बुद्ध का धर्म भारत से बाहर बहुत तेजी से फैला है । अभी भी अफ्रीका, अमेरिका जैसे देशों में इसका प्रचार-प्रसार सही ढंग से हो रहा है ।

बुद्ध का जन्म जम्बूद्वीप में होने पर भी बहुत से जम्बूद्वीप वासियों को बुद्ध-धम्म-संघ (त्रिरत्न) के बारे में वर्तमान में सही जानकारी नहीं है। उदाहरण स्वरूप कई लोगों के मन में सवाल उठता है और वे प्रश्न करते हैं कि राजकुमार सिद्धार्थ ने अपनी पत्नी (यशोधरा) और अपने पुत्र (राहुल) को चुपचाप छोड़कर रात में ही अपना महल क्यों छोड़ दिया ? यह धारणा (बात) बिल्कुल गलत है । गृहत्याग से पहले राजकुमार सिद्धार्थ ने अपने पिताजी राजा शुद्धोदन एवम् अपनी भार्या (पत्नी) यशोधरा से इस विषय पर कई बार बातें की थीं । अपनी पत्नी यशोधरा से पहले से ही अनुमति ले रखी थी । उस दिन रात्रि में यशोधरा एवम् अपने पुत्र राहुल की नींद में व्यवधान नहीं डालने के उद्देश्य से उन्होंने परदा हटाकर दोनों को सुख की नींद में सोया देखा और प्रसन्न मन से राजमहल से निकल पड़े।

किसी-किसी ग्रन्थ में पढ़ने को मिलता है कि राजकुमार सिद्धार्थ ने शाक्य-कोलिय युद्ध से घबराकर गृह त्याग दिया । यह कथन भी सरासर गलत है । राजकुमार सिद्धार्थ ने संसार में बुद्धत्व प्राप्त करने के लिए ही बोधिसत्व के रूप में कई जन्मों में दान आदि पारमिता को पूरा किया था। किसी के युद्ध से, किसी के जल के बँटवारे से राजकुमार सिद्धार्थ का कोई लेना-देना नहीं था।

अधिकांश लोग समाज में बिना पढ़े, बिना विचार-विमर्श किये अपना मत प्रकट कर देते हैं । इससे कितना बड़ा नुकसान होता है इस पर कोई कभी विचार नहीं करता है । इस ग्रन्थ में राजकुमार सिद्धार्थ से तथागत बुद्ध की जीवन कहानी पाठकों के लिए बिना सन्देह पैदा किये पढ़ने के लिए तैयार की गयी है । इस ग्रन्थ को तैयार करते समय थेरवाद परम्परा के सुप्रसिद्ध अग्गमहापण्डित भन्ते आनन्दमैत्री द्वारा रचित बुद्ध चरित एवम् शाक्य सिंहावदान को प्राथमिकता दी गयी है । इसके अलावा बौद्धधर्म के महायान सम्प्रदाय के द्विव्यावदान का भी अध्ययन करना पड़ा है । धम्मानन्द कोशाम्बी द्वारा रचित भगवान् बुद्ध, महापण्डित राहुल सांकृत्यायन रचित बुद्धचर्या, आचार्य भीमराव अम्बेडकर द्वारा सम्पादित भगवान् बुद्ध और उनका धर्म, सूत्रपिटक की जातक कहानियाँ, दीघनिकाय, मच्छिमनिकाय, व ललित विस्तर ग्रन्थों का अध्ययन करना पड़ा है । विशेष रूप से वियतनाम के भिक्षु थिक तंग हंग द्वारा रचित ओल्ड पाथ व्हाइट क्लाउड्स का भरपूर उपयोग किया है । बुद्धघोष द्वारा रचित संस्कृत बुद्धचरित से कुछ अंश इस ग्रन्थ में इसलिए नहीं लिये गये हैं क्योंकि भारतवर्ष में ज्यादातर बौद्धावलम्बी थेरवाद परम्परा के हैं ।

मैंने अपने भिक्षु जीवन में भारतवर्ष में बौद्ध धर्म के विकास के लिए बोधिसत्व अनागारिक धर्मपाल द्वारा स्थापित महाबोधि सोसाइटी ऑफ इण्डिया के माध्यम से यथाशक्ति सेवा की है । भारतवर्ष के बौद्ध जनों के लिए मेरे जीवन की यह सबसे बहुमूल्य कृति है । उत्तम कार्य कर इस ग्रन्थ को प्रस्तुत करने में मैं हर्ष महसूस कर रहा हूँ ।

त्रिरत्न के प्रति अत्यन्त श्रद्धा रखने वाले महाबोधि सोसाइटी ऑफ इण्डिया, सारनाथ केन्द्र के कानूनी सलाहकार नवयुवक मनोज कुशवाहा ने इस कार्य के लिए हमें पूर्ण सहयोग दिया है । अगर ये मेरे साथ नहीं होते तो यह उत्कृष्ट कार्य कभी सम्पन्न नहीं हो पाता ।

महाबोधि सोसाइटी ऑफ इण्डिया के वर्तमान अध्यक्ष मेरे कल्याण मित्र देसोपसंग दोरजे प्रारम्भ से इस उत्कृष्ट कार्य के लिए हमें प्रेरणा देते रहे हैं । परम पूजनीय डॉ० बोदागम चंडिमा भंते, ताइवान के प्रधान संघनायक ने इस महान कार्य के लिए समय पर चर्चा करके हमें प्रोत्साहित किया है, उनके सहयोग के लिए मैं उन्हें साधुवाद देना चाहता हूँ । इस महान कार्य को पूरा करने के लिए ताइवान के The Corporate Body of the Buddha Educational Foundation का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ । समय-समय पर इस ग्रन्थ के बारे में विचार-विमर्श करके सही मार्ग दर्शन देने के लिए अवकाश प्राप्त मुख्य आयुक्त, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, सीमा शुल्क एवं सेवाकर अधिकारी (भारत सरकार) कल्याण मित्र हृषीकेश शरण साहब को मैं हृदय से साधुवाद देना चाहता हूँ ।

समय पर टङ्कण जैसे श्रमसाध्य कार्य को अशोक कुमार मौर्य, वाराणसी ने अत्यधिक मनोयोग पूर्वक करके हमें पूर्ण सहयोग दिया है ।

इस सद्धर्म के महान कार्य में तन-मन-धन से सहयोग देने वाले सभी सहयोगियों एवं धर्म बन्धुओं को त्रिरत्न के आर्शीवाद से दीर्घायु, निरोगी, सम्पत्तिवान एवं समृद्धिवान होने की प्रार्थना करता हूँ ।

भवतु सब्ब मंगलम्

भन्ते डॉ० डी० रेवत नायक महाथेर
प्रधान संघनायक ऑफ इण्डिया,
संरक्षक महाबोधि सोसाइटी ऑफ इण्डिया,
महाबोधि सोसाइटी ऑफ इण्डिया,
मूलगन्ध कुटी विहार, सारनाथ, वाराणसी - 221007
मो० : 9936408000 (Whatsapp No.), 9140916251

विषयानुक्रमणिका

परिच्छेद	पृष्ठांक
1. महासम्मत राजा किसको कहते हैं ?	1-5
2. लुम्बिनी महारानी के नाम से राजा सुप्रबुद्ध एक उद्यान तैयार किया	6-8
3. संसार में तीन कोलाहल	9-11
4. आसितदेव ऋषि और दसशील	12-15
5. चारों दिशाओं में हर्षोल्लास	16-18
6. 108 वेद-वेदांग ब्राह्मणों को राजा शुद्धोदन का निमन्त्रण	19-24
7. तीन महल	25-32
8. चन्न ! यह क्या है ?	33-40
9. प्रार्थना पूर्ण होने के बाद हम लोगों को देखने अवश्य आना	41-49
10. एक सप्ताह बाद चन्न घुड़सवार राजमहल में वापस आया	50-52
11. इसके आगे और कुछ होगा	53-55
12. कान से निकलने वाले वायु को भी बन्द किया	56-60
13. पराजित होने से अच्छा रणभूमि में मर जाना है	61-66
14. कई दिनों से साफ न किये हुए वर्तन के जैसा मन क्लेश से भरा हुआ महसूस होना	67-70
15. सिद्धार्थ ! इस स्थान से उठो, यह स्थान मेरा है	71-73
16. कर्म के अनुसार पुनर्जन्म	74-80
17. बिना रुके अनवरत संसार में उत्पत्ति और मरण का सामना किया	81-87
18. पाकड़ पेड़ के नीचे महातपस्वी	88-94
19. प्रथम महासमागम	95-106
20. अपने मित्र के बारे में सोचते रहने के कारण यक्ष सेनापति सातागिरि बुद्ध का धर्म नहीं समझा	107-113
21. अपनापन का मोह छोड़ने से क्लेश दूर होता है	114-116
22. प्रथम त्रिशरण-शरणागत उपासक-उपासिका	117-120
23. बुद्ध और बौद्ध भिक्षुओं के उपर दोषारोपण	121-122

परिच्छेद	पृष्ठांक
24. बुद्ध का प्रतिउत्तर गीत	123-125
25. किराये का वेश्या	126-131
26. बारह लाख परिषदों का बुद्ध के शरण में आना	132-135
27. संसार का सत्य खोजते हुए घर से निकले हुए दो नवयुवक	136-142
28. मरने के पहले अपने पुत्र को देखने की इच्छा	143-150
29. राजा शुद्धोदन द्वारा देवी यशोधरा की बात को बुद्ध तक पहुँचाना	151-155
30. राजमहल में भोजन ग्रहण करना	156-161
31. वैशाली नगर का तीन भय	162-167
32. नन्द ! अब तुम्हारा इरादा क्या है ?	168-173
33. तुम्हारा आयु बहुत थोड़ी बची हुई है	174-185
34. पाँच सौ राजकुमार बुद्ध की सेवा में	186-193
35. एक अतिसुन्दर दिव्यांगना को प्रकट करना	194-200
36. अण्डा, चूजा और चिड़ियों को मारकर खाने का कर्मफल	201-209
37. एक नौकरानी द्वारा राजपरिवार को धर्मदेशना करने का साहस	210-219
38. उज्जैनी नगर कशाय वस्त्रधारी बौद्धभिक्षुओं से चमकना	220-225
39. शक्र देवेन्द्र द्वारा पुण्यानुमोदना करने का बुद्ध से आग्रह	226-232
40. एक बुनकर कन्या भी निर्वाण लाभ प्राप्त कर सकती है	233-240
41. नवकोटि लाख मूल्य की हार श्रावस्ती जेतवनाराम में भूलना	241-246
42. बुद्ध का दर्शन नहीं होने से लोगों का दुखी होना	247-258
43. गलत व्यक्तियों के संगत से गलत कार्य ही होता है	259-275
44. गृहपति होश में आ जाओ	276-284
45. एक हजार सोने के सिक्के के लालच में धर्मश्रवण	285-294
46. पिताजी हमें माफ कीजिए	295-301
47. जिस घर में किसी की मृत्यु न हुई हो, उस घर से एक मुट्ठी सरसों का बीज ले आना	302-311
48. प्रेतों द्वारा गंगा नदी (वाराणसी में) के किनारे अपने द्वारा किये हुए पापकर्म को बुद्ध और जनता के सामने बताना	312-337
49. अचानक बाढ़ द्वारा राजा विरूढ़क एवं उनके सेना को बहा ले जाना	338-341

परिच्छेद	पृष्ठांक
50. बिना नॉव के सहारे नदी को पार करना	342-348
51. अधिक भोजन करने से व्यक्ति की मृत्यु	349-352
52. शक्र देवेन्द्र द्वारा बुद्ध की सेवा	353-354
53. अरहत सारीपुत्त का परिनिर्वाण कार्तिक पूर्णिमा को	355-387
54. भूकम्प पैदा होने की आठ अवस्था	388-391
55. महापरिनिर्वाण के लिए परिनिर्वाण आसन पर लटना	392-398
56. सर्वज्ञ मृत शरीर का दाहसंस्कार करना	399-400
57. सर्वज्ञ धातु का बटवारा	401-402
58. बुद्ध का तुरित और अतुरित चारिका	403-408
• महाकारुणिक तथागत बुद्ध का वर्षावास का स्थान	409
• भगवान बुद्ध का महासमागम	410
• सामान्य देशना समागम	411
• अस्सी महाश्रावक	411-413
• विशेष स्थान पाने वाले भिक्षु (अपने अध्यात्मिक शक्ति के अनुसार)	413-414
• अपने प्रज्ञा के अनुसार विशेष स्थान प्राप्त भिक्षुणि	414-415
• अपने विशेषता के अनुसार पदवी लाभी उपासक लोग	415
• विशेष पदवी लाभी उपासिका	415-416
• बुद्ध चरित्र से सम्बन्ध रखने वाले विशेष पूर्णिमा	416
• बुद्ध शासन में सबसे ज्यादा आयु प्राप्त करने वाले	417
• पुरातन जम्बूद्वीप (वर्तमान भारत)	417-448
• बौद्ध भारत की धार्मिक स्थिति एवं उस समय के प्रसिद्ध छः गुरुओं का दर्शन	449-470
• सूर्यराज परम्परा	471-472
• शक्य राजवंश	473
• माता का परम्परा	474
• राजकुमार सिद्धार्थ का जन्मकुण्डली कौमार नाडीशास्त्र के अनुसार	475

परिशिष्ट

उपग्रन्थ	476-509
आश्रित ग्रन्थ	510

परिच्छेद - 1

महासम्मत राजा किसको कहते हैं ?

शाक्य वंश

संसार में इंसान के शुरूआती दौर में कोई राजा-महाराजा का उल्लेख नहीं मिलता है । धार्मिक जीवन जीने वाले लोग स्वयं अपने समाज को सम्भालते थे । शुरूआती दौर में समाज में प्राणघात, चोरी, बेईमानी, झूठ बोलना, परस्त्री गमन, कटु शब्द बोलना, नशा में लीन रहना जैसे अकुशल कर्मों से दूर रहते थे । जाति-कुल, ऊँच-नीच, भेद-भाव से दूर रहकर धार्मिक जीवन एवं सम्पन्न जीवन व्यतित करते थे ।

इसी प्रकार से ज्यादा दिन बीत गये, लेकिन धीरे-धीरे समाज के अन्दर प्राणघात, चोरी, परस्त्रीगमन, झूठ बोलना, नशीले पदार्थों का सेवन जैसे अकुशल कर्म करना समाज के लोगों ने शुरू कर दिया ।

इसी तरह अकुशल कर्म होने से समाज की सुरक्षा के लिए एक मुखिया की आवश्यकता महसूस होने लगी । सभी लोगों ने मिलकर बहुत चर्चा के बाद एक योग्य सर्वगुण सम्पन्न शुरवीर व्यक्ति को अपने मुखिया के रूप में सर्वसम्मति से मनोनित किया । सबकी सहमति से नियुक्त होने के कारण मुखिया को महासम्मत के नाम से पुकारा जाने लगा या जाना जाने लगा। दान, प्रियवचन, अर्थचर्या समानात्मता जैसे चार संग्रह वस्तु अपना कर आम जनता की सुरक्षा, उन्नति सुनिश्चित करने के कारण राजा के नाम से जाने जाते थे ।

महासम्मत राजा के देहान्त के बाद उसका सुपुत्र रोज राजकुमार सिंहासन पर विराजमान हुआ । उसी परम्परा के अनुसार वररोज, कल्याण, वर कल्याण, उपोषक, मघान्तु, वर, उपचर, चेतिय, मुचल, मुचलिन्द, सगर, सागर, हरथ, भगीरथ, रूची, सुरुची, प्रताप, महाप्रताप, प्रनाद, महाप्रनाद, सुदर्शन, महासुदर्शन, नीरु, महानेरु, अच्छीमन्तो क्रमशः जम्बू द्वीप पर शासन किये । इसी राजाओं में से कोई राजा कुशावतीनगर को अपना राजधानी बनाया, कोई राजा अपनी राजधानी मिथिला, कोई राजा वाराणसी,

कोई राजा अपनी राजधानी राजगीर को बनाया, कोई राजा अयोध्या को अपना राजधानी बनाकर राज्य किया । तत्पश्चात् पृथ्वी पर इंसानों की संख्या अधिक होने से कई प्रान्त राज्य बन गये । हजारों राजाओं से समन्वित महासम्मत परम्परा का महेश्वर सेन नामक एक राजा ने वाराणसी को अपना राजधानी बनाकर राज्य किया । उसका एक राजकुमार कर्निक अपने पिताजी के देहान्त के बाद पोतली प्रदेश को अपना राजधानी बनाकर वहाँ राज्य किया । उसके दो पुत्र हुए, उसका बड़ा पुत्र गौतम राज्य की सम्पत्ति छोड़कर जंगल में जाकर कृष्ण नामक एक तपस्वी के संगत में आ गया । उनको भी दो पुत्र हुए, सूर्य उदय के समय पैदा होने के कारण उसे सूर्य के नाम से जाना जाता था । ईख (इठसुक गन्ना) प्रदेश में पैदा होने के कारण उसे ईक्षवाकू वंश के नाम से जाना जाता था । ये दोनों राजकुमार से दूसरा राजकुमार इक्षवाकू राजा के नाम से पोतली प्रान्त का राजा बन गया । इक्षवाकू राजवंश को सूर्यवंश के नाम से भी, गोत्र, परम्परा के अनुसार जाना जाता था । इसी परम्परा के इक्षवाकू नाम से तीन राजा थे । इन तीनों में तीसरा राजा इक्षवाकू विरुढ़क के नाम से जाना जाता था। उसी राजा के प्रथम रानी से उल्कामुख, करकर्ण, हस्तीन, मक्र के नाम से चार पुत्र व पाँच पुत्रियाँ थी।

[संस्कृत ग्रन्थों में पाँचों पुत्रियाँ विभिन्न या अलग-अलग रानियों से है । पालि अट्ठकथा में पाँचों पुत्रियाँ महारानी की ही है, का उल्लेख मिलता है । लेकिन संस्कृत ग्रन्थ का उल्लेख तर्कसंगत हैं ।]

विरुढ़क इक्षवाकू राजा अपनी रानी के देहान्त के बाद फिर से विवाह किया । उसी महारानी से एक पुत्र पैदा हुआ, उसका नाम जन्तु कुमार रखा। बालक राजकुमार बहुत सुन्दर था । उसे देखकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ और रानी से बोला कि आप जो माँगिये मैं आप को देने के लिए तैयार हूँ । रानी बोली कि मैं समय आने पर माँग लुँगी, यह कहकर बात को टाल दिया। जन्तु कुमार जब जवान हुआ तब रानी ने राजा के पास जाकर उनके द्वारा दिये गये वचन को याद दिलायी तो राजा ने पूछा कि बताओं तुम्हें क्या चाहिए । तब रानी बोली कि अब हमारा राजकुमार जवान हो गया है उसे आप राजगद्दी सौंप दीजिए । राजा ने पहले से ही वादा किया था इसलिए राजा ने अपने वचन से मुकरा नहीं लेकिन विचार किया कि यदि जन्तु कुमार को राजगद्दी सौप दिया तो बाकि चार राजकुमारों का क्या होगा । बाद में चारों राजकुमार को गुपचुप तरिके से अपने पास बुलाकर कहीं दूर जाकर रहने को कहा ।

चारों राजकुमार राज्य छोड़कर जाने को तैयार हो गये । उन सभी राजकुमारों के पाँचों बहनें भी बोली कि जिस जगह हमारे भाई लोग जायेंगे उन्हीं लोगों के साथ हम सभी बहनें भी जायेगी और सभी उस राज्य से एक साथ निकल गये । अपने राजकुमार व राजकुमारी को नगर छोड़कर जाने की बात सुनकर नगरवासी भी नगर छोड़कर अपने सामान के साथ, राजकुमारों के साथ चल दिये । राजकुमार लोग सोचे कि यदि हम लोग किसी दूसरे राज्य में जायेंगे तो वहाँ पर हमारे पिताजी का अपमान होगा । इसलिए वे लोग हिमालय की तरफ चले गये । रास्ते में कपिल नामक एक सुप्रसिद्ध मुनि के आश्रम में पहुँच गये । मुनि से मिलकर पूरा बात करने के बाद कपिल मुनि ने बोला कि इस तरफ एक जय भूमि है उसी जगह पर आपलोग कोई नगर बसायेंगे तो बहुत शक्तिशाली प्रशासक का जगह हो जायेगा । कपिल ऋषि अपना स्थान राजकुमारों को देकर दूसरी जगह जाकर अपना एक आश्रम बना, मिलकर एक छोटा-सा नगर बसाया । उस नगर का बहुत सुन्दर ढ़ग से निर्माण किया । राजकुमारों में सबसे बड़े राजकुमार में सबसे बड़े राजकुमार उल्खामुख को अपने राजा के रूप में स्वीकार किया । बाकि राजकुमारों को युवराज, सेनापति जैसे सम्मानित पदों से सुशोभित किया । राजा उल्खामुख के साथ बाकि राजकुमारों का शादी-विवाह होने का समय आ गया । लेकिन उस प्रदेश में उन लोगों के गोत्र के अनुसार कोई शादी करने लायक योग्य व्यक्ति नहीं मिला । दूसरे जाति में शादी करने से अपने वंश का पतन होगा ऐसा राजकुमारों ने सोचा । कपिल-मुनि के पास जाकर इसके समाधान के लिए विचार विमर्श किया । कपिलमुनि के आदेशानुसार अपने साथ आयी हुई पाँच राजकुमारियों में से जेष्ठ (बड़ी) राजकुमारी को माँ का दर्जा दिया और बाकि चारों को अपनी-अपनी राजकुमारी के रूप में स्वीकार कर विवाह कर लिया ।

[वो पाँचों राजकुमारियों और चार राजकुमार एक ही माता के सन्तान नहीं थे । चार राजकुमारों की माता अलग थी और पाँचों राजकुमारियों की भी माता अलग थी । इसलिए कपिलमुनि ने कहा कि समाज की रिति के अनुसार यह गलत नहीं होगा ।]

कुछ समय बीतने के बाद जेष्ठ राजकुमारी को कुष्ठ रोग हो गया । यह कुष्ठ रोग शरीर पर फैलने वाला कुष्ठ रोग था । इसलिए राजा ने एक सुरक्षित स्थान पर एक गुफा बनाकर महारानी को उसी गुफा में रखकर सभी सुविधाओं से सम्पन्न कर दिया ।

एक दिन रात को एक बाघ आया और उसे मनुष्य का गंध लगने से उसने गुफा के पास आकर दरवाजे को खटखटाया तो रानी ने घबराकर जोर-जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया जिससे बाघ घबराकर भाग गया । उसी समय (काल) में ही वाराणसी का राजा राम को भी बहुत भयानक कुष्ठ रोग हो गया था । रामराजा ने भी अपना राज्य अपने पुत्रों को देकर वह भी हिमालय की तरफ चले गये । हिमालय पर जाने के बाद उसको एक बहुत बड़ा पेड़ मिला, जहाँ वह रहने लगे और जंगल के फल-फूल खाने लगे इस कारण उसका कुष्ठ रोग ठीक हो गया । जिस समय महारानी बाघ से घबराकर चिल्लायी । वह आवाज रामराजा को सुनायी दिया। तब उसने सोचा कि जाकर देखते हैं कि मामला क्या है ? यह सोचकर रामराजा उस स्थान पर चले गये । जब वहाँ पर उसने महारानी को देखा तो देखने के बाद उससे पूछा कि तुम्हारा परिचय क्या है ? तब महारानी ने बताया कि मैं एक महारानी हूँ । यह जानकर रामराजा ने अपना परिचय वाराणसी का राजा राम बताया । तब रानी ने सोचा कि यदि राजा है तो क्षत्रिय लोगों के बारे में सब कुछ जानते होंगे इसलिए महारानी के अन्दर जो शंका थी वह दूर हो गयी । फिर रामराजा जो कुछ खाते थे उसे महारानी को भी खाने के लिये दिया । जिससे महारानी का भी कुष्ठ रोग ठीक होने लगा। कुष्ठ रोग ठीक होने के साथ ही उनका रूप-यौवन भी देखने लायक हो गया । राजा राम उसके साथ अपने विवाह के तरीक से रहने लगे । रामराजा का पुत्र अपने पिता को खोजने के लिए राजपुरुषों को वाराणसी से हिमालय पर भेजा । राजपुरुषों ने देखा कि राजा का कुष्ठ रोग एक दम ठीक हो गया है । उसके बाद राजा का पुत्र अपने पिता जी के पास जाकर बोला कि आप वाराणसी आकर अपने राज्य का भार सम्भाल लिजिए । राम राजा ने बोला कि अब हमें राज्य भी नहीं चाहिए और नहीं हमें राजगद्दी चाहिए। राजा ने कहा कि यह पेड़ कटवाकर यहाँ पर हमको रहने के लिए कोई बन्दोबस्त करवा दो । राजकुमार अपने राजपुरुषों से छोटा-सा नगर बनावा दिया । राजा जिस पेड़ के खोल में रहते थे उस पेड़ को खोल पेड़ के नाम से जाना जाता था । उसी पेड़ के नाम की वजह से उस स्थान को कोलिय नाम से जाना जाने लगा । बाघ (व्याघ्र) के कारण वह स्थान व्याघ्रवाद के नाम से प्रसिद्ध हुआ । कालान्तर में वह पूरा प्रदेश एक समृद्ध प्रदेश का स्वरूप ले लिया । सभी लोग उस प्रदेश को कोलिय राज्य के नाम से जानते थे । रामराजा के परम्परा से आने के कारण इन लोगों को कोलिय वंश के नाम से जाना जाता था ।

विरुढ़क राजा अपने पुत्र-पुत्रियों का हाल-चाल जानने के लिए कभी-कभी अपने राजपुरुषों को कपिलवस्तु भेजते थे । राजपुरुषों ने आकर राजा को बताया कि सभी राजकुमार अपनी बहनों के साथ शादी करके अपनी जिन्दगी बहुत सुन्दर ढ़ग से बिता रहे है । राजा ओक्काक यह खबर सुनकर बहुत खुश हुआ । राजा खुश होकर बोला कि हमारे बच्चे अपनी परम्परा बनाये रखने के लिए सक्षम है । उसी समक्ष शब्द से शाक्य शब्द निकला है । कपिल वस्तु राजा ओक्काक शाक्य वंश परम्परा के राजा लोगों के नाम से जाना जाने लगे ।

स्वल्प काल में कपिलवस्तु शाक्य राजकुमार राजकुमारियों का कोलिय वंश के साथ अपना आवाह-विवाह स्थापित किया । इसके कारण कपिल वस्तु प्रदेश एक विशाल राज्य का स्वरूप ले लिया । एक तरफ से अचीरवती नदी तक राज्य फैल गया । शाक्य और कोलिय दोनों राज्यों के बीच से रोहिणी नदी बहती थी । उसी नदी के पानी से दोनों राज्यों का खेती-बारी अच्छी होती थी ।

पश्चात् काल में ओक्काक वंश के राजा लोग (जन्तुकुमार राजा के परम्परा के लोग) कोशल देश से श्रावस्ती नगर को ही अपना राजधानी बना लिया। श्रावस्ती के ही ओक्काक परम्परा के राजा लोग अन्य गोत्र के स्त्रीयों से विवाह करने के कारण शाक्य परम्परा के राजा लोग कोशल के राज्य परम्परा को निम्न स्तर का समझने लगे ।

परिच्छेद - 2

लुम्बिनी महारानी के नाम से राजा सुप्रबुद्ध एक उद्यान तैयार किया

महासम्मत सूर्य वंश से प्रारम्भ शाक्य राज्य की परम्परा अलग न होकर सदियों तक कायम रहा। कोलिय राज्य के कोलिय वंश भी ऐसे ही हुआ। पश्चात् समय में शाक्य वंश का जैसेन नामक एक शक्तिशाली राजकुमार कपिलवस्तु का राजा बन गया। उस समय कोलिय देश में देउदाहपुर में देउदाह शाक्य के नाम से एक राजा हुआ करता था। जैसेन राजा को सिंहहनु नामक एक पुत्र और यशोधरा नामक एक राजकुमारी थी। जैसेन राजा के देहान्त के बाद सिंहहनु राजकुमार शाक्य देश का राज्य प्राप्त किया। देउदाह शाक्य का शाक्य लोगों के कंचन कुमारी के साथ उसका विवाह हो गया। कोलिय राज्य के देउदाह शाक्य का देहान्त होने के बाद उसका पुत्र अंजन (महासुप्रबुद्ध) राजा हो गया। महासुप्रबुद्ध सिंहहनु राजा की बहन यशोधरा के साथ विवाह कर लिया। सिंहहनु शाक्य राजा को चार पुत्र शुद्धोदन, शुक्लोधन, दोतोदन व अमितोदन पैदा हुए और शुद्धा, शुक्ला, द्रोणा व अमृता के नाम से चार राजकुमारीयाँ थी।

देउदाह में एक सेठ का एक बहुत अच्छा उद्यान था जिसका नाम शोभना था। राज्य परिवार के लोग भी उसी उद्यान में शैर करने के लिए जाते थे। एकदिन महासुप्रबुद्ध राजा अपनी रानी के साथ उसी उद्यान में भ्रमण करने के लिए गये। उस उद्यान के मनोरम दृश्य से वशीभूत होकर राजा ने उस उद्यान को अपने अधिन लेने की इच्छा व्यक्त किया। उन्होंने यह बात राजा को बताया। राजा सेठ को बुलाकर उससे उस उद्यान को खरीदने की इच्छा व्यक्त किया। लेकिन सेठ ने राजा की इस योजना को सहमति प्रदान नहीं किया। राजा अपना रंग दिखाकर देउदाह के समीप एक महावन को साफ-सुथरा कराकर सेठ के शोभना वन से भी ज्यादा सुन्दर एक उद्यान बनवाया। उस उद्यान को रानी के नाम से लुम्बिनी रखा और उसे रानी को समर्पित किया। महासुप्रबुद्ध राजा को लुम्बिनी रानी से बहुत

सुन्दर दो बेटियाँ हुई । जेष्ठ पुत्री को अतिसुन्दर होने के नाते उसको माया के नाम से जाना जाता था । तीन साल के बाद और एक सुन्दर राजकुमारी उत्पन्न हुई । प्रथम जेष्ठ राजकुमारी महामाया गौतमी के नाम से नामकरण किया गया । महासुप्रबुद्ध राजा ज्योतिष विषय के पारगंत ब्राह्मणों को बुलाकर दोनों राजकुमारियों की जन्मतिथि के अनुसार भविष्य के बारे में पूछ-ताछ किया । ज्योतिष ब्राह्मणों ने राजा को बताया कि दोनों राजकुमारियों में से कोई एक चक्रवर्ती राजकुमार को जन्म देने की योग्यता रखती है । ब्राह्मणों की ज्योतिष के अनुसार दूसरी राजकुमारी यानी माया गौतमी कई बच्चों की माँ हो सकती का संकेत दिया । यह बात सुनकर महासुप्रबुद्ध राजा दूसरी राजकुमारी को प्रजावती गौतमी के नाम से दूसरा नाम दिया । बाद में दूसरी राजकुमारी प्रजापती/प्रजावती राजकुमारी के नाम से प्रसिद्ध हुई ।

शुद्धोदन राजकुमार

सिंहहनु राजा के सन्तान में जेष्ठ राजकुमार शुद्धोदन रूप-सम्पत्ति शूरवीर व तेजस्वी होने के कारण अन्य लोगों से अलग दिखाई देता था। और विशिष्ठ भी हुआ । राजकुमार शुद्धोदन युद्ध कला में भी प्रवीण हो गया । एक बार शाक्य राज्य के एक प्रान्त में कुछ बगावत शुरू हो गया। उस समस्या को हल करने के लिए राजा सिंहहनु अपने राजकुमारों से विचार-विमर्श किया, लेकिन शुद्धोदन राजकुमार को छोड़कर बाकि सभी राजकुमार पीछे हट गये । लेकिन राजकुमार शुद्धोदन उसी प्रान्त में जाकर समस्या को हल कराकर अपने प्रिय राजा के सामने उपस्थित हुआ । राजा सिंहहनु राजकुमार शुद्धोदन से बहुत प्रभावित होकर बोला कि जो तुम माँगोगे हम देने के लिए तैयार है । राजकुमार शुद्धोदन प्रजावती रानी के बारे में ब्राह्मणों द्वारा की गयी भविष्यवाणी को सुन चुका था । सुनकर राजकुमार ने यह चेष्टा किया कि कभी भी हमारी शादी होगी तो ये दोनों राजकुमारियों से ही होगी ।

[पूरातन समय में अंगशास्त्र के नाम से प्रकट एक शास्त्र ब्राह्मण परम्पराओं में प्रचलित था । अंगशास्त्र पुरुष लक्षण विद्या के अनुसार जीवन के भविष्यफल को बताते थे । प्रजावती गौतमी को बहुत से बच्चों की माँ होने की भविष्यवाणी का उल्लेख के अनुसार पश्चात् समय में भिक्षुणी बनकर हजारों भिक्षुणियों का माँ जैसा स्थान लिया ।]

अपने पिता जी के वरदान के बारे में सोचकर राजकुमार शुद्धोदन अपने मामा के दोनों राजकुमारियों के साथ शादी करा देने का अनुरोध किया । एक विशेष कारण को छोड़कर शाक्य वंशिक राजा लोगों को एक से ज्यादा रानी को रखने की अनुमति प्रदान नहीं था । राजा सिंहहनु राज्य सभा को बुलाकर राजकुमार शुद्धोदन की इच्छा का विचार-विमर्श किया । राज्य सभा भी राजकुमार शुद्धोदन से विचार विमर्श करने के बाद दोनों राजकुमारियों के साथ शादी करने की अनुमति प्रदान किया । राजा सिंहहनु राजा अंजन को सन्देश भेजवाकर दोनों की सहमति से दोनों राजकुमारियों की शादी राजकुमार शुद्धोदन से करवा दिया । साथ ही साथ राजा ने राजकुमार शुद्धोदन को युवराज की पदवी से सुशोभित किया ।

सिंहहनु राजा के देहान्त के बाद शुक्लोधनादी सहोदर भाइयों के साथ विचार विमर्श कर अमात्य मन्त्रीमण्डल की सहमति से राजकुमार शुद्धोदन को कपिलवस्तु के महाराजा के रूप में अभिषेक करवाया । राजा शुद्धोदन एक पुत्र चाहते थे जो एक चक्रवर्ती राजा हो । उसी के अनुसार धार्मिक व्रत, पूजा से अपने राज्य में राज्य किया ।

परिच्छेद - 3

संसार में तीन कोलाहल

कल्पकोलाहल, बुद्धकोलाहल, और चक्रवर्ती कोलाहल के नाम से संसार में तीन कोलाहल (महाउद्घोषण) होता है । कल्पविनाश के एक हजार साल पहले, कामावचर दिव्य लोक से एक देवता मनुष्य का रूप लेकर विखरे हुए बाल में, लालरंग का वस्त्र पहनकर रोते हुए चेहरे से इंसान के बीच आकर के बोला सज्जनों आज से एक हजार साल बीत जाने के बाद यह दुनिया नष्ट हो जायेगी । ब्रह्मलोक तक इसका विनाश होगा इसलिए तुम सभी मैत्री करो । करुणा, मुदिता, उपेक्षा जैसे शब्दों को अपने दैनिक जीवन में लाओ । माताजी को, पिताजी को, परिवार के बड़े लोगों व सम्मानित व्यक्तियों का सम्मान करो । पाँच अकुशल, दस अकुशल चिजों से दूर हो जाओ, ऐसी बातों को जोर-जोर से बोलते हुए जगह-जगह घूमता रहता था। इसको कल्पकोलाहल के नाम से जाना जाता है ।

सर्वज्ञ बुद्ध दुनिया में पैदा होने के एक हजार साल के पहले लोकपालक देवतागण मनुष्य का रूप धारण करके मनुष्य लोक में आकर बोले कि सज्जनों आज से एक हजार साल के बाद दुनिया में सर्वज्ञ बुद्ध का उत्पत्ति होना है । उसके दर्शन करने हो तो पाप कर्मों से दूर होकर पुण्य कर्मों में लिप्त होने की उद्घोषण करता है जिसे बुद्ध कोलाहल कहते हैं ।

चक्रवर्ती राजा के उत्पत्ति दोनों के 100 साल के पहले एक कामाबचर देवता मनुष्य का वेश लेकर मनुष्य लोक में आकर के बोला कि सज्जनों आज से 100 साल बीत जाने के बाद एक चक्रवर्ती राजा पैदा होगा । जो समस्त पृथ्वी को एक राज्य बनाकर सभी वाद-विवाद को दूर कर इंसान, पशु-पक्षी आदि सभी प्राणियों को शान्ति से जीने का प्रबन्ध करवायेगा । चक्रवर्ती राजा को देखने के लिए उत्सुक लोग पापकर्मों से दूर होकर कुशल कर्मों में लिप्त होने का आग्रह करते हैं । इसे चक्रवर्ती कोलाहल के नाम से जाना जाता है ।

देवयाचना

बोधिसत्व विवरण के बाद तुषित दिव्य लोक में एक देवता के रूप में पैदा हुआ। मनुष्य लोक में पैदा होने से पहले एक हजार साल पहले पुर्व उल्लेख किया हुआ बुद्धकोलाहल देव, मनुष्य व ब्रह्मलोक तक फैल गया। भविष्य में बुद्ध होने वाला उत्तम पुरुष कौन-सी जगह (स्थान) पर है उसको खोजना शुरू कर दिया गया। बोधिसत्व का तुषित दिव्य लोक में होने की सूचना मिला। एक हजार वर्ष नजदीक आते ही सभी देवतागण बोधिसत्व तुषित के पास जाकर बुद्धत्व के लिए मनुष्य लोक में पैदा होने का सही समय आने की सूचना दिये। बोधिसत्व तुषित ने तुरन्त जवाब नहीं दिया। अपने ढंग (तरीके) से निशब्द होकर काल, देश, दिप, कुल व माता या पाँच उत्तम कारण पूरा हुआ कि नहीं यह विचार अपने आप से किया।

काल—एक लाख से ज्यादा समय तक मनुष्यों की आयु होने से रोग मुक्त होने से दुख आदि संकट नहीं होने से अनित्य, दुख, अनात्म ये तृलक्षण (ये तीनों लक्षण) समझना आसान नहीं होता है। आयु सौ साल से कम होने से, राग-द्वेष ज्यादा होने से किसी भी धर्म के अनुसार कार्य नहीं करता है। उपदेश देने से भी पानी में खींचा हुआ लकीर पहले जैसे हो जाता है। इसलिए इन दोनों का समय बोधिसत्व विचार-विमर्श करने के बाद मनुष्य लोक में पैदा होता है। जिसे काल बोला जाता है। दूसरे महाद्वीप, द्वीप व देश के अनुसार से कौन-सी द्वीप में उत्पत्ति होना है उस द्वीप में रहने वाले लोगों (जनता) को शीलवान, गुणवान होना अनिवार्य है। जम्बूद्वीप (भारतवर्ष एशिया महाद्वीप) योग्य देश के हिसाब से जाना व माना जाता था उसी के अनुसार बोधिसत्व मनुष्य लोक में उत्पत्ति के लिए योग्य देश का चयन भी कर लिया।

कुल—समाज में कौन-सी कुल के लोगों को सबसे ज्यादा सम्मान मिलता है उसी कुल में पैदा होकर जाति-भेद पंचकाम सम्पत्ति के बारे में आदिनव में देशना करने से बहुत से लोगों के दिल व दिमाग के अन्दर बैठ जाता है। ऐसे लोगों का जीवन बहुत लोग पशन्द भी करते है। जम्बूद्वीप (भारत वर्ष) में उसी समय सबसे ज्यादा सम्पन्न धार्मिक राजा के रुप में शुद्धोधन राजा को जाना जाता था। माताजी के हिसाब से करुणा, मैत्री, शीलवान, गुण सम्पन्न माताजी के रूप से महामाया गौतमी को लिया। (काल, देश, दीप, कुल, मातृ)।

उसी के अनुसार कालदीप, देश, कुल, मातृ कुल पाँच महत्त्वपूर्ण कार्य पूरा होने से मनुष्य लोक में पैदा होने से पहले माँ की आयु दस मास सात दिन के अन्दर मनुष्य लोक में पैदा होने के लिए निर्णय लिया । पर सब निर्णय लेने के बाद तुषित दिव्य लोक में जाकर तुषित दिव्य लोक का नन्दन वन में एकत्रित होकर सभी देवता लोगों के अनुरोध के बाद मनुष्य लोक मैं पैदा होने के लिए अधिष्ठान कर लिया ।

(सभी देवलोक में नन्दन नाम से एक उद्यान होता है ।)

परिच्छेद - 4

असितदेव ऋषि और दसशील

आषाढ़ी पूर्णिमा

जम्बूदीप (भारतवर्ष) में प्राचीन काल से ही आषाढ़ी महोत्सव को विशेष रूप में ज्यादातर लोग मानते थे । बोधिसत्व तुषित दिव्य लोक में पैदा होने के एक सप्ताह के पहले से ही इसी उत्सव को धूम-धाम से मनाना शुरू कर दिया । आषाढ़ी पूर्णिमा के दिन सभी लोग सुबह उठने के बाद स्नान करके, साफ-सुथरा कपड़ा पहनकर पूजा करने के साथ-साथ उत्सव भी मनाते थे । राजा शुद्धोदन भी उसी तरह करते थे । सम्पूर्ण देश एक मंगल रूप ले लेता था । उस प्रकार से छः दिन बीत गये । प्रथम छः दिन में नक्षत्र के अनुसार समय बीत जाने के बाद सातवें दिन महामाया गौतमी स्नान करके गरीबों, याचकदीनों को खाना-पीना, वस्त्र आदि देने के बाद अपनी बहन प्रजापति गौतमी (प्रजावती गौतमी) के साथ राजमहल में रहने वाले राजसेविकाओं के साथ राजा के उद्यान में रानी असितदेव नामक एक ऋषि के पास गयी । उनके पास जाकर पूजा किया और तत्पश्चात् दस शील ग्रहण किया । राजमहल में आकर धर्म संवर व मैत्री भावना जैसे धार्मिक चारित्र के हिसाब से पूरा दिन बिताया । रात्रि होने के बाद जब सो जाने का समय हुआ तो रानी ने सोते समय दिनभर के अपने किये हुए धार्मिक कृत्यों को स्मरण किया । स्मरण करने के बाद जब रानी को नींद आया और सोते समय एक आश्चर्यजनक स्वप्न देखा ।

महामाया रानी का स्वप्न

रानी ने स्वप्न में देखा कि चारों दिशाओं का चार देवराज आ करके सयनाशन के साथ रानी को उठाकर हिमालय पर्वत पर ले गये । रानी को ले जाकर संगमरमर पत्थर के समतल मैदान में एक साखुआ के वृक्ष के नीचे रख दिया, रखकर एक तरफ हटकर देख रहे थे । उसके बाद देवता लोग आकर रानी को मानसरोवर (अनोतत्व) झील में ले जाकर सुगन्धित

पानी से स्नान कराकर साफ-सुथरा दिव्य वस्त्र पहनाया । वस्त्र पहनाकर एक स्वर्ण मन्दिर में ले गये । पश्चिम दिशा को सिर करके रानी को सुलाया । तत्पश्चात् एक सुन्दर छोटा सफेद हाथी रानी की तीन परिक्रमा करने के बाद उत्तर दिशा से एक सफेद कमल लेकर उनके शरीर के दक्षिण से गर्भाशय में प्रवेश किया । (3 अंक)

स्वप्न का अर्थ यही है कि बोधिसत्व तुषित दिव्य लोक से महामाया देवी के गर्भ में प्रतिस्थापित हुआ है । (अंक 4)

दूसरे दिन महारानी महामाया अपने स्वप्न के बारे में राजा शुद्धोधन को सूचित किया । राजा ने वेद-वेदांग में पारागंत 64 ब्राह्मणों को बुलाया और उनको भोजन कराकर वस्त्र आदि दान किया । उसके बाद देवी के स्वप्न के बारे में विचार-विमर्श किया । ब्राह्मणों ने बताया कि महाराज आपकी रानी के गर्भाशय में एक महापुण्यवान बच्चा पल रहा है जो पुत्र है । पश्चात् काल में यह चक्रवर्ती राजा होगा नहीं तो सर्वज्ञ बुद्ध होगा । माँ और बच्चा दोनों निरुपद, निरोगी सम्पन्न होंगे ।

लुम्बिनी यात्रा

रानी के गर्भ को दस महिना पूरा होने वाला था कि रानी ने अपने माता-पिता के पास जाने की इच्छा व्यक्त किया । देउदाह और कपिलवस्तु के बीच में रोहिणी नदी बहती है जिसके उस तरफ लुम्बिनी इस तरफ देहदाह था । (अंक 5)

आने वाले पूर्णिमा के दिन रानी महामाया का देउदाह जाने का समाचार (संदेशा) महाराजा शुद्धोदन ने एक राजदूत के माध्यम से राजा अंजन को भेजा । कपिलवस्तु से देउदाह तक रास्ते के दोनों तरफ सुन्दर ढ़ग से सजावट किया गया था । रानी को राज्यकर्मियों के साथ व क्षात्रिय कन्याओं के साथ बहुत बड़ा जुलूस के माध्यम से देउदाह को रवाना किया गया । रोहिणी नदी पार करने के बाद लुम्बिनी के समीप आ गये । देउदाह की तरफ से भी बहुत से लोग देवी महामाया के स्वागत में आये हुए थे। उस समय चारों तरफ लता, वृक्ष, फल-फूलों से भरा रहता था । जगह-जगह पर मोर, तोता, मैना जैसे पक्षियों की आवाज के साथ-साथ फूलों पर भनभनाते मधुमक्खियों से पूरा प्रदेश भरा हुआ था । मार्ग से आगे बढ़ते हुए जुलूस का देउदाह वासियों ने स्वागत किया । लुम्बिनी उद्यान का मनोरम

दृश्य देखने के बाद रानी महामाया ने उस उद्यान में सैर करने की इच्छा व्यक्त किया । अपने श्रीयान से उतर कर अपनी सेविकाओं के साथ उद्यान के चारों तरफ घुमकर इसके मनोरम दृश्य का आनन्द लिया । उसी उद्यान में फूलों से भरा हुआ एक साखुआ वृक्ष (सालवृक्ष-अंक 6) को देखकर रानी ने दाहिने हाथ से उसके एक डाल को पकड़ लिया ।

बोधिसत्व की उत्पत्ति

साल वृक्ष की डाली पकड़ते ही रानी को कर्मजवात सक्रिय हो गया। रानी ने प्रसव होने की सूचना अपनी सेविकाओं को दिया । राजपुरुषों को सूचना देने के बाद एक सुन्दर यान तैयार किया और उसे चारों तरफ से सुशोभित परदो से घिरवा दिया । थोड़ी देर के बाद रानी ने एक छोटे से बालक को जन्म दिया । (अंक 7) उस समय सूर्य के चारों तरफ वर्णवत चक्र घूम रहा था । उसके साथ-साथ 33 पूर्व निमित्त भी उत्पन्न हुआ । सारे संसार में एक शान्ति का वातावरण उत्पन्न हुआ । यह घटना कलियुग वर्ष 2478 वैशाख पूर्णिमा के दिन में हुआ है ।

मातांग पच्चेक बुद्ध का परिनिर्वाण

उस समय राजगृह में इसी गिरि पर्वत पर मातांग नामक प्रसिद्ध एक पच्चेक बुद्ध रहते थे, जो बोधिसत्व का दर्शन करने के लिए सभी देवता गण जाते थे । वे सभी देवतागण मातांग बुद्ध का दर्शन करने के लिए भी जाते थे । उन देवताओं से मातांग बुद्ध को पता चला कि भविष्य में बुद्ध होने वाले का जन्म हुआ है । तब पच्चेक बुद्ध अपनी आयु के बारे में स्मरण किया और उन्होंने देखा कि अपनी आयु समाप्त होने जा रहा है। तत्पश्चात् हिमालय पर्वत में महाप्रताप नामक एक पर्वत पर जाकर परिनिवार्ण को प्राप्त हो गये । इस अन्तर कल्प के आखिरी पच्चेक बुद्ध को मातांग पच्चेक बुद्ध के नाम से जाना जाता है ।

देव सन्नीपात

बोधिसत्व की उत्पत्ति के साथ-साथ देवतागण भी लुम्बिनी उद्यान में एकत्रित होना प्रारम्भ किया । इन देवता लोगों के बीच से धृतराष्ट्र, विरुढ़, विरुपक्ष, वैषवन चार दिशाओं के प्रमुख देवता लोग सोने के वस्त्र से बोधिसत्व का स्वागत किया ।

[महायान ग्रन्थों के अनुसार रानी के चारों तरफ रहने वाले परिवार और राजकिय सेविकाओं के उपर सम्यक दृष्टि देवता लोग आरुढ़ हो गये। बोधिसत्व उत्पन्न होते ही चलने पर सातों कदम पर कमल का फूल खिला और उत्पत्ति के साथ-साथ बात-चीत करने वालों के बारे में दुनियाँ ममें कई साक्ष्य उपलब्ध है । (अंक 10) एक सिंहनाद किया कि हम दुनियाँ में अग्र हूँ, मैं दुनिया का जेष्ठ हूँ, यह मेरा आखिरी जन्म है । फिर से मेरा कोई जन्म नहीं होगा ।]

सिद्धार्थ की उत्पत्ति के बाद कपिलवस्तु व देउदाह से एकत्रित हुए राजपरिवार के सभी लोग एक बहुत बड़ा जुलूस का आयोजन कराकर रानी महामाया को और बोधिसत्व को साथ लेकर कपिलवस्तु कुल में ले गये ।

परिच्छेद - 5
चारों दिशाओं में हर्षोल्लास

आसित ऋषि का आगमन

आसित ऋषि राजा सिंहहनु के पुरोहित थे जिससे महाराजा शुद्धोदन ने अपने वचपन में अध्ययन सीखा था । सिंहहनु राजा के देहान्त के बाद आसित ऋषि आसित देव संयासी हो गये । और संयासी होकर राजमहल के बाहर एक उद्यान था उसी उद्यान में रहकर ध्यान किया । ध्यान के फलस्वरूप (पंचविद्द) पञ्चविद्या—इर्दीविद्द ज्ञान, दिव्य स्रोत, दूसरे के चित्त को जानना, पूर्व जन्म के बारे में जानकारी रखना, जनम-मरण की जानकारी। अष्टसमापत्ति—1) मरने के बाद नित्य संज्ञेय नहीं होने वाला असंज्ञेय नहीं होने वाला रूप से युक्त आत्मा होने का विश्वास । 2) मरने के बाद नित्य संज्ञा नहीं होने वाला असंज्ञा नहीं होने वाला रूप के साथ नहीं होने वाला आत्म विश्वास । 3) मरने के बाद नित्य संज्ञा नहीं होने वाला रूप के साथ-साथ अरूप होने का आत्म के साथ विश्वास । 4) मरने के बाद नित्य रूपी नहीं होने वाला अरूपी नहीं होने वाला संज्ञा नहीं होने वाला असंज्ञा नहीं होने वाला आत्म होने का ज्ञान । 5) मरने के बाद नित्य संज्ञा नहीं होने वाला असंज्ञा नहीं होने वाला अन्त नहीं होने वाला आत्म होने का विश्वास। 6) मरने के बाद नित्य संज्ञा नहीं होने वाला असंज्ञा नहीं होने वाला अनन्त आत्म होने का विश्वास । 7) मरने के बाद नित्य संज्ञा नहीं होने वाला असंज्ञा नहीं होने वाला अन्तया अनन्त आत्म होने का विश्वास । 8) मरने के बाद नित्य संज्ञा नहीं होने वाला असंज्ञा नहीं होने वाला अन्त नहीं होने वाला अनन्त नहीं होने वाला आत्म होने का विश्वास । (समाधि लाभ) प्राप्त किया और देहान्त होने के बाद दिव्य लोक में शुन्य विमान में समवत सुख से जीवन बिताया । बोधिसत्व की उत्पत्ति के दिन में आसित देव दिन का भोजन राजमहल में किया था । भोजन के बाद ध्यान-समापत्ति (समाधि) के माध्यम से फिर से शून्य दिव्य विमान में चले गये । सायं के समय में समापत्ति

(समाधि) से मुक्त हो गये । समापत्ति से मुक्त होने के बाद चारों दिशाओं में खुशियाँ ही खुशियाँ दिखाई देने लगी । कारण पूछा कि क्या मामला है ? तो उन्होंने बताया कि पता चला है कि भविष्य में बुद्धत्व प्राप्त करने वाला बोधिसत्व आज ही के दिन कपिलवस्तुपुर राजा शुद्धोदन के बड़ी रानी महामाया देवी के गर्भ से उत्पन्न हुआ है इसीलिए सभी लोग चारों दिशाओं में हँसी-खुशी मना रहे है । तत्पश्चात् आसित देव भी दिव्यलोक से निकलकर राजा शुद्धोदन के महल में गये ।

तपस्वी का आगमन देखकर राजा बहुत खुश हुआ और आगे जाकर तपस्वी का स्वागत किया । तत्पश्चात् आसित ऋषि ने राजा से पूछा महाराज हमने सुना है कि आपकी महारानी ने एक पुत्र को जन्म दिया है, मैंने उसी पुत्र को देखने के लिए यहाँ आया हूँ । महाराजा शुद्धोदन ने देवी के शयनासान में जाकर आचार्य तपस्वी के आगमन के बारे में सूचना दिया और साथ-साथ यह कहा कि आसित पुत्र को देखने की इच्छा भी प्रकट किये हैं । महारानी की इजाजत लेकर राजा शुद्धोदन अपने पुत्र को तपस्वी को दिखाने के लिए लेकर आये । महामाया देवी आदि शेष रानियाँ आकर दोनों तरफ से खड़ी हो गयीं ।

पुत्र छोटा बालक होने से भी शुद्धोदन राजा ने पुत्र से कहा कि तपस्वी को नमस्कार करके आशीर्वाद लो । ऐसा कहकर राजा शुद्धोदन ने अपने पुत्र को तपस्वी की ओर बढ़ाया । तुरन्त पुत्र का दोनों पैर तपस्वी के जटा से उपर जाकर रूक गये । तपस्वी आश्चर्य चकित हो गये । भविष्य देखने वाले तपस्वी के मन में आया कि यह राजकुमार भविष्य में आध्यात्मिक शक्ति का सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त करेगा । यह सोचकर तपस्वी ने तुरन्त राजकुमार को नमस्कार किया । राजाओं महाराजाओं से नमस्कार लेने वाला तपस्वी छोटे पुत्र को नमस्ते करने के कारण राजा शुद्धोदन, महामाया आदि सभी लोगा आश्चर्य चकित हो गये । तत्पश्चात् आसित देव राजकुमार को अपने पास लेकर पूरे शरीर का निरिक्षण किया और तपस्वी ने देखा कि राजकुमार के शरीर में 32 महापुरुष लक्षण दिखाई दिया । 32 महापुरुष लक्षण देखने के बाद प्रसन्न चित्त से खुशी प्रकट की और हँसी भी निकली, लेकिन दूसरे क्षण ही तपस्वी ने रोना शुरू कर दिया । ऐसी घटना देखने के पश्चात् राजा शुद्धोदन और रानी महामाया आश्चर्यचकित भी हुए और संकोच से उनका और हृदय भी भर गया । तत्पश्चात् राजा ने पूछा कि गुरुदेव आप रोकर तुरन्त हँसे क्यों ? तपस्वी आसित मुनि ने कहा कि यह बालक भविष्य में

बुद्धत्व प्राप्त करेगा । इसलिए हमने खुशी जताई और जब यह बालक बुद्धत्व प्राप्त करेगा इसके पहले ही हमारा देहान्त हो जायेगा । इसलिए इसका दर्शन हम नहीं कर सकेंगे इसलिए हमने रोया । यह शब्द सुनने के बाद राजा शुद्धोदन भी आश्चर्यचकित होकर बालक सिद्धार्थ को नमन किये ।

नालक कुमार का प्रवज्जा

राजमहल से आसित देव निकलकर अपनी बहन के घर गये और वहाँ जाकर अपने बहन के पुत्र ब्राह्मण कुमार को कहा कि पुत्र राजा शुद्धोदन का पुत्र 36 वर्ष की आयु में ही बुद्धत्व प्राप्त करेगा । इसलिए तुम उसके पास जाकर भिक्षु बन जाओ । तपस्वी की बात सुनकर ब्राह्मण नालक थोड़ी दिन के बाद बाल कटवाकर, दाढ़ी बनवाकर, गेरुआ वस्त्र पहनकर एक पात्र कन्धे पर लटका करके कि बोधिसत्व राजकुमार कौन-सी दिशा में है उसी दिशा को नमस्ते किया । तत्पश्चात् अपनी माँ से अनुमति लेकर हिमालय की ओर चले गये । बोधिसत्व के नाम से सबसे पहले प्रव्रज्या लेने वाला नालक ब्राह्मण कुमार है । उसी प्रवज्जा को उद्देशिक प्रव्रज्या के नाम से जाना जाता है ।

परिच्छेद - 6

108 वेद-वेदांग ब्राह्मणों को राजा शुद्धोदन का निमन्त्रण

नामकरण मंगल

बोधिसत्व की उत्पत्ति के पाँच दिन के बाद पुत्र के शरीर के लक्षण की परीक्षा कराकर नामकरण करने के लिए राजा शुद्धोदन ने सोचा । राजा शुद्धोदन ने 108 वेद-वेदांगत ब्राह्मणों को अपने महल में बुलाकर अन्न-जल जैसे चीजों से सत्कार किया । उसके पश्चात् सभी ब्राह्मण लोगों को अपने महल में बुलाने का अपना मकसद प्रकट किया । एक सौ आठ (108) ब्राह्मणों द्वारा विचार विमर्श के बाद उनमें से सर्वश्रेष्ठ आठ ब्राह्मणों को यह कार्य सौप दिया । उस आठ ब्राह्मणों का नाम है—राम, ध्वज, लखन, मन्ती, कोण्डिन्य, भोज, सुयाम व सुद्दत्त था । ये आठ विद्वान ब्राह्मण लोगों ने अपनी शास्त्र विद्या के अनुसार सिद्धार्थ के शरीर लक्षण की परीक्षण किया परीक्षण करने के बाद एकमत से कहा कि लक्षण के अनुसार राजकुमार गृहस्थ जीवन में आगे चलकर चक्रवर्ती राजा होगा । यदि राजकुमार का प्रवज्जा हो गया तो सर्वज्ञ बुद्ध होगा । इसी मत में राम, ध्वज, लखन तीनों ब्राह्मणों ने कहा कि इनमें से कुछ भी हो सकता है । लेकिन मन्ती, कोण्डिन्य, भोज, सुयाम, सद्दत्त पाँचों ब्राह्मणों ने एक अँगुली उठाकर एक मत से कहा कि राजकुमार सिद्धार्थ कभी भी गृहस्थ जीवन नहीं बितायेगा। यह प्रवज्जित होकर सर्वज्ञ बुद्धत्व की प्राप्ति करेगा । ऐसा सुनने के बाद राजा शुद्धोदन चिन्तित हो गये । बहुत दिन से उम्मीद करने के बाद उम्मीद सिद्ध करने के कारण सिद्ध अभिमतार्थ पूर्ण होने के कारण सिद्धार्थ के लाभ से नामकरण हुआ है । (अंक 14)

राजा शुद्धोदन ने ब्राह्मणों से पूछा कि गृह त्यागने का कोई कारण तो होगा, उन्होंने गम्भीर होकर यह प्रश्न किया । ब्राह्मणों ने कहा कि महापुरुष लक्षण विद्या (अंक 15) के अनुसार चार निमित्त अर्थात् बुढ़ापा, असाध्यरोगी, मृत्युशरीर व प्रवज्जित (संयासी) में चार निमित्त को देखने से

घर त्याग देगा अर्थात् गृहत्याग देना अनिवार्य है । राजा की दृढ़ इच्छा थी कि राजकुमार एक चक्रवर्ती राजा के रूप में इस दुनिया में राज्य करें । चिन्तित राजा ने चार निमित्त राजकुमार को नहीं देखने का पूरा प्रबन्ध किया और साथ ही साथ गोत्र नाम से बोधिसत्व सिद्धार्थ गौतम नाम से जाना जाता है ।

महामाया देवी का देहान्त

बोधिसत्व की उत्पत्ति के दिन से ही महारानी महामाया गौतमी पूर्ण रूप से स्वस्थ होकर समय बिताया । महारानी महामाया आसित ऋषि और 108 ब्राह्मणों की बात बार-बार सोचती रह गयी । अपनी बहन महाप्रजावती गौतमी व शेष नारियों के साथ इन सभी घटनाओं के बारे में चर्चा करते हुए हँसी-खुशी से समय बीता रही थी । सात दिन बितते ही रात्रि में बिना किसी तकलीफ के इस दुनियाँ से विदा हो गई अथवा उनकी देहान्त हो गयी । महामाया की पुर्न उत्पत्ति का वर्णन ऐसा मिलता है । तुषित दिव्य लोक में 16 साल की एक सुन्दर दिव्य कुमार के रूप में आखें खोली। तुषित दिव्य लोक में इसी देव को मातृदेव पुत्र के नाम से जाना जाता है। मातृ देव पुत्र सभी देव लोगों का अतिमहत्व समान ।

सिद्धार्थ राजकुमार के लालन-पालन के लिए योग्य

रानी को अकेले राजकुमार का देखभाल न कर सकने व मातृत्व न हो सकने से परिपूर्ण राजवंसिक कन्या समूह को राजकुमार का देख-भाल अर्थात् पालन-पोषण सौंप दिया ।

प्रथम हल जोतने वाला मंगल उत्सव

सिद्धार्थ बोधिसत्व के उत्पत्ति से पाँच महिना बीत गया । रोहिणी नदी के किनारे महाराजा शुद्धोदन का बहुत बड़ा खेती का जमीन था । हर वर्ष राज्य की जनता प्रथम हल चलाने के दिन एक महाउत्सव के रूप में मनाते थे । मंगल हल का शुभारम्भ राजा शुद्धोदन के हाथ से होता था । इस मंगल कार्य को देखने के लिए राज्य की जनता सफेद वस्त्र पहनने के साथ-साथ सफेद फूल की माला भी पहन कर समारोह स्थल पर आते थे । स्थल पर जाने से पहले राजा अपने ढंग से तैयार हो गया । रानियों को आदेश दिया कि कुमार सिद्धार्थ को भी ले जाने के लिए डोली के साथ तैयार होने को कहा। खेत के किनारे एक विशाल जामुन का पेड़ था । उसके चारों

ओर आवरण कराकर कुमार सिद्धार्थ को उसी जगह पर आराम करने का प्रबन्ध किया गया । राजा शुद्धोदन सोने के हल से अपना शुभकार्य प्रारम्भ किया । राजपुरुष और जनता गीत-गाकर उल्लास से हल जोतने का कार्य कर रहे थे । इस उल्लास को देखने के लिए राजकुमार सिद्धार्थ का देख-भाल करने वाली रानियाँ भी परदे से बाहर निकल आयी । सिद्धार्थ बोधिसत्व के पास कोई भी नहीं था, उसी क्षण में बालक सिद्धार्थ राजकुमार ध्यान में बैठ गया। जब देखभाल करने वाली रानियाँ अन्दर आयी तो यह आश्चर्यजनक घटना देखकर राजा शुद्धोदन को विस्तार पूर्वक बता दिया ।

राजा शुद्धोदन तुरन्त आकर यह आश्चर्य अद्भूत घटना को देखकर स्नेह भरे मन से सिद्धार्थ के दोनों पैर पर हाथ रखकर, पुत्र तुम आज ही बुद्धत्व प्राप्त करो यह कहकर उसका अभिवादन किया । (अंक 17)

महामाया देवी की छोटी बहन महाप्रजावती गौतमी एक पुत्र को जन्म दिया । राजा शुद्धोदन उस राजकुमार को शरीर लक्षण आदि अवशेष गुणों का निरिक्षण करने के बाद सबको खुशी देने के कारण उस राजकुमार का नाम नन्दकुमार रखा । थोड़े समय के बाद प्रजावती गौतमी अपनी बड़ी बहन के पुत्र सिद्धार्थ को भी अपने देख-भाल में ले लिया । अपने पुत्र नन्दकुमार का देख-भाल करने का काम अपनी (समीपवर्ती) करीबी रानियों को सौप दिया । राजकुमार सिद्धार्थ अपनी छोटी माँ का दूध पीकर बड़ा हो गया । नन्द कुमार के पैदा होने के दो साल पहले रानी प्रजावती को नन्दा नामक एक पुत्री भी थी । नन्दा कुमारी, सिद्धार्थ व नन्दकुमार तीनों का लालन-पालन व पालन-पोषण महाप्रजावती गौतमी के संरक्षण में हुआ। अपनी माँ अपने साथ नहीं होने का एहसास रानी प्रजावती गौतमी ने कुमार सिद्धार्थ को कभी नहीं होने दिया । तीनों बच्चें एक ही माँ के संतान जैसे प्यार पाकर एवम् एक जुट होकर जिन्दगी बिताते रहे । सिद्धार्थ बोधिसत्व के साथ-साथ नन्द राजकुमार को भी अपने हिसाब से शाक्य कुल का कुछ मित्र राजकुमार के एक परिषद के हिसाब से निरन्तर राजमहल में आया-जाया करते थे । (अंक 18)

शिल्पशास्त्र का शुभारम्भ

महाराजा शुद्धोदन ने अपेन पुत्र को सर्वोच्च शिक्षा देने के लिए उस समय के सर्वश्रेष्ठ शिक्षा विद्द सर्वोमित्र ब्राह्मण को बुलाकर अपने महल में रहने खाने-पीने का प्रबन्ध करा दिया । सिद्धार्थ कुमार के साथ-साथ नन्द

कुमार आदि राजपरिवार के सभी राजकुमारों को उचित शिक्षा देने का प्रबन्ध किया था । ज्यादा समय न बिताकर कुमार सिद्धार्थ सर्वोमित्र ब्राह्मण से सारा शिल्प ग्रहण किया । (अंक 19)

बालक अवस्था

अपने भाई नन्द के साथ और कोलिय शाक्य वंश के कालुदायी वत्स राजकुमार चन्न अश्वारोहक आदि कई मित्र लोग सिद्धार्थ के साथ रहते थे। कभी-कभी देवदत्त भी सिद्धार्थ राजकुमार के साथ खेलने के लिए आते थे।

देवदत्त और सिद्धार्थ का मनमुटाव

देवदत्त, महानाम आदि एक क्षत्रिय राजकुमार थे । हमेशा चण्ड प्रवृत्ति का व्यवहार करते थे । सिद्धार्थ, चन्न जैसे लोग एक मित्र के रूप में रहने के कारण देवदत्त ने कभी पसन्द नहीं किया । अपने से छोटे लोगों के साथ सम्बन्ध नहीं रखने के लिए देवदत्त हमेशा बोधिसत्व को कहता था । लेकिन बोधिसत्व सिद्धार्थ देवदत्त की बात कभी भी नहीं सुना । कई बार तो देवदत्त महाराजा शुद्धोदन के पास जाकर शिकायत की कि कुमार सिद्धार्थ अपने कुल से निम्न वर्गों के लोगों के साथ संगति करता है । बोधिसत्व सिद्धार्थ का स्वभाव राजा शुद्धोदन भलि-भाँति जानते थे । इसलिए देवदत्त की कोई भी बात राजा शुद्धोदन नहीं सुना ।

बोधिसत्व सिद्धार्थ के साथ राजकुमार देवदत्त का मनमुटाव और एक हंस की कहानी

एक दिन बोधिसत्व सिद्धार्थ अपने क्रिडा उद्यान से वापस आते समय कोई वस्तु अपने सामने आसमान से गिरते हुए देखा । सिद्धार्थ उसके नजदीक जाकर देखा तो एक हंस पक्षी धनुष के प्रहार से जमीन पर गिरा हुआ । बोधिसत्व सिद्धार्थ उस हंस को उठाकर महल में ले गये । राजकुमार देवदत्त अपने धनुष से मार गिराया हुआ पक्षी हंस को खोजते-खोजते वहाँ आ गया और राजकुमार देवदत्त देखा कि हंस सिद्धार्थ के हाथ में था । राजकुमार देवदत्त ने सिद्धार्थ से कहा कि इस हंस को हमने मार गिराया है इसलिए यह हंस हमारा है, लेकिन बोधिसत्व सिद्धार्थ देवदत्त की कोई भी बात न सुनकर हंस को राजमहल में ले जाकर उसके चोट पर दवा लगाया ।

राजकुमार देवदत्त महाराजा शुद्धोदन के पास जाकर इस घटना के बारे में शिकायत किया । महाराजा शुद्धोदन ने कुमार सिद्धार्थ को बुलाकर घटना के बारे में विस्तृत जानकारी ली तब सिद्धार्थ भी अपना पक्ष रखा और बोधिसत्व सिद्धार्थ ने राजा से कहा कि इस हंस के चोट पर दवा लगाने के बाद जब ठीक हो जायेगा तो इसे पक्षी रूप में आजाद जिन्दगी बिताने के लिए छोड़ दूँगा । मैं हिंसा-पीड़ा करने वाले किसी भी व्यक्ति को हंस नहीं सौपेंगे ।

भविष्य में देश का सियासत करने वाले राजकुमारों को बचपन से ही विनयानुकूल नीति के अनुसार काम करने और सिखने के उद्देश्य से राजा शुद्धोदन ने राजकुमार देवदत्त को कहा । इस घटना की तुम न्याय के लिए राज्यसभा में पेश करो ।

इसी के अनुसार राज्यसभा भी एकत्रित हुआ । विनिश्चय सभा के एक अमात्य नेता ने कहा कि राजकुमार देवदत्त ने अपने तीर से हंस को मार गिराया है इसलिए हंस राजकुमार देवदत्त को दे देना चाहिए । यह बात सुनते ही बोधिसत्व सिद्धार्थ खड़ा हो गया और कहा कि आसमान में उड़ने वाले कोई भी पक्षी किसी भी व्यक्ति के अधिन में नहीं आता है और किसी भी पक्षी की हिंसा करने के लिए किसी भी व्यक्ति को अधिकार नहीं है । इसलिए जमीन पर गिरा हुआ हंस पर मालिकाना अधिकार जताना पागल पन है । इस हंस पर उस व्यक्ति का अधिकार है जिसने हंस की जिन्दगी बचायी है । इसी बीच में एक बयोवृद्ध अमात्य खड़ा होकर कहा कि किसी की जिन्दगी नष्ट करने वाले को उसका अधिकार नहीं मिलता है । राजकुमार सिद्धार्थ का वक्तव्य और वयोबृद्ध अमात्य की बात सुनकर पूरा राज्य सभा निरुत्तर हो गया । कोपाविष्ट राजकुमार देवदत्त गुस्सा से कांपते हुए और लज्जा से भरे चेहरे से, राज्य सभा से निकलकर अपने महल में चले गये। बोधिसत्व सिद्धार्थ ने हंस को दवा कराकर पूरा ठीक होने के बाद उसे आजादी से उड़ान भरने के लिए मुक्त कर दिया ।

शेष राजकुमारों के साथ भ्रमण पर बहुत दूर जाना सिद्धार्थ ने बन्द कर दिया

एक दिन शाक्य वंश के कुछ राजकुमार महल में आकर सिद्धार्थ बोधिसत्व को घूमने के लिए महल से बाहर ले गये । वे सभी उद्यान क्रिडा के लिए तैयार किया हुआ मैदान को छोड़कर बहुत दूर एक जंगल में चले

गये । उस जंगल में हिरन, नीलगाय जैसे जानवरों को देखते ही सभी लोग बहुत खुश हुए । कोई एक-दो राजकुमार उसी जनवरों के पीछे दौड़ते थे और कोई राजकुमार उन जानवरों को दौड़ाकर मारते थे । यह घटना देखकर बोधिसत्व सिद्धार्थ ने सोचा कि तकलीफ होने से वह अपना शब्द इस्तेमाल करता है और अपना दुःख-दर्द बताता है और अपना तकलीफ अपने वचन से प्रकट करता है, लेकिन इस जंगल में रहने वाले जानवर अपना दुःख-दर्द किसको कैसे बतायेंगे ? ऐसे जानवरों को कष्ट देना, तकलीक देना बहुत बड़ा पाप है । जंगल में जंगली पत्ता, जंगली फल खाकर जीवन जीने वाले हिरन, नीलगाय जैसे अहिसंक जानवरों पर हिंसा करना बहुत बड़ी गलती है । चित्त वेदना के साथ राजकुमार सिद्धार्थ जंगल से तुरन्त वापस महल में चले आये । उस दिन के बाद से सिद्धार्थ शेष राजकुमारों के साथ कभी भी घूमने नहीं निकले ।

बचपन से ही बोधिसत्व सिद्धार्थ अपने दैनिक जीवन में करुणा, मैत्री, शान्ति, परोपकार, समानात्मता जैसे श्रेष्ठ गुणों का प्रतिबिम्ब दर्शाते थे । बोधिसत्व सिद्धार्थ के स्वभाव के बारे में सुनने वाले लोग उनका आदर करते थे । सिद्धार्थ का किर्तिघोष धीरे-धीरे चारों तरफ फैल गया । मगध राज्य का महाराजा महापद्म अपने पुत्र राजकुमार बिम्बिसार के हाथों से राजकुमार सिद्धार्थ को उपहार भेजवाकर दोनों के बीच में मित्रता का सम्बन्ध बढ़ाया। वैशाली राज्य का लिच्छवी राजा लोग भी राजकुमार सिद्धार्थ को अपना उपहार भेंट किये थे ।

परिच्छेद - 7
तीन महल

उत्तर भारत में मौसम के अनुसार शीतऋतु, ग्रीष्मऋतु व वर्षाऋतु तीन ऋतुएँ होती है । शीतऋतु चार महिने का होता है । इसमें बहुत शीत यानि ठण्ड होता है । ग्रीष्मऋतु चार महिने का होता है यह चार महिना भी ज्यादा गर्म होता है । वारिस ऋतु में भी बहुत वर्षा होती है इसलिए सम्पन्न लोग अपने को अयोग्य ऋतुओं से बचने के लिए अपने रहन-सहन की व्यवस्था मौसम के अनुसार करते हैं, नहीं तो उस स्थान को छोड़कर दूसरे प्रदेश में चले जाते हैं । महाराजा शुद्धोदन भी अपने सन्तान के लिए तीन ऋतुओं के योग्य उद्यान एवम् महल तैयार किया । उस महल को रम्य, सुरम्य व शुभ नाम से जाना जाता है ।

रम्यमहल

सिद्धार्थ राजकुमार को शीतऋतु में रहने के लिए बनावाये हुए महल को रम्य नाम दिया गया । रम्य महल नौ मंजिलों का था । शीतल हवा अन्दर प्रवेश न होने देने के लिए दरवाजा, खिड़की उसी हिसाब से तैयार किया गया था । भित्तिचित्र ज्यादातर आग से सम्बन्धित घटनाओं से सम्बन्धित चित्र से अलंकृत किया गया था । फर्श पर कम्बल जैसे वस्तुओं से सजाया गया था । महल का परदा, सोफा जैसे सभी वस्त्र कम्बल से ढका था । रम्य महल का तापमान बराबर रखने के लिए दिन में दरवाजा-खिड़की खुला रखते थे और शाम को बन्द कर देते थे ।

सुरम्यमहल

ग्रीष्म ऋतु के लिए बनवाया गया महल का नाम सुरम्य दिया गया। यह महल पाँच मंजिला का था । लम्बा खिड़की लम्बा दरवाजा और जाली वाले खिड़की के साथ-साथ भित्तिचित्र में कमल जैसे पानी में होने वाले सभी पुष्पों का चित्रांकन किया गया । परदा व चादर जैसे वस्त्र मलमल कपड़ों से सजाया। जमीन पर भी ऐसे ही कपड़ों से सजाया जगह-जगह पर बारिस

जैसे पानी गिरने के लिए यन्त्र लगा दिया । जगह-जगह पर तालाब खुदवाकर तालाबों में पानी भरवाकर पञ्चपद्म (पाँच प्रकार के कमल) का रोपड़ किया। महल का दरवाजा, खिड़की दिन में बन्द कराकर रात में खुलवाते थे ।

शुभ महल

वर्षाऋतु में रहने के लिए बनवाये हुए महल को शुभ महल का नाम दिया । शुभ महल भी सात मंजिले का था और इस महल को ज्यादा ऊँचा नहीं बनाया गया । इस महल के भित्तिचित्र में पानी जलज पुष्पों जैसे चित्रों का चित्रांकन किया गया था । वर्षा की दिशा के अनुसार दिन और रात को दरवाजा, खिड़की बन्द करने की व्यवस्था की गई थी ।

इसी तीन महल में बोधिसत्व सिद्धार्थ तीनों ऋतुओं में पंचकाम सम्पत्ति का पूर्ण आनन्द लेते हुए तरुण युवावस्था को प्राप्त किया । (रम्य, सुरम्य व शुभ तीनों महलों का खण्डहर वर्तमान समय में लुम्बिनी उद्यान से 50 किलोमीटर की दूरी पर हिमालय के तराई क्षेत्र में (नेपाल) अभी भी देखने को मिलता है ।)

विवाह मंगल

एक दिन महाराजा शुद्धोदन कपिलवस्तु के सभागार में अपने अमात्य मण्डल के साथ राज्य के विकास जैसे कार्यक्रम के बारे में चर्चा कर रहे थे । कुछ वयोवृद्ध शाक्य राजकुमार राजा शुद्धोदन के पास आकर कहा कि महाराज निमित्त ब्राह्मण परिषद के अनुसार राजकुमार सिद्धार्थ को गृहस्थ जीवन बिताने से चक्रवर्ती राजा होने का दोनों बाते कहीं है । हम लोगों के राजवंश में कभी भी कोई चक्रवर्ती राजा नहीं हुआ । इसलिए हम सभी की पूर्ण इच्छा है कि राजकुमार सिद्धार्थ को एक चक्रवर्ती राजा के रूप में देखना है और ऐसा होने से हम लोग एवं हमारा राज्य भी पूजित होगा। इसलिए राजकुमार का एक योग्य राजकुमारी के साथ विवाह कर देने का भी समय आ गया है ।

शुद्धोदन महाराजा भी अपनी सहमति प्रकट करते हुए योग्य राजकुमारी को तलाशने का सभी से अनुरोध किया । कई राजा लोग खड़े होकर कहे कि योग्य राजकुमारी अपने पास है । यदि राजा शुद्धोदन चाहे तो उसका बन्दोवस्त कर सकते है । लेकिन राजकुमार सिद्धार्थ आसानी से किसी के

बात पर आने वाले नहीं थे इसलिए राजा शुद्धोदन ने कहा कि हम लोग राजकुमार सिद्धार्थ के पास जाकर अपनी मन की बात प्रस्तुत करेंगे । इसी के अनुसार महाराजा शुद्धोदन के साथ शेष राजा लोग जाकर राजकुमार सिद्धार्थ को अपनी बात बतायी । राजा लोगों की बात सुनकर अपना जवाब देने के लिए राजकुमार सिद्धार्थ ने सात दिन का समय माँगा था ।

तत्पश्चात् बोधिसत्व सिद्धार्थ अकेले बैठकर सात दिन तक अपने दिमांग से विवाह के बारे में चिन्तन-मनन किया ।

काम सम्पत्ति में दोष का अन्त नहीं है कलह, बैर, शोक, दुख, और झंझट के लिए काम सम्पत्ति प्रधान है । काम सम्पत्ति भयंकर है । खाने के बाद तुरन्त मरने वाले विषफल जैसे है; अग्नि ज्वाला जैसे है, तलवार के धार जैसे है इसलिए काम सम्पत्ति भोगने के लिए हमारा कोई इच्छा नहीं है और स्त्री के बीच में भी जिन्दगी बिताना हमारी इच्छा नहीं है । जंगल में जाकर ध्यान-समाधि, सुख-सम्पन्न जिन्दगी बिताने के लिए मन लगता है।

ऐसा सोचकर सिद्धार्थ बोधिसत्व के मन में आया कि हमारी यह बात कभी भी हमारे पिता महाराजा शुद्धोदन मानेंगे नहीं इसलिए जो हमारे मन में है यह सभी बाते एक पत्र के माध्यम से लिखित भेजूँगा ।

राजकुमार सिद्धार्थ पत्र में लिखा कि मेरे लिए योग्य राजकुमारी को खोजते समय निम्न प्रकार के सद्‌गुणों से परिपूर्ण सम्पन्न होना चाहिए । अपनी रूप सौन्दर्य से अहंकारी न हो, एक माँ और एक बहन जैसे मैत्री चीत्त से परिपूर्ण होना चाहिए । श्रमण, ब्राह्मण आदि पूज्य लोगों को दानादि सत्कर्म में निपुण होना चाहिए । आडम्बर, गुस्सा, छल-कपट, ईर्ष्या, बेईमानी जैसे दुर्गुणों से मुक्त होना चाहिए । हड़बड़ी नहीं होना, खाने-पीने के सामाग्री में लालची नहीं होना, गाना-नृत्य आदि के बीच में जाने का मन नहीं होना, सुगन्ध-आलेप जैसे सामाग्री के लिए लालच नहीं होना चाहिए । दूसरे लोगों की किमती वस्तु देखकर उसका लालच नहीं करना चाहिए । सत्यवादी होना, सम्पन्नता में घमण्डी नहीं होना, विपत्ति के समय में पश्चाताप नहीं करना, सदैव मध्यस्थता पूर्वक, लज्जा, भय आदि अष्टमंगल गुणों से परिपूर्ण होना। चित्त, काय, वचन तीनों द्वारा पवित्र होना, आलसी नहीं होना, पूछ कर कार्य करना । न्याति, आचार्य लोगों का आदर-सम्मान पर गर्व करना जैसे गुणों से सम्पन्न एक कुमारी के मिलने से उसे स्वीकार करूँगा । ऐसा लिखकर सिद्धार्थ ने महाराजा शुद्धोदन के पास पत्र भेज दिया । महाराजा शुद्धोदन

पत्र पढ़कर पुरोहित ब्राह्मणों को बुलाकर इस पत्र में अकिंत गुणों से युक्त कन्या कुमारी को खोजने के लिए कहा । राजा ने कहा कि इस पत्र में लिखित गुणों से सम्पन्न कोई कन्या ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शुद्र होने से स्वीकार करूँगा । मेरा पुत्र सिद्धार्थ कुल, वंश, गोत्र, भेद के बारे में कुछ भी नहीं मानता है । पुरोहित ब्राह्मण पत्र लेकर एक योग्य कन्या को ढूढने के लिए बहुत प्रयास किया लेकिन सफल नहीं हुआ । इसके पश्चात् भी पुरोहित ब्राह्मण धैर्य नहीं खोया । एक दिन पुरोहित ब्राह्मण भ्रमण करते हुए एक राजवंसिक के घर पहुँच गये और उसी घर में रूप सम्पत्ति से परिपूर्ण एक राजकन्या को देखा ।

(नही कुमारः कुर्लितिको न गोत्रार्थिकाः गुनार्थिकः एवम् कुमारः (ललितविस्त्र पेज नं. 98) ब्राह्मनिकः क्षत्रियाः कन्याः वैश्यः शुद्री ततेव च यस्य यते गुनाः सन्ति थः से कन्या प्रवेदयः न कुलेन न गेत्रिन् कुमारो मम् विस्मितः गुने सत्योव धर्मेः च तत्रासः रमते मणः ।)

ब्राह्मणों को सामने आते हुए देखकर कन्या कुमारी उनके पास आयी और पैर छूकर उनसे पूछा आप लोगों को क्या चाहिए ? ब्राह्मणों ने राजकुमारी को राजकुमार सिद्धार्थ का पत्र दिखाया । कुमारी यशोधरा पूरा पत्र पढ़ने के बाद कहा कि इस पत्र में जो लिखा है वह सभी गुण मेरे में है । राजकुमारी यशोधरा ने कहा कि सिद्धार्थ मेरा ही स्वामी होगा, मेरी बात महल में जाकर राजकुमार के सामने रखना । उनके अलावा मैं किसी के साथ नहीं रहूँगी । राजकुमारी यशोधरा सुप्रबुद्ध राजा के शुद्धोदन महाराजा के सहोदरी की पुत्री थी ।

ब्राह्मण लोग महल में जाकर राजा शुद्धोदन को राजकुमारी यशोधरा के बारे में विस्तार पूर्वक बता दिया । राजा शुद्धोदन ने सोचा कि बहुत सी स्त्रीयाँ अपनी अवगुण को छिपाकर जो उसके पास नहीं है ऐसे गुण दुनिया को दिखाती है । इसलिए अपने लिए एक कुमारी को खोजकर निर्णय लेने का काम स्वयं सिद्धार्थ को सौपते हैं । यह सोचकर राजा के मन में एक विचार आया । राजा शुद्धोदन ने बहुत-सा सोने का आभूषण बनवाया और सिद्धार्थ से कहा कि शाक्य परम्परा के लोगों को एक स्थान पर एकत्रित होने के लिए कहा और बोला जो सिद्धार्थ का दिल जीतेगा उसी को यह समस्त आभूषण देना ।

एक सप्ताह बाद कपिलवस्तु राज्य में सभी शाक्य वंश के लोगों का एक आदान-प्रदान का शिष्ट-सम्पन्न समारोह का आयोजन हुआ था । उसी

दिन सभी राजकुमारीयों को किमती गहने प्रदान करने की घोषणा किया। सातवे दिन राजकुमार सिद्धार्थ उस स्थान पर जाकर अपना आसन ग्रहण किये । राजा शुद्धोदन ने अपने ढ़ग से राजपुरुषों को कहा कि राजकुमार सिद्धार्थ का ध्यान ज्यादा कौन-सी राजकुमारी की तरफ जायेगा हमको बताना।

राजकुमारियाँ एक के बाद एक राजकुमार के सामने आती गयी । बोधिसत्व सिद्धार्थ राजकुमार के रूप-सम्पत्ति के कारण कोई भी राजकुमारी सीधे राजकुमार के तरफ देखने का साहस नहीं किया । सिर नीचे करके सिद्धार्थ के पास आयी और जो सिद्धार्थ ने दिया, उसे लेकर चली गयी । सिद्धार्थ भी जो जिसको देना था उसे देता गया और किसी भी राजकुमारी की तरफ देखा नहीं । यह पूरी घटना सभी अमात्य लोग देख रहे थे । अमात्य लोगों ने आपस में बात किया कि यह आश्चर्य की बात है कि दिव्यांगना जैसे राजकुमारियों को देखने के बाद भी कुमार सिद्धार्थ थोड़ा-सा नजर भी नहीं घुमाया । थोड़ी हँसी भी मुँह से नहीं निकला । यह राजकुमार किसी के वश में नहीं आने वाला है । थोड़ी देर के बाद कुमारी यथोधरा आयी, आकर सिद्धार्थ के पास जाकर उसके तरफ देखती ही रह गयी और जो सबको देने के लिए आभूषण बनवाया गया था । उस समय तक सब समाप्त हो गया था । यशोधरा को देने के लिए कुछ भी नहीं था । राजकुमारी यशोधरा राजकुमार सिद्धार्थ के पास जाकर हँसते हुए कहा—राजकुमार आप हमें भी कुछ देंगे की नहीं ? मैं तो आप से कुछ लेने के लिए सोचकर आयी हूँ । सिद्धार्थ ने कहा आपका मैं आपका सम्मान (इज्जत) करता हूँ लेकिन जो देना था, वह सब समाप्त हो गया और आप बहुत देर से आयी हैं । सिद्धार्थ ने हँसते हुए अपनी उँगली से एक सबसे किमती अंगुठी निकालकर यशोधरा के हाथ में रख दिया ।

राजकुमारी यशोधरा ने राजकुमार सिद्धार्थ से पूछा, "कि मैं यह अंगुठी पहनने के लिए योग्य हूँ या नहीं" इसे स्वीकार कीजिए । यशोधरा ने कहा कि आपका अंगुठी लेकर आपकी उँगली खाली करना नहीं चाहती हूँ । आपको हमलोग सबसे सम्पन्न आभूषणों से सुशोभित करेंगे यह कहकर सिद्धार्थ को नमन करने के बाद यशोधरा चली गयी ।

राजा शुद्धोदन के आदेशानुसार सभी राजपुरुष ध्यान से सभी घटना को देखते रहे और सांम के वक्त सभी राजपुरुष राजा शुद्धोदन के पास जाकर कहा कि महाराज ! कुमारी यशोधरा सिद्धार्थ के नजर से नजर मिलाकर बात

की । राजा शुद्धोदन यह बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और प्रसन्न होकर कुमारी यशोधरा के पिताजी को यह सन्देश भेजा कि आपकी पुत्री मेरे राजकुमार के योग्य है । शुद्धोदन महाराजा की खबर मिलने के बाद यशोधरा के पिताजी ने राजा शुद्धोदन को जवाब भेजा । आर्य आपका पुत्र राजकुमार सिद्धार्थ राजमहल में ही सोम्यशिली से बड़ा हो गया, कोई भी अनपढ़ व्यक्ति को हम लोगों की कन्याओं का दान देने की रिति नहीं है। यह हमलोगों का कुल धर्म है, आपका पुत्र राजकुमार सिद्धार्थ कुछ नहीं जानता है, जैसे— तलवार, धनुष चलाना नहीं जानता है । इसलिए आपका यह प्रस्ताव हमें स्वीकार नहीं है । यह खबर सूनकर राजा शुद्धोदन चिन्ता में पड़ गये । राजकुमार सिद्धार्थ अपने पिताजी का उदासिन चेहरा को देखने के बाद पूछा कि पिताजी आप इतना उदास क्यों है ? राजा शुद्धोदन ने उत्तर दिया कि इससे आप से कोई मतलब नहीं है । राजकुमार सिद्धार्थ के तीसरी बार पूछने के बाद राजा शुद्धोदन ने सत्य बता दिया । सिद्धार्थ ने कहा कि पिताजी मेरे साथ शिल्पशास्त्र का कोई भी व्यक्ति प्रतियोगी नहीं बन सकता है । यह सुनकर राजा शुद्धोदन बहुत खुश हो गये । राजा ने पूछा कि यदि तुम तैयार हो तो सिद्धार्थ ने बोला मैं शिल्प शास्त्र प्रतियोगिता के लिए तैयार है । राजा शुद्धोदन ने पूरे राज्य में यह घोषणा करवाया कि आज से सातवें दिन कुमार सिद्धार्थ द्वारा शिल्प प्रतियोगिता में भाग लेने के कारण सभी देशवासियों को और राजपरिवार को भी उस स्थान पर उपस्थित होने के लिए आमन्त्रित किया ।

घोषणा के अनुसार नियमित दिन में काफी भीड़ एकत्रित हुआ । राजकुमार देवदत्त भी प्रतियोगिता स्थान के लिए रवाना हो गये । वैशाली के लिच्छवी राजाओं द्वारा राजकुमार सिद्धार्थ को एक सफेद हाथी का बच्चा भेंट किया । उस सफेद हाथी के बच्चे को महावत उस प्रतियोगिता वाले स्थान पर लेकर आये । राजकुमार देवदत्त ईर्ष्या से अपने पैर द्वारा बहुत जोर से सफेद हाथी के बच्चे को मारा । सफेद हाथी का बच्चा उसी स्थान पर मर गया । कोई भी व्यक्ति हाथी के बच्चे के मृत शरीर को हटाने का हिम्मत (साहस) नहीं किया । यह दृश्य देखकर नन्द कुमार का मन शोकाकुल हो गया और कम्पित हृदय से सफेद हाथी के बच्चे के मृत शरीर को सड़क के किनारे कर दिया । घटना के बारे में सूचना मिलने से राजकुमार सिद्धार्थ नन्द कुमार का प्रशंसा किया है । मरे हुए हाथी के बच्चे के मृत शरीर को उठाकर सिद्धार्थ राजकुमार ने स्वयं ऊँचा दिवार के उस तरफ रख

दिया । सिद्धार्थ ने कहा कि यदि यह सड़ गया तो पूरे शहर को नरक बना देगा । सिद्धार्थ का यह सत्कार्य देखने के बाद वहाँ पर उपस्थित जनसमूह काफी प्रसन्न हो गये । जहाँ सिद्धार्थ ने सफेद हाथी के मृतशरीर को फेका था उस जगह को हस्तीगरता के नाम से जाना जाता है ।

विशेषज्ञ समूह के सामने सिद्धार्थ राजकुमार अक्षर शास्त्र, संख्या शास्त्र, आदि शास्त्रों में भी सबको पराजित किया । इसके बाद दौड़, कुद, तलवार, धनुष जैसे शिल्पी को सबके सामने दिखाया । सभी प्रतियोगिता में राजकुमार सिद्धार्थ का ही विजय हुआ ।

सिद्धार्थ राजकुमार का अतिदक्ष शिल्प कला के प्रदर्शन के बाद कुमारी यशोधरा के पिताजी बहुत काफी प्रसन्न हुए । लेकिन ब्राह्मणों की भविष्य वाणी के कारण उन्होंने सोचा यदि सिद्धार्थ कुमार घर त्याग कर भिक्षू बन गया तो हमारी पुत्री का क्या होगा । लेकिन अपने दिल की बात किसी को भी न बताकर पुत्री यशोधरा के पास जाकर कहा कि कुमार सिद्धार्थ किसी भी दिन गृहस्थ जीवन छोड़कर एक संयासी का जीवन बितायेगा । आसित ऋषि एवम् बाकि ब्राह्मण विद्वानों की बात सभी लोग जानते है । यदि मैं तुम्हारा विवाह उसके साथ करवा दिया तो कुछ ही दिन पश्चात् तुम विधवा हो जाओगी । इसलिए इस प्रस्ताव को अपनी मंजूरी नहीं देनी है । लेकिन कुमारी यशोधरा ने अपने पिताजी से कहा कि यदि मुझे शादी करनी है तो मैं केवल सिद्धार्थ से ही शादी करूँगी, चाहे वह शादी के एक दिन बाद ही घर त्याग कर संयासी बन जाय और कुमार सिद्धार्थ ने भी कहा कि यशोधरा को छोड़कर मैं किसी और से शादी नहीं करूँगा । दोनों ने किसी की बात नहीं सुनी ।

[सिद्धार्थ कुमार का विवाह 16 वर्ष पूर्ण होने के पश्चात् हुआ था । पालि अट्ठकथा का विवरण है । लेकिन कुछ महायान ग्रन्थों में 22 वर्ष में सिद्धार्थ की शादी होने का उल्लेख मिलता है ।]

अन्त में राजा शुद्धोदन सिद्धार्थ राजकुमार का राजकुमारी यशोधरा के साथ विवाह मंगल अति उत्कर्ष ढंग से किया और साथ ही साथ दोनों को एक ही साथ मुकुट पहनवाया ।

सिद्धार्थ बोधिसत्व पूर्वजन्म में बोधिसत्व के समय संसार में अनेक बार विविध रूपों से यशोधरा के साथ अपना सहकारी बनकर जिन्दगी बिताये । जनमगति से दोनों का स्नेह बराबर होने से भी दोनों में काम उद्दीपन नहीं

हुआ । राजा शुद्धोदन व रानी प्रजावती गौतमी दोनों ने मिलकर नये राजा-रानी को किसी भी वस्तु की कमी होने नहीं दिया । यशोधरा का शुद्धोदन के महल में आने से पहले राजपरिवार का भोजन अलग तैयार होता था लेकिन यशोधरा के आने के बाद राजपरिवार का भोजन सेवकों को भी मिलना शुरू हो गया । (अंक 22)

राजमहल के अलावा पूरे राज्य में यशोधरा का गुण घोष फैल गया। कपिलवस्तु नगर के सभी वासी यशोधरा को अपनी माँ जैसे मानते थे ।

सिद्धार्थ और यशोधरा के महल में सदैव नृत्य, गीत आदि मनोरंजन से भरपूर था । पंचकाम सम्मत्ति से परिपूर्ण होने से भी राजकुमार सिद्धार्थ और यशोधरा की जिन्दगी एक राजमहल में रहने वाले तपस्वी एवं तपस्वनी का स्वरूप लिया । तपस्वी व तपस्वनी जैसे जीवन बिताने के कारण दोनों को कोई सन्तान नहीं हुआ । यशोधरा का गर्भधारण सिद्धार्थ के अट्ठाईस वर्ष की आयु के समय में हुआ था ।

(सिद्धार्थ और यशोधरा को कोई सन्तान नहीं होने के कारण राजा शुद्धोदन एवं रानी प्रजावती गौतमी आदि लोग काफी दु:खी थे । महत्त्वपूर्ण घटना के सम्बन्ध से सिद्धार्थ भी अवगत हो गये । सिद्धार्थ बोधिसत्व के समय में अधिष्ठान पारमीता पूर्ण किया । इसी अधिष्ठान पारमीता शक्ति को स्मरण कराकर तर्जनी उँगली से यशोधरा की नाभि को स्पर्श किया । जिससे राहुल कुमार की उत्पत्ति होने का उल्लेख अभिधार्मिक धर्मरत्न पण्डित का मत है ।) (अभिधार्मिक धर्मरत्न पण्डित श्रीलंका के लक्मिनी अखबार पत्रिका का संस्कारक थे ।)

परिच्छेद - 8
चन्न ! यह क्या है ?

उद्यान क्रिड़ा के लिए निकलना

एक दिन महल से बाहर जाकर नगर सीमा से दूर उद्यान, खेती, जंगल क्षेत्रों को देखने का विचार सिद्धार्थ के मन में आया । इसकी खबर राजा शुद्धोदन को किया गया । राजा शुद्धोदन राजकुमार की यात्रा के लिए पूर्ण रूप से उचित प्रबन्ध किया । इसके साथ-साथ रास्ते पर कोई वृद्ध अर्थात् बुढ़ा व्यक्ति, रोगी व्यक्ति, मृत शरीर व कोई श्रमण भेषधारी नहीं दिखाई देने के लिए पूर्णरूप से रखवाली करवायी । निर्धारित तिथि को राजकुमार सिद्धार्थ सफेद घोड़ों से सुसज्जित रथ पर सवार होकर प्राकृतिक सौन्दर्य को देखकर आनन्द लेने के लिए निकल गये । परिवार के कुमार-कुमारियाँ भी साथ-साथ गये । रूप सम्पत्ति से परिपूर्ण राजकुमार को देखने के लिए आम जनता सड़क के दोनों किनारों पर एकत्रित हो गये । राजकुमार सिद्धार्थ थोड़ी दूर पहुँचे थे कि रास्ते में पका हुआ, बिखरे हुए बाल के साथ एक लाठी के सहारे चलने वाला एक वयोवृद्ध व्यक्ति को देखा । सिद्धार्थ अपने जीवन में कभी भी ऐसा दृश्य नहीं देखा था । अपने अश्वरोहक चन्न अमात्य से पूछा कि यह कैसा व्यक्ति है ? चन्न ने उत्तर दिया, राजकुमार यह एक वयोवृद्ध व्यक्ति है । तब सिद्धार्थ ने चन्न से पूछा कि हमलोग भी कभी ऐसे होंगे ? तो चन्न ने कहा कि राजकुमार समय बितने के साथ-साथ हमलोगों का भी यही हाल होगा । बोधिसत्व सिद्धार्थ ने अपने जिन्दगी में कभी भी ऐसा दृश्य नहीं देखा, जिससे बुढ़ापे के बारे में सोचने का मौका नहीं मिला । लेकिन यह दृश्य को देखने के बाद सिद्धार्थ इसके बारे में सोचने लगे । इसके बारे में गम्भीर होकर चन्न से कहा चन्न अगर संसार का स्वभाव ऐसा हो तो उद्यान देखना, उद्यान क्रिड़ा करना इसका कोई मतलब नहीं है । वापस महल में चलो ।

कुछ समय पश्चात् ही राजकुमार सिद्धार्थ का वापस महल में आने से राजा शुद्धोदन और प्रजावती गौतमी आदि सभी लोग चिन्तित हो गये । इस

घटना के बारे में किसी को विस्तृत जानकारी न देकर राजा शुद्धोदन ने सिद्धार्थ और यशोधरा के महल में और ज्यादा से ज्यादा संगीत एवं नृतिका की व्यवस्था किया । लेकिन सिद्धार्थ ने जो देखा था उस स्वभाव के बारे में गम्भीर होकर सोचते रहे । यशोधरा को भी कहा यशोधरा तुम भी अभी अतिसुन्दर हो लेकिन समय बितते ही बाल पकेगा, दाँत गिरेगा, चमड़ा सिकुड़ेगा शरीर अपने वस में नहीं आयेगा जैसे बुढ़ापा का वर्णन करते थे। इस कारण सिद्धार्थ और यशोधरा रूप-मद से मुक्त हो गये । किसी दिन हम दोनों गृहस्थ जीवन से निकलकर अजर सुख खोजने के लिए निकलेंगे।

एक रोगी का दर्शन

समय बितता गया और समय बितने के साथ ही राजकुमार सिद्धार्थ फिर से उद्यान क्रिड़ा जाने के लिए इच्छा व्यक्त किया । राजा शुद्धोदन ने इसके लिए उचित प्रबन्ध समय पर किया । पुनः रूप सम्पत्ति से परिपूर्ण कुमार सिद्धार्थ को देखने के लिए रास्ते के दोनों तरफ काफी भीड़ एकत्रित हो गयी । सिद्धार्थ के सामने कोई भी अशुभ वस्तु या व्यक्ति नहीं आये इसके लिए राजा शुद्धोदन ने पूर्ण रूप से प्रबन्ध किया था । लेकिन जैसे ही राजकुमार रास्ते में आगे बढ़े पेट फूला हुआ, पैर फूला हुआ, चेहरा भी फूला हुआ एक विरूपी असाध्य रोगी को देखा । सिद्धार्थ राजकुमार जिन्दगी में कभी भी ऐसा दृश्य नहीं देखा था इसलिए अश्वारोहक चन्न अमात्य से पूछा कि यह क्या है ? चन्न ने कहा राजकुमार यह एक बहुत बड़ा रोग से ग्रस्त व्यक्ति है । इसके बारे में सिद्धार्थ द्वारा और पूछने से चन्न ने कहा राजकुमार यह स्वभाव पूरे संसार में सभी प्राणियों के लिए होना स्वभाविक है । इस अवस्था में आने तक स्वयं अपना शरीर भी अपने वस में नहीं रहता है। रूप सम्पत्ति से परिपूर्ण निरोगी सिद्धार्थ कुमार को यह दृश्य देखने के बाद आरोग्य मद समाप्त हो गया । मनुष्य जीवन का स्वभाव ही ऐसा हो तो फिर उद्यान क्रिड़ा करने से क्या मिलेगा ? सिद्धार्थ गम्भीर होकर वापस महल को लौट आये । इस घटना की सूचना सुनने के बाद राजा शुद्धोदन चिन्तित हो गये । चिन्तित होकर राजा राजकुमार सिद्धार्थ और राजकुमारी यशोधरा को किसी भी तरह से गृहस्थ जीवन में बाँधे रखने के आवश्यक सभी उपायों को किया । लेकिन सिद्धार्थ बोधिसत्व ने सोचा यशोधरा बहुत रूप सम्पन्न है लेकिन यशोधरा का शरीर भी रोगग्रस्त होने से उस व्यक्ति जैसा ही हो जायेगा । इस शरीर में आदिनव बहुत है इसलिए इससे मुक्त होने का मार्ग खोजना जरूरी है ।

मृतशरीर को देखना

फिर कुछ समय पश्चात् शारीरिक व्यायाम के लिए राजकुमार सिद्धार्थ राजमहल व नगर से बाहर जाने की इच्छा प्रकट किया । राजा शुद्धोदन को इसकी सूचना मिलने पर पूर्व अभ्यासों के अनुसार आवश्यक प्रबन्ध किया। बोधिसत्व सिद्धार्थ चन्न अमात्य सहित आवश्यक शेष लोगों के साथ राजमहल से निकल गये । लेकिन थोड़ी दूर जाने के बाद सड़क के किनारे मुँह खुला हुआ, नीले रंग का फुला हुआ, नौ द्वारों से गन्दगी निकलते, किड़ों से भरा हुआ एक मृत शरीर देखने को मिला । राजकुमार सिद्धार्थ किसी भी दिन ऐसा कोई दृश्य अब तक नहीं देखा था । उसे देखकर राजकुमार ने चन्न रथाचार्य से पूछा, चन्न यह क्या है ? चन्न ने कहा राजकुमार यह एक सड़ा हुआ मृत शरीर है और विस्तार पूर्वक पूछने से बताया कि राजकुमार सिद्धार्थ इस दुनिया में आखिरी समय में सभी प्राणियों का अन्त ऐसे ही देखने को मिलेगा । राजकुमार सिद्धार्थ ने चन्न से पूछा हम तो एक राजकुमार है तो मेरा भी ऐसा ही होगा, तो चन्न ने कहा राजकुमार दुनिया के सभी प्राणियों के देहावसान की यही कहानी है ।

[कई किताबों में या ग्रन्थों में रोते हुए हितैशी लोग एक मृत शरीर को उठाकर ले जाने का दृश्य देखने का उल्लेख मिलता है ।]

उस दिन भी चिन्तीत होकर राजकुमार सिद्धार्थ राजमहल में वापस लौट आये । राजा शुद्धोदन एवम् राजमहल के सभी लोगों को चिन्ता सताने लगा। पूर्व निमित्त बताने वाले ब्राह्मण पण्डितों के अनुसार राजकुमार सिद्धार्थ द्वारा चार निमित्तों से तीन निमित्त देखने के बाद संसार त्यागने का मन बढ़ता गया । राजा ने सोचा कि आखिरी निमित्त सन्यासी (प्रवाज्जित व्यक्ति) को देखना बाकि को सोचकर राजा ने एक आदेश का प्रचार कराया कि कपिलवस्तु राज्य के अन्दर कोई भी प्रवज्जित, सन्यासी, व साधु को नहीं आने दिया जाये । इस आदेश को मना करने के लिए राजा शुद्धोदन ने राजपुरुषों को भी अपने इस काम में लगा दिया ।

प्रवज्जित (संयासी को देखना)

कुछ दिन गुजर जाने के बाद फिर से राजकुमार उद्यान क्रिड़ा जाने का मन बनाया । इस बार भी थोड़ी दूर जाने के बाद बहुत शान्त स्वभाव से चलने वाले एक संयासी (प्रवज्जित) व्यक्ति को देखा । सिद्धार्थ कुमार

बचपन से ही संयासी ब्राह्मणों से वेद, वेदांग, शिल्प शास्त्र आदि ग्रहण करते समय संयासियों के बारे में उनके दिल व दिमाग के अन्दर एक छाया बैठा हुआ था । फिर भी चन्न से पूछे चन्न यह कौन है ? रथाचार्य चन्न अमात्य ने कहा राजकुमार जरा, रोग, बुढ़ापा, व मृत्यु आदि जैसे अति दुखदायी स्वभाव से मुक्त होने के लिए गृह त्यागकर, प्रवज्जित होकर शान्त स्वभाव का एक श्रमण अर्थात् एक संन्यासी के बारे में उन्हें विस्तार पूर्वक बताया। रथाचार्य चन्न की बात सुनकर सिद्धार्थ घर-द्वार छोड़ने का उत्साह और दृढ़ हो गया । उस दिन उद्यान में जाकर उद्यान क्रिड़ा करके हँसी-खुशी से समय बिताया । राजा शुद्धोदन राजकुमार सिद्धार्थ के स्वभाव के परिवर्तन को सुनकर उसको खुश (प्रशन्न) करने के लिए उद्यान क्रिड़ा के स्थान पर रूप सम्पत्ति नृत्यांगना सहित गीत वाद्य से परिपूर्ण गायक-गायिकाओं को भी भेजा। सभी संगीतकार और नृत्यांगना अपने-अपने ढंग से राजकुमार को प्रसन्न करने के लिए बहुत प्रयास किया लेकिन राजकुमार सिद्धार्थ द्वारा पहले से देखा हुआ जरा-जीर्ण बुढ़ा व्यक्ति, जरा जीर्ण रोगी, सड़ा हुआ मृत शरीर इन तीनों के बारे में गंभीरता पूर्वक सोचा कि यह शरीर दुर्गन्ध है, रक्त मांसों से बधा हुआ है । सभी नृत्यांगनाओं व संगतीकारों का नृत्य व संगीत देखने के बाद राजकुमार ने बोला कि यह सब कंकाल है और नाचने-गाने वालों को अपने दिल की बात का एहसास नहीं होने दिया । उन सबके बीच में अपना समय बिताया ।

सन्ध्या समय में अपने मंगल शुभ वेला में अच्छा से नहा-धोकर साफ होने के बाद कपड़ा पहनाने वाले विशेष अमात्य आकर राजकुमार सिद्धार्थ को किमती वस्त्रों व स्वर्ण आभूषणों से सुशोभित किया । पण्डित ब्राह्मण लोगों के स्तुति-स्त्रोत गायन के बीच से राजमहल जाने को रथारुढ़ हो गये (रथ पर सवार हो गये) । रथ पर चढ़ने के पश्चात् राजा शुद्धोदन द्वारा भेजा हुआ एक अमात्य ने कहा कि राजकुमारी यशोधरा ने एक पुत्र को जन्म दिया है । यह शब्द सुनते ही सिद्धार्थ के मुख से निकला राहुल की उत्पत्ति हुआ है अर्थात् एक बन्धन में बध गया । (अंक 24)

उद्यान क्रिड़ा के समय राजा के आज्ञा के अनुसार एक राजपुरुष बालक की उत्पत्ति के बारे में सिद्धार्थ को खबर (सूचित) किया और सूचना सुनने के बाद जो सिद्धार्थ राजकुमार के मुख से निकला उस बात को राजा शुद्धोदन को बता दिया । इसलिए राजा शुद्धोदन भी सिद्धार्थ के पुत्र को राहुल के नाम से ही व्यवहार किया ।

सिद्धार्थ राजकुमार उद्यान क्रिडा के समय राजा के आज्ञा के अनुसार एक राजपुरुष बालक की उत्पत्ति के बारे में सिद्धार्थ को खबर (सूचित) किया और सूचना सूनने के बाद जो सिद्धार्थ राजकुमार के मुख से निकला उस बात को राजा शुद्धोदन को बता दिया । इसलिए राजा शुद्धोदन भी सिद्धार्थ के पुत्र को राहुल के नाम से ही व्यवहार किया ।

सिद्धार्थ राजकुमार उद्यान क्रिडा के बाद अपने रथ से पुरोहितों के साथ राजमहल में जाने के लिए निकले । रास्ते में एक प्रासाद के उपरी मंजिल से सिद्धार्थ राजकुमार को आते हुए देखकर कृषागौतमी (मृगजा) नाम की एक सुन्दर राजकन्या अपनी तेजस्वी सम्पन्न नेत्रों से, शान्त स्वभाव के, परिपूर्ण रूप-रंग से सुशोभित बोधिसत्व सिद्धार्थ को देखा । राजकुमार सिद्धार्थ को देखने के बाद कृषागौतमी के मुख से निकला कि ऐसे पुत्र की माँ भी विनम्र व शान्त स्वभाव की होगी, पिताजी का स्वभाव भी ऐसा ही होगा। जिस स्त्री का विवाह भी उनसे हो गया तो वह भी ऐसी ही होगी । ऐसा बोलकर उसने अपने मुख से उची आवाज (शब्दों) में एक गाथा का उच्चारण किया । (अंक 25)

संसारिक दुखों से मुक्ति पाने के लिए राजकुमार सिद्धार्थ बराबर सोचते रहे । बोधिसत्व सिद्धार्थ को कृषागौतमी की मधुरवाणी कान में आने के बाद सोचने लगे कि हमारी माताजी, हमारे पिताजी, और हमारी भार्या के विषय में विनम्र एवम् शान्त स्वभाव बोलने का उद्देश्य क्या है ? राग अग्नि, द्वेष अग्नि, तेज-अग्नि, मोह-अग्नि, मान, दृष्टि जैसे भयानक क्लेष पूरा समाप्त होने के बाद दिल और दिमाग ठण्डा होने और शान्त होने का अर्थ सिद्धार्थ ने लगाया । जो मैं खोज रहा हूँ, उस लक्ष्य तक पहुँचने के लिए कृषा गौतमी का यह शब्द मेरे लिए धैर्य देने वाला, एक जानकारी जैसे हुआ है । इसलिए हमारी ओर से कृषागौतमी को एक किमती वस्तु को भेंट करना आवश्यक है यह सोचकर सिद्धार्थ ने अपने गले के किमती माले को भेट के स्वरूप में कृषागौतमी को भेजवाया । सिद्धार्थ गृहस्थ जीवन छोड़कर निरन्तर सोचते रहे । महल में जाकर अपनी थकावट को दूर करने के लिए और शरीर को आराम देने के लिए सो गये ।

नींद से जागने के बाद सिद्धार्थ दृढ़-इच्छा से संसारिक जीवन छोड़ने के लिए सोचा लेकिन बचपन से हमको राजभोजन खिलाकर पंचकाम सम्पत्ति से परिपूर्ण कराकर बहुत धन खर्च करके हमारे भविष्य के अभियोदय (उन्नति)

के लिए मेरे पूज्य पिताजी ने काफी मेहनत किया । मेरा करुणा भरित पूज्य पिताजी को बिना सूचना दिये जाना अकृतज्ञता का लक्षण है । सिद्धार्थ द्वारा गृहस्थ जीवन छोड़कर जाने की पूरी कहानी राजा शुद्धोदन एवम् राजकुमारी यशोधरा को बहुत पहले से पूर्ण जानकारी थी । सिद्धार्थ महल छोड़ने से पहले अपने पिताजी राजा शुद्धोदन के पास जाने के लिए एवम् यशोधरा के पास भी जाने का मन बना लिया । बोधिसत्व सिद्धार्थ के शरीर से एक प्रभावी आलोक निकलता था अधिक अन्धेरे में रहने से इसका प्रभाव थोड़ी दूर तक फैलता था । राजा शुद्धोदन से मिलने के लिए उनके सिरहान तक चले गये तुरन्त उनके शरीर का आलोक प्रभाव फैल गया । राजा शुद्धोदन भी सदैव राजकुमार के गृह त्याग के बारे में चिन्ता करते रहते थे । इतना प्रभावी आलोक का (दृश्य) प्रभाव देखने के बाद राजा शुद्धोदन ने अपने राजपुरुषों से पूछा कि क्या आज इतना जल्दी सवेरा हो गया, राजपुरुषों ने कहा नहीं महाराज अभी तो मध्य रात्रि है । राजा शुद्धोदन अपेन सिरहान से उठकर पुत्र सिद्धार्थ का स्नेह भरे हृदय से स्वागत करने के बाद पूछा कि प्रिय पुत्र का इस मध्य रात्रि में यहाँ आने का उद्देश्य क्या है ? सिद्धार्थ ने जी पिता श्री कहकर सम्बोधित किया और कहा कि पिताजी अब हमारा गृहत्याग कर (घर संसार) जाने का समय नजदीक आ गया है । मुझे क्षमा कर देना पिताश्री और पूरे देशवासियों से भी हम माँफी चाहते हैं । यह कहते हुए सिद्धार्थ उस स्थान से चल दिये । राजा शुद्धोदन ने कहा मेरा प्रिय पुत्र राजसम्पन्न, विनित, सेवक सेविकाओं को छोड़कर जाने का मन क्यों बनाया ? यदि कोई वस्तु की जरूरत हो तो हमें बता देता हम तुरन्त पूरा कर देते । सिद्धार्थ ने कहा मेरे पूज्य पिताजी जो हम चाहते यदि उस इच्छा को आप पूरा करने में सक्षम हो तो मैं इस संसार को छोड़कर नहीं जाऊँगा। यदि पूरा करने में सक्षम न होने से हमें जाने का अवसर होगा। राजा शुद्धोदन ने कहा मेरे प्रियपुत्र जो आप चाहेंगे मैं उसे पूरा करने के लिए सक्षम हूँ । यदि मैं पूर्ण करने में असफल रहा तो आप घर संसार छोड़कर जा सकते हो । पूज्य पिताश्री हमारी आवश्यकता तीन है—(1) बुढ़ापा नहीं होना चाहिए, (2) हमारा, यौवन, रूप-रंग, यश के साथ दिखना चाहिए, सुन्दर सौम्य शरीर कभी भी किसी भी हालत में रोग ग्रस्त नहीं होना चाहिए और (3) मेरा शरीर कभी भी मृत स्वभाव में नहीं होना चाहिए । पूज्य पिताश्री रोगी, बुढ़ापा व मृत्यु से बचने का कोई भी उपाय हमको बता दीजिए। तब हम गृहस्थ जीवन छोड़कर नहीं जायेंगे । हम महल में ही रहेंगे।

इन तीन प्रकार का बन्दोवस्त नहीं करने से कल मेरा नहीं, आपका भी नहीं, हमारी छोटी माँ प्रजावती, यशोधरा, राहुल, नन्द और याति हितैषी लोग जरा आदि दुखों से व्याधि, मरण जैसे दुखों से मनुष्य आदि प्राणियों को मुक्त करने के लिए गृहस्थ जीवन छोड़ना आवश्यक है और इस राजमहल में रहकर यह काम कभी भी सम्भव नहीं है ।

राजा शुद्धोदन ने सोचा कि हमारा प्रयास सफल होने की उम्मीद बहुत कम है । आसित ऋषि जैसे महापण्डितों की भविष्यवाणियाँ सत्य होने जा रही है । अपने पुत्र सिद्धार्थ के तरफ देखा और कहा मेरे प्रिय पुत्र सिद्धार्थ जो आपने हमसे माँगा यह सब देने के लिए मैं सक्षम नहीं हूँ । महानुभाव सम्पन्न महापण्डित ऋषि बुढ़ापा रोगी व मृत्यु इन तीनों स्वभाव से मुक्त नहीं हो पाया जो तुमने मुझसे कहा वह अभी हमको समझ में आ रहा है । गृहस्थ जीवन (घर छोड़कर) छोड़कर जाने की अनुमति मैं दे रहा हूँ । तुम्हारा श्रेष्ठ उद्देश्य सफल होने के लिए मैं पूर्ण शुभकामना देता हूँ ।

पूज्य पिताश्री राजा शुद्धोदन से आज्ञा लेकर समभाव के साथ राजकुमार सिद्धार्थ अपने महल में वापस चले गये ।

दूसरे दिन सुबह राजा शुद्धोदन राजमहल के सभी अमात्यों को बुलाकर अपने और राजकुमार सिद्धार्थ के बीच हुए संवाद के बारे में विस्तार पूर्वक बताया और कहा कि उसमें कोई उपाय हो तो हमें बताओं ऐसा कहकर सबसे अनुरोध किया । सभी लोगों का कहना था कि विद्वान पण्डितों ने भविष्य वाणी की है कि राजकुमार सिद्धार्थ चक्रवर्ती राजा या गृहत्याग दोनों में से एक 29 वर्ष की आयु से पहले ही होना है । वर्ष पूरा होने के लिए अभी सात दिन बाकि है । यह सात दिन पूर्ण होने तक किसी भी किमत पर राजकुमार को राजमहल में रोके रखने का व्यवस्था किसी तरह से करने के लिए शाक्य समूह ने निर्णय लिया । इसके अनुसार उसी दिन से राजधानी के दक्षिण द्वार पर धौतोदन शाक्य राजा के साथ पाँच सौ शाक्य राजकुमार, पश्चिम तरफ के द्वार पर शुक्लोदन शाक्य राजा के साथ पाँच सौ शाक्य राजकुमार, उत्तर द्वारा पर अमितोदन शाक्य राजा के साथ पाँच सौ शाक्य राजकुमार और पूर्व द्वार पर स्वयं महाराजा शुद्धोदन रखवाली करने का निर्णय लिया । राजधानी के राजमहल से बाहर सभी चौराहों पर वयोवृद्ध राजाओं से रखवाली करने के लिए व्यवस्था कर दिया । राजधानी के अन्दर देखभाल करने का कार्य महानाम राजकुमार को सौंप दिया ।

इसी तरह पूरा सात दिन बिना सोकर सभी राजधानी के अन्दर और बाहर सभी स्थानों पर रखवाली किया ।

शुद्धोदन महाराजा और अन्य शाक्य राजा लोगों के कार्यक्रम के बारे में सिद्धार्थ राजकुमार को पूर्ण रूप से पता लग गया । महाप्रजावती गौतमी भी राजधानी के सभी प्रासादों में रहने वाली स्त्रियों को कहा कि रात को न सोकर राजकुमार सिद्धार्थ का राजमहल छोड़कर जाने के कार्यक्रम के बारे में जानकारी रखने के लिए कहा ।

सिद्धार्थ बोधिसत्व भी यह सात दिन केवल संसार के दुखों के बारे में ही अवलोकन करते रह गये । इस सात दिन को एक तपस्वी के रूप में समय बिताया । महाराजा शुद्धोदन और राजकुमार सिद्धार्थ के बीच में जो वार्तालाप हुआ वह किसी से छिपा नहीं था । इस सम्पूर्ण घटना की जानकारी राजकुमारी यशोधरा को भी थी । किसी दिन सिद्धार्थ राजकुमार के साथ महल छोड़कर जाने की इरादा रखने वाली यशोधरा घटना के बारे में सब कुछ जानते हुए भी शान्त स्वभाव से अपना जीवन बिताया लेकिन यशोधरा का चित्त विचलित करने की एक घटना भी हुआ । सातवें दिन यशोधरा समय से पहले सो गयी और स्वप्न में देखा कि राजकुमार सिद्धार्थ यशोधरा को छोड़कर तपस्वी होने के लिए चले गये । इस स्वप्न के बारे में देवी यशोधरा राजकुमार सिद्धार्थ को पूरी घटना बता दिया । कहा आप जहाँ जायेंगे हम भी आपके साथ चलूँगी । सिद्धार्थ बोधिसत्व ने कहा हम अनन्त दुखित संसार से मुक्त होने का मार्ग प्राप्त करने के लिए यह संसार छोड़कर जा रहा हूँ । जो हम प्राप्त करेगे उस स्थिति तक हम तुमको भी ले जायेंगे । इस काम में बहुत पीड़ा है, कठोरता है । तुम्हारे पास एक छोटा पुत्र भी है । तुम बहुत सौम्य हो, एक स्त्री भी हो, जो हम करने के लिए निकल रहे है । एक साथ जाने से हम सफल नहीं होंगे । हम विमुक्ति मार्ग का अबोध करने के बाद सभी लोगों को इसका सुख प्राप्त करने का अवसर प्रदान करेगे । उस दिन तक अपने पुत्र का पालन-पोषण करना आपको किसी भी सामाग्री की कमी नहीं होगी । सभी सम्पत्ति आप के पास है । हमारे पिताश्री महाराज शुद्धोदन छोटी माँ महाप्रजावती तुम्हारी देखभाल करेंगे । देवी यशोधरा स्वामी भक्ति से परिपूर्ण, विनित, बुद्धिमान होने के कारण जो सिद्धार्थ राजकुमार ने कहा वह सभी बात मान लिया । प्रिय विप्पयोग से होने वाला दु:ख वेदना को सह लिया ।

परिच्छेद - 9

प्रार्थना पूर्ण होने के बाद हम लोगों को देखने अवश्य आना

महाभिनिष्क्रमण

बहुत जल्द ही अपने स्वामी राजकुमार सिद्धार्थ द्वारा संसार त्याग देने की घटना के बारे में देवी यशोधरा सोचती रही । हम भी थोड़े समय के बाद उसके पास चली जाऊँगी । चिन्ता भरे मन से यशोधरा श्रीयहन हो गयी। राजकुमार सिद्धार्थ भी चिन्तीत होकर अपने शयनासन में बैठ गये । नृत्यांगनाएँ आकर अपने ढंग से नृत्य-संगीत शुरू किया लेकिन राजकुमार सिद्धार्थ इन सब के उपर ध्यान नहीं दिया और सो गये । राजकुमार के लिए नृत्य-संगीत निर्थरक लग रहा था । हम लोग भी सो जायेंगे कह कर अपना-अपना वाद्य-भाण्ड उसी स्थान पर छोड़कर सभी नृत्यांगनाएँ व वादक मण्डली सो गये । मध्य रात्रि में सिद्धार्थ राजकुमार नींद से जग गये और अपने शयनासन में बैठकर इधर-उधर देखना शुरू किया । सोये हुए नृत्यागनाओं का विप्ररूप देखने को मिला । किसी का पूरा मुख खुला हुआ है, कोई खर्राटे ले रहा है । किसी के मुख से गन्दा थूक निकल रहा है, कोई स्वप्न से बड़बड़ा रहा है, कोई रोती है, कोई नग्न है, किसी का बाल बिखरा हुआ है । यह सब देखने के बाद सिद्धार्थ के मन में आया कि हम एक मृत शरीरों के ढेर पर टिके हुए हैं । थोड़ी देर पहले यह सभी नृत्यांगनाएँ दिव्यांगना दिखाई दे रही थी, अभी इन सभी की हालत प्रियजनक नहीं है । गृहस्थ जीवन एक (मिरंगु) मृगमरिचिका है । इसलिए आज ही संसार त्याग देने का उचित समय है ।

सात दिन तक रखवाली करते-करते सभी लोग थकावट से नींद में आ गये और सो गये । जाने से पहले यशोधरा से भी बात करके पुत्र राहुल को भी गोद में लेकर जाना उचित सोचकर यशोधरा के श्रीयहन की तरफ पैर बढ़ाया दरवाजे तक चला गया । दरवाजा खोला, परदा हटाया । यशोधरा के शयनकक्ष में चन्दन तेल से जलते हुए दीप के सुगन्ध के साथ-साथ

चमेली (जैसमीन) फूलों के श्रीयहन पर यशोधरा की गोद में कुमार राहुल के साथ सो रही थी । पैर का शब्द सुनकर देवी यशोधरा जाग गयी । दोनों इस महान कार्य के बारे में विचार-विमर्श किया । देवी यशोधरा ने राजकुमार सिद्धार्थ से कहा आपका प्रार्थना सभी प्रकार से सार्थक होगा । उसके बाद हम लोगों को भी देखने के लिए अवश्य आना । यह कहकर देवी यशोधरा आँसु भरे आँखों से बोधिसत्व सिद्धार्थ का दोनों पैर छूकर आशिर्वाद लिया। महल से नीचे जाकर चन्न घुडसवार को बुलाकर कहा तुम अपने घोड़े को तैयार रखो और राजकुमार के लिए कन्थक को भी तैयार करो । (कन्थक राजकुमार सिद्धार्थ का निजी घोड़ा था और चन्न राजकुमार सिद्धार्थ का निजी घुड़सवार है ।)

निजी घुड़सवार चन्न को भी राजकुमार सिद्धार्थ का महल छोड़कर जाने की पूरी बात मालूम था । यशोधरा की आज्ञा मिलने के बाद चन्न ने राजकुमार सिद्धार्थ से पूछा कि आप मध्य रात्रि में कहाँ जाना चाहते है। राजकुमार सिद्धार्थ ने कहा कि मैं गृह-त्यागकर प्रव्रज्जित होने के लिए निकल रहा हूँ। चन्न ने कहा स्वामी अपने माता-पिता, यशोधरा और राहुल, अपने ञाति और इतना धनाढ्य कपिल वस्तु राज्य छोड़कर मत जाइये, बोलकर रोना शुरू कर दिया । लेकिन बोधिसत्व सिद्धार्थ चन्न को बहुत शान्ति करुणापूर्वक विस्तार से अपना उद्देश्य बता दिया ।

तत्पश्चात चन्न कंथक अश्व को सजाकर ले आया । बोधिसत्व सिद्धार्थ कंथक अश्व का सिर अपने हाथ से प्यार भरे दिल से सहलाकर उस पर बैठ गये । चन्न अपने घोड़े पर बैठ गया । दोनों अपने गन्तव्य के लिए पूरब दिशा में निकले और जाते समय मन में यह विचार आया कि यदि पिताश्री राजा शुद्धोदन को थोड़ी भी भनक लग गयी तो किसी भी तरह हमें जाने नहीं देंगे । लेकिन हमारे पिताजी हमकों बहुत प्यार करते हैं । राजकुमार सिद्धार्थ अपने प्यार भरे दिल को सम्हाल कर अपने मुख से कहा प्रिय पिताश्री प्रिय वस्तुओं से अलग होना भी एक दु:ख है । लेकिन मुझे उद्देश्य पूर्ण करने के लिए हमको महल से निकलने के लिए आज्ञा दीजिए । मेरा उद्देश्य पूर्ण होने पर मैं आपसे मिलने अवश्य आऊँगा । पूर्व दिशा के दरवाजे के पास जाते ही राजकुमार सिद्धार्थ को देखते ही द्वारपाल ने तुरन्त दरवाजा खुलवाया । थोड़ी दूर जाने के बाद मध्यरात्रि में शाक्य कुमार महानामा से सामना हुआ । महानामा कुमार ने कहा प्रिय सिद्धार्थ आप कहाँ जा रहे हैं।

कल आपको चक्रवर्ती राजा का पद मिलने वाला है । ऐसा कहकर राजकुमार सिद्धार्थ के जाने का रास्ता रूकवाया ।

पालि अट्ठकथा में महानामा शाक्य राजकुमार के रूप में बसवर्ती मार दिव्य पुत्र आकर सिद्धार्थ के जाने का रास्ता रूकवाया । सीलवान, गुणवान व धार्मिक लोगों को अच्छा काम करने से रोकने का काम वसवर्ती मार दिव्य पुत्र का कार्य है । थेरवाद परम्परा में इसी मत का अनुमोदन किया।

बोधिसत्व राजकुमार किसी भी बात का ध्यान न देकर शाक्य राजधानी को पार कर लिया । तत्पश्चात् कोलिय राजा की राजधानी को पहुँचे, कोलिय राज्य के बाद मल्ल राज्य तक पहुँच गये । भोर होते ही अनोमा नदी के तट पर पहुँच गये और पहुँचकर थोड़ा विश्राम किये तत्पश्चात् अनोमा नदी के दूसरी तरफ साफ-सुथरा बालू के रेत पर जाकर अपना हाथ, पैर व मुँह धोया । अनोमा नदी बहुत चौड़ी और बहुत बड़ी नदी नहीं थी । उस नदी को घोड़े के माध्यम से पार किया जा सकता था और पैदल भी पार कर सकते थे । चाँदनी सौम्य रात्रि थी अपने दाहिने हाथ में तलवार लिये और तलवार से केशाच्छेदन (बाल को काटना) किया ।

[संस्कृत ग्रन्थों के अनुसार योजन का मतलब एक योजन माप के अनुसार 12 कि.मी. के हिसाब से गिना जाता था ।]

इन्होंने ने अधिष्ठान किया यदि हमारा उद्देश्य पूर्ण होना होगा तो ये केशमण्डल आसमान में ही रह जायेगा, ऐसा सोचकर पूरे केशमण्डल को आसामान में छोड़ दिया । (अंक 27) ।

बाकि सभी वस्तुएँ मुकुट, देकर कहा चन्न यह सभी सामान ले जाकर हमारे प्रिय पिताजी को दे देना । तत्पश्चात् सिद्धार्थ बोधिसत्व तपस्वी भेष धारण किया । तपस्वी भेष धारण करके अजिव अष्टांगिक शील को ग्रहण किया। (अंक 28)

सभी राजवस्त्र राजाभरण व मुकुट हाथ में लेने के पश्चात् चन्न रो पड़ा। कहा मैं भी तपस्वी बनना चाहता हूँ अथवा प्रवज्जित होना चाहता हूँ ।

तपस्वी सिद्धार्थ ने कहा तुम अभी तपस्वी मत बनो हमारे पूज्य पिताश्री माता प्रजावती, यशोधरा, व नन्द और ञाति किसी को भी हमारे प्रव्रज्जित होने की कोई खबर नहीं है । इसलिए तुम मेरे घोड़े के साथ सभी राजवस्त्र ले जाकर कपिलवस्तु में हमारे पिताजी को सौंप देना और साथ ही साथ

हमारे प्रव्रज्जित होने की खबर भी देना । मेरा उद्देश्य पूर्ण होने के पश्चात् तुमको भी मैं अपने शरण में लूँगा । इसलिए अप्रमाद (देरी न करके) जाओ । अपने प्रिय स्वामी से अलग होने का एहसास कंथक घोड़े को हुआ। घोड़ा कंथक स्नेह भरे हृदय से तपस्वी सिद्धार्थ के दोनों पैर को अपने मुँह से सूँघा और सूँघने के बाद सौम्य नेत्र से तपस्वी सिद्धार्थ को देखा। देखने के बाद घोड़ा कंथक और घुड़सवार चन्न दुःखी मन से उनसे विदा हुए । बोधिसत्व सिद्धार्थ भी दोनों की ओर देखते रह गये । थोड़ी दूर जाने के बाद प्रियेही विप्प योगो (प्रिय लोगों से अलग होने) का दुःख सह लेने की शक्ति नहीं होने के कारण घोड़ा कंथक मर गया । (अंक 29)

घुड़सवार चन्न ने घोड़ा कंथक को सम्मानपूर्वक पूजा-विधि के साथ दफनाकर कपिलवस्तु के लिए निकल पड़ा ।

(वर्तमान समय में कपिलवस्तु राजधानी में राजा शुद्धोदन ने महल के महभिनिष्क्रमण द्वार (राजमहल छोड़कर जाते समय) से थोड़ी दूर पर घोड़ा कंथक के नाम से एक स्तूप का अवशेष अभी भी दिखाई पड़ता है । यह लुम्बिनी शाल उद्यान से 25-30 कि.मी. दूर तिलोर कोटा नामक प्रदेश से जाना जाने वाले प्रदेश में कंथक के स्तूप का अवशेष दिखाई देता है ।

सिद्धार्थ तपस्वी अनोमा नदी को पार करके आगे बढ़ रहे थे कि एक आदिवासी वृद्ध व्यक्ति आ रहा था । वह व्यक्ति तपस्वी सिद्धार्थ के एकदम सामने आ गया । उसके हाथ में एक धनुष और उसके पीठ पर धनुष का तरकस के साथ एक पात्र व गठरी भी था । (अंक 30)

सिद्धार्थ तपस्वी आदिवासी के गठरी के बारे में विचार-विमर्श किया और उन्होंने पूछा की इस गठरी में क्या है । आदिवासी ने गठरी जमीन पर रखकर और उसे खोलकर दिखाया । उस गठरी में पके हुए धान के रंग का चीवर और पात्र जैसे सामाग्री था । सिद्धार्थ तपस्वी ने पूछा कि यह सब कहाँ ले जा रहे हो इस पर आदिवासी ने बोला यह सब मैंने एक पेड़ के कोटर से प्राप्त किया है । इसे जरूरत मन्द कोई तपस्वी को देने के लिए ले जा रहा हूँ । सिद्धार्थ तपस्वी ने बोला हम भी एक तपस्वी है और यह सभी सामान मेरे काम में आयेगा इसे हमें दे दीजिए । यह बात सुनकर आदिवासी व्यक्ति सिद्धार्थ तपस्वी को अपनी गठरी में पड़ा हुआ चीवर, पात्र आदि सभी का दान कर दिया । सिद्धार्थ तपस्वी यह सब ग्रहण करके पूर्ण रूप से तपस्वी का भेष ग्रहण किया ।

सिद्धार्थ तपस्वी एक नजदीक आम के बगीचे में चले गये । मल्ल राज्य की आखिरी सीमा पर यह आम का बगीचा था । उस आम के बगीचे का नाम अनुप्रिय था ।

अनुप्रिय आम के बगीचे में एक सप्ताह

बचपन से लेकर आज तक यानि 29 वर्ष की आयु तक प्रियमित्रगण, राज्य सभा, राजपुरुष नाच-गाना जैसे अविवेकी जिन्दगी बिताने वाले सिद्धार्थ तपस्वी को अनुप्रिय आम के बगीचे में अकेला जिन्दगी से मन में शान्ति मिला । दुनिया की सच्चाई, जिन्दगी की सच्चाई समझने के लिए भीड़-भाड़ से अलग होना आवश्यक है । इस तरह समय बिताने से सिद्धार्थ तपस्वी को बहुत आराम भी मिला । आराम के साथ-साथ प्रीति तथा अनुराग का भी एहसास हुआ । जीवन के बारे में अपने मन से विचार-विमर्श करते रहे । उस समय सिद्धार्थ तपस्वी को भूख-प्यास का एहसास भी नहीं हुआ । सिद्धार्थ तपस्वी ने सोचा कि हमारे वियोग से पूज्य पिताजी, छोटी माँ, पत्नी यशोधरा, नन्द सभी ञाति लोगों के हृदय किसी को शोक, सन्ताप, दुख, वेदना, चित्त पीड़ा न होने का अधिष्ठान किया । काय चित्त विवेक से अनुप्रिय आम के बगीचे में एक सप्ताह का समय व्यतित किया।

अनुप्रिय आम के बगीचे से निकल कर एक सप्ताह के बाद शाक्या ब्राह्मनी नाम से प्रसद्धि एक तपस्वीनी के आश्रय में चले गये । तपस्वीनी सिद्धार्थ तपस्वी को भोजन आदि सामाग्री से आगन्तुक (अतिथी) जैसा सत्कार किया लेकिन जो सिद्धार्थ तपस्वी खोज रहे थे (अध्यात्मीक शिक्षा) वहाँ नहीं मिला और न मिलने के कारण आगे के लिए निकल पड़े । कुछ समय के बाद एक पद्दमा नामक प्रसिद्ध तपस्वीनी के आश्रम में पहुँच गये । पदमा तपस्वीनी भी सिद्धार्थ तपस्वी का आदर-सत्कार से भरपूर स्वागत किया । पद्दमा तपस्वीनी से भी कुछ अध्यात्मिक शिक्षा ने मिलने के कारण उस आश्रम को भी छोड़ दिये । तत्पश्चात् कालदेवल के नाम से प्रसिद्ध एक ऋषि के आश्रम में चले गये । वहाँ भी सिद्धार्थ तपस्वी को अध्यात्मिक ज्ञान नहीं मिला । उस आश्रम में से भी निकलकर सिद्धार्थ आगे राजगृह के तरफ बढ़े । राजगृह के नजदीक यज्ञ होम व्रत पूरा करने वाले तपस्वी समूह में रहने वाले भार्गव बोधिसत्व सिद्धार्थ का बहुत आदर से स्वागत किया । सिद्धार्थ ने भार्गव तपस्वी से उनके धर्म के बारे में विचार-विमर्श किया ।

सिद्धार्थ तपस्वी को समझ में आया कि यज्ञ होम व्रत से आगे कुछ भी अध्यात्मिक उन्नत्ति के लिए इधर से कुछ मिलने वाला नहीं है ।

सिद्धार्थ तपस्वी के आश्रम छोड़कर जाते समय आश्रम में रहने वाले वयोवृद्ध तपस्वी ने सिद्धार्थ को बताया कि आप जिस धर्म को खोज रहे है उस धर्म की शिक्षा देने वाले आलार नामक एक तपस्वी वैशाली नगर के विन्ध्यकोष्ठ नाम आश्रम में रहने की सूचना दिया । सिद्धार्थ तपस्वी को वैशाली जाने के लिए राजगृह से होते हुए गंगा नदी को पार करना था । तपस्वी सिद्धार्थ पहले राजगृह की ओर जाने के लिए प्रस्थान किये और दूसरे दिन सुबह राजगृह पहुँच गये । उनके पिण्डपात जाने का समय आ गया। भिक्षापात्र हाथ में लेकर भिक्षा माँगने के लिए निकल पड़े । उस समय राजगृह का राजा बिम्बिसार तपस्वी सिद्धार्थ का एक अदृश्य मित्र थे । सिद्धार्थ ने सोचा यदि हमारे आने की सूचना राजा बिम्बिसार को पता चल गया तो बहुत सत्कार, सम्मान संग्रह भरपूर मिलेगा लेकिन मैंने किसी का सत्कार-सम्मान लेने के लिए गृह त्याग नहीं किया है जो हमको भिक्षा में मिलेगा उसी से हम सन्तुष्ट रहेंगे । हमारे इस जीवन के लिए भिक्षा माँगना एक श्रेष्ठ कार्य है । ऐसा सोचकर एक अनुक्रम से भिक्षा लेने के लिए निकल पड़े । राजगृह के वासी आम जनता इतना सुन्दर परिपूर्ण व्यक्ति को जीवन में कभी भी नहीं देखा था । सिद्धार्थ तपस्वी के रूप से मोहित नगरवासी सिद्धार्थ तपस्वी को जब देखा तो देखते ही रह गये । सभी ने कहा यह तो कोई मनुष्य नहीं हैं बल्कि महाब्रह्म भेष लेकर धरती पर आने की शंका व्यक्त किया । किसी ने कहा यह न तो मनुष्य है और ब्रह्म भी नहीं है। कभी-कभी धरती पर आने वाले देवता का अवतार हो सकता है । किसी ने कहा यह ब्रह्म का अवतार है, किसी ने कहा चन्द्रमण्डल का चन्द्रराजा है । किसी ने कहा सूर्य मण्डला अधिपति का सूर्यदिव्य राजा है। किसी ने कहा यह तो अनंग है अर्थात् प्रेम का देवता । सभी लोग नानाविधि ढंग से अपना-अपना विचार-विमर्श किया । लेकिन किसी ने कोई भी गम्भीरता पूर्वक विचार-विमर्श नहीं किया । किसी ने कहा जो आप लोग बोल रहे है यह वह व्यक्ति नहीं है बल्कि दुनिया के कल्याण के लिए इस धरती पर पैदा हुआ एक श्रेष्ठ मनुष्य है ।

सिद्धार्थ तपस्वी के राजगृह आने की सूचना राजगृहवासी और राजपुरुषों को भी मिल गया था । राजपुरुष लोग राजमहल में जाकर राजाविम्बिसार से कहा महाराज राज्य को भविष्य में एक बहुत बड़ा शान्ति होने को है।

देवता है या मनुष्य उसका तो हम लोगों को जानकारी नहीं है । रूपश्री से परिपूर्ण एक पुण्यवान तपस्वी नगर में भिक्षाटन कर रहा है। थोड़ी देर के बाद राजा विम्विसार अपने महल के उपरी हिस्से की खिड़की से नगर की ओर देख रहे थे । आश्चर्य से सुन्दर, मृदुल हाथ-पैर से युक्त, साफ-सुथरा प्रज्जवलित वर्ण से परिपूर्ण, देखने वालों का हृदय पूर्ण सन्तुष्ट करने वाले और गति से जाने वाले व्यक्ति को देखकर सोचा यदि यह दृश्य किसी देवता का होगा तो वह आगे जाकर अदृश्यमान हो जायेगा । यदि कोई मनुष्य होगा तो अपना भिक्षाटन लेकर किसी जगह जाकर उसे ग्रहण करेगा । राजा बिम्बिसार ने राजपुरुषो से कहा अतिशीघ्र जाकर इसकी सच्चाई के बारे में हमें सूचित करो ।

पालि अट्ठकथा में यह घटना अषाढ़ी पूर्णिमा से आठ दिन के बाद होने का उल्लेख मिलता है । लेकिन सर्वास्तीवादी महायान ग्रन्थों में इसका कुछ उल्लेख नहीं मिलता है ।

भिक्षाटन करके जाते समय बोधिसत्व सिद्धार्थ ने सामने से आने वाले व्यक्तियों से पूछा कि इस स्थान पर आने वाले साधु, संयासी, तपस्वी कहाँ ठहरते हैं । हाथ के द्वारा इशारा करके एक व्यक्ति ने कहाँ उस तरफ एक पाण्डव नामक पर्वत है । उसी पर्वत पर पूरब के तरफ साधु-संयासी तपस्वी लोग ठहरते है । बोधिसत्व सिद्धार्थ उसी पाण्डव पर्वत पर एक पत्थर की गुफा में जाकर अपना भोजन ग्रहण किया । राजा बिम्बिसार के राजपुरुष भी सिद्धार्थ तपस्वी जिस ओर जा रहे थे उनके पीछे-पीछे चले गये । वह भोजन करने के लिए बैठे, उनके बैठ जाने के बाद राजपुरुष वहाँ से वापस आकर जो कुछ देखा था राजाबिम्बिसार को घटना के बारे में विस्तारपूर्वक बता दिया।

राजा ने सोचा यह तो अवश्य ही कोई मनुष्य है लेकिन और मनुष्यों से अलग व्यक्ति होना निश्चित है । एक अद्भूत व्यक्ति राजा ने सोचा स्वयं जाकर उसके बारे में जानकारी किया जाय । राजा बिम्बिसार राजपुरुषों के साथ उस स्थान पर पहुँच गये ।

सिद्धार्थ तपस्वी को देखने के बाद राजा बिम्बिसार उनके रुप, शोभा, को देखकर वसीभूत हो गये । सिद्धार्थ तपस्वी के बगल में बैठकर बातचीत शुरू किया । राजा बिम्बिसार ने कहा आप बहुत ही सौम्य है, अभी युवा है और भिक्षाटन करना आप जैसे व्यक्ति को शोभा नहीं देता है । अंग और

मगध दोनों राज्य बहुत विशाल एवम् सर्वसम्पन्न है । पूरे प्रदेश को हम दो भाग में बाँट देंगे और हम आधा आप को दे देंगे । आधा पर हम रहेंगे और दोनों मिलकर इस पर राज्य करेंगे ।

बोधिसत्व सिद्धार्थ राजा बिम्बिसार के कथन को सूने और सुनकर सोचने लगते है कि राजा बिम्बिसार हमको पहचान नहीं रहे हैं इसलिए हमको अपना परिचय उन्हें देना आवश्यक है । तपस्वी सिद्धार्थ ने कहा, महाराज भूमि प्रदेश से अतिविशाल कोशल राज्य के अन्तर्गत शाक्य नामक राज्य से प्रसिद्ध एक राजधानी हिमालय पर्वत के पाद मूल में स्थित है । बहुत पहले के परम्परा से अपने अधिकार के रूप में वह राज्य वाला सूर्यवंसिक शाक्य के नाम से जाने जाना वाला एक परम्परा है । जरा, व्याधि, मरण, शोक जैसे दुखों से मुक्ति पाने के लिए मैं शाक्य कुल से निकलकर सभी पंचकाम सम्पत्ति छोड़कर एक तपस्वी बन गया । मैं जरा, व्याधि, मरण जैसे दुखों से मुक्ति प्राप्त करने का मार्ग खोजते-खोजते आगे बढ़ेंगे । इसलिए आप जो कुछ मुझे देने वाले है, वह मेरे कोई भी काम नहीं आयेगा ।

बोधिसत्व सिद्धार्थ की बात सुनते ही राजा बिम्बिसार ने पूरी कहनी को समझा । राजा बिम्बिसार ने कहा पूण्यवान हमने सुना है कि शाक्य प्रदेशपति राजा शुद्धोदन के पुत्र राजकुमार सिद्धार्थ चार पूर्व निमित्त देखने के बाद गृहस्थ जीवन छोड़कर विमुक्ति प्राप्त करने के लिए तपस्वी हो गये। वचपन से ही भेट-उपहार लेन-देन से हम लोगों को मित्रवत (मित्रत्व) बहुत अच्छा था । आपको देखकर मैं बहुत खुश हो गया । पूण्यवान आपकी मनोकामना सफल हो, और जब आपका उद्देश्य पूर्ण हो तो उसके बाद आप हमारे राज्य में भी एक बार आ जाना । आपके द्वारा प्राप्त किया मृत्यु व सुख से विमुक्ति मार्ग हम लोगों को भी प्राप्त करने का मार्गदर्शन कीजियेगा । दोनों के साथ इसी वार्ता के बाद राजा बिम्बिसार अपने महल को चले गये। बोधिसत्व सिद्धार्थ उस दिन-रात गिज्जकूट (गृद्धकूट) पहाड़ पर एक आश्रम में रात बिताकर दूसरे दिन सुबह वैशाली नगर को जाने के लिए निकल पड़े ।

पशुबलि का विरोध

सिद्धार्थ गौतम तपस्वी वैशाली नगर जाने के लिए गंगा नदी पार कर उस तरफ जाना आरम्भ किया । रास्ते में एक अजपाल को पाँच सौ (500) भेड़ों को ले जाते समय देखा । उस भेड़ों के एकदम आखिरी में लड़खड़ाता

हुआ एक छोटा-सा भेड़ का बच्चा देखा। उसके साथ उसकी माँ भी थी। अजपाल किसी भी तरह से दया न करके एक डण्डे से दोनों को मार-मार कर आगे बढ़ा रहा था। बोधिसत्व सिद्धार्थ तपस्वी ने अजपाल से पूछे इन सभी को कहाँ ले जा रहे हो। अजपाल ने कहा हमारे महाराज को बहुत बड़ा गृहदोष है। उस दोष से बचने के लिए पुरोहित लोगों के कहने पर नजदीक के देवालय में देवता को बलि चढ़ाने के लिए इन सभी जानवरों को ले जा रहा हूँ। राजमहल की ओर से यह काम हमें सौंपा गया है। तपस्वी सिद्धार्थ ने कहा मैं भी उस स्थान पर चलूगाँ। इस छोटे से भेड़ के बच्चे को मत मारना। इस बच्चे को मैं गोद में ले लूँगा। इतना कहकर बोधिसत्व ने उस छोटे से भेड़ के बच्चे को अपने गोद में ले लिया और गोद में लेकर भेड़ों के साथ-साथ तपस्वी सिद्धार्थ भी चलने लगे। जानवर होने के बावजूद भी भेड़ के बच्चे की माँ को सिद्धार्थ तपस्वी के महाकरुणा स्वभाव का एहसास हुआ और वह भी तपस्वी सिद्धार्थ के पीछे-पीछे चलने लगी।

सिद्धार्थ बोधिसत्व सीधे पूजा स्थल तक चले गये। एक पुजारी तेजधार वाला तलवार लेकर पूजा आसन पर रखे हुए एक भेड़ का सिर काटने को तैयार था। सिद्धार्थ तपस्वी तुरन्त उस पुजारी का हाथ पकड़ लिया। बोधिसत्व सिद्धार्थ तपस्वी का चेहरा देखने के बाद पुजारी का मनोबल गिर गया और वह पीछे हट गया। उस स्थान पर राजा बिम्बिसार भी थे और राजा बिम्बिसार उस दृश्य को देखते ही रह गये, आश्यचर्य चकित हो गये। बोधिसत्व सिद्धार्थ ने राजा बिम्बिसार से कहा महाराज अहिंसक जानवर, प्राणी आदि की बलि देने से अपना दुख कम नहीं होगा बल्कि और बढ़ेगा। इससे और अधिक पाप होगा और विपत-संकट होगा। जो कभी भी कम नहीं होगा। यदि देवता के नाम पर जानवर सहित प्राणियों की बलि लेने वाला कोई भी हो, वह कोई देवता नहीं है अपितु दीन, हीन, राक्षस हो सकता है। राजा बिम्बिसार को बलि चढ़ाकर पूजा करने की बात गलत समझ में आया। राजा बिम्बिसार ने एक राजज्ञा से अपने राज्य में पशुबलि चढ़ाकर पूजाविधि पर पूर्णरूप से प्रतिबन्ध लगा दिया।

बोधिसत्व सिद्धार्थ वैशाली नगर में जाने के लिए गंगा नदी की ओर प्रस्थान किया।

परिच्छेद - 10

एक सप्ताह बाद चन्न घुड़सवार राजमहल में वापस आया

कपिलवस्तु नगर का हालचाल

सिद्धार्थ राजकुमार द्वारा अपना सब कुछ छोड़कर राजधानी से जाने की खबर सुनकर सभी नगरवासी रोना शुरू किया । पूरे राज्य का माहौल शोकाकुल हो गया । प्रजावती गौतमी बछड़ा खोया हुआ एक गाय के समान शोकभरित वेदना से जमीन पर लेटकर रोना शुरू किया । यशोधरा भी बेहोश होकर जमीन पर गिर गई । सेविकाओं द्वारा पानी छिड़कर मालिश करने के बाद देवी यशोधरा प्रकृति रूप में आ गयी । लेकिन हरदम रोती ही रही । यशोधरा देवी के साथ कुछ अनहोनी न हो इसलिए राजा शुद्धोदन स्वयं यशोधरा के पास जाकर राहुल कुमार व यशोधरा की देखभाल किया । राजकुमार देवदत्त को छोड़कर शाक्य कुल के सभी लोग अपने वंश की उन्नति रूक जाने की चिन्ता से ग्रसित चिन्तीत हो गये ।

एक सप्ताह के बाद चन्न महल पहुँच गये ।

चन्न का अपने जातिकुल की नर्मदा नामक एक कन्या से शादी हो गयी । सिद्धार्थ राजकुमार द्वारा कभी भी अपना घर छोड़कर संयासी होने की खबर पूरे कपिलवस्तु में फैल गया । यदि सिद्धार्थ राजकुमार संयासी हो गये तो, चन्न का भी उसी रास्ते पर जाने की इच्छा रखने वाला खबर फैल गया । इसलिए नर्मदा हर वक्त चन्न पर शक करती थी कि चन्न द्वारा राजकुमार सिद्धार्थ के लिए जो वफादारी दिखा रहे थे वह नर्मदा बर्दास्त नहीं कर पायी। सिद्धार्थ राजकुमार के साथ चन्न के जाने की खबर मिलने से नर्मदा गुस्से में अनाप-सनाप बोल रही थी । यह कहानी मुख्य परम्परा से अभी भी नेपाल के गाँवों में प्रचलित है ।

कपिलवस्तु में जिस किसी ने भी चन्न को देखा राजकुमार सिद्धार्थ के बारे में पूछना शुरू कर दिया । चन्न के आने की खबर यशोधरा को मिला, यशोधरा चन्न को बुलाकर पूछा राजकुमार कहाँ है ? तुम सब कुछ जानते

हुए भी छिपा रहे हो । धोखा देने के लिए अभी रो रहे हो । चन्न ने कहा— देवी रानी मैं एक सेवक हूँ । मालिक की आज्ञा पालन करना हमारा धर्म है। सिद्धार्थ को जाने से रोकने के लिए हमने हर सम्भव कोशिश किया। हमारी ओर से कोई भी गलती नहीं हुआ है । हमें माफ कीजिए । उसके बाद राजमहल के सभी लोगों को उसकी बात समझ में आ गया ।

महल से थोड़ी ही दूरी पर एक शाक्य बर्धन नामक प्रसिद्ध देवालय था । राजा शुद्धोदन ने उस देवालय में जाकर अपने पुत्र के लिए प्रार्थना किया । उसी समय एक आदिवासी अपने सिर पर गठरी रखकर आने का दृश्य कुछ लोगों ने देखा । गठरी बाहर से देखने पर ऐसा लग रहा था कि उस गठरी में कुछ किमती वस्तुएँ हो सकती है । लोग उस आदिवासी को ले जाकर राजा के सामने खड़ा कर दिया । राजा ने देखा इस गठरी में राजवस्तु, राजा आभरन है । राजा ने आदिवासी से पूछा यह तुमको कहाँ से मिला है और हमारे पुत्र सिद्धार्थ को कोई विपत्ति तो नहीं हुआ है । आदिवासी से बात करने पर राजा शुद्धोदन को सारी घटना के बारे में जानकारी मिली। राजा ने सोचा जो अपनी इच्छा से अपना राजवस्त्र और राजाभरन इस आदिवासी को दे दिया । यह सब तुम ले लो कहकर उसे जाने की अनुमति दे दिया। चन्न ने सिद्धार्थ का मुकुट लाकर प्रजावती गौतमी को दे दिया।

राजा, प्रजावती गौतमी, यशोधरा सभी लोगों का शोक, सन्ताप देखने के बाद कुछ अमात्य लोगों ने कहा कि आप लोग आज्ञा दें तो हम लोग जाकर कुमार सिद्धार्थ को वापस ला सकता हूँ । इस बात से लोग सहमत हो गये । पुरोहितों के कहने पर कुछ अमात्य लोग राजा शुद्धोदन की आज्ञा से कुमार सिद्धार्थ को वापस लेने के लिए चल दिये । सिद्धार्थ राजकुमार को वापस महल में लाने के लिए पुरोहितों के कहने पर राजा शुद्धोदन शाक्यवर्धन देवालय में देव पूजा किया ।

अमात्य लोग घोड़े पर सवार होकर बहुत तेजी से दूसरे दिन राजगृह होते हुए वैशाली जाते समय गंगा नदीं के किनारे एक बहुत बड़े वृक्ष के नीचे सिद्धार्थ तपस्वी को ध्यान मुद्रा में बैठकर ध्यान करने का दृश्य देखा। दृश्य देखने के बाद राजपुरुष बहुत खुश हो गयें । घोड़े से उतर कर तपस्वी सिद्धार्थ के पास जाकर शान्ति पूर्वक बैठ गयें । उन्हें राजमहल के शोका कुल हालात के बारे में अवगत कराया तत्पश्चात् राजपुरुषों ने कहा पिताजी

तथा अन्य लोगों को दु:ख देना किसी धर्म में नहीं आता है । आप कुछ दिनों तक राजासन पर आसीन होकर राज्य चलाइए । उसके बाद तपस्वी होने में कोई एतराज नहीं होगा । सिद्धार्थ तपस्वी राजपुरुषों की सभी बाते सुनी और सुनकर कहा माताजी, पिताजी का स्नेह कितना ऊँचा होता है उन सभी के बारे में हमें सब जानकारी है । लेकिन उससे अधिक जरा, व्याधि, मरण ये तीनों स्वभाव मेरे मन के अन्दर बहुत गहराई से बैठ गये हैं । इसलिए इससे मुक्ति पाने के लिए कोई मार्ग ढूढ़ने के लिए हम प्रयासरत हैं । परिवार और राजमहल के लोगों को खुशी देने के लिए मैं जा सकता हूँ लेकिन किसी दिन भी जरा मरण, व्याधि सामने आने से पुन: रोना-गाना शुरू होगा । आप लोग कहते है कि हमारे पिताश्री राजा शुद्धोदन, छोटी माँ प्रजावती गौतमी, यशोधरा आदि लोगों के हृदय में मेरे कारण दुख उत्पन्न हुआ है । लेकिन इस बात को मैं नहीं मानता हूँ । इस कारण जिन्दगी का यर्थाथ नहीं समझने वाला अविद्या है । माता-पिता, पुत्र-पुत्री, पति लोगों के साथ रहना एक स्वप्न जैसा है । उन लोगों के साथ रहकर अलग होने से दुख उत्पन्न होता है । जब तक हम इस संसार में रहेंगे तब तक इसी प्रकार का प्रिय, विप्रयोग होना स्वभाविक है और इस स्वभाव को रोका नहीं जा सकता है । अगर इससे मुक्ति पाना है तो संसार पार के विमुक्ति अर्थात् दुखी अनन्त संसार का अन्त करना आवश्यक है । इसलिए मैंने जो कदम आगे रखा है वह पीछे कभी नहीं हटेगा । हमारे मन में जो बात है किस उद्देश्य से हमने गृहत्याग किया है ? उस उद्देश्य को पूरा होने तक मुड़कर भी राजमहल के तरफ नहीं देखेंगे ।

सिद्धार्थ तपस्वी के बातों को सुनकर राजपुरुष लोग खड़े हो गये । सिद्धार्थ तपस्वी को प्रणाम करने के बाद उस स्थान से निकल पड़े । जाते समय राजपुरुषों ने सोचा कि हम लोग जाकर राजा से क्या कहेंगे । राजपुरुष आपस में मंत्रणा करने के बाद सिद्धार्थ तपस्वी की सुरक्षा के लिए अप्रसिद्ध वेश में कुछ राजपुरुषों को लगा दिया ।

परिच्छेद - 11

इसके आगे और कुछ होगा

बोधिसत्व सिद्धार्थ तपस्वी राजगृह से निकलकर वैशाली जाने के लिए गंगा नदी के किनारे आ गये । गंगा नदी को पार किया, वैशाली महानगर को जाकर उसके समीप एक विन्ध्यकोष्ठ आश्रम तक पहुँच गये । उस समय क्षत्रिय परम्परा के आलार नामक एक ऋषि तीन सौ (300) शिष्यों के साथ विन्ध्यकोष्ठ आश्रम में रहते थे । आलार ऋषि सप्त समापत्ति लाभी (आना-पानसती) के उस समय के एक प्रसिद्ध तपस्वी थे । समथ ध्यान मार्ग से अपने श्रावक गण को आंकिञ्आयतन (आकिंग आयतन) भूमि तक मार्ग दर्शन करते थे । बोधिसत्व तपस्वी सिद्धार्थ के आगमन से ऋषि आलार बहुत खुश हो गये । उन्होंने सिद्धार्थ बोधिसत्व को आश्रम में बैठकर ध्यान भावना करने का पूरा प्रबन्ध अपनी तरफ से किया । बोधिसत्व सिद्धार्थ तपस्वी उसी आश्रम में बैठकर अपना ध्यान-भावना करना शुरू किया । इस संसार में कई जन्मों से ध्यान करने के कारण आनापान सती में सिद्धार्थ का चित्त समाधि (चित्त की एकाग्रता) करने में आसान हो गया । थोड़े समय के बाद ही बोधिसत्व सिद्धार्थ तपस्वी को आकिंचायातनम् ध्यान प्राप्त हो गया । इस बात की जानकारी मिलने से आलार ऋषि बहुत प्रसन्न हुए । ऋषि आलार ने कहा कि हम अपने शिष्यों को दो भागों में बाँट देंगे, आधे लोगों को हम शिक्षा देंगे और आधे लोगों को बोधिसत्व सिद्धार्थ शिक्षा देगे। लेकिन उनकी यह बात सिद्धार्थ तपस्वी ने स्वीकार नहीं किया । उपासक-उपासिका जो कुछ भी लाते थे वह सब सिद्धार्थ तपस्वी को भेट करते थे। आश्रम के सभी धार्मिक कार्यों में ऋषि आलार तपस्वी सिद्धार्थ को ही आगे करते थे । बोधिसत्व सिद्धार्थ की समझ में आया कि आंकिचायातनम केवल एक समाधि मात्र है इसके बारे में आलार ऋषि से विचार-विमर्श किया । आलार तपस्वी ने कहा हमारे पास इतना ही है इसके आगे कुछ भी नहीं है । सिद्धार्थ बोधिसत्व ने सोचा इसके आगे और कुछ जरूर होगा । इसके बाद आलार तपस्वी से आज्ञा लेकर वहाँ से निकल पड़े ।

उद्दक रामपुत्त के पास जाना

बोधिसत्व सिद्धार्थ तपस्वी आगे और कुछ धर्म की खोज करने के लिए निकल पड़े । सिद्धार्थ तपस्वी को जानकारी मिली की मही नदी के उस पार उद्दक रामपुत्त नामक एक ऋषि रहते हैं । उस राज्य को अधिपति एक राजा भी अपने अमात्य परिषद के यमक, मुग्गल, उग्ग, नाविन्दकी, गन्धब्ब, अग्गिवेशना आदि विशिष्ट जन भी उद्दक रामपुत्त को अपना गुरु मानते थे। बोधिसत्व सिद्धार्थ तपस्वी भी सोचे कि हमको भी उस स्थान पर जाने से अवश्य कुछ मुक्ति मार्ग से धर्म के बारे में जानने को मिलेगा । बोधिसत्व सिद्धार्थ तपस्वी का उद्दक रामपुत्त के आश्रम में पहुँचने के बाद उन्हें सभी सुविधा देकर उनका सम्मान किया गया । उद्दक रामपुत्त उनको भी अपनाया हुआ कर्म स्थान की भी शिक्षा दी । उद्दक रामपुत्त के धर्मानुसार ध्यान भावना करने के पश्चात् बहुत जल्द ही सिद्धार्थ बोधिसत्व तपस्वी नेवसंज्ञा, ना संज्ञा की समाधि प्राप्त किया । बोधिसत्व सिद्धार्थ ने अपने उपलब्धि को उद्दक रामपुत्त को बताया । उद्दक रामपुत्त ने कहा मेरा गुरु राम तपस्वी भी नेवसंज्ञा, ना संज्ञा (सांख्ययोग) से परिपूर्ण रहे । लेकिन हम लोग इस भावना विधि का अनुसरण करने से अभी भी उस स्तर तक नहीं पहुँचे । आप हमारे राम महर्षि के बराबर हो गये । इसलिए आज के बाद इस आश्रय के मुखिया के रूप में हम सभी लोग आपको सम्मानित करेंगे । हम सभी आपके साथ शिष्यगण जैसा व्यवहार करेंगे । बोधिसत्व सिद्धार्थ तपस्वी ने पूछा कि आप इससे आगे भी कुछ जानते है या नहीं । उद्दक रामपुत्त ने कहा इससे आगे हम कुछ भी नहीं जानते है जो हमारे गुरु राम ने सिखा उतना ही हम लोग जानते है । सिद्धार्थ बोधिसत्व तपस्वी ने सोचा जो हम खोज रहे है इससे विमुक्ति प्राप्त करने के लिए यह पर्याप्त नहीं है । ऐसा सोचकर वहाँ से दूसरे आचार्य को खोजते-खोजते निकल पड़े ।

महाराजा शुद्धोदन भी अपने राजपुरुषों द्वारा बोधिसत्व सिद्धार्थ के बारे में दिये हुए समाचार से महल के बाकि लोगों को भी अवगत कराया । इस खबर से महल के सभी लोगों को सान्त्वना मिल गया । उद्दक रामपुत्त तपस्वी के आश्रम में रहते समय राजपुरुषों ने देखा कुमार सिद्धार्थ तपस्वी के लिए कोई भी सेवक नहीं था । यह भी खबर राजा शुद्धोदन को दिया । राजा शुद्धोदन और राजा सुप्रबुद्ध समय-समय पर सिद्धार्थ बोधिसत्व की सेवा करने के लिए सेवक लोगों को भेजा । राजा शुद्धोदन व राजा सुप्रबुद्ध ने अलग-अलग परिषद को भेजा । उसी परिषद में कोण्डिन्य, अश्वजीत, वप्प, महानाम और भद्दीय इन पाँच लोगों को सिद्धार्थ बोधिसत्व ने अपने पास रहने की

अनुमति दिया बाकि लोगों को वापस भेज दिया । इन पाँच व्यक्तियों में से कौण्डिन्य बोधिसत्व की उत्पत्ति के पाँचवे दिन सिद्धार्थ राजकुमार के नामकरण मंगल के लिए आये हुए थे । उसी दिन कौण्डिन्य ने कहा था कि पुण्यवान् कुमार भविष्य में प्रवज्जित होकर बुद्धत्व प्राप्त करेगा। उस समय उन पाँच ब्राह्मणों में सबसे कम उम्र का कौण्डिन्य ही था । कौण्डिन्य के साथ बाकि सभी चारों ब्राह्मण परिवार के ही थे । ये सभी लोग बोधिसत्व के नाम से तपस्वी बनकर कपिलवस्तु नगर के आस-पास तपस्या करते रहे । राजा शुद्धोदन और राजा सुप्रबुद्ध द्वारा वे सिद्धार्थ तपस्वी की सेवा के लिए भेजे गये परिषद से ही ये पाँच व्यक्ति भी थे ।

बोधिसत्व सिद्धार्थ तपस्वी उद्दक रामपुत्त के आश्रम से निकलकर पाँच तपस्वीयों के साथ गया तक पहुँच गये । गयाशिर्ष में आराम किया, गयाशिर्ष में ही बोधिसत्व सिद्धार्थ के मन में एक तर्कसंगत विचार प्रकट हुआ कि भीगे हुए दो लकड़ी को हम कितना ही क्यों न रगड़े उससे अग्नि उत्पन्न नहीं होगी । उसी तरह काम सम्पत्ति में लिप्त व्यक्ति को मानव धर्म साक्षात करना सम्भव नहीं है । भीगे हुए दो लकड़ी को सुखे जमीन पर रगड़ने से अग्नि उत्पन्न नहीं होता है । काम-सम्पत्ति में लिप्त नहीं होने से भी अपने चित्त में काम तृष्णा, कब तक है जब तक उपरी मनुष्य धर्म उपलब्ध नहीं होता है । सुखा हुआ दो लकड़ी सूखे हुए जमीन पर रखकर रगड़ने से अग्नि उत्पन्न होता है । काम तृष्णा से दूर रहने से उपरी मनुष्य धर्म का साक्षात होता है । मैं उपरी मानव धर्म का साक्षात करने में समर्थ हूँ । उसके लिए उत्साहित भी हूँ ।

बोधिसत्व सिद्धार्थ गया शिर्ष में कई दिन रहकर निरंजना (नेरञ्जय नदी) के किनारे चले गये ।

[वर्तमान समय में गया का नेरञ्जना नदी फाल्गुन नदी के नाम से जानी जाती है]

नदी के किनारे चलते-चलते अपने लिए एक योग्य स्थान भी खोज रहे थे । आगे जाकर देखा कि नीले रंग से भरे हुए मन्द लहर के पानी से युक्त नदी के किनारे सुपुष्पित सुगन्धित फूलों से परिपूर्ण, मोर पंख जैसे प्रियजनक जंगल के दूसरी तरफ सेनानी नामक गाँव को देखा । तपस्या के लिए इस स्थान को सबसे योग्य सोचकर पंचवग्गिय तपस्वीयों के साथ रहकर तपस्या शुरू किया ।

परिच्छेद - 12

कान से निकलने वाले वायु को भी बन्द किया

ध्यान में मन लगाना

नेरंजना नदी के किनारे बोधिसत्व सिद्धार्थ तपस्वी ध्यान साधना में लग गये । सबसे पहले उन्होंने मैत्री भावना का अभ्यास किया । अनेक बार बोधिसत्व सिद्धार्थ तपस्वी ने सुना है कि जंगल में रहने वाला व्यक्ति काईक, वाचसिक, मानसिक दुश्चरित्र आदि दुर्गुण से परिपूर्ण है तो उसे भय लगता है । सिद्धार्थ बोधिसत्व तपस्वी ने सोचा मेरे पास ऐसा कोई दुर्गुण नहीं है । इसलिए मुझे कोई डर नहीं है । मनुष्य समाज में मान्यता के अनुसार पूर्णिमा, अमावस्या, तुतुस्व, अद्ठवाक तिथि के समय मानव समाज से पूजा सत्कार पाने वाले महावृक्ष के पास रात्रि में जाकर विचार-विमर्श किया । मन में आया कोई हिरन हमारे आगे (सामने) आ रहा है । तो कोई चिड़िया डाली काटकर उस डाली को जमीन पर गिरा रही है और हवा से पत्ता हिलने का संकेत भी देखा । यह सब देखकर तपस्वी सिद्धार्थ ने सोचा—जो इंसान भुत-प्रेत व भुत-विकार के बारे में सोचता है ये सब ऐसे ही होता है । पंचवग्गिय तपस्वी लोग सेवा (उपास्थान) करने की कोशिश किये, लेकिन बोधिसत्व सिद्धार्थ हमेशा अकेले रहने के लिए कोशिश किये । गया शिर्ष के सेनानी गाँव में रहते समय सिद्धार्थ बोधिसत्व तपस्वी के साथ अन्य पाँच तपस्वी भी भिक्षा माँगने के लिए सेनानी गाँव में जाते थे ।

इसी वन में और भी तपस्वी लोग जगह-जगह पर तपस्या करते थे। सभी लोग अपने-अपने ढंग से रिति या नियम को पूरा करते थे । अधिकांश लोग पिहितासव जैन आचार्य पार्श्वनाथ नाम के जैन शान्ती (जैन परम्परा) के एक मुखिया थे । पिहितासव जैन आचार्य वस्त्र पहनते थे उनके पास जाकर बहुत से लोगों ने रिति (नियम) का अभ्यास किया । उन्हीं लोगों में महावीर वर्धमान अर्थात् न्यात् पुत्त निरग्रन्थ सबसे प्रमुख थे । न्यात पुत्त निरग्रन्थ क्षत्रिय कुल के थे । लिक्ष्वी राजवंश की एक शाखा न्यात् ग्रोत्र के नाम से जाना जाता था । कुन्दग्राम, खोलागत दोनों गाँव के अधिपति सिद्धार्थ नामक राजा के पुत्र न्यात पुत्त निरग्रन्थ के नाम से प्रसिद्ध था । न्यात पुत्त निरग्रन्थ गृह

त्याग कर बाहर साल पिहितासव जैन आचार्य के पास आकर विमुक्ति पाने के लिए अपने शरीर को बारह साल तक बहुत कष्ट दिया । जिनत्व प्राप्त करने के लिए उस आश्रम से निकल कर निर्वस्त्र होकर एक नग्न श्रमण परम्परा को शुरू करके उसका मुखिया हो गये ।

अप्रानक ध्यान का प्रारम्भ

बोधिसत्व सिद्धार्थ तपस्वी गया के सेनानी गाँव में पिहितासव तपस्वी के देहान्त होने के कई दिन बाद वहाँ पहुँच गये । पिहितासव तपस्वी के व्रत का अनुसरण करते थे । बोधिसत्व सिद्धार्थ तपस्वी भी दुस्कर व्रत पूरा करने के लिए सोच लिया । पहले से रुपावच्चर चतुर्थक ध्यान में जाकर अस्वास-प्रस्वास को रोक लिया । रोककर अप्रानक ध्यान शुरू किया । उस समय एक चमड़े को पीटने की आवाज जैसे कान से आवाज निकलना शुरू हो गया । एक बहुत बड़े काँटे से सिर में छेद करने जैसा सिर में बहुत तेज दर्द हुआ । किसी तरह यह व्रत पूरा करने के लिए दृढ़ अधिष्ठान किया । कान से निकलने वाले वात को भी बन्द कर दिया । बहुत बड़े लोहे के जंजीर से बाँधने के बाद सिर में कैसा दर्द होता है उसी प्रकार का दर्द शुरू हो गया । चाकू से काटने जैसा दर्द पेट के अन्दर महसूस हुआ ।

पवत्त फल भोगी

कुछ दिन तक बोधिसत्व सिद्धार्थ तपस्वी पिण्डपात/पिण्डदान के लिए सेनानी गाँव के आश्रम में समय व्यतीत किया । उसके बाद उन्होंने पेड़ से गिरे हुए फल को ही अपने भोजन के रूप में ग्रहण किया । उसके बाद सिद्धार्थ तपस्वी के पास जो फल गिरे हुए थे उसी को केवल ग्रहण करना शुरू कर दिया ।

क्लेश तपन व्रत

इसी तरह जैन तपस्वी जैसे क्लेश व्रत पूरा करते हुए अपने जिह्वा (जीभ) को बाहर निकाल कर दोनों जबड़ों द्वारा तेजी से दबा दिया और स्थिर चित्त से विचार-विमर्श करते हुए चित्त सन्ताप के कुशल पक्ष को बढ़ाकर अकुशल पक्ष को प्रहिन करेन की कोशिश किया । इस व्रत से भी शरीर को बहुत अधिक कष्ट हुआ और काँख जैसे शरीर के अंगों से अधिक पसीना निकलना शुरू हो गया । लेकिन बोधिसत्व सिद्धार्थ तपस्वी ने व्रत पूरा होने

तक इसे बन्द नहीं किया । अप्रानक ध्यान कितना ही दर्दनाक (कष्टकारी) हो तपस्वी सिद्धार्थ किसी भी व्रत से पीछे नहीं हटे । जिस तरह शक्तिशाली दो व्यक्ति एक कमजोर व्यक्ति को पकड़कर आगे के गड्ढे में डालने से जितना कष्ट होता है उससे कहीं अधिक कष्ट इस व्रत से हुआ। शरीर को इतना अधिक कष्ट देते समय एक दिन सिद्धार्थ तपस्वी बेहोश होकर गिर गये । यह खबर राजा शुद्धोदन को मिला और लोगों ने सोचा कि तपस्वी सिद्धार्थ का देहान्त हो गया ।

महाराजा शुद्धोदन को खबर मिलने के बाद उन्होंने सोचा मेरा पुत्र जिस उद्देश्य के लिए राजमहल छोड़कर गया है उस उद्देश्य को बगैर पूरा किये कैसे उसका देहान्त हो गया ? ऐसा कभी भी सम्भव नहीं हो सकता है।

बोधिसत्व सिद्धार्थ तपस्वी का अल्पाहार

बेहोश होकर उठने के बाद सोचा अब मैं खाना-पीना सभी छोड़ दूँगा। लेकिन उन्होंने सोचा पूर्णरूप से खाना-पीना छोड़ने के बाद किसी तरह शरीर को जीवित रखने के लिए कुछ करना होगा, क्योंकि शरीर के अन्दर ही तो पर्याप्त मात्रा में खून व मांस उपलब्ध है । इसलिए पूर्णरूप से खाना-पीना छोड़ देना भी नाइन्साफी/बेइमानी होगा । ऐसा सोचकर उस दिन से पके हुए मुँग का पानी, उबले हुए चने का पानी इत्यादि से समय को बिताया। यह सब तैयार करके देने वाले पंचवग्गिय तपस्वी लोग थे।

शरीर दुबला-पतला (कृष) होना शुरू हो गया अंक 32

सिद्धार्थ तपस्वी ने आहार लेना कम कर दिया । जिससे शरीर धीरे-धीरे कृष, कमजोर होना शुरू हो गया और देखने से नस व माँस से युक्त कंकाल जैसा दिखाई देने लगे । कौन है ? कब कैसे हुआ ? यह सोचकर परिचय करना भी मुश्किल हो गया । समस्त शरीर दुबला-पतला हो गया और समस्त शरीर मंगुर मछली के रंग जैसा हो गया । फिर भी सिद्धार्थ तपस्वी शरीर को कष्ट देने वाले व्रत को नहीं छोड़ा ।

बेहोश होकर गिर जाना

एक दिन बोधिसत्व सिद्धार्थ तपस्वी नित्यक्रिया (शौच या शरीर कृत्य) के लिए बैठे थे, पूरा शरीर सूख जाने के कारण मलमार्ग के साथ-साथ आँत

भी सूख गया था । जिससे शौच के समय आँत में बहुत दर्द हुआ । शरीर कृत्य नहीं होने के कारण उसी स्थान पर बेहोश होकर गिर गये । शरीर कृत्य के समय बेहोश होकर गिरने की सूचना राजा शुद्धोदन को गलत ढंग से बताया गया । सूचना यह था कि तपस्वी सिद्धार्थ का देहान्त हो गया। लेकिन राजा शुद्धोदन ने कहा हमारा प्रिय पुत्र सिद्धार्थ बगैर बुद्धत्व प्राप्त किये कभी भी नहीं मर सकता है । थोड़े समय के बाद ही सिद्धार्थ तपस्वी स्वभाविक रूप से खड़े हो गये ।

एक दिन सिद्धार्थ तपस्वी अप्रानक ध्यान में बैठकर अस्वास-प्रस्वास करना बन्द कर दिया । दोनों कानों से भी वात निकलना बन्द कर दिया। पूरे शरीर की वात सिर तक आ गया । उस समय पूरा सिर फट जाने के जैसा महशूस हुआ । वह वात/वायु पुनः सिर से वापस पेट में आ गया। इतना अधिक वेदना हुआ कि जैसे किसी जानवर का पेट चाकू या तीव्र तलवार से काटते समय जो पीड़ा होता है । उससे भी कहीं अधिक पीड़ा हुआ ।

बोधिसत्व तपस्वी अप्रानक ध्यान करके महापीड़ा को महशूस किया और इससे पीछे नहीं हटे । चित्त एकाग्र हो गया और विक्षिप्त चित्त से मुक्त होने के कारण कोई धोखा नहीं खाया । नाम (चित्त), कर्म शान्त होने के कारण चित्त समाहित हो गया ।

यशोधरा का व्रत समाधान

सिद्धार्थ तपस्वी द्वारा कोई भी भोजन नहीं ग्रहण करने का व्रत लेकर समय बिताने की खबर कपिलवस्तु में राजा शुद्धोदन को पुरोहितों के माध्यम से जानकारी मिली । ऐसी खबर सुनकर उन्होंने सोचा कि आसित ऋषि की भविष्यवाणी धीरे-धीरे सत्य हो रहा है । इसलिए इन सभी के बातों पर ध्यान देने की जरूरत नहीं है । सिद्धार्थ बोधिसत्व तपस्वी चाहे कितना व्रत रखे उसे कोई विपत्ति नहीं होगी । लेकिन सिद्धार्थ तपस्वी द्वारा भोजन ग्रहण नहीं करने की कोई खबर यशोधरा तक जाने नहीं दिया । राजपुरुषों को भी सूचित किया कि कोई भी खबर यशोधरा तक नहीं पहुँचना चाहिए । इसलिए यशोधरा ने सोचा सिद्धार्थ एक आम तपस्वी की जिन्दगी बिता रहे हैं लेकिन यशोधरा को पता चला कि तपस्वी होने के कारण सिद्धार्थ जमीन पर सोते है । यशोधरा भी पलंग, कुर्सी जैसे गृहभाण्ड का इस्तेमाल करना छोड़ दिया।

सुगन्ध, आलेपन छोड़कर यशोधरा भी कसाय वस्त्र ग्रहण किया । सिद्धार्थ द्वारा सिर मुड़वाने की खबर सुनकर यशोधरा भी अपने सिर के बाल को पूरी तरह से कटवा दिया । बाल कटवाकर सिद्धार्थ तपस्वी के जैसे एक बार भोजन करके एक तपस्वी जैसे समय बिताया । लेकिन कुमार राहुल का पालन-पोषण उचित ढंग से किया । बहुत जल्द हमारे स्वामी विमुक्ति मार्ग (निवार्ण) का अवबोध कर हम लोगों के पास आकर हम लोगों को भी संसार के दुख से मुक्त होने का मार्ग बतायेंगे । ऐसा सोचकर उपेक्षा, चित्त से अपना समय बिताया ।

परिच्छेद - 13

पराजित होने से अच्छा रणभूमि में मर जाना है

मार दिव्य पुत्र की दया

अप्रानक ध्यान दृढ़ता पूर्वक पालन करने से वसवर्तीमार दिव्य पुत्र ने सोचा सिद्धार्थ राजकुमार तपस्वी कभी भी बुद्धत्व प्राप्त करेगा । इसमें कोई शक नहीं है । इसलिए उसको किसी तरह से धोखा देकर दुष्कर क्रिया को रुकवाना आवश्यक है । एक दिन सिद्धार्थ तपस्वी के पास जाकर वसवर्ती मार दिव्य पुत्र ने कहा—मित्र आप बहुत कमजोर हो गये, आप बहुत दुर्बल हो गये, आप मरणासन्न हो रहे हो । अप्रानक ध्यान बहुत कष्टदायक है। आपकी शरीर आपके जिन्दगी का केवल एक अंग है । पुण्यवान इतना कष्ट मत झेलो, जीने की कोशिश करो । जीवित रहना मरने से भी बहुत बड़ा काम है। जीवित रहकर अच्छा खाना-पीना लेकर पुण्यदान, जीवन बिताना सबसे अच्छा है । अवसर मिलने पर ब्रह्मचारी रहना भी उत्तम है । यज्ञ, होम, पूजा करने से बहुत पुण्य मिलेगा । जीवन और मृत्यू के बीच दुख झेलने वाला एक कठोर दुस्कर व्रत करने से क्या लाभ है ? मित्र पहले बोधिसत्व श्रेष्ठ पुरुष जिस मार्ग को अपनाया आज के लोगों को ऐसा करना सम्भव नहीं है । यह बहुत ही कष्टदायक है । ऐसा कहकर मार दिव्य पुत्र ने अपनी चालाकी से दया दिखाया ।

मार दिव्य पुत्र को डाँटना

संसार में असंख्य कल्प तक दानादि पारमिता पूरा करने के कारण सिद्धार्थ तपस्वी को वसवर्ती मार देव पुत्र का स्वभाव महशुस हुआ । सिद्धार्थ तपस्वी ने कहा प्रमादी व्यक्तियों को बाँधने वाले पापीष्ट वसवर्ती मार तुम अपने लाभ के लिए मेरे उत्साह को हानि पहुँचने के लिए इधर आ गये। जो तुम वर्णन कर रहे हो उस पुण्य से हमे थोड़ा भी लाभ नहीं है । यदि तुम्हारी बात किसी को अच्छा लगे तो जाकर उसी को यह बात बता देना ।

श्रद्धा, वीर्य, प्रज्ञा, स्मृति, समाधि जैसे पाँच इन्द्रियाँ हमारे पास है। इतने पुण्य अंग से सम्बन्धित प्रधान व्यायाम में हमारा चित्त निर्वाण अवबोध के लिए प्रसस्त है । तुम्हारे उपदेश की हमें जरूरत नहीं है । जो हमने अप्रानक ध्यान से, चित्त शक्ति से, वायु का विस्तार किया है । उससे गंगा नदी का पानी भी सूखा सकता है । इसलिए इस वायु शक्ति से शरीर जिन्दगी दोनों को क्या नहीं सुखायेगा । खुन सुखने से चित्त व कफ सूख जायेगा, उसके साथ-साथ मांस भी सुख जायेगा, उसके साथ चित्त प्रसाद हो जायेगा और प्रज्ञा, समाधि भी स्थिर हो जायेगा । तुम हमारे चित्त शक्ति को नहीं जानते मेरा दुबला कृष कर्म ध्यान योगी के रूप में दृढ़ अधिष्ठान से रहने का ढंग तुम भी देखों । हमारा शरीर कितना ही दुर्बल व कमजोर क्यों न हो मैं कभी भी राजसम्पत्ति व कामवस्तु के लिए वापस नहीं जायेंगे ।

दस मार सेना

दुष्ट पापीमार हम तुमको जानते है । काम तुम्हारा पहला सेना है । गुण धर्म से अलग करने की कोशिश करना, आलसी होना दूसरी सेना है। भूख-प्यास तीसरी सेना है । खाना-पीना जैसे सामाग्री को खोजना तुम्हारी चौथा सेना है । चित्त, चैतसिक, मिलने का स्वभाव पाचवाँ सेना है, भयभित होना, डरना छठवाँ सेना है । संमार्ग के बारे में शक करना सातवाँ सेना है । अकृतज्ञता, सत्यपुरुष लोगों के सत्य वचनों का अनादर करना आठवाँ सेना है । लाभ, कीर्ति, सत्कार, प्रशंसा मार्ग से पाया हुआ तृष्णा से उत्पन्न होने वाला तृष्णा एवम् मान नौवाँ सेना है । अपने को उच्च स्थान पर रखकर दूसरे लोगों को नीचा दिखाना दसवाँ मार सेना है ।

मार दिव्य पुत्र यह दस अकुशल मार्ग तुम्हारा दस प्रकार की मार सेना है । श्रमण, ब्राह्मण, तपस्वी सबको परेशान करने का तुम्हारा यह हथिहार है। तुम इतने बुद्धि सम्पन्न नहीं हो कि इस अकुशल दस अवगुणों से मुझे जीत सको । सूरवीर बुद्धि सम्पन्न व्यक्ति इस दस कारणों को नष्ट करके अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए आगे बढ़ जायेगा । विजय प्राप्त होने से एकान्त सुख मिलता है । विजय प्राप्त करने तक मैं वापस नहीं आऊँगा। यदि मैं इस क्लेश युद्ध से हार गया होता तो हमारे जीवन का सबसे बड़ा पराजय एवम् अपमान यहीं होता । पराजित होने से रणभूमि में मर जाना अच्छा है । (अंक 33)

कुछ तपस्वी क्लेश सेना के बारे में जानकारी नहीं होने से पराजित भी हो जाते हैं और निर्वाण मार्ग की प्राप्ति का मार्ग भी नहीं जान पाते हैं । (अंक 34)

सिद्धार्थ बोधिसत्व तपस्वी की बात सुनकर वसवर्ती दिव्य मार पुत्र उधर से भाग गया । बहुत कठोर तपस्या करने के बावजूद भी सिद्धार्थ तपस्वी को कोई लाभ नहीं मिला । इसलिए चिन्ता में पड़ गये । इस दुनिया में कोई भी निर्वाण (मोक्ष) प्राप्त करने के लिए हमारे जैसा कठोर तपश्चर्य का पालन नहीं किया । मैंने कठोर तपस्या का कोई व्रत नहीं छोड़ा और इतना करने के बावजूद भी मुझे सम्बोधि का थोड़ा भी ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ । इसलिए सम्बोधि प्राप्त करने के लिए कठोर तपस्या कोई मार्ग नहीं है ।

सतानु सारी विज्ञान प्राप्त होना (अंक 35)

सिद्धार्थ तपस्वी बीते हुए समय के बारे में सोचा करते थे । हल जोतने का उत्सव के समय खेत में जामुन के पेड़ के नीचे बैठकर आनापान ध्यान करने को याद किया । बुद्धत्व प्राप्त करने के लिए यही मार्ग सोचा और सोचकर आनापान ध्यान को करना शुरू कर दिया । सिद्धार्थ तपस्वी ने सोचा शरीर बहुत कमजोर हो गया है, इसलिए सबसे पहले कुछ भोज्य पदार्थ लेकर शरीर को आनापान ध्यान के लिए उचित तरीके से तैयार करना होगा। शरीर कुछ स्वस्थ होने के बाद समाधि की ओर ध्यान देने के लिए अधिष्ठान किया ।

कायसन्तर्प

तत्पश्चात् बोधिसत्व सिद्धार्थ भिक्षाटन के लिए उरुवेला की तरफ नेरंजना नदी के किनारे से चल पड़े । (अंक 36)

कठोर तपश्चार्य क्रिया करने के बाद सिद्धार्थ की शरीरिक शक्ति कमजोर होने के कारण भिक्षाटन के लिए नेरंजना नदी के किनारे चलते समय बेहोश होकर गिर गये । गाय चराने वाला एक चरवाहा लड़का सोत्थिय ब्रह्मण यह दृश्य देखकर सेनानी गाँव के प्रधान सेठ की पुत्री सुजाता को यह खबर दी । सोत्थिय के कथनानुसार सुजाता की समझ में आया कोई सही ढंग से तपस्या करने वाला तपस्वी होगा । सुजाता अपने घर से एक वर्तन में दूध लेकर सोत्थिय के साथ उस तपस्वी के पास पहुँची । सोत्थिय अपने साथ

कुश-तृण भी काटकर ले लिया, जिस पर तपस्वी आराम से लेट सके। सुजाता एक बुद्धिमान कन्या थी। तपस्वी के दुबला-पतला शरीर को देखने के बाद सुजाता की समझ में आया कि यह ऐसे वैसे तपस्वी नहीं है बल्कि उँचा दर्जा प्राप्त एक महान् व्यक्ति है। सोत्थिय चरवाहा लड़का और सुजाता दोनों ने मिलकर नदी के किनारे कुश-तृण को सही ढंग से बिछाया और सिद्धार्थ को उठाकर उसी कुश-तृण पर लिटाया। उसके बाद सुजाता ने जो दूध लायी थी, उस दूध को सिद्धार्थ के मुँह में धीरे-धीरे डाल दिया। कुश-तृण जो हरा होता है, उसे काटने से एक सुगन्ध निकलता है और सुख जाने से वह सुगन्ध नहीं मिलता है। कई दिनों तक सुजाता सिद्धार्थ बोधिसत्व तपस्वी को दूध और भोजन से पूजा करती थी। सोत्थिय भी प्रतिदिन कुश-तृण ले आकर सिद्धार्थ को आराम से बैठने का व्यवस्था करता था। कभी शाम के समय भी सुजाता सोत्थिय के साथ जाकर सिद्धार्थ तपस्वी का हाल-चाल लेती थी।

नेरंजना नदी के किनारे दोनों आपस में वार्तालाप भी करते थे। वयोवृद्ध पंचवग्गिय तपस्वीयों ने आपस में बातचीत किया कि सिद्धार्थ निर्वाण (मोक्ष) प्राप्त करने के लिए बहुत कठोर तपस्या किया। इसलिए हम सभी को विश्वास था कि वह अवश्य ही एक दिन निर्वाण (सम्बोधि) प्राप्त करेगा। लेकिन अब भिक्षाटन के साथ-साथ सुजाता कन्या का मधुर भोजन व दुध ग्रहण करने से पुनः उसका शरीर सौम्य, सुकोमल होने लगा। सुजाता भी देखने में सुन्दर और प्रियशील कन्या थी। इन दोनों का इतना नजदीक आने का अर्थ है कि सिद्धार्थ तपस्वी ने सुजाता के कारण अपना निर्वाण (बुद्धत्व) प्राप्त करने का मार्ग बदल दिया है। यह दृश्य देखकर पंचवागीय तपस्वीयों ने सोचा अब सिद्धार्थ तपस्वी के साथ रहना निष्फल है। इसलिए सभी सिद्धार्थ को छोड़कर वाराणसी के इसी पत्तन मृगदाय की ओर चले गये। वर्तमान् समय में वाराणसी मृगदाय ऋषि पतन को सारनाथ के नाम से जाना जाता है। पंचवागिय तपस्वीयों का वाराणसी की ओर चले जाने के बाद सिद्धार्थ तपस्वी दो सप्ताह तक भोजन ग्रहण करके आराम से ध्यान करते रहे। दो सप्ताह तक काय विवेक से समय बिताया। प्रधान, वीर्य के कारण चित्त में नैष्क्रम्य (निकल जाना), कुशल चित्त बाढ़ जैसे उत्पन्न होता गया। कुछ समय के लिए शरीर दुबला-पतला (कृष) हो गया था परन्तु सुजाता द्वारा लाये भोजन को ग्रहण करने के पश्चात् सिद्धार्थ तपस्वी का शरीर धीरे-धीरे पुनः शोभा सम्पन्न हो गया। पहले से शरीर में मौजूद 32 महापुरुष

लक्षण पुनः दिखाई देने लगा। सिद्धार्थ तपस्वी को समझ में आया की मेरा शरीर अब ठीक-ठाक हो गया है। ऐसा सोचते ही मन (चित्त) में कामविर्तक, अकुशल चित्त उत्पन्न होना शुरू हो गया। फिर से कामवितर्क चित्त उत्पन्न नहीं होने के लिए अधिष्ठान किया।

ध्यान में रहने वाले तपस्वी सिद्धार्थ को हिरन, गाय, बकरी, जैसे जानवरों तथा मोर जैसे पक्षियों की आवाज कान में सुनाई देना प्रारम्भ हो गया। अनेकों प्रकार के फूलों का सुगन्ध भी महशूस हुआ। नीला रंग जैसे पवित्र नेरंजना नदी के पानी भी देखने को मिला। सिद्धार्थ तपस्वी के मन में आया ये जानवर कितने सुन्दर है, पक्षी समूह की आवाज कितना सुरीला है और नेरंजना नदी का पानी कितना रम्य है। यह सब सोचते ही बोधिसत्व सिद्धार्थ तपस्वी के चित्त में कामवितर्क, अकुशल चित्त उत्पन्न होना शुरू हो गया, उन्होंने सोचा फिर से कामवितर्क नहीं होने के लिए अधिष्ठान किया। अत्यधिक गर्मी, अत्यधिक शीत बार-बार होने के कारण चित्त में व्यापाद वितर्क, अकुशल चित्त की तरंगे आना प्रारम्भ हुआ। व्यापाद वितर्क, अकुशल चित्त को रोकने के लिए अधिष्ठान किया। आश्रम के आस-पास टहलने से देखा कि व्याघ्र आदि क्रुर जानवर हिरन, गाय, सूअर जैसे जानवरों का शिकार करते है। गाँव में भिक्षाटन के लिए जाते समय यह सुनायी दिया कि राजा की वगैर आज्ञा से किसी गाँव वालों को कोई नौकरी नहीं मिलती थी। इसके कारण लोग परेशान थे। जिससे सिद्धार्थ बोधिसत्व तपस्वी के मन में शोक उत्पन्न हुआ। क्रूरता, अकारुणिनकता यह सब देखने-सुनने से चित्त चंचल होता था। बहुत वितर्कविहिन अकुशल चित्त भी उत्पन्न नहीं होने के लिए अधिष्ठान किया।

ऐसा सोचकर सिद्धार्थ बोधिसत्व ने विर्तक विहिन अकुशल व कुशल को दो भागों में बाँट दिया। जैसे काम वितर्क, व्यापाद वितर्क, विहिन सा वितर्क। अकुशल पक्ष में नैष्क्रमय विर्तक, अव्यापाद वितर्क, अविहिन सा वितर्क। कुशल पक्ष को अलग करके कुशल वितर्क आगे बढ़ाने के लिए तपश्चर्य हो गया। काम वितर्क, अकुशल वितर्क अपने लिए और दूसरों के लिए भी नुकसान पहुचाता है। लोकोत्तर सुख के लिए भी बाधक होता हे, दुख पहुँचाता है, मोक्ष (निर्वाण) का मार्ग में बाधक होता है। ऐसा विचार करने से सिद्धार्थ तपस्वी के चित्त से वितर्क नष्ट हो गया और अकुशल कर्म का दोष देखकर कुशल कर्म का भी शुभ पक्ष देखा।

पूरे दिन और रात को तर्क-वितर्क विचार में समय बिताया। आवश्यकता से अधिक चिन्तित होने के कारण मुर्छित हो गये। मुर्छित होने के कारण चित्त भी चंचल हो गया और चित्त एकाग्रता से दूर (भंग) हो गया। उसके बाद समापत्ति की शक्ति से सभी पीड़ा को दूर कर दिया। अकुशल वितर्क पक्ष को चित्त से हटाकर कुशल चित्त को आगे बढ़ाया। इसके साथ-साथ कठोर दुस्कर किया (अथ किल मथान योग) तपश्चर्या व्रत का छः वर्ष पूर्ण होने जा रहा था।

बोधिसत्व सिद्धार्थ छः सालों तक कठोर तपस्या किया उस स्थान को वर्तमान समय में प्राग बोधि के नाम से जाना जाता है। ब्राह्मण लोग उस गुफा को दुर्गेश्वरी नाम दिया है। नेरंजना नदी के किनारे पहाड़ श्रृंखला में वर्तमान समय में उस गुफा का स्थान देखने को मिलता है। निरंजना नदी आज से 2500 वर्ष पहले नीले रंग के स्वच्छ पानी भरा हुआ था लेकिन वर्तमान समय में वारिस के मौसम में पानी देखने को मिलता है और बाकि के मौसम में केवल बालू देखने को मिलता है। इसलिए इतिहास के अनुसार वर्तमान में दिखना उचित नहीं है।

परिच्छेद - 14

कई दिनों से साफ न किये हुए बर्तन के जैसा मन क्लेश से भरा हुआ महसूस होता है

बोधिसत्व सिद्धार्थ ने वैशाख माह के (मई माह) तुतुस्वक (त्रयोदशः) का दिन था । सिद्धार्थ बोधिसत्व नीद में थे और उन्होंने नींद में भोर के समय पाँच स्वप्न देखे ।

पहला स्वप्न

सम्पूर्ण पृथ्वी मेरा एक शयनासन हो गया और हिमालय पर्वत मेरा सिरहाना (ताकिया) हो गया वायीं भूजा पूर्व के सागर में और दाहिनी भुजा पश्चिम के सागर में और दोनों पैर की तरफ दक्षिण सागर था यह सिद्धार्थ का पहला स्वप्न था ।

दूसरा स्वप्न

सिद्धार्थ ने देखा कि हमारी नाभी से रक्त वर्ण का कुश जैसा एक घास निकला और आसमान तक ऊँचा होकर फैल गया । इसका अर्थ है आर्य अष्टांगिक मार्ग का अवबोध करने के बाद दुनिया को बतलाना है ।

तीसरा स्वप्न

काले व सफेद रंग के सिर वाले बहुत से कीड़े दोनों पैर से कमर तक फैल गया । इसका अर्थ है बहुत से गृहस्थ लोग उनके पास आकर उपासक बन रहे हैं ।

चौथा स्वप्न

चारों दिशाओं से विभिन्न वर्ण के (टिटिहरी) अनेक पक्षी आकर मेरे पैर पर गिर रहे है और गिरते ही ये सभी पक्षी सफेद रंग के हो गये । इसका अर्थ है ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शुद्र चारों वर्णों (कुलों) से लोग हमारे पास आकर प्रवज्जित होंगे ।

पाँचवा स्वप्न

बहुत बड़ा असूचि (गोवर मलिन) के पहाड़ पर चक्रमण कर रहा हूँ फिर भी असूचि शरीर में नहीं लगा इसका मतलब है बहुत परिस्कार वस्तु, सम्पत्ति, सम्मान मिलने के बावजूद भी उससे सम्बन्ध नहीं रखना ।

अजपाल बरगद के पास जाना

सिद्धार्थ बोधिसत्व अपने पाँचों स्वप्न के बारे में गहराई से विचार विमर्श (चिन्तन-मनन) किया । निश्चय किया कि हमें बुद्धत्व प्राप्त करना ही है । सुबह शरीर कृत्य के बाद साफ-सुथरा होकर भिक्षाटन के बाद अजपाल बरगद वृक्ष के नीचे उसकी छाया में पूर्व दिशा को मुँह करके बैठ गये ।

[पालि भाषा में बकरा को अज कहते है । बकरी-बकरा को चराने वालों को आराम करने का एक स्थान गया में निरंजना नदी के दक्षिण तरफ एक बहुत विशाल वृक्ष था । इसलिए जानवरों व अज चराने वाले के लिए उसकी छाया पर्याप्त थी । वर्तमान समय में नेरंजना नदी के उस पार एक स्थान को वहाँ के स्थानीय लोग अजपाल बरगद का पेड़ कहकर सबको दिखाते है । उस स्थान के बारे में उस स्थान पर वृक्ष होने का नहीं होने का दोनों साक्ष्य कहीं से भी नहीं मिलता है ।] (37 अंक)

सुजाता का खीर दान (अंक 27)

सेननी ग्राम के अधिपति की पुत्री का नाम सुजाता था । सुजाता प्रतिदिन पूजा करने वाली एक धार्मिक कन्या थी । साल में एक बार वार्षिक देव पूजा भी करती थी । सिद्धार्थ तपस्वी जिस बरगद महावृक्ष के नीचे बैठे थे उसी वृक्ष के नीचे सुजाता का देवपूजा भी होता था । सुजाता ने पूजा से पहले अपनी दासी पूण्या से कहा तुम जाकर बरगद वृक्ष के चारों तरफ अच्छा से सफाई कर दो सुजाता अपने हाथों से प्रनीत मधुर खीर तैयार किया । पूण्णा (पून्ना) दासी बरगद वृक्ष के नीचे सफाई करने गयी तो देखा कि चमकने वाले शरीर से युक्त एक अद्भूत देवता जैसा महापुरुष बैठे हुए है । तुरन्त जाकर सुजाता को इसके बारे में सूचना दिया । खबर सुनकर सुजाता बहुत प्रमोदित (प्रसन्न) हो गयी जिन्दगी का इतना अच्छा खुश खबर देने के कारण पूण्णा दासी को सुजाता ने दासी भाव से मुक्त कर किमती वस्त्रों व गहनों से सजाया । सुजाता किमती सोने की थाली में पूर्ण रूप से

भरकर उसे किमती वस्त्रों से ढककर अपने परिवार जनों के साथ बरगद की ओर जाने के लिए प्रस्थान किया । नजदीक जाते ही देखा सुनहले रंग का प्रभा स्वर मूर्तिगत पुण्य से चमकता हुआ एक व्यक्ति बरगद पेड़ के नीचे ध्यान कर रहा है । श्रद्धा भरे हृदय से बोधिसत्व सिद्धार्थ के पास जाकर खीर से भरे थाली की पूजा की । सुजाता पहले से ही सिद्धार्थ तपस्वी के उद्देश्य को समझ गयी थी । खीर पूजा करने के पश्चात् सुजाता ने कहा आपका मनोरथ पूर्ण होगा । यह कहकर वहाँ से निकल पड़ी ।

सिद्धार्थ बोधिसत्व तपस्वी ने निश्चय किया कि इस संकेत का अर्थ है कि हमें आज बुद्धत्व प्राप्त होना ही है ।

भद्रवन में दिवाविहरण

भद्रवन, गयाशिर्ष में नेरंजना नदी के आस-पास साल वृक्षों, सुन्दर पुष्पों व हरा-भरा पत्तों से सुसज्जित एक वन खण्ड है । सिद्धार्थ बोधिसत्व उसी वन में जाकर आलार, कलाम व उददक राम पुत्र जैसे लोगों से प्राप्त किया हुआ ध्यान विद्या फिर से शुरू किया । बहुत दिनों से इस विद्या का अभ्यास नहीं करने के कारण गन्दगी से ढके एक वर्तन जैसा हो गया था। पुनः ध्यान करने से चित्त में पंच अभिज्ञा, अष्ट समापित्त लाभ हुआ । बोधिसत्व सिद्धार्थ का चित्त विशुद्ध का पहला पायदान यही है । भद्रवन के नाम से कोई वन वर्तमान में गायशिर्ष में नही है बल्कि भद्रवन का नाम अवश्य किसी दूसरे नाम से हो सकता है । (अंक 39)

बोधि वृक्ष की छाया में जाना

बोधिसत्व सिद्धार्थ दिन के समय में समापत्ति सुख का अनुभव किया, सन्ध्या काल में भद्रसाल वन से निकलकर बोधिवृक्ष की तरफ आगे बढ़ना प्रारम्भ किया । सिद्धार्थ बोधिसत्व को आगे बढ़ता देखकर सोत्थिय ब्राह्मण ने आठ मुठ्ठी कुश तृण की पूजा किया ।

[सुजाता के साथ बोधिसत्व सिद्धार्थ की सेवा करने वाला बालक सोत्थिय के नाम से जाना जाता है और जो आठ मुढ़ठी कुश तृण की पूजा किया उसे सोत्थिय के नाम से जाना जाता है ।]

बोधिसत्व सिद्धार्थ उस कुश-तृण को स्वीकार करके बोधि वृक्ष की छाया में गये और जाकर बोधिवृक्ष के नीचे रखे हुए पत्थर पर दक्षिण दिशा

में बैठ गये, बैठते ही दक्षिण दिशा जैसे कमल का पत्ता पानी की बूँद से कम्पित होता है, उसी प्रकार दक्षिण दिशा कम्पित हुआ । सिद्धार्थ तपस्वी ने यह महसूस किया कि हमारे दस पारमी शक्ति को यह दिशा वर्दास्त नहीं कर पा रहा है । तत्पश्चात् पश्चिम दिशा को चले गये पश्चिम दिशा भी कम्पित हुआ उत्तर दिशा में बैठने की कोशिश की उत्तर दिशा भी कम्पित हुआ । इसके बाद अन्त में पूर्व दिशा में बैठने से ऐसा नहीं हुआ तो मन में विचार उत्पन्न हुआ कि यह स्थान हमारे क्लेश को समाप्त करने का सही व उचित स्थान है ऐसा सोचकर आठ मुट्ठी कुश-तृण को वहीं जमीन पर बिछाया ।

अपराजित परियंक में बैठना

आठ मुट्ठी कुश-तृण को बिछाकर भद्र परियंक में बैठकर अधिष्ठान किया । पीपल वृक्ष के नीचे सिद्धार्थ तपस्वी पद्मासन लगाकर बैठ गये और दृढ़ संकल्प करते हुए उसने व्रत किया कि 'मेरे शरीर की त्वचा, मांस, खून व नसे सूख कर हड्डी ही बाकि रह जाय लेकिन मैं पुरुष वीर्य से परिपूर्ण, पुरुष पराक्रम से युक्त बिना सम्यक सम्बोधि प्राप्त किये अपने उत्साह और इस स्थान को नहीं छोड़ूँगा', बोलकर उड्डानवीर्य किया ।

चतुर्थक वीर्य (अंक 40)

अधिष्ठान कर बोधिवृक्ष (पीपल का वृक्ष) की ओर पीठ करके पूर्व दिशा को मुख करके अजये परियंक से बैठ गये ।

वज्र आसन (अंक 41)

32 योग आसनों में से वज्र आसन एक आसन है । [ध्यान भावना में बैठने के लिए एक तरीका है] वर्तमान समय में बहुत से लोग वज्रासन के नाम से बुद्ध गया के बोधिवृक्ष के नीचे अलंकृत कर रखे हुए पत्थर को वज्रासन कहते है । जब कि बुद्ध गया के मुख्य बौद्ध विहार मे वज्रासन मुद्रा में बैठा हुआ बुद्ध मूर्ति आज भी विराजमान है । सिद्धार्थ बोधिसत्व पूर्व दिशा को देखकर बैठकर बुद्धत्व प्राप्त किया है । उस स्थान पर ही वर्तमान बुद्ध मूर्ति को स्थापित किया गया है ।

परिच्छेद - 15

सिद्धार्थ ! इस स्थान से उठो, यह स्थान मेरा है

मार संग्राम

बोधिसत्व सिद्धार्थ सम्यक सम्बोधि (बुद्धत्व का अवबोध) करने के लिए पीपल वृक्ष के नीचे बैठ गये । सम्यक दृष्टि देवतागण प्रमोदित होकर दिव्य ब्रह्म सेना के साथ सिद्धार्थ के चारों ओर एकत्रित होना शुरू कर दिये । दूर से आने वाले एक दुश्मन को प्रतिवादी जैसे देखने वाले भाग जाते है उसी तरह सूर्य दिव्य पुत्र भी धीरे-धीरे अस्त होना शुरू हो गया । चन्द्रमा का प्रकाश अधिक तेज नहीं होने से भी सिद्धार्थ बोधिसत्व तपस्वी पारमीता पूर्ण करने का साक्ष्य के लिए जैसे धीरे-धीरे प्रभावित होने लगे ।

पीपल पेड़ के नीचे पूर्व दिशा को देखकर सोने के आसन पर रखे हुए चाँदी जैसे पचास हाथ ऊँचा पीपल पेड़ को पीठ करके नील पत्र से सुसज्जित कुश तृण के बने हुए आसन पर बैठ गये । बोधिसत्व सिद्धार्थ तपस्वी के शरीर से निकलता हुआ स्वर्ण वर्ण प्रभा चारों तरफ वर्णवत हो गया ।

दुर्नमिति

कुछ समय के बाद सिद्धार्थ तपस्वी के चारों ओर से मंगलोत्सव जैसे माहौल था । वह सब तुरन्त रुक गया । सभी देव ब्रह्म समूह ने देखा कि बहुत बड़ा एक दुश्मन आ रहा है । उसे देखकर सभी देव ब्रह्म गण इधर-उधर भगना शुरू कर दिया और किसी को भी बोधिसत्व के नजदीक रहने की साहस नहीं थी । आसमान से हजारों उल्कापात होना शुरू हो गया । जिससे भयंकर गर्मी प्रारम्भ हुआ । आसमान में धूमकेतु भी दृश्यमान हुआ । चारों तरफ से तेज शंखनाद सुनने को मिला और साथ ही साथ अंधकार भी शुरू हो गया । वह स्थान भी हिलना-डुलना शुरू हो गया । तेज हवा चलना प्रारम्भ हुआ और भयानक गर्जना भी सुनायी दिया । अस्वभाविक बहुत खराब दिन का आकाश देखने को मिला । राहु ग्रहों समेत जैसे सूर्य अस्त होने से भी गर्मी तेज हो गयी थी । वर्षा नहीं होने से भी आसमान में इन्द्रधनुष के साथ धुली भी निकलना शुरू हो गया । अग्नि का गोला

आसमान से गिरकर पतीत होना शुरू हो गया । अप्रिय आवाज चारों तरफ से सुनाई देना आरम्भ हो गया । शमसान घाट से कंकाल समूह आने का भी दृश्य दिखाई देना आरम्भ हो गया । बिना सिर का शरीर आसमान में दृश्यमान होना शुरू हो गया ।

ऐसा डरावना अनिष्ट नाना प्रकार की दुर्नमिति देखने को मिला । साथ-साथ तलवार, कुल्हाणी, धनुष जैसे हथियार के साथ मुख से अग्नि ज्वाला निकालते हुए नग्न, कुरुप वर्ण, प्रेत जैसे विविध अप्रिय दर्शन भयंकर समूह के साथ जिस स्थान पर सिद्धार्थ तपस्वी बैठे थे उस स्थान की ओर आना शुरू हो गया । पकड़ों मारो जैसे कठोर शब्द भी सुनने को मिल रहा था। ऐसे भयानक वेश धारण करके सिद्धार्थ बोधिसत्व तपस्वी को परेशान करने के लिए वसवर्ती मार अपनी सेना के साथ आया । लेकिन सिद्धार्थ बोधिसत्व तपस्वी के अनुभव से वसवर्ती मार सेना सिद्धार्थ तपस्वी के समीप नहीं पहुँच सका ।

बसवर्ती मार दिव्य पुत्र के आगमन को सिद्धार्थ तपस्वी ने उसको कोई महत्व नहीं दिया । जैसे कितनी भी शक्तिशाली हवा चलने से कुश तृण के एक पेड़ को उखाड़कर फेंक नहीं सकता है । इसी तरह सिद्धार्थ तपस्वी दस पारमीता को पूर्ण करने की शक्ति से अपने स्थान पर बैठे रहे । नज़रें झुका करके बसवर्ती मार ने बोला 'मैं वसवर्ती मार दिव्य पुत्र हूँ और सिद्धार्थ बोधिसत्व को कहा पूरे संसार में जेष्ठ, श्रेष्ठ शब्दों से अपने को पहचान करने वाले एक स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध से पैदा हुआ किड़ा जैसे व्यक्ति तुम महानिर्लज्जित हो । मेरे प्रभाव को जानता नहीं । हमारे जैसे शक्तिशाली व्यक्ति को देखने के बावजूद भी खड़ा नहीं हुआ । ऐसे कहकर वसवर्ती मार ने बोधिसत्व सिद्धार्थ को अपमानित करने का प्रयास किया । सिद्धार्थ बोधिसत्व को डराकर परेशान करके भगा देगे । ऐसा सोचकर नाना प्रकार से वर्षा शुरू कर दिया, लेकिन बोधिसत्व सिद्धार्थ को उसके कार्यों से कोई कष्ट नहीं हुआ। वसवर्तीमार दिव्य पुत्र अपने गिरिमेखला नामक हाथी के उपर सवार होकर सिद्धार्थ बोधिसत्व के पास जाकर कहा सिद्धार्थ इस स्थान से उठो यह स्थान मेरा है । सिद्धार्थ बोधिसत्व मार दिव्य पुत्र की बात सुनकर उसकी ओर देखकर कहा वसवर्ती मार हम इस स्थान से नहीं हटेंगे । वसवर्ती मार सेना के साथ आये हुए मार परिषद, गिरीमेखला हाथी के साथ बिखरे हुए मार सेना को ललकारते हुए कहा इस तरह से हम भी सिद्धार्थ बोधिसत्व तपस्वी को धर्मयुद्ध में जितने नहीं देंगे ।

बोधिसत्व सिद्धार्थ ने कहा—मार दिव्य पुत्र तुम्हारे कामादि, प्रमादी सेना के बारे में सभी लोग जानते हैं लेकिन जैसे मिट्टी के बर्तन को पत्थर से मारकर तोड़ दिया जाता है वैसे ही मैं भी अपनी प्रज्ञा से तुमको पराजित कर दूँगा । मार दिव्य पुत्र आर्य मार्ग से सभी मिथ्या कल्पना टूट कर सम्यक संकल्प के माध्यम से समाप्त हो जाते हैं । हमारा मन भली-भाँति प्रतिष्ठित है । हमारे अनुशासित मार्ग दर्शन देने वाले धोखा नहीं खायेंगे और निर्वाण मार्ग प्राप्त करने के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं । तब मार दिव्य पुत्र ने पूछा श्रमण मेरे जैसे कठोर पक्ष को देखने के बाद भी तुम क्यों नहीं डरे। बोधिसत्व सिद्धार्थ ने कहा मैं तुमसे नहीं डरता हूँ । इतने में मार दिव्य पुत्र ने पूछा तुम क्यों नहीं डरते तब बोधिसत्व सिद्धार्थ ने कहा मैं दानादि दस पारमिता को पूर्ण किया है । मार ने कहा तुम्हारा दस पारमिता पूर्ण करने की जानकारी किसको पता है । सिद्धार्थ बोधिसत्व ने मार से कहा तुम्हारे समक्ष इसका विस्तार करना आवश्यक नहीं है ।

एक पूर्व जन्म में वेसन्तर जो हमें दान दिया उस समय पृथ्वी कम्पित हुई थी । यदि यह बात सत्य है तो आज भी पृथ्वी मेरे लिए गवाह है, बोलकर दाहिने हाथ की तर्जनी अँगुली से पृथ्वी को स्पर्श किया और पृथ्वी कम्पित हुई । पृथ्वी को तर्जनी अँगुली से इशारा करने वाले मुद्रा को भूमि स्पर्श मुद्रा कहा जाता है । बोध गया महाबोधि बिहार की बुद्ध प्रतिमा भूमि स्पर्श मुद्रा में बनाया हुआ है ।

(तर्जनी को साक्षी करते ही पृथ्वी कम्पित हुआ । पृथ्वी भयानक रूप से हिलने के कारण वसवर्ती मार अपनी सेना को लेकर भाग गया । सायं के समय सूरज की किरणें होने के बावजूद भी बोधिसत्व सिद्धार्थ वसवर्ती मार दिव्य पुत्र को पराजित करके विजय लक्ष्य प्राप्त किया ।)

इस महत्त्वपूर्ण घटना को सभी देव ब्रह्म समूह देखते ही रह गये और बोधिसत्व सिद्धार्थ तपस्वी की विजयश्री देखने के बाद देवब्रह्म परिषद जयघोष करके कहा—सभी लोग आ जाओ । क्योंकि सिद्धार्थ बोधिसत्व तपस्वी विजयग्रही हो गया है । वसवर्ती मार पराजित हो गया है । हमलोग जयमंगल एवं बुद्धमंगल दोनों एक साथ मनायेंगे । ऐसा कहकर बोधिसत्व सिद्धार्थ तपस्वी के चारो ओर एकत्रित हो गये ।

परिच्छेद - 16

कर्म के अनुसार पुनर्जन्म

धीरे-धीरे सूर्य का प्रकाश कम होने लगा अर्थात् सूर्य अस्त हो गया। सौम्य रश्मि से प्रभावित करते हुए पूर्व दिशा से चन्द्रमा का उदय हुआ। सम्पूर्ण रात्रि सौम्य रश्मि देते हुए जलने वाले एक महाप्रदीप के स्वरूप चाँद (चन्द्रमा) ने दिया। तारों के वगैर आसमान चन्द्रकान्ति से मनोरम हो गया। पृथ्वी के मध्यमण्डल में स्थापित पीपल का पेड़ (बोधिवृक्ष) अनन्य मण्डप का स्वरूप दिखाया। शुरू से अन्त तक लगभग 50 फीट ऊँचा पीपल का पेड़ घनघोर मोरपंख जैसे युक्त था। पीपल पेड़ के नीचे छत्रक स्वभाव से युक्त सुद्धर्म देव सभा में इन्द्रासनारूढ़ सनथ कुमार को निग्रहा करने जैसे दृश्य दिखाकर वीर पुरुष सिद्धार्थ गौतम बोधिसत्व तपस्वी के सामने पुन: दिव्य पुत्र मार, अवशेष मार, परिषद के साथ संग्राम करने के लिए तैयार हो रहा था।

प्रथम विद्या और दृष्टि विशुद्धि सम्पादन

सिद्धार्थ बोधिसत्व तपस्वी सर्वप्रथम पीपल वृक्ष के नीचे आनापान सती कर्म स्थान को प्रारम्भ किया। उसके फलस्वरूप प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थक ध्यान प्राप्त किया। तत्पश्चात् चित्त को ध्यानावलम्बन से हटाकर पूर्वे (पूब्बे) निवासानुस्मृति (पूर्व जन्मों का अवलोकन) पर ध्यान लगाया। अतीत जन्मों के बारे में अवलोकन करते समय हजारों जातियों का पूर्व जन्मों के बारे में तत्वाकार से देखा। पूर्वयाम (सन्ध्याकाल) में पूर्व जन्मों की जानकारी प्राप्त नहीं करने का मोह विध्वंश कर दिया। उस कारण सिद्धार्थ तपस्वी को पुब्बे निवासानुस्मृति ज्ञान प्राप्त हुआ। पुब्बे निवासानुस्मृति ज्ञान से पूर्व जन्मों के यथा स्थिति देखने को मिला।

नाम-रूप (काया और चित्त) सभी जन्मों में पारम्परिक रूप से उत्पन्न भी होता है और नष्ट भी होता है। नाम रूप परम्परा में चक्षु आदि के माध्यम से रूप आदि का दर्शन होने के कारण नानाविध विज्ञान उत्पन्न होना

और उत्पन्न होकर नष्ट होने के स्वभाव को देखा । लेकिन इसके अधिकतर स्वरूप का उत्तरदायित्व लेने के लिए एक जीव या व्यक्ति को दिखाई नहीं देता है । इस चीज को उत्पन्न करने वाला कोई देवता या दूसरी शक्ति दिखाई नहीं देता है । इन सभी तत्त्वों को देखने वाला दृष्टि शंका दृष्टि नष्ट किया। इस दृष्टि को विशुद्धि दृष्टि के नाम से जाना जाता है । (अंक 42)

द्वितीय विद्या और कंखा वितरण विशुद्धि का अवबोध

तत्पश्चात सिद्धार्थ तपस्वी मध्य रात्रि में पहले जैसे आनापान चतुर्थक ध्यान भावना (Meditation) किया । उसी के माध्यम से जीवों की उत्पत्ति और मरण (जन्म-मरण) के बारे में चिन्तन किया । वयोवृद्ध होकर मरने के नजदीक आने और उत्पत्ति के तुरन्त बाद भी कर्म के अनुसार सुगति-दुर्गति दोनों जन्म-मृत्यु के बारे में जानकारी प्राप्त किया । ऐसे जीवों की उत्पत्ति के बारे में जानकारी प्राप्त होने के बाद मोह, अन्धकार चित्त से पूर्णरूप से समाप्त हो गया । मैं अतीत में रागी नहीं रहा । सभी के मन में यह बात उत्पन्न होना स्वभाविक है और यह शंका सोलह तरह का होता है । (अंक 43)

मोह, अन्धकार दूर होने के पश्चात् कंखा वितरण विशुद्धि ज्ञान की उत्पत्ति हुई । रात्रि के तीसरे प्रहर सिद्धार्थ बोधिसत्व आनापान सती चतुर्थक ध्यान से मन हटाकर पाँच स्कन्ध (रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार, विज्ञान का अनित्य, दु:ख, अनात्म जैसे तीन लक्षण क्रमश: अवलोकन किया । प्रतीत्य समुत्पाद के एक-एक अंग को सतानुपश्यना क्रम से अवलोकन किया । ऐसे विमर्श करने के बाद अनित्यानुपश्यना के मार्ग से नित्यसंज्ञा, दुक्खानु पश्यना से दु:ख संज्ञा, अनात्मानु पश्यना से आत्म संज्ञा, विरागानुपश्यना से राग, निविदानुपश्यना से निन्दा, निरोधानुपश्यना से समुदय, पटिस्रोतगानुपश्यना से अदान पूर्ण रूप से समाप्त किया ।

फिर से सभी संस्कार नाम-रूप का दो भाग करके अवलोकन किया। इसके फलस्वरूप आलोक, प्रीति, प्रश्रब्धि, ज्ञान, श्रद्धा, सती, सुख, उपेक्षा, वीर्य, निकान्ति (तृष्णा) जैसे विदर्शन करके इस उपक्लेश का ज्ञान प्राप्त किया ।

तत्पश्चात् आलोक-प्रीति जैसे धर्मानुसार प्रज्ञा से अवलोकन करने के कारण तृष्णा, दृष्टिमान जैसे चीजों का आलम्बन होने से यह सही मार्ग नहीं

होने का ज्ञान प्राप्त हुआ । सिद्धार्थ तपस्वी अभी नव यौवन होने के कारण विदर्शना उपक्लेश का उत्पन्न होना स्वभाविक था । इसी तरह आलोक-प्रीति आदि से मुक्त होकर विदर्शना मार्ग में प्रविष्ट किया । ऐसे मार्ग के बारे में अवलोकन करने के बाद इसका कोई भी अर्थ अपने के लिए नहीं होने के कारण उससे युक्त होकर चित्त को विदर्शना मार्ग में आगे बढ़ाया । (जो सिद्धार्थ तपस्वी मार्गा-मार्ग परीक्षा के बाद प्राप्त किया हुआ तीक्ष्ण विदर्शना प्रज्ञा को मग्गा-मग्ग ज्ञान दर्शन विशुद्धि के नाम से जाना जाता है ।
(अंक 44)

पटिपदा ज्ञान दर्शन, विशुद्धि प्राप्ति

विदर्शना के मार्ग पर जाने से जीवों का पाँच स्कन्ध का अनित्य, दुःख, अनात्म (तीन लक्षण) का परीक्षण किया । पञ्चस्कन्ध की उत्पत्ति और विनाश के दोनों पक्षों को देखा । उदय, व्यय, ज्ञान (उदव्य ज्ञान) समाधि में जाने से स्कन्धों की उत्पत्ति एवं विनाश का अधिक से अधिक अवबोध होने लगा। बड़ा-सा मुँह खोलकर सामने आने वाले एक क्रुर व्याघ्र के स्वरूप मरण स्वभाव देखने का मिला । सभी पञ्च स्कन्ध मरण के साथ-साथ अन्त होने का ज्ञान प्राप्त हुआ । (उसी को मेगानुपश्यना ज्ञान के नाम से जाना जाता है ।) (अंक 46)

तत्पश्चात् मेग के अनुसार समाधि बढ़ने से भवत्र (कामदय व अरूप) सभी संस्कार, व्याघ्र, सर्प आदि जैसे भयंकर जीवों का निमित्त जो व्यय होना है उसका कारण भी देखा । (उसी ज्ञान को भयतो पट्टान ज्ञान कहते हैं) (अंक 47)

इसी प्रकार संसार का स्वभाव भय एवं भय उत्पत्ति करने के स्वभाव का अवबोध होने के साथ-साथ काम, रूप-अरूप, भवत, अग्नि से भरे हुए एक कोयले के गड्ढा जैसे जाति-जरा जदापि ग्यारह तरह की अग्नि प्रज्वलित होने के स्वभाव का अवबोध किया । भव-ज्ञान-जाति-जरापि दुःख से भवत्र पूर्णरूप से भरा हुआ देखा, उसका दोष भी देखा । इसी को आदिनव ज्ञान कहते हैं । (अंक 48)

आदिनव ज्ञान से संस्कारों का दोष देखने से अपने आपको सर्प के मुख में फँसे हुए मेढक, जाल में फँसे हुए मछली जैसे मन में तीन भूमि

से युक्त होने का ज्ञान प्राप्त हुआ । उसी ज्ञान के मुच्छीतुकज्ञाता ज्ञान के नाम से जाना जाता है । (अंक 49)

घनघोर वनान्तर में जाने से चण्ड, सिंह आदि जानवरों से बचने के लिए भाग जाने का रास्ता देखने जैसे पुनः संस्कार अनित्य, दु:ख, आनात्म तीनों का स्मरण किया । इसके फलस्वरूप पटिसंकानु पश्यना ज्ञान प्राप्त हुआ। (अंक 50)

इसी तरह विदर्शना करने से दुराचारी दोष देखने के बाद अपने स्त्री के बारे में घृणा करने, जैसे तुम चण्डाल कुल का कहकर, प्यार न करके नाराज होकर, उदासिन होने के जैसे, दोष देखने के बाद सम्बन्ध तोड़ने का संस्कार, मध्यस्थ रूप से देखने का ज्ञान प्राप्त हुआ । इसी ज्ञान को शंका-रूपेक्षा ज्ञान के नाम से जाना जाता है । (अंक 51)

उदय-व्यय ज्ञान, शंका रूपेक्षा ज्ञान से लेकर अष्टज्ञान सिद्धार्थ तपस्वी पूर्व के कुछ लोगों के पास प्रवज्जित होकर प्राप्त किया हुआ ज्ञान (धर्म) है । राख के नीचे दबे हुए अग्नि पिण्ड जैसे एक कुटी के अन्दर जलते हुए दीपक की रोशनी के समान दिखाई दिया और यह सभी तुरन्त उत्पन्न हो गये ।

इसी प्रकार संस्कार उपेक्षा ज्ञान का अभ्यास करने के कारण श्रद्धा प्रबल हो गया । वीर्यवर्धन प्रबल हो गया । चित्त भी एकाग्र हो गया, संस्कार उपेक्षा (संस्कार के बारे में मध्यस्थ देखना) का वर्धन हो गया । संस्कार-उपेक्षा, संस्कार, अनित्य, दु:ख, अनात्म को स्मरण करने से पुनः भवोम तक पहुँच गये । भवाम के पश्चात् संखार उपेक्षा ज्ञान उत्पन्न होने के कारण अनित्य, दु:ख, अनात्म तीनों गुणों का अवलोकन करने से मनोद्वार वर्जन चित्त उत्पन्न हुआ । तत्पश्चात् उदय, व्यय, ज्ञान आदि अस्त ज्ञान के कृत्य संसिद्धि के लिए भविष्य में प्राप्त होने वाला बोध पक्ष धर्म के अनुकूल चतुसत्य को तेज करने की अविद्या को नष्ट करके अनित्य, दु:ख, अनात्म तीनों लक्षणों को सभी प्रकार से प्रकट कर लौकिक विदर्शना मार्ग से महाकुशल ज्ञान क्रमानुसार प्राप्त हो गया । इसी को सच्चानु लौकिक ज्ञान के नाम से जाना जाता है ।

गोत्र भू ज्ञान प्राप्ति

तत्पश्चात् पृथक् जन गोत्र (लौकिक स्वभाव) वर्धन करने से निर्वाण सुख प्रत्यक्षा करके गोत्र भू ज्ञान तक ज्ञान को प्राप्त किया । (अंक 52)

ज्ञान दर्शन विशुद्धि प्राप्त करके बुद्धत्व को प्राप्त करना (अंक 53)

गोत्र भू ज्ञान प्राप्त होने के बाद और उससे निरुद्ध होने के पश्चात् उसी से प्राप्त संज्ञान से दुःख से मुक्त होना, दुःख दूर करना, दुःख निरोध करना, निरोध शक्ति, निरोध गामिनी, पटिपदा शक्ति के साथ आठ अंगों से युक्त भावना ज्ञान दर्शन स्रोतापत्ति मार्ग, आर्य अष्टांगिक मार्ग में आगे बढ़ने से प्रथम ज्ञान की उत्पत्ति हुई । उसको स्रोतापत्ति मार्ग कहते हैं । (अंक 54)

स्रोतापत्ति मार्ग (अंक 55)

इसके बाद स्रोतापत्ति फल उत्पन्न होता है । उसके बाद ध्यान बढ़ने से उसे महापच्च्य विज्ञान कहते हैं ।

प्राप्त किया हुआ मार्ग के फलस्वरूप महापच्च विज्ञ ज्ञान को नष्ट करने का तरीका पर विचार विमर्श करने के बाद प्रहिन क्लेश पच्यविज्ञ ज्ञान से आगे ध्यान करने से वज्रक्लेश, पच्चविज्ञ ज्ञान इत्यादि ज्ञान समूह प्राप्त होता है । (अंक 56)

पुनः उदय व्यय ज्ञान से सभी संस्कार तीनों लक्षणों के अन्तर्गत होने के कारण बोधिसत्व सिद्धार्थ चित्त से संस्कार (संङ्खार) उपेक्षा समाप्त कर अनुलोम ज्ञान, वोदन ज्ञान आदि प्राप्त किया । वोदान ज्ञान के बाद दुःख, पीड़ा इत्यादि समाप्त होने के स्वभाव से युक्त राग, द्वेष, मोह पूर्णरूप से समाप्त कर निवार्ण का साक्षात करने के लिए आर्य अष्टांगिक मार्ग में आगे बढ़ने से दूसरा ज्ञान दर्शन अर्थात् सकृदागामी मार्ग के ज्ञान की उत्पत्ति हुई । (अंक 57)

तत्पश्चात् उसके फल के साथ-साथ उसका मार्गफल प्रह्नि, क्लेश, बिना प्रह्नि क्लेश, न किया हुआ क्लेश, परीक्षा करने के कारण प्रत्यवेक्षा ज्ञान समूह क्रमशः उत्पन्न हुआ ।

तत्पश्चात् सिद्धार्थ तपस्वी उदय-व्यय-ज्ञान से लेकर संस्कारों के लक्षण

का अवलोकन किया । उसके फलस्वरूप पहले जैसे संस्कारों के अपेक्षा आखिरी में अनुलोम वोदान ज्ञान से दु:ख समाप्त करने का समुदय (काम, राग, व्यापदा) प्रहान करते हुए निर्वाण बोध का साक्षात करते हुए आर्य अष्टांगिक मार्ग का ध्यान बढ़ने से तीसरा ज्ञान दर्शन (अनागामी मार्ग) प्राप्त हुआ ।

इसके पश्चात् अनागामी फल मार्ग से प्रह्नि क्लेश जो कुछ बचा था वह सब परीक्षा करने का ज्ञान प्राप्त हुआ । उसके फलस्वरूप सिद्धार्थ तपस्वी को पता चला कि और क्लेश बचा हुआ है । पहले जैसे उदय-व्यय आदि (9) नौवें महाविदर्शना ज्ञान समूह द्वारा संस्कार, तीन लक्षण के माध्यम से क्रमश: विचार-विमर्श करने से बोधिसत्व सिद्धार्थ को संस्कार उपेक्षा ज्ञान के पश्चात् अनुलोम वोदान ज्ञान प्राप्त हुआ । उसके बाद सभी दु:खों को परिपूर्ण रूप से देखने से वासना, दोष के साथ-साथ बाकि सभी क्लेश देखने को मिला । सूक्ष्म रूप से परीक्षा करने के बाद निर्वाण साक्षात मार्ग के माध्यम से चौथा ज्ञान दर्शन अर्हत् मार्ग ज्ञान प्राप्त हो गया । इसी क्रम में सोवान (स्रोतापन्न) ज्ञान प्राप्त किया इसके फलस्वरूप बोधिसत्व सिद्धार्थ को ज्ञानदर्शन विशुद्धि प्राप्त हुआ ।

अर्हत् ज्ञान मार्ग के बाद अर्हत् फल तत्पश्चात् मार्ग फल प्रह्नि क्लेश के साथ-साथ निर्वाण प्राप्ति ज्ञान के नाम से जाना जाने वाला प्रत्यवेक्षन ज्ञान प्राप्त हुआ । (अंक 58)

बोधिसत्व सिद्धार्थ को अर्हत् ज्ञान मार्ग के साथ-साथ तुतुस बुद्ध ज्ञान, अट्ठारह आवेनिक धर्म, दसबल, चतुर्थ वैशारद इत्यादि अपरमीत गुण समूह प्राप्त हुआ ।

उस दिन रात्रि का समय समाप्त होकर सूर्योदय तक महापुरुष सिद्धार्थ बोधिसत्व तपस्वी सम्पूर्ण संसार को एकालोक करते हुए सुख निमित्त प्रकट करते हुए शवासन, सकल क्लेश, विध्वंश करने के फलस्वरूप निरुत्तर सम्यक सम्यबुद्ध ज्ञान सम्भार के बाद बुद्धत्व प्राप्त किया है ।

(बोधिसत्व सिद्धार्थ तपस्वी को बुद्धत्व प्राप्ति कलयुग वर्ष 2513 वैशाख पूर्णिमा के दिन गयाशिर्ष में हुआ है । उसी समय से उस स्थान को बोधगया के नाम से जाना जाता है । सिद्धार्थ तपस्वी दस बिम्बर मार

सेना को पराजित करने के लिए जिस वृक्ष (पीपल पेड़ की तरफ पीठ करके बैठे थे) के नीचे बैठे थे, उस वृक्ष को बोधिवृक्ष के नाम से लोग पूजते हैं और सिद्धार्थ बोधिसत्व बुद्ध के नाम से प्रसिद्ध हो गये ।

पीपल के पेड़ को बोधिवृक्ष के नाम से जाना जाता है । सिद्धार्थ बोधिसत्व जिस स्थान पर बैठकर गया में बुद्धत्व प्राप्त किया उस स्थान को बोधगया के नाम से जाना जाता है ।

परिच्छेद - 17

बिना रूके अनवरत संसार में उत्पत्ति और मरण का सामना किया

प्रथम प्रीति वाक्य

सम्यक् सम्मबुद्ध, लोकोत्तर बुद्ध ज्ञान प्राप्ति के बाद (बुद्धत्व प्राप्ति के बाद) संसार के दु:खों से मुक्त होने का दुर्लभ सम्यक सम्बोधि प्राप्त किया। महान् विजयश्री प्राप्त कर धर्म चक्षु से प्राप्त धम्म मार्ग द्वारा प्राणियों को दु:ख से मुक्त करने का सामर्थ प्राप्त किया। ऐसा सोचते ही बुद्ध के मन में बहुत महत्त्व प्रीति उत्पन्न हुआ। उस प्रीति को बुद्ध ने प्रीतिवाक्य के रूप में बोधिवृक्ष के नीचे प्रकट किया।

अनेक जाति संसारं, संधा विस्सं अनिव्विसं।
गहककारकं गवेसन्तो, दुक्खा जाति पुनप्पुनं।।

धम्मपद (जरावग्गो)

(बिना रूके अनेक जन्मों तक संसार में दौड़ता रहा। इस कायारूपी घर को बनाने वाले तृष्णा को खोजते पुन: दु:खमय जीवन में पड़ता रहा।)

गहकारकं दिट्ठोसि पुन गेहं न काहसि।
सव्वा ते फासुका भग्गा गहकूटं विसङ्खितं।
विसङ्खारगतं चितं तण्हानं खयमज्झगा।।

धम्मपद (जरावग्गो) - 154

(बार-बार उत्पन्न होना दु:ख है, इसलिए आत्मभाव नाम का घर बनाने वाला तृष्णा के नाम से जाना जाने वाला राजगीर खोजते हुए सत्य प्रत्यक्ष करने के लिए ज्ञानचक्षु प्राप्त करने की उम्मीद से इस संसार में पुन: घर बनाने वाला नहीं देखने से संसार में हजारों बार पैदा होकर दिन-रात विचरण किया।

हे राजगीर आमन्त्रित हो, हे राजगीर अभी हमने तुमको देखा, आज के बाद भव संसार का घर बनाने का मौका तुमको नहीं मिलेगा। तुम्हारा

क्लेश नाम का साथी ठाट् (मण्डयी की) को हमने नष्ट कर दिया है । अविद्या नाम के इस ठाट् को पूर्णरूप से नष्ट कर दिया । हमारा चित्त निर्वाण की ओर चले गये और तृष्णा नष्ट करके अर्हत् पद प्राप्त किया ।

अनेक जाति संसार गाथा बुद्ध का प्रथम प्रीतिवाक्य (उदान) के नाम से धम्मपद अट्ठकथा में उल्लेख मिलता है । अभिधम्म अट्ठकथा में भी ऐसा लिखा हुआ है । अनेक जाति संसार गाथा बुद्धत्व प्राप्ति के प्रथम चरण में देशना करने के कारण मनसा चिन्तिक देशना बुद्ध वचन के नाम से जाना जाता है ।

प्रथम सप्ताह

बुद्ध अपने प्रसन्न चित्त से ही चित्त के अन्दर ही प्रथम प्रीतिवाक्य प्रकट किया । तत्पश्चात् मन ही मन में सोचा की सदा असंख्य कल्प लक्ष्य से ज्यादा संसार में पैदा होकर उस बोधि पर्यंक के लिए ही वीर्य किया है।

इस स्थान पर मेरा विजय पर्यंक है । चतुरांग वीर्य के माध्यम से इसी पर्यड़क पर बैठकर बुद्धत्व प्राप्त किया है । उस पर्यंक को विल्कुल न छोड़कर उसी पर्यंक से अर्हत् फल समापत्ति को सौ हजार लक्ष्य, कोटि-प्रकोटि बार समाधि सुख लेते हुए एक सप्ताह तक का समय व्यतित किया। सती अन्त की रात्रि में प्रतीत्य समुत्पाद अनुलोम रूप से चिन्तन-मनन किया। प्रत्यय से पटिच्च समुत्पाद उत्पत्ति होने से आगे बढ़ने का तरीका को स्मरण किया । तत्पश्चात् आखिरी याम (पहर) में वीर्यवत ध्यान, बड़ा पाप, बाहर किया हुआ योगावचर को बोधि पाक्षिक धर्म चित्त में उत्पत्ति होने के क्षण में सभी शंका दूर होता है । यह भी अपने मुख से निकलने वाला प्रीति वाक्य है । (अंक 59)

पुनः मध्य रात्रि पटिच्च समुत्पाद प्रतिलोम रूप से अर्थात् एक स्वभाव की उत्पत्ति नहीं होने से दूसरे स्वभाव की उत्पत्ति नहीं होती है । मध्य रात्रि के अवसान तक ऐसे ही चिन्तन मनन किया । क्लेश नष्ट करने के लिए वीर्य के साथ ध्यान में संलग्न पाप से दूर रहने वाले योगी को बोधि पाक्षिक धर्म उत्पन्न होने से अविद्या आदि प्रत्ययों का क्षय होता है जिससे ज्ञानचक्षु निर्वाण समापत्ति के लिए लक्ष्य होने के कारण उसी से चित्त का पूर्ण रूप से शंका दूर होता है । यह बुद्ध के मुख से निकला हुआ दूसरा प्रीति वाक्य है ।

रात्रि के तीसरे याम (वेला) में बुद्ध पटिच्च समुत्पाद, अनुलोम-प्रतिलोम दोनों तरह से चिन्तन-मनन किया । उसके साथ ही क्लेश नष्ट करने, वीर्य से परिपूर्ण ध्यान करने वाला पाप कर्मों से दूर रहने वाला योगी अपने चित्त के अन्दर बोधि पाक्षिक धर्म उत्पन्न होते ही, अन्धकार दूर करके आसमान को प्रकाश देने वाला सूर्य जैसे सभी मार सेना को पराजित किया कह कर तीसरा प्रीति वाक्य अपने मुख से प्रकट किया ।

यमक प्रातिहारी

(एक नासिका से जल धारा और दूसरे नासिका से अग्नि धारा निकलना यमक प्रातिहारी है ।)

बुद्धत्व प्राप्ति के बाद भी बुद्ध अपना वज्रासन एक सप्ताह तक नहीं छोड़ने से कुछ देवतागण शंका करना शुरू कर दिये, जिससे देवता लोग सोचे कि सिद्धार्थ बोधिसत्व का काम अभी पूरा नहीं हुआ है, नहीं तो वज्रासन के लोभ में बैठ गया है । (अंक 60)

दूसरा सप्ताह

बोधि वृक्ष के नीचे एक सप्ताह बितने के बाद बुद्ध ने सोचा बुद्धत्व प्राप्ति के समय मेरे लिए सुख-दुःख, सब कुछ के लिए इस महावृक्ष ने शरण दिया । यह कोई साधारण बात नहीं है । दुनियाँ के बहुत से लोग कृतज्ञता प्रकट नहीं करते हैं; बल्कि देरी से करते हैं, जबकि हमारे जैसा बुद्ध पुरुष का कर्तव्य है कि इस बोधि वृक्ष की कृतज्ञता प्रकट करना, ऐसा सोचकर बोधिवृक्ष से थोड़ी दूर जाकर वगैर पलक झपकाये एक सप्ताह समापत्ति से अनिमिस लोचन पूजा की है । (वर्तमान समय में बोधगया पुन्न भूमि मुख्य बुद्ध विहार के सामने अनिमिस लोचन स्तूप देखने को मिलता है ।) (अंक 61)

तीसरा सप्ताह

तत्पश्चात् बोधि पर्यंक से हटकर पूर्व दिशा की ओर मुख करके चक्रमण किया । इस क्रम से एक सप्ताह तक अपने अवबोध किये हुए धर्म का अवलोकन करते हुए समय व्यतित किया । उस स्थान को चंक्रमण स्थान के नाम से जाना जाता है । (राजा धर्मशोक के समय में उसी स्थान पर

बुद्ध का भी पाद लक्षण के साथ पत्थर का चिह्न बनाकर रखा है । वह स्थान जमीन से लगे होने के कारण श्रद्धालु लोग पूजा नहीं करते थे। वर्तमान समय में बोधगया मन्दिर प्रबन्ध समिति उस स्थान पर एक वेदिका का स्वरूप देकर बुद्ध के श्रीपाद लक्षण के स्थान पर पत्थर पर कमल के फूल का चिह्न लगा दिया है । अब इस स्थान पर फूल-फल, पानी, वस्त्र जैसे समानों से पूजा होती है । उसको रत्न चंक्रमण चैत्य कहते हैं ।)

(अंक 62)

चौथा सप्ताह

चौथे सप्ताह में बोधि राजा के समीप पश्चिमोत्तर स्थान पर स्वर्ण गृह में विराजमान होकर धर्म का अवलोकन किया । उस स्थान पर शील संदीपक, विनयपिटक, समाधि संक्षिपक, सूत्र पीटक, प्रज्ञा संदीपक, अनन्तनय से युक्त अभिधर्मपीटक का स्मरण किया । इन सबको मिलाकर एक नाम देता है बौद्धधर्म में उसका नाम अनन्तनय समन्त पट्ठान है । सबसे अधिक गम्भीर षष्ठ मार्ग को स्मरण करते ही चित्त की प्रसन्नता अधिक हो गयी । हृदय वस्तुगत रक्त प्रभावित हो गया, वास्तुरूप विशेषरूप से प्रसन्न हो गया । चर्म (चर्वी) वर्ण भी प्रसन्न हो गया । चित्त प्रसन्न होने के कारण शरीर से निकला हुआ षष्ट रश्मि चारों तरफ फैल गया । सम्पूर्ण प्रदेश में इन्द्रधनुष उत्पन्न होने के जैसा हो गया । सूर्य, चन्द्र के आलोक से भी अधिक आलोक उत्पन्न हुआ। (अंक 63)

पाँचवा सप्ताह

बुद्धत्व प्राप्ति के बाद पाँच सप्ताह बीत गया । (अंक 64)

उक्त क्रम से स्वर्ण गृह से निकलकर बोधिराजा के नजदीक एक विशाल बरगद का वृक्ष था । उस बरगद वृक्ष को अजपाल के नाम से जाना जाता था । उस अजपाल वृक्ष के नीचे विमुक्ति सुख, लाभ प्राप्त करते हुए एक सप्ताह का समय व्यतित किया । उस समय बुद्ध से पहले के परिचित निहुम्कं ब्राह्मण पुन: आया । आकर पूछा भगवान् किन-किन कारणों से सच्चा ब्राह्मण होता है । ब्राह्मण धर्म आपके अनुसार क्या है ? ऐसा प्रश्न पूछा । बुद्ध ने उत्तर दिया—पाप से दूर रहना, मान, अहंकार जैसे कार्यों से दूसरों को नीचा नहीं दिखाना । क्लेश गन्दगी नहीं होना, क्लेशों से चित्त की सुरक्षा

करना । चार आर्यसत्य के मार्ग से निर्वाण को प्राप्त करना, ब्रह्मचर्य मार्ग के अनुसार जीवन व्यतित करना । यही सच्चे ब्राह्मण का लक्षण है । संसार में किसी भी कारण राग, द्वेष, मोह, मान, कुदृष्टि आदि नहीं रखने वाला व्यक्ति हमारे धर्म के हिसाब से ब्राह्मण के नाम से जाना जाता है ।

(अंक 65)

मार का दोषारोपण

अजपाल बरगद वृक्ष के नीचे अनर्थ विस्तृत दुष्कर्म क्रिया के मार्ग से हटकर बुद्ध ने मध्यम प्रतिपदा के मार्ग से बुद्धत्व प्राप्त करने के कारण को प्रमोदित चित्त से समय व्यतित किया । बुद्ध के चित्त के स्वभाव को जानकर मार दिव्य पुत्र पुनः उस स्थान पर आया । मार दिव्य पुत्र ने कहा, जीवों की शुद्धि के लिए तपस्या करना जरूरी है और आप तो इससे हटकर, अशुद्ध होकर शुद्धि की बात बोल रहे हैं । आप शुद्धिमार्ग से बहुत दूर हैं ।

बुद्ध को समझ में आया कि यह मार दिव्य पुत्र है और बुद्ध ने जवाब दिया कि नहीं मरने के लिए ''अत्थकिल मथान योग'' करने का अर्थ है जंगल में एक नाव को पतवार से चलाने का प्रयास करना । ''अत्थ किल मथान योग'' निष्फल कोई काम की नहीं है । इसलिए यह हमें मालूम हो गया है । मालूम होने से मार्गयस लाभ के लिए शील, समाधि, प्रज्ञा और धर्मत्व को आगे बढ़ाकर परम विशुद्धि प्राप्त किया है । मार दिव्य पुत्र तुम पराजित हो गये हो । मार को समझ में आया कि बुद्ध अपने आपको जान लिया है । इसलिए मार दिव्य पुत्र निराश होकर अन्तर्ध्यान हो गया ।

(अंक 66)

मार दिव्य पुत्र द्वारा बुद्ध को भयभीत करने के लिए साहस दिखाना

एक दिन घनघोर अन्धेरा में बुद्ध अजपाल बरगद के आस-पास चंक्रमण करने के बाद उसी स्थान पर एक पत्थर पर समाधि सुख में विराजमान थे । हल्का-हल्का फुहार पड़ रहा था । उसी समय मार दिव्य पुत्र विशाल हाथी का भेष धारण करके बुद्ध को भयभीत करने के लिए उनके पास आया । हाथी का सिर बहुत बड़ा काला पत्थर जैसे था उसका दाँत सफेद चाँदी जैसे और सुड़ बहुत बड़े हल जैसा था ।

बुद्ध ने सोचा मार दिव्य पुत्र प्रिय-अप्रिय भेष बनाकर कई बार मेरे पास आया है । इस पर बुद्ध ने कहा, हमें डराने से तुम्हें कोई लाभ नहीं होने वाला है । मार दिव्य पुत्र समझ गया कि बुद्ध ने हमें पहचान लिया। यह सोचकर वहाँ से चला गया । पुनः एक बार मार दिव्य पुत्र रात्रि के अन्धेरे में बुद्ध को डराने के लिए विविध शुभ-अशुभ भेष लेकर उपस्थित हुआ। उस समय भी बुद्ध मार दिव्य पुत्र को पहचान लिए और बुद्ध ने उससे कहा वचन से, मन से और संयम से रहने वाला व्यक्ति तुम्हारे बस में नहीं आयेगा । मैं तुम्हारा कोई सेवक नहीं हूँ । इसके बाद मार दिव्य पुत्र एक बार फिर अन्तर्ध्यान हो गया । (अंक 67)

बुद्ध अपने आप को धर्माचार्य नियुक्त किये

अजपाल बरगद के नीचे समाधि सुख के समय बुद्ध के मन में कोई भी व्यक्ति अपने से अधिक योग्य गुरु को गुरु के स्थान पर नहीं रखने से दुःख होता है । मैं स्वयं बुद्ध हूँ, किस ब्राह्मण की पूजा करके उसे गुरु के रूप में सम्मान दे ? लेकिन शील समाधि, प्रज्ञा सभी गुणों से परिपूर्ण और अपने से उत्तम कोई भी व्यक्ति इस त्रैलोक में दिखाई नहीं दे रहा है। इसलिए हमने जो अवबोध किया है उस लोकोत्तर धर्म को ही सम्मान पूर्वक अपने जीवन में गुरु मानकर जीवन व्यतीत करूँगा । (अंक 68)

उसी समय सहामपति महाब्रह्म हाथ जोड़कर बुद्ध के सामने आकर कहा भगवान् ऐसा ही होना चाहिए । अतीत में सम्यक सम्मबुद्ध ने बुद्ध धर्म को ही अपने गुरु का स्थान दिया है । भविष्य में होने वाले सम्यक्-सम्मबुद्ध भी धर्म को अपने गुरु के रूप में मान्यता देंगे । इसलिए इस समय आप भी अपने द्वारा अवबोध किये हुए धर्म को ही गुरु का स्थान देकर बहुत बड़ा उत्कृष्ट धर्म का परिचय दिया है । (अंक 69)

छठवाँ सप्ताह

अजपाल बरगद के बाद बुद्ध उसके समीप में स्थित एक पाकड़ पेड़ के नीचे जाकर एक सप्ताह समाधि सुख में समय को व्यतीत किया । उसी दौरान अचानक घनघोर वर्षा हुआ और उसके साथ ठण्डी हवा भी चलने लगी । बुद्ध को उस सात दिन परेशानी का सामना करना पड़ा । उसी पाकड़ पेड़ पर आश्रित रहने वाला एक नाग आकर बुद्ध को वर्षा व शीतलहर से बचाकर बुद्ध की एक सप्ताह तक सुरक्षा किया ।

(आध्यात्मिक शक्तिवान नागगोत्र का एक प्राणी अपने अध्यात्मिक शक्ति से नाग का भेष लेकर बुद्ध का एक सप्ताह तक सुरक्षा किया ।)

सप्ताह के अन्त में बुद्ध समापत्ति सुख से उठ गये । इसके बाद बारिस भी बन्द हो गया । नाग भी बुद्ध को छोड़कर सामने आकर नमस्कार किया । बुद्ध सोचा विवेक सुख जहाँ है वहाँ कायचित्त सुख स्वत: होता है ।

चतुर्मार्ग ज्ञान से सन्तुष्ट अपने चित्त के अन्दर लोकोत्तर धर्म के साथ-साथ ज्ञान चक्षु से उत्पन्न विवेक (निवीन) देखने वाले व्यक्ति को सुख प्राप्त होता है । संसार में किसी के ऊपर गुस्सा नहीं करने से और हिंसा भी नहीं करने से सुख प्राप्त होता है । कामवासना से विरत होकर विराग भी संसार का एक सम्पत्ति है । अहम् विनाश करना भी उत्तम सम्पत्ति है । ऐसा कहकर उदान वाक्य किया ।

सातवाँ सप्ताह

छ: सप्ताह के बाद बुद्ध जयश्री महाबोधि के आस-पास पाकड़ पेड़ के नीचे समापत्ति सुख से समय व्यतीत किये । (अंक 70)

परिच्छेद - 18

पाकड़ पेड़ के नीचे महातपस्वी

बुद्धत्व प्राप्ति के बाद बुद्ध सात सप्ताह कोई भी अन्न ग्रहण नहीं किये। केवल फल समापत्ति से समय व्यतीत किये ।

शक्र देवेन्द्र द्वारा बुद्ध की पूजा

सातवें सप्ताह के आखिरी दिन बुद्ध समापत्ति से उठ गये । उस दिन शक्र देव बुद्ध को दातून, मुँह धोने के लिए पानी और त्रिफला से उनका पूजा किया । बुद्ध दातुन करके पानी से मुँह धोकर पाकड़ पेड़ के नीचे बैठ गये ।

तपस्सु व बल्लुक दो सहोदर व्यापारी

उस समय उत्कल प्रदेश (जनपद) से कुछ सामान बेचने के लिए तपस्सु व बल्लुक दो सहोदर व्यापारी पाँच सौ बैलगाड़ियों में सामान लादकर उस तरफ से जा रहे थे । बोधगया के आस-पास नेरंजना नदी के उस पार जाते समय बालू के रेत में कुछ बैलगाड़ी धँस जाने के कारण आगे नहीं बढ़ पाये । तपस्सु व बल्लुक बहुत संकट में पड़ गये । उन्हें आस-पास के वासियों से पता चला कि नेरंजना नदी के किनारे पाकड़ पेड़ के नीचे एक तेजस्वी महातपस्वी बैठा हुआ है । यदि तुम सब उनके पास जाकर कुछ पूजा करके उनसे कुछ याचना करो तो तुम लोगों को कोई राहत मिल सकता है । यह बात सुनकर तपस्सु व बल्लुक दोनों रास्ते के लिए हुए अपने खाने का सामान सतुआ, धान का लावा और शहद (मधु) से बुद्ध की पूजा किये । बुद्ध तपस्सु व बल्लुक के भोजन को ग्रहण करने के बाद दोनों को अनुपुब्बी कथा के साथ धर्मदेशना (अनुपुब्बी, दान, शील इत्यादि) किया । तब तपस्सु व वल्लुक ने कहा भगवान आज से हमलोग जीवन भर आपके शरण में रहूँगा । आज से हमलोगों द्वारा आपकी शरण में हुए उपासक की मान्यता देने के लिए तपस्सु व बल्लुक ने भगवान् से याचना

किया। हम दोनों को पूजा करने के लिए आप कुछ ऐसी चीज अपने हाथ से दीजिए। बुद्ध ने अपने सिर पर हाथ रखकर कुछ केश को तपस्सु व बल्लुक को दिया । बल्लुक व तपस्सु बुद्ध द्वारा प्राप्त केश को ले जाकर अपने जाति भूमि आसितजनपुर में एक चैत्य (स्तूप) बनवाया ।

आठवें सप्ताह में महाब्रह्म की याचना

बुद्ध पाकड़ वृक्ष के नीचे से उठकर पुनः अजपाल बरगद वृक्ष के नीचे चले गये । अजपाल बरगद वृक्ष के नीचे बैठे हुए बुद्ध के मन में एक चिन्ता प्रकट हुई ।

(जो हमने चतुआर्य सत्य अवबोध किया वह बहुत गम्भीर है । उसे प्रकट करना इतना आसान नहीं है, आराम से अवबोध नहीं कर सकता है । जो हमने लोकोत्तर धर्म का अवबोध किया उसे शान्त, प्रनीत, तर्क मात्र से अवबोध नहीं किया जा सकता है । शूक्ष्म, सही ढंग से प्रतिपत्ति होकर ज्ञानवान व्यक्ति ही अवबोध कर सकते हैं । मनुष्य तृष्णा से बँधा हुआ है, उससे मुक्त होने के लिए वीर्य न करके उससे ही तृप्ति प्राप्त करके जीवन व्यतीत करता है । मोह के अन्धकार में रहकर व्यक्ति प्रत्याहार धर्म एवं निर्वाण भी नहीं जानते हैं । मोह अन्धकार से भरे हुए व्यक्तियों को धर्मदेशना करना निष्फल थकावट देने वाला ही है । हमने कठीन परिश्रम करके इस गम्भीर धर्म का अवबोध किया है लेकिन उसको देशना करने के लिए अभी समय नहीं है । राग से रक्त, द्वेष, घृणा से भरे हुए व्यक्तियों को गम्भीर प्रनीत धर्म अवबोध करना सम्भव नहीं है । जैसे जो कमल पानी में उल्टा हो गया वहाँ पानी बहुत गहरा है, दुर्दशा देने वाला है । वैसे बहुत सूक्ष्म चर्तुआर्य सत्य को राग से भरे हुए, अविद्या, अन्धकार से घिरे हुए, चित्त सन्तति से भरे हुए व्यक्तियों को इस धर्म को नहीं दे सकता।)
(अंक 75)

बुद्ध अपने द्वारा अवबोध किये हुए धर्म को गम्भीरत्व के बारे में उक्त प्रकरण से चिन्तन किये । क्लेश भरित, मोह, अन्धकार से भरे हुए व्यक्तियों को धर्म देशना करने से, धर्म देशना करने वाला व्यक्ति और सुनने वाला व्यक्ति दोनों को थक जाने के सिवाय कोई लाभ नहीं होगा । बुद्ध के इस चिन्तन-मनन का पता चलने के पश्चात् सहामपति महाब्रह्म देवता समूह के

साथ बुद्ध के पास आकर धर्म देशना करने के लिए आराधना की और कहा कि धर्म देशना को लोग सुनने को तैयार हैं इसलिए आप दु:खी जनता को सुखीत-मुदित करने के लिए और संसारिक दु:ख से पार करने के लिए आपको धर्म देशना करना होगा ।

सहामपति महाब्रह्म देवता ने बुद्ध से कहा भगवान एक समय क्लेश सहित व्यक्तियों द्वारा निष्पादित एक अशुद्ध धर्म मगध राज्य में प्रचार-प्रसार हुआ है । इसलिए भगवान यह शान्त, प्रनीत, अमूर्त धर्म देशना शुरू कीजिए। बहुत बड़े पर्वत के ऊपर बैठा हुआ व्यक्ति जैसे चारो ओर देखता है वैसे ही आप भी धर्म प्रसाद को शोक रहित, जाति-जरा मरण दु:ख से पीड़ित सत्य समूह को यह पुनीत धर्म की देशना कीजिए । मार संग्राम से जीता हुआ महात्म, संसार सागर को उत्तीर्ण करने वाला महानायक काम छन्द नाम से उदार युक्त श्रेष्ठ उत्तम पुरुष पीछे नहीं हटना क्योंकि धर्म देशना करने का समय आ गया है ।

बुद्ध अपने बोध-चक्षु से संसार को देखे कि मेरे द्वारा धर्म देशना सुनते ही धर्म अवबोध करने वाले बुद्धिमान् व्यक्ति थोड़ी-सी सुनने के बाद तुरन्त धर्म अवबोध करने वाले व्यक्ति विस्तार पूर्वक धर्म देशना करने से धर्म का अवबोध करने वाले व्यक्ति धर्म देशना विस्तार से जानने के बाद स्वयं अपने बुद्धि से मेहनत करके धर्मावबोध करने वाले व्यक्ति और किसी भी किमत पर इस जन्म में धर्म अवबोध नहीं करने वाले चार प्रकार के व्यक्तियों को देखें । धर्म देशना सुनने के लिए अभी बहुत से लोग तैयार हैं और धर्मदेशना करने का अभी योग्य समय है । बुद्ध सहामपति महाब्रह्म सहित देवता समूह की याचना को स्वीकार कर और सन्तुष्ट होकर उस स्थान से चले गये । (अंक 73)

श्रोताओं की खोज

बुद्ध ने सहामपति महाब्रह्म और देवताओं की याचना के बाद सोचा मैं सबसे पहले किसको धर्म देशना करू । यदि आलार तपस्वी जीवित हो तो वह धर्म अवबोध के लिए योग्य व्यक्ति है । अपने दिव्य चक्षु से देखा कि अभी आलार तपस्वी कहाँ है तो देखा कि एक सप्ताह के पहले आलार तपस्वी का देहान्त हो गया है । उसके बाद बुद्ध ने सोचा कि उद्दक राम पुत्र तपस्वी धर्म अवबोध के लिए योग्य व्यक्ति है दिव्य चक्षु से देखा कि

उद्दक रामपुत्र कहा है तो पाया कि उद्दक रामपुत्र भी गत रात्रि को ही देहान्त हो गया । (अंक 74)

तत्पश्चात् बुद्ध ने सोचा हमारा धर्म शान्त-पुनित एवं गम्भीर है यह मुर्ख लोगों को समझाना आसान नहीं है । यह प्रज्ञावान् लोगों को ही समझना आसान है । इसके बाद धर्म देशना के लिए योग्य व्यक्ति के बारे में सोचकर दिव्य चक्षु से देखने से पंचवग्गिय तपस्वीयों का नाम सामने आया । पुन: दिव्य चक्षु से विचार-विमर्श किया कि अभी पंचवग्गिय तपस्वी कहाँ है तो देखा पंचवग्गिय तपस्वी वाराणसी ऋषिपत्तन मृगदाय वन (वर्तमान सारनाथ) में होने की जानकारी हुई ।

उरूवेला से निकलना, उपक अजीवक से मुलाकात

बुद्ध बोधि वृक्ष के पास कुछ दिन समय व्यतित करने के पश्चात् वाराणसी ऋषिपत्तन की ओर चल पड़े । बोधगया से ऋषिपत्तन मृगदायवन (सारनाथ) 18 योजन और वर्तमान समय के अनुसार 260 किमी. है । उस वक्त महाबोधि और गया के बीच में एक अजीवक मुनि से मुलाकात हुआ उस अजीवक मुनि का नाम उपक था । (अंक 75)

वह बुद्ध को देखकर बहुत प्रसन्न हो गये और बुद्ध से कहा आयुष्मान आप अतिप्रसन्न है । आपकी आँखें और इन्द्रियाँ बहुत प्रसन्न हैं । शरीर का वर्ण बहुत साफ है, आप कौन-सा शास्त्र के लिए प्रवज्जा लिया है ? आपका धर्म क्या है ? किस धर्म का आप अनुसरण करते हैं ? इतना प्रश्न उपक आजीवक ने बुद्ध से पूछा । बुद्ध ने उत्तर देते हुए कहा मैं लोकत्व के सभी चीजों से युक्त हुआ हूँ । सब जानता हूँ । सांसारिक जीवन की सभी चीजों को छोड़ दिया हूँ । अर्हत् के साथ विमुक्ति पाकर संसार के दु:ख से मुक्त हो गया हूँ । दस पारमिता की शक्ति के माध्यम से वीर्य (पुरुषार्थ) करके हमने सत्य अवबोध किया है और हमारा कोई आचार्य नहीं है ।

सत्य अवबोध के लिए मेरा कोई भी बाहर का आचार्य नहीं है । इसलिए मेरे बराबर भी कोई नहीं है । देवताओं सहित त्रैलोक्य में भी हमारे बराबर कोई व्यक्ति नहीं है ।

वर्तमान संसार में अकेले मैं ही अर्हत् हूँ । संसार में मैं अकेला सम्मासम्बुद्ध हूँ । क्लेश अग्नि को बुझाकर शान्त हूँ । अविद्या के अन्धकार

से गहरे नींद में सो जाने वालों को जगाने के लिए, धर्म का अमूर्त रस भेरी बजाने के लिए वाराणसी के ऋषिपत्तन मृगदाव (सारनाथ) जा रहा हूँ। तब तो आपके कथनानुसार आप अनन्त जीव होने की योग्यता रखते हैं ।

अर्हत् प्राप्त करने के उपरान्त हमारे जैसे लोग एकान्त जीव के नाम से जानते हैं । उपक मैं सभी पाप कर्मों से मुक्त हूँ इसलिए मैं जीन हूँ ।

बुद्ध की बात सुनने के बाद उपक ने बोला—जी ऐसा हो सकता है। इतना कहकर बुद्ध के पास से हटकर दक्षिण दिशा की ओर चले गये । बुद्ध भी उत्तर दिशा की ओर गया प्रदेश को पार करके रोहित वस्तु, उरुविल्ला कल्प, अरुनालय, सारथीपुर जैसे गाँवों से होते हुए गंगा नदी को पार करके वाराणसी तक पहुँच गये ।

बुद्ध का ऋषिपत्तन में आगमन

सन्ध्या समय बुद्ध ऋषिपत्तन तक पहुँच गये, उस दिन आषाढ़ी पूर्णिमा का दिन था। बुद्ध को दूर से ही देखने के बाद पंचवग्गिय तपस्वी आपस में विचार-विमर्श करना शुरू कर दिया और कहे कि सिद्धार्थ श्रमण गौतम वीर्य (पुरुषार्थ) छोड़कर सुख-सुविधा का परिभोग करके बुद्धत्व प्राप्त करने का इरादा छोड़कर फिर से हम लोगों के पास आ रहा है । उसे यहाँ आते देखकर अपने आसन से खड़े होने की जरुरत नहीं है । उसका पात्र और चीवर भी हाथ में लेने की आवश्यकता नहीं है । उसका अभिवादन करने की भी आवश्यकता नहीं है । उच्चकुल का होने के कारण केवल बैठने के लिए एक आसन देना काफी है ।

बुद्ध को नजदीक आते ही सभी पंचवग्गिय तपस्वी अपने पूर्व कथनानुसार विचार पर कायम नहीं रह पाये । एक तपस्वी ने सामने जाकर पात्र और चीवर हाथ में लिया, एक तपस्वी ने बैठने का आसन दिया, एक तपस्वी ने पैर धोने का प्रबन्ध किया और एक तपस्वी ने पैर धोने के बाद पैर रखने के लिए पट्टालिका (पीढ़ा) रखा ।

बुद्ध का पैर धोने के बाद बुद्ध उस आसन पर बैठ गये । बुद्ध पंचवग्गिय तपस्वियों से आयु में कम होने के कारण पंचवग्गिय तपस्वी बुद्ध को आयुष्मान जैसे शब्दों से आमन्त्रित करना शुरू किया । पंचवग्गिय

तपस्वियों ने कहा गौतम उस समय हम सभी उरुवेला में ही आपके साथ रहते हुए पात्र व चीवर स्वयं अपने हाथ से लेकर आपके साथ ही विचरण करते थे । मुँह धोने का पानी और दातून स्वयं हमलोग तैयार करके देते थे । जिस जगह आप रहते थे वहाँ हम लोग झाड़ू लगाते थे । हम लोगों द्वारा आपको छोड़कर आने के बाद आप की सेवा सत्कार किसने किया, हमलोगों द्वारा आप को छोड़कर चले आने के बाद आप हम लोगों के बारे में क्या सोचे ? जैसे-जैसे बात आगे बढ़ता गया तब बुद्ध ने कहा सम्यक् सम्मबुद्ध को नाम से नहीं पुकारते हैं । आयुष्मान के शब्द से भी सम्बोधित नहीं करते हैं । (अंक 76)

सम्यक् सम्मबुद्ध सभी क्लेशों को नष्ट किया हुआ है । मध्यम मार्ग से ही स्वयं धर्म अवबोध किया हुआ है । हमारे बात को ध्यानपूर्वक कान खोलकर सुनना क्योंकि मैं सम्यक् सम्मबुद्ध निर्वाण पद प्राप्त किया हूँ । इसलिए हम आप लोगों का अनुशासना करते हैं, धर्मदेशना करते हैं । गृहस्थ जीवन छोड़कर नियमानुसार ब्रह्मचर्य का पालन करने से, हमारे धर्म का अनुसरण करने से आप लोग भी निवार्ण प्राप्त कर सकते हैं ।

पंचवग्गिय तपस्वी ने कहा उस समय आपने बहुत कठोर तपस्या की उस कठोर तपस्या (दुष्कारक क्रिया) से आपको कुछ लोकोत्तर शक्ति मिला की नहीं मिला ? शरीर को सही ढंग से आहार-पान प्रत्यय लेने के बाद शरीर पूर्ण स्वस्थ होने के पश्चात् आपको लोकोत्तर मार्ग मिला की नहीं ?

बुद्ध ने कहा मैं प्रत्यय (आहार) अधिक नहीं लिया वीर्य भी छोड़ा नहीं मैं अर्हत् सम्यक समबुद्ध हूँ मेरी बात पर ध्यान दो । मैं आप लोगों को जो अनुशासन कर रहा हूँ । धर्म देशना कर रहा हूँ । यदि गृहस्थ जीवन छोड़कर ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला व्यक्ति हमारे धर्म का अनुसरण करने से इसी जन्म में ही निर्वाण प्राप्त कर सकता है । बुद्ध द्वारा अपनी बात कहने के बाद भी पंचवग्गिय तपस्वी पहले जैसे कई प्रश्न किये । इस पर बुद्ध ने कहा 'मैं ऊरुवेला में आप लोगों के साथ रहते समय बुद्धत्व प्राप्ति के लिए वीर्य करते समय आप लोगों को धोखा देने के लिए कोई भी काम ऐसा नहीं किया, जैसे हमको कभी-कभी आश्चर्य जनक एक आलोक दिखाई देता है, जो हमको नहीं मिला उसको मिला बोलकर झुठ भी नहीं बोला यह आप लोगों को याद होगा । बुद्ध के ये शब्द सुनने के बाद पाँचों

तपस्वीयों को बुद्ध की पूरी बात समझ में आ गयी पुनः बुद्ध ने कहा मैं तथागत हूँ । अर्हत् हूँ, सम्यक समबुद्ध हूँ' । बुद्ध की बात सुनकर पाँचों तपस्वी एक मत से स्वीकार किया । सिद्धार्थ बुद्धत्व प्राप्त करने के बाद ही हम लोगों के सामने आये । इसके बाद ही पंचवग्गिय तपस्वी बुद्ध के धर्म श्रवण के लिए तैयार हुए ।

(बुद्ध को जो पंचवग्गिय तपस्वी ऋषिपत्तन में मिले उस स्थान को मूल रूप से सम्मुख चैत्य के नाम से जाना जाता था । राजा धर्माशोक ने उसी स्थान पर एक भव्य स्तूप बनवाया था । उस स्तूप को सम्मुख स्तूप के नाम से जाना जाता था । मुगल काल में मुगल शासक औरंगजेब अपनी सेना के साथ रणभूमि से पराजित होकर जाते समय उसी स्थान में एक गरीब वयोवृद्ध महिला जिसका नाम सीता था, औरंगजेब को भूख लगने पर कुछ खाना दिया था । यह बात औरंगजेब के दिल में बस गया था । कई दिनों के बाद औरंगजेब उसी रास्ते से वापस जा रहा था, तो सोचा जो भोजन उसने दिया था उस वृद्ध महिला की कृतज्ञता प्रकट करेंगे । लेकिन उस समय सीता नामक वृद्ध महिला इस दुनियाँ से चल बसी थी । तब औरंगजेब सम्मुख स्तूप को तोड़वाकर उसके खण्डहर के ऊपर एक स्मारक बनवाया और उस स्मारक पर अपनी भाषा में उक्त घटना को अंकित किया है । इस स्मारक के स्वरूप के अनुसार कोई इस स्थान को चौखण्डी स्तूप के नाम से जानते हैं तो कोई भोजन देने वाली महिला सीता के कारण सीता के रसोई के नाम से आस-पास के गाँव वाले उस स्थान को जानते हैं । जबकि उस स्थान का वास्तविक नाम सम्मुख स्तूप है क्योंकि बुद्ध का ऋषिपत्तन आगमन पर सबसे पहले पंचवग्गिय तपस्वीयों से इसी स्थान पर मुलाकात हुआ था इसलिए यह भगवान् बुद्ध का पंचवग्गिय तपस्वीयों से मुलाकात करने का स्थान है ।)

परिच्छेद - 19

प्रथम महासमागम

प्रथम धर्म देशना

आषाढ़ी पूर्णिमा के दिन सूर्य अस्त होने का समय हो रहा था। सुगन्धित पुष्प चारों ओर सुगन्ध फैलाना शुरू कर दिया, मुधमक्खियाँ सुगन्धित फूलों से उसकी रस को ले रही थी। मयूर अपने पंख फैलाकर मधुर नाद कर रहे थे। कोयल भी अपनी मीठी नाद से बाकि सभी पक्षियों के साथ खुशी मना रहे थे। मृग, हिरण अपने छोटे-छोटे बच्चों के साथ इधर-उधर दौड़ते खेल रहे थे। सायं होते ही ऋषिपत्तन भूमि एक रंगारंग श्री भूमि का स्वरूप ले लिया। कोण्डिन्य, भद्दिय, वप्प, महानाम, अश्वजीत पाँचों तपस्वी एक स्थान पर बैठ गये। बुद्ध चन्द्रोदय के समय चन्द्रमा को देखते ही पाँच तपस्वी का चेहरा देखकर अनुप बुद्धशील प्रज्वलित करते हुए बैठ गये। इसी महामंगल पुन्न घटना को देखने के लिए सभी देवता, ब्रह्म, यक्ष सेना, शूक्ष्म भेषधारी होकर एकत्रित हुए।

सम्यक् सम्मबुद्ध श्री मुख खोलकर बुद्धस्वर से अपना पहला धर्म देशना अर्थात् धम्मचक्क प्रवर्तन देशना सूत्र आरम्भ किये। उस समय कितना शब्द था अर्थात् जो भी कोलाहल था सभी शब्द स्वयं बन्द हो गयें। सभी पशु-पक्षी निःशब्द होकर बुद्ध के मधुर धर्म देशना को ध्यानपूर्वक सुनने लगे।

सद्धर्मवर चक्रवर्ती द्विपदोत्तम शाक्य सिंह महाकारुणिक तथागत बुद्ध पंचवग्गिय तपस्वी को धर्म देशना करना शुरू किया।

प्रथम धर्मदेशना (धर्म-चक्र-प्रवर्तन-सूत्र) एव में सूतम् एकं समयं भगवा वाराणसियम् विहरति इसिपतने मृगदाये (सारनाथ)

भिक्खुओं जो भी कोई प्रव्रज्जित होता है उस व्यक्ति को दो अन्तों में नहीं जाना चाहिए। दो अन्त क्या है ?—हीन, ग्राम्य, अशुभ देने वाला,

अनर्थों से युक्त कामवासनाओं में काम-सुख लिप्त होना है (पूरे शरीर को उम्र भर पंचकाम सम्पत्ति से सन्तप्त करना) और दु:ख उत्पन्न करने वाला अनार्य, निष्फल प्रयोग देने वाला 'अत्थकिल मथान योग' (पंच स्कन्ध को हर तरह से कष्ट देना) ये दो अन्त होता है ।

भिक्खुओं इन दोनों अन्त को छोड़कर ज्ञान चक्षु परिशुद्ध करना, ज्ञान चक्षु उत्पन्न करना, क्लेश दूर करना, सत्य अवबोध करना, सम्बोधि प्राप्ति के लिए निर्वाण प्रत्यक्ष के लिए, ये उपाय दोनों अन्तों से मुक्त होकर मध्यम प्रतिपदा अपनाना है । मध्यम प्रतिपदा से जाना जाने वाला आर्य अष्टांगिक मार्ग—1) सम्यक् दृष्टि, 2) सम्यक् संकल्प, 3) सम्यक् वचन, 4) सम्यक् कर्मान्त, 5) सम्यक् आजीविका, 6) सम्यक् व्यायाम (प्रयत्न), 7) सम्यक् स्मृति, 8) सम्यक् समाधि । ये सभी आर्य मार्ग हैं। तथागत स्वयं से इन अष्टांगिक मार्ग का अवबोध किया, जिससे ज्ञान चक्षु की उत्पत्ति हुआ। निर्वाण प्रत्यक्ष करने के लिए यही आठ आर्य मार्ग है । (अंक 77)

दुक्ख सत्य

भिक्खुओं जन्म भी दुक्ख है । बुढ़ापा भी दुक्ख है । रोग-व्याधि दुक्ख है । मृत्यु होना भी दुक्ख है । अप्रियों से मिलना दुक्ख है । प्रियों से अलग होना भी दुक्ख है । इच्छा होने पर किसी (वस्तु) का नहीं मिलना भी दुक्ख है । संक्षेप में रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार, विज्ञान ये पाँच उपादान स्कन्ध है जो दु:ख आर्य सत्य है । (अंक 78)

समुदय सत्य

भिक्खुओं बार-बार संसार में उत्पन्न कराने वाली, प्रीति और राग से युक्त, उत्पन्न हुए स्थानों में अभिनन्दन करानेवाली तृष्णा है । जैसे—काम-तृष्णा, भव-तृष्णा और विभव तृष्णा । इन तीन प्रकार के तृष्णा को दु:ख समुदय आर्य सत्य कहते हैं । (अंक 79)

दु:ख निरोध सत्य

भिक्खुओं तृष्णा को मूलरूप से नष्ट करके, तृष्णा को दूर करना, पूर्णरूप से तृष्णा को बाहर करना, तृष्णा से किसी भी प्रकार से न

जुड़ना, तृष्णा निरोध के लिए कारण हो निर्वाण दुःख निरोध आर्य सत्य है । (अंक 80)

मार्ग सत्य

भिक्खुओं सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वचन, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् आजीविका, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति और सम्यक् समाधि ये उत्तम आठ अंग, उत्तम मार्ग दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा है । (अंक 81)

सत्य ज्ञान

भिक्खुओं यह दुक्ख आर्य सत्य पूर्व से सुना नहीं, चतुसत्य धर्म विषय ज्ञान, चक्षु, प्रज्ञा, विद्या, आलोक मुझे प्राप्त हुआ है । (अंक 82)

कृत ज्ञान

भिक्खुओं ये दुःख आर्य सत्य परिशुद्ध से जानना चाहिए । पहले कभी भी नहीं सुने गये धर्म विषय, चक्षु, ज्ञान, विद्या, आलोक हमे प्राप्त हुआ है । (अंक 83)

समुदय सत्य ज्ञान

भिक्खुओं इस प्रकार दुःख समुदय सत्य जैसी बातें मैंने पूर्व में नहीं सुना । धर्म विषय के बारे में ज्ञानचक्षु से ज्ञान, प्रज्ञा, विद्या, आलोक हमें प्राप्त हुआ है । (अंक 84)

समुदय सत्य का कृत्य ज्ञान

भिक्खुओं ये दुःख समुदय आर्य सत्य (तृष्णा) पूर्ण रूप से छोड़ना पूर्व से न सुना धर्म विषय है । ज्ञान चक्षु, ज्ञान विद्या, प्रज्ञा, आलोक प्राप्त हुआ है । (अंक 85)

निरोध सत्य का सत्य ज्ञान

भिक्खुओं दुःख निरोध आर्य सत्य (निर्वाण) इसी प्रकार जैसे पूर्व से न सुना हुआ धर्म विषय है । ज्ञान चक्षु, ज्ञान विद्या, प्रज्ञा, आलोक प्राप्त हुआ है ।

निरोध सत्य कृत्य ज्ञान

भिक्खुओं दुःख निरोध आर्य सत्य (निर्वाण) हमने प्रत्यक्ष किया हुआ है । पूर्व से न सुना हुआ धर्म विषय है । हमारे चित्त के अन्दर कृत ज्ञान उत्पन्न हो गया है ।

निरोध सत्य कृत ज्ञान

भिक्खुओं मैं दुःख निरोध आर्य सत्य (निर्वाण) प्रत्यक्ष कर लिया है, पूर्व से न सुना हुआ धर्म विषय है ज्ञान हमें प्राप्त हुआ है ।

मार्ग सत्य है सत्य ज्ञान

भिक्खुओं हमने पूर्व से नहीं सुना धर्म विषय है । दुःख नष्ट करने वाला उपाय ज्ञान चक्षु से हमें प्राप्त हुआ है ।

मार्ग सत्य कृत्य ज्ञान

भिक्खुओं पूर्व से नहीं सुना धर्म विषय दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा सत्य हमने आगे बढ़ाया और सोचने से ज्ञान चक्षु प्राप्त हुआ है ।

मार्ग सत्य है कृत ज्ञान

भिक्खुओं पूर्व से न सुना हुआ धर्म विषय है । दुःख नष्ट करने का उपाय हमने आगे बढ़ाया तब ज्ञान चक्षु से हमारे चित्त में उत्पन्न हुआ है।

भिक्खुओं इसी प्रकार सत्य ज्ञान, कृत्य ज्ञान, कृत ज्ञान, एक-एक सत्य से तीन प्रकार होने से चार सत्य बारह प्रकार के हिसाब से तत्त्व ज्ञान जब तक हमारे चित्त में उत्पन्न नहीं हुआ । (अंक 86)

उस समय तक देव, मार, ब्रह्म सहित इस संसार में श्रमण, ब्राह्मण सहित सत्ववर्गया के बीच में मैं निरुत्तर सम्यक् समाधि प्राप्त किया हूँ । किसी के सामने प्रतिज्ञा नहीं किया हूँ । लेकिन भिक्खुओं किसी समय चर्तुआदि सत्य के तीन परिवर्तक भी बारह आकार से युक्त तत्त्व ज्ञान हमें प्राप्त हुआ है । भिक्षुओं उसके बाद देवता, मार, ब्रह्म सहित संसार में श्रमण, ब्राह्मण सहित सत्ववर्गया के बीच में मैं निरुत्तर सम्यक् सम्बोधि प्राप्त किया है । कहकर प्रतिज्ञा कर लिया हूँ कि हमारे चित्त के अन्दर ज्ञान दर्शन उत्पन्न

हुआ है । हमारा चित्त विमुक्ति आकोप्य हुआ है । हमारे आत्मभाव का अन्त है । आगे भविष्य में हमारा अब कोई जन्म नहीं होगा । इसी प्रकार सम्यक् सम्बुद्ध पंचवग्गिय तपस्वी को प्रथम धर्म देशना (धर्मचक्र प्रर्वतन सूत्र) को पूर्ण किया ।

प्रथम सोवान व्यक्ति

धर्मचक्र देशना श्रवण करने के उपरान्त कोण्डिन्य तपस्वी को धर्मचक्षु (स्रोतापत्तिमार्ग ज्ञान) प्राप्त हुआ । (अंक 87)

इस त्रैलोक्य में किसी देव ब्रह्म द्वारा करने का असमर्थ अप्रतिवर्त धर्मचक्र सम्यक् सम्मबुद्ध द्वारा सिद्ध किया है । सुनकर भूमतो (जमीन पर रहने वाले देवता) ब्रह्मकायिक देवता गण, देव, ब्रह्म आदि समूह महाप्रीति घोषणा किया । दस सहस्त्रलोक कम्पित हुआ है । अप्रमान, उदार, अतुल्य आलोक से सभी देवता ब्रह्म समूह, आलोक से पूरा प्रतिमण्डल-आलोक हो गया । तत्पश्चात् बुद्ध ने भिक्खुओं को आमन्त्रित किया । अहा ! कोण्डिन्य ने चतुआर्य सत्य अवबोध किया । हमें पता चला कहकर दो बार प्रीतिवाक्य प्रकाश किया । उसी समय कोण्डिन्य का 'ञ्गआ कोण्डिन्य' नाम प्रसिद्ध हुआ ।

सोवान होने के बाद कोण्डिन्य तपस्वी बुद्ध से प्रव्रज्या और उपसम्पदा के लिए याचना किया । बुद्ध ने भिक्खु इधर आना बोलकर आमन्त्रित किया । कहा हमारा धर्म साक्षात् पूर्ण रूप से दुःख नष्ट करने के लिए ब्रह्मचर्य मार्ग पूर्ण करते हैं । (अंक 88)

महाकारुणिक तथागत बुद्ध का प्रथम उपदेश

(जो इसी पतन मृगदाय (सारनाथ) में दिया था ।)

धम्मचक्क-पवत्तन-सुत्त का हिन्दी अनुवाद

(धर्मचक्र-प्रवर्तन-सूत्र)

ऐसा मैंने सुना—

एक समय भगवान् वाराणसी के ऋषिपत्तन मृगदाय में विहार करते थे। वहाँ भगवान् ने पञ्चवर्गीय भिक्खुओं को सम्बोधित करते हुए कहा—

'भिक्खुओं ! इन दो अन्तों (= चरम बातों) को प्रव्रजितों को सेवन नहीं करना चाहिए—(1) जो यह हीन, ग्राम्य, पृथकजनों के योग्य, अनार्य (-सेवित), अनर्थों से युक्त कामवासनाओं में काम-सुख-लिप्त होना है, और (2) जो यह दुक्खमय, अनार्य (-सेवित), अनर्थों से युक्त स्व-पीड़न (= कायक्लेश) में लगना है । भिक्खुओं इन दोनों अन्तों (= चरम बातों) में न जाकर तथागत ने मध्यम मार्ग को जाना है, (जोकि) आँख देने वाला, ज्ञान कराने वाला, शान्ति के लिये, अभिज्ञा के लिये, सम्बोधि (= परम ज्ञान) के लिये, निर्वाण के लिये है ।

भिक्खुओं ! तथागत ने कौन सा मध्यम मार्ग जाना है (जो कि) आँख देने वाला, ज्ञान कराने वाला, शान्ति के लिये, अभिज्ञा के लिये, सम्बोधि के लिए तथा निर्वाण के लिये है । यही श्रेष्ठ अष्टांगिक मार्ग, जैसे कि—(1) सम्यक दृष्टि (2) सम्यक संकल्प (3) सम्यक वचन (4) सम्यक कर्मान्त (5) सम्यक आजीविका (6) सम्यक व्यायाम (= प्रयत्न) (7) सम्यक स्मृति और (8) सम्यक समाधि । भिक्खुओं ! इस मध्यम मार्ग को तथागत ने जाना है (जो कि) आँख देने वाला, ज्ञान कराने वाला, शान्ति के लिये, अभिज्ञा के लिये, सम्बोधि के लिये, निर्वाण के लिये है ।

चार श्रेष्ठ-सत्य

भिक्खुओं ! यह दुक्ख श्रेष्ठ-सत्य है—जन्म भी दुक्ख है, जरा (= बुढ़ापा) भी दुक्ख है, रोग भी दुक्ख है, मृत्यु भी दुक्ख है, अप्रियों से संयोग (= मिलन) दुक्ख है, प्रियों से वियोग दुक्ख है, इच्छा होने पर किसी (वस्तु) का नहीं मिलना भी दुक्ख है । संक्षेप में पाँच उपादान-स्कन्ध[1] दुक्ख हैं ।

भिक्खुओं ! यह दुक्ख समुदय श्रेष्ठ-सत्य है—यह जो फिर-फिर जन्म कराने वाली, प्रीति और राग से युक्त, उत्पन्न हुए स्थानों में अभिनन्दन कराने वाली तृष्णा है, जैसे कि 1) काम-तृष्णा 2) भव-तृष्णा (= जन्म सम्बन्धी तृष्णा) और 3) विभव-तृष्णा (= उच्छेद की तृष्णा) ।

भिक्खुओं ! यह दुक्ख-निरोध श्रेष्ठ-सत्य है—जो उसी तृष्णा का सर्वथा

1. रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार, विज्ञान—ये पाँच उपादान स्कन्ध कहे जाते हैं ।

विराग है, निरोध (= रुक जाना), त्याग, (प्रतिनिस्सर्ग) (= निकास), मुक्ति (= छुटकारा), लीन न होना है ।

भिक्खुओं ! यह दुक्ख-निरोध-गामिनी प्रतिपदा श्रेष्ठ-सत्य है—यही श्रेष्ठ आष्टांगिक मार्ग जैसे कि 1) सम्यक दृष्टि 2) सम्यक संकल्प 3) सम्यक वचन 4) सम्यक कर्मान्त 5) सम्यकय आजीविका 6) सम्यक व्यायाम 7) सम्यक स्मृति और 8) सम्यक समाधि ।

चार श्रेष्ठ-सत्यों का तेरह ज्ञान दर्शन

1) 'यह दुक्ख श्रेष्ठ-सत्य है'—'हे भिक्खुओं ! यह मुझे पहले नहीं सुने गये धम्मों में आँख उत्पन्न हुई, ज्ञान उत्पन्न हुआ, प्रज्ञा उत्पन्न हुई, विद्या उत्पन्न हुई, आलोक उत्पन्न हुआ । यह दुक्ख श्रेष्ठ-सत्य परिज्ञेय है'— भिक्खुओं ! यह मुझे पहले न सुने गये धर्मों में आँख उत्पन्न हुई, ज्ञान उत्पन्न हुआ, प्रज्ञा उत्पन्न हुई, विद्या उत्पन्न हुई, आलोक उत्पन्न हुआ । 'यह दुक्ख श्रेष्ठ-सत्य परिज्ञात है'—भिक्खुओं ! यह मुझे पहले न सुने गये धम्मां में आँख उत्पन्न हुई, ज्ञान उत्पन्न हुआ, प्रज्ञा उत्पन्न हुई, विद्या उत्पन्न हुई, आलोक उत्पन्न हुआ ।

2) 'यह दुक्ख श्रेष्ठ-सत्य है'—'हे भिक्खुओं ! यह मुझे पहले नहीं सुने गये धम्मों' में आँख उत्पन्न हुई, ज्ञान उत्पन्न हुआ, प्रज्ञा उत्पन्न हुई, विद्या उत्पन्न हुई, आलोक उत्पन्न हुआ । यह दुक्ख समुदाय श्रेष्ठ-सत्य प्रहातव्य (= त्याज्य = छोड़ने योग्य) है'—भिक्खुओं ! यह मुझे पहले नहीं सुने गये धम्मों में आँख उत्पन्न हुई, ज्ञान उत्पन्न हुआ, प्रज्ञा उत्पन्न हुई, विद्या उत्पन्न हुई, आलोक उत्पन्न हुआ । 'यह दुक्ख समुदय श्रेष्ठ-सत्य प्रहीण (= दूर) हो गया'—भिक्खुओं ! यह मुझे पहले नहीं सुने गये धम्मों में आँख उत्पन्न हुई, ज्ञान उत्पन्न हुआ, प्रज्ञा उत्पन्न हुई, विद्या उत्पन्न हुई, आलोक उत्पन्न हुआ ।

3) 'यह दुक्ख निरोध श्रेष्ठ-सत्य है'—'हे भिक्खुओं ! यह मुझे पहले नहीं सुने गये धम्मों में आँख उत्पन्न हुई, ज्ञान उत्पन्न हुआ, प्रज्ञा उत्पन्न हुई, विद्या उत्पन्न हुई, आलोक उत्पन्न हुआ ।

4) 'यह दुक्ख निरोध गामिनी प्रतिपदा श्रेष्ठ-सत्य हैं'—'हे भिक्खुओं ! यह मुझे पहले नहीं सुने गये धम्मों में आँख उत्पन्न हुई, ज्ञान उत्पन्न हुआ,

प्रज्ञा उत्पन्न हुई, आलोक उत्पन्न हुआ । यह दुक्ख निरोध गागिनी प्रतिपदा श्रेष्ठ-सत्य भावना करना चाहिये,—भिक्खुओं ! यह मुझे पहले नहीं सुने गये धम्मों में आँख उत्पन्न हुई, ज्ञान उत्पन्न हुआ, प्रज्ञा उत्पन्न हुई, विद्या उत्पन्न हुई, आलोक उत्पन्न हुआ । 'यह दुक्ख निरोध-गामिनी प्रतिपदा श्रेष्ठ-सत्य भावना कर लिया गया'—भिक्खुओं ! यह मुझे पहले नहीं सुने गये धम्मों में आँख उत्पन्न हुई, ज्ञान उत्पन्न हुआ, प्रज्ञा उत्पन्न हुई, विद्या उत्पन्न हुई, आलोक उत्पन्न हुआ ।

भिक्खुओं ! जब तक कि इन चार श्रेष्ठ-सत्यों का ऐसा तेहरा बारह प्रकार का यथार्थ विशुद्ध ज्ञान-दर्शन नहीं हुआ, तब तक मैंने भिक्खुओं ! यह दावा नहीं किया कि—'देवों सहित, मार-सहित, ब्रह्मा-सहित सभी लोक में देव मनुष्य सहित, श्रमण-ब्राह्मण-सहित सभी प्रजा (= प्राणी) में, सर्वोत्तम सम्यक सम्बोधि (= परमज्ञान) को मैंने जान लिया ।

भिक्खुओं ! जब इन चार श्रेष्ठ-सत्यों का ऐसे तेहरा बारह प्रकार का यथार्थ निशुद्ध-दर्शन हुआ, तब मैंने भिक्खुओं ! यह दावा किया कि 'देवों-सहित, मार-साहित, ब्रह्मा-सहित, सभी लोक में, देव मनुष्य सहित, श्रमण-ब्राह्मण, सहित सभी प्रजा (= प्राणी) में सर्वोत्तम सम्यक सम्बोधि (= परमज्ञान) को मैंने जान लिया । मुझे ज्ञान दर्शन उत्पन्न हो गया मेरी चेतोविमुक्ति (= चित्त का मुक्त होना) अचल है, यह अन्तिम जन्म है, फिर जब जन्म लेना नहीं है' ।

भगवान् ने यह कहा । सन्तुष्ट हो पञ्चवर्गीय भिक्खुओं ने भगवान् के कथन का अभिनन्दन किया ।

इस व्याख्यान (= व्याकरण) के कहे जाने पर आयुष्मान् कौडिन्य को, 'जो कुछ उत्पन्न होने वाला है, वह सब नाशमान् है' यह परिशुद्ध, विमल धम्म-चक्षु उत्पन्न हुआ ।

भगवानृ के धम्म-चक्क को प्रवर्तित करने (= चलाने) पर भूमि पर रहने वाले देवताओं ने शब्द किया—'भगवान् ने यह वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाय में अनुपम धम्म-चक्क को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता' ।

भूमि पर रहने वाले देवताओं के शब्द को सुनकर चातुर्महाराजिक देवताओं ने शब्द किया—'भगवान् ने यह वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाय में अनुपम धम्म-चक्क को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा, या किसी भी व्यक्ति से प्रावर्तित नहीं किया जा सकता।

चातुर्महाराजिक देवताओं के शब्द को सुनकर तावतिंस देवताओं ने शब्द किया—'भगवान् ने यह वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाय में अनुपम धम्म-चक्क को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण ब्राह्मण देवता मार ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता है' ।

तावतिंस देवताओं के शब्द को सुनकर तुषित देवताओं ने शब्द किया—'भगवानद्द ने यह वाराणसी के ऋषिपतन मृगदान में अतुत्तर धम्म-चक्क को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता' ।

याम देवताओं के बाद को सुनकर तुषित देवताओं ने साधु किया—'भवान् ने यह वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाय में अनुपम धम्म-चक्क को प्रवर्तित किया है, जो लोक में, श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता' ।

तुषित देवताओं के शब्द को सुनकर निर्माणरति देवताओं ने शब्द किया—'यह भगवान् ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाय में अनुपम धम्म-चक्क को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता' ।

निर्माणरति देवताओं के शब्द को सुनकर परनिर्मितवशवर्ती देवताओं ने साधु किया—'यह भगवान् ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदान में अनुपम धम्म-चक्क को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता' ।

परनिर्मितवशवर्ती देवताओं के शब्द को सुनकर ब्रह्मपरिषद देवताओं ने साधु किया—'यह भगवान् ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाय में अनुपम धम्म-चक्क को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता' ।

ब्रह्मपरिषद देवताओं के शब्द को सुनकर ब्रह्मपुरोहित देवताओं ने साधु किया—'यह भगवान् ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाय में अनुपम धम्म-चक्क को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता' ।

ब्रह्मपुरोहित देवताओं के शब्द को सुनकर महाब्रह्मा देवताओं ने साधु किया—'यह भगवान् ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाय में अनुपम धम्म-चक्क को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता' ।

महाब्रह्मा देवताओं के साधु को सुनकर परित्ताम देवताओं ने साधु किया—'यह भगवान् ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाय में अनुपम धम्म-चक्क को प्रवर्तित किया है जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता' ।

परित्ताम देवताओं के साधु को सुनकर अप्रमाणभ देवताओं ने साधु किया—'यह भगवान् ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाय में अनुपम धम्म-चक्क को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता' ।

अप्रमाणाभ देवताओं के शब्द को सुनकर आभास्वर देवताओं ने साधु किया—'यह भगवान् ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाय में अनुपम धम्म-चक्क को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता' ।

आभास्वर देवताओं के शब्द को सुनकर परित्रशुभ देवताओं ने साधु किया—'यह भगवान् ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाय में अनुपम धम्म-चक्क को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता' ।

परित्रशुभ देवताओं के शब्द को सुनकर अप्रमाणशुभ देवताओं ने साधु किया—'यह भगवान् ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाय में अनुपम धम्म-चक्क को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता' ।

अप्रमाणशुभ देवताओं के शब्द को सुनकर शुभकृत्स्न देवताओं ने साधु किया—'यह भगवान् ने वाराणसी के ॠषिपतन मृगदाय में अनुपम धम्म-चक्क को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता' ।

शुभकृत्स्न देवताओं के शब्द को सुनकर वृहत्फल देवताओं ने साधु किया—'यह भगवान् ने वाराणसी के ॠषिपतन मृगदाय में अनुपम धम्म-चक्क को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता' ।

वृहत्फल देवताओं के शब्द को सुनकर अविह देवताओं ने साधु किया—'यह भगवान् ने वाराणसी के ॠषिपतन मृगदाय में अनुपम धम्म-चक्क को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता' ।

अविह देवताओं के शब्द को सुनकर अतप्य देवताओं ने साधु किया—'यह भगवान् ने वाराणसी के ॠषिपतन मृगदाय में अनुपम धम्म-चक्क को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता' ।

अतप्य देवताओं के शब्द को सुनकर सुदर्श देवताओं ने साधु किया—'यह भगवान् ने वाराणसी के ॠषिपतन मृगदाय में अनुपम धम्म-चक्क को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता' ।

सुदर्श देवताओं के शब्द को सुनकर सुदर्शी देवताओं ने शब्द किया—'यह भगवान् ने वाराणसी के ॠषिपतन मृगदाय में अनुपम धम्म-चक्क को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता' ।

सदुर्शी देवताओं के शब्द को सुनकर अकनिष्ठक देवताओं ने साधु किया—'यह भगवान् ने वाराणसी के ॠषिपतन मृगदाय में अनुपम धम्म-चक्क को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता' ।

इस प्रकार उसी क्षण में, उसी मुहूर्त्त में यह शब्द ब्रह्मलोक तक पहुँच गया और यह दस सहस्री ब्रह्माण्ड काँप उठा, सम्प्रकिम्पत हो गया, हिल उठा । देवताओं के तेज से भी बढ़कर बहुत भारी, विशाल प्रकाश लोक में उत्पन्न हुआ ।

बुद्ध का उदान

तब बुद्ध ने उदान कहा—'अहा ! कौडिन्य ने जान लिया (= अज्ञात) अहा ! कौडिन्य ने जान लिया' । इसीलिये आयुष्मान् कौडिन्य का 'अज्ञात कौडिन्य' ही नाम पड़ा[1] ।

धम्मचक्कप्पवत्तनसुत्त समाप्त ।

1. पञ्चवर्गीय भिक्खुओं के नाम हैं—आयुष्मान् कौण्डिन्य, आयुष्मान् वप्प, आयुष्मान् भद्दिय, आयुष्मान् महानाम और आयुष्मान् अश्वजित ।

परिच्छेद - 20

अपने मित्र के बारे में सोचते रहने के कारण यक्ष सेनापति सातागिरि बुद्ध का धर्म नहीं समझा

सातागिरी और हेमवत् यक्ष सेनापति

धर्मचक्र प्रवर्तन सूत्र के अन्त में महापृथ्वी कंपित होकर प्रातिहार किया। उस प्रातिहार को सबसे पहले सातागिर यक्ष सेनापति ने महसूस किया। (अंक 89)

पृथ्वी कम्पित होने का कारण क्या है ? जानने के लिए सातागिरी अपने परिषद के साथ बुद्ध के पास आकर धम्मचक्क-पवत्तन सूत्त (धर्मचक्र-प्रवर्तन सूत्र) को सुना लेकिन सातागिरी सोवान जैसे कोई गुण प्राप्त नहीं कर सका क्योंकि उसका कारण यह है कि अपना प्रिय मित्र हेमवत् साथ नहीं आने से उसके बारे में ही सोचते रह गये। इसलिए सातागिरी अपने चित्त को एकाग्र नहीं कर पाया। चित्त एकाग्र नहीं होने के कारण सातागिरी को धर्मचक्र प्रवर्तन सूत्र कुछ भी समझ में नहीं आया।

सातागिर अपने मित्र को ले आने के लिए आकाशचारी हाथियाँ, अश्ववान् और गरुड़यान आदि के साथ अपने परिषद् को लेकर हिमालय की ओर चल दिये।

बुद्ध का प्रतिसन्धि, उत्पत्ति, अभिनिष्क्रमण, सम्बोधि प्राप्ति, परिनिर्वाण जैसे महापुण्य घटनाओं के समय उत्पन्न होने वाला पूर्वनिमित्त बहुत समय तक नहीं रहता है। लेकिन धर्मचक्र-प्रवर्तन-सूत्र के समय उत्पन्न होने वाला पूर्वनिमित्त विशेष रूप से अधिक समय तक रहता है।

हिमवत् (हिमालय) पर्वत में अकाल पुष्प खिलते हुए हेमवत् यक्ष ने देखा। हेमवत प्रसन्न होकर सोचा अपने मित्र के साथ इन पुष्पों का श्री आस्वाद लेगें। सातागिरी यक्ष को बुलाने के लिए मध्य देशाभिमुख से निकल पड़े। इस प्रकार दोनों ओर से दोनों मित्रों का आते समय सामना राजगिर

नगर के पास हुआ । मुलाकात के बाद दोनों ने मिलने आने का कारण पूछा ।

हेमवत् यक्ष ने कहा अकाल पुष्पों से हिमालय प्रदेश पुष्पित हो रहा है इसलिए उसके रस को दोनों मिलकर अस्वादन करेंगे । सातागिरी ने पूछा इस अकाल में इतना सुन्दर पुष्प खिलने का कारण क्या है ? हेमवत ने कहा, हमें मालूम नहीं है । इस पर सातागिरी ने कहा मित्र यह प्रातिहार्य हिमवत् का नहीं है बल्कि यह सम्पूर्ण लोक धातु में ही हो रहा है क्योंकि सम्मासम्मबुद्ध इस धरती पर उत्पन्न हुए हैं । आज धर्मचक्र-प्रवर्तन सूत्र के कारण इस तरह का महाप्रातिहार देखने को मिला है ।

तत्पश्चात् हेमवत् यक्ष ने कहा आज पूर्णिमा का दिन है । पूर्ण चन्द्र के सौम्य रश्मि से सम्पूर्ण रात्रि एकालोक है । इसलिए चतुसत्य अवबोध किये हुए सभी क्लेशों को नष्ट किये हुए, श्रेष्ठ गुणों से युक्त सम्यक् सम्मबुद्ध को देखने के लिए प्रस्थान कीजिए । उसके बाद निम्न प्रकार से दोनों के बीच प्रश्न-उत्तर का संवाद शुरू हो गया ।

हेमवत् यक्ष

क्या तुम्हारे बुद्ध ने चित्त को सही ढंग से स्थापित किया है ? क्या तुम्हारे बुद्ध का सभी प्राणियों के लिए समान चित्त है कि नहीं ? अनिष्ट (अंक 90)

आरम्भन में राग, द्वेष, मोह आदि चित्त संकल्प तुम्हारे गुरु (बुद्ध) ने नष्ट किया है कि नहीं ?

सातागिरी यक्ष

हमारे आचार्य का लाभ-हानि आदि एवं अचल चित्त से बाराबर है । आरम्भन विषय, संकल्प हमारे आचार्य ने नष्ट किया हुआ है ।

हेमवत्

क्या तुम्हारा गुरु दूसरों की सम्पत्ति चोरी नहीं करता है ? प्राणघात भी नहीं करता ? क्या अब्रह्मचर्य से युक्त है ? ध्यान आदि सत्य क्रिया छोड़ता तो नहीं है ?

सातागिरी

हमारे गुरु (बुद्ध) दूसरों की सम्पत्ति लेने का इच्छुक नहीं है । प्राणघात से पूर्णत: मुक्त है, व्यभिचार से पूर्णरूप से मुक्त है । हर वक्त ध्यान में रहता है, कभी भी ध्यान नहीं छोड़ता है ।

हेमवत्

क्या तुम्हारा बुद्ध झूठ तो नहीं बोलता है ? कठोर शब्द तो नहीं बोलता है ? चुगली तो नहीं करता है ? अनावश्यक बातें तो नहीं करता है ?

सातागिरी

हमारे गुरु बुद्ध झूठ नहीं बोलते, कठोर शब्द नहीं बोलते, चुगली नहीं करते हैं और अनावश्यक बात भी नहीं करते हैं । अपने बुद्ध ज्ञान से जो प्राणियों के हित के लिए क्या आवश्यक है वहीं बात करते हैं ।

हेमवत्

क्या तुम्हारे गुरु बुद्ध काम सम्पत्ति में अधिक लीन है की नहीं ? दूसरों लोगों को परेशान करने के लिए सोचते हुए चित्त कम्पित तो नहीं होता है ? मिथ्या दृष्टि के लिए उत्पत्ति से धोखे में तो नहीं है ?

सातागिरी

हमारे गुरु बुद्ध पंचकाम साम्पत्ति में लीन नहीं है । बुद्ध का चरित्र दूसरे लोगों के दोषारोपण करने में नहीं लगता है । बुद्ध ने मोह पूर्ण रूप से छोड़ दिया है ।

हेमवत्

क्या बुद्ध अष्टविद्या से युक्त है कि नहीं ? पूर्ण रूप से परिशुद्ध चरण धर्म पालन करता है कि नहीं ? मोह आदि सभी क्लेश नष्ट किया है कि नहीं ? उनका कोई पूर्व जन्म होता है कि नहीं होता है ?

सातागिरी

हमारे गुरु बुद्ध अष्ट विद्या से परिपूर्ण है । परिशुद्ध चरण धर्म से युक्त है । उनका फिर से पुनर्जन्म नहीं होगा ।

हेमवत्

सम्यक् सम्मबुद्ध का चित्त सम्पूर्ण है, विद्याचरण धर्म से युक्त है, बुद्ध के गुण के कारण को जानने के बाद उसकी प्रशंसा करता हूँ ।

सातागिरी

मेरे मित्र सम्यक् सम्बुद्ध का चित्त परिपूर्ण है । परिशुद्ध काय, वाक, मन, कर्म से परिपूर्ण है । जो जानना है, उस चीज को पूर्ण रूप से जान लिया है । जो जैसा है उसे वैसे ही समझ लिया है । बुद्ध का चित्त परिपूर्ण है । काय, वचन मन से सुचरित सम्पन्न है । शंका रहित है । विद्याचरण गुणों से परिपूर्ण है । विद्याचरण से परिपूर्ण बुद्ध को हमने देखा है । बुद्धके बारे में सातागिरी से पूर्ण जानकारी होने के बाद हेमवत् यक्ष निम्न प्रकार से बातें की हैं । (इतना धर्म बुद्ध के बारे में चर्चा करने के बाद हेमवत् सोवान् हो गया ।)

हेमवत्

मित्र सातागिरी आइए, मृग के पैर के समान कोमल पैर से युक्त, सुन्दर शरीर से युक्त वीर, खाने-पीने में लोभ नहीं करना, ऋषि (मुनी) गुण से युक्त जंगल में ध्यान करने वाले उस सम्यक् सम्मबुद्ध को देखना जरूरी है । एक सिंह राजा जैसे एक चारी है । पाप नहीं करता है, काम के बारे में अपेक्षा नहीं करता है । उस बुद्ध के पास जाकर मार से युक्त निर्वाण के बारे में हमलोग पूछेंगे । (अंक 91, 92, 93)

प्रथम सोवान उपासिका

उस समय राजगिर में आषाढ़ी पूर्णिमा नक्षत्र का उत्सव चल रहा था। नगरवासी पूरे शहर को सुन्दर ढंग से सजाकर नक्षत्र उत्सव का आनन्द ले रहे थे । काली के नाम से प्रसिद्ध होने वाली एक स्त्री उत्सव देखने के बाद अपने घर की खिड़की खोलकर अपनी थकावट दूर कर रही थी।

खिड़की पूरी खुली थी । हवा भी चल रहा था । सातागिरी और हेमवत् के बीच वार्ता होने की पूरी बात उसने ध्यानपूर्वक सुनी । एकाग्र चित्त से सुनकर बुद्ध के प्रति प्रीति उत्पन्न होने के कारण काली को सोवान प्राप्त हो गया। बुद्ध के गुण को सुनने से प्रभावित होकर सोवान होने वाली उपासिका राजगिर की स्त्री काली थी ।

दूसरा धर्म देशना

दोनों यक्ष सेनापति मध्य रात्रि को अपने पूरे परिषद के साथ ऋषिपत्तन मृगदाय आकर जो बुद्ध धर्मचक्र मुद्रा में थे उनसे मुलाकात किये । हेमवत् यक्ष सेनापति बुद्ध के पास जाकर (अनेक) कई प्रकार से प्रश्न पूछा है । जिस प्रकार सत्य अंग से निश्चित होकर देशना करने वाले, आर्यसत्य विषय ज्ञान, चर्तुआर्य सत्य मार्ग से परिपूर्ण सभी क्लेशों का ध्यान करके, मोह, निद्रा, प्रबुद्ध, वैर पूर्णरूप से समाप्त किये हुए गौतम से मैं पूछ रहा हूँ।

क्या उत्पन्न होने से लोक उत्पन्न होता है ? किस कारण से सत्व, तृष्णा दृष्टि एकत्रित होते है ? किन कारणों से लोक का शब्द व्यवहार होता है ? किस कारण से लोक प्रताड़ित होता है ?

बुद्ध ने उत्तर देते हुए कहा—अध्यात्मिक एवं बाह्य सड़ायतन उत्पन्न होने से लोक उत्पन्न होता है । दो प्रकार के आयतन के कारण लोकवासी तृष्णा दृष्टि में संलग्न होता है । दो प्रकार की सड़ायतन के कारण लोक के नाम से व्यवहार होता है । सड़ायतन तब तक है जब तक लोक प्रताड़ित होता है ।

हेमवत् पुन: प्रश्न करते हुए पूछता है—किस कारण को लेकर लोक प्रताड़ित होता है ? तो इसका उत्पत्ति धर्म क्या है ? लोक से निकलने का मार्ग क्या है ? उत्पादनिय धर्म दु:ख से कैसे मुक्त होगा ? इसका निवारण हमें बता दीजिए ।

बुद्ध ने बताया—संसार में मन सहित पंचकाम सम्पत्ति आलम्बन है। यह अध्यात्मिक बाह्य रूप से विविध और सड़ायतन विषय है । तृष्णा को सभी प्रकार से दूर करने से सत्व से मुक्त होता है । (अंक 94)

संसार से निकलने का उपाय यही है । हजार बार पूछने से भी मेरे द्वारा देशीत लोक निर्वाण मार्ग यही है क्योंकि इसी मार्ग से सत्व दुःख से मुक्त होता है । इसी देशना के अवसान से सातागिरी व हेमवत् दोनों यक्ष सेनापति के साथ एक हजार के आस-पास यक्ष समूह भी सोवान हो गये। इसके बाद भी हेमवत् यक्ष सेनापति इससे सन्तुष्ट न होकर आगे शेखा-शेख भूमि के बारे में विचार किया और सम्यक् सम्मबुद्ध से पूछा, 'कौन-सा व्यक्ति चार ओघ को पार करता है ? संसार सागर से कौन पार पाता है ? अन्दर से कोई सहारा नहीं है । ऊपर से भी कुछ पकड़ने का जगह नहीं है । इस कारण संसार सागर में कौन डूब जाता है ?

बुद्ध ने बताया, सदाशील सम्पन्न, लोकोत्तर प्रज्ञा सम्पन्न, उपचार अर्पण समाधि से युक्त मार्गफल में सही ढंग से स्थापित हुआ हो । अपने पंच स्कन्ध विलक्षण के हिसाब से विचार-विमर्श करना, सदा स्थिर चित्त से युक्त व्यक्ति चार संसार सागर को पार करता है । काम संज्ञा से सभी प्रकार से दूर हो गया हो, सभी संयोजन देखा हुआ हो, तृष्णा और पुनर्भव शिक्षण किया हो, अर्हत् व्यक्ति संसार सागर में जन्म-मरण (च्यूति-प्रतिसन्धि) से मुक्त होता है ।

बुद्ध की बात सुनने के बाद हेमवत् यक्ष सेनापति अपने मित्र सातागिरी यक्ष सेनापति और परिषद की तरफ देखकर खुश होकर कहा—गम्भीर प्रज्ञा से युक्त सभी प्रश्नों का अर्थ जानने वाला, राग आदि पलिबोध नष्ट किया हुआ वस्तु, क्लेश दोनों में तीन भव बन्धन से मुक्त स्कन्ध आदि प्रभेद सभी आरम्भन चन्द, राग इत्यादि से मुक्त यह महाशील महर्षि की ओर देखो। सभी प्रकार से परिपूर्ण (अलामक) निपूनार्थदर्शी हो, प्रज्ञादायक हो, कामालय (कामवासना) आदि को छोड़ दिया है । सब कुछ जानने वाला शोभन से युक्त (पारमिता), प्रज्ञा से युक्त आर्य अष्टांगिक मार्ग के माध्यम से फल समापत्ति ज्ञान से युक्त इस महर्षि के तरफ देखों । चतुरोध पार किया हुआ निराश सम्यक् समबुद्ध देखने के कारण आज हम लोगों को एक शुभदर्शन प्राप्त हुआ है । आज के दिन का उदय (सुबह) शुभ है । आज नींद से जगा हूँ । यह भी शुभ है और कर्म विपाक जय इन्द्रियों से युक्त, यशस्वी से परिपूर्ण दस सहस्त्र यक्ष समूह सर्वज्ञय (बुद्धं शरणं गच्छामि)

समबुद्ध पद प्राप्ति आपका धर्म सुन्दर मधुर प्रनित धर्म को नमस्कार करते हुए धर्म के शरण में जाता हूँ । (धम्मं शरणं गच्छामि) (अंक 95)

हेमवत यक्ष सेनापति बुद्ध को प्रणाम करके धन्यवाद देकर, प्रदक्षिणा करने के बाद अपने मित्र सातागिरी सहित यक्ष परिषद् के साथ अपने दिशा में चले गये । (अंक 96)

परिच्छेद - 21

अपनापन का मोह छोड़ने से क्लेश दूर होता है

आषाढ़ी पूर्णिमा के दूसरे दिन बुद्ध ने वप्प तपस्वी को धर्म देशना दिये और शेष चार तपस्वी भिक्षाटन के लिए चले गये । वप्प तपस्वी ने बुद्ध का दिया हुआ भावना विधि को बहुत वीर्य से आगे बढ़ाया जिससे पूर्णिमा के दूसरे दिन ही वह सोवान हो गया । वह ऐहि भिक्खु भाव से प्रवज्जित हो गया । (अंक 97)

आषाढ़ी पूर्णिमा के तीसरे दिन भद्दीय तपस्वी, चौथे दिन महानाम तपस्वी और पाँचवें दिन अश्जीत तपस्वी सभी बुद्ध के धर्मदेशना के अनुसार अपने-अपने कर्मस्थान (वीर्य) बढ़ाकर सोवान होकर ऐही भिक्खु सम्पत्ति प्राप्त किया है । उसी तरह बुद्ध पंचवग्गिय भिक्खुओं के साथ ऋषिपत्तन मृगदाय में समय व्यतीत कर रहे थे । तीन भिक्खु भिक्षाटन में जाकर ले आने वाले भिक्षा को बुद्ध के साथ सभी लोग बराबर सेवन करते थे । उसी समय बुद्ध कोण्डिन्य आदि पाँच भिक्खुओं को आमन्त्रित करके अनात्म लक्खन सुत्र की देशना प्रारम्भ किया ।

अनात्म लक्खन सूत्र

बुद्ध ! भिक्खुओं रूप आत्मा नहीं है (अपना नहीं है) । यदि रूप आत्मा होता तो आबोध-सम्बोध-पलिबोध नहीं होता है । हमारा रूप ऐसा होना चाहिए । वैसा होना चाहिए । ऐसा नहीं होना चाहिए । यदि आत्मा है तो उसी के अनुसार चलना चाहिए । भिक्खुओं लेकिन रूप आत्मा नहीं होने के कारण आबोध-पलिबोध से युक्त होता है । हमारा रूप इस प्रकार का होना चाहिए, उस प्रकार का नहीं होना चाहिए । जैसा सोचते है उस प्रकार से रूप नहीं होता है ।

भिक्खुओं वेदना आत्मा नहीं है । यदि वेदना आत्मा है तो उसमें आबोध-पलिबोध नहीं होता है ।

भिक्खुओं संज्ञा आत्मा नहीं है यदि संज्ञा आत्मा है तो उसमें आबोध-पलिबोध नहीं होता है ।

भिक्खुओं संस्कार आत्मा नहीं होता है । यदि संस्कार आत्मा है तो आबोध-पलिबोध नहीं होता है ।

भिक्खुओं विज्ञान आत्मा नहीं होता है । यदि विज्ञान आत्मा है तो आबोध-पलिबोध नहीं होता है ।

भिक्खुओं रूप नित्य है कि नही ? अनित्य है कि नहीं ? इसके विषय में आपलोग क्या सोचते हैं ?

पंचवग्गिय भिक्खुओं ने कहा भाग्यवत् रूप अनित्य है ।

बुद्ध ने पूछा कोई चीज अनित्य हो तो वह सुख है कि दुःख है ?

पंचवग्गिय भिक्खु भाग्यवत यह भी दुःख है ।

बुद्ध ने कहा कोई चीज अनित्य हो तो दुःख का स्वभाव होता है कि नहीं ? यह चीज मेरा है, हम लोगों का है ऐसा सोचना ठीक है कि नहीं ? पंचवग्गिय भिक्खु भाग्यवत कोई वस्तु उसके अनुसार देखने योग्य नहीं है। वेदना, संज्ञा, संस्कार, विज्ञान जैसे चार चीजों के बारे में इसी प्रकार से प्रश्न उत्तर होता रहा ।

बुद्ध भिक्खुओं इसलिए अतीत अनागत, वर्तमान, अध्यात्मिक या बाहर, भेषधारी या शूक्ष्म, हीन या प्रनीत, दूर या समीप कोई रूप हो तो यह सब रूप हम नहीं है, हमारा नहीं है । यह मेरा आत्मा नहीं है इस प्रकार सम्यक् प्रज्ञा से देखना जरूरी है ।

अतीत या वर्तमान कोई वेदना हो तो, अतीत या वर्तमान कोई संज्ञा हो तो, अतीत-अनागत या वर्तमान कोई संस्कार हो तो, अतीत-अनागत या वर्तमान कोई विज्ञान हो तो यह सभी हम नहीं है, हमारा नहीं है । इसलिए मेरा आत्मा भी नहीं है । इसी प्रकार सम्यक् प्रज्ञा से देखना जरूरी है ।

भिक्खुओं इस प्रकार देखने वाला प्रज्ञावान आर्य सावक रूप के बारे में न घृणा करते और न ही प्रसन्न होते हैं । वेदना का भी स्वभाव यही है, संज्ञा का भी यही है । संस्कार और विज्ञान का भी स्वभाव यही है । इनके कारण उस चीज से अपनापन दूर करते हैं । अपनापन का मोह छोड़ने से क्लेश दूर होता है । क्लेश दूर होने से चित्त निर्मल होता है । पूर्व जन्म क्षीण हो गया है । ब्रह्मचर्य मार्ग पूर्ण किया हुआ है (अर्हत् हो गया), दुःख

से मुक्त होने के लिए आवश्यक सभी कर्म पूरा किया हुआ है । अर्हत् पद प्राप्ति के लिए और कुछ करना बाकि नहीं है । (सोडस विधकृत)

सम्यक् सम्मबुद्ध के इस देशना को सूनने के पश्चात् पंचवग्गिय भिक्खु अर्हत् पद प्राप्त किया ।

बालक भिक्खु को मौनव्रत देशना

साँतवें दिन नालक भिक्खु बुद्ध के पास आकर मौनव्रत के बारे में विचार किया । बुद्ध ने नालक को मौनव्रत के विषय में विस्तार पूर्वक बताया । नालक मौन व्रत की शिक्षा लेने के बाद वहाँ से निकल पड़े और फिर कभी वापस नहीं आया । (अंक 98)

परिच्छेद - 22

प्रथम त्रिशरण शरणागत उपासक-उपासिका

यश कुल-पुत्र बनारस सेठ का एक पुत्र था । यश गृहस्थ जीवन से निराश होकर किसी को बिना सूचना दिये ही अकेले अपने महल से निकलकर तपस्वी का जीवन जीने के लिए चल पड़ा । उस समय तपस्वियों के लिए ऋषिपत्तन मृगदाव प्रसिद्ध था जहाँ यश कुल-पुत्र भी घूमते-घूमते आ पहुँचा । बनारस नगर से ऋषि पत्तन मृगदाय आते-आते सुबह हो गया । बुद्ध सुबह अपने ध्यान से उठकर अपने बोध चक्षु से संसार को देख रहे थे । उसी समय यशकुल-पुत्र अपना गृहस्थ जीवन छोड़कर आ रहा था । जिसे बुद्ध ने देखा । यश के आने तक बुद्ध चंक्रमण करते रहे । यश को आता देख बुद्ध चंक्रमण से हटकर दूसरे आसन में विराजमान हुए । बुद्ध के पास आते-आते यश ने जोर-जोर से बड़बड़ाने लगा । 'ओह ! गृहस्थ जीवन में परेशानी है ? ओह ! गृहस्थ जीवन संकट से भरा हुआ है । ओह ! कितना दु:ख है ? गृहस्थ जीवन काम आदि अग्नि से जल रहा है ।' बुद्ध ने दुखभरी आवाज सुनकर यश को अपने पास बुलाया । यश यह प्रवज्या सभी दु:खों से दूर, संकट से दूर, अग्नि से दूर है, इधर आकर बैठो मैं तुम्हें रास्ता दिखाऊँगा, यह कहकर बुद्ध ने यश कुल-पुत्र को धर्म देशना किया । यश ने सोचा प्रवज्जित जीवन कष्ट से दूर, परेशानी से दूर, काम आदि अग्नि से दूर हो तो यह जीवन कितना अच्छा होता है । ऐसा सोचकर बुद्ध के पास आकर उनको नमस्कार करके एक ओर बैठ गया । बुद्ध यश को दान देने का अच्छाफल, शील रक्षा करने का अच्छाफल, उसी के माध्यम से स्वर्ग सम्पत्ति मिलने की विधि के साथ-साथ, ये सभी काम सम्पत्ति सहित, दोष सहित, कष्ट, ईप्सा सभी छोड़कर प्रवज्जा लेकर प्रवज्जित जीवन के अनुसार धर्म देशना किया । धर्म देशना सुनने के बाद यश कुल-पुत्र क्लेश भरित चित्त से मुक्त हो गया, क्लेश का कठोर स्वभाव कम हो गया । यश कुल-पुत्र का चित्त मृदु (विराग) हो गया । प्रसन्न हो गया । बुद्ध की समझ में आया कि अब यश कुल-पुत्र चतुसत्य अवबोध करने के लिए तैयार चित्त से युक्त है । बुद्ध की देशना क्रम के अनुसार

दुःख हेतु निर्वाण, मार्ग, चतुआर्य सत्य, सविस्तार रूप से देशना किया। जिस प्रकार साफ-सुथरा सफेद कपड़ा तुरन्त दूसरा रंग पकड़ लेता है उसी तरह आसन में बैठते हुए ही यश कुलपुत्र चतुआर्य सत्य को अवबोध कर लिया और साथ ही सोतापत्ती को प्राप्त कर लिया।

त्रिशरणागत प्रथम उपासक

दूसरे दिन सुबह यश कुल पुत्र की माता अपने महल में टहल कर देखा कि मेरा पुत्र यश कहीं दिखाई नहीं दे रहा है। यह समाचार सेठ जी को दिया। चिन्तित यश की माता और पिता यश को खोजने के लिए चारों दिशाओं में दूत को भेजा। पहले से ही ऋषीपत्तन के बारे में जानकारी होने के कारण दोनों को विश्वास हुआ कि अवश्य यश ऋषीपत्तन मृगदाय को गया होगा। यह सोचकर यश के माता और पिता ऋषीपत्तन मृगदाय की ओर निकल पड़े। बुद्ध ने देखा की यश के माता-पिता अवश्य ही यश को खोजने के लिए आ रहे है। बुद्ध ने अधिष्ठान किया कि दोनों नजदीक आकर भी यश को नहीं देख पाये।

बुद्ध के पास दोनों ने आकर बुद्ध का अभिवादन किया। और पूछा कि कोई तरुण-वयस्य एक कुल-पुत्र इधर आया तो नहीं ? क्या आपने देखा था नहीं ? तब बुद्ध ने कहा आप लोग यश को देखना चाहते है तो थोड़ी देर इन्तजार करने के लिए इधर बैठ जाइए। थोड़ी देर बाद यश आप लोगों को देखने को मिलेगा। यश के माता-पिता ने सोचा यश अवश्य इसी स्थान पर होगा यह सोचकर बहुत प्रसन्न हुए। और बुद्ध को नमस्कार करके उसी स्थान पर बैठ गये। उसके बाद बुद्ध ने यश के माता-पिता को दानशील आदि अनुक्रम से धर्म देशना किया। धर्म देशना के अवसान में दोनों सोवान हो गये। यश कुल पुत्र को देखने से खुशी और सोवान होने का महत्वपूर्ण घटना के साथ ही दोनों के सरण में रहेंगे। उस समय तक बुद्ध शासन में बुद्ध, धम्म और संघ तीनों रत्न विद्यमान थे। इसलिए बुद्ध ने दोनों को 'बुद्धं सरणं गच्छामि, धम्मं सरणं गच्छामि, संघं संरणं गच्छामि', कहकर त्रिसरणागत करवाया। बुद्ध शासन में सबसे पहले त्रिसरण सरणागत उपासक एवम् उपासिका यश कुल-पुत्र के माता-पिता है।

यश कुल-पुत्र की प्रवज्या—(धर्मदिक्षा)

अपने माता-पिताजी को दिये हुए धर्म देशना को सुनने के बाद यश

क्लेश समाप्त करके अर्हत् पद को प्राप्त किया । अर्हत् पद प्राप्त करने के बाद कोई भी व्यक्ति पुन: गृहस्थ जीवन में वापस नहीं जाता है । बुद्ध इस बात को अच्छी तरह से जानते थे । और यह जानते हुए यश के माता-पिता को यश दिखाई दे अधिष्ठान किये । यश को देखने के बाद दोनों पुत्र स्नेह से भर गये । यश के पिता ने यश से कहा पुत्र तुम्हें नहीं देखने के कारण और तुम्हारे द्वारा घर छोड़कर चले आने के कारण तुम्हारी माता का रो-रो कर मरने जैसा हालत हो गयी है । इसलिए तुम अभी अपनी माता को जीवन दान दो । यश ने बुद्ध की ओर देखा तो बुद्ध ने कहा यश अभी अर्हत् है इसलिए यश अब गृहस्थ जीवन में वापस नहीं जायेगा । सेठ ने सोचा हम लोगों को बहुत बड़ा लाभ हुआ है क्योंकि हमारा पुत्र सही जगह पर आ गया है । सेठ ने प्रसन्न होकर सभी को अपने घर दान पर आने के लिए आमंत्रित किया । बुद्ध ने बगैर कुछ कहे उसके दान को जाने के लिए स्वीकार किया । बुद्ध द्वारा निमंत्रण स्वीकार करने से सेठ बहुत प्रसन्न हुआ और प्रसन्न होकर बुद्ध को प्रदक्षिणा करके चला गया । सेठ के जाने के बाद यश कुल पुत्र अर्हत् ऐहि भिक्खु भाव से भिक्खुत्व प्राप्त किया है ।

सुजाता और उनकी सहेलियों का उपासिका होना

बुद्ध पूर्वाह्न के समय यश भिक्खु के साथ भोजन दान के लिए सेठ के घर पहुँच गये । सेठ के घर पहुचने के बाद बुद्ध और यश ने आसन ग्रहण किये । आसन ग्रहण करने के बाद यश भिक्खु की माताजी (सुजाता) और यश के गृहस्थ जीवन की भार्या दोनों आकर बुद्ध का अभिवादन किया। बुद्ध ने दान कथा, शील कथा, स्वर्ग कथा आदि कथा अनुक्रमों से देशना किया । उन लोगों के प्रसन्न होने के बाद बुद्ध ने उन सभी लोगों को चतुसत्य धर्म देशना किया । धर्म देशना सुनते ही दोनों ने सोवान सुख प्राप्त किया। उस दिन दोनों त्रिशरण शरणागत हो गये ।

यश कुल पुत्र के चार मित्रों को धर्म दिक्षा (प्रवज्जा)

सब लोग मिलकर बुद्ध और यश को भोजन दान कराया । भोजन दान के पश्चात् सभी लोग आकर एक ओर बैठ गये बुद्ध ने सभी को अनुमोदना धर्म देशना करने के पश्चात वापस ऋषिपत्तन लौट गये ।

यश को प्रवज्जित होने की खबर मिलने के बाद वाराणसी नगर के उच्चकुल के विमल, सुबाहु, पूर्णजित् तथा गवाम्पति ये चारों नवयुवक ऋषिपत्तन आकर यश अर्हत् के पास बैठ गये । यश ने अपने चारों मित्रों को साथ लेकर बुद्ध के पास गया । बुद्ध को प्रणाम करने के बाद यश अर्हत् ने कहा भाग्यवत ये चार नवयुवक हमारे मित्रों को धर्मानुशासना कीजिए। बुद्ध ने उन चारों को आमंत्रित करके दान कथा, शील कथा क्रम से धर्म देशना किया । धर्म देशना सुनने के बाद चारों नवयुवकों का चित्त क्लेश से मुक्त होकर चतुसत्य को अवगत कर लिया । इसके पश्चात् चारों नवयुवक सोवान हो गये । सोवान होने के बाद ये ही भिक्खु सम्पत्ति प्राप्त किया है । बुद्ध ने पुनः उन सभी को धर्म देशना किया और धर्म देशना सुनने के बाद चारों नवयुवक भिक्खु क्लेश को पूर्णरूप से नष्ट करके अर्हत् पद प्राप्त किया ।

यश कुल पुत्र के पचास और मित्र लोग

यश कुल-पुत्र का भिक्खु बनकर अर्हत् पद प्राप्त करने की खबर बनारस नगर से बाहर उसके कई मित्र लोगों को मिला । यश के गृहस्थ जीवन के समय के पचास मित्र लोग थे । प्रवज्या और अर्हत् दोनों के महत्त्व के बारे में सुनने के बाद सभी पचासों मित्र लोग यश से मिलने के लिए एक ही दिन समय-समय पर ऋषिपत्तन मृगदाय (सारनाथ) में आ गये । यश का श्रमण भेष देखकर सभी मित्र बहुत खुश हो गये । यश अपने पचास मित्रों को लेकर बुद्ध के पास गया । पहले जैसे ही बुद्ध ने पचासों नवयुवकों को दान आदि कथा से धर्म देशना किये । क्लेश समाप्त होने के पश्चात् पचासों मित्र लोग ने चतुसत्य को अवबोध किया और चतुसत्य अवबोध करने के पश्चात् सभी सोवान हो गये । इसके पश्चात् सभी ने बुद्ध से प्रवज्या माँगा। इन सभी नवयुवकों को भी ये ही भिक्खु सम्पत्ति मिला । उसके बाद जो बुद्ध ने धर्म देशना की वह सुनकर सभी पचासों नवयुवक अर्हत पद को प्राप्त किये ।

एक्सठ अर्हत्

इसके बाद बुद्ध शासन में बुद्ध के साथ एक्सठ अर्हत् हो गये ।

परिच्छेद - 23

बुद्ध और बौद्ध भिक्षुओं के उपर दोषारोपण

प्रथम धर्मदूत 60 (साठ) भिक्खु और प्रथम वर्षावास

उस समय बुद्ध के साथ उनके शासन में 61 (एकसठ) अर्हत् हो गये थे । ऋषिपत्तन मृगदाय में रहते समय बुद्ध ने 60 (साठ) अर्हतों को आमंत्रित किया ।

भिक्खुओं मैं दिव्य मनुष्य सभी बन्धनों से मुक्त हो गया हूँ और तुम लोग भी ऐसे ही मुक्त हो गये हो । अनेक लोगों को देव-मनुष्य सभी की उन्नति के लिए, कल्याण के लिए, प्राणीयों की अनुकम्पा करके ग्राम, एवम् निगम ग्राम व नगर सभी जगहों पर विचरण करो । दो भिक्खु एक रास्ते से नहीं जाना और प्रारम्भ हो अर्थ सहित्, व्यंजन सहित, सभी प्रकार से परिपूर्ण पवित्र धर्म देशना करो । (अंक 99)

ब्रह्मचर्य के बारे में, ब्रह्मचर्य के महत्व के बारे में, ब्रह्मचर्य के अच्छा फल के बारे में चर्चा करो । अभी भी कम क्लेश वाले मनुष्य हम लोगों के बीच में है । यदि धर्म देशना सुनने वाले नहीं मिले तो उस व्यक्ति का उत्तरीतर धर्म गुण नष्ट हो सकता है । धर्मस्थ होने का धर्मबोध करने वाले प्राणी बहुत है । इसलिए धर्म देशना के लिए निकल पड़ों । बुद्ध के अनुशासना के बाद सभी अर्हत् एक एक करके नग्गे पैर से गाँव-गाँव, नगर-नगर जाकर बुद्ध के पुनीत धर्म को जन-जन तक पहुँचाते रहे । उस समय वर्षा ऋतु ही था । गर्मी समाप्त होकर वारिस का मौसम प्रारम्भ होने के बाद घास हरे रंग से उगने लगता है । उसी के साथ-साथ अनेक प्रकार के कीड़े-मकोड़े भी पैदा होने लगते है । बुद्ध के ऋषिपत्तन में रहते समय निगंठ नाथ-पुत्र जैन श्रावक पृथ्वी के उसी प्रदेश में विचरण करते थे । जैन समुदाय पूर्ण रूप से अहिंसक धर्म का अनुसरण करता था । जैन धर्मावलम्बी पेड़ों से हरा-पत्ता तक नहीं तोड़ते है । पूजा के लिए फूल भी नहीं तोड़ते है । वर्षा ऋतु में बुद्ध श्रावक हरे घास के उपर चलकर गाँव-गाँव धर्म-

प्रचार के कार्य में लगे रहे । बुद्ध का और बुद्ध श्रावक लोगों का धर्म गाँव वासियों को बहुत अच्छा लगने लगा । उसी से पृथकजन क्लेश भरित होने के कारण कहने लगे कि इस बारिस के मौसम में गाय, बकरी, कौओ जैसे पशु-पक्षी भी अपना सिर छिपाकर शान्ति से रहते हैं । लेकिन देखो गौतम बुद्ध के शिष्य अर्हत् भिक्खु कीड़े-मकोड़े मारते हुए हरे घास पर चलकर ये किस धर्म की देशना करते हैं ? अनपढ़ ग्रामवासी लोग भी इस बात को स्वीकारा । इसके बाद बुद्ध और बुद्ध के भिक्खुओं को दोषारोपण करना शुरू कर दिया । बुद्ध को जब इस बात का पता चला कि ग्रामवासी बुद्ध को और अर्हत् भिक्खुओं को जैन लोगों की बात सुनकर दोषारोपण करना शुरू कर दिया । तब बुद्ध ने सोचा अनपढ़ लोग हमें और अर्हत् भिक्खुओं का दोषरोपण करके स्वयं मानसिक, वाचसिक महापाप कर्म का भागीदार बनते जा रहे हैं । बुद्ध ने विचार किया कि सबको बचाना है और एक व्यक्ति के पास जाकर उसे समझाना भी आसान नहीं है । बुद्ध ने सोचा ऐसे महत्वपूर्ण विषयों पर अतीतकाल के बुद्ध कौन-सा निर्णय लिये और उस निर्णय को कैसे क्रियान्वित किया है ? गौतम बुद्ध ने अपना पुब्बे निवासानुस्मृति (पूर्व जन्म की घटनाओं की जानकारी देने वाला ज्ञान) से विचार-विमर्श करने के बाद पता चला की वर्षा ॠतु में बुद्ध और बुद्ध श्रवाक अपने बौद्ध विहारों में बैठकर ध्यान-भावना आदि कार्यों में समय व्यतीत करते थे । इन वर्षावास के तीन महिनों में कोई भी बौद्ध भिक्खु वर्षावास का प्रतिज्ञा संघ के सामने लेने के बाद अपने बुद्ध विहार से बाहर नहीं जाता था । तत्पश्चात् बुद्ध ने सभी भिक्खुओं को आमंत्रित किया और कहा भिक्खुओं हमारे शासन में वर्षा ॠतु के समय कोई भी भिक्खु किसी भी देश में रहे उसे वर्षावास की प्रतिज्ञा पूरा करना अनिवार्य है । उसी दिन से बुद्ध और 60 अर्हत् ॠषिपत्तन मृगदाव में अपना तीन महीने का (वर्षावास) वर्षा ॠतु बताया । गौतम बुद्ध का प्रथम वर्षावास भी वाराणसी के ॠषिपत्तन मृगदाव (सारनाथ) में हुआ ।

परिच्छेद - 24
बुद्ध का प्रतिउत्तर गीत

एरक पत्त नागराज का समागम

एरक पत्त नाम से प्रसिद्ध एक नागराज सम्यक सम्मबुद्ध का पृथ्वी पर पैदा होने की खबर सुनकर लोगों से पता करने के लिए सोचकर अपनी पुत्री को एक गाथा सिखाया । गंगा नदी के किनारे अपनी नागपुत्री से गाथा गाते हुए नचवाता भी था ।

एरक पत्त नागराज ने कहा जो हमारी पुत्री एक गाथे को गाती है। उस गाथा के जवाब में एक प्रतिगीत गाने वाले व्यक्ति को बहुत सम्पत्ति के साथ अपनी पुत्री की शादी कर दूँगा । उसी तरह एक महिने में 15 (पन्द्रह) दिन उसकी पुत्री के द्वारा नाच गाना चलता रहा । सर्वज्ञ बुद्ध सात सप्ताह बीताकर प्रथम वर्षावास ऋतु ऋषिपत्तन मृगदाय में व्यतीत कर रहे थे । पूर्णिमा के दिन सुबह दैनिक रूप से निर्वाण अवबोध करने के योग्य प्राणी है कि नहीं अपने दिव्य चक्षु से देखा । बुद्ध ने दिव्य चक्षु से एरक पत्त नागराज का दृश्य देखा और देखने के पश्चात् बुद्ध ऋषिपत्तन से निकलकर वाराणसी नगर के प्रसिद्ध विशाल बनान्तर में एक पेड़ के नीचे विराजमान हो गये। उसी पूर्णिमा के दिन जम्बूद्वीप के बहुत स्थानों से बहुत लोग एरक पत्त नागराज के पुत्री की गीत का प्रितिगीत रचना करके गंगा नदी के किनारे एकत्रित हुए । उत्तर नामक एक नवयुवक बुद्ध के सामने से जा रहा था। बुद्ध ने उस नवयुवक से पूछा मानव आप कहाँ जा रहे हो ? नवयुवक मानव ने कहाँ एरक पत्रक नागराज की पुत्री एक गाथा गाती है और नाच भी करती है उसी स्थान पर जा रहा हूँ । बुद्ध ने पूछा एरक पत्रक नागराज की पुत्री की गाथा के लिए आपने कोई प्रितिगीत बनाया की नहीं । नवयुवक मानव ने कहाँ जी हमने एक गीत बनाया है । नवयुवक मानव ने बुद्ध को अपना बनाया हुआ गीत सुनाया । बुद्ध ने कहा उस गीत का यह गीत प्रतिगीत नहीं है । तुम्हारे लिए मैं एक प्रतिगीत बना दे रहा हूँ, कहते हुए एक प्रतिगीत बनाया । नवयुवक मानव खुश होकर बुद्ध के बनाये हुए गीत

को प्रतिगीत के अनुसार सुनाया। बुद्ध ने कहा तुम्हारे इस प्रतिगीत को सुनने के बाद नाग पुत्री तुमसे और एक प्रतिगीत गाने के लिए कहेगी। इसलिए बुद्ध ने नवयुवक को और एक प्रतिगीत सुना दिया। नवयुवक मानव धर्म अन्तर्गत प्रतिगीत अध्ययन करते ही इस गीत का अर्थ स्मरण करने के कारण सोवान हो गया।

उत्तर नवयुवक बुद्ध से प्रतिगीत सिखने के बाद गंगा तटपर जाकर लोगों के बीच में कहा कि मैं एक प्रतिगीत ले आया हूँ। यह सुनने के बाद नाग पुत्री ने कई प्रश्न पूछा। कौन-सी चीज के लिए अधिपत्य रखने वाला राजा के नाम से जाना जाता है ? राजा किस तरिके से राजस्वर होता है ? किस कारण से राजा विरज होता है ? कैसे वह राजा हीन, पद्गल होता है ? इन प्रश्नों के साथ ही एक गीत गायी। नाग पुत्री की गीत सुनने के बाद उत्तर नवयुवक मानव जो गीत बुद्ध से सीखा उसी गीत को नाग पुत्री को सुनाया। चक्षु (आँख) आदि छः द्वार पर अधिपत्य रखकर एक द्वार से रूप आदि आरम्भनों को नियन्त्रित करने वाला व्यक्ति राजा के नाम से जाना जाता है। जो व्यक्ति उस रूप आरम्भनों में मन से लीन रहने वाला व्यक्ति राजस्त्र होता है। उसी आरम्भनों से मुक्त व्यक्ति विरज के नाम से जाना जाता है। उसी आरम्भनों में लिप्त व्यक्ति को घटिया (छुट) के नाम से जाना जाता है। उसके बाद नाग पुत्री ने अपनी गीत सुनायी। अज्ञात व्यक्ति किस कारण नीचे गिर जाता है ? कैसे पढ़े-लिखे पंडित व्यक्ति उसी कारण को दूर करते है ? कैसे व्यक्ति भवबन्धन से निरुपद होता है ? ऐसे अर्थ के अन्तर्गत एक गीत गाइए।

उसके प्रश्न के अनुसार जवाब में नवयुवक मानव को बुद्ध ने जो गाथा सिखाया था वही चीज वह गाया। काम आदि योग में (लहर), मूर्ख व्यक्ति खिंचकर ले जाता है। उसे सम्यक प्रधान वीर्य से युक्त व्यक्ति चार योग से दूर करते है। काम आदि सभी बन्धनों से मुक्त व्यक्ति योग क्षेम के नाम से जाना जाता है।

एरक पत्त नागराज यह सभी बात सुनकर सोचा कि यह शब्द किसी बुद्ध पुरुष का ही अवश्य होगा। उत्तर मानव के पास आकर पूछा यह गीत तुमको किसने सिखया। उत्तर मानव ने बोला वहाँ देखो उस पेड़ के नीचे

बैठा हुआ एक तपस्वी ने यह बात हमको सीखाया । तब नागराज अपने सभी सहयोगियों के साथ बुद्ध के पास चला गया ।

बुद्ध एरक पत्त नागराज के साथ आये हुए सभी को धर्म देशना दिये। धर्म देशना के अन्तर्गत महत्वपूर्ण तथ्य (कारक) यह है ।

मनुष्य दुर्लभ (मनुष्य के रूप में उत्पत्ति होना कठिन) उत्पत्ति होने के बाद मनुषत्व की जिन्दगी बिताना कठिन है, सधर्म सुनना कठीन है, बुद्धत्व की उत्पत्ति दुर्लभ है ।

परिच्छेद - 25
किराये की वेश्या

वर्षावास का मौसम समाप्त हो गया और बुद्ध फिर से साठ बौद्ध अर्हत् भिक्खुओं को धर्म प्रचार के लिए गाँव-गाँव जाने का निर्देश दिये । साठ (60) अर्हत् भिक्खु धर्मदूत परिषद को 60 दिशाओं में भेजकर बुद्ध स्वयं गया दिशा में उरुवेला की ओर प्रस्थान किये ।

भद्रवर्गीय कुमार लोगों का प्रव्रज्या

वाराणसी से उरुवेला जाते समय बुद्ध एक छोटे से वन में जाकर एक पेड़ के नीचे समाधि मुद्रा में बैठ गये ।

उसी समय तीस (30) भद्रवर्गीय कुमार अपने-अपने रानीयों के साथ उद्यान क्रिडा (सैर-सपाटा) के लिए गये । एक राजकुमार के पास अपनी पत्नी नहीं होने के कारण एक वेश्या स्त्री को अपने साथ ले गये । सभी राजकुमार अपने-अपने स्त्रीयों के साथ उद्यान-क्रिडा में लिप्त (मगन) थे कि मौका देखकर वेश्या स्त्री राजकुमारों और उनकी रानीयों का किमती सामानों को लेकर वहाँ से भाग गयी । उस वेश्या स्त्री की खोजते हुए सभी राजकुमार बुद्ध के पास पहुँच गये । राजकुमारों ने बुद्ध से पूछा भाग्यवत् इधर से कोई स्त्री जाते हुए आपने देखा अथवा नहीं देखा । (अंक 100)

बुद्ध बच्चों तुम लोगों द्वारा एक स्त्री को खोजने से क्या मिलेगा ?

राजकुमारों ने कहा-भाग्यवत् हम सभी अपने-अपने धर्म पत्नीयों के साथ उद्यान क्रिडा के लिये गये हुए थे । एक राजकुमार की पत्नी नहीं होने के कारण वह एक वेश्या को लेकर गया था । जब हम सभी लोग उद्यान क्रिडा में लिप्त थे उसी समय वह वेश्या स्त्री हम लोगों का किमती सामान लेकर वहाँ से भाग गयी । हम सभी लोग आप से मदद लेने के लिए उस स्त्री की खोजते समय इधर आ गये ।

बुद्ध बच्चों अपने से अपना खोजना श्रेष्ठ है या अन्य लोगों के बारे में खोजना श्रेष्ठ है ।

इन दोनों से क्या समझते हैं ?

भाग्यवत् हम लोगों को अपने बारे में खोजना श्रेष्ठ है यह हम लोगों का विचार है ।

बुद्ध—बच्चों जब बात ऐसा है तो बैठ जाओ और स्वयं (अपने) का मार्ग हम तुम लोगों को बतायेगे ।

राजकुमारों ने कहा भाग्यवत् बहुत अच्छा इसके बाद बुद्ध को प्रदर्शना करके नमस्कार कर सभी जमीन पर बैठ गये ।

बुद्ध भद्रवर्गीय समूह को दान कथा, शील कथा इत्यादि क्रमानुसार से धर्म देशना किया । भद्वर्गीय राजकुमार समूह का चित्त मृदु हो गया । यह सुनने के बाद भद्रवर्गीय राजकुमार समूह को धर्म के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त हुआ। तत्पश्चात् बुद्ध भद्रवर्गीय समूह को चतुरार्य सत्य के विषय में धर्म देशना किये । उस धर्म देशना के फलस्वरूप कोई सोवान, कोई सकृदागामी, तो कोई राजकुमार अनागामी हो गया । इसके पश्चात् सभी भद्रवर्गीय समूह आर्य भूमि में प्रविष्ट किया और बुद्ध से प्रव्रज्या लिया । बुद्ध सभी राजकुमारों को ऐहि भिक्खु भाव से उप सम्पदा किया । राजकुमारों की रानीयाँ राजमहल में वापस चली गयी ।

दूसरा धर्मदूत परिषद

बुद्ध उस तीस भिक्खुओं को धर्मदूत सेवा के लिए भेजकर अकेले गया प्रदेश में उरुवेला जनपद की ओर प्रस्थान किये ।

जटाधारी तीन सहोदर

उस समय उरुबेला में उरुबेला काश्यप, नदी काश्यप व गया काश्यप तीन सगे भाई तपस्वी बनकर निरन्जना नदी (फाल्गुनदी) के किनारे अपना एक-एक आश्रम बनाकर तपस्या करते थे । जेष्ठ उरुवेला काश्यप तपस्वी को पाँच सौ शिष्य थे नदी काश्यप के पास तीन सौ और छोटे भाई के पास दो सौ शिष्य थे कुल एक हजार शिष्य थे ।

प्रथम प्रातिहार्य

बुद्ध उरुवेला जनपद में उरुवेला काश्यप के आश्रम में गये और जाकर

उनसे कहा तपस्वी यदि हमारे इधर रहने से आप को कोई परेशानी न हो तो हमें आप अपनी अग्निशाला में एक रात रहने दीजिए ।

उरुवेला काश्यप ने कहा महाश्रमण आपको उधर रहने से हमें कोई परेशानी नहीं लेकिन उधर-एक बहुत खतरनाक नागराज है इसलिए हमको डर है कि नागराज आपको तंग करेगा ।

बुद्ध ने कहा कोई भी किसी भी प्रकार का हो हमको कोई हानि नहीं होगा । आप केवल हमें एक रात रहने की अनुमति दीजिए ।

उरुवेला काश्यप ने कहा महाश्रमण बात ऐसा है तो आप उधर आराम से रह सकता है । उरुवेला काश्यप की अनुमति मिलने के बाद बुद्ध एक बिछौना बिछाकर उसी अग्निशाला में समाधि मुद्रा में बैठ गये । बुद्ध को देखते ही नागराज गुस्सा होकर अपने मुँह से विष उगलना शुरू किया ।

बुद्ध ने सोचा इस जीव को कोई नुकसान या हानि न करके मैं प्रातिहार्य शक्ति से उसको बस में कर लेगे । क्रोध से भरा हुआ नाग और कुपित हो गया । नाग का शरीर अग्नि ज्वाला जैसा हो गया । बुद्ध भी अपनी प्रातिहार्य शक्ति से अग्नि के समान चमकना शुरू कर दिया । पूरा अग्निशाला अग्नि से भर गया और लगता था जैसे पूरा अग्निशाला आग की चपेट में आ गया ।

आश्रम के बहुत से तपस्वी इस दृश्य को देखा और देखने के पश्चात कहा ओह ! सुन्दर, शोभनीय, महाश्रमण को ऐसा लगता है नागराज ने जला दिया है ।

बुद्ध ने अपने प्रातिहार्य शक्ति से नागराज को अपने बस में करने के बाद अपने भिक्षापात्र में बन्द कर उरुवेला काश्यप तपस्वी के पास जाकर कहा—देखिये आपका नागराज हमारे पात्र में है । यह दृश्य देखने के बाद उरुवेला काश्यप आश्चर्यचकित हुआ । कहा महाश्रमण प्रातिहार्य महानुभाव सम्पन्न अवश्य होगा, लेकिन हमारे जैसा अर्हत् नहीं होगा ।

बुद्ध का प्रातिहार्य शक्ति देखने के बाद उरुवेला काश्यप ने बुद्ध से कहा भाग्यवत् आपको हम खाना-पीना सब कुछ देगें । आप हमारे आश्रम में रहिये, यहाँ से कहीं मत जाइए ।

उरुवेला काश्यप का प्रव्रज्या ग्रहण

बुद्ध उरुवेला काश्यप के आश्रम से निकलकर समीप स्थित एक छोटे से वन में चले गये । उरुवेला काश्यप अपने को अर्हत् कहकर घमण्ड करते थे । बुद्ध अपने बुद्धत्व शक्ति से प्रातिहार्य (इर्दी) दिखाकर उरुवेलाकाश्यप की गलत फहमी और धमण्ड दोनों को दूर कर दिया । अपने द्वारा अपनाया हुआ मार्ग गलत समझ में आने के बाद उरुवेला काश्यप बुद्ध से प्रव्रज्या माँगा । बुद्ध उरुवेला काश्यप के साथ 500 (पाँच सौ) श्रावक लोगों को ऐहि भिक्खु सम्पत्ति फल के साथ प्रव्रज्या और उपसम्पदा दिया ।

(अंक 101)

नदी काश्यप का प्रव्रज्या

ऊरुवेला काश्यप सहित पाँच सौ जटाधारी परिषद प्रव्रज्या लेने के पहले अपनी जटा को नदी में बहाया । नेरंजना नदी के निचले भाग में रहने वाले नदी काश्यप ने देखा बहुत-सा जटा बह रहा है । सोचा अवश्य हमारे भाई को कुछ अनहोनी हुआ है । उसके बारे में पता लगाने के लिए अपने कुछ जटील तपस्वी को उस ओर भेजा और स्वयं नदी काश्यप उनके पीछे चल दिये । वहाँ जाकर देखा अपना भाई अपने श्रवक लोगों के साथ बौद्ध भिक्खु बन गये है । उनके पास जाकर पूछा जटील तपस्वी की जिन्दगी अच्छा है कि यह जिन्दगी अच्छा है । उरुवेला काश्यप ने कहा जटील तपस्वी जीवन से प्रवज्जित जीवन बहुत अच्छा है । यह विचार-विमर्श के बाद नदी काश्यप भी अपने तीन सौ अनुवाइयों के साथ अपनी जटा को नदी में वहा कर बुद्ध के पास जाकर प्रव्रज्या माँगा । बुद्ध नदी काश्यप के साथ आये हुए सभी जटील तपस्वियों को प्रव्रज्या एवं ऐहि भिक्खु भाव से प्रव्रज्जित कराकर उपसम्पदा लाभ दिया ।

गया काश्यप का प्रव्रज्या

नेरंजना नदी के किनारे नदी काश्यप के आश्रम के बाद गया काश्यप का आश्रम था । उन्होंने देख नेरंजना नदी में बहुत-सी जटायें बह रही है। इस घटना के बारे में पता लगाने के लिए आगे बढ़े तो देखा कि अपने भाई अनुवाईयों के साथ भिक्खु बन गये है । उनसे पूछा तपस्वी की जिन्दगी

से क्या यह जिन्दगी अच्छा है ? तो नदी काश्यप ने कहा उससे ज्यादा अच्छा है । पूरी बात समझने के बाद गया काश्यप और उनके अनुवायी सभी लोग प्रव्रज्या एवं ऐहि भिक्खुत्व बुद्ध से प्राप्त किया ।

बुद्ध का जटील भिक्खुओं को गया शीर्ष में ले जाना

बुद्ध उरुवेला जनपद में थोड़ा दिन रह कर एक हजार भिक्खुओ के साथ गया शिर्ष में चले गये । गया शिर्ष में जाकर एक हजार नये भिक्खुओं को आदित्य परियाय सूत्र की धर्मदेशना किये । (अंक 102)

आदित्य परियाय सूत्र

भिक्खुओं सब कुछ आग से जल रहा है । भिक्खुओं कौन-सी चीज सब आग से जल रहा है ? भिक्खुओं आँख अग्नि से जल रहा है । रुप आग से जल रहा है । चक्षुविज्ञान आग से जल रहा है । चक्षुस्पर्श आग से जल रहा है । चक्षुस्पर्श से उत्पन्न होने वाला सुख-दुख-उपेक्षा ये तीनों भी आग से जल रहा है । भिक्खुओं वह कौन सही अग्नि है जो राग अग्नि, द्वेष अग्नि, मोह अग्नि, जाति-जरा-मरण-शोक-दुख, दौर्मनष्य, उपायास जैसे अग्नियों से जल रहा है ।

कान के लिए शब्द स्रोत विज्ञान, गन्ध के लिए घ्राण विज्ञान, जीभ के लिए जिह्वा विज्ञान, काय के लिए स्पर्श काय विज्ञान, मनस धर्म मनोविज्ञान, मन स्पर्श प्रत्यय द्वारा उत्पन्न होने वाले सुख-दुख-उपेक्षा तीनों वेदना अग्नि से जल रहा है ।

कौन-सी अग्नि है जो राग अग्नि, द्वेष अग्नि, मोह अग्नि जैसे क्लेश आग से जल रहा है । जाति-जरा मरण-दुख, शोक, परिदेव दौर्मनष्य, उपायास, सभी दुख आग से जलने की बात हम आप लोगों को बता रहा हूँ ।

भिक्खुओं इसी प्रकार ज्ञान चक्षु से इस विषय को जानने वाले प्रज्ञावत आर्य श्रावक आँख के बारे में अप्रसन्न होता है, रूप के बारे में अप्रसन्न होता है, चक्षु स्पर्श के लिए भी अप्रसन्न होता है, चतुविज्ञान के विषय में अप्रसन्न होता है । चक्षु स्पर्श प्रत्यय से उत्पन्न होने वाला सुख-दुख उपेक्षा जैसे तीनों के बारे में अप्रसन्न होता है ।

स्रोत के बारे में भी अप्रसन्न होता है । शब्द स्रोत विज्ञान, घ्राण गन्ध विज्ञान, जिह्वा रस विज्ञान, काय स्पर्श विज्ञान, मन धर्मावलम्बन मानसिक स्पर्श द्वारा उत्पन्न होने वाला सुख-दुख उपेक्षा त्रिविध वेदना के बारे में अप्रसन्न होता है । इन सभी के बारे में अप्रसन्न होने के कारण उसको बार-बार अपनाना नहीं पड़ता है अर्हत् होने के लिए या अर्हत् प्राप्ति के बाद उसके अलावा और कोई विषय जानने की जरुरत नहीं है । इस देशना के बाद एक हजार भिक्खु अर्हत् पद प्राप्त किया ।

परिच्छेद - 26

बारह लाख परिषदों का बुद्ध के शरण में आना

बुद्ध राजगृह के ताड़ वन में

बुद्ध माघ पूर्णिमा के दिन जटील भिक्खुओं के साथ उरुवेला से निकलकर राजगृह नगर के समीप एक ताड़ वन में बरगद पेड़ के नीचे समाधि मुद्रा में बैठ गये । बुद्ध के बारे में सम्पूर्ण मगध राज्य में गुण-घोष प्रचारित हुआ है । गुण-घोष सुनकर राजा बिम्बिसार बारह लाख जन समूह के साथ बुद्ध का दर्शन के लिए आ गये । (अंक 103)

जनसमूह में से कोई बुद्ध के साथ हालचाल की बात कर रहे है। कोई शान्ति पूर्वक बुद्ध के पीछे खड़ा होकर सब कुछ देख रहे है, कोई अपना परिचय दे रहा है, कोई लोग सोच रहे थे कि क्या बुद्ध उरुवेला काश्यप के शिष्य है कि नहीं और कोई सोच रहे थे कि उरुवेला काश्यप बुद्ध का शिष्य है कि नहीं । लोगों के दिल की बात जानने के बाद बुद्ध ने उरुवेला काश्यप से पूछा आप अग्नि पूजा क्यों छोड़ दिया । उरुवेला काश्यप भिक्षु ने कहा बुद्ध की देशना सुनने के बाद हमारे समझ में आया की यह अग्नि पूजा एक निष्फल कार्य है । अब हम बुद्ध का एक श्रावक हूँ । उरुवेला काश्यप की बात सुनने के बाद लोगों के बीच में जो शंका पैदा हुआ था, वह समाप्त हो गया । उसी समय बच्चपाल नामक ब्राह्मण के साथ कुछ लोग थे । जो बुद्ध की धर्म देशना सुनकर त्रिशरण शरणागत हो गये ।

उरुवेला काश्यप और उनके दो भाइयों के साथ एक हजार जटील तपस्वियों को बुद्ध की शरण में आने की बात सुनकर बच्चपाल ब्राह्मण ने बुद्ध की प्रशंसा किया । बुद्ध ने कहा आज ही ऐसा नहीं है पूर्व जन्म में भी हमनें ऐसे लोगों को अपने बस में लिया है । बोलकर महानारद काश्यप जातक की कहानी सुनाया । (अंक 104)

राजा बिम्बिसार और उसकी बारह लाख परिषद बुद्ध के शरण में आना

बुद्ध राजा बिम्बिसार को उसके साथ आये हुए बारह लाख परिषद को दान कथा, शीलकथा का धर्म देशना किया । पुन्न कर्मों के बारे में भी धर्म

देशना किया । उस धर्म देशना से राजा बिम्विसार और बाकि लोगों का चित्त प्रसन्न होने के बाद बुद्ध सभी लोगों को चतु आर्य सत्य की धर्म देशना किया । चतुआर्य सत्य की धर्म देशना सुनने के बाद राजा बिम्विसार सहित ग्यारह लाख व्यक्ति सोवान हो गये । एक लाख के आस-पास लोग त्रिसरण सरणागत हो गये । राजा बिम्विसार के साथ उनका परम मित्र महाली नामक एक लिच्छवी राजा भी बुद्ध की धर्मदेशना सुनकर सोवान हो गये।

(अंक 105)

राजगृह नगरवासी श्री बड़ड ब्राह्मण, समृद्धि सेठ, बच्च ब्राह्मण जैसे लोग बुद्ध के प्रति अति प्रसन्न हो गये । उसी परिषद के बीच में विशाखा नामक एक सेठ था वह भी सोवान हो गया ।

राजा बिम्बिसार का पाँच प्रार्थना

राजा बिम्बिसार ने सोचा मैं मगध का राजा बन जाऊँगा और बनने के बाद बुद्ध हमारे राजधानी में आ जायेंगे । बुद्ध के साथ हम मित्रता कायम करेगे, बुद्ध से हम धर्म देशना सुनेंगे और मैं धर्मावबोध करुगाँ । ये सभी प्रार्थना राजा बिम्बिसार के अनुसार पूर्ण हो गया । अभी हम त्रिशरण शरणागत एक उपासक हूँ । यह सोचकर बहुत प्रसन्न हुए और प्रसन्न होकर दूसरे दिन अपने महल में संघ दान के लिए बुद्ध को आने के लिए आमंत्रित किया।

राजा बिम्बिसार के महल में संघदान एवं वेलूवन पूजा

दूसरे दिन समय के अनुसार बुद्ध भिक्षु संघ के साथ राजा बिम्बिसार के महल में संघदान के लिए ताड़ीवन से निकलकर चल दिये । ताड़ीवन से राजमहल के बीच थोड़ी दूरी थी । बुद्ध भिक्षु महासंघ के साथ राजा बिम्बिसार के महल में संघदान केलिए पधारने की खबर प्रदेशवासी जनता को मालूम हो गया । बुद्ध और महासंघ के दर्शन के लिए रास्ते के दोनों तरफ रंग-बिरंगे कपड़े पहनकर गीत-गाते हुए लोग बुद्ध के आगमन का इन्तजार कर रहे थे । उस समय एक आश्चर्यजनक घटना हुआ । सुन्दर-रूप अलंकार से युक्त एक नवयुवक बुद्ध के बारे में स्तुति गीत गाते हुए बुद्ध से पहले रास्ते से (अंक 107) जा रहा था । लोगों ने पूछा आप कौन हैं ? इस पर नवयुक ने उत्तर दिया—मैं धीर हूँ, हर जगह पर (अंक 106) संयम हूँ । शुद्ध अप्रति पुद्गल, अर्हत् सम्यक सम्म बुद्ध का एक अनुवायी हूँ ।

[बुद्ध का राजगृह में प्रविष्ट होने का दृश्य देखते ही बहुत से लोग अत्यधिक प्रसन्न हो गये । चित्रा एक सेठ की पुत्री, राजा बिम्बिसर के एक पुरोहि की पुत्री शोभा एक सेवक की पुत्री थे सभी लोग बुद्ध के दर्शन मात्र से प्रसन्न होकर उपासिका हो गयी । बाद में ये सभी प्रव्रज्जित हो गयी ।]

बुद्ध और भिक्षु महासंघ को आराम से पधारने के लिए गुमनाम नवयुक ने भीड़ को दोनों तरफ करके रास्ता बना दिया । भिक्षु महासंघ के साथ बुद्ध राजमहल में जाकर आसन ग्रहण किये । राजा बिम्बिसार बुद्ध प्रमुख भिक्षू महासंघ को संघदान दिया और दान के बाद राजा बिम्बिसार बुद्ध जहाँ विराजमान थे वहाँ जाकर खड़े हो गये ।

राजा बिम्बिसार ने कहा भाग्यवत् आज के बाद मैं बुद्ध और आप के संघ को छोड़कर जिन्दा नहीं रह सकता है । हमारे विवेक के अनुसार हमारे मन के हिसाब से मैं आप से मिलने आऊँगा । ताड़ी वन वहाँ से बहुत दूर है । कार्य की बहुलता होने के कारण आप का दर्शन करने के लिए उतना दूर आने-जाने में हमें काफी परेशानी होगी । इसलिए हमारा एक उद्यान् है उस उद्यान को वेणूवन (बाँस का वन) के नाम से जाना जाता है । (छोटी किस्म का एक बाँस जो मगध, राजगृह प्रदेश में ज्यादा देखने को मिलता है)

राजा बिम्बिसार ने कहा वेणूवन शहर से अधिक दूर भी नहीं है और नहीं ज्यादा नजदीक है । इसलिए आप को और भिक्षू महासंघ को अपने दैनिक ध्यान भावना करने के लिए उचित स्थान है और हमें आकर आप से मिलने में भी आसानी रहेगी सबसे खास बात यह है कि उस उद्यान के चारों ओर अधिक आवादी भी नहीं है । वृक्षों एवं साफ व स्वच्छ जलाशयों से युक्त है । शैल तला से भी युक्त है, भूमि भाग बहुत रम्य है । प्रासाद मण्डप जैसे बैठने के स्थान आदि से सुसज्जित है । उस उद्यान को मैं आप और भिक्षु महासंघ की पूजा करना चाहता हूँ । ऐसा कहकर छोटा-सा समारोह कराकर सोने की सुराही (किण्डी) से बुद्ध के हाथ में पानी गिराकर वेणूवन उद्यान बुद्ध और भिक्षु महासंघ की पूजा किया । उस दिन से उस उद्यान को वेणूवनाराम नाम से जाना जाता है । उसके बाद बुद्ध ने भिक्षुमहासंघ से कहा आज के बाद आराम स्वीकार करने की अनुमति दे रहा हूँ । (अंक 108)

प्रेत योनि के लोगों के लिए पुण्य अनुमोदन एवं तिरोकुड्ड सूत्र देशना

वेणूवनाराम पूजा करने के बाद राजा बिम्बिसार बहुत प्रसन्न हुए । राजा बिम्बिसार ने सोते समय मध्यरात्रि में कुछ अभूतपूर्व ढंग से रोने और विलाप करने का एक प्रेत समूह को देखा । उसके बाद राजा असमंजस में पड़ गये । सुबह होते ही बुद्ध के पास जाकर घटना के बारे में विस्तृत जानकारी दी ।

बुद्ध पूर्व (पूर्व जन्मों की घटनाओं के बारे में जानकारी) निवासानुस्मृति के आधार पर देखा कि यह मामला क्या है ? पता चला की राजा बिम्बिसार के कुछ ञाति लोग बहुत पहले मनुष्य योनि में जन्म लेकर भिक्षु संघ को किमती कुछ वस्तुओं की चोरी करके खा गया। मरने के बाद सबसे निम्न योनि में पैदा होकर कठोर दुख झेलने के बाद उससे निकलकर प्रेत योनि में तीन (अनन्तकल्प) बुद्धान्तर तक सा-पिपासा से पिड़ित बहुत कष्ट उठाने की बात बुद्ध ने राजा बिम्बिसार को बताया । कोई प्रेत योनि में रहने वाले प्रेत लोगों को उससे मुक्ति पाने के लिए पुण्य की जरुरत है। इसलिए उन लोगों के लिए पुण्य अनुमोदना करने का निर्देश दिया ।

बुद्ध की बात सुनकर राजा विम्बिसार ने माघ अमवस्या के दिन बुद्ध प्रमुख महासंघ को संघदान कराकर पूजा किया । संघदान के बाद बुद्ध प्रमुख भिक्षु महासंघ प्रेत लोगों के लिए पुण्य अनुमोदना किया । लेकिन दूसरे दिन रात को सभी प्रेत निर्वस्त्र होकर राजा बिम्बिसार के सामने आने का दृश्य दिखायी देने की बात राजा बिम्बिसार ने सुबह दूसरे दिन बुद्ध को बताया। बुद्ध ने कहा बुद्ध प्रमुख महासंघ को वस्त्र (वस्त्र), एवम् शयनासन सहित एक संघदान दीजिए । बुद्ध के कथनानुसार राजा बिम्बिसार वस्त्र शयनासन के साथ बुद्ध प्रमुख महासंघ को एक संघदान दिया । संघदान पूजा कराकर अपने ञाति, प्रेत योनि आदि का पुण्य अनुमोदना किया । उस दान की शक्ति से ञाति प्रेत, पुण्य ग्रहण किया । उस पुण्य ग्रहण से उस प्रेतों का पिपासा समाप्त हो गया । संघ दान पूजा के अन्त में बुद्ध राजा बिम्बिसार को अनुमोदना धर्म देशना के स्थान पर तिरोकुड़ड सूत्र देशना की है । (अंक 109)

परिच्छेद - 27

संसार का सत्य खोजते हुए घर से निकले हुए दो नवयुवक

बुद्ध के समक्ष सारिपुत्र तथा मौद् गल्यायन दोनों का आगमन एवम् दोनों का प्रव्रज्या (फाल्गुन की अमावस्या फरवरी में)

उस समय संजय नामक एक परिव्राजक दौ सौ पचास परिव्राजक समूहों को आर्य दर्शन देते हुए राजगृह के एक परिव्राजक आश्रम में रहते थे । राजगृह के समीप उपतिस्स और कोलित नाम से प्रसिद्ध दोनों गाँवों के दो अधिपति ब्राह्मण का पुत्र होने के कारण उसी नाम से जाने जाते थे । उपतिस्स व कोलित दोनों ही वचपन से कल्याण मित्र थे । तरुण वयस्क होते ही दोनों संसार के बारे में तरह-तरह की चर्चा करने के फलस्वरूप गृहस्थ जीवन से लगाव छोड़कर दुख से मुक्त होने का मार्ग ढूँढते-ढूँढते संजय परिव्राजक के आश्रम में पहुँच गये । संजय परिव्राजक के मार्गदर्शन का अध्ययन करते हुए समय बिताया । लेकिन जो वह दोनों खोज रहे थे वह वस्तु संजय परिव्राजक के पास दोनों को नहीं मिला । इसलिए दोनों ने विचार किया हम लोग इस आश्रम से निकलकर और कहीं ढूँढेंगे । हम लोगों को कही न कही इस ढंग से मुक्त होने का मार्ग अवश्य ही मिल जायेगा । ऐसा विचार करके दोनों ने आश्रम छोड़ दिया ।

दोनों ने आपस में यह तय किया कि सबसे पहले दुख से मुक्त होने का मार्ग (निर्वाण) जो प्राप्त करेगा वह दूसरे को उसकी जानकारी अवश्य देगा । दोनों सम्पूर्ण जम्बूद्वीप में घूमकर पुनः राजगृह में आ गये ।

पुनः संजय परिव्राजक के आश्रम में रहना प्रारम्भ कर दिया । उस समय धर्मदूत सेवा के लिए बुद्ध अश्वजीत नामक एक अर्हत् भिक्षु को भेजा था । अश्वजीत भिक्षु फागुन मास की आमवस्या (मार्च का महिना) के दिन पूर्वाह्न समय राजगृह में भिक्षाटन के लिए जा रहे थे । उपतिस्स परिव्राजक ने देखा कि एक शान्त स्वभाव के संन्यासी भिक्षाटन करते हुए अश्वजीत भिक्षु

को देखने के पश्चात् उपतिस्स परिव्राजक ने सोचा यह भिक्षु अवश्य अर्हत् होगा। नहीं तो अर्हत् मार्ग में प्रविष्ट किया होगा। लेकिन इस समय भिक्षाटन के लिए राजगृह में जा रहे है। उसके पास जाकर पूछने से कुछ पता चलेगा लेकिन अभी भिक्षाटन का समय है इसलिए बाद में पूछने के लिए उपतिस्स परिव्राजक अश्वजीत भिक्षु के पीछे-पीछे हो लिया।

भिक्षाटन के बाद अश्वजीत भिक्षु को एक पेड़ के नीचे जाकर भोजन ग्रहण करने के लिए तैयार देखकर उपतिस्स ने स्वयं उन्हें बैठने का आसन तैयार कर दिया। अश्वजीत भिक्षु उस आसन पर बैठकर भोजन ग्रहण किये। उपतिस्स अपने सुराही (किण्डी) के पानी से आचार्य को श्रद्धापूर्वक पानी पिलाया। इसके बाद दोनों के बीच वार्तालाप शुरू हो गया।

उपतिस्स आयुष्मान आप का आँख, कान जैसे इन्द्रिय सुख प्रसन्न है, छविवर्ण दीप्तिमान है, शोभायमान है। आप किसके लिए प्रव्रज्या लिया है। अश्वजीत भिक्षु ने सोचा इस व्यक्ति को बुद्ध शासन की गम्भीरता के बारे में आभास करायेंगे। ऐसा सोचकर कहा—आयुष्मत मैं नवयुक्त एक भिक्षु हूँ मेरा प्रव्रज्या अधिक दिन का नहीं है। तब परिव्राजक ने कहा मैं उपतिस्स हूँ। हमें थोड़ा-सा या ज्यादा धर्म को बताइए। क्रम से सौ हजार के रूप में समझने का काम हमारा है।

बात सुनने के बाद भिक्षु अश्वजीत बुद्ध देशना को आत्मसात कराकर छोटा-सा एक धर्म देशना किया।

कुछ हेतु से उत्पन्न होने वाला धर्म कुछ हो तो उसका कारण बुद्ध भी बताते है। यदि उसका कोई निरोध हो तो बुद्ध यह भी बताते हैं। महाश्रमण सर्वज्ञ बुद्ध इस समय इसी तरफ धर्म देशना करते हैं।

(अंक 110)

अश्वजीव भिक्षु के धर्मदेशना का पहला वाक्य सुनते ही सौ हजार अर्थ से परिपूर्ण धर्म को समझकर परिव्रजक उपतिस्स सोवान फल प्राप्त किया। दूसरा दो वाक्य सोवान होने के पश्चात् ही सुना लेकिन सोवान के अलावा आगे नहीं बढ़ने का कारण उपतिस्स परिव्राजक अश्वजीत भिक्षु से इसका कारण पूछा। (अंक 111)

उपतिस्स परिव्राजक ने कहा मेरे लिए इतना पर्याप्त है हमारे शास्ता कहा है अश्वजीत ने कहा—आयुष्मान हमारा शस्ता अभी वेणूवन में

विराजमान है । उपतिस्स ने कहा गुरुजी यदि ऐसा है तो आप पहले चले जाइए क्योंकि मेरा एक मित्र है । हम दोनों के कथनानुसार जो सबसे पहले सत्य अवबोध करेगा वह एक-दूसरे को इसकी जानकारी देगा । इसलिए मुझे जाकर अपने मित्र को साथ लेकर, आप किस रास्ते से शास्ता के पास पहुँचेगे ? उसी रास्ते से हम भी मित्र के साथ शास्ता के पास पहुँच जायेंगे। ऐसा कहकर अश्वजीत भिक्षु को प्रणाम करके उपतिस्स परिव्राजक वहाँ से चला गया । मित्र कोलित ने सामने से आते अपने मित्र उपतिस्स को देखा सोचा पहले जैसा नहीं है । बहुत प्रसन्नता से भरा हुआ है । लगता है उपतिस्स अवश्य निर्वाण मार्ग में प्रवेश किया होगा । मुलाकात होने के बाद उपतिस्स भिक्षु अश्वजीत से जो सुना था, उस धम्म की गाथा कोलित को सुनाया । गाथा सुनने के बाद कोलित परिव्राजक भी सोवान (स्रोतापन्न) हो गया ।

कोलित ने पूछा यह धर्मदेशना करने वाले हमारे शास्ता कहाँ है । उपतिस्स ने कहाँ भिक्षु अश्वजीत के अनुसार शास्ता अभी राजगृह के वेणूवनाराम में विराजमान है । कोलित ने कहा यदि बात ऐसा है तो चलिए हम दोनों शास्ता का दर्शन करेंगे ।

उपतिस्स ने कहाँ मित्र ये दो सौ पचास परिव्राजक हम लोगों के अनुवायी है और हम लोगों के कारण ही इस जगह पर है । हम लोगों को निर्वाण मार्ग पर प्रविष्ट होने का समाचार इन दो सौ पचास अनुवायियों को देना जरूरी है । उसके बाद क्या करना है यह उन लोगों का काम है। उपतिस्स के कथन के अनुसार उपतिस्स व कोलित दोनों परिव्राजक परिषद के पास जाकर कहा हम लोग निर्वाण मार्ग पर प्रविष्ट किया हूँ और आगे बढ़ने के लिए बुद्ध के पास जा रहा हूँ । इस पर परिव्राजक परिषद ने कहा आप लोगों को देखकर ही हम लोग इधर ठहरे हुए हैं । यदि आप दोनों लोग महाश्रमण के पास जा रहे है तो हम लोग भी आप लोगों के साथ आकर आप लोगों का अनुसरण करेंगे ।

तत्पश्चात् कोलित व उपतिस्स दोनों संजय परिव्राजक के पास जाकर जो अश्वजीत भिक्षु से सुना वह धर्म गाथा संजय परिव्राजक को सुनाकर बुद्ध के पास जाने के लिए अनुमति माँगा । संजय परिव्राजक ने कहा—उधर जाने में हमारा कोई विरोध नहीं है । हम तिनों लोगों को मिलकर इन दो सौ पचास परिव्राजक लोगों को दिक्षा देना अच्छा होगा । संजय परिव्राजक

उपतिस्स और कोलित की बात को नहीं माना । दूसरी बार दोनों ने संजय परिव्राजक को बुद्ध के पास जाकर शिक्षा लेने के लिए अनुरोध किया तब भी संजय परिव्राजक कोलित और उपतिस्स की बात को इंकार किया । तीसरी बार भी वही बात को याद दिलाया लेकिन तीसरी बार भी संजय परिव्राजक, कोलित और उपतिस्स की बातों को इंकार किया । तीसरी बार बात नहीं मानने पर उपतिस्स और कोलित दो सौ पचास परिव्राजक के साथ बुद्ध के पास चले गये ।

दूर से आते उपतिस्स और कोलित को देखने के बाद बुद्ध ने भिक्षुओं से कहा—भिक्षुओं ! देखो कोलित और उपतिस्स दोनों मित्र आ रहे हैं । यही दोनों हमारा अग्रस्त्रावक होंगे ।

ये दोनों नवयुवक परिव्राजक कोलित और उपतिस्स बुद्ध का वचन सुनने के बाद अपने दो सौ पचास परिव्राजक परिषद के साथ प्रव्रज्या एवम् उपसम्पदा ग्रहण किया । दोनों बुद्ध के पास जाकर बुद्ध के दोनों पैर पर अपना सिर झुकाकर वन्दना किये । बुद्ध ने कहा भिक्षुओं इधर आ जाना क्योंकि इस समय धर्म सही ढंग से प्रकाशित है और दुख नष्ट करने के लिए ब्रह्मचर्य का मार्ग अपनाओ । कोलित नवयुवक मुग्ली नामक ब्राह्मणी का पुत्र होने के कारण मौद्गल्यायन नाम से प्रसिद्ध हुआ ।

सारिपुत्र तथा मौद्गल्यायन परिषद सहित अरहत पद की प्राप्ति

तत्पश्चात् बुद्ध नवयुवक भिक्षुओं के चरित्र के अनुसार सभी को धर्म देशना किये । सारिपुत्र तथा मौद्गल्ययायन को छोड़कर बाकि सभी लोग अरहत हो गये ।

मौद्गल्यायन भिक्षु का कल्लवाल मुंत्व गाँव में जाना

मौद्गल्यायन भिक्षु प्रव्रज्या लेने के बाद उसी दिन बुद्ध से कर्मस्थान लेकर मगध राज्य के कल्लवाल मुत्व नामक एक प्रसिद्ध छोटा-सा जंगल में जाकर विदर्शना भावना करना शुरू कर दिया ।

बुद्ध का भग्ग देश को पधारना

बुद्ध भी अपने धर्मप्रचार के क्रम से वत्स जनपद को जाकर भग्ग प्रदेश में सुनसुमार गिरी नगर के समीप भेषकला नामक प्रदेश में रहते थे।

मौद्गल्यायन भिक्षु का अर्हत् पद प्राप्त करना

फागुन की अमवस्या के दिन मौद्गल्यायन अर्हत् पद प्राप्त किया । कल्लवाल मुत्व गाँव में मौद्गल्यायन भिक्षु जीवन व्यतीत करते थे । सात दिन गुजर जाने के बाद चंक्रमण करते समय सातवें दिन थक जाने के कारण चित्त, चैतसिक, कायिक आलसपन आ गया । बुद्ध दिव्य चक्षु से इस घटना को देखने के बाद प्रातिहार्य (इर्दी) से उस स्थान पर जाकर धातुकर्मस्थान के विषय में मौद्गल्यायन भिक्षु को धर्म देशना की है । इस देशना के समाप्त होते ही मौद्गल्यायन भिक्षु अर्हत् पद प्राप्त किया है । यह घटना मौद्गल्यायन भिक्षु को प्रव्रज्जित होने के सात दिन के बाद हुआ है ।

बुद्ध का राजगृह में आगमन और सारिपुत्र अर्हत् होना

बुद्ध राजगृह में वापस आकर गिज्जकूट पर्वत में सूकर खत (सूअर द्वारा खोदा हुआ गुफा) की गुफा में समाधि मुद्रा में विराजमान थे । यह घटना सारिपुत्र की प्रव्रजया का पन्द्रहवा दिन था । बुद्ध सारिपुत्र भिक्षु को आमंत्रित किया । आमंत्रित करके उच्छेदवादी नामक दिघनख परिव्राजक को वेदना परिग्रह सूत्र की देशना किया । उच्छेदवादी दिघनख परिवाजक को बुद्ध वंदना, परिग्रह सूत्र धर्मदेशना करते समय सारिपुत्र भिक्षु अपने पंखे से बुद्ध को हवा कर रहे थे । परिग्रह सूत्र सारिपुत्र भिक्षु भी सुन रहे थे। और इस सूत्र को सुनते ही सारिपुत्र भिक्षु ने अर्हत् पद प्राप्त किया ।

(अंक 112)

बुद्ध को इस घटना की जानकारी होने के बाद अपने इर्दी शक्ति (प्रातिहार्य शक्ति) से आसमान से वेणूवनाराम में पहुँच गये । सारिपुत्र अर्हत् बुद्ध को नहीं देखा, नहीं दिखायी देने से बुद्ध को खोजा कि बुद्ध कहा गये । सारिपुत्र ने देखा बुद्ध बिना सूचना के अपनी प्रातिहार्य शक्ति से आकाश मार्ग से वेनुवन में चले गये । सारिपुत्र अर्हत् भी आकाश मार्ग से वेणूवनाराम में चला गया ।

महासंघ का एकत्रित होना, अग्रस्त्रावक की पदवी देना और प्रातिमोक्ष देशना प्रारभ करना

उस दिन माघ पूर्णिमा के अमवस्या का दिन था और उसी दिन वेणूवनाराम में भिक्षु महासंघ का एक संगम था । उरुवेला काश्यप के साथ,

गया काश्यप के साथ और नदी काश्यप के साथ जटील परम्परा से मुक्ति पाकर आये हुए एक हजार भिक्षु कोलित तथा उपतिस्स (सारिपुत्र मौद्गल्यायन) के साथ आये हुए (250) दो सौ पचास अर्हत् एक स्थान पर इकट्ठा हो गये । उन सभी के सामने सारिपुत्र व मौदगल्यायन दोनों को बुद्ध शासन में बुद्ध अपना अग्रस्त्रावक नियुक्त किया ।

अग्रस्त्रावक नियुक्ति के बारे में गलत फहमियाँ दूर करना

पृथक् जन भिक्षुओं के बीच में गलत फहमियाँ पैदा हो गया कि बाद में आने वाले सारिपुत्र और मौद्गल्यायन भिक्षु को क्यों आग्रस्त्रावक नियुक्त किया है । बुद्ध ने सभी भिक्खुओं को एक जगह पर बुलाया और कहा पंचवाग्गिय भिक्षु, यश भिक्षु, भद्दवागीय भिक्षु, जटील भिक्षु जैसे लोग इसके लिए कभी प्रार्थना नहीं किया । संसार में सारिपुत्र एवं मौद्गल्यायन दोनों बुद्ध शासन में अग्रस्त्रावक होने के लिए प्रार्थना करते हुए पुण्य भी किया हुआ है । अतीत कथा का भिक्षुओं के समक्ष देशना करने के बाद पृथक् जन भिक्षुओं का शंका दूर हो गया ।

संजय परिव्राजक का धर्म देशना करना

तत्पश्चात् सारिपुत्र मौद्गल्यायन दोनों गृहस्थ जीवन से अप्रसन्न होकर भिक्षु जीवन में आने की कहानी अश्वजीत भिक्षु को बताया । बुद्ध दर्शन करने का निमन्त्रण देने के बावजूद भी संजय के नहीं आने का कारण से बुद्ध को अवगत कराया । इस पर बुद्ध ने कहा भिक्षुओं संजय मिथ्या दृष्टि वाला है । इसलिए सार-असार के रूप से, असार-सार के रूप से देखता है। लेकिन आप लोग ज्ञानवन्त होने के कारण सार को सार के रूप में, और असार को असार के रूप में देखने के बाद असार को छोड़कर सार में आ गये हो । (अंक 113)

असार में सार है गलत सोचना

सार में असार सोचना और गलत कल्पना में सम्मिलित रहने के कारण सार धर्म उपलब्ध नहीं होता है । सार को सार जैसा, असार को असार जैसा देखने वाला व्यक्ति सही चिन्तन करने से सार धर्म प्राप्त करता है । यह धर्म देशना सुनने के बाद बहुत से लोग सोवान (स्त्रोतापन्न) हो गये।

बुद्ध का भद्दियपुर आगमन और विशाखा का सोवान होना

बुद्ध राजगृह के बाद महाभिक्षुसंघ के साथ अंग प्रदेश में पधारे । अंगप्रान्त के भद्दियनगर में पहुँच गये । उस नगर में मेण्डक नाम से प्रसिद्ध एक सेठ बुद्ध के आने की खबर सुनकर अपने सात साल की पौत्री विशाखा नामक लड़की को लेकर लोगों के साथ बुद्ध की दर्शन के लिए गया । बुद्ध की धर्म देशना सुनने के बाद सात साल की विशाखा और मेण्डक दोनों सोवान (स्रोतापन्न) हो गये । दूसरे दिन मेण्डक सेठ बुद्ध प्रमुख महासंघ को संघदान दिया । इसी प्रकार मेण्डक सेठ बुद्ध प्रमुख महासंघ को पन्द्रह दिन तक संघदान दिया ।

केनिय और सेल दोनों का धर्म देशना

भद्दीय नगर के बाद बुद्ध अगुप्तराय जनपद में अस्पन नामक गाँव में पहुँच गये । वहाँ केनिय और सेल दोनों ब्राह्मणों को धर्म देशना किया और ऐहि भिक्षु भाव से प्रव्रज्या कराकर पुनः राजगृह को वापस लौट गये ।
(अंक 114)

परिच्छेद - 28

मरने के पहले अपने पुत्र को देखने की इच्छा

बुद्ध का कपिल वस्तु आगमन

बोधिसत्व गृह त्याग कर संयासी होने तक की सभी समाचार लेने के लिए राजमहल की ओर से राजपुरुषों को नियुक्त किया गया था । बोधिसत्व जहाँ-जहाँ जाते थे राजपुरुष भी अपना भेष बदलकर बोधिसत्व का हालचाल लेकर राजा शुद्धोदन तक पहुँचते थे । छः साल तक राजा शुद्धोदन की आज्ञा के अनुसार राजपुरुष बोधिसत्व की खबर सही ढ़ग से राजा शुद्धोदन को बताते थे । धर्म-चक्र-प्रवर्तन-सूत्र के बाद राजगृह तक की पूरी कहानी भी राजा शुद्धोदन को राजपुरुषों ने बता दिया था । राजगृह की पूरी कहानी सुनने के बाद राजा शुद्धोदन ने सोचा कि अब अपने पुत्र को कपिलवस्तु में बुलाने का समय आ गया है । ऐसा सोचकर एक अमात्य के साथ एक हजार राजपुरुषों को राजगृह में बुद्ध के पास भेजा था ।

अमात्य और राजपुरुष कपिलवस्तु से निकालकर राजगृह में वेणूवनाराम में पहुँच गये । अमात्य और एक हजार राजपुरुषों का वेणुवनाराम में पहुँचते ही इन सभी को दिखाई दिया कि बुद्ध धर्म देशना कर रहे है । बुद्ध का धर्म देशना सुनने के बाद अमात्य और राजपुरुष लोग अर्हत् होकर बुद्ध से प्रव्रज्या माँगा । बुद्ध ने सभी लोगों को ऐहि भिक्षु भाव से प्रव्रज्जित कराकर उपसम्पदा कराया । अर्हत् होने के पश्चात् किसी का पक्षपात नहीं करता है । राजा ने जिस काम के लिये भेजा था उस चीज के बारे में बुद्ध को कोई भी जानकारी नहीं दिया ।

बहुत दिन बितने के बाद राजा शुद्धोदन और एक अमात्य के साथ एक हजार व्यक्तियों को वेणूवनाराम में भेजा । यह सभी लोग भी अर्हत् होकर निःशब्द होकर बुद्ध के साथ रहना शुरू कर दिया । इसी तरह नौ बार एक-एक अमात्य के साथ एक-एक हजार व्यक्तियों को राजगृह के वेणूवनाराम में भेजा । लेकिन सभी लोग बुद्ध की धर्म देशना सुनकर प्रव्रज्या ग्रहण कर अर्हत् हो गये । सभी लोग अर्हत् होने के कारण किसी का पक्ष

न लेकर चुपचाप से बुद्ध के साथ वेणूवनाराम में समय व्यतित कर रहे थे। राजा शुद्धोदन चिन्तित होकर सिद्धार्थ बोधिसत्व के जन्म दिन के ही दिन पैदा होने वाले कालूदायी नामक अमात्य को बुलवाया और बुलाकर कहा कालुदायी पुत्र सिद्धार्थ को कपिलवस्तु में बुलाने के लिये नौ बार नौ अमात्यों के साथ एक-एक हजार व्यक्तियों को भेजा लेकिन किसी का कुछ अता-पता नहीं है । अब हमारा उम्र बहुत अधिक हो गया है इसलिए मरने से पहले मैं अपने पुत्र को देखना चाहता हूँ ।

राजा शुद्धोदन ने कहा—तुम मेरे लिए यह काम कर सकते हो कि नहीं बताना । कालुदायी ने कहाँ—महाराज हमें भी प्रव्रज्जित होने के लिए आप की ओर से अनुमति मिलने पर मैं यह काम कर सकता हूँ । राजा शुद्धोदन ने कहा जो तुम्हारी इच्छा, लेकिन किसी तरह से हमें अपने पुत्र राजकुमार सिद्धार्थ को देखना है । दोनों के बीच सम्वाद के बाद राजा शुद्धोदन कालुदायी अमात्य को एक हजार व्यक्तियों के साथ राजगृह वेणूवनाराम की ओर रवाना कर दिया । कालुदायी के साथ जो एक हजार व्यक्ति गये थे सभी लोग बुद्ध की धर्म देशना सुनकर अर्हत् हो गये । ऐही भिक्षु भाव से प्रव्रज्या लेकर उपसम्पदा भी करा लिया ।

महाकाश्यप अर्हत्

मगध देश में (वर्तमान विहार) महातीर्थ नाम से प्रसिद्ध एक ब्राह्मण गाँव में कपिल नामक एक सुप्रसिद्ध धनवान ब्राह्मण था जिसके पुत्र का नाम पिप्पलीमानवक था । पिप्पलीमानवक को तरुण-वयस्क होने पर एक ब्राह्मण कन्या के साथ शादी करवाने के लिए कपिल ब्राह्मण ने सोच लिया । पिप्पलीमानवक पूर्व जन्म में ब्रह्मलोक में रहकर मनुष्य लोक में जन्म लिया था । पुण्य सम्पन्न पिप्पलीमानवक का कामवासना समाप्त था । लेकिन पिताजी मेरी शादी न करवा सके, इससे बचने के लिए सोने का एक स्त्री की मूर्ति तैयार करवाया और तैयार करवाकर पिताजी से कहा यदि इस ढंग की कोई ब्राह्मण कन्या मिले तो मैं उससे विवाह करुँगा । कपिल ब्राह्मण अपने सेवकों को बुलाकर कहा कि इसी प्रकार की कोई सुन्दर ब्राह्मण कन्या दिखाई दे तो हमें सूचना देना। सेवक घूमते-घूमते पूरे देश घूमने के बाद मध्य देश में चले गये । उस समय मध्य देश में सागल नगर सुन्दर सुशील स्त्रीयों के लिए प्रसिद्ध था।

सागल नगर पहुँचकर खोजते ही सोने की मूर्ति जैसे सुन्दर सुशील भद्रा नामक ब्राह्मण कन्या को देखा । सेवक परिषद इसके सम्बन्ध में सम्पूर्ण जानकारी कपिल ब्राह्मण को दिया । दोनों परिवार के बीच बात-चीत होने के बाद पिप्पलीमानवक का भद्रा के साथ विवाह हो गया । भद्रा भी ब्रह्मलोक से मनुष्य लोक में जन्म ली थी । इसलिए भद्रा भी कामवासना से मुक्त थी । विवाह के दिन रात को पिप्पलीमानवक और स्त्री भद्रा के बीच में बातों का अदान-प्रदान हुआ । बातचीत के बाद बाहर लोगों को दिखाई दिया कि दोनों पति-पत्नी है । परन्तु दोनों भाई-बहन जैसे एक दूसरे से प्यार करते, ब्रह्मचर्य की जीवन व्यतित करते हुए घर का कार्य करते थे । पिप्पलीमानवक ने सोचा माता-पिता के देहान्त के बाद संयास लेगे । यह विचार भद्रा को भी बताया । भद्रा ने कहा हमें भी गृहस्थ जीवन अच्छा नहीं लगता है इसलिए हम भी संयास लूँगी । दोनों के बात-चीत के अनुसार बाजार जाकर गेरुवा रंग का कपड़ा व मिट्टी का पात्र खरीदकर तपस्वी बन गये ।

दोनों ने अपने अपार सम्पत्ति के बारे में सबसे कहा जिसको अपने मन से जो लेना हो ले लिजिए, इतना कहकर बिना सूचना के दोनों घर छोड़कर निकल गये । बहुत दूर तक दोनों एक साथ गये और एक चौराहा आने पर पिप्पलीमानवक ने कहा अब हम दोनों संयासी है । हम दोनों एक का एक साथ जाना अच्छा नहीं है । भद्रा ने कहा आप उस तरफ जाइए, हम इस तरफ जायेंगे । पिप्पलीमानवक की बात मानकर भद्रा बाये तरफ की रास्ते से थोड़ी दूर जाकर एक परिव्राजक आश्रम में पहुँच गयी । पिप्पली-मानवक भी राजगृह और नालन्दा के बीच में एक मार्ग पर चल पड़े। बुद्ध ने अपने दिव्य चक्षु से देखा कि पिप्पलीमानवक आ रहा है । बुद्ध राजगृह और नालन्दा के बीच बहुपुनीत नाम से प्रसिद्ध एक बरगद पेड़ के नीचे प्रातिहार्य शक्ति से (इर्दी से) आकर वृक्ष की छाया में बैठकर अपने शरीर से रश्मि निकाल रहे थे । पिप्पली मानवक संयासी यह दृश्य देखने के बाद बुद्ध के पास जाकर दोनों हाथ जोड़कर बुद्ध का दर्शन करने के बाद कहा भाग्यवत आप मेरा शास्ता है और मैं आपका श्रावक हूँ ।

बुद्ध ने पिप्पलीमानवक से कहा इधर आइए, बैठीये हम आप को उपहार देगे । यह कहकर बुद्ध ने उपदेश दिया कि स्थवीरमध्यम से नवयुवक भिक्षुओं के लिए लज्जा भय से युक्त होकर रहना चाहिए । और धर्म देशना सुनते समय कान खोलकर उसमें सही ढंग से दिमांग लगाना जरूरी होता

है । अशुभ ध्यान, आनापान ध्यान भावना, कायगतासति ध्यान, प्रथम ध्यान प्राप्त करने के उद्देश्य से आगे बढ़ना चाहिए । बुद्ध इसी तरह उपदेश देकर पिप्पली-मानवक संयासी को औवाध अनुशासना उपसम्पदा किया ।

पिप्पलीमानवक काश्यप ब्राह्मण परम्परा से आता है और संयास लेने के बाद बुद्ध पिप्पलीमानवक को उसके गोत्र नाम से सम्बोधित किया । इसलिए पिप्पलीमानवक नाम को हटाकर काश्यप के नाम से व्यवहार करना शुरू कर दिया ।

बुद्ध काश्यप को प्रव्रज्याउपसम्पदा करने के पश्चात् भविष्य में और एक घटना होने वाले के बारे में सोचकर काश्यप के साथ थोड़ी दूर जाकर एक वृक्ष की छाया में विराजमान होने के लिए सोच रहे थे । कि काश्यप अपने चीवर का आसन बनाकर जमीन पर रख दिया और बुद्ध उस पर विराजमान हो गये । बुद्ध ने अपने दिव्य चक्षु से देखा कि अपने महापरिनिरवान के बाद धर्म संज्ञान में बुद्ध की जगह लेने वाला और उपयुक्त योग्यता रखने वाला कोई भिक्षु है तो वह महाश्रावक महाकाश्यप है । इसलिए यह कार्य अभी से महाकाश्यप को अवगत करायेंगे । यह सोचकर बुद्ध अपना चीवर महाकाश्यप को देने के उद्देश्य महाकाश्यप द्वारा बिछाया हुआ चीवर को हाथ लगाकर बुद्ध ने कहा काश्यप तुम्हारा यह चीवर बहुत मुलायम है। महाकाश्यप ने सोचा बुद्ध मेरा चीवर पहनना चाहते है सोचकर कहा भाग्यवत यह चीवर आपके लिए अच्छा हो तो आप इसे ओढ़ लीजिए । बुद्ध ने पूछा आपको आढ़ने के लिए चीवर कहाँ है ? तो महाकाश्यप ने कहा भाग्यवत मेरे लिए आपका अन्तरावास मिलने से हम उसे ओढ़ लेगे । बुद्ध इतने दिनों तक जो चीवर पहने थे वह कफन से बना हुआ था । बुद्ध ने कफन से बने हुए चीवर को काश्यप अर्हत् को दे दिया । चीवर अदान-प्रदान करने के कारण काश्यप अर्हत् बुद्ध का एकदम नजदीकी भिक्षु हो गया । महाकाश्यप ने सोचा कि बुद्ध का पहना हुआ चीवर पहनने के योग्य, उत्तम श्रेष्ठ गुणों से परिपूर्ण होना जरूरी है । ऐसा सोचकर तेरह धुतांग अपना लिया । इसके बाद बुद्ध काश्यप के साथ राजगृह के वेणूवनाराम में पधारे । एक सप्ताह गुजर जाने के बाद तेरह धुतांगों के साथ ध्यान भावना करने के कारण काश्यप एक सप्ताह के अन्दर पाँच अविज्ञा अपने से प्राप्त करने के साथ अर्हत् पद प्राप्त किया ।

काश्यप के नाम से और भिक्षु होने के कारण इस काश्यप अर्हत् को महाकाश्यप के नाम से व्यवहार करना शुरू किया ।

विशाल भिक्षु परिषद

बुद्ध अपना पहला उपदेश धर्म-चक्र-प्रवर्तन सूत्र से आठ महीने तक विभिन्न प्रदेशों में धर्मप्रचार के लिए भेजे हुए भिक्षुओं, पुराना जटील भिक्षु एक हजार तीन सौ, सारिपुत्र, मौद्गल्यापन के साथ दो सौ पचास पुराना परिव्राजक, अंग-मगध दोनों राज्यों से प्रव्रज्जित भिक्षु दस हजार, कपिलवस्तु से आकर प्रव्रज्जित हुए भिक्षु दस हजार कुल इक्कीस हजार तीन सौ पचपन भिक्षु आठ महिने के समय में बुद्ध का स्त्रावक भिक्षु बन गये ।

कालुदायी द्वारा कपिलवस्तु से राजगृह तक के मार्ग का वर्णन

कालुदायी बुद्ध के पास आकर भिक्षुबनकर रहते सात आठ दिन बीत गया । चैत पूर्णिमा (अप्रैल माह) का दिन आ गया और हेमन्त ऋतु भी प्रारम्भ हुआ । कालुदायी ने सोचा बुद्ध को कपिलवस्तु ले जाने का अभी उचित समय है । ऐसा सोचकर बुद्ध के पास जाकर राजगृह से कपिल वस्तु तक के मार्ग का वर्णन किया है । जो निम्नलिखित है— (अंक 115)

1) भाग्यवत राजगृह से कपिलवस्तु तक सुगन्धित लाल रंग के पुष्पों से सुसज्जित एवम् भरा हुआ देखने को मिलता है । लाल रंग के कोमल नये पत्तों से वृक्ष भी सुसज्जित है ।

2) पुराना पत्ता गिरकर फल आने का समय आ गया है । सभी वृक्ष अग्नि रंग के पुष्पों से सुशोभित है । महावीर भाग्यवत् भगिरथ परम्परा के लोगों को अनुग्रह कराकर कपिलवस्तु पधारने का समय अभी है ।

3) सुपुष्पित पुष्प-वृक्ष चारों ओर सुगन्ध फैलाकर, पुराना पत्ता गिराकर फल देने की अपेक्षा से इंतजार कर रहे है । भाग्यवत् कपिलवस्तु पधारने का समय आ गया है ।

4) अधिक शीत भी नहीं है अधिक उष्ण भी नहीं है, सुखदायक ऋतु है, कपिलवस्तु जाने का योग्य समय आ गया है । वापस आते देख, रोहिणी नदी पार करने के बाद कोलिय राजा भी आपका दर्शन करेंगे ।

(अंक 116)

5) किसान भविष्य को देखकर खेत में हल चलाता है, भविष्य को देखते हुए बीज बोता है । धन इकट्ठा करने वाले व्यापारी भविष्य को देखकर समुद्र को पार करता है । आपको कपिलवस्तु में ले जाने के लिए मेरी कोई इच्छा हो तो प्रार्थना हो तो उसे प्रार्थना की समृद्धि हो ।

6) किसान एक बार नहीं अपितु बार-बार धान बोता है । बारिस भी बार-बार होती है, किसान बार-बार खेत जोतता है इसलिए बार-बार देश को धान मिलता है ।

7) भिखारी बार-बार घर-घर जाकर भिक्षा माँगता है । दान पति बार-बार दान देता है । बार-बार दान देने के कारण बार-बार स्वर्ग में उत्पन्न होता है ।

8) भाग्यवत किसी कुल में कोई वीर पुरुष हो तो उसके कारण उसका प्रतिपत्ती सात पीढ़ी तक उसी परम्परा को शुद्ध करता है । लोक कल्याण करने वाला मुनि के नाम से जाना जाने वाला सत्य से देवादि देव भाग्यवत उससे भी ज्यादा पाप निवारण कृत्य है और अन्य लोगों को उचित ढंग से मार्गदर्शन करने में समर्थ है ।

9) महर्षि आपके पिताजी महाराजा शुद्धोदन है । कोई उत्तम माता बोधिसत्व को इस संसार में जन्म देने के बाद मरणोपरान्त दिव्य पुत्र होकर दिव्य सम्पत्ति सुख प्राप्त करता है । वह पूण्यवान मायादेवी आप की माताजी है। मरणोपरान्त आपकी माताजी दिव्य लोक में उत्पन्न होकर परिवार देव समूह के साथ दिव्य सुख प्राप्त कर आनन्द से समय बिताया है ।

इसी प्रकार मार्ग का वर्णन करने के पश्चात् कालुदायी भिक्षु बुद्ध को कपिलवस्तु पधारने के लिए याचना किया ।

अमावस्या के दिन कपिलवस्तु की ओर प्रस्थान और वैशाख पूर्णिमा (मई माह) के दिन कपिलवस्तु में प्रवेश करना

बुद्ध ने देखा अपना कपिलवस्तु आगमन से बहुत बड़ा अभिउदय होने वाला है । इसलिए अंग-मगध दोनों राज्यों से प्रव्रज्जित दस हजार अर्हत् भिक्षु और कपिल वस्तु से आकर प्रव्रज्जित दस हजार भिक्षु के साथ राजगृह से निकल पड़े । पद यात्रा करने के कारण रास्ते में मिलने वाले जनता भी बुद्ध का दर्शन करके और धर्म देशना सुनकर पुण्य कमाया । एक दिन

में एक योजन = 4 कोस (12 किमी.) होता है । पद यात्रा करते-करते दो माह व्यतित करने के बाद वैशाख पूर्णिमा को कपिलवस्तु में प्रवेश किये। राजगृह से कपिलवस्तु तक दो महीने के दौरान कालुदायी भिक्षु अपने प्राप्तिहार्य (इर्दी) से कपिलवस्तु जाकर राजमहल से भोजन ला कर बुद्ध को देते थे । राजगृह से कपिल वस्तु तक पद यात्रा में बुद्ध कालुदायी द्वारा ले आया हुआ भोजन ही ग्रहण करते थे ।

निग्रोधाराम में प्रवेश और वैशाख पूर्णिमा के दिन यमक प्रातिहार्य

कालुदायी प्रतिदिन राजमहल में जाकर बुद्ध के आने के पहले से बुद्ध का गुण सभी को बताकर जाति समूह (सार्वजनिक समूह) को प्रसन्न किया। इससे प्रसन्न शाक्य परिषद बुद्ध और भिक्षु महासंघ को ठहरने के लिए सभी सुविधाओं से युक्त शाक्य राजाओं का निग्रोध उद्यान को सुन्दर ढंग से सजाकर तैयार किया ।

बुद्ध जिस समय कपिलवस्तु नगर में प्रवेश कर रहे थे । उस समय छोटे बड़े सभी शाक्य लोग सुन्दर ढंग से रंग-बिरंगे वस्त्र पहनकर और सुगन्धित पुष्प लेकर नगर वासियों के साथ रास्ते के दोनों तरफ खड़े हो गये थे । सबसे पहले बालक बालिकाओं को आगे किया गया, उसके बाद राजकुमार-राजकुमारियाँ, उसके बाद राजपरिवार के नियमानुसार बाकि वयोवृद्ध लोग पीछे-पीछे होकर बुद्ध को निग्रोध उद्यान में बना हुआ निग्रोधाराम में ले गये। बीस हजार अर्हत् भिक्षुओं के साथ बुद्ध निग्रोध में जाकर आसन ग्रहण किया। शाक्य वंश के लोग मानादिक होने के कारण किसी ने कहा सिद्धार्थ हमसे छोटा है, किसी ने कहा हमारा दामाद है, किसी ने कहा हमारा जाति है। ऐसा कहकर अपने-अपने किनारे से आकर छोटे राजकुमार और राजकुमारियों से नमस्कार करवाया । बुद्ध ने सोचा यह शाक्य लोगों मान भंग करना जरूरी है । ऐसा सोचकर अभिज्ञापादक ध्यान युक्त आसन में जाकर यमक महाप्रातिहार्य दिखाया । (अंक 117)

उस अभूतपूर्व दृश्य देखने के बाद राजा शुद्धोदन ने कहा पुण्यवान आपके पहले जन्म दिन पर हमारे गुरु तपस्वी आसित ऋषि के पास आप को ले जाते समय आपका दोनों पैर (पाद) आसित ऋषि के सिर पर जाकर रुक गये । उस आश्चर्य को देखने के बाद हम भी आपको प्रणाम किया

है यह मेरा पहला प्रमाण है । कपिलवस्तु में हल जोतने के महोत्वसव के साथ आपका प्रातिहार्य देखकर हमने आपको दूसरी बार प्रणाम किया है। जो आज हमने देखा जीवन में कभी भी ऐसा आश्चर्य नहीं देखा । इसलिए आज भी हम आपको प्रमाण करते हैं यह हमारा तीसरा प्रणाम है । यमक प्रातिहार्य देखने के बाद राजा शुद्धोदन द्वारा बुद्ध को प्रमाण करने के बाद शाक्य राजवंश के शेष लोग भी जाकर बुद्ध को प्रणाम किये ।

मल्लराजा परम्परा के चार कुमारों का प्रव्रज्या

मल्ल राजा लोगों का नगर पाँवा है । चार राजा लोगों का चार पुत्र गोधिक, सुबाहु, बल्लिय तथा उत्तिय कुछ आवश्यक काम के लिये उस समय कपिलवस्तु में आये हुए थे । उस दिन बुद्ध का यमक प्रातिहार्य देखने के बाद, बुद्ध का उपदेश सुनकर विदर्शना ध्यान भावना करने के फलस्वरूप अर्हत् पद प्राप्त किया है ।

वेस्सन्तर जातक देशना

बुद्ध यमक प्रातिहार्य के माध्यम से जाति (सार्वजनिक) शाक्य परिषद का अभिमान (घमण्ड) समाप्त कराकर अपने आसन में विराजमान हो गये। सभी राजा और जाति समूह शान्ति पूर्वक आकर बैठ गये, उस समय धीरे-धीरे वर्षा शुरू हो गया था । बुद्ध इन सभी घटना को लेकर वेस्सन्तर जातक कहानी से धर्म देशना किया । धर्म देशना सुनने के बाद सभी लोग बुद्ध को प्रणाम करने के बाद अपने-अपने स्थान को चले गये । (अंक 118)

परिच्छेद - 29

राजा शुद्धोदन द्वारा देवी यशोधरा की बात को बुद्ध तक पहुँचाना

वैशाख अमावस्या (मई माह)

शाक्य समूह को जो बुद्ध ने देशना किया, उस देशना से पूरा शाक्य परिषद खुशी से भर गया । इतना खुश हो गये कि दूसरे दिन बुद्ध को भोजन दान के लिए निमंत्रित करने के लिए कोई भी होश में नहीं था। उस दिन रात को बुद्ध भिक्षु महासंघ के साथ निग्रोधाराम में ही समय बिताया ।

कपिलवस्तु में बुद्ध का भिक्षाटन करना और यशोधरा द्वारा राजा शुद्धोदन को जानकारी देना

दूसरे दिन भिक्षाटन का समय आने से बुद्ध बीस हजार अर्हत् भिक्षुओं के साथ महल के मध्य द्वार से अनुक्रम से भिक्षाटन किया ।

कपलिवस्तु नगर वासी अपने-अपने प्रासादो के उपर खिड़कियों से देखा बुद्ध भिक्षाटन कर रहे है । सभी लोग चकित विष्मय होकर यह दृश्य देखते रह गये ।

यशोधरा देवी बुद्ध को भिक्षाटन करने की बात सुनकर कम्पित हो गयी । और सोचने लगी मेरे स्वामी पहले इसनगर में स्वर्ण रथ में बैठकर चौसठ आवरणों से अलंकृत होकर माणिक्य रश्मि से दिप्तीगत मुकुट पहनकर लाख से ज्यादा किमती मोती के माला से गले सुसज्जित करते थे । देवेन्द्र लीला जैसे महाजुलूस निकलता था । अभी सिर मुड़वाकर, दाढ़ी (बनवाकर) साफ कराकर कसायवस्त्र पहनकर एक भिक्षापात्र हाथ में लेकर भिक्षाटन कर रहा है । यह क्या बात है ? यह दृश्य आपके लिए योग्य हो न हो देखने के लिए राजमहल के उपरी मंजिल की खिड़की खोलकर नगर की ओर देखा। छः वर्ण बुद्ध रश्मि से दिप्तिमान होकर शरीरालोक से नगर को शोभा देते हुए भिक्षाटन करने वाले बुद्ध को देखकर बहुत प्रसन्न हो गया ।

प्रसन्न होकर आमन्त्रित किया । अहो ! सिद्धार्थ उस दिन मध्य रात्रि में मेरे जैसे पक्षपात स्त्री और पुत्र राहुल को छोड़कर चले गये । ऐसा आश्चर्य करने के लिए है । क्या इस तरह स्त्री से प्रार्थना करके गये ? क्या इतना सुन्दर, शान्त परिषद को देखकर चले गये ? कपिलवस्तु राज्य और राजश्री छोड़कर जो आप गये वह बहुत अच्छा है ? राजश्री छोड़कर आप भिक्षु बनकर अति उत्तम एक जिन्दगी प्राप्त किया वह भी अच्छा है । जो आपने प्राप्त किया वह आप के लिए अति उत्तम है, जो आप पहले राज्य श्री सुख भोगा उससे हजारों गुना यह भिक्षाटन राज्य मेरे लिए भी अच्छा है । ऐसा कहकर आठ गाथाओं से बुद्ध के केश से लेकर नाखून तक शरीर का वर्णन किया। अपने ससुर के पास जाकर बुद्ध का नगर में भिक्षाटन करने की सूचना दी।

राजाशुद्धोदन बुद्ध के सामने आकर बात करना

यशोधरा की बात को सुनकर राजा शुद्धोदन के मन में खलबली मच गयी । राजा शुद्धोदन अपना राजशाही वस्त्र पहनते हुए दौड़कर बुद्ध के सामने आये और पूछा भाग्यवत आप भिक्षाटन में क्यों जा रहे हैं ? आप के साथ कितने भिक्षु हैं ? सबके लिए महल से भोजन ले सकते हैं । हमारे वंश का क्यों अपमान कर रहे हैं ? भाग्यवत हम लोगों का वंश महासम्मत है हमारे यहाँ कोई भी भिक्षाटन से जीवन यापन नहीं किया ।

बुद्ध ने कहा महाराज जो आप बता रहे है वह आप का वंश है । हमारा वंश तो दिपांकर, कोण्डिन्य आदि बुद्ध वंश है । हमारे पहले भी बहुत-सा बुद्ध भिक्षाटन करके जीवन बिताया है । ऐसा कहकर बुद्ध ने कपितवस्तु में राजा को धर्म देशना किया । राजा को कहा उठिये, प्रमाद नहीं करना, सुचरित धर्म इस लोक और परलोक में भी सुख प्राप्त करता है। इस धर्म कथा को सुनते ही राजा शुद्धोदन सोवान (स्रोतापन्न) हो गये।

(अंक 119)

राजा शुद्धोदन का सकृदागामी और महाप्रजावती गौतमी का सोवान होना

धर्म देशना के बाद राजा शुद्धोदन स्वयं बुद्ध का भिक्षापात्र अपने हाथ में लिया और लेकर बुद्ध प्रमुख बीस हजार अर्हत् भिक्षुओं को राजमहल

में ले जाकर संघदान करवाया । संघदान के पश्चात् बुद्ध ने राजा शुद्धोदन और महाप्रजापती गौतमी को अनुमोदना धर्म देशना किया ।

धर्मदेशना

सुचरित धर्म का अभ्यास करना चाहिए । दुश्चरित से अलग होना चाहिए । ऐसे कार्यों को नहीं करना चाहिए । इस तरह धर्मचारी व्यक्ति इस दुनियाँ में और मरने के बाद भी दूसरी दुनियाँ में सुख से समय बिताता है । यह धर्मदेशना सुनकर राजा शुद्धोदन सकृदागामी और महाप्रजावती गौतमी सोवान (स्रोतापन्न) हो गये । (अंक 120)

नृत्यांगनाओ द्वारा बुद्ध की वन्दना

बोधिसत्व सिद्धार्थ का मन बहलाने के लिए उस समय राजमहल में बहुत-सी नृत्यांगनाये थीं । राजा शुद्धोदन ने सभी नृत्यांगनाओं से कहा सिद्धार्थ कुमार बुद्धत्व प्राप्त करके राजमहल में पधारे हैं जाकर सभी लोग वन्दना करो । यशोधरा को भी जाकर वन्दना करने के लिए कहा । यशोधरा देवी ने कहा राजकुमार सिद्धार्थ उसी समय से ही दृढ़ चित्त वाले थे । महल छोड़ने के पहले हम लोगों के बीच में जो बातचित हुआ उसके अनुसार एक भार्या के नाते अपना स्वामी अपने पास नहीं होने से भी हमने भार्या का धर्म निर्वाह किया । यदि यह बात सत्य हो तो बुद्ध स्वयं मेरे पास अवश्य आयेंगे । राजा शुद्धोदन यशोधरा की बात बुद्ध तक पहुँचा दिया । यह समाचार बुद्ध को मिला ।

बुद्ध ने सोचा संसार में अनेक बार पारमी पूरा करने के लिए उसने (यशोधरा) मेरा भरपूर मदद की है । अपने पिता राजा शुद्धोदन के हाथ में पात्र दिया और देने के बाद कहा आप पहले जाइए । बुद्ध सारिपुत्र और मौद्गल्यायन के साथ महल में यशोधरा के कक्ष तक चले गये । बुद्ध जाते समय सारिपुत्र और मौद्गल्यायन दोनों को आमंत्रित करते हुए कहा— यशोधरा अभी क्लेश सहित है, हमें प्यार करती है । इसलिए सभी क्लेश नष्ट करने तक यशोधरा के चरित्र के अनुसार उसे खुश करना अपना कर्तव्य है । यदि मुझसे मिलने के बाद यशोधरा को अपने मन से रोने नहीं दिया तो शोक से उसका प्राण भी निकल जायेगा । मौका मिलने से यशोधरा भी

बुद्ध शासन में प्रव्रज्या लेकर अवश्य निर्वाण प्राप्त करेगी । इसलिए शोक समाप्त होने तक उसको रोने दीजिये और उसे रोने से मत रोकिये ।

बुद्ध के लिये यशोधरा देवी का गौरव आदर

बुद्ध सारिपुत्र और मौद्गल्यायन के साथ राजमहल में यशोधरा के कक्ष में जाने की खबर सुनकर यशोधरा भी कशायवस्त्र (पीलावस्त्र) पहनकर आने का इंतजार कर रही थी । बुद्ध सारिपुत्र और मौद्गल्यायन के साथ पधार कर आसन में विराजमान हो गये । यशोधरा दृढ़ प्रेम को छिपा न सकी। बुद्ध का दोनों श्रीपाद पकड़कर रोना शुरू कर दिया । जब कोई पुत्री अपने पिता जी का पैर पकड़ते समय जैसे रोती है ऐसा ही सोचकर बुद्ध भी करुणा गुण से युक्त निःशब्दता का पालन किया । कुछ देर तक रोने के बाद यशोधरा प्रकृति स्वभाव में आ गयी । राजा शुद्धोदन के सामने ऐसा करने से लज्जा व भय दिखा कर बुद्ध के सामने से हट गयी ।

राजा शुद्धोदन ने सोचा यशोधरा के कारण बुद्ध का कुछ अनादर हुआ है । राजा शुद्धोदन ने कहा भाग्यवत यशोधरा को क्षमा कीजिए और इतना कह कर यशोधरा के गुण का वर्णन किया ।

भाग्यवत हमारी पुत्री यशोधरा आपको कशायवस्त्र पहनने की बात सुनकर वह भी कशाय वस्त्र पहनना शुरू कर दिया । यशोधरा रानी का अलंकार, वर्ण वस्त्र त्याग दिया । जब उसको यह पता चला कि आप केवल दिन में एक बार भोजन लेते हैं, तो यशोधरा भी एक दिन में एक बार ही भोजन करती थी । उसको पता चला आप महा आसन त्याग दिया है तो उसने भी उच्च शयनासान छोड़ दिया है । आप पुष्प, सुगन्ध और विलेपन को छोड़ने की खबर मिलने से यशोधरा भी सब कुछ छोड़ दिया। शाक्य कुल के बराबर उम्र वाले राजकुमार यशोधरा से विवाह करने की बात का प्रस्ताव कई बार भेजा लेकिन यशोधरा ऐसे किसी के बातों में कोई दिलचस्पी नहीं लिया । बुद्ध यह बात सुनने के बाद **चन्द किन्नर** जातक कहानी सुनाया। (अंक 121)

यशोधरा ने प्रव्रज्या होने के लिए आयाचना किया

शुद्धोदन द्वारा किया हुआ गुण घोष के बाद सभी लोग सन्तुष्ट होकर

साधुकार किया । यशोधरा भी नि:शोक सन्तुष्ट होकर खुशी जाहिर किया । उसी समय यशोधरा देवी ने कहा मैं भी बुद्ध शासन में भिक्षुणी होना चाहती हूँ । बुद्ध ने कहा भिक्षुणी शासन में सबसे पहले यशोधरा को लेना उचित नहीं है । भविष्य में महाप्रजावती गौतमी को ही वह स्थान मिलना चाहिए। ऐसा कह कर बुद्ध ने यशोधरा देवी के प्रार्थना को इंकार किया । राजा शुद्धोदन ने देवी यशोधरा को पूर्ण रूप से समझा दिया ।

उसके बाद बुद्ध निग्रोधाराम में चले गये ।

परिच्छेद - 30

राजमहल में भोजन ग्रहण करना

नन्द कुमार का प्रव्रज्या बुद्धत्व के दूसरे वर्ष में

दूसरे दिन शाक्य परम्परा के अनुसार नन्द कुमार का राज्याभिषेक, गृह प्रवेश और विवाह का दिन तीन उत्सव था । उस दिन बुद्ध नन्द कुमार के महल में जाकर भोजन दान किया । भोजन दान के बाद मंगल धर्म देशना किया । (अंक 122)

बुद्ध अपना भिक्षापात्र नन्द कुमार के हाथ में दे दिया और देने के बाद बुद्ध निग्रोधाराम के लिये पधारे । नन्द बुद्ध का सम्मान करने के कारण भिक्षापात्र लेकर बुद्ध के पीछे-पीछे चले गये । नन्द कुमार ने सोचा बुद्ध अपना भिक्षापात्र अभी ले लेगे ऐसा सोचते-सोचते नि:शब्द होकर बुद्ध के पीछे-पीछे चले गये । जो नन्द कुमार के साथ विवाह होना था उस राजकन्या का नाम जनपद कल्याणी थी । नन्द कुमार भिक्षापात्र लेकर बुद्ध के पीछे-पीछे जाने का दृश्य को जनपद कल्याणी ने देखा-कहा स्वामीपुत्र जाकर जल्दी आ जाना । यह बात कुमार के दिल में बहुत गहराई तक पहुँच गया। लेकिन भिक्षापात्र वापस लेने के लिये बुद्ध को बोलने की हिम्मत नन्द कुमार को नहीं होने के कारण बुद्ध के साथ-साथ निग्रोधाराम में चले गये । बुद्ध ने नन्द कुमार से पूछा तुम भिक्षुत्व लेना चाहते हो लेकिन नन्द कुमार जनपद कल्याणी को बहुत प्यार करते थे और साथ ही साथ बुद्ध के प्रति अति गौरवान्वित होने के कारण भिक्षु बनने की बात स्वीकार किया । उसके बाद बुद्ध नन्द कुमार को प्रव्रज्या किये । बुद्ध कपिलवस्तु के राजधानी में जाकर तीसरे दिन नन्द कुमार का प्रव्रज्या किया । यह घटना बुद्धत्व के बाद दूसरे वर्ष में वैशाख पूर्णिमा के महीने में हुआ ।

राहुल कुमार का प्रव्रज्या बुद्धत्व के दूसरे वर्ष वैशाख पूर्णिमा के बाद

बुद्ध कपिलवस्तु की राजधानी में जाकर सातवें दिन भिक्षु महासंध के साथ राजमहल में जाकर भोजन दान किया । यशोधरा देवी सात वर्ष के

राहुल कुमार को राजकुमार की तरह सजाकर बुद्ध के सामने ले जाकर कहा पुत्र बीस हजार श्रावक लोगों के बीच में सोने के रंग जैसे दिप्तिमान महापुरुष तुम्हारे पिताजी है । (अंक 123)

इतना कहने के बाद बुद्ध के पूरे शरीर का वर्णन नौ गाथाओं से किया। जिसे नरसिंह गाथा कहते है जो इस प्रकार है—

1. जिनके चरण रक्त वर्ण से अलंकृत है, जिनकी एड़ी लम्बा और सुन्दर है । जिनके चरण चर्वर तथा छत्र जैसे सुशोभित हैं वे जो नरो में सिंह है, ये ही तेरे पिता हैं ।

2. ये जो सुकुमार शाक्य कुमार है । जो सुन्दर बत्तीस महापुरुष लक्षण से युक्त जिन्होंने लोक कल्याण के लिए गृहत्याग किया है । ये महापुरुष तुम्हारे पिताजी हैं ।

3. जिनका मुख पूर्ण चन्द्रमा के समान प्रकाशित है, देवताओं और मनुष्य लोगों का चित्त आकर्षित करने वाले । जो मस्त हाथी की तरह चले जा रहे है । ये ही महापुरुष तुम्हारे पिताजी हैं ।

4. क्षत्रिय कुल में पैदा होकर जिनके चरणों की देवता और मनुष्य लोग पूजा करते हैं । जिनका चित्त शील समाधि गुण से परिपूर्ण है । जो नरो में सिंह है । ये महापुरुष तुम्हारे पिताजी हैं ।

5. लम्बा-ऊँचा सुन्दर ढंग से बना हुआ नासिक से युक्त, बछड़ा के आँख जैसे नीलरंग के दोनों आँखों से युक्त, जिनकी भौंये इन्द्रधनुष के समान है । जो नरो में सिंह है, ये ही तेरे पिताजी हैं ।

6. जिनकी गर्दन गोलाकार है, जिनकी टोढ़ी मृगराज के समान है जिनका वर्ण सुवर्ण के समान आकर्षण है । ये जो नरो में सिंह है, वही तुम्हारे पिताजी हैं ।

7. जिनकी वाणी मधुर, गम्भीर व सुन्दर है । जिनकी जिह्वा (जीभ) सिन्दुर के समान रक्त वर्ण है । जिनकी मुख में स्वेत वर्ण के चालीस दाँत है, ये जो नरों में सिंह है तेरे पिताजी हैं ।

8. नीलरंग जैसे चमकने वाला केस से युक्त कंचन के समान दीप्ति ललाट है । जिनका शरीर औषधितारे के समान शुभ वर्ण है, ये जो नरों में सिंह है, ये ही तेरे पिताजी हैं ।

9. जो तारागणों से घिरे चन्द्रमा के समान बढ़े चले जा रहे हैं । भिक्षुओं से उसी प्रकार घिरे हैं, जैसे चन्द्रमा तारों से । ये तो अपने श्रावकों से घिरे श्रमणेन्द्र है । ये जो नरों में सिंह है, ये ही तेरे पिताजी हैं ।

इतना कहने के पश्चात् बोली जाओ तुम अपने पिताजी से अपना उत्तराधिकार माँगो । राहुल कुमार भी प्रसन्न होकर बुद्ध के पास जाकर कहा आपकी छाया हमको बहुत अच्छा लगता है । जिस प्रकार से एक छोटा बच्चा अपने माता-पिता के साथ कैसे प्यार की बात करता है ? उसी तरह राहुल बात करते-करते बुद्ध के पास रह गया । बुद्ध भोजन दान के बाद महल छोड़कर चलने लगे तो राहुल ने फिर कहा पिताजी हमारा उत्तराधिकार दीजिए । ऐसे कहते-कहते राहुल बुद्ध के पीछे-पीछे आने का दृश्य बुद्ध ने देखा लेकिन बुद्ध ने उसको मना नहीं किया । दृश्य देखने वाले भी राहुल कुमार का जाना नहीं रोका । राहुल बुद्ध के पीछे-पीछे बिहार तक चला गया। बुद्ध ने कहा मैं गया में बोधिवृक्ष के नीचे प्राप्त किया हुआ सप्तविद आर्य वस्तु राहुल को दूँगा । लोकोत्तर सम्पत्ति इसके हिस्से के हिसाब से दूँगा । अर्हत सारिपुत्र को बुलाकर कहा राहुल कुमार को प्रव्रज्या दो ।

सारिपुत्र अर्हत ने पूछा राहुल कुमार को प्रव्रज्या करने का तीरका क्या है ? बुद्ध ने कहा त्रिसरणागत श्रामणेर प्रव्रज्या दीजिए । (अंक 124)

उसके बाद सारिपुत्र अर्हत ने राहुल का केश मुण्डन कराकर कशायवस्त्र पहनवा कर तिसरण सरणागत करवाया । महाकाश्यप अर्हत राहुल श्रामणेर को आचार्य हो गये और सारिपुत्र अर्हत् उपाध्याय हो गये । राहुल कुमार की प्रव्रज्या का खबर राजा शुद्धोदन को मिला । राजा शुद्धोदन यह समाचार सुनकर बहुत दुखी हुए। बुद्ध के पास जाकर कहा भाग्यवत बगैर माता-पिता से अनुमति लिये किसी को भी भिक्षु मत बनाइए । भाग्यवत पुत्र-पुत्री का प्रेम पूरा मन और शरीर से जुड़ा हुआ है । वह प्रेम चमड़ा, मांस, नस, हड्डी, मज्जा तक असहनीय पीड़ा उत्पन्न करता है जो आप महल छोड़कर चले गये उसी दिन हमारा क्या हालत हुआ हमारा अलावा कोई भी बता नहीं सकता है । आप सभी क्लेश दूर किया हुआ सर्वज्ञ बुद्ध है। हम लोग क्लेश भरित पृथक्जन है । इसलिए पुत्र वियोग हमलोगों से सहन नहीं होता है । आपसे मैं हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ कि किसी भी बालक को उसके माता-पिता के पूर्ण अनुमति के वगैर प्रव्रज्या नहीं करना । बुद्ध

अपने पिताजी शुद्धोदन महाराज की बात स्वीकार किया है । उसी दिन से अब तक बुद्ध शासन में माता और पिताजी के अनुमति के वगैर बुद्ध शासन में प्रव्रज्या नहीं होता है । बिना अनुमति यदि मैं प्रव्रज्या किया होगा तो महापाप होगा । इसका एक शिक्षापद निर्धारित कीजिए । बुद्ध भी राजा शुद्धोदन की बात को मान लिए । बुद्ध राजाशुद्धोदन को धर्मदेशना करने के बाद दान पुण्य करने के लिए अनुशासना कर राजा शुद्धोदन का उत्साह बढ़ाया । बुद्ध को छोड़कर राजा अपने महल में वापस आने के पश्चात बुद्ध महासंघ को आमंत्रित किये और बुलाकर एक शिक्षा पद निर्धारित किया। भिक्षुओं बुद्ध शासन में माताजी और पिताजी की अनुमति नहीं मिलने से किसी व्यक्ति को प्रव्रज्या नहीं करना चाहिए ।

महाधर्मपाल जातक देशना और राजा शुद्धोदन का अनागामी होना

बुद्ध दूसरे दिन सुबह कपिलवस्तु के राजमहल में पधारे । भोजन दान के बाद राजा शुद्धोदन बुद्ध के पास गये और जाकर कहे भाग्यवत आप के दुष्कर क्रिया के समय एक दिन एक देवता हमारे पास आकर कहा महाराज आपके पुत्र का देहांत हो गया । हमने देवता से कहा हमारा पुत्र बगैर बुद्धत्व प्राप्त किये उसका देहान्त नहीं होने वाला है ।

बुद्ध ने कहा महाराज अब आप ऐसे बातों को विश्वास कैसे करेंगे ? पूर्वजन्म में ही हमारे मरने की खबर लेकर एक व्यक्ति मेरे कुछ हड्डी के टुकड़ों को साथ लेकर आपके पास आया और आकर कहा आपके पुत्र का देहान्त हो गया है । हड्डी दिखाने के बाद भी आप उसकी बातों का विश्वास नहीं किया। पूर्व जन्म के उसी कहानी को दर्शाने के लिए बुद्ध ने महाधर्मपाल जातक का धर्मदेशना किया । धर्म देशना के अन्त में राजा शुद्धोदन अनागामी हो गया । (अंक 125)

यशोधरा का शोक एवम् प्रव्रज्या लेने की अनुमति माँगा

बुद्ध द्वारा राजकुमार राहुल को प्रव्रज्या करने की खबर सुनने के बाद देवी यशोधरा दु:ख से कम्पित हो गयी ।

देवी यशोधरा ने कहा मेरे पुत्र को बिना मेरे अनुमति के भिक्षु बनाने के कारण मुझे दु:ख हुआ है । हमारे दु:ख निवारण के लिए अब हमें भी भिक्षुणी बनने के सिवाय और कोई रास्ता नहीं है ।

यह खबर सुनकर राजा शुद्धोदन यशोधरा के पास जाकर उन्हें सांत्वना देने के लिए पूर्व जन्म की एक कहानी सुनाया । राजा ने कहा—यशोधरा उस समय जो बोधिसत्व ने वेश्वन्तर जातक कहानी में आपने बच्चों कुमार जालीय और कुमारी कृष्णजिना को जूजक ब्राह्मण के माँगने से तुरन्त दान दे दिया है और उस दिन को तुम सहन किया है । दान पारमिता पूरा करने के लिए अनन्त जाति में और बच्चों को मॉगने के लिए कौन आया ? उस घटना की कहानी के अनुसार यदि बच्चों को बाँध कर देने वाले रस्सी के बारे में पता चल गया तो वह कैलाश पर्वत से भी ऊँचा होगा । लेकिन तुम कभी भी उस समय शोक सन्ताप नहीं किया । अभी तो तुम्हारा स्वामी बुद्ध हो गया है और अब बुद्ध के सामने सभी लोकवासी अपने पुत्र-पुत्री के समान है । अपने पुत्र को भिक्षु बनाने में क्या दोष है । राहुल को भिक्षु बनाने की बात सुनकर हमने भी बुद्ध के पास जाकर धर्म देशना सुना । और धर्म देशना सुनने के बाद हमारे मन में आया यदि हमारा और कोई पुत्र होता तो उसको भी हम बुद्ध के शासन में प्रव्रज्या करवाते । पूर्व जन्म में बहुत से पुत्रों को दान दिया है । अपने एक ही पुत्र को निवार्ण प्राप्त करने के लिए भिक्षु बनने पर शोक करना अच्छा नहीं है । वह भी विशेष रूप से तुम्हें शोभा नहीं देता है । तुम्हारे पुत्र के लिए जो बुद्ध ने किया बहुत अच्छा किया । भिक्षु बनकर राहुल चन्द्रमा के पीछे चलने वाले नक्षत्र तारों को देखने पर कितना खुशी मिलती है । यदि तुम भिक्षुणी बन गयी तो लोग कहेंगे कि यशोधरा श्रद्धा से भिक्षुणी नहीं बनी । बल्कि पुत्र नहीं होने के कारण उसी शोक से भिक्षुणी बन गयी और दुनिया के लोग तुमको दूसरी नजर से देखेंगे । इसलिए तुम अभि भिक्षुणी मत बनों । ऐसा कहकर राजा शुद्धोदन ने यशोधरा को भिक्षुणी बनने से रोक दिया ।

बुद्ध भिक्षुमहासंघ के साथ कपिलवस्तु से निकल पड़े—

बुद्ध कपिलवस्तु से निकल कर मल्ल राज्य में विचरण करते थे । अनोमा नदी के किनारे अनुप्रिय नामक गाँव में जाकर उसी जगह पर एक आम्रवन में विचरण करते थे ।

भद्दीय आदि शाक्य राजकुमारों का प्रव्रज्या

राजा शुद्धोदन के मार्ग दर्शन से बहुत से शाक्य राजकुमार भिक्षु बन गये । लेकिन भद्दिय, अनुरुद्ध, आनन्द, भृगु, किम्बिल और देवदत्त छ:

राजकुमारो का प्रव्रज्या नहीं होने के कारण राजा शुद्धोदन ने सोचा कि क्या यह छ: लोग शाक्य कुल में बुद्ध के खानदान का नहीं होने के कारण भिक्षु नहीं बना । उसके बाद छ: राजकुमार एक सप्ताह पूरा राजश्री सुख भोगने के बाद आठवें दिन उपाली नाई के साथ बहुत से लोगों को लेकर कपिलवस्तु से निकल पड़े । शाक्य कोलिय जनपद पार करने के बाद अपने साथ आये हुए बाकि लोगों को वापस भेजकर छवों राजकुमार और उपाली नाई सात लोग आम के बगीचे में जाकर सुप्रिय वाणी से बुद्ध को नमन करके प्रव्रज्या के लिए प्रर्थना कर बुद्ध के शासन में भिक्षु बन गये ।

परिच्छेद - 31

वैशाली नगर का तीन भय

(दूसरा और तीसरा वर्षावास राजगृह के वेणूवनाराम में)

बुद्ध का राजगृह व वैशाली में पधारना

बुद्ध थोड़े समय के लिए अनुप्रिय आम के बगिचे से निकलकर राजगृह में पधारे । उस समय वैशाली में रोग, अमनुष्य तथा दुर्भिक्ष तीनों कारणों से वैशाली की जनता बहुत बड़ा उपद्रव से पिड़ित हो गयी थी । वैशाली के राजा महाली बुद्ध के बारे में सुनकर अपने पुरोहित एवम् पुत्र को राजगृह में भेजकर बुद्ध को वैशाली में पधारने के लिए आमंत्रित किया । महाली लिच्छवी राजा का आमंत्रण व प्रार्थना स्वीकार कर बुद्ध महासंघ के साथ विशाल शोभायात्रा के रुप में वैशाली शहर में पधारे और वहाँ रतन सूत्र का देशना किया । रतन सुत्र की देशना के पश्चात् वैशाली नगर में रोग, अमनुष्य तथा दुर्भिक्ष तीनों भय धीरे-धीरे समाप्त हो गया । यह घटना जेठ के महीने में हुआ है ।

बुद्ध पन्द्रह दिन तक वैशाली में समय व्यतित करने के पश्चात् वापस राजगृह में लौट गये । वैशाली से राजगृह वापस लौटते ही दूसरा वर्षावास का समय आ गया । बुद्ध राजगृह में पधारकर अपना दूसरा वर्षावास राजगृह के वेणूवनाराम में बिताया ।

सुमन मालाकार (फूल बेचने वाला)

सुमन नामक फूल बेचने वाला एक व्यापारी राजा के लिए भी फूल देने का कार्य करता था । एक दिन बिना परवाह किये जो माला राजा को देने के लिए ले जा रहा था उसी माला में से कुछ माला निकाल कर बुद्ध की पूजा किया । सुमन मालाकार द्वारा निर्भय पूर्वक किया यह श्रद्धा का कार्य राजा विम्बिसार सुनकर बहुत प्रसन्न हो गये । राजा विम्बिसार प्रसन्न होकर हाथी, घोड़ा और आठ स्त्री के साथ बहुत-सा द्रव्य और एक गाँव को उपहार में सुमन मालाकार को दे दिया ।

सुमन मालाकार के पूजा के कारण महा प्रातिहार्य हुआ । यह सब देखने के बाद, भिक्षु आनन्द ने बुद्ध से पूछा—इतना सम्पत्ति प्राप्त करने के बाद

सुमन मालाकार का भविष्य क्या होगा ? बुद्ध ने कहा इस संसार में दिव्य मनुष्य सुख प्राप्त करेगा । भविष्य में सुमन मालाकार पच्छेक बुद्ध के नाम से बुद्धत्व प्राप्त करेगा ।

सांय के समय सभी भिक्षु धर्म सभा मण्डप में एकत्रित हुए और एकत्रित होने के बाद सुमनमालाकार की कहानी चर्चा में आया । बुद्ध ने सुमन मालाकार के पुण्य कर्मों को लेकर भिक्षुओं को धर्म देशना किया ।

धर्मदेशना

क्षिुक्षुओं कुछ कर्म करने के बाद सत्व व्यक्ति पश्चाताप तक नहीं करता है । पुण्य कर्म करने के पश्चात् उसको हँसी-खुशी मिलता है । वैसा कर्म करना सुख फलदायक होता है ।

इस देशना के बाद अस्सी हजार व्यक्ति त्रिशरण-शरणागत हो गये है । (अंक 126)

वर्षावास पूरा करने के बाद बुद्ध चेतिय देश में पधारे । वहाँ जाकर प्राचीन वंश मृगदाय में लोगों को त्रिशरण ग्रहण कराकर स्वर्ग निर्वाण के बारे में देशना करने के बाद भेषकलां जंगल में चले गये । भेषकलां जगंल से फिर राजगृह को चले गये ।

पुन्न का प्रव्रज्या

उस समय अञ्ञा, कोण्डिन्य अर्हत् कपिलवस्तु में जाकर दोनों वत्थू गाँव में अपना साला मन्तानी पुत्र को भिक्षु बनाकर पुन्न नाम दिया । पुन्न भिक्षु कोण्डिन्य अर्हत् के साथ कपिलवस्तु में आया और ध्यान करके अर्हत् हो गया । इन दोनों के सामने कपिलवस्तु के पाँच सौ कुल पुत्र भिक्षु बन गये । पुन्न भिक्षु पाँच सो नवयुवक भिक्षुओं के लिए दस कथा वस्तु से धर्म देशना किया । (अंक 127)

पुन्न अर्हत् के आदेशानुसार पाँच सौ नवयुवक भिक्षु बुद्ध का दर्शन के लिए राजगृह को चले गये । सामने आने से बुद्ध ने पूछा आप लोग कहाँ से आये है ? भिक्षुओं ने उत्तर दिया—जात (जन्म) भूमि से आ रहा हुँ । बुद्ध ने पूछा—जात भूमि (जन्म भूमि कपिलवस्तु) में दस वस्तु से कौन-कौन लाभान्वित हो रहे है । नवयुवक भिक्षुओं ने बोला मन्तानी पुत्र पुन्न भिक्षु को देखने के लिए सारिपुत्र अरहत बहुत उत्सुकता दिखाया ।

तीसरा वर्षावास राजगृह के वेणूवनराराम में

बुद्ध तीसरा वर्षा वास भी राजगृह के वेणूवनाराम में बिताया । उस समय राजगृह वेणूवनाराम से थोड़ी दूर पर एक जम्बूक आजिवक नामक व्यक्ति था । जम्बूक आजिवक का भोजन सिर्फ मनुष्य का मल (विष्टा) था। बुद्ध जम्बूक आजिवक को मनुष्य का विष्टा खाने के आदिनव के बारे में देशना किया । बुद्ध की देशना के बाद जम्बूक आजिवक भिक्षु बन गया। धर्म श्रवण करके धर्म का अनुसरण करने से अर्हत् हो गया और जम्बूक आजिवक ऐही भिक्षु भाव से प्रव्रज्जित हो गया ।

जम्बूक आजिवक का समागम

अंग मगध दोनों राज्यों में जम्बूक-आजिवक के बहुत अनुयायी थे । जिस समय जम्बूक-आजिवक की मुलाकात बुद्ध से हुआ अंग-मगध में जम्बूक-आजिवक को मानने वाले बहुत से अनुयायी एकत्रित हुए । बुद्ध और जम्बूक-आजिवक को देखने के पश्चात् लोगों के मन में आया इन दोनों में कौन श्रेष्ठ है । बुद्ध को दिव्य ज्ञान से पता चला कि लोगों के मन में क्या है तब बुद्ध ने जम्बूक आजिवक से कहा लोगों की शंका दूर करो । जम्बूक-आजिवक बुद्ध के श्रीपाद के सामने लेटकर उनका स्पर्श किया और शिष्य भाव प्रकट किया । इस दृश्य को देखने के बाद वहाँ एकत्रित लोग बुद्ध के प्रति बहुत संवेदनशील हो गये । इस घटना को लेकर बुद्ध ने धर्म देशना किया कि बगैर भोजन-पानी के यदि तपस्या करता है तो वह तपस्या एक निष्फल कार्य है ।

सधर्म को सही ढंग से न जानने वाला व्यक्ति माह में एक बार तृण का पत्ता के आखिरी हिस्से के समान थोड़ा भोजन करने से चतुरार्य सत्य अवबोध किया हुआ आर्य श्रावक व्यस्तियों का सोलह कल्प तक नहीं जानता है ।

अनाथपिण्डिक सेठ बुद्ध का दर्शन करने जा रहा था । उस समय राजगृह का सबसे बड़ा सेठ का लेन-देन करने वाला व्यक्ति श्रावस्ती का सुदत्त नामक एक सेठ था, जो किसी कार्य से श्रावस्ती से राजगृह गया हुआ था । उस दिन अपने मित्र के घर जाकर देखा सभी लोग काफी व्यस्त है और घर का वातावरण बहुत शान्त है । राजगृह का सेठ अपने कर्मचारियों को क्या-क्या करना है ? निर्देश देते हुए व्यस्त थे । सुदत्त सेठ ने सोचा हमारे मित्र के घर पर किसी लड़का या लड़की की शादी की तैयारी है,

नहीं तो कोई महापुण्य उत्सव होने जा रहा है अथवा राजा विम्बिसार को भोजन पर आमंत्रित किया होगा ।

सभी कर्मचारियों को कार्य समझाने के बाद राजगृह का सेठ आकर अपने मित्र सुदत्त का अभिवादन करके बातचित शुरू किया । सुदत्त सेठ ने कहा मैं इतने दिनों से इधर आ रहा हूँ लेकिन हमने ऐसा कभी नहीं देखा इसका कारण है ? राजगृह के सेठ ने कहा बुद्ध प्रमुख महासंघ को कल संघदान के लिए मैं आमंत्रित किया हूँ । बुद्ध शब्द सुनते ही सुदत्त सेठ आश्चर्य चकित होकर पूछाँ क्या आपने बुद्ध का नाम लिया है इसी बात को पहली बार, दूसरी बार और तीसरी बार भी सुदत्त सेठ ने पूछा—राजगृह सेठ का एक ही उत्तर था हाँ बुद्ध सेठ सुदत्त ने कहा बुद्ध शब्द सुनना इतना आसान नहीं है । राजगृह सेठ ने कहा यदि आपको बुद्ध का दर्शन करना है तो अभी उसके लिए उचित समय नहीं है । यदि आपको बुद्ध का दर्शन करना है तो कल सुबह जाना अच्छा होगा । सुदत्त सेठ सोचा कल सुबह बुद्ध का दर्शन अवश्य होगा ऐसा सोचकर रात्रि को सोने चला गया । नीद में इतना खुश हुआ कि अब सुबह होने वाला है समझकर रात्रि में दो बार नींद से जग गये लेकिन तीसरी बार जागने के बाद सुदत्त सेठ बुद्ध का दर्शन के लिए राजगृह होते हुए सीबक नामक एक छोटा जंगल में पहुँच गया । सीवक बन में पहुँचते ही जो आलोक था वह अंधकार में परिवर्तित हो गया । यह आश्चर्य देखने के बाद सेठ घबरा गया और उससे आगे न जाकर वापस लौटने के लिए सोचा रहा था कि तुरन्त एक लाख हाथी, एक लाख घोड़ा से युक्त लोगों से अधिक मुल्यवान हाथी रथ और अश्व रथ करोड़ों मूल्य के सोने का अलंकरण पहनकर कन्या देखने जाने से अच्छा है बुद्ध महापुरुष को देखना । ऐसे शब्द सुदत्त सेठ को सुनायी दिया । (अंक 130)

इसके बाद सुदत्त सेठ को सुनायी दिया सेठजी आगे बढ़ो वापस जाने से कोई लाभ नहीं मिलेगा । ऐसे शब्द सुनते ही अंधकार दूर हो गया और सुदत्त सेठ के मन का भय दूर हो गया ।

फिर से अंधकार हो गया सेठ ने सोचा वापस जायेंगे लेकिन फिर वहीं शब्द सुनाई दिया और आगे बढ़ने का आदेश दिया पुनः अंधकार दूर हो गया । उसी के साथ भय भी दूर हो गया और सेठ आगे बढ़ा ।

तीसरी बार फिर अंधकार हो गया, इस बार भी सेठ ने सोचा वापस जाने को लेकिन फिर वही शब्द सुनायी दिया आगे बढ़ो पुनः अंधकार दूर

हो गया । सुबह होते ही सुदत्त सेठ सीत वन में पहुँच गये । दैनिक क्रिया के अनुसार बुद्ध, सुबह चंक्रमण कर रहे थे और दूर से आते सेठ को देखा। बुद्ध चंक्रमण समाप्त कर अपने आसन में विराजमान हो गये और विराजमान होकर सुदत्त सेठ के आते ही बुद्ध ने आमंत्रित किया सुदत्त इधर आना । नाम से पुकार कर सेठ को बुलाने के कारण सुदत्त सेठ बहुत प्रसन्न हुआ और बुद्ध के पास जाकर उनका चरण स्पर्श किया ।

बुद्ध अनाथपिण्डिक (सुदत्त सेठ) को धर्मदेशना करने के बाद अनाथपिण्डिक का सोवान होना

क्लेश दूर किया हुआ, पाप से मुक्ति पाया हुआ, काम-चित्त में लिप्त नहीं होने के कारण शान्त है । कोई भी गलत उपक्लेश चित्त में नहीं होने से व्यक्ति सदा शान्ति से सो जाता है । सभी तृष्णा नष्ट किया हो, चित्त का दुख-पीड़ा दूर कर दिया हो, चित्त शान्त, व्यक्ति शान्ति से सो जाता है। (अंक 131)

उस देशना के बाद बुद्ध अनाथपिण्डिक को दान शील आदि अनुक्रम में धर्म देशना किया । यह धर्म देशना सुनने के बाद अनाथपिण्डिक सेठ उसी आसन में ही बैठने से सोवान हो गया । धर्म देशना की शैली के विषय में सुदत्त सेठ बुद्ध की प्रशंसा किया । सुदत्त सेठ (अनाथपिण्डिक) ने बुद्ध से कहा, हमें त्रिशरण शरणागत कराइए । बुद्ध सेठ को त्रिशरण-शरण ग्रहण काराकर उपासक के रूप में स्वीकार किया । अनाथपिण्डिक सेठ दूसरे दिन बुद्ध महासंघ को संघ प्रमुख दान के लिए निमंत्रण दिया। बुद्ध शान्त होकर निमन्त्रण स्वीकार किया । सुदत्व अपने मित्र राजगृह के सेठ के घर जाकर बुद्ध प्रमुख भिक्षुओं को प्रनीत भोजन कराया। संघदान समाप्त होने के पश्चपात् सुदत्त बुद्ध के पास जाकर पुनः बुद्ध बन्दना किया कहा भाग्यवत एक वर्षावास के लिये आप श्रवस्ती में पधारे । बुद्ध ने कहा गृहपति तथागत बुद्ध जन शून्य प्रदेश को पसन्द करते हैं । सेठ ने कहा भाग्यवत आपकी बात हमारे समझ में आ गया है । बुद्ध से वार्तालाप करने से सुदत्त सेठ को बुद्ध के रहन-सहन का व्यवस्था कैसे करना है ? यह बात समझ में आ गया । बुद्ध धर्म कथा से गृहपति सुदत्त सेठ को सन्तुष्ट करके दान-पुन्न कर्म के लिए उत्साहित कर अपने आसन से खड़े हो गये।

श्रावस्ती में आराम की तैयारी करना

अनाथपिण्डिक (सुदत्त) को बहुत से मित्रगण थे । राजगृह से श्रावस्ती

जाते समय जो लोग उससे मिलते थे सबसे कहता बुद्ध इस संसार में पैदा हुए है । मैंने बुद्ध को श्रावस्ती पधारने के लिए निमंत्रित किया है । बुद्ध ने हमारा निमन्त्रण स्वीकार किया है । बुद्ध का आगमन पैदल आगमन है यह कहते हुए राजगृह से श्रावस्ती तक रास्ते को किमती सज्जा से सजवाया। राजगृह से श्रास्वती 45 योजन (540 कि.मी.) मार्ग के बीच में एक योजन (12 कि.मी.) पर बुद्ध और उनके महासंघ को सुख सुविधा के लिए छोटा-छोटा विहार बनवाया । यह सब करते-करते श्रावस्ती पहुँच गया । अनाथ-पिण्डिक सेठ ने सोचा बुद्ध को रहने के लिए कौन-सी जगह तैयार करें। उसने जेतकुमार के उद्यान को उचित स्थान समझ कर जेतकुमार के पास जाकर पूछा आर्य पुत्र अपना उद्यान बुद्ध को ठहरने के लिए एक विहार बनवाने को दे सकता है कि नहीं । जेतकुमार ने कहा कोटि देने से भी हम उस उद्यान को नहीं दे सकता हूँ । बाद में कहा इस जमीन पर सोने का सिक्का बिछा देगा, तब भी मैं यह उद्यान नहीं दे सकता है।

उसके बाद सुदत्व सेठ ने कहा कि यह उद्यान मैं खरीदना चाहता हूँ । राजकुमार के राजपुरोहितो ने कहा आर्य पुत्र आप उद्यान की किमत बताइए । अनाथपिण्डिक ने सोचा जेतकुमार अब उद्यान देने को तैयार है। इसके बाद अनाथपिण्डिक बैलगाड़ी से सोने का सिक्का 18 करोड़ ले आकर जेतकुमार के उद्यान में बिछाया । इतना के बावजूद थोड़ी जमीन के लिए सोना का सिक्का कम हो गया । अनाथपिण्डिक सेठ ने अपने कर्मचारी से कहा बाकि जगह बिछाने के लिए और सोने का सिक्का ले आओ । अनाथपिण्डिक का साहस देखकर जेतकुमार आश्चर्य चकित हो गया । जेतकुमार ने कहा गृहपति (अनाथपिण्डिक) जो आपने बिछाया, वह पर्याप्त है । इस श्रेष्ठ कार्य के लिए बाकि जमीन हम मुफ्त में दे देंगे । राजकुमार की प्रसन्नता देखते हुए अनाथपिण्डिक ने सोचा यह सत्यकार्य बुद्ध शासन की उन्नति के लिए कह कर जेतकुमार की बात पर सहमति प्रकट किये । उसी उद्यान में खाली जमीन में जेतकुमार ने सात महल का एक बहुत विशाल प्रासाद बुद्ध के लिए बनवाया । 18 करोड़ खर्च करके अनाथपिण्डिक सेठ जेतकुमार के जेतवन में बुद्ध के रहने के अनुकूल सर्वांग सम्पन्न एक बिहार बनवाया ।

जेतकुमार का उद्यान होने के कारण और बगैर पैसा कुछ भूखण्ड देने से अनाथपिण्डिक सेठ उस बिहार को जेतवनाराम बिहार का नाम दिया ।

परिच्छेद - 32

नन्द ! अब तुम्हारा इरादा क्या है ?

बुद्ध का श्रावस्ती में आगमन

अनाथपिण्डिक सेठ जेतवन विहार का निर्माण कार्य सुचारू रुप से समाप्त करने के बाद श्रावस्ती आने के लिए बुद्ध को एक संदेश वाहक से निमन्त्रण भेजा । बुद्ध पहले ही अनाथपिण्डिक सेठ का निमन्त्रण स्वीकार कर चुके थे । सन्देश वाहक द्वारा सन्देश मिलने के पश्चात् बुद्ध भिक्षु महासंघ के साथ श्रावस्ती को जाना शुभारम्भ किया । पदयात्रा करने के कारण राजगृह से श्रावस्ती तक जाने में कई सप्ताह गुजर गया । अनाथपिण्डिक सेठ बुद्ध के आगमन का इत्तजार करते हुए जेतवन बिहार में ही थे । बुद्ध श्रावस्ती में पहुँचते ही अनाथपिण्डिक सेठ बुद्ध का श्रीपाद (चरण) स्पर्श करके स्वागत किया । बुद्ध जिस समय श्रावस्ती पहुँचे शाम हो गया था । बुद्ध और भिक्षु महासंघ को रात्रि विश्राम का प्रबन्ध करने के पश्चात् अनाथपिण्डिक प्रणाम करते हुए बुद्ध को भिक्षु महासंघ के साथ अपने निवास स्थान पर संघदान के लिए आने को आमंत्रित किया ।

जेतवन विहार पूजा

दूसरे दिन बुद्ध भिक्षु महासंघ के साथ अनाथपिण्डिक सेठ के घर जाकर भोजन दान ग्रहण किया । प्रनीत व मधुर भोजन से स्वागत करने के बाद अनाथपिण्डिक सेठ बुद्ध के पास जाकर बैठ गये । बुद्ध से पूछा जेतवन बिहार बुद्ध प्रमुख महासंघ का पूजा करना चाहता हूँ, इसका नियम क्या है ? बुद्ध ने कहा गृहपति यदि आपको जेतवन बिहार भिक्षु महासंघ को देना है तो हमारे बुद्ध शासन के नियमानुसार आये हुए, नहीं आये हुए, एवम् चारों दिशाओं के भिक्षुमहासंघ का पूजा करना जरूरी है । बुद्ध की बात सुनकर अनाथपिण्डिक सेठ श्रावस्ती के जेतवनाराम बिहार में आये हुए, नहीं आये हुए एवम् चारो दिशाओं के भिक्षुमहासंघ की पूजा किया । बुद्ध जेतवन बिहार संघाराम पूजा करने का पुण्य के बारे में धर्मदेशना किया ।

जेतवन पूजा के दिन उसका कुल पुत्र, मित्रगण, ब्राह्मण नवयुवक, हेरण्डकाली ग्राम प्रधान, सब्बमित्र ब्राह्मण, राजा कौशल के पुत्र, श्री बड़ड कुल पुत्र, उपवान ब्राह्मण, गौतम ब्राह्मण, उदानी कुल पुत्र जैसे लोग बुद्ध शासन में प्रव्रज्जित हुए । राजा कौशल के पुरोहित ब्राह्मण की पुत्री दान्तिका, एक मित्र ब्राह्मण की पुत्री शकुला और बहुत सी स्त्री समाज भी त्रिशरण-शरणागत होकर बुद्ध शासन में उपासिका भाव ग्रहण किया ।

बुद्ध प्रथमवार श्रावस्ती जेतवन विहार में नौ महिने का समय बिताया । उस समय बहुत नवयुवक कुल पुत्र बुद्ध शासन में प्रव्रज्या ग्रहण किया । धीरे-धीरे उपासक-उपासिका की संख्या बढ़ने लगी । बुद्ध की लोकप्रियता पूरे इलाके में फैलने के बाद जन समूह बुद्ध के दर्शन के लिए आना शुरू कर दिया । इतना सुन्दर, सुरम्य एक बुद्ध बिहार को बनवाकर बुद्ध-धम्म-संघ के प्रति अपार श्रद्धा रखने के कारण सुदत्त सेठ अनाथपिण्डिक के नाम से प्रसिद्ध हो गया । सभी-उपासक-उपासिकाओं में अनाथपिण्डिक सेठ को प्रमुख स्थान मिला । बुद्ध और भिक्षु महासंघ जेतवनाराम में रहते समय दिन में दो बार बुद्ध का दर्शन के लिए जेतवनाराम में अनाथपिण्डिक सेठ जाता था । कभी भी इस चर्या को छोड़ा नहीं ।

अनाथपिण्डिक सेठ ने सोचा बुद्ध सौम्य है इसलिए कोई प्रश्न पूछना उचित नहीं है । कोई प्रश्न पूछने से भी बुद्ध सोच सकता है कि अनाथपिण्डिक सेठ बुद्ध शासन के लिए महाउपकार किया है । इसलिए प्रश्न पूछने से बुद्ध उत्तर अवश्य देगे । लेकिन बुद्ध से अधिक स्नेह होने के कारण अनाथपिण्डिक सेठ कभी भी बुद्ध से कोई भी प्रश्न नही पूछा ।

बुद्ध अपने बुद्धत्व ज्ञान से देखा अनाथपिण्डिक सेठ के मन में क्या है ? प्रश्न नहीं पूछने से भी बुद्ध प्रति दिन अनाथपिण्डिक सेठ को धर्म देशना करते थे ।

अनाथपिण्डिक सेठ का प्रासाद भिक्षुमहासंघ के लिए चौमुहानी का साफ-सुथरा पानी देने वाला कुआँ जैसा हो गया था । अनाथपिण्डिक सेठ के प्रासाद में एक हजार भिक्षुओं को प्रतिदिन भोजन के लिए आसन तैयार था । आहार, भोजन-पानी और दवा जैसी जरूरतमन्द सामान भिक्षु लोग अपने मन से लेकर इस्तेमाल करने का पूरा प्रबन्ध था ।

नन्द भिक्षु

बुद्ध श्रावस्ती में रहने के कई माह पहले कपिलवस्तु में जो नन्द कुमार भिक्षु बने वह अपने विचार से नहीं हुए । बुद्ध के साथ रहते हुए भी नन्दकुमार जनपद कल्याणी के बारे में सोचते ही रहते थे । और भिक्षुत्व छोड़कर जाने का इरादा भिक्षुसंघ को जानकारी दिया । यह सूचना भिक्षु लोग जाकर बुद्ध को बताया । बुद्ध नन्द कुमार को बुलाकर पूछा यह बात सत्य है कि नहीं । नन्द भिक्षु अपनी पूरी कहानी बुद्ध के सामने रखा । बुद्ध नन्द भिक्षु का हाथ पकड़ कर एक स्थान पर चले गये । जाते समय एक सूखे खेत में एक जरा-जिर्ण कमजोर काला सा दुर्वर्ण बन्दरियाँ को देखा उसके पश्चात् बुद्ध तावतिन्स देवलोक का शोभा सम्पन्न पाँच सौ दिव्यांगनाओं को देखने के लिए अपनी प्रातिहार्य से बन्दोबस्त किया । बुद्ध नन्द से पूछा अब तुम्हारा इरादा क्या है ? इन दिव्यांगनाओं से जनपद कल्याणी क्या सुन्दर है ? सबसे सुन्दर कौन है ? नन्द भिक्षु ने कहा भाग्यवत इन दिव्यागनाओं के सामने जनपद कल्याणी कुछ भी नहीं है । आप आते समय हमें एक बन्दरियाँ को दिखाया था हमको जनपद कल्याणी उसी तरह दिखाई देती है । बुद्ध ने कहा नन्द ब्रह्मचर्य युक्त हो जाओ इन दिव्यागनाओं को तुमको देने का वादा करता हूँ ।

नन्द ने कहा भाग्यवत यदि आप ऐसा करने का वादा किजिए तब शील सम्पन्न होकर जिन्दगी व्यतीत करने के लिए प्रयास करूँगा । इस घटना के बाद बुद्ध जेतवनाराम में चले गये । नन्द भिक्षु के पास एक आगन्तुक भिक्षु आये थे इसी भिक्षु ने यह कहानी सुनाया । भिक्षु ने कहा तुम एक कुली है । दिव्यांगनाओं के बारे में आस लगाकर भिक्षुशील का पालन कर रहा है । यह बात कहने के लिए बुद्ध ने आगन्तुक भिक्षु को भेजा था। यह सब बात सुनने के बाद सभी भिक्षु लोग मिलकर नन्द भिक्षु को लज्जित करने के लिए हँसी-मजाक करना शुरू कर दिया । नन्द भिक्षु इस घटना के बाद वीर्य करके भिक्षु जीवन का सभी अनुशासन पूर्ण करने के बाद सभी क्लेश समाप्त करके अर्हत् पद प्राप्त किया ।

दूसरे दिन नन्द भिक्षु बुद्ध के पास जाकर कहा भाग्यवत जो आप ने मेरे लिए दिव्यांगनाए देने की बात किये थे उससे आप मुक्त है । बुद्ध ने कहा नन्द तुम्हारे अर्हत होते ही हमारा वादा स्वत: समाप्त हो गया ।

आर्य मार्ग की लाठी से संसार नामक किचड़ पार किया हुआ चित्त, परम्परा भोगने वाला सभी क्लेशो के नाम से जाना जाने वाला छोटा मार्ग यान की लाठी से नियंत्रण करके सबको साफ कर देता है । वैसे करने से अर्हत फल प्राप्त किया हुआ भिक्षु शुभ आरम्भन के कारण सुख वेदना, अशुभ आरम्भन के कारण उत्पन्न होने वाले दुख वेदना (अष्ट लोक धर्म) चंचल नहीं होता है । (अंक 132)

बुद्ध उसी प्रकार प्रीति वाक्य प्रकट किये । दूसरे दिन कुछ भिक्षु नन्द अर्हत् के पास जाकर कहा आयुष्मत आप भिक्षु जीवन के बारे में कोई दिलचस्पी तो नहीं लिया । पूछा अब कैसे है ? नन्द भिक्षु ने कहा आयुष्मत मैं गृहस्थ जीवन से कुछ सम्बन्ध नहीं रखता हूँ । नन्द भिक्षु की बात को भिक्षुगण विश्वास नहीं किया । बुद्ध के पास जाकर भिक्षुगण ने अपनी बात रखी । तब बुद्ध ने नन्द भिक्षु का अर्हत प्राप्ति करने की जानकारी भिक्षुगण को दिया ।

बुद्ध ने कहा सही ढंग से नहीं ढकने वाला छत से जैसे पानी गिरता है वैसे ध्यान भावना नहीं करने वाला चित्त राग-द्वेष आदि क्लेश से बधा रहता है । लेकिन सही ढंग से ढकने वाला छत से घर के अन्दर पानी नहीं गिरता है । उसी तरह सही विदर्शना करने वाले व्यक्ति के चित्त के अन्दर राग-द्वेष-क्लेश आदि उत्पन्न नहीं होता है । (अंक 133)

बुद्ध की बात सुनने के बाद नन्द भिक्षु को कैसे सही मार्ग पर लाने की बात धर्म सभा मण्डप में चर्चा का विषय बन गया । भिक्षु लोगों की चर्चा की बात सुनने के बाद बुद्ध भिक्षुओं को भद्रक जातक कहानी से धर्म देशना किया ।

बुद्ध श्रावस्ती जेतवनाराम में अपना समय व्यतित कर रहे थे । कभी-कभी निगम ग्राम व ग्राम में चारिका करते थे । एक बार समीप लिच्छी गाँव में जाकर उस गाँव के पूण्यवान लोगों को धर्म देशना करके मार्गफल प्राप्त कराया ।

आमगन्ध ऋषि के साथ उनके अनुयायी को भिक्षुत्व ग्रहण करना

श्रावस्ती जेतवनाराम से थोड़ी दूरी पर आमगन्ध नामक एक ऋषि रहते थे । उस इलाके के लोग आमगन्ध ऋषि से बहुत श्रद्धा रखते थे। कभी-

कभी आमगन्ध ऋषि हिमालय से आकर उस गाँव में कई महिना ठहरते थे । उस गाँव के लोग बुद्ध से भी श्रद्धा रखते थे । लेकिन पहले जैसे ही आमगन्ध ऋषि की पूजा-सत्कार में कोई कमी नहीं किया । लेकिन दूसरी बार आमगन्ध ऋषि के आने पर गाँव के लोग पहले जैसे पूजा-सत्कार नहीं किया । आमगन्ध ने पूछा क्या कारण है तो गाँव वालों ने कहा बुद्ध श्रावस्ती में पधारे है ।

यह सुनते ही आमगन्ध ने कहा बुद्ध शब्द सुनना दुलर्भ है । गाँव वालों से पूछा बुद्ध आमगन्ध का भोजन करते है कि नहीं करते । इस पर गाँव वालों ने ऋषि से पूछा आमगन्ध क्या है ? ऋषि ने बताया पृथ्वी और पानी में रहने वाले जीवों का मांस है । गाँव वालों ने कहा बुद्ध सभी भोजन ग्रहण करते है । आमगन्ध ऋषि ने कहा बात तो वह बुद्ध हो ही नहीं सकता। आमगन्ध ऋषि ने सोचा मैं स्वयं जाकर उसका पता लगाऊँगा । यह सोचकर जल्दी-जल्दी जेतवनाराम में चले गये । उस समय बुद्ध जेतवनाराम में धर्मासना रुढ़ होकर धर्म देशना कर रहे थे । आमगन्ध ऋषि भी उस स्थान पर जाकर बैठ गये । बुद्ध उनका सुख दुख पूछा तो आमगन्ध ऋषि ने उनका उत्तर दिया । तत्पश्चात् आमगन्ध ऋषि बुद्ध से पूछा आप आमगन्ध भोजन ग्रहण करते है कि नहीं । बुद्ध ने पूछा जो तुम आमगन्ध खाता है वह क्या है ? भाग्यवत मत्स्य, मांस को आमगन्ध कहते है । ब्राह्मण मत्स्य-पानी में होने वाला जिव, मांस-जमीन परपैदा होने वाले जीवों का मांस आमगन्ध नहीं होता है । सभी अकुशल कर्म आमगन्ध होता है ।

ब्राह्मण यह प्रश्न कभी तुम नहीं पूछे । पूर्व जन्म में तिस्स नामक एक ब्राह्मण काश्यप बुद्ध से इस प्रश्न को पूछा । उसके विस्तार पूर्वक समाधान के लिए बुद्ध आमगन्ध सूत्र से धर्म देशना किया । (आमगन्ध सूत्र विनयपिटक चुल्लवग्ग के दूसरे सूत्र में विस्तार पूर्वक मिलता है) । आमगन्ध सूत्र की धर्म देशना सुनने के बाद आमगन्ध ऋषि अपने पाँच सौ शिष्यों के साथ बुद्ध के श्रीपाद की वन्दना करके प्रव्रज्या माँगा । बुद्ध ऐहि भिक्षु भाव से सबको प्रव्रज्जित किया । कुछ दिन के बाद सभी लोग अर्हत पद प्राप्त किया ।

पुण्ण भिक्षु का आगमन

पुण्ण मन्तानी पुत्र अर्हत् बुद्ध का श्रावस्ती में आने की सूचना पाकर

बुद्ध की कुटि में जाकर बुद्ध का दर्शन किया। बुद्ध का उपदेश सुनकर पास ही अन्धवन में एक वृक्ष मूल के नीचे बैठे हुए सारिपुत्र अर्हत के पास जाकर अपने विचारों का अदान-प्रदान किया। उसी दौरान सप्तविशुद्धि कर्म के बारे में भी विचार-विमर्श किया। पुन्न सभी प्रश्नों का उत्तर दिया और सभी भिक्षु लोग उस बात को स्वीकार किया। (अंक 134)

मंगल सूत्र समागम

बुद्ध श्रावस्ती में रहते समय एक दिन रात को एक दिव्य पुत्र आकर बुद्ध की वन्दना किया। बुद्ध से कहाँ भाग्यवत इस संसार में उत्तम मंगल के बारे में एक बहुत बड़ी चर्चा है। उसी मंगल के बारे में सही जानकारी प्राप्त करने के लिए हम आप के पास आये हैं। दिव्य पुत्र के उत्तर के लिए बुद्ध ने महामंगल सूत्र की देशना किया है। धर्म देशना समाप्त होने के पश्चात् अनेक देवतागण अर्हत हो गये। कई लोग सोवान (स्त्रोतापन्न) हो गये। फल प्राप्त करने वालों की संख्या का कोई गिनती नहीं था।

परिच्छेद - 33

तुम्हारा आयु बहुत थोड़ी बची हुई है

चौथा वर्षावास

बुद्ध जनपदों में चारिका करते हुए वर्षा ऋतु आते ही राजगृह में प्रविष्ट किया । बुद्धत्व प्राप्ति के पश्चात् बुद्ध चौथा वर्षा वास राजगृह में व्यतित किया ।

राजा बिम्बिसार राजा पुक्कूसाथी को धर्म अन्तर्गत पत्र भेजना

तक्षशीला नगर के राजा पुक्कूसाथी और मगध राज्य के अधिपति राजा बिम्बिसार के बीच घनिष्ट मित्रता थी । दोनों के बीच मित्रता पत्र के माध्यम से हुआ है । कभी भी दोनों में आमने-सामने मुलाकात नहीं हुआ है । राजा बिम्बिसार ने सोचा अपने अदृश्य घनिष्ट मित्र को बुद्ध के विषय में, और बुद्ध के महत्व के बारे में कुछ लिखकर भेजना जरुरी है । यह सोचकर चार हाथ लम्बा आधा हाथ चौड़ा एक सोने के पत्र पर बुद्ध गुण के बारे में लिखना आरम्भ किया । सबसे पहले बुद्धोत्पत्ति के समय संसार में होने वाले कीर्तिघोष लिखा—

"इध तथागतो लोके उत्पन्नो अरहं सम्मासम्बुद्धो विज्जाचरण सम्पन्नो" जैसे संक्षिप्त रूप से बुद्ध का गुण अन्तर्गत दस पारमिता पूर्ण करने की कहानी तुषित दिव्य लोक में उत्पन्न होकर बुद्धत्व प्राप्ति के पश्चात् प्रातिहार्य का वर्णन लिखा है ।

उसके पश्चात् 'यंकिची वित्तं इधवा हूरंवा' लिखा है । उसके बाद 'स्वाक्खातो भगवता धम्मो आदि धर्म गुण लिखा है । चार सतीपद्वान चार इर्दीपाद, चार सम्यक् प्रधान, पाँच इन्द्रिय, पंचबल, सप्तबोधयं, आर्य अष्टांगिक मार्ग, सतहत्तर बोधि पक्ष धर्म, संक्षिप्त विवरण लिखकर 'धम्म बुद्ध सेट्ठो परिवान सूचिं गाथा को लिखा है ।

'सुपटिपन्नो भगवतो सावकसंघो' आदि संघ गुण लिखा है । इसके बाद लिखा है । बहुत से कुल पुत्र बुद्ध का धर्मदेशना सुनकर प्रव्रज्जित होने का

कोई राजा राज्य छोड़कर, कोई युवराज युवराज का पद छोड़कर, सेनापति सेनापति की पदवी छोड़कर अनेको प्रकार के लोग अपनी पदवी को छोड़कर प्रव्रज्जित होने की खबर लिखा । इस तरह प्रव्रज्जित होने के पश्चात् लोग अपने मूल स्वरूप को छोड़कर सुपटिपन्नो, ञायपटिपन्नो आदि गुणों से सम्पन्न होने की बात लिखा । लघुशील, मध्यशील, महाशील के बारे में संक्षिप्त रूप से लिखा । तत्पश्चात् चार संवरशील, नवसंज्ञा पंचनिवरण दूर करने का मार्ग, कर्मस्थान के विषय में सही जानकारी, अर्हत प्राप्ति करने तक पूर्ण योग्य सभी गुण-शील, समाधि, प्रज्ञा के विषय में लिखा है ।

उसके पश्चात् आनापानस्मृति भावना क्रम लिखकर बुद्ध पत्र को निम्नलिखित गुणों से युक्त होने का 'ये पुग्ला अट्ठ सतम्प्-सत्था' का गाथा लिखा । आखिरी में लिखा है बुद्ध का धर्म सही ढंग और सुन्दर ढंग से प्रकाशित किया हुआ है । ज्ञानवन्त पुरुष को इसका अभ्यास कराकर निर्वाण प्राप्त कराना जरूरी है । हमारे मित्र आप चाहे तो बुद्ध के शासन में भिक्षु बन सकता है ।

ऐसा लिखकर माणिक्य, स्वर्ण, चाँदी जैसे तीन किमती सामानों से तैयार किया हुआ एक सन्दूक में रखकर उसे तीन सन्दूक में सुरक्षित रखवाकर गौरवान्वित तरीके से तक्षशीला नगर के राजा पुक्कूसाथी को भेजा। राजा पुक्कूसाथी के मित्र राजा बिम्बिसार का पत्र मिलने के पश्चात् अपना राज्य छोड़कर प्रव्रज्जित होकर बुद्ध का दर्शन करने के लिए तक्षशीला नगर से 237 योजन अर्थात् 2844 किमी. की दूरी पार करके राजगृह के कुम्भकार शाला तक पहुँच गये । कुम्भकारशाला में पहुंचते ही देखा बुद्ध की धर्मदेशना चल रहा है । पुक्कूसाथी भी बुद्ध की धर्मदेशना सुनकर अनागामी हो गया।

राजा तिस्य को धर्म का पत्र भेजना

मध्य देश से बहुत दूर सोविर नामक राज्य में रौरवपुर नगर का तिस्य नामक एक राजकुमार थे । अपने पिता के देहान्त के बाद तिस्य युवा होने पर रौरवपुर पर राज्य करना प्रारम्भ किया । राजा तिस्य भी राजा बिम्बिसार का अदृश्य मित्र था । राजा तिस्य अपने अदृश्य मित्र बिम्बिसार को सोना, चाँदी और मोती जैसे बहुत किमती सामान भेंट के रूप में भेजवा दिया । किमती भेंट मिलने के बाद राजा बिम्बिसार ने सोचा मैं अपने प्रिय मित्र को क्या भेंजू ? राजा बिम्बिसार ने एक किमती वस्त्र में बुद्ध का जीवन कहानी

तैयार करवाकर सोने के पत्र में 'प्रतीत्य समुत्पाद' लिखकर भेजवाया । इतना बहुमूल्य दो उपहार मिलने के बाद राजा तिस्य को घटना के बारे में समझने के लिए ज्यादा समय नहीं लगा । राजा तिस्य ने कहा—बुद्ध के आकार के विषय में हम जानते हैं, धर्म चक्र भी हम जानते हैं । यह काम सम्पत्ति बहुत दु:ख देने वाला है । ऐसा कहकर राज्य सम्पत्ति सभी छोड़कर बाल-दाढ़ी मुड़वाकर पीलावस्त्र पहनकर नगरवासी को रोते-रोते देखते नगर से निकल पड़े । नगर से निकलकर क्रमश: ग्राम, निगमग्राम होते हुए राजगृह नगर तक पहुँच गये । उस समय बुद्ध राजगृह पर्वत पर 'सप्त शुण्डिक परपहार' नाम से प्रसिद्ध पाषाण मैदान में धर्म देशना कर रहे थे । तिस्य बुद्ध की धर्म देशना सुनकर अपना कर्मस्थान पूर्ण कर अर्हत् पद प्राप्त किया ।

कमजोर वर्ग के एक व्यक्ति का प्रव्रज्या

राजगृह में कमजोर वर्ग के लोगों के बीच में सुनीत नामक एक व्यक्ति था । सुनीत नगर के सभी शौचालयों की सफाई करके, उसकी गन्दगी को साफ करने का कार्य करता था । उसके इस आजिविका के कार्य से सभी लोग उसे निम्नतर का समझकर उससे दूर रहते थे । बुद्ध अपने दिव्य चक्षु से देखा शौचालयों का असूचि साफ करने के बावजूद भी सुनीत की बुद्धि अर्हत् प्राप्त करने के योग्य है । एक दिन बुद्ध पिण्डपात के लिए जाते समय देखा कि सुनीत शौचालयों की असूची साफ करने में व्यस्त था । बुद्ध और भिक्षु महासंघ को पिण्डपात में आते देखकर सुनीत बुद्ध और भिक्षुमहासंघ के सम्मान में अपना असूची बहँगी एक दिवाल के दूसरी तरफ छिपा दिया । करुणा से भरे बुद्ध सुनीत के पास जाकर मधुर शब्द से सुनीत कहकर सम्बोधित किया । बुद्ध ने कहा तुम्हारी जिन्दगी बहुत कष्टदायक है दु:ख देने वाला है इसलिए क्या तुम प्रव्रज्या लेना चाहोगे । सुनीत ने कहा भाग्यवत मैं निम्नकुल का व्यक्ति हूँ, मेरा निम्नस्तर का कार्य है जिससे मेरी आजीविका चलती है । यदि आप का आज्ञा हो तो प्रव्रज्या लेने में हमें कोई परेशानी नहीं है । आप हमें प्रव्रज्या दीजिए ।

बुद्ध सुनीत को ऐही भिक्षुभाव से प्रव्रज्या दिया । विहार में ले जाकर ध्यान भावना करने का नियम सिखाया । जिससे सुनीत पंच अभिज्ञा अष्ट समापत्ति प्राप्त किया । बाद में विदर्शना करने के कारण छ:अभिज्ञा से युक्त

अर्हत पद प्राप्त किया । इस महान पुण्य कार्य को देखकर देवता, ब्रह्म सन्तुष्ट होकर सुनीत अर्हत के पास आकर उसकी वन्दना और पूजा किया। देव ब्रह्म समूह का वन्दना-पूजा देखने के पश्चात् बुद्ध के मुख पर सन्तुष्टि की हँसी प्रकट हुआ । साथ ही साथ प्रसंशा भी किया ।

इन्द्रिय संवर के प्रज्ञा से, प्रज्ञा से, विनितचर्या से युक्त व्यक्ति ब्राह्मण होता है । पूर्णरूप से पाप से दूर रहने वाला व्यक्ति को बुद्ध ब्राह्मण कहते हैं । (अंक 136)

सुनीत प्रव्रज्जित होकर अर्हत प्राप्ति के बाद नवयुवक भिक्षु होने के कारण उसका परिचय पूछा आयुष्मान सुनीत आप कौन-से कुल-वंश से आकर प्रव्रज्जित हुए हैं । आप चतुरार्य सत्य अवबोध किया है । उत्तर में सुनीत अर्हत भिक्षु ने कहा मैं प्रव्रज्जित होने के पहले एक निम्नपरिवार में पैदा होकर शौचालयों का असूचि साफ करने का कार्य करता था । महाकारुणिक तथागत बुद्ध के महाकरुणा के कारण मैं प्रव्रज्या प्राप्त किया है । बुद्ध देशना के अनुसार अपना सभी क्लेश नष्ट करके अर्हत हो गया है । हमारे जैसा व्यक्ति बुद्ध शासन में प्रव्रज्जित होकर सभी क्लेश नष्ट करके अर्हत होने के कारण देव-शक्र आदि परिषद आकर हमको नमस्कार करने की घटना बुद्ध ने देखा । इस घटना को देखने के बाद बुद्ध अपनी प्रसन्नता प्रकट किया है । इस घटना को लेकर बुद्ध ने धर्म देशाना किया है ।

बुद्ध एक वयोवृद्ध निम्नवर्ग की महिला को अपना करुणा प्रकट करना

बुद्ध एक दिन सुबह महाकरुणा समापत्ति से उठकर संसार को अपने दिव्य चक्षु से देखा । राजगृह में मरणासन्न एक वयोवृद्ध निम्न वर्गिय महिला को एक झोपड़ी में देखा । बुद्ध ने देखा मरने के पश्चात् वयोवृद्ध महिला कुछ अकुशल कर्म के कारण नरक में पैदा होगी । उस महिला पर अनुकम्पा करके उसे दुर्गति से मुक्त करने के इरादे से बुद्ध भिक्षु महासंघ के साथ पिण्डपात में राजगृह को गये । उस समय वयोवृद्ध निम्नवर्गीय महिला एक लाठी के सहारे झोपड़ी से निकल कर रास्ते पर आ गयी । बुद्ध और महासंघ को देखकर एक स्थान पर रुककर बुद्ध और भिक्षुमहासंघ का दर्शन लाभ लिया । बुद्ध वयोवृद्ध महिला के सामने आ गये । उस समय महामौद्गल्यायन अर्हत बुद्ध का इरादा समझकर वयोवृद्ध महिला के मरणासन्न होने का लक्षण

देखने के बाद बुद्ध को नमस्कार कराने के लिए वयोवृद्ध महिला को इसारा किया ।

कमजोर वयोवृद्ध महिला महाकारुणीक तथागत बुद्ध के दोनों श्रीपाद की वन्दना किया । तुम्हारे लिए महाअनुकम्पा होने से महाकारुणिक बुद्ध अपना यात्रा थोड़ी देर के लिए रोककर तुम्हारे सामने हैं । परिशुद्ध चित्त से परिपूर्ण लाभ-अलाभ आदि जैसे चीजों से कम्पित न होने वाले पूज्य महाकारुणिक बुद्ध के बारे में चित्त प्रसन्न करके दोनों हाथ जोड़कर बुद्ध की वन्दना करो । क्योंकि तुम्हारी आयु बहुत थोड़ी बची हुई है ।

महामौद्गल्यायन की बात सुनकर वयोवृद्ध महिला दोनों हाथ जोड़कर बुद्ध को प्रणाम करते हुए उनके दोनों पैर को स्पर्श किया । स्पर्श करते ही बूढ़ी महिला का चित्त प्रीति से भर गया । प्रसन्न चित्त से बुद्ध को प्रणाम कर उनके पैर को स्पर्श करने से बुद्ध ने कहा इस बुढ़ी महिला को स्वर्गोत्पत्ति के लिए इतना काफी है । ऐसा कहकर बुद्ध ने धर्म देशना किया । तत्पश्चात् बुद्ध और भिक्षु महासंघ वहाँ से चल दिये । बुद्ध का दर्शन और बुद्ध के चरणस्पर्श से वृद्ध महिला का हृदय प्रीति से भर जाने के कारण वह बुद्ध और भिक्षु महासंघ को देखती रह गयी । अचानक एक गाय उछल-कूद मचाते हुए आकर वयोवृद्ध महिला को सिंग से मारा । उसके सिंग मारने से वयोवृद्ध महिला उसी स्थान पर गिर गई और उसकी प्राण निकल गयी। मरणोपरान्त बुढ़ी महिला तावतिन्स देवलोक में उत्पन्न हुई ।

सोपाक नामक एक अनाथ बच्चा

राजगृह में एक निम्नवर्ग व्यक्ति को पुक्कुस कुल की एक स्त्री को एक पुत्र पैदा हुआ । उस बालक को सोपाक के नाम से जाना जाता है । पुक्कुस कुल में उत्पन्न होने के चार माह बाद पिता मर गया । धीरे-धीरे सोपाक सात साल का हो गया । एक सोपाक का छोटा पिताजी अपने बच्चे के साथ सोपाक का झगड़ा होने के कारण गुस्सा होकर सोपाक का हाथ-पैर बाँधकर शमशान में ले जाकर एक मृतक शरीर के साथ रस्सी से बाँध दिया। छोटे पिताजी ने सोचा मृत शरीर को खाने के लिए सियार आयेगा और वह सोपाक को भी खा जायेगा । ऐसा सोचकर उसे शमशान में छोड़कर चले गये । मध्यरात्रि के बाद दुखित होकर सोपाक जोर से रोना शुरू किया और रोते-रोते कहा हमको इतना बड़ा सजा दिया कौन-सा गलत काम किया है ।

मैं एक अनाथ बच्चा हूँ । मेरे मदद के लिए कोई रिस्तेदार भी नहीं है इसलिए शमशान घाट में बँधा हुआ हूँ । मुझे कोई आकर मुक्त कराये, ऐसा कहते हुए जोर-जोर से रोना-चिल्लाना शुरू किया ।

इस घटना को महाकारुणिक बुद्ध अपने दिव्य चक्षु से देखने के बाद बालक सोपाक की तरफ एक सौम्य रश्मि फैला दिया । जिससे सोपाक होश में आ गया ।

उसके साथ-साथ एक आवाज भी सुना पुत्र सोपाक इधर आ जाना और बुद्ध की तरफ देखना । जैसे राहु से चन्द्रमा मुक्त होता है उसी तरह मैं भी तुम्हें मुक्त कराऊँगा ।

बालक बुद्ध शक्ति के कारण बन्धन से मुक्त होकर आलोक धारा के माध्यम से बुद्ध बिहार में जाकर सीढ़ी पर बैठ गया । अपने पुत्र को नहीं देखने से सोपाक की माता बहुत परेशान हो गयी । तब छोटा पिताजी से पूछा कि मेरा बच्चा कहाँ गया । लेकिन छोटा पिताजी अंजान बनकर रह गया । सोपाक की माता जानती थी कि बुद्ध अतीत, वर्तमान और भविष्य तीनों काल की घटनाओं के बारे में जानकारी रखते हैं । अपने पुत्र के विषय में पूछने के लिए बुद्ध बिहार में चली गयी और बुद्ध से अपने पुत्र को देखने की प्रार्थना किया और पूछा भाग्यवत मेरे बालक सोपाक का कहीं अता-पता नहीं है । यदि उसके विषय में कुछ जानते हैं तो बतायें ? इस घटना को लेकर बुद्ध ने अधिष्ठान किया । (अंक 137)

''मार से पराजित पुत्र और बन्धु का कभी कोई मदद के लिए नहीं होता है । नातेदार के लिए भी प्रतिष्ठा का कारण नहीं बनता है। इस घटना को देखने से ज्ञानवन्त व्यक्तिशील प्रतिष्ठा होकर, संवर होकर निर्वाण मार्ग प्रसस्त करता है'' ।

इस धर्म गाथा को सुनने के बाद सोपाक बालक की माता सोवान हो गयी और सोपाक बालक अर्हत हो गया । उसके बाद बुद्ध ने सोपाक को दिखाने का कार्य किया । पुत्र को देखने के बाद सन्तुष्ट होकर सोपाक की माता जी पूर्व पुण्य की शक्ति से अर्हत हुई । सोपाक का प्रव्रज्या कराकर चली गयी । कुछ समय के बाद बुद्ध अपने गन्धकुटि के आस-पास चंक्रमण करते समय सोपाक भी धीरे-धीरे, बुद्ध के पीछे चंक्रमण किया । बुद्ध ने

सोपाक श्रामणेर से पूछा तुम उपसम्पदा होना चाहते हो ? सोपाक श्रामणेर ने बोला अच्छी बात है । तब बुद्ध ने सोपाक श्रामणेर से दस प्रश्न पूछा—

1. बुद्ध—एक नाम किं ? (एक का अर्थ क्या है ?)
   सोपाक—'सब्बे सत्ता आहार आहारट्ठितिका' (सभी प्राणी आहार पर निर्भर है ।)
2. बुद्ध—द्वे नाम किं ? (दो का अर्थ क्या है ?)
   सोपाक—नामंच, रूपंच । (नाम और रूप)
3. बुद्ध—तीन नाम किं ? (तीन नाम क्या है ?)
   सोपाक—तिस्सोवेदना (तीन वेदना) सुखवेदना, दुःखवेदना व उपेक्षा-वेदना)
4. बुद्ध—चार नाम किं ? (चार का अर्थ क्या है ?)
   सोपाक—चार आर्यसत्य - दुःख, दुक्खसमुदय, दुक्खनिरोध, दुक्खनिरोधगामिनी पटिपदा ।
5. बुद्ध—पाँच नाम किं ? (पाँच अर्थ क्या है ?)
   सोपाक—पाँच उपादान स्कन्ध - रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार, विज्ञान ।
6. छः नाम किं ?—(छः का अर्थ क्या होता है ?)
   सोपाक—छः आयतन - चक्षु आयतन, श्रोत आयतन, गन्ध आयतन, रस आयतन, स्पर्श आयतन एवं मन आयतन ।
7. सात नाम किं ? (सात का अर्थ क्या है ?)
   सोपाक—सात सम्बोध्यांग - स्मृति सम्बोध्यांग, धर्मविजय सम्बोधयांग, वीर्य सम्बोध्यांग, प्रतिसम्बोध्यांग, पस्सधि सम्बोध्यांग, समाधि सम्बोध्यांग, उपेक्षा सम्बोध्यांग ।
8. आठ नाम किं है ? (आठ का अर्थ क्या है ?)
   सोपाक—आर्य अष्टांगिक मार्ग - सम्यक् वचन, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् आजीविका, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् जागरुकता, सम्यक् समाधि, सम्यक् संकल्प एवं सम्यक् दर्शन ।
9. नव नाम किं ? (नव का अर्थ क्या है ?)
   सोपाक—नौ प्रकार के सत्वावास (नवान्यवेदना) - i) विविध काय,

विविध संज्ञा से युक्त प्राणी वर्ग, ii) विविध काय, साथ-साथ समान संज्ञा, iii) समान काय विविध संज्ञा, iv) समान काय, समान संज्ञा, v) संज्ञा वगैर संज्ञा नहीं भोगने वाला संज्ञा, vi) आकाशानन्यायतनं प्राप्त किया हुआ व्यक्ति, vii) विज्ञानन-मायतनं प्राप्त किया हुआ व्यक्ति, viii) अकिंचान्यातनं प्राप्त किया हुआ व्यक्ति, ix) नैसंज्ञा नासंज्ञा प्राप्त किया हुआ व्यक्ति ।

10. दस नाम किं (दस नाम क्या है ?) - i) परिपूर्ण सम्मदिट्ठी, ii) परिपूर्ण सम्मासंकल्प, iii) परिपूर्ण सम्मावाया, iv) परिपूर्ण सम्मा-कर्मान्त, v) परिपूर्ण सम्मा आजिव, vi) परिपूर्ण सम्मावयायाम, vii) परिपूर्ण सम्मासति, viii) परिपूर्ण सम्मासमाधि, ix) परिपूर्ण सम्मा ज्ञान, x) परिपूर्ण सम्मा विमुक्ति । इसी दस अंग से युक्त व्यक्ति को बौद्ध धर्म अरहत कहते हैं ।

    सोपाक—दस अंगों से युक्त अर्हत, दस पारमिताएँ—नैण्क्रम्य, शील, वीर्य, क्षान्ति, सत्य, अधिष्ठान, प्रज्ञा, उपेक्षा, मैत्री, धन ।

दस प्रश्नों का सुन्दर ढंग से उत्तर देने के कारण सात वर्ष का सोपाक श्रामणेर को बुद्ध अपनी आज्ञा से प्रश्न व्याकरण नाम से उप सम्पदा दिया ।

भारद्वाज का प्रव्रज्या

राजगृह में भारद्वाज गोत्र का धनन्जानी नामक एक ब्राह्मण रहता था । धनन्जानी ब्राह्मण होने के बाद भी उसकी भार्या शरण समाधान किया हुआ उपासिका थी । उसकी भार्या बुद्ध-धम्म और संघ को अपने प्राण से भी ज्यादा मानती थी । एक दिन वह अपने स्वामी धनन्जानी ब्राह्मण को भोजन परोसते समय पैर फिसलने से गिर गयी और उसके मुख से तुरन्त 'नमो तस्य भगवतो अरहतो, सम्मासम्बुद्धस्य' नमस्कार का उच्चारण निकला । वह इस नमस्कार का तीन बार उच्चारण किया । बुद्ध को नमस्कार करते हुए सुनकर धनन्जानी ब्राह्मण गुस्सा होकर बोला तुम निम्न जाति की स्त्री हरवक्त तुम मुण्डक श्रमण का गुण ही गाती हो । हम तुम्हारे गुरु को श्राप देता हूँ । स्त्री ने कहा ब्राह्मण, देवता और ब्रह्म सहित इस संसार में अर्हत सम्यक् सम्बुद्ध के बराबर कोई नहीं है । आप उस गौतम बुद्ध के पास जाओ, जाने के पश्चात् जो हम कहते हैं, वह सही है या नहीं तुम्हें समझ में आ जायेगा । स्त्री की बात को सुनकर धनन्जानी ब्राह्मण बुद्ध के पास गया ।

बुद्ध के पास जाकर बुद्ध का हाल-चाल पूछा, हालचाल पूछने के बाद धनन्जानी ब्राह्मण ने बुद्ध से निम्न प्रश्न पूछा—

किसको नष्ट करने से मनुष्य सुख-शान्ति से जीवित रह सकता है ? किसको समाप्त करने से शोक-सन्तप्त होता है ? किसको एक राग नष्ट करने के लिए आप का क्या इरादा है ? उत्तर देते हुए बुद्ध ने धर्म देशना किया—क्रोध नष्ट करने से सुख शान्ति मिलता है । क्रोध नष्ट करने से शोक उत्पन्न नहीं होता । क्रोध नष्ट करने से नि:शोक होता है । ब्राह्मण शुरूआत में बहुत बड़ा मिठास महशूस होने वाला व्यक्ति दुखनाशक विष के समान है । इसलिए क्रोध को जड़ से नष्ट करना उचित है ।

बुद्ध का देशना सुनने के बाद धनन्जानी ब्राह्मण बौद्ध उपासक बन गया । उसके पश्चात् बुद्ध से प्रव्रज्या और उपसम्पदा लिया ।

बुद्ध से प्रव्रज्या और उपसम्दा लेने के बाद विदर्शना भावना करने के कारण बहुत दिन बिताकर सभी क्लेश नष्ट करके अर्हत पद प्राप्त किया है ।

भारद्वाज गोत्र का धनंजानी ब्राह्मण बुद्ध का शिष्य बनकर प्रव्रज्जित होने की खबर सुनकर उसके गोत्र के सभी ब्राह्मण बहुत क्रोधित हुए । क्रोधित होकर बुद्ध के पास जाकर असभ्यता पूर्वक अपशब्दों से बुद्ध को गाली-गुत्ता दिया ।

ब्राह्मण लोग बुद्ध को गाली देते रह गये । बुद्ध शान्ति पूर्वक गाली को सुन रहे थे ।

सभी गाली समाप्त होने के पश्चात् बुद्ध ने पूछा ब्राह्मण आपके साथ ये सभी लोग आये हुए मित्रगण कभी-कभी आते हैं । ब्राह्मण ने कहा हाँ कभी-कभी आते हैं । बुद्ध ने पूछा इन लोगों के आने पर तुम इन लोगों को भोजन देते हो । बुद्ध ने पूछा आप लोगों को खाना देने के पश्चात् जाति के लोगों द्वारा खाना नहीं खाने से तुम उस खाने को क्या करते हो ? तब ब्राह्मण ने कहा कि यदि हमारे जाति के लोग खाना स्वीकार नहीं किये तो उस खाने को हम खायेंगे । ब्राह्मण के ऐसा कहने के पश्चात् बुद्ध ने कहा ब्राह्मण हम आप लोगों को कुछ भी अपशब्द नहीं कहे, गुस्सा नहीं किया, झगड़ा नहीं किया तब भी आप लोग हमारे चुप रहने पर भी अपशब्द

कहे । आप लोगों का अपशब्द एवम् गाली-गलौच मैंने स्वीकार नहीं किया। ये सब आप लोगों को वापस अवश्य मिलेगा । ब्राह्मण आक्रोश करने वाले को उल्टा आक्रोश करने वाला, गुस्सा करने वाले के उपर गुस्सा करने वाला। झगड़ा करने वाले के साथ झगड़ा करने वाला एक साथ होकर दोनों का कष्ट भोगेगा। जो आप लोग हमें दिया वह मैंने स्वीकार नहीं किया । इसलिए जो आप लोगों ने दिया वह वापस आप लोगों को ही मिलेगा ।

ब्राह्मण लोगों ने सोचा राज्य के उच्चकोटि के लोग श्रमण गौतम को अर्हत के रूप में मानता है । देशवासी भी वही मानता है । लेकिन हमको समझ में आ रहा है कि श्रमण भाग्यवत गुस्सा नहीं करते हैं ।

बुद्ध शान्त-प्रिय गुण से युक्त, ज्ञान मार्ग के द्वारा सभी क्लेशों से मुक्त, लाभ-अलाभ, निन्दा-प्रशंसा, अष्टलोक धर्म से चंचल नहीं होने वाला शील गुण से युक्त अर्हत के पास क्रोध कहाँ से आयेगा ।

गुस्सा करने वाले के उपर गुस्सा करने वाला व्यक्ति उससे भी निम्न स्तर का होता है । गुस्सा करने वाले व्यक्ति के उपर गुस्सा नहीं करता है। यह जीत युद्ध में जीत मिलने से भी बड़ी जीत होती है ।

कोई अपने से गुस्सा होने पर चित्त को शान्त करके रहने से अपने को एवम् दूसरे दोनों का कल्याण हो सकता है । गुस्सा नहीं करने वाला व्यक्ति अपने के लिए भी और दूसरे लोगों के लिए भी कल्याणकारी होते हैं । धर्म को नहीं जानने वाला गुस्सा करने वाला व्यक्ति मुर्ख के नाम से जाना जाता है ।

इस धर्म देशना को सुनने के बाद जो बुद्ध को अपशब्द गाली-गुत्ता कहा था भारद्वाज ब्राह्मण मित्र लोग त्रिरत्न शरण जाकर प्रव्रज्या-उपसम्पदा दोनों का लाभ लिया । विदर्शना भावना करने के कारण सभी लोग क्लेश को नष्ट करके अर्हत हो गये ।

मातुपोषक ब्राह्मण

बुद्ध श्रावस्ती जेतवनाराम में वर्षावास करते समय एक ब्राह्मण बुद्ध के पास आकर हाल-चाल पूछ कर बुद्ध के पास बैठ गया । अपना सम्पूर्ण परिचय देने के बाद ब्राह्मण ने कहा भाग्यवत मैं धार्मिक ढंग से भिक्षाटन

करके जीवन व्यतीत कर रहा हूँ। उसी भिक्षाटन से अपने माता-पिता का भी भरण-पोषण करता हूँ। ऐसा करने से हमारा सत्कार होता है कि नहीं। बुद्ध ने कहा धार्मिक ढंग से भोजन उपलब्ध करके माता-पिता को पोषित करने वाला व्यक्ति अपना सत्पुरुष धर्म के कारण इस लोक में भी प्रशंसा का पात्र होता है और परलोक में भी स्वर्ग सम्पत्ति प्राप्त करता है। बुद्ध का देशना सुनने के बाद मातुपोषक ब्राह्मण त्रिशरण शरणागत हो गया।

उग्गसेन का समागम

राजगृह में उग्गसेन नाम का एक सेठ का पुत्र था। राजगृह नगर में सर्कस का एक कार्यक्रम हुआ जिसमें एक सुन्दर लड़की थी। उस सुन्दर लड़की को देखने के बाद उग्गसेन का दिल उस सर्कस वाली लड़की पर आ गया। इस बात की जानकारी होने के बाद उग्गसेन के माता-पिता जी उस लड़की से उग्गसेन को अलग करने का बहुत प्रयास किये। लेकिन सफल नहीं हुए। इसके बाद लड़की के माता-पिता जी को इस बात की सूचना भेजकर लड़की की शादी उग्गसेन के साथ करने की बात किया। लड़की के पिता ने कहा उग्गसेन उसकी पुत्री के साथ जिन्दगी व्यतीत करने को तैयार है तो शादी करने में कोई परेशानी नहीं है।

उग्गसेन अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति छोड़कर सुन्दर कन्या के साथ सर्कस जहाँ-जहाँ जाता था उसके साथ-साथ जाता था। उग्गसेन अपने घर से बगैर माता पिता की अनुमति के निकल पड़ा। सर्कस वाली लड़की के साथ गाँव-गाँव घूमता रहा। कुछ समय के बाद उग्गसेन भी सर्कस की कला को सीख लिया। जगह-जगह घूमकर सर्कस करने वालों के साथ पुनः राजगृह में आ गया। सेठ का पुत्र उग्गसेन सर्कस में अपना कला (शिल्प) दिखाने की बात सम्पूर्ण नगर में फैल गया। उग्गसेन का सर्कस की कला देखने के लिए सभी नगर वासी एकत्रित हुए। उग्गसेन एक बहुत बड़ा लम्बा बाँस पर चढ़कर आसमान में सात चक्कर लगाये और पुनः उसी बाँस को पकड़ लिया। उस समय बुद्ध पिण्ड पात के लिए निकले थे। आम जनता सर्कस को देखना छोड़कर बुद्ध और महासंघ की ओर देख रहा था। उग्गसेन ने सोचा हम इतना मेहनत से सर्कस कर रहा हुँ और जनता हमारे तरफ न देखकर बुद्ध की ओर देख रही है। ऐसा सोचकर क्रिडा करना हतोत्साहित हो गया।

बुद्ध उग्गसेन के चित्त के विषय में जान गये और जानकर महामौद्-गल्यायन अर्हत को कहा जाकर उग्गसेन सेठ पुत्र को कहो कि वह अपने शिल्प का कार्यक्रम चालु रखे। महामौदगल्यायन अर्हत बुद्ध के आदेशानुसार जाकर उग्गसेन को बुद्ध की बात को बता दिया। बुद्ध का सन्देश सुनकर उग्गसेन बहुत खुश हुआ और खुश होकर सोचा इसका मतलब है बुद्ध जैसे महा अर्हत लोग भी हमारे शिल्प क्रिडा की प्रशंसा करते हैं। फिर से बड़ा लम्बा बाँस से आसमान में चक्कर लगाया और चक्कर लगाने के बाद बाँस के उपरी सिरे पर बैठ गया। यह सब देखने के बाद बुद्ध उग्गसेन को बुलाया और कहा बाँस के उपर से आसमान में चक्कर लगाते समय जैसे बाँस का प्रारम्भ, मध्य और अन्तिम तीनों स्थान को अपने हाथ से मुक्त करते हो एसे ही स्कन्ध संस्कार को छोड़ने से स्थान मुक्त होता है। वैसे ही बन्धन से मुक्त होकर जाति जरामरण से भी मुक्त होता है।

(अंक 138)

धर्म देशना के अन्त में चौरासी हजार व्यक्ति धर्म का अवबोध किये। उग्गसेन बाँस के उपर बैठते ही अरहत पद प्राप्त किया। बाँस से उतर कर नीचे आकर बुद्ध से ये ही भिक्षु भाव से प्रव्रज्या ली है।

पाँच सौ राजकुमार बुद्ध की सेवा में

(पाँचवाँ वर्षावास वैशाली में)

शाक्य कोलिय युद्ध को रोकना

वर्षावास के बाद बुद्ध चारिका करते हुए दूसरी बार कपिलवस्तु में पहुँच गये । उस समय भी बुद्ध और भिक्षु-महासंघ निग्रोधाराम में ही वास किया । उस समय रोहिणी नदी के पानी के स्वामित्व को लेकर शाक्य-कोलिय दोनों पक्षों में एक युद्ध छिड़ गया । बुद्ध रोहिणी नदी के किनारे जाकर समाधि मुद्रा में आसमान में विराजमान हो गये । विराजमान होकर दोनों पक्षों को धर्म देशना किये । पानी और खून दोनों के महत्त्व के बारे में समझाया। दोनों पक्षों को समझाने के पश्चात अत्तदण्ड सूत्र की देशना किया । यह सूत्र देशना सुनने के बाद सभी लोगों का क्रोध शान्त हो गया। शान्त होने के पश्चात् बन्दन जातक, लटुकीक जातक, बट्टक जातक जैसे पूर्व जन्म का जातक कथाओं को सुनकर दोनों पक्षों की रंजिश सम्पाप्त कर एकत्रित किया। दोनों पक्ष के लोग बहुत प्रसन्न हुए और प्रसन्न होकर दोनों राजवंश की ओर से दो सौ पचास-दो सौ पचास की संख्या के हिसाब से पाँच सौ राजकुमार बुद्ध की सेवा के लिए समर्पित हुए । बुद्ध सभी लोगों को ये ही भिक्खु भाव से प्रव्रज्जित किया । ये ही भिक्षु प्रव्रज्या के बाद सभी भिक्षुओं को लेकर बुद्ध कपिलवस्तु के नजदीक महावन में चले गये । कई राजकुमार शादी, सुदा होने के कारण अपनी पत्नियों से वगैर अनुमति के भिक्षु बन जाने के कारण उनकी स्त्रियाँ अपने स्वामियों को वापस बुलाने के लिए कई तरह का तरीका अपनाया । इसके कारण भिक्षु प्रव्रज्या जीवन से निकलने के लिए तैयार किया । सभी का इरादा जानने के बाद बुद्ध हिमालय वन में ले गये और जाने के बाद कुनाल जातक की देशना किया । कुनाल जातक सुनने के बाद भिक्षु लोग पुनः भिक्षु जीवन छोड़ने का इरादा त्याग दिया । इसके पश्चात् बुद्ध ने सभी भिक्षुओं को चर्तुरार्य सत्य को समझाकर धर्म देशना किया।

धर्म देशना सुनने के बाद पाँच सौ भिक्षुओं में सबसे छोटा भिक्षु सोवान (स्त्रोतापन्न) हो गया और सबसे बड़ा भिक्षु अनागामी हो गया । बाकि बचे सभी भिक्षु लोग सकृदागामी हो गये । इस घटना को देखने के बाद शाक्य राजकुमार, उषभ शाक्य, राजकुमार गौतम, शुद्धोदन के पुरोहित के पुत्र सप्पदास कोलिय, राजपुत्र निषाभ जैसे लोग भी प्रव्रज्जित हुए । बुद्ध इन सभी लोगों को भी महावन में लेजाकर धर्म देशना दिया है । धर्म देशना का अनुपालन करने से विदर्शना भावना से सभी लोग अर्हत हो गये ।

सभी भिक्षु लोग महावन में बुद्ध के समीप बैठ गये । उस समय सौम्यवेश धारण करके ब्राह्मण्ड एवं सभी देवलोक से देवगण सहामपति महाब्रह्म सभी लोगों को बुद्ध ने महासमय सूत्र की देशना किया । (परित्राण सूत्र मेदिधनिकाय सूत्र पिटक) । उस समय बुद्ध ने देखा देवतागण के बीच में रागचरित, द्वेष चरित, मोह चरित, श्रद्धाचरित, बुद्धिचरित, वितर्क चरित यह सब इन लोगों के पापी चित्त का समाधान करने के लिए बुद्ध आसमान में विराजमान होकर पूर्व दिशा में बराबर दो आसनों में बैठ गये । दो बुद्ध का दृश्य दिखाकर एक बुद्ध दूसरे बुद्ध से प्रश्न-उत्तर के रूप में रागादि चरित से भरे देवता लोगों को समझाने का धर्म देशना किया । इस धर्म देशना के क्रमानुसार सम्मापरिवोजनिय सूत्र, पूराभेद सूत्र, कलह विवाद सूत्र, चोलयुग सूत्र, महाव्यूह सूत्र, तुवटक सूत्र जैसे सूत्र देशना किया । (ये सभी सूत्र त्रिपिटक सूत्तनिपात के अन्तर्गत है) ।

बुद्ध के कपिलवस्तु प्रवास के दौरान महाप्रजावति गौतमी बुद्ध के पास जाकर बुद्ध को प्रणाम करके एक ओर बैठ गयी और बुद्ध से अनुरोध किया कि स्त्रियों को भी भिक्षुणी बनने का अवसर प्रदान कीजिए ।

महाप्रजावती गौतमी ने तीन बार अनुरोध किया इसके बावजूद भी बुद्ध ने कहा अभी इसके लिए उचित समय नहीं आया है । महाप्रजावती गौतमी शोकाकुल होकर आँसू बहाते हुए बुद्ध के पास से चली आयी ।

पाँचवा वर्षा वास बुद्ध वैशाली में और कुछ समय कपिलवस्तु में रहकर पुनः कपिलवस्तु से वैशाली की ओर चले गये । वैशाली जाते समय वर्षा ऋृतु आने के कारण वैशाली महानगर के समीप महावन के कुटागार शाला में वर्षावास प्रारम्भ किया ।

राजा शुद्धोदन का अर्हत् पद प्राप्त करना

वैशाली में रहते समय बुद्ध महा करुणा से संसार को देख रहे थे। उन्होंने देखा राजा शुद्धोदन, रोग से पिड़ित है और बुद्ध को देखना चाहते है। बुद्ध कुछ अर्हत भिक्षु के साथ इर्दी शक्ति (लोकोत्तर शक्ति) से कपिलवस्तु में चले गये। कपिलवस्तु पहुँचकर राजा शुद्धोदन के शयनाशन में उनके सिर के पास बैठ गये बैठकर दाहिने हाथ को राजा के सिरपर रखकर सत्य क्रिया किया। इस सत्य क्रिया की शक्ति से राजा शुद्धोदन का कष्ट दूर हो गया। नन्द राजा शुद्धोदन का दाहिना हाथ पकड़ लिया पकड़कर सत्य क्रिया किया, एक क्षण में दाहिने राजा का वाया हाथ पकड़ लिया, सारिपुत्र पीठ पर हाथ रखकर मौद्गल्यायन अर्हत दोनो पैर को पकड़ कर सभी अर्हत लोक सत्य क्रिया किया। राजा शुद्धोदन के शरीर का दर्द पूर्ण रूप से समाप्त हो गया। राजा शुद्धोदन अस्वस्थ होने के कारण बहुत दुबला हो गये थे।

उस समय बुद्ध वयोवृद्ध पिता राजा शुद्धोदन को अनित्यप्रतिसंयुक्त की धर्म देशना की। धर्म देशना समाप्त होते ही राजा शुद्धोदन अर्हत पद प्राप्त किया है।

'अनिच्चा वत संङ्खारा, उप्पादवय-धम्मिनो।
उपजित्वा निरुज्झान्ति, तेसं वुपसमो सुखो' ।।

(महापरिनिब्बाणसूत)

राजा शुद्धोदन अर्हत होकर परिनिर्वाण होना

उस दिन से एक सप्ताह तक राजा शुद्धोदन अर्हत होकर विमुक्ति सुख का जीवन व्यतित किया। सप्ताह के आखीरी दिन बुद्ध को प्रणाम कर उसी शयनाशन में बैठकर सभी मंत्रियों को बुलाया और बुलाकर कहा यदि मुझसे कोई गलती हुआ हो तो हमें क्षमा कर देना। सभी लोग अरहत राजा शुद्धोदन को राजमहल के चारों ओर से घेरा हुआ था। महाप्रजावती देवी प्रमुख छोटे बड़े सभी लोग शोकाकुल हो गये। शोकाकुल होने का निष्फल कारण बताकर अनित्य प्रतिसंयुक्त धर्म कथा से सभी को उपदेश देकर देशना किया इसके पश्चात् अरहत राजाशुद्धोदन परिनिर्वाण हो गया।

बुद्ध पितृ देह को दाहसंस्कार कराकर एकत्रित जनसमूह को धर्म देशना करके पुनः वैशाली चले गये।

यशोधरा द्वारा प्रव्रज्या लेने की इच्छा प्रकट करना

यशोधरा द्वारा प्रव्रज्या लेने की इच्छा प्रकट करने की बात महाप्रजावती गौतमी ने सुनकर कहा पुत्री मैंने तीन बार याचना किया। तीनों बार याचाना करने के बाद भी मेरे जैसे माता को भी बुद्ध ने प्रव्रज्जित होने के लिए अनुमति नहीं दी। पुत्री तुम गृहस्थ जीवन में सिद्धार्थ राजकुमार का अग्रमहिसी होने से भी उसके सामने दो शब्द बोलने की साहस नहीं किया। अब तुम्हारे पास इतनी हिम्मत कहाँ से आ गयी है ? यह काम तुमसे नहीं होगा मैं स्वयं जाकर बुद्ध से प्रव्रज्या मागेंगे। इसके बाद तुम लोगों के लिए रास्ता साफ हो जायेगा। ऐसा कहकर यशोधरा को उस समय रोक दिया।

महा प्रजावती गौतमी की प्रव्रज्या

महाप्रजावती गौतमी प्रव्रज्जित होने के लिए रोहिणी नदी के तट पर जहाँ बुद्ध कलह-विवाद सूत्र की देशना किये थे उस सूत्र देशना के अवसान के पश्चात् पाँच सौ राजकुमार लोग भिक्षु बने थे। उन्हीं पाँच सौ राजकुमारों की भार्याओं के साथ केश मुण्डन कराकर कसाय वस्त्र धारण कर पैदल वैशाली की ओर चल पड़ी।

भिक्षुणी संघ का आरम्भ

भिक्षु आनन्द के माध्यम से भाग्यवत बुद्ध को अनुरोध करके गुरुधर्म आठ प्रतिपत्ती के रुप में स्वीकार करके प्रव्रज्या उपसम्पदा प्राप्त की है।

आठ गुरु धर्म

1) कोई भिक्षुणी उपसंम्पदा होकर सौ साल पूराना होने से भी उसी दिन उपसम्पदा प्राप्त किये हुए भिक्षु को देखते ही अपने आसन से खड़ी होकर उस भिक्षु को सम्मान करेगी।

2) किसी प्रदेश में भिक्षु नहीं होने से भिक्षुणी आराम नहीं बनाना चाहिए और वर्षावास नहीं करना चाहिए।

3) हर महिने में पन्द्रह दिन के अन्दर सभी भिक्षुणी लोग भिक्षु महासंघ से उपोसत अववाद लेना आवश्यक है।

4) वर्षावास के आखिरी दिन भिक्षु-भिक्षुणी दोनों के सामने वर्षावास समाप्त करना जरूरी है।

5) अपने द्वारा बहुत बड़ी गलती होने पर उस भिक्षुणी को भिक्षु और भिक्षुणी के सामने (उभतो संघ) प्रायश्चित करना आवश्यक है ।

6) शिक्षा मानक रूप में दो वर्ष तक उसे शिक्षा ग्रहण करना पड़ेगा। उसके बाद ही प्रव्रज्या उपसंम्पदा ले सकती है । किसी कारणवस कोई भिक्षुणी द्वारा किसी भिक्षु को आक्रोश पराभव नहीं करना चाहिए ।

7) कोई भिक्षुणी को किसी कारण वस भिक्षुओ को अनुशासना नहीं करना चाहिए । भिक्षु द्वारा भिक्षुणीयों को देशना प्राप्त करना आवश्यक है और भिक्षुणीयों को यह देशना स्वीकार करना जरुरी है ।

8) कोई भी भिक्षुणी अकेले किसी भिक्षु से उपदेश नहीं ले सकती है ।

इस आठ गुरु धर्म को स्वीकार करके प्रव्रज्या और उपसम्पदा लेने के बाद महाप्रजावती गौतमी को गुरु मानकर शाक्य राजकुमारियों ने प्रव्रज्या और उपसम्पदा प्राप्त किया प्रव्रज्या और उपसम्पदा ग्रहण करने के पश्चात् महाप्रजावती गौतमी को बुद्ध धर्म देशना किया । उसी धर्म देशना के अनुसार कर्मस्थान पूरा करने के बाद महाप्रजावती विदर्शना के माध्यम से अर्हत पद प्राप्त किया । भिक्षु नन्द की धर्म देशना सुनकर बाकि पाँच सौ शाक्य राजकुमारियों भी अर्हत हो गयी । उसके बाद एक भद्र कन्या (यशोधरा), महाप्रजावती की पुत्री नन्दा जैसे बहुत-सी राजकुमारियाँ आकर महाप्रजावती गौतमी से प्रव्रज्या और उपसम्पदा लिया ।

बुद्ध का श्रावस्ती में आगमन

वर्षावास समाप्त होते ही बुद्ध वैशाली से श्रावस्ती की ओर प्रस्थान किये । बुद्ध जेतवनाराम में रहते समय एक दिन कौशलाधिरश्वर राजा प्रशेन्नजीत बुद्ध के पास आ गया । आकर बुद्ध के पास बैठकर पूछा आप अनुत्तर सम्यक सम्बोधि प्राप्त किया है ? उत्तर देते हुए बुद्ध ने कहा मैं सम्यक सम्बोधि तो प्राप्त किया है । इसलिए सम्यक सम्बुद्ध हूँ । कौशल राजा ने कहा भाग्यवत बहुत से अनुयायी लोगों के युक्त किर्तिगत पूर्ण काश्यप, मक्खली घोषाल, निगण्ठनाथ पुत्र, वेलट्ठ पुत्र संजय, पकुद कच्चायान, अजीत केश कम्बली—ये छः आचार्य लोगों से भी हमने पूछा आप सम्यक सम्बुद्ध है कि नहीं तो किसी ने भी हमे सही जवाब नहीं दिया।

इसका कारण क्या है ? इन छः आचार्यों में सबसे कम उम्र वाला होने के कारण ऐसा कहा होगा । राजा प्रसेन्नजीत की बात सुनकर कुछ ने कहा।

राजकुमार, सूर्य, अग्नि और भिक्षु इन चारों को छोटा नहीं समझना चाहिए । धर्म देशना किया । देशना सुनकर राजा बहुत प्रसन्न हुए प्रसन्न होकर त्रिशरण शरणागत हो गये । त्रिशरण शरणागत होने के बाद राजा प्रशेन्नजीत बुद्ध के लिए जेतवनाराम में एक आराम बनबाकर पूजा किया । उस आराम को संघाराम का नाम दिया । बुद्ध की धर्म देशना सुनने के पश्चात् राजा त्रिशरण शरणागत हो गये । सुमना देवी भी प्रव्रज्या लेने की इच्छा व्यक्त किया । लेकिन राजा प्रसेन्नजीत की माता का उपास्थान करने के कारण सुमना देवी को भिक्षुणी शासन में प्रवेश नहीं मिल पाया ।

थोड़े दिन के बाद राजा की माता का देहान्त हो गया । उस घटना को लेकर राजा शोकाकुल हो गया और बुद्ध के पास जाकर घटना के बारे में जानकारी देने से बुद्ध ने धर्म देशना किया । सभी जीव मरते है, राजा प्रसेन्नजीत सुमना देवी के साथ जाकर भिक्षुसंघ को किमती वस्तु दान किया। उसी समय बुद्ध की धर्म देशना सुनकर सुमना देवी भी अनागामी हो गयी। और प्रव्रज्या की याचना की । उस समय जो बुद्ध ने धर्म देशना किया उस धर्म देशना को सुनकर सुमना अरहत पद प्राप्त किया ।

सिघंल द्विप में आगमन (वर्तमान श्रीलंका)

बुद्ध श्रावस्ती में रहते समय अप्रैल महिने (चैत-मास का महिना) में पूर्णिमा के दसवें दिन भोर में महा करुणा से दुनिया को देख रहे थे । सिंघल द्विप का छुलोदर और महोदर नाम से प्रसिद्ध दो नाग राजाओं के बीच एक माणिक्य पलंग के लिए बहुत बड़ा युद्ध छिड़ने का कारण देखा । यह युद्ध होने से बहुत ज्यादा नुकसान होने के बाद बुद्ध सिंहल द्विप में पधारने के लिए चेष्टा किया । अपने इर्दीशक्ति से बुद्ध सिंहल द्विप में पधारे । सिंहल द्विप में पधार कर मणीनाग नामक स्थान पर (वर्तमान मैयंगन पूज्य भूमि) गये । वर्तमान में श्रीलंका के पूज्यनीय स्थानों में मैंयगन भी एक प्रमुख स्थान है । वह प्रदेश जंगल में रहने वाले आदिवासियों का प्रदेश है । बुद्ध अपने ईर्दीशक्ति से मणीनाग पधार कर आसमान में समाधि मुद्रा में बैठकर प्रतिहार्य करके संसार का द्वेष, लोभ, क्रोध का आदिनव के बारे में विस्तार पूर्वक धर्म देशना किया । बैर होने का दोष, मैत्री होने का आनिसन्य जैसों का

वर्णन करते हुए काकोलुक जातक, फन्दन जातक, लटुकिक जातक, वट्टजातक, जैसे जातकों के माध्यम से धर्म देशना किया । धर्म देशना सुनने के पश्चात् दोनों नागराज सन्तुष्ट होकर माणिक्य पलंग को बुद्ध को दे कर पूजा किया। उस मणिक्य पलंग पर विराजमान होकर बुद्ध नाग समूह को धर्म देशना किया। धर्म देशना के बाद अनेकों नाग समूह त्रिसरण शरणागत् हो गये।

महोदर नागराजा के भाई मणिअक्खि नागराज भी कल्याण (कैलिनी) नगर से आ गये थे । बुद्ध की धर्म देशना सुनकर उससे प्रभावित होकर नित्य पूजा के लिए बुद्ध से कुछ वस्तु माँगा । बुद्ध ने माणिक्य पलंग मणिआखिक नागराज को दे दिया ।

(इस घटना को तिब्बती महायान धर्म ग्रन्थों में विशेष रूप से भूटान में दूसरे ढंग से प्रचलित है । महायान बौद्ध धर्मावालम्बियों का मानना हैं कि गुरु रिनपोछे (पद्दमसंभव) तिब्बत राजा के कहने पर सिंहल द्वीप के यक्ष लोगों का और नाग लोगों के आतंक से मनुष्यों को बचाने के लिए सिंहल द्वीप में गये थे । बुद्ध वहाँ समनलकन्द वर्तमान में श्रीपाद पर्वत में अपना श्रीपाद का चिह्न रखकर कुछ समय बिताया । तिब्बत, भूटान के बौद्ध धर्म ग्रन्थों में समनलकंद (श्रीपादपर्वत) की मिट्टी का रंग, पेड़-पौधों का वर्णन, मौसम का विवरण, जानवरों का उल्लेख आदि मिलता है। बुद्ध का सिंहल द्वीप आगमन सिंहली इतिहास के अन्तर्गत महावंश में मिलता है । दोनों विषयों में गम्भिरता से पढ़कर निर्णय करना आवश्यक है । गुरु रिनपौ (पद्दम सम्भव) का सिंहल द्वीप आगमन के विषय में हिमालय राज्य भूटान के बुद्ध बिहारों में विस्तार पूर्वक चित्रांकन किया हुआ है । जो वर्तमान में देखने को मिलता है) ।

नागराज को देखकर धर्म देशना करके बुद्ध वापस श्रावस्ती जेतवनाराम में चले आये ।

बुद्ध वर्षा ऋतु (वर्षा वास) समाप्त करने के बाद दक्षिण गिरी जनपद में जाने के लिए तैयार हुए । जब यह समाचार अनाथपिण्डिक सेठ, महा उपसिका विशाखा और प्रसेन्नजीत कोशल को मालुम हुआ तो वे सभी अपने-अपने ढंग से समझाने की कोशिश किया कि कुछ दिन श्रावस्ती जेतवनाराम में रहे । लेकिन बुद्ध किसी की बात नहीं सूने । इसलिए अनाथपिण्डिक

सेठ दुखी होकर एक कोना पकड़ कर चिन्तीत मुद्रा में बैठ गये । यह घटना सेठ की एक नौकरानी पूर्णा नामक दसी ने देखा और देखकर सेठ से पूछा आप दुखी होकर इतना चिन्ता क्यों कर रहे है । अनाथपिण्डिक सेठ ने पूर्णा दासी को सभी बात बता दिया । पूर्णा दासी ने कहा यदि आप आज्ञा दे तो मैं भी जाकर बुद्ध से अनुरोध करुगी कि आप श्रावस्ती जेतवनाराम छोड़कर मत जाइए । यदि बुद्ध ने हमारी बात को मान लिया तो आप हमें क्या देंगे । अनाथपिण्डिक सेठ ने कहा यदि बुद्ध तुम्हारी बात मानकर श्रावस्ती जेतवनाराम में रुक गये तो मैं तुम्हें दासी भाव से मुक्त करके अपने परिवार के एक सदस्य के रूप में मान लेंगे ।

इस प्रकार समझौते के अनुसार अनाथपिण्डिक सेठ की दासी पुर्णा जेतनवनाराम में जाकर बुद्ध से कहा भाग्यवत मेरे उपर दया करके दक्षिणगिरी जाने का कार्यक्रम रद्द कर दीजिए । बुद्ध ने पूर्णा से कहा यदि हम अपना कार्यक्रम रद्द किया तो इससे तुम्हें क्या मिलेगा । पूर्णा दासी ने कहा यदि आप अपना कार्यक्रम रद्द कर दिया तो मैं दासी से मुक्त हो जाऊगी । बुद्ध अपने दिव्य ज्ञान से पूर्णा दासी के भविष्य के बारे में विचार-विमर्श किया और देखा पूर्णा दासी भविष्य में भिक्षुणी होकर अरहत होगी । बुद्ध दक्षिण गिरी जाने का कार्यक्रम रद्द कर दिया । पुर्णा दासी ने जाकर अनाथपिण्डिक सेठ को अपना कार्य पूर्ण करने की सूचना दिया । इस बात की पूर्ण जानकारी करने के बाद अनाथपिण्डिक सेठ पूर्णा दासी की बात सही होने पर उसकी प्रसंशा करके दासी भाव से मुक्त कर दिया । राजा प्रसेन्नजीत कोशल और महाउपासिका विशाखा दोनों भी पूर्णा दासी की प्रसंशा सत्कार किया । पूर्णा दासी भिक्षुणी बनकर ध्यान भावना करने के कारण अरहत पद प्राप्त किया है ।

परिच्छेद - 35

एक अतिसुन्दर दिव्यांगना को प्रकट करना

छठवाँ वर्षा वास मुकुल पर्वत पर

बुद्ध श्रावस्ती से निकल कर अपना छठवाँ वर्षा वास मुकुल पर्वत पर व्यतित किया । मुकुल पर्वत पर से वर्षावास समाप्त करने के पश्चात बुद्ध चारिका करते हुए राजगृह में जाकर कुछ समय तक रुकें ।

रूप-मद से अहंकारी रानी खेमा

मथुरट सागल शहर के राजकुल में विशेष रूप श्री से सम्पन्न खेमा नामक एक राजकुमारी थी । बड़ी होने के बाद खेमा मगधराजा विम्बिसार की पहली पत्नी बनी । खेमा हरवक्त अपने रूप श्री के घमण्ड में रहती थी। खेमा को पता चला की बुद्ध रुप की अनित्यता के बारे में धर्म देशना करते है इसलिए वह कभी बुद्ध के पास नहीं गयी । राजा बिम्बिसार ने सोचा किसी भी तरह रानी खेमा को बुद्ध के पास भेजूँगा । राजा बिम्बिसार ने वेणू वनाराम को सुन्दर ढंग से अलकृंत करवाया और अलंकृत करवाकर नृत्य-गीत आदि कार्यक्रमों से अभूतपूर्व एक उत्सव कराया । गीत गाने का शब्द सुनते ही रानी खेमा का मन मचलना शुरू हो गया और उस मनोरजंन कार्यक्रम को देखने के लिए रानी खेमा वेणूवनाराम में चली गयी।

राजविम्बिसार ने अपने राजपुरुषों को आज्ञा दिया कि यदि खेमा वगैर बुद्ध दर्शन के वापस आने को तैयार हो गयी तो उसे जबरदस्ती बुद्ध के पास ले जाइयेगा । संगीत का कार्यक्रम समाप्त होने के बाद खेमा बुद्ध के पास न जाकर वापस महल में जाने को तेयार हुई लेकिन राजपुरुष राजा की आज्ञा के अनुसार रानी खेमा को जबरन बुद्ध के पास ले गये । बुद्ध ने देखा खेमा हमारे पास आ रही है तो बुद्ध ने अपने इर्दी शक्ति से एक अति सुन्दर दिव्यागना को निर्मित किया । वह दिव्यागना एक पंखा से बुद्ध को हवा कर रही थी । उस दृश्य को खेमा को दिखाने के लिए उपाय किया। उस दिव्यागना का रूप-श्री देखने के बाद खेमा ने देखा इतनी खूबसूरत

स्त्री बुद्ध के पास है । मैं तो उसकी नौकरानी होने के काबिल नहीं हूँ । बुद्ध रूपश्री का निन्दा करने की बात लोक प्रचार करा दिया । यह झूठ है सोचकर उस दिव्यांगना की तरफ देखते ही रह गयी ।

बुद्ध के अधिष्ठान् की शक्ति से इस स्त्री रुप को प्रथम वयस्क से मध्यम वयस्क और मध्य वयस्क से वृद्ध वयस्क तक ले आया । बाल पका हुआ, चमड़ा सिकुड़ा हुआ, दाँत गिरा हुआ, जरा जीर्ण बृद्धा का रूप ले लिया। पंखा भी जमीन पर गिर गया । वह भी जमीन पर गिर गयी । खेमा ने देखा इतना सुन्दर रुप श्री से युक्त शरीर कैसे विनाश के मुँख में चला गया। मेरा शरीर भी एक दिन ऐसा ही होगा । खेमा रानी की बुद्धि खुलने के बाद शरीर की गन्दगी के बारे में समझ आया । बुद्ध इस घटना को लेकर रानी खेमा को शरीर के अनित्य, दुःख, अनात्म के विषय में धर्म देशना किया । क्लेश कम होने से खेमा का चित्त निरोगी हो गया । बुद्ध खेमा को महानिदान सुत्र की धर्म देशना की है । (महानिदान सूत्र दिघनिकाय सूत्तनिपात में मिलता है) महानिदान सूत्र सुनने के बाद रानी खेमा सोवान हो गयी । राजा विम्बिसार से अनुमति लेकर प्रव्रज्जित हो गयी । प्रव्रज्जित होकर पन्द्रह दिन के अन्दर एक दिन को जलाने और बुझने का क्रम आरम्भ करके विदर्शना भावना किया । इसके बाद रानी खेमा अर्हत पद प्राप्त की।

विकुर्ति इर्दी प्रातिहार्य पाने के लिए मना करना

बुद्ध के राजगृह में रहते समय एक सेठ साठ फीट लम्बा एक बाँस लेकर उसके उपरी भाग पर लाल चन्दन का एक पात्र रख दिया । शहर और नगर में प्रचार करवाया कि कोई इर्दी मान अरहत हो तो इस पात्र को ले ले । पूर्ण काश्यप आदि, तिर्थांकर लोग बहुत प्रयास किये सेठ को धोखा देकर पात्र लेने के लिए लेकिन सफल नहीं हुए साँतवे दिन इस समाचार को पिण्डोल भारद्वाज अरहत सुनकर आसमान से आकर पात्र को अपने हाथ में ले लिया । सेठ उस लाल चन्दन के पात्र को पिण्डोल भारद्वाज अरहत को भेट किया । इस घटना को लेकर बुद्ध सभी भिक्षुओं को इकट्ठा करके विकुर्ति इर्दी नहीं करने का आदेश दिया । उसके बाद सभी तिर्थांकर लोग बहुत खुश हुए और खुश होकर कहा आज के बाद बुद्ध और बुद्ध के शिष्यगण प्रातिहार्य नहीं करेंगे । आज के बाद बुद्ध के साथ हम लोग प्रातिहार्य करेंगे ऐसा कहकर प्रचार किया । इस प्रचार से राजा विम्बिसार

बुद्ध से इस सम्बन्ध में पूछ-ताछ किया । बुद्ध ने कहा महाराज अभी आप बगीचे का आम खाने के लिए किसी को मना किया तो बाकि लोगों को छोड़कर आप तो खा सकते हैं । इसलिए यह आज्ञा मेरे लिए नहीं है । यह आज्ञा भिक्षु संघ के लिए है । आज से चार महिने के बाद श्रावस्ती नगर के समीप में गण्डब्ब बृक्ष मूल के समीप प्रातिहार्य पाने की सूचना राजा को दिया । उसी दिन राजगृह में भिक्षाटन करने के बाद श्रावस्ती के लिए इर्दी से रवाना हो गये । तिर्थक परिषद बहुत खुश होकर कहा श्रमण गौतम हम लोगों के साथ प्रातिहार्य करने में सक्षम नहीं होने से भागा जा रहा है। यह कहते हुए बुद्ध और भिक्षू संघ के पिछे चले गये । उस शब्द को सुनते ही आम जनता भी उत्सूक होकर प्रातिहार्य देखने के लिए श्रावस्ती में चले गये । बुद्ध श्रावस्ती में जाकर गण्डब्ब बृक्ष मूल के समीप आषाढ़ी पूर्णिमा के दिन शाम के वक्त प्रातिहार्य किया ।

एकत्रित जन समूह से कोई व्यक्ति बुद्ध को एक पका हुआ आम भेट किया । उसी जगह खाली जमीन में बुद्ध वह आम खाकर उसी गुठली को गाड़कर अपने इर्दी शक्ति से बहुत बड़ा आम का पेड़ तैयार किये । उसके साथ-साथ उस स्थान पर एक आम का बगीचा भी तैयार किये । इस आश्चर्य को देखकर बुद्ध और महासंघ का पीछा करने वाले तिर्थक परिषद जनता से बचने के लिए वहाँ से भागना शुरू किये । बुद्ध ने तुरन्त एक वारिस के साथ धुल भरी तेज हवा चलने के लिए अधिष्ठान किया । वहाँ से भाग रहे तिर्थांकर समूह पानी से भीगने और धुल लगने से अजीव रूप-रंग के दिखाई देने लगे । श्रावस्ती में बुद्ध का यमक प्रातिहार्य यही है । यमक प्रातिहार्य के पश्चात् बुद्ध सभी को धर्म देशना किये । उस स्थान को गण्डब्ब वृक्ष मूल के नाम से जाना जाता है । (जिस स्थान को गण्डब्ब वृक्ष मूल कहते हैं । उस स्थान पर राजा अशोक ने एक स्तूप का निर्माण करवाया था जिसका खण्डहर आज भी श्रावस्ती में देखने को मिलता है) ।

यमक प्रातिहार्य के बाद बुद्ध तावतिन्स दिव्य लोक में चले गये । वहाँ बुद्ध को नहीं देखने से एकत्रित जन समूह दुखी होकर रोना शुरु कर दिया। महा मौद्गल्यायन अर्हत के पास जाकर पूछा—बुद्ध कहाँ है ? लेकिन महामौद्गल्यापन भगवान बुद्ध के बारे में सब कुछ जानते हुए भी एकत्रित जन समूह से कहा आप लोग अर्हत अनुरुद्ध से पूछ लो । सभी लोग जाकर

अनुरुद्ध अर्हत से पूछा कि बुद्ध कहाँ है । अनुरुद्ध अरहत ने कहा बुद्ध अपना सातवाँ वर्षा वास के लिए तावतिन्स दिव्य लोक में जाकर पाण्डुकम्बल शैलासन सातवाँ वर्षा वास करते हुए मातृ दिव्य राज पुत्र को अभिधर्म देशना करने का घटना बताया । जनता ने पूछा बुद्ध वापस कब आयेंगे । अर्हत अनुरुद्ध ने कहा वर्षा वास समाप्त होने के बाद आज से तीन महीने बाद बुद्ध हम लोगों के बीच पधारेंगे । बुद्ध के आने का प्रतिक्षा करते हुए महा-जन-समूह तीन महीने तक गण्डब्ब वृक्ष मूल में ही डेरा डालकर रहने लगे। इन तीन महीने जनता को खाने-पिने की व्यवस्था अनाथपिण्डिक सेठ ने किया और तीन महीने जनता को धर्म देशना करने का कार्य अर्हत महामौद्गल्यायन ने किया ।

सातवाँ वर्षा वास तावतिन्स दिव्यलोक में

तावतिन्स दिव्य लोक में वर्षा वास के समय बुद्ध पूरा तीन महीना मातृ दिव्य राज सहित दिव्य समूह को भी धर्म देशना किया । बुद्ध दिन के भोजन तक धर्म देशना करके शाम के वक्त अपने जैसा रुप निर्मित करके, धर्म देशना का बन्दोवस्त करके बुद्ध हिमालय की तरफ चले जाते थे । हिमालय पर्वत पर दातुन करके हाथ-मुँह धोने के बाद पिण्डपात के लिए उत्तर-कुरु द्वीप में जाते थे और पिण्डपात करके पुन: हिमालय पर्वत पर चले आते थे । हिमालय पर्वत के अनोतत्व (मानसरोवर) के पास बैठकर भोजन ग्रहण करते थे । उस वक्त सारिपुत्र आकर बुद्ध की सेवा सत्कर करते थे । भोजना अवसान में बुद्ध ने सारिपुत्र से कहा सारिपुत्र हमने जो धर्म देशना की है उसी धर्म देशना को अपने साथ रहने वाले भिक्षुओं को तुम देशना करो। बुद्ध जो-जो धर्म-देशना तावतिन्स में किये । उन सभी दिनों की धर्म देशना सारिपुत्र अर्हत ने सभी भिक्षुओं को विस्तार पूर्वक देशना किया । तत्पश्चात् बुद्ध तावतिन्स दिव्य लोक में जाकर निर्मित बुद्ध रूप को समाप्त कर जो निर्मित बुद्ध धर्म देशना करते समय कहाँ रुका था उस जगह से धर्म देशना करना आरम्भ किया । उसी तरह बुद्ध तावतिन्स दिव्य लोक में तीन महीना वर्षा वास का समय बिताया ।

धर्म देशना तीन महीने में समाप्त हो गया । धर्म देशना के अन्त में मातृ दिव्य पुत्र सोवान हो गये । देवता गण मार्ग फल प्राप्त किया है। वर्षा-वास समाप्त होने के सात दिन पहले महामौद्गल्यायन बुद्ध के पास

जाकर पूछा भाग्यवत आप धरती पर कब और कहाँ पधारेगे । बुद्ध ने कहा आज से सातवे दिन संकस नगर द्वार में पधारने की जानकारी दिया। बुद्ध ने कहाँ यदि कोई हमारा दर्शन करना चाहे तो उस स्थान पर आना उचित होगा ।

श्रावस्ती जेतवन से लेकर संकिसा नगर की दूरी तीस योजन (360 कि.मी.) है । श्रावस्ती में एकत्रित महा जनसमूह जानकारी मिलने पर बहुत जल्द संकस नगर को पहुच गये । (वर्तमान फरुखावाद जिला में संकिसा विद्यमान है) । जहाँ बुद्ध तावतिन्स दिव्य लोक से धरती पर अपना श्रीपाद रखा उस स्थान पर राजा अशोक ने एक स्तूप बनवाया । अभी उसका खण्डहर देखने को मिलता है । विभिन्न बौद्ध देशों का नवीन बौद्ध बिहार भी देखने को मिलता है ।

बुद्ध तावतिन्स दिव्य लोक से वर्षा वास समाप्त कर शक्र-ब्रह्म आदि की पूजा के बीच संकस द्वार में अपना श्रीपाद रखा । इस उत्सव श्री देखने के पश्चात् जनता बुद्ध को नमस्कार करके अपनी जिन्दगी में कभी भी ऐसा मनोरम दृश्य नहीं देखने की बात किया । इस घटना को लेकर बुद्ध धर्म देशना किया । धर्म देशना सुनने के बाद दिव्य मनुष्य महापरिषद धर्म के बारे में जानकारी ली । अरहत सारिपुत्र के साथ रहने वाले पाँच सौ भिक्षु भी अर्हत हो गये । अरहत होने के बाद बुद्ध प्रत्येक भिक्षु से व्यक्तिगत विषयों को लेकर सोवान आदि से प्रश्न पूछा । इस बुद्ध शासन में जो बुद्ध जबाब दे सकता है । वैसा प्रश्न महाप्रज्ञावान अरहत सारिपुत्र से पूछा । लेकिन बुद्ध ने जो सारिपुत्र से पूछा उसका उत्तर अरहत सारिपुत्र नहीं दे पाया । बुद्ध ने महाअर्हत सारिपुत्र को एक न्याय का क्रम देशना किया। उसके बाद सारिपुत्र अर्हत सभी अर्हत भिक्षुओं से आगे जाकर सभी धर्म प्रश्न का उत्तर दिया । तत्पश्चात् बुद्ध ने अर्हत सारिपुत्र को प्रज्ञावान लोगों का अग्र प्राप्त अर्हत के रूप में मान्यता प्रदान किया ।

मैत्री बोधिसत्व का प्रव्रज्या

देवारोहन (बुद्ध का तावतिन्स देव लोक से पृथ्वी पर पधारने का उत्सव) देखने के बाद बहुत से लोग अप्रमान प्रसन्न हो गये । प्रसन्न होकर बहुत-सी जनता बुद्धत्व की प्रार्थना किया । विशेष रूप से मैत्री बोधिसत्व, बुद्ध और सारिपुत्र अरहत के बीच में धर्म पर विचार-विमर्श हुआ । वह

विचार-विमर्श प्रश्न-उत्तर के हिसाब से हुआ । इस प्रश्न-उत्तर को सुनने के बाद मैत्री बोधिसत्व और अनेक लोग बहुत प्रसन्न हो गये ।

मैत्री बोधिसत्व (भविष्य में होने वाले बुद्ध) उस दिन से सोलह असंख्य कल्प लक्ष्य के पहले बुद्धत्व प्राप्ति के लिए आवश्यक पारमिता पूर्ण करते हुए गौतम बुद्ध के समय में दिव्य लोक से अपना आयु समाप्त करके श्रावस्ती नगर से तीस योजन (360 किमी.) दूर संकसपुर एक सेठ के परिवार में उत्पन्न हुए । उस परिवार के मुखिया का नाम श्री वड्ड था । सुख सम्पत्ति से बड़ा होने के बाद दिशापामुख आचार्य के पास जाकर शिल्प शास्त्र ग्रहण किया । माता-पिता की मृत्यु होने के बाद उस कुल (परिवार) का प्रमुख बन गया । सभी भव-भोग सम्पत्ति पूर्णरूप से सुख भोग करने लगा । देवारोहन वाले दिन गृहस्थ जीवन छोड़कर एक हजार मित्रगणों के साथ बुद्ध के पास जाकर प्रव्रज्या ग्रहण किया और उपसम्पदा भी प्राप्त किया । तत्पश्चात् आर्य मैत्री बोधिसत्व बुद्ध वचन का सही तरह से अध्ययन कर बाकि भिक्षु समूह के साथ और शेष लोगों को भी समझाया ।

मैत्री बोधिसत्व का विवरण

(बौध धर्म के अनुसार जिस किसी व्यक्ति को बुद्धत्व प्राप्त करना है तो किसी बुद्ध के पास जाकर उससे अनुमति प्राप्त करना ही विवरण के नाम से जाना जाता है । यह परम्परा विशेष रूप से थेरवादी सम्प्रदाय में देखने को मिलता है । जैसे गौतम बुद्ध कई असंख्य वर्षों के पहले दिपांकर बुद्ध के सामने सुमेध नामक तापस के रूप में जाकर भविष्य में बुद्ध होने के लिए अनुमति माँगा । इसी को विवरण कहते हैं ।)

एक दिन मैत्री बोधिसत्व को दो किमती वस्त्र मिला । उस एक वस्त्र से बुद्ध के गन्ध कुटि को मण्डप छाया के जैसा बनाया और दूसरे वस्त्र को टुकड़ा-टुकड़ा करके उस मण्डप छाया के चारों तरफ सजाया ।

(अंक 139)

बुद्ध आर्य मैत्रीबोधिसत्व के चित्त के बारे में जानने के बाद भिक्षुसंघ के सामने आर्य मैत्री बोधिसत्व को दिखाया और दिखाने के पश्चात् धर्म देशना किया । भिक्षुओं में उत्तम वस्त्र युगल (दो वस्त्र) से बुद्ध की पूजा करने की लीला देखी । यह महान व्यक्ति अपने आने वाले महाभद्र कल्प में मैत्री नामक

सम्यक सम्बुद्ध होगा । उस समय वाराणसी नगर में केतुमति नामक एक राजधानी होगा । वहाँ शंख नामक एक चक्रवर्ती राजा होगा । उस शंख चक्रवर्ती राजा का पुरोहित ब्राह्मण सुब्रह्म मैत्री बुद्ध का पिताजी होगा । सुब्रह्म ब्रह्मण की पत्नी ब्रह्मवती नाम से होगी । नाग वृक्ष के नीचे बुद्धत्व की प्राप्ति होगी । ऐसा कहकर विवरण दिया । (बुद्धत्व प्राप्ति के लिए अनुमति दिया ।)

परिच्छेद - 36

अण्डा, चूजा और चिड़ियों को मारकर खाने का कर्मफल

बुद्ध का आठवाँ वर्षावास

बुद्ध संकसपुर थोड़े ठहरने के बाद चारिका करते हुए भग्गदेश के सुनसुमार गिरि पर्वत के आस-पास भेषकला अरण्य (जंगल) में आठवाँ वर्षा-वास का समय व्यतीत किये । उस समय बोधिराजा नामक एक राजकुमार का बहुत विशाल एवं भव्य महल तैयार हो रहा था । उस महल का कोकनद नाम दिया । गृह प्रवेश के दिन इस उत्सव में पधारने के लिए बुद्ध को भी निमन्त्रण दिया ।

बोधिराजकुमार नि:सन्तान व्यक्ति थे । बोधिराजकुमार ने प्रार्थना किया कि हमें एक पुत्र या पुत्री मिलने से यदि हमारा समृद्ध होने को हो तो बुद्ध हमारे सफेद बिछे हुए चादर के कपड़े के उपर से हमारे महल में प्रवेश करेंगे । बुद्ध बोधिराजकुमार के चित्त में क्या है जान गये । बुद्ध उस सफेद विछौने पर से आगे नहीं बढ़े । बोधिराजकुमार ने बुद्ध से तीन बार अनुरोध किया । बुद्ध द्वारा उस सफेद कपड़े के उपर से महल के अन्दर प्रवेश करने के लिए लेकिन बुद्ध ने बोधिराजकुमार की बात को नहीं माना ।

बुद्ध ने पूछा राजकुमार क्या सोचकर यह सफेद चादर मेरे जाने के लिए जमीन पर बिछाया बोधि राजकुमार ने कहा यदि हमें एक पुत्र या पुत्री मिलने का भाग्य हो तो बुद्ध उस चादर के उपर से ही हमारे घर में प्रवेश करेंगे । बुद्ध ने कहा इसलिए मैं इस चादर के उपर से नहीं गया । बोधिराजकुमार ने पूछा भाग्यवत मेरे लिए कोई पुत्र या पुत्री मिलने की सम्भावना है कि नहीं । बुद्ध ने कहा राजकुमार यह सम्भव नहीं है । बोधिराजकुमार ने पूछा इसका कारण क्या है ? बुद्ध ने कहा तुम पूर्व जन्म में बहुत बड़ा पाप कर्म किया है । उसी के कारण तुमको कोई सन्तान नहीं होगा । बोलकर निम्नलिखित धर्म देशना किया ।

'पूर्व जन्म में व्यक्तियों का एक समूह किसी स्थान पर जाने के लिए जलमार्ग से नाव से चले लेकिन समुद्र के बीच में ही नाव खराब हो गयी। उसी नाव में एक परिवार (पति-पत्नी) भी बीच समुद्र में एक लकड़ी की सहायता से तैर कर एक छोटे से द्वीप में जाकर अपना जान बचाया। उस छोटे से द्वीप पर अनेक प्रकार के पक्षि थे। दोनों को भोजन के लिए कुछ नहीं मिलने के कारण पक्षियों का अण्डा आग में पकाकर खाया। जब अण्डा नहीं मिलता था तो चिड़ियों के बच्चों को मार कर खाया। दोनों अपने जीवन युवावस्था, मध्यावस्था और वृद्धावस्था के तीनों काल में यहीं कार्य किया। इसी पाप कर्म के कारण आप को कोई सन्तान नहीं होगा। धर्म देशना का संक्षेप यही है कि अपने को प्यार करने वाले तीनों काल युवावस्था, मध्यावस्था और बृद्धावस्था में अपने को सही ढंग से शील आदि गुण धर्म से सुरक्षित करना चाहिए। देशना के अन्त में राजकुमार बोधिराज सोवान हो गये।

श्रावस्ती में पधारना और पुन्न का प्रव्रज्या

बुद्ध सुमसुमार गिरि से वर्षा वास समाप्त करने के बाद पुनः श्रावस्ती के लिए रवाना हुए। श्रावस्ती में कुछ समय तक ठहरे। उस समय सूनापरान्त देश से सुप्पारक बन्दरगाह से पाँच सौ बैलगाड़ी पर सामान लादकर कुछ व्यापारी व्यापार करने के लिए निकले। व्यापारियों के साथ श्रावस्ती से पुन्न नाम का भी एक व्यापारी गया था। पुन्न ने देखा इस प्रदेश से अनेक लोग श्रावस्ती की ओर जा रहे है। पुन्न भी उनके पीछे-पीछे जेतवनाराम को गया। बुद्ध का धर्म देशना सुनने के बाद सन्तुष्ट होकर बुद्ध और भिक्षु प्रमुख महासंघ को दान दिया। व्यापार से कमाया हुआ धन खजांची के द्वारा अपने भाई के पास भेजकर पुन्न ने प्रव्रज्या ग्रहण किया।

पुन्न बुद्ध के पास जाकर कहा—मैं दृढ़ अधिष्ठान से भिक्षु जीवन के सभी नियमों का पालन कर रहा हूँ। इसलिए आप मेरे लिए बहुत विस्तृत धर्म देशना न करके संक्षेप में ही कीजिए।

पुन्न भिक्षु का सूनापरान्त प्रदेश में जाना

बुद्ध ने पुन्न को संक्षेप में अरहत प्राप्त करने का धर्म देशना दिया। (इसके बारे में विस्तार पूर्वक मंझिम निकाय के पून्न वत सूत्र में मिलता है।)

उसके बाद बुद्ध ने पूछा यहाँ से जाकर अब कहाँ रहोगे । पून्न ने कहा सूनापरन्त नाम का एक जनपद है, जाकर उसी जनपद में रहेंगे ।

बुद्ध ने कहा पुन्न सूनापरन्त जनपदवासी बहुत दुष्ट प्रवृत्ति के है और वे सभी आप लोगों को आक्रोश करेंगे ।

पुन्न ने कहा भाग्यवत वे लोग आक्रोश तो करेंगे लेकिन हाथ-पैर से तो नहीं मारेंगे, वह भी अच्छी बात है ।

बुद्ध ने कहा यदि वे लोग हाथ-पैर से मारेंगे तो, पुन्न ने कहा हाथ-पैर से मारने से कोई बात नहीं है लेकिन पत्थर से तो नहीं मारेगा ।

बुद्ध ने कहा यदि पत्थर से मार दिया तो, पुन्न ने कहा पत्थर से मारेगा तो ठीक है लेकिन डण्डा से तो नहीं मारेगा ।

बुद्ध ने कहा, यदि डण्डा से मार दिया तो, पुन्न ने कहा आयुध से मारकर हमारा प्राण तो नहीं लेगा तब भी वे लोग अच्छे है ।

बुद्ध ने कहा, यदि वे लोग तुम्हारी जिन्दगी समाप्त कर दिया तो, पुन्न ने कहा यदि वे लोग हमारा प्राण-घात करेगा तो बहुत से लोग होते हैं, जो शारीरिक बन्धन समाप्त करने का उपाय खोजते है और इसके लिए बहुत मेहनत करता है । इसलिए हम समझेंगे कि वगैर मेहनत किये ही हमारे जिन्दगी को समाप्त करने वाला कोई तो मिला ।

पुन्न भिक्षु की बात सुनकर बुद्ध तीन बार साधुवाद दिया और कहा आप सूनापरान्त प्रदेश में रहने योग्य है ।

पुन्न बुद्ध से आज्ञा लेकर वहाँ से निकलकर सूनापरन्त प्रदेश में जाकर अम्बवटक पर्वत पर रहना शुरू कर दिया । एक दिन पिण्डपात के लिए व्यापारियों के गाँव में चले गये । पुन्न का छोटा भाई पुन्न भिक्षु से कहा आप यहाँ से मत जाइए आप हमारे यहाँ वर्षा वास कीजिए । आपको जो चाहिए मैं उस वस्तु की व्यवस्था करूँगा । छोटे भाई की बात को सुनकर पुन्न भिक्षु समुद्र के किनारे गिरि नाम से प्रसिद्ध विहार में वर्षा वास किया। उसी समुद्र के विहार में रहने से समुद्र की घोषणा बहुत होने के कारण (समुद्र की लहरों की आवाज) कर्मस्थान (ध्यान भावना) के लिए बाधा उत्पन्न हो रहा था । इसलिए पुन्न भिक्षु समुद्र गिरि विहार को छोड़कर मातुल गिरि नामक एक विहार में चले गये । वहाँ भी पक्षियों का कोलाहल अधिक होने

के कारण उस स्थान को भी छोड़कर वाणिज्य ग्राम में जनशून्य एक मकूलाराम नाम बुद्ध विहार में वर्षावास किया । पुन्न ध्यान-भावना के फलस्वरूप अरहत प्राप्त किया ।

एक दिन पुन्न भिक्षु का छोटा भाई अपने व्यापार के लिए पाँच सौ साथियों के साथ व्यापार के लिए बाहर जाने के लिए तैयार होकर पुन्न अरहत के पास जाकर त्रिशरण-पंचशील ग्रहण किया । इसके बाद जलमार्ग से रवाना हो गया । इसी तरह यात्रा करते समय एक छोटे से द्वीप में पहुँच गये । वह द्वीप लाल चन्दन के वृक्षों से भरा था सभी लोगों ने सोचा इससे ज्यादा किमती वस्तु नहीं मिलेगा । नाव को खाली करके लालचन्दन की लकड़ी से भरकर वापस जाने के लिए निकल पड़े । समुद्र में नाव एक स्थान पर फँस गयी । काफी प्रयास के बाद भी नाँव नहीं निकली तो पुन्न भिक्षु लोगों का जरूर मदद करेंगे । सुबह अपने छोटे भाई व्यापारी को सोचते हुए अधिष्ठान किया कि हमारा छोटा भाई और पाँच सौ व्यापारी मित्र लोग किसी परेशानी में न फँसे । छोटे भाई के साथ गये हुए पाँच सौ मित्र व्यापारी लोग सुख से अपने गन्तव्य तक पहुंच गये । बगैर परेशानी से अपने गाँव पहुँचने से सभी व्यापारी लोग बहुत प्रसन्न हुए । सभी लोग अपनी स्त्रियों के साथ जाकर पुन्न अर्हत से त्रिशरण लेकर शरणागत हो गये ।

इसके प्रश्चात् लाल चन्दन की लकड़ी से एक बुद्धबिहार बनवाया ।

सभी व्यापारी लोग नाँव से सामान उतार कर उसमें से कुछ सामान पुन्न भिक्षु को भेट किये । पुन्न अर्हत ने कहा यह सामान हमारे किसी काम का नहीं है । इसके बाद पूछा तुम लोग कभी बुद्ध को देखा है कि नहीं सभी व्यापारी लोगों ने कहा हम लोग कभी बुद्ध के बारे में सूना भी नहीं। पुन्न अर्हत ने कहाँ तब तुम लोग ऐसा करो, लाल चन्दन की लकड़ी से बुद्ध के लिए एक बिहार बनाओ । पुन्न अर्हत को जो लाल चन्दन की लकड़ी दान दिये थे और आपस में इक्कठ्ठा करके बुद्ध और भिक्षु महासंघ के लिए एक बिहार बनवाया । बिहार पूर्ण रुप से तैयार हो जाने के पश्चात् पुन्न अरहत को सूचना दिया । पुन्न अरहत अपने ऋद्धि से बुद्ध के पास जाकर सूनापरन्त प्रदेश में बने हुए नव निर्मित लालचन्दन बिहार में पधारने के लिए प्रार्थना किया ।

बुद्ध पुन्न अरहत का निमत्रण स्वीकार करके पाँच सौ अरहत भिक्षुओं के साथ इर्दी शक्ति से सूनापरन्त नगर में पधारे । उस समय सच्चवद नामक

पर्वत में एक जटील तपस्वी रहते थे बुद्ध उसको धर्म देशना करके ये ही भिक्षु प्रव्रज्या दिया । उस (जटील) भिक्षु को भी लेकर बुद्ध व्यापारियों के गाँव में चले गये । गाँव वाले बुद्ध और भिक्षु महासंघ को संघदान कराकर लालचन्दन से बने बिहार में ले गये । (सच्चवद वर्तमान आन्ध्रप्रदेश में तिरुपति मंदिर के नाम से उस स्थान को पहचानते हैं उसी स्थान का पुराना नाम सच्चवद है) ।

सन्ध्या के समय वाणिज्य गाँव के सभी लोग फूल-माला जैसे पूजा की सामाग्री लेकर लाल चन्दन बिहार में चले गये । बुद्ध जन समूह को धर्म देशना करने के पश्चात् मार्ग फल प्राप्त कराया । जन समूह द्वारा बिनती करने से बुद्ध कुछ समय तक वाणिज्य गाँव के लालचन्दन बिहार में समय बिताया ।

बुद्ध भिक्षु पुन्न अरहत को लाल चन्दन बिहार में रहने को कहकर नर्मदा नदी के तट पर चले गये । नर्मदा तट का एक नागराज बुद्ध के पास आकर अभिवादन करके, नागराज बुद्ध को अपने भवन में लेजाकर सेवा-सत्कार किया । नागराज के अनुरोध पर बुद्ध नर्मदा नदी के तट पर अपने श्रीपाद का चिह्न रखा । उसके बाद सच्चवद पर्वत पर जाकर उस स्थान पर सच्चवद भिक्षु को ठहरने का प्रबन्ध करवाया । सच्चवद भिक्षु भी बुद्ध से कुछ पूज्य वस्तु माँगा । बुद्ध सच्चवद शैल के उपर अपने श्रीपाद का चिह्न रख दिया ।

'यं नम्म दाय नदिया, पुलिने च तिरे,
यं सच्चभद्द गिरिके,
सुमना चलगे यं सच्च योनक पूरे
मुनि नोच पादमं,
तं पाद लाच्छन महंञ्ञ सिरसा नमामि'।

(समन्तकूट वर्णन-सिंहल द्विप का ग्रन्थ)

उसी पालि गाथा के अनुसार बुद्ध अपने श्रीपाद युगल का चिह्न किस-किस स्थान पर रखे है ? का उल्लेख पढ़ सकते हैं ।

बुद्ध का तीसरी बार सिंहल द्वीप पधारना

श्रावस्ती जेतवनाराम में कुछ समय व्यतित किये । बुद्धत्व प्राप्ति का

आँठवा साल सिंहल द्वीप के मनिअक्खिक नागराज अधिपति बुद्ध के पास आकर सिंहल द्वीप में पधारने के लिए बुद्ध को आमंत्रित किया ।

मनिअक्खिक नागराज अधिपति बहुत खुश हुआ और खुश होकर सिंहल द्वीप जाकर अपना कल्याणपुर (वर्तमान कैलिनिय) को बहुत सुन्दर ढ़ग से सजाया । सजाकर बुद्ध प्रमुख भिक्षुमहासंघ के लिए आसन तैयार किया । बुद्ध और भिक्षुमहासंघ का साथियों के साथ इन्तजार करते रहे । उस समय मई महीने का बैशाख पूर्णिमा का दिन था ।

(बैशाख पूर्णिमा को वर्तमान समय में बुद्ध पूर्णिमा के नाम से बुद्धत्व से चमकते हुए इर्दी शक्ति से कल्याणपुर में पहुँच गये । नागाधिपति बुद्ध प्रमुख भिक्षु महासंघ को प्रनीत भोजन से भोजन दान कराया । भोजन दान के उपरान्त बुद्ध ने धर्म देशना किया । (अंक 140)

पूण्यवान नाग लोग सुनो संसार में एक बुद्ध के मिलने से भी उस बुद्ध का शरण ग्रहण नहीं करने से तुम लोगों का दुर्भाग्य होगा और दुख में डूब जायेगा ।

नाग अधिपति बुद्ध की उत्पत्ति इतना आसान नहीं होता है । बहुत से कल्पों के पश्चात् मिलता है इसलिए तुम सब लोग प्रमाद मत करो । संसार में रहने वालों को जरा-मरण-शोक-परिदेव, दुख, दौमनस्य अनिवार्य है। संसार से मुक्त होने से कोई भी दुख नहीं होता है ।

जीवों का तरुण समय एक कमल के फूल के स्वभाव जैसा लगता है । तरुण स्वभाव बहुत ज्यादा दिन नहीं चलता है । जिन्दगी एक पानी के बूलबूले जैसे है एक बूँद जैसे स्थिर नहीं है । धन-धान्य, सम्पत्ति समूद्र की लहर जैसे है । चित्त सदैव विविध-विचित्र शोक से भरा हुआ है ।

पूर्वकाल में ऋषीमत आकाश से चारिका करते थे । लेकिन स्त्री रूप से लगाव होने के कारण ध्यान से भटक कर विनाश तक पहुँच गये । ज्ञानवन्त सत्यपुरुष तुम स्त्री रूप से लगाव नहीं रखना ।

एक समय एक मोर एक मोरनी का शब्द सुनकर उसी शब्द के पीछे दौड़ा । उसी बीच में एक शिकारी के हाथ में फँस गया । इसलिए शब्द में फंसना दुख का कारण है ।

मधुमक्खी फूल के सुगन्ध में फँस जाते हैं । फूल का रस पीने के

बाद मदमस्त हाथी के कुम्भ स्थान से निकलने वाले रस को पीने के लिए जाने के कारण हस्थनी (हाथिनी) के कान के प्रहार से मधुमक्खी मर जाते हैं । इसलिए सुगन्ध के लगाव से भी विनाश होने का कारण है ।

गहरे समुद्र में मछलियों को खाने के लिए पर्याप्त भोजन होता है। लेकिन अधिक भोजन के लालच में मछली काँटे में फँस जाती है । इसलिए अधिक रस काम में दोष देखकर रस काम को छोड़ देना चाहिए ।

एक समय बोधिसत्व ब्राह्मलोक से मुक्त होकर मनुष्य लोक में आकर परिशुद्ध ब्रह्मचारी जीवन बिताया । लेकिन स्त्री संगत के कारण अपना राज्य भी छोड़ना पड़ा । इसलिए स्पर्श, काम भी बहुत बड़ा दुख का कारण है। इसलिए यह पंचकाम सम्पत्ति से लगाव नहीं रखना चाहिए ।

पूर्व समय सियार, खरगोश, बन्दर, हाथी जैसे जानवर अहेतुक प्रतिसन्धि लाभी होकरदान पारमिता पूरा करके इस जन्म से मुक्त होकर निरवान सुख प्राप्त किया है । निरवान प्राप्त करने वाले व्यक्ति को दान पारमिता पूरा करना जरुरी है ।

दानशील जैसे पुण्य कर्मों के कारण पुण्य कर्म से प्राप्त होने वाले स्वर्ग, किमती रत्न, प्रासाद जैसे चिजो से महान होता है । बहुत से दिव्यागनाओं से भरा रहता है । अनेक पुष्प (फूल) जातियों से युक्त उद्यान आदि से मनोरम होता है । वह देवताओं के समान नहीं मरने वाले जैसे निरन्तर सुख से समय बिताता है ।

पुण्य ये दिव्य सम्पत्ति से ज्यादा रम्य सम्पत्ति उससे भी ज्यादा निरवान सम्पत्ति श्रेष्ठ है । इसलिए निर्वाण प्राप्त करने के लिए निरन्तर वीर्य करना जरुरी है । (समन्त कूट वर्णन श्रीलंका का एक ग्रन्थ) ।

सुमन-शमन दिव्य राजा का आयाचना

नाग जन बुद्ध की धर्म देशना सुनकर अति प्रसन्न हो गये । इस नाग जन की सभा में सुमन-समन दिव्य राजा भी उपस्थित थे । सुमन-समन दिव्य राजा बुद्ध के पास आकर समन्त कूट पर्वत पर पधारने के लिए बुद्ध से विनम्रता पूर्वक अनुरोध किया । (समन्तकूट श्रीलंका के मध्य रत्नपुर जिले में है और सिंहली भाषा में इस पर्वत को समनल कन्द श्रीपाद कहते हैं। ईसाई समुदाय उस स्थान को एडमस्वीक अदम का पहाड़ कहते हैं । हिन्दु

धर्मावलम्बी अन्न मलेई अपने देवता के नाम से पहचानते है । महायान बौद्ध ग्रन्थों में उल्लेख मिलता है कि उस स्थान पर पद्यम सम्भव अर्थात् गुरु रिनपोछे पधार कर अपने पैर का निशान रखा है । महायान तिब्बत ग्रन्थों में एवम् भूटान के ग्रन्थों में समन्त कूट पर्वत का पेड़, पौधा, मिट्टी के बारे में भी वर्णन मिलता है । हिमालय भूटान के बौद्ध धर्मावलम्बीयों का मानना है कि अभी भी पद्यमसम्भव अर्थात् गुरु रिनपोछे पहाड़ पर विद्यमान है) ।

सुमन-समन दिव्य राजा की आयाचना स्वीकार कर बुद्ध श्रावक भिक्षुओं के साथ अपराह्ण में इर्दी शक्ति द्वारा आसमान से जाकर समन्तकूट पर्वत पर पधारे । बुद्ध का आगमन सुनकर सभी देवतागण एकत्रित हो गये । सुमन-शमन दिव्य राजा ने बुद्ध से अनुरोध किया कि आप अपना पैर इसी पत्थर पर रखे। बुद्ध अनुरोध के अनुसार अपना बाँया पैर का निशान उसी पत्थर पर रख दिया । सुमन-समन दिव्य राजा उस पैर के निशान को एक नीले रंग के पत्थर से ढक दिया । उसी दिन से उस पर्वत को सिंहल द्विपवासी श्रीपाद पर्वत के नाम से जानते है । प्रत्येक वर्ष उस स्थान का दर्शन करने के लिए हजारों यात्री उसी श्रीपाद पर्वत पर चढ़ते है । बाँया श्रीपाद के निशान रखने के बाद बुद्ध उसी पर्वत के एक गुफा में समय बिताया । उस गुफा को दिवाविहरण गुफा के नाम से जाना जाता है । भगवत गुफा के नाम से भी जाना जाता है और शेष भिक्षु परिषद समन्त कूट पर्वत पर जगह-जगह पर गुफाओं में आराम किया । उसके बाद बुद्ध आसमान से दक्षिण श्रीलंका में दिघवापी नामक एक प्रसिद्ध स्थान पर जाकर समापत्ती सुख से थोड़ा समय बिताया ।

दिघवापी से निकल कर इर्दी आसमान से बुद्ध अनुराधपुर नगर में पधारे। उस स्थान पर वर्तमान समय में श्री महाबोधि मूल का दक्षिण शाखा का स्थापना किया है । वर्तमान समय तक विराजमान है । महाममेउना उद्यान में बुद्ध का दक्षिण अकूधातु रखकर एक स्तूप बनवाया । ये सभी जम्बूद्वीप के राजा अशोक सिंह कलडिप का राजा देवानामयिय तिष्य के समय में हुआ है । वहाँ निरोध समापत्ति से समय बिताकर उधर से वर्तमान समय में शैल चैत्य स्थान पर जाकर धर्म देशना किया । वहाँ से इर्दी आसमान से जम्बूद्वीप के श्रावस्ती जेतवनाराम में चले आये। उस समय श्रावस्ती में आलवक नाम से प्रसिद्ध यक्ष स्वरूप का एक व्यक्ति था । वह व्यक्ति समाज के लिए बहुत

बड़ा सिरदर्द था । उसका कल्याण करने के लिए और समाज कल्याण करने के लिए दोनों बातें सोचकर बुद्ध अपने से आलवक यक्ष के स्थान पर चले गयें । जाने के बाद विनित होकर आलवक जो कहता गया बुद्ध उसे करते गये । उतना करने के बाद भी कुछ को थकावट महशूस नहीं हुआ । तब उसके बाद अलवक ने सोचा बुद्ध से कुछ सवाल पूछा । महिलाओं के सामने यदि कुछ उत्तर नहीं दिया तो कुछ का अपमान हो जायेगा । ऐसे सोचकर कुछ से पूछा—किन्सुद वितं पूरी सस्स सेंट किन्नू सुटियनं सुखममहावाती ।

नोट—**आलक**—कोई-कोई थेरवाद बौद्ध ग्रन्थों में अलवक को एक यक्ष के रूप में दिखाया । लेकिन किसी ग्रन्थों में आलवक को एक कुमार के हिसाब से दिखाया है । जो कुछ आलवक के घर जाते समय आलवक ने देखा कुछ सिर्फ आलवक के घर बैठकर केवल महिलाओं के लिए धर्मदेशना कर रहा । एक साधु सन्यासी तपस्वी किसी जगह पर केवल महिलाओं के लिए ही धर्मदेशना करते हुए देखने से कोई अज्ञान व्यक्ति अपने आप गुस्सा करके यक्षावेश धारण करता है । यह पृथक् जो इंसान का स्वभाव है । इसलिए आलवक को कुमार भी कर सकता है और यक्ष भी कर सकता है । इसलिए कुछ का अवमानना करने के लिए महिलाओं को सामने कई बार बुद्ध को घर से बाहर करने और अन्दर आने के लिए कहा—बुद्ध भी वैसे किया ।

परिच्छेद - 37

एक नौकरानी द्वारा राजपरिवार को धर्म देशना करने का साहस

नौवाँ वर्षावास कौसाम्बी के घोषिता राम में एवं दसवाँ वर्षावास पारलेइय वन में

बुद्ध का कौसाम्बी नगर में प्रवेश

बुद्ध श्रावस्ती में रहते समय प्रथम समय हिमालय पर्वत की ओर से एक तपस्वी समूह बुद्ध दुनियाँ में पैदा होने की बात सुनकर और बुद्ध का श्रावस्ती में रहने की जानकारी होने पर सभी तपस्वी श्रावस्ती जाने का मन बना लिया । उन तपस्वीयों की सेवा सत्कार करने वाले बहुत से उपासक लोग एवम् सेठ लोग कौसाम्बी में रहते थे । इस लिए बुद्ध के बारे में जानकारी देने के लिए तपस्वी समूह कौसाम्बी में चले गये । कौसाम्बी में जाकर घोषित, कुक्कुट, पावारिक, ये तीनों महाधनी सेठ लोगों के बारे में बुद्ध को बताया । उसके पश्चात् तपस्वी समूह श्रावस्ती की ओर चले गये। तपस्वी समूह जेतवनाराम में जाकर प्रव्रज्या लेकर अरहत हो गये । घोषित, कुक्कुट व पावारिक तीनों सेठ श्रावस्ती जाकर बुद्ध की धर्मदेशना सुनकर सोवान हो गये । तीनों सेठ मिलकर बुद्ध प्रमुख भिक्षुमहा संघ को पन्द्रहदिन तक अपने धन से भोजनदान कराया । भोजन दान कराने के बाद कौसाम्बी में पधारने के लिए बुद्ध से आयाचना किया । तीनों सेठ कौसाम्बी वापस आकर अपने-अपने उद्यानों में बुद्ध और भिक्षुमहासंघ को रहने के लिए आराम-बिहार तैयार किया । घोषित सेठ द्वारा बनवाया हुआ आराम को घोषिताराम बिहार कुक्कुट सेठ द्वारा बनवाया हुआ आराम को कुक्कुटा राम बिहार और पावारिक सेठ द्वारा निर्मित आराम को पावारिक आम्रवन का नाम दिया । आराम-बिहार तैयार करने के बाद बुद्ध को कौसाम्बी पधारने के लिए निमन्त्रण भेजा। बुद्ध भिक्षुमहासंघ के साथ कौसाम्बी के लिए श्रावस्ती से निकल पड़े ।

मागन्धी ब्राह्मण का प्रव्रज्या

क्रमशः चारिका करते हुए बुद्ध मागन्धी नामक ब्राह्मण को अरहत प्राप्त करने के हेतु सम्मत देखने के बाद रास्ते में ही कुरुरट्ट कलमास धम्मद नामक गाँव में जाकर दूसरे दिन भिक्षाटन के लिए निकल पड़े । उसी गाँव में मागन्धी (मारकण्डेय) ब्राह्मण बुद्ध और उनके रूप सौन्दर्य देखने के बाद अपनी पुत्री का विवाह करने के लिए एक उत्तम पुरुष मिला सोचकर अपने पुत्री को सुन्दर ढंग से सजा-सवार कर बुद्ध के पास आकर कहा कि आप हमारे पुत्री को पत्नी के रुप में स्वीकार कीजिए । बुद्ध ने कहा काम सम्पत्ति में मेरा कोई दिलचस्पी नहीं है । मल-मूत्र से भरा हुआ गन्दा शरीर को मैं पैर से भी स्पर्श नही करना चाहता । बुद्ध की बात सुनकर घमण्डी मागन्धी की पुत्री ने कहा बुद्ध हमारा अपमान कर रहा है, जिससे उसने बुद्ध से वैर करना शुरु कर दिया । बुद्ध उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया । मागन्धी दमपत्ति को धर्मदेशना किया । देशना के अन्त में दोनों अनागामी हो गये। नवयौवन मागन्धी की पुत्री अपने छोटे भाई के अधिन रहने लगी । मागन्धी दम्पत्ति प्रव्रज्या होकर अरहत हो गये । नवयौवन मागन्धी की पुत्री रुप श्री के कारण राजा उद्देनी ने मागन्धी की पुत्री को अपना अग्रमहिसी के रुप में घोषणा किया ।

बुद्ध मागन्धी पति-पत्नी का अनुग्रह कर कौसाम्बी नगर के दीर्घ मार्ग में चलना शुरु किया । कौसाम्बी के सेठ बुद्ध के सामने प्रार्थना कराकर बुद्ध को कौसाम्बी ले जाकर तीनों बिहार-आराम को बुद्ध को पूजा किया। आराम-बिहार की पूजा करने के बाद दूसरे दिन संघ दान के लिए आमन्त्रित करके तीनों सेठ अपने-अपने घर चले गये । राजा उद्देनी की अग्रमहिसिका मागन्धी तरुणी बुद्ध का कौसाम्बी में आने की खबर सुनकर आस-पास के गुण्डों लोगों को पैसा देकर बुद्ध की निन्दा करने के लिए भेजा । जब बुद्ध दूसरे दिन नगर में पिण्डपात के लिए निकल पड़े गुण्डे बुद्ध को भद्दी-भद्दी गाली देकर अपमान किया । यह सब घटना देखने के बाद आनन्द स्थवीर ने कहा भाग्यवत यह स्थान हम लोगों के योग्य नहीं है । इसलिए यह स्थान छोड़कर हम लोग दूसरे स्थान पर चले जायेंगे । बुद्ध ने कहा आनन्द तथागत लाभ-अलाभ, यश-अपयश, निन्दा-परनिन्दा प्रसंशा जैसे अष्ट लोक धर्म से चंचल एवम् कम्पित नहीं होता है । यह जो कुछ हो रहा एक सप्ताह से

अधिक नहीं रहेगा । ऐसा कह कर बुद्ध कौसाम्बी में ही रह गये । तीनों सेठ तीनों बिहार में एक-एक महिना दान देने के बाद शेष नगर वासी को भी दान देने के लिए अवसर दिया । कौसाम्बी नगर के लोग मिलकर बुद्ध प्रमुख महासंघ को महासंघदान दिया ।

सामावती का देहान्त

बुद्ध एक दिन कौसाम्बी नगर के प्रधान फूल-माला बेचने वाले के घर चले गये । उद्देनी राजा का सामावती नामक महिसिका की कुच्चुतरा नामक एक सेविका फूल खरीदने के लिए जाते समय बुद्ध से धर्म देशना सुनकर सोवान हो गयी । सोवान होने के पश्चात् कुच्चुतरा सेविका महल में जाकर सामावती रानी सहित परिवार के स्त्रीयों का धर्म देशना किया । उसी के फलस्वरूप सामावती और परिवार की स्त्रियाँ सोवान हो गयी । उसी दिन से कुच्चुतरा सेविका को दासी पद देकर सत्कार-सम्मान किया । कुच्चुतरा उपासिका प्रतिदिन बुद्ध के पास जाकर धर्म देशना सुनकर महल में आकर सामावती आदि लोगों को विस्तार पूर्वक बताती थी । समय बितने के बाद सामावती त्रिपिटकधारी हो गयी । सामावती रानी बुद्ध के बारे में जानकर बहुत प्रसन्न होकर बात करने का तरीका मागन्धी महिसिका ने जान लिया। मागन्धी ने सोचा राजा और सामावती का झगड़ा कराकर अलग करने का बहुत अच्छा मौका है । मागन्धी-सामावती के विषय में तरह-तरह की अनेक गन्दी बात बोलकर राजा को सम्बन्ध तोड़ने के लिए कोशिश किया । कभी-कभी राजा उद्देनी मागन्धी की बातों को अवश्य सुना विश्वास भी किया। लेकिन बाद में राजा उद्देनी के समझ में आया सामावती रानी पूर्ण रुप से निर्दोष है। बाद में बुद्ध भी अनुमति लेकर राजा उद्देनी की अनुमति लेकर भिक्षु आनन्द को महल में बुलाकर सत्कार सम्मान कराकर धर्म देशना सुनना आरम्भ किया । यह सब तरुणी मागन्धी रानी कभी भी बर्दास्त करने को तैयार नहीं थी इसलिए छोटे पिता के माध्यम से सामावती के महल में गुपचूप तरीके से आग लगवा दिया । सामावती सहित पाँच सौ स्त्रियाँ उस अग्नि में जलकर मर गयी । राजा को जानकारी मिली । इतना बड़ा काण्ड मागन्धी अपने छोटे पिता जी की सहायता से अग्नि काण्ड करवाने के बाद राजा उद्देनी ने मागन्धी सहित पूरे खानदान को बहुत बड़ा दण्ड देकर सभी को मरवा दिया ।

नौवाँ वर्षावास

बुद्ध बुद्धत्व से नौवाँ वर्षावास कौसाम्बी नगर के घोषिता राम में बिताया।

भद्रवती हाथिनी

कौसाम्बी के उद्देनी राजा के पास एक भद्रवती नामक हाथिनी थी। भद्रवती हाथिनी राजा उद्देनी को सभी मोर्चे पर साथ दिया । लेकिन वयस्गत होने के बाद हाथिनी को राजा उद्देनी ने महल से बाहर करके बाहर का चारा खाने के लिए छोड़ दिया । भद्रवती हाथिनी इधर-उधर घूमते हुए जो मिला उसी घास फूस को खाकर अपनी जिन्दगी को बड़ी मुश्किल से बीता रही थी । भद्रवती हाथिनी शक्तिशाली होने पर राजा उद्देनी का मंगल हाथिनी राजश्री के हिसाब से हर मोर्चे पर साथ दिया । युद्ध के समय युद्ध जीतने के लिए भद्रवती हाथिनी राजा उद्देनी को बहुत मदद किया। लेकिन वयस्कता होने पर राजा उद्देनी ने दूसरे हाथी को मंगल हस्थनी का स्थान देकर भद्रवती हाथिनी की सेवा लेना छोड़ दिया । भद्रवती हाथिनी अशरण (बिना सहारे) होकर इधर उधर घूम रही थी । एक दिन बुद्ध कौशाम्बी में भिक्षाटन के लिए निकले । बुद्ध को देखकर भद्रवती हाथिनी बुद्ध के सामने आकर अपने सुड़ को बुद्ध के श्रीपाद पर रखकर आंसू गिराते हुए बहुत जोर-जोर से रोना शुरू किया । बुद्ध ने हाथिनी से कहा दुख-शोक मत करो । मैं अभी जाकर राजा उद्‌दयनी से बात करके जो तुमको पहले सम्मान सत्कार मिलता था वही सत्कार-सम्मान और वह स्थान पुनः तुमको दिलाऊँगा । तत्पश्चात् बुद्ध राजा उद्देनी के महल में जाकर भिक्षुमहासंघ के साथ भोजन दान किया भोजन दान के बाद बुद्ध राजा उद्देनी से पूछे महाराज आपका प्रिय हाथिनी भद्रवती कहा है ? राजा उद्देनी ने कहा मुझे मालूम नहीं है । बुद्ध ने कहा महाराज अपना कोई उपकार करने वाले व्यक्ति का शक्तिशाली समय बहुत सत्कार-सम्मान किया लेकिन शक्तिक्षीण होने पर उसका अपमान या नजर अन्दाज करना बहुत बड़ा पाप है । आप एक राजा है । आपको यह कार्य शोभा नहीं देता है। कृपया भद्रवती हाथिनी को पुनः महल में ले आकर उसका सम्मानपूर्वक सेवा-सत्कार कीजिए ।

बुद्ध की बात सुनकर राजा उद्देनी ने तुरन्त राजपुरुषों को भेजवाकर भद्रवती हाथिनी को महल में ले आया। पूर्व जैसे भद्रवती हाथिनी को खाने-

पीने से लेकर सभी वस्तुओं से सत्कार सम्मान किया । बुद्ध भद्रवती हाथिनी का कल्याण करने के बाद घोषिताराम में चले गये ।

संघ भेद

उस समय घोषिता राम में बहुत से भिक्षु रहते थे । उसी भिक्षुओं के बीच में विनयधर व धर्मधर भिक्षुओं के बीच में विवाद हो गया । विवाद का कारण यह था कि विनयधर भिक्षु शौचालय में जाकर विनय के अनुसार अपना पानी रखने वाला लोटा विनयानुसार उल्टा रखते थे । लेकिन एक दिन धर्मघर भिक्षु शौचालय में जाकर अपना पानी वाला लोटा सीधा रख दिया जो विनय के अनुसार आपत्ति जनक है । इसी छोटी सी बात को लेकर विनयधर एवम् धर्मधर, दोनों भिक्षुओं और उनके शिष्यों के बीच में छोटी-सी घटना बहुत बड़ा घटना का स्वरूप लेकर दोनों पक्षों में मनमुटाव इतना बढ़ गया कि वे एक-दूसरे को देखना नहीं चाहते थे । धीरे-धीरे दोनों पक्षों के भिक्षुओं के अलावा पृथक्जन व गृहस्थ लोग भी एकत्रित हो गये । यह समस्या को हल करने के लिए बुद्ध ने भिक्षु-गृहस्थ सबको बुलाकर (लटुकीक जातक) लटुकीक जातक, वट्टक जातक, धिगति कौशल जातक के माध्यम से धर्मदेशना किया । लेकिन दोनों पक्ष का कोई भी व्यक्ति बुद्ध की बात को नहीं माना । बुद्ध यह घटना को देखने के बाद पारलेइय जंगल में रहने वाले कुछ हाथी और बन्दरों को होने वाले लाभ को देखकर विवेक से रहने के लिए पारलेइय जंगल में जाने का निश्चय किया । ऐसे तप करके कौसाम्बी में पिण्डपात करके बिना किसी को सूचना दिये बुद्ध पारलेइय जंगल में चले गये । पारलेइय जंगल में रहते समय महाकारुणीक बुद्ध को भोजन का प्रबन्ध जंगल से कन्द-फल अन्य सामाग्री एक हाथी और एक बन्दर ने किया ।

वाल कलोनकार गाँव में जाना

बुद्ध चुपचाप से अकेले बिना सूचना दिये कौसाम्बी से जाते लेकिन भिक्षु आनन्द के पास आकर बुद्ध अकेले जाने का कारण बताया । बाद में भिक्षु आनन्द बुद्ध के अकेले जाने की खबर सभी को बताया । खबर सूनकर भिक्षुलोग ने कहा हम सभी बुद्ध के पास जायेंगे । भिक्षु आनन्द ने कहा बुद्ध जंगल में इसलिए गये कि अकेले विवेकपूर्वक समय बितायें। आप लोग बुद्ध का इरादा समझिये और समझकर उसी के हिसाब से चलिए। हम भी जंगल में नहीं जायेंगे । इसलिए आप लोग भी जंगल में मत जाइए।

बुद्ध ग्राम, नियम ग्राम, क्रमशः चारिका करते हुए बाल कलोनकार ग्राम में पधारे । उस ग्राम में भी एक भिक्षु अकेला रहता था, जिसका नाम भृगु था । बुद्ध उस भिक्षु से अपराह्न रात्रि समय अकेले रहने के आनिसन्स के महत्व की देशना किया । दूसरे दिन उस भिक्षु को उसी स्थान पर छोड़कर बुद्ध वहाँ से अकेले चल पड़े । बुद्ध चारिका करते हुए चेतिय प्रदेश में प्राचीन वंश मृगदाय नामक एक स्थान पर पहुँच गये । पहुँचकर उस स्थान पर अनुरुद्ध, भद्दीय व किम्बिल तीन भिक्षुओं को देशना कर एकत्रित होकर समूह में मिलकर रहने का महत्व बताया। वहाँ से निकलकर मित्र कौशल के पारलेइय जनपद में पहुँच गये । ग्रामवासी बुद्ध का गर्व से सादर प्रेमपूर्वक अपने प्रदेश में ले जाकर भोजन दान कराया । उसी प्रदेश में पारलेइय नामक एक जंगल में कुटि बनवाकर वर्षावास करने के लिए बुद्ध से गाँव वासियों ने अनुरोध किया । बुद्ध ग्राम वासियों की याचना को स्वीकार करके उसी कुटि में वर्षावास किया ।

उसी कुटि के पास एक साल का वृक्ष था । एक दिन बुद्ध उसी वृक्ष के नीचे विश्राम कर रहे थे । यह दृश्य एक हाथी ने देखा । वह हाथी अपने समूह से अलग होकर अकेले ही रहता था । हाथी बुद्ध को देखकर तुरन्त अपने सुड़ को मोड़कर घूटने के बल बैठकर बुद्ध को नमन किया। चारों तरफ देखा कोई भी व्यक्ति कहीं दिखाई नहीं दिया । हाथी एक पेड़ से पत्ता वाली डाली तोड़कर बुद्ध जहाँ विश्राम कर रहे थे उस स्थान के चारों तरफ साफ सफाई किया । उसके बाद हाथी बुद्ध को हाथ मुँह धोने और पीने के पानी जैसे कार्यों के लिए जल की व्यवस्था किया । गरम पानी की आवश्यकता पड़ने पर दो लकड़ी को रगड़ कर अग्नि जलाकर उस आग में मध्यम आकार का पत्थर डालकर उसे आग में गरम करके लकड़ी के माध्यम से उस पत्थर को छोटे जलाशय में लेजाकर डाल देता था । जब पानी गरम हो जाता था तो बुद्ध के पास जाकर बुद्ध को नमस्कार करके पानी गरम होने का इसारा करता था । इसके बाद हाथी जंगल में जाकर विविध प्रकार का फल-पत्ता ले आकर बुद्ध को भोजन के लिए देता था। यदि बुद्ध भिक्षाटन के लिए गाँव में जाते थे तो हाथी भिक्षापात्र लेकर जाता था । गाँव तक जाकर हाथी बुद्ध को गाँव में छोड़ने के बाद वापस जंगल में आता था । बुद्ध को गाँव से भिक्षाटन करके आने तक हाथी उसी स्थान पर खड़ा होकर बुद्ध के आने का इंतजार करता था । गर्मी होने पर पत्ता

वाली डाली तोड़कर बुद्ध को हवा करता था। रात्रि के समय खूंखार जानवरों से कोई नुकसान न हो एक डण्डा लेकर रातभर चौकीदारी करता था। एक हाथी द्वारा बुद्ध की रक्षा करने के कारण उस वन को रक्षित वन के नाम से जाना जाता है और इसी नाम से यह वन प्रसिद्ध हुआ। बुद्ध को दैनिक जीवन में किस वस्तु की आवश्यता है ? वह सभी वस्तु हाथी द्वारा पूरा किया जाता था।

बन्दर द्वारा बुद्ध की सेवा

जंगल का हाथी महाकारुणिक तथागत बुद्ध की सेवा करने का तरीका को उसी जंगल काएक बन्दर ने देखा। बन्दर के मन में आया कि मैं भी बुद्ध की कुछ सेवा करूँगा। ऐसा सोचकर देने के कुछ खिलाने योग्य खोजते हुए जंगल में एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर चढ़ता गया। बन्दर ने देखा एक बहुत बड़ा मधुमक्खी का छत्ता जिसमें से मधुमक्खिया एक-दो दिन पहले छत्ता को छोड़कर चले जाने का संकेत मिला। बन्दर मधुमक्खी के छत्ते को तोड़कर एक केले के पत्ते पर रखकर बुद्ध को भेट किया। बुद्ध बन्दर द्वारा लाये हुए मधुमक्खी के छत्ते को स्वीकार किये। बन्दर थोड़ी दूर हटकर देख रहा था कि बुद्ध इसे अपने भोजन के लिए ले रहा है या नहीं ले रहा है। थोड़ी देर इंतजार के बाद देखा बुद्ध इसे अपने भोजन में नहीं ले रहा है। उसका कारण जानने के लिए जाकर मधुमक्खी के छत्ते को हाथ में लेकर उलट कर देखा तो उसे छत्ते में नवजात प्राणी निकालकर पुनः बुद्ध को पूजा किया तो बुद्ध ने उसे भोजन के लिए ले लिया। मधुमक्खी का छत्ता बुद्ध हाथ में लेकर भोजन करने का दृश्य देखकर बन्दर बहुत प्रसन्न हुआ और उछल-कुद रहा था। कुदते वक्त बन्दर द्वारा पकड़ा डाली और पैर रखने वाला डाली दोनों एक साथ टूट गया। जिससे एक खड़ा लकड़ी पर गिर जाने के कारण बन्दर के शरीर में छेद हो गया और बन्दर मर गया। बुद्ध के प्रति प्रसन्न होकर मरने के कारण तावतिन्स दिव्य लोक में उत्पन्न हुआ।

कौसाम्बी वासियों द्वारा भिक्षुओं को दण्ड देना

धर्मधर व विनयधर भिक्षुओं का दोनों पक्षो में कोलाहल के बाद बुद्ध चुपचाप कौसाम्बी से पारलेइय वन में चले गये। जिसकी पूरी समाचार सम्पूर्ण कौसाम्बी नगर में फैल गया। इस घटना को सूनने के बाद कौसाम्बीवासी

उपासक, उपासिकायें भिक्षु लोगों को भोजन दान देना, सम्मान-सत्कार देना बन्द कर दिया । भोजन नहीं मिलने से दोनों पक्ष के भिक्षु पिड़ित हो गये। पिड़ित होकर दोनों पक्ष एकत्रित हुए और इस सम्बन्ध में स्वयं उपासक एवम् उपासिकाओं को सूचना दी । उपासक उपासिकाओं ने कहा आप लोग बहुत बड़ा गलती किया है । इसलिए बुद्ध के पास जाकर माँफी माँगने के बाद ही हम लोग आप लोगों का सम्मान-सत्कार करेंगे । वर्षा वास होने के कारण भिक्षु अपने आराम से बाहर नहीं जा सकते थे । आनन्द भिक्षु जैसे भिक्षुओं को जो आहार मिलता था उसी में से सभी लोगों को थोड़ा-थोड़ा खाकर बहुत मुश्किल से समय बिताया ।

बुद्ध पारलेइय वन में रहते समय एक हाथी द्वारा बुद्ध की सेवा करने का खबर सम्पूर्ण नगर में फैल गया । यह खबर सुनते ही श्रावस्ती के अनाथ पिण्डिक सेठ व विशाखा महा उपासिका जैसे प्रमुख जन एकत्रित होकर भिक्षु आनन्द को खबर भेजा बुद्ध को श्रावस्ती में वापस पधारने के लिए । लगभग पाँच सौ भिक्षु वर्षावास के बाद आनन्द भिक्षु के पास जाकर अनुरोध किया कि हम लोग बुद्ध की धर्मदेशना सुनने को इच्छुक है । आनन्द भिक्षु सभी भिक्षुओं के साथ कौसाम्बी से निकल पड़े । पारलेइय वन की सीमा तक सभी भिक्षु आनन्द भिक्षु के साथ गये और बन सीमा पर सभी भिक्षुओं को रहने को कहकर भिक्षु आनन्द अकेल बुद्ध के पास गये । दूर से आते आनन्द को देखकर बुद्ध के पास का हाथी एक डण्डा लेकर पीछा करने को तैयार हो गया । यह घटना देखकर बुद्ध ने हाथी से कहा पुत्र ऐसा मत करना, यह भिक्षु के पास जाकर अपने तरीके से अभिवादन किया ।

भिक्षु आनन्द बुद्ध के पास जाकर बुद्ध को प्रमाण किया । बुद्ध ने आनन्द से पूछा कि आप अकेले तो नहीं आये । भिक्षु आनन्द ने कहा मेरे साथ पाँच सौ भिक्षु भी आये है । बुद्ध ने कहा सभी को हमारे पास ले आना । बुद्ध के नियमानुसार भिक्षु आनन्द सभी पाँच सौ भिक्षुओं को बुद्ध के पास ले आया । बुद्ध एक-एक करके सभी का हालचाल पूछा। भिक्षुओं ने कहा भाग्यवत आप इस घनघोर जंगल में अकेले रहकर बहुत कष्ट उठाया होगा । बुद्ध ने कहा ऐसा बात नहीं है । इस जंगल में रहने वाली एक हाथी ने मेरा पूरा सत्कार सम्मान किया । बुद्ध ने कहा जानवर होने से भी ऐसे मित्र के साथ रहना सुख दायक होता है । ऐसा नहीं होने

से अकेला रहना ही अति उत्तम है । सत्यपुरुष जनता के साथ रहने का आनिसन्स वाला दिन व्यक्तियों के सभी अलग रहने का वर्णन बुद्ध ने सभी भिक्षुओं को विस्तार पूर्वक बताया । धर्म देशना के अन्त में पाँच सौ भिक्षुओं ने अरहत प्राप्त कर लिया । (अंक 141)

हाथी का महादान एवम् बुद्ध का पारलेइय वन से निकलना

अनाथपिण्डिक सेठ व विशाखा महाउपसिका का निमन्त्रण मिलने से बुद्ध पारलेइय वन से श्रावस्ती के लिए निकल पड़े । उस समय बहुत ही अजीबों-गरीब एक घटना हुआ । इतने दिनों तक सेवा करने वाली हाथिनी बुद्ध के सामने आकर उन्हें जंगल से नहीं जाने देने के लिए रास्ता रोक दिया । भिक्षु लोगों ने पूछा भाग्यवत यह हाथिनी क्या कर रही है ? बुद्ध ने कहा—यह हाथिनी तुम सभी लोगों को कुछ भिक्षा देना चाहती है क्योंकि यह हाथिनी बहुत दिनों तक हमारा सेवा सत्कार की है । इसलिए इसके चित्त में दर्द देना अच्छा नहीं है । बुद्ध ने भिक्षुओं से बोला सभी लोग वापस जंगल में चलों बुद्ध सभी भिक्षुओं के साथ वापस जंगल में चले गये। जंगल का कटहल जैसा फल और पत्र तोड़कर ले आकर हाथिनी ने बुद्ध प्रमुख महासंघ को दान दिया । उस दान के पश्चात बुद्ध भिक्षुओं के साथ जंगल से निकल पड़े । हाथिनी भिक्षुओं के बीच में जाकर बुद्ध के सामने खड़ा हो गयी । भिक्षुओं ने बुद्ध से पूछा भाग्यवत अब यह हाथिनी क्या चाहती है ? बुद्ध ने कहा भिक्षुओं हाथिनी चाहती है कि मैं तुम लोगों को भेजकर हाथिनी के साथ जंगल में रहूँ । लेकिन बुद्ध ने हाथिनी को आमंत्रित करते हुए कहा हमारा जाना तय है । इसके लिए तुम कुछ नहीं कर सकती हो। इस जन्म में तुम एक चार पैर वाली जानवर हो फिर भी हमारे साथ रहकर जितना पुण्य किया अब उससे ज्यादा तुम कुछ नहीं कर सकती हो। इसलिए तुम इसी स्थान पर रुक जाओ । बुद्ध की बात समझकर हाथिनी शोकभरित होकर अपने सुढ़ को मुख में रखकर रोते-रोते बुद्ध के पीछे-पीछे चल दी। पारलेइय वन की सीमा तक जाने के बाद बुद्ध ने हाथिनी से कहा यहाँ से तुम आगे मत आना नहीं तो गाँव के लोग तुमको परेशान कर सकते हैं। शोक भरित हाथिनी आँसु बहाते हुए बुद्ध को पारलेइय वन छोड़कर जाने का रास्ता देख रही थी । बुद्ध को छोड़ने से हाथिनी को बुद्ध नहीं दिखाई देने से शोक भरित होकर रोने से उसे दिल का दौरा पड़ा और

उसी स्थान पर प्राण त्याग दी । तीन महीने बुद्ध की सेवा करने के कारण तावतिन्स दिव्य लोक में देव पुत्र के रूप में उत्पन्न हुई ।

बुद्ध का श्रावस्ती में पधारना

बुद्ध क्रमशः एक गाँव से दूसरे गाँव होते हुए श्रावस्ती जेतवना राम में पधारे । कौसाम्बी के सभी भिक्षु यह खबर सुनकर श्रावस्ती जाने के लिए निकल पड़े । भिक्षुओं का यहाँ आने की सूचना राजा प्रसेन्नजीत कोशल को मिला । राजा प्रसेन्नजीत कोशल ने बुद्ध के पास जाकर कहा ये अविनित भिक्षुओं को हम अपने राज्य में आने नहीं देंगे । बुद्ध ने कहा महाराज यह भिक्षु लोग एक-दूसरे से जरुर वाद-विवाद किया और अलग भी हो गये। लेकिन ये सभी भिक्षु शीलवान है और क्षमा माँगने के लिए सभी हमारे पास आ रहे है । इसलिए इन्हें आने दीजिए । राजा प्रसेन्नजीत कौशल जैसे अनाथपिण्डिक सेठ भी कहा यहाँ अविनित भिक्षु को मैं जेतवनाराम में आने नहीं देंगे । बुद्ध ने अनाथपिण्डिक सेठ को भी समझाया और कहाँ ऐसा मत करना भिक्षुओं को भोजन और रहने का बन्दोवस्त करने को कहा । कौसाम्बी से आने वाले भिक्षुओं के साथ श्रावस्ती जेतवनाराम के भिक्षु लोग नहीं रहना चाहते थे । श्रावस्ती के भिक्षु लोग अँगुली दिखाकर कहा कि कौसाम्बी का झगड़ा करने वाले भिक्षु लोग यही है और पूछना शुरू कर दिया। इसी कारण कौसाम्बी से आने वाले भिक्षु सिर उठाकर किसी भी तरफ नहीं देखा और लज्जित हो गये । कौसाम्बी के सभी भिक्षु बुद्ध के पास आकर अपनी गलती के लिए क्षमा माँगा । क्षमा करने के बाद बुद्ध ने सभी भिक्षुओं को कहा वाद-विवाद न करके मिल-जुलकर रहो कहकर धिगति कोशल जातक कहानी की देशना किया ।

परिच्छेद - 38

उज्जैन नगर कशाय वस्त्रधारी बौद्ध भिक्षुओं से चमकना

(ग्याहरवाँ वर्षावास एकनाल ब्राह्मण गाँव में एवं बाहरवाँ वर्षावास वेरंजापुर तथा तेरहवाँ वर्षावास चालिका पर्वत में)

ग्यारहवाँ वर्षावास एकनाल ब्राह्मण गाँव में

बुद्ध श्रावस्ती से निकल कर एक गाँव से दूसरे गाँव होते हुए मगध देश के दक्षिण गिरि जनपद में पहुँच गये । अपना ग्यारहवाँ वर्षा वास एकनाल ब्राह्मण गाँव में व्यतित किया ।

बुद्ध उस समय भारद्वाज ब्राह्मण को अपने उपदेश (धर्मदेशना) के माध्यम से अनुसासित किया । बुद्ध शासन में दृढ़ विश्वास रखने वाले बेलुकन्ट की नन्दमातु उपासिका उस जगह के उपसिका परिषद की नेतृत्व करती थी ।

कपड़े को काटकर चीवर तैयार करना

सुप्रसिद्ध मगध क्षेत्र में एकनाल ब्राह्मण नामक गाँव था । शुरूआत में पीला कपड़ा या गेरुआ रंग का कपड़ा बुद्ध और भिक्षु महासंघ पहनते थे । लेकिन बाद में भिक्षु संघ का चीवर कैसे तैयार करना है ? उसके बारे में चर्चा होने से बुद्ध ने अनुमति दिया । जैसे दो खेतों के बीच मेड़ तैयार किया जाता है । उसी के अनुसार कपड़ा काटकर सिलाई करके चीवर तैयार किया । चीवर धान के पके हुए छिलके के रंग जैसा निर्धारित किया ।

वेरंजापुर पधारना

एकनाल ब्राह्मण गाँव से वर्षावास समाप्त होने के बाद बुद्ध पुन: श्रावस्ती में वापस चले गये । जनपदों में चारिका करते हुए शूरसेन जनपद में मथुरा शहर की ओर चले गये । उस स्थान पर बुद्ध से मिलने के लिए

काफी संख्या में लोग आये हुए थे । सभी को धर्म अनुशासना करने के बाद बुद्ध वेरंजापुर वापस चले गये । वेरंजापुर जाते समय कुछ गृहस्थ लोग बुद्ध से गृहस्थ जीवन के बारे में कुछ पूछने से उसके सम्बन्ध में बात करके वेरंजापुर पहुँच गये ।

वेरंजापुर में एक बहुत बड़ा नीम का पेड़ था । गाँव वालों का मानना था कि उस नीम के पेड़ पर नालेरु नामक एक यक्ष अधिगृहित है । नालेरु यक्ष के कारण उस स्थान को नालेरु कुचिमन्द के नाम से जाना जाता है। बुद्ध उसी पेड़ के नीचे समाधि मुद्रा में आवास-प्रवास किया ।

बारहवीं वर्षावास वेरंजापुर में

बुद्ध का वेरंजापुर में आने की समाचार सुनकर वेरंजापुर वासी बहुत खुश हो गये वेरंजापुर गाँव में एक बहुत बड़ा धनी ब्राह्मण रहता था । उस ब्राह्मण का नाम उदय ब्राह्मण था जो बुद्ध से बात करने के पश्चात् बहुत प्रसन्न हो गया । उसने प्रसन्न होकर बुद्ध और भिक्षु महासंघ को आमंत्रित किया कि आने वाले वार्ष काल में आप भिक्षु संघ के साथ वेरंजापुर में वर्षावास करें । बुद्ध उदय ब्राह्मण की बात को स्वीकार कर भिक्षु महासंघ के साथ वेरंजापुर नालेरु नीम पेड़ के नीचे बने हुए आश्रम में वर्षावास किया ।

उदय ब्राह्मण वेरंजापुर में बुद्ध को वर्षावास के लिए निमंत्रण तो दिया लेकिन बाद में भूल गया । उस समय वेरंजापुर में एक बहुत बड़ा दुर्भिक्ष हुआ । जिसके कारण बुद्ध और भिक्षुसंघ को भोजन के लिए काफी परेशान होना पड़ा । वेरंजापुर के रहने वाले निवासियों से बुद्ध को कोई दान नहीं मिला । लेकिन कुछ घोड़े के व्यापारी व्यापार करने के लिए जाते समय उसी आश्रम में ठहर गये । घोड़े के व्यापारी लोग उत्तरापक्ष में निकले हुए थे । जब उस व्यापारी समूह को पता चला कि बुद्ध और भिक्षु महासंघ को भोजन दान नहीं मिल रहा है । तब वह व्यापारी समूह बुद्ध और भिक्षु संघ को प्रतिदिन जौ का भोजन कराया । भिक्षुसंघ उस जौ को कूटकर अपने भोजन के लिए इस्तेमाल किया । बुद्ध के लिए एक पांव धान का लावा, घी, शहद और शक्कर इन सभी सामाग्री को लेकर भिक्षु आनन्द भोजन तैयार करके बुद्ध को देता था । इस तरह भोजन उपलब्ध होने से बुद्ध और भिक्षु महासंघ को कोई परेशानी नहीं हुई ।

वर्षावास समाप्त होने के बाद बुद्ध भिक्षु आनन्द के साथ वेरंजापुर उदय ब्राह्मण के घर चले गये । ब्राह्मण के नौकर लोग बुद्ध के आने की सूचना उदय ब्राह्मण को दिया । समाचार सुनकर बहुत लज्जित होकर उदय ब्राह्मण बुद्ध के सामने आकर बुद्ध का अभिवादन करके अपने घर ले गया। उदय ब्राह्मण ने अपनी भूल के लिए बुद्ध को बताया कि हम लोग गृहस्थ है । कार्य बहुत होने के कारण सब कुछ भूल गया । इसके बाद बुद्ध और भिक्षु महासंघ को महादान देकर सेवा-सत्कार व सम्मान किया । बुद्ध उदय ब्राह्मण सहित परिषद को धर्मदेशना करने के पश्चात् वहाँ से निकल पड़े उदय ब्राह्मण और उसका परिवार के लोग रोते हुए बुद्ध के पीछे-पीछे जाकर कहा हम लोगों से बहुत बड़ा भूल हो गया । इसके लिए हम लोगों को फिर से माँफ करना और फिर इधर कभी भी आने का विचार करना ।

[वेरंजापुर में बुद्ध का भोजन नही मिलने का कारण उदय ब्राह्मण को एक मार वेश होने का उल्लेख मिलता है ।]

वेरंजापुर से निकलना

बुद्ध वेरंजापुर से निकलकर महामण्डल के मध्य मार्ग से अपना चारिका प्रारम्भ किया । योग्य भोजन नहीं मिलने के कारण भिक्षुओं का शरीर कमजोर हो गया था । जिससे बुद्ध ने सोचा यदि कोई भिक्षु बेहोश होकर गिर गया तो अच्छा नहीं होगा । इसलिए बुद्ध ने सीधा रास्ता पकड़ लिया। सीधा रास्ते से जाते समय सोरही, कान्यकुब्ज से छोटे शहरों के बाद प्रयाग क्षेत्र में पहुँच गये । वहाँ से गंगा नदी को पार करके वाराणसी आ गये। प्रथम वर्षावास के बाद बुद्ध का यह दूसरी बार वाराणसी आगमन है ।

कच्चायन ब्राह्मण का प्रव्रज्या

बुद्ध कुछ दिनों तक वाराणसी में समय व्यतीत किये । उस समय अवन्ति देश का अधिपति चण्डप्रज्योत राजा अपने पुरोहित कच्चापन ब्राह्मण से कहाकि तुम बुद्ध के पास जाकर अपने राज्य में आने का निमंत्रण दो कच्चायन ब्राह्मण ने कहा यदि आप हमें प्रव्रज्या लेने की अनुमति दे तो मैं अवश्य जाऊगा । कच्चायन ब्राह्मण को प्रव्रज्या लेने की अनुमति मिलने के बाद अपने सात साथियों के साथ बुद्ध से मिलने के लिए वाराणसी की

ओर चल पड़े । बुद्ध के पास आने के बाद बुद्ध ने सभी लोगों को धर्म देशना किया और धर्म देशना के अवसान में कच्चायन ब्राह्मण के साथ बाकि सात लोग भी अरहत प्राप्त कर लिया । बुद्ध सभी लोगों को येही भिक्षुभाव से प्रव्रज्या और उपसम्पदा किया ।

कच्चायन अरहत का अवन्ति देश में बुद्ध शासन की स्थापना

वाराणसी में थोड़े दिन ठहरने के पश्चात् कच्चायन अरहत ने कहा अब उज्जैनपुर में जाने का समय आ गया है । यह समाचार बुद्ध को मिलने के बाद बुद्ध ने कच्चायन अरहत को सबसे पहले जाने के लिए अनुमति दिया। एव गाँव से दूसरे गाँव विचरण करते हुए कच्चायन अरहत उज्जैनपुर के उज्जैनी राजा के उद्यान कंचन उद्यान में पहुँच गये । कच्चायन अरहत के साथ और अरहत लोगों का उद्यान में आने की सूचना उद्यान पालक राजा चण्डप्रज्योत को दिया । राजा चण्डप्रज्योत उद्यान में जाकर कच्चायन अरहत के साथ बात-चीत शुरु किया । इस बात-चीत से चण्ड प्रज्योत राजा बहुत प्रभावित हुए । चण्ड प्रज्योत राजा की महारानी कंचन उद्यान में कच्चायन अरहत और उनके साथी अरहत लोगों को रहने के लिए बिहार बनवाया। राजा चण्डप्रज्योत नाम के अर्थ से चण्ड थे । लेकिन कच्चायन अरहत से मिलने के बाद राजा का प्रचण्ड स्वभाव धीरे-धीरे कम होकर शान्त स्वभाव का राजा बन गये । (अंक 142)

ईसी दत्त द्वारा धर्म लिखना

अवन्ति देश में वर्द ग्राम नामक एक गाँव में बैलगाड़ी समूह का एक प्रमुख था । उसके पुत्र का नाम इसी दत्त था । इसी दत्त युवा वस्था के समय मच्चिका सण्ड शहर के चित्र गृहपति का एक अदृश्य मित्र हो गया। चित्र गृहपति त्रिरत्न शरणागत एक उपासक थे । चित्र गृहपति ने सोचा अपने अदृश्य मित्र को बुद्ध और धम्म के विषय में जानकारी देना है । ऐसा करने से बहुत बड़ा उपहार के रुप में होगा । ऐसा सोचकर बुद्ध का अरहत भाव, सम्यक सम्बुद्ध भाव, विद्याचरण सम्पन्न गुण जैसे बुद्ध का अनन्त गुण एक बहुत लम्बे पत्र पर लिखकर इसी दत्त को भेजवाया । अपने अदृश्य मित्र का पत्र पाकर इसी दत्त बुद्ध के बारे में जानकर बहुत प्रसन्न हुआ । प्रसन्न होकर कच्चायन अरहत के पास आकर प्रव्रज्या ग्रहण किया । प्रव्रज्या होने

के पश्चात् विदर्शना करके ज्यादा दिन जाने के पहले शड अभिज्ञा लाभी अरहत पद प्राप्त किया ।

उसी समय कुटिकन्न सोन नामक एक सेठ पुत्र कच्चायन अरहत के पास आकर प्रव्रज्या ग्रहण किया । उसके बाद खण्ड शयन ब्राह्मण आदि कई प्रबुद्ध परिषद बुद्ध शासन में प्रव्रज्जित हुए । अधिक समय नहीं गुजरा कि पूरा उज्जैनपुर कशय वस्त्र में चमकने लगा ।

उस समय अवन्ति देश में कुरधर नगर में प्रताप पर्वत के भग्गर गटक नामक गाँव में बुद्ध शासन से प्रसन्न होकर उस नगर की जनता ने कई संघाराम बनाकर बुद्ध लोगों की पूजा किया ।

वैशाली में जाकर सुद्दीन्न कुलपुत्र को प्रव्रज्या देना

बुद्ध वाराणसी से प्रस्थान करके वैशाली नगर में जाकर महावन कूटागार शाल विहार में रहना प्रारम्भ किया । वैशाली नगर के आस-पास एक प्रसिद्ध गाँव था जिसका नाम कलन्द ग्राम था । उस गाँव का प्रधान चालीस करोड़ की सम्पत्ति का मालिक था । इसलिए व्यवहार में उस सेठ को कलन्द सेठ के नाम से जाना जाता था । कलन्द सेठ के पुत्र का नाम सुदिन्न था । बुद्ध का वैशाली में प्रवास के दौरान कार्तिक महोत्सव का आयोजन होता था । कलन्द सेठ का पुत्र सुदिन्न भी कार्तिक महोत्सव देखने के लिए आया था । पुर्वान्हि समय बहुत से लोग बुद्ध की पूजा के लिए सामान लेकर बुद्ध बिहार में जाते देखा तो सुदिन्न भी उन लोगों के पीछे-पीछे चला गया । वहाँ जाकर देखा बुद्ध उपदेश दे रहे है तो सुदिन्न भी एक कोने में बैठकर बुद्ध का उपदेश सुना । धर्म देशना समाप्त होने पर सुदिन्न घर के लिए निकला लेकिन बुद्ध को छोड़कर जाने का उसका मन नहीं किया । वापस आकर बुद्ध से प्रव्रज्या माँगा तो बुद्ध ने कहा जाओ अपने माता-पिता से अनुमति ले कर आओ । सुदिन्न अपने माता-पिता के पास जाकर भिक्षु बनने के लिए अनुमति माँगा । लेकिन सुदिन्न के माता-पिता भिक्षु बनने के लिए अनुमति नहीं दिया । सुदिन्न को प्रव्रज्या लेने की अनुमति नहीं मिलने के कारण दुखी होकर खाना-पीना छोड़ दिया । इस परेशानी से मुक्ति पाने के लिए सुदिन्न के माता-पिता ने प्रव्रज्या ग्रहण करेन के लिए अनुमति दे दिया । सुदिन्न बुद्ध के पास जाकर प्रव्रज्या के साथ-साथ उपसम्पदा भी लिया ।

बुद्ध का पुनः कपिलवस्तु में पधारना

बुद्ध वैशाली से कपिलवस्तु पहुँचकर निग्रोधाराम में रहना आरम्भ किया । उस समय महानाम शाक्य बुद्ध के पास आकर वेरंजापुर के दुर्भिक्ष घटना के बारे में विचार-विमर्श किया । महानाम शाक्य ने सोचा तीन महिने तक बुद्ध और भिक्षु महासंघ को जीने लायक भोजन नहीं होने के कारण शरीर दुबला एवम् कमजोर होने से रोकने के लिए ओजस्वी एवम् प्रनीत भोजन बनबाकर बुद्ध और भिक्षुमहासंघ को चार महीने तक भोजन दान दिया।

तेरहवाँ वर्षावास चालिका पर्वत में

बुद्ध कपिलवस्तु में रहने के बाद वहाँ से चलकर चालिका नगर में पहुँच गये । चालिका नगर में एक बहुत बड़ा पर्वत था उसी को चालिक पर्वत के नाम से जाना जाता था । उस पर्वत के पास एक सुप्रसिद्ध संघाराम भी था । बुद्ध प्रमुख महासंघ अपना तेरहवाँ वर्षावास चालिका पर्वत में बिताया।

परिच्छेद - 39

शक्रदेवेन्द्र द्वारा पुण्यानुमोदना करने का बुद्ध से आग्रह

चौदहवाँ वर्षावास श्रास्वती में, पन्द्रहवाँ वर्षावास कपिलवस्तु में, सोलहवाँ वर्षावास राजगृह वेलुवनाराम में एवं सत्रहवाँ वर्षावास आलवी वन में ।

चौदहवाँ वर्षावास श्रावस्ती में

वर्षा ऋतु समाप्त होने के बाद बुद्ध जनपद चारिका के बाद श्रावस्ती तक पहुँच गये । बुद्ध अपना चौदहवाँ वर्षावास श्रावस्ती के जेतवना राम में व्यतीत किया ।

राहुल का उपसम्पदा

उस समय तक राहुल श्रामणेर वयस्क होने के साथ ही बीस वर्ष के हो गये थे । उपसम्पदा होने के लिए योग्यता प्राप्त कर लिया था । उपसम्पदा के योग्य होने के कारण बुद्ध राहुल श्रामणेर को उपसम्पदा दी । उपसम्पदा के पश्चात् बुद्ध राहुल भिक्षु को महाराहुलोवाद सूत्र का धर्मदेशना किया । महाराहुलोवाद सूत्र सूनने के बाद भिक्षु राहुल अरहत पद प्राप्त किया । वर्षा वास का चार महीना समाप्त होने के पश्चात् बुद्ध गाँव-गाँव चारिका करते हुए कपीलवस्तु तक पहुँच गये ।

(**नोट**—यह सूत्र त्रिपिटक के मच्छिम निकाय में मिलता है ।)

पन्द्रहवाँ वर्षावास कपिलवस्तु में

बुद्ध कपिलवस्तु राज्य में पधार कर अपना पन्द्रहवाँ वर्षावास कपिलवस्तु के निग्रोधाराम में बिताया । नन्दी नामक शाक्य राजा बुद्ध शासन में प्रव्रज्जित हुए । सुप्रबुद्ध कोलिय राजा बुद्ध से दुश्मनी करके महापाप कर्म एकत्रित किया । जिससे सुप्रबुद्ध कोलिय राजा बुद्ध का निन्दा करते रहने से जमीन फाड़कर महानरक में सबसे कठोर दुर्गति को प्राप्त किया।

जेतवनाराम में पधारना

बुद्ध कपिलवस्तु से निकलकर चारिका करते हुए पुनः श्रावस्ती के जेतवनाराम में पहुँच गये । उस समय शक्रदेवेन्द्र दिव्य पुत्र कुछ देवता समूह के साथ बुद्ध के पास आकर निम्न प्रकार से प्रश्न किया—

भाग्यवत कौन-सी दान श्रेष्ठ है ? कौन-सा रस सबसे ज्यादा श्रेष्ठ है ? कौन-सी वस्तु से लगाव श्रेष्ठ है ? तृष्णा को नष्ट करके अरहत प्राप्त करना कैसे श्रेष्ठ है ?

बुद्ध ने कहा—सबसे श्रेष्ठ दान धर्मदान है । लोकोत्तर धर्म रस सबसे ज्यादा श्रेष्ठ होता है । धर्म के बारे में विचार-विमर्श करना, धर्मग्रन्थ पढ़ना, धर्म श्रवण करना यह सबसे ज्यादा लगाव होता है । सभी क्लेश नष्ट करके अरहत पद प्राप्त करना ही सभी दुःखों को नष्ट करना ही सबसे श्रेष्ठ है ।
(अंक 143)

इस धर्मदेशना के बाद अनेक व्यक्तियों को धर्मलाभ हुआ है । बुद्ध का यह धर्मदेशना सुनने के बाद शक्रदेवेन्द्र बहुत प्रमुदित हुआ और प्रमुदित होकर बुद्ध से कहा भाग्यवत आप और आपके भिक्षुगण धर्मदेशना अवसान में हमलोगों को पुण्य अनुमोदना क्यों नहीं करते हैं ? कृपया इस बारे में विचार-विमर्श कीजिए । उसी दिन से बुद्ध ने भिक्षुओं से कहा कोई भी पुण्य कर्म करने के बाद देवी-देवताओं का भी पूण्यानुमोदना किया करो ।

आलवक का समागम

श्रावस्ती में रहते समय बुद्ध अन्धेरा पक्ष के पश्चात् पूर्णिमा दिन भोर में महाकरुणा समापत्ति से संसार को देख रहे थे । आलवक नामक एक कुमार अनागामी होने के लिए हेतु सम्पत्ति पूर्ण करके इंतजार करने को बुद्ध ने दिव्य चक्षु से देखा । आलवक को सोवान फल ही प्रतिष्ठित होने की सम्भावना देखने के बाद देखा कि उस धर्मदेशना के माध्यम से बहुत लोगों को धर्मदेशना सुनने को मिलने से बहुत बड़ा कल्याण होगा । यह सोचकर बुद्ध संध्या समय में अकेले ही पैदल चलकर आलवीपुर से थोड़ी दूर एक वन में आलवक के घर पर पहुँच गये । आलवक के घर जाकर स्थान ग्रहण करने के पश्चात् बुद्ध से मिलने आयी हुई स्त्रियों को अनुशासन किये । थोड़ी देर के बाद आलवक अपने घर पर आ गया । घर आने के बाद बुद्ध

को तरह-तरह से परेशान करना शुरू कर दिया। आलवक द्वारा परेशान करने से भी बुद्ध शान्त भाव से बैठे रहे । अन्त में आलवक बुद्ध को बहुत भद्दी-भद्दी गाली देते हुए कहा श्रमण हमारे घर से निकल जाओ । बुद्ध ने सोचा यह व्यक्ति यक्ष स्वभाव का है यदि इसे अनुशसान में लाना है तो इसके साथ मैत्री से पेश आना होगा । उसी से उसका गुस्सा शान्त हो सकता है। ऐसा सोचकर बुद्ध आलवक की बात को सुनकर उसके घर से निकले । आलवक ने कहा यह श्रमण बहुत अनुशासित है । हमारे एक ही बात से घर से निकल गया । ऐसे अनुशासित व्यक्ति के साथ लड़ाई झगड़ा क्यों करेंगे ? बिना मतलब हमने इतना अच्छा आचरण सम्पन्न एक श्रमण के साथ झगड़ा करना शुरू कर दिया । आलवक ने सोचा यह श्रमण हमारे घर से निकला तो क्रोधित होकर निकला या अनुशासित होकर निकाला। फिर आलवक ने कहा श्रमण घर के अन्दर आओ । बुद्ध आलवक के घर में प्रवेश किये।

इसी तरह आलवक बुद्ध को अन्दर-बाहर आने-जाने के लिए तीन बार कहा और बुद्ध ने आलवक के बातों का अनुसरण किये । कोई बच्चा कोई अच्छी चीज मांगकर अपनी माता से रोता है उसी तरह बुद्ध भी आलवक का क्रोध से रोने का अनुरोध पूरा करने के लिए जो जो आलवक कहता गया बुद्ध उसे करते गये तब भी आलवक ने सोचा यह श्रमण बहुत अनुशासित है । आलवक ने सोचा सुबह तक इस श्रमण को अन्दर-बाहर करते रहेंगे । जब चौथी बार आलवक ने बुद्ध से कहा श्रमण बाहर निकलों तब बुद्ध ने कहा—मैं बाहर नहीं निकलूगा । जो तुम कर सकते है करो। आलवक ने सोचा श्रमण से कुछ सवाल पूछेंगे और पूछते-पूछते उसे थका देगे । आलवक अपने माता-पिता से सीखा हुआ चार प्रश्न बुद्ध से पूछा। (अंक 144)

बुद्ध ने चार प्रश्नों को निमित्त कराकर धर्मदेशना किया । धर्मदेशना के बाद आलवक सोवान हो गया ।

सुबह हो गया बलि दिनो जैसे ही आलवक को बलि चढ़ाने के लिए उसके अमात्य लोग एक छोटा बच्चा को ले आये । बच्चा आलवक का छोटा पुत्र था । अमात्यों ने बच्चे को ले आकर आलवक के सामने रखकर कहा महा यक्ष यह बच्चा तुम्हारे बलि के लिए ले आया हूँ । तुम खाओं या जो चाहे सो करो, बुद्ध के सामने ऐसा होने से सोवान होने के कारण

आलवक लज्जित हो गया । लज्जित होकर कहा भाग्यवत यह छोटा बच्चा मेरे लिए ही ये लोग लाया है लेकिन इस बच्चे को मैं आपके हवाले कर रहा हूँ । बुद्ध पुरुष महाकरुणा मैत्री से परिपूर्ण होता है । इसलिए इसे आप स्वीकार कीजिए ऐसा कहकर छोटे बच्चे को बुद्ध के हाथ में दे दिया। बुद्ध ने कहा बच्चा बहुत छोटा है । इसलिए इसे तुम पोषित कराओं और पोषित करके हमें दे देना । यह कहते हुए छोटे बच्चे को राजपुरुषों के हाथ में दे दिये । कई हाथों द्वारा अदल-बदल होने के कारण इस छोटे बालक को हत्थालवक नाम से जाना जाता है । बुद्ध के आदेशानुसार आमत्य लोग छोटे बच्चे को आलवीपुर में वापस ले गये । यह समाचार पूरे प्रदेश में फैल गया और समाचार सुनकर लोग बहुत प्रसन्न हुए ।

सुबह के समय बुद्ध भिक्षाटन के लिए निकले तो आलवक भी बुद्ध के पीछे-पीछे थोड़ी दूर जाकर रुक गया । बुद्ध भिक्षाटन करने के पश्चात् नगर के द्वार के पास ही एक बहुत बड़े पेड़ के नीचे बैठकर समाधि मुद्रा में थे । आलवक और राज्य की जनता बुद्ध के पास आकर बुद्ध के आश्चर्य के बारे में चर्चा करना शुरुकर दिया । सभी लोग आश्चर्य चाकित हो गये और कहने लगे कि बुद्ध जैसा एक श्रमण इतना क्रूर आलवक जैसे व्यक्ति को कैसे अनुशासन मे ला दिये । सभी की बातों की सुनकर बुद्ध जो आलवक को धर्मदेशना किये थे उसी धर्म को आम लोगों को भी देशना किये । उसी धर्मदेशना के बाद बहुत ज्यादा व्यक्ति धर्म के विषय में जानकारी प्राप्त किया ।

सोलहवीं वर्षावास आलवीपुर में

उस तरफ बुद्ध आलवक यक्ष को नियन्त्रित करने के बाद आलवी जनपद में ही वर्षावास का समय बिताया ।

सत्रहवा वर्षा वास

आलवीपुर से वर्षा वास समाप्त करने के पश्चात् दूसरा वर्षावास नजदीक आते ही राजगृह में पहुँचकर राजगृह के वेणूवनराम में अपना सत्रहवाँ वर्षावास किया । उस समय श्रीमाँ नाम की एक नगर शोभनी की बुद्ध के वैद्य जीवक की बहन थी । वह उस समय की सुप्रसिद्ध एक नगर शोभनी थी । जिस समय श्रीमाँ जीवित थी तो उसके रूप-सौन्दर्य से वसिभूत होकर एक नवयुवक

भिक्षु श्रीमाँ को प्राप्त करने को निराहार हो गया था । श्रीमाँ का थोड़ी दिन के बाद ही देहान्त हो गयी । बुद्ध ने आदेश दिया कि श्रीमाँ का शरीर दाह संस्कार नहीं करना है और उसके साथ-साथ सियार व कुत्ता से उसकी सुरक्षा करने के लिए राजा को खबर भेजा । तीन दिन बीतने के बाद मृत शरीर फूल गयी । सड़ना शुरू हो गया और मृत शरीर के नव द्वारों से गन्दगी निकलना शुरू हो गया और उसके साथ कीड़ा-मकोड़ा भी आना शुरू हो गया । बुद्ध की आज्ञा के अनुसार राजा ने एक राजाज्ञा पूरे राज्य में भिजवाया कि छोटे-बच्चों को छोड़कर इस मृत शरीर को देखने के लिए सभी को आना अनिवार्य है, सभी भिक्षुओं को भी आने के लिए कहा। श्रीमाँ नगर शोभनी के कारण भोजन छोड़कर लेटे हुए भिक्षु भी यह खबर सुनकर तुरन्त सभी भिक्षुओं के साथ श्रीमाँ नगर शोभनी के मृत शरीर को देखने के लिए चल पड़ा। सभी भिक्षु के साथ बुद्ध भी श्रीमाँ नगर शोभनी के मृत शरीर के पास जाकर खड़े हो गये । राजपुरुष उपासक-उपासिकाए मृत शरीर के चारों तरफ खड़े हो गये ।

बुद्ध ने पूछा महाराज यह कौन है ? राजा ने कहा भाग्यवत यह श्रीमा नगर शोभनी है । बुद्ध फिर से पूछा महाराज कौन है ? वन भी राजा ने बोला भाग्यवत यह श्रीमा है ।

बुद्ध ने कहा महाराज यदि यह श्रीमा हो तो सोने (Gold) का एकहजार सिक्का देकर श्रीमाँ का शरीर लेने के लिए किसी को भी कहिए। बुद्ध की बात के अनुसार राजा सभी लोगो से कहा लेकिन कोई भी श्रीमाँ के मृत शरीर को लेने को तैयार नहीं हुआ । उसके बाद मृत शरीर की किमत पाँच सौ सोने का सिक्का किया तब भी किसी ने नहीं लिया । इसके बाद उसकी किमत इक्कयावन सोने का सिक्का तय किया तब भी कोई लेने को तैयार नहीं हुआ । इसके बाद पच्चीस सोने के सिक्के पर आ गये । दस सोने के सिक्के पर आ गये तब भी कोई नहीं लिया । एक सिक्के पर भी कोई तैयार नहीं हुआ । बिना मूल्य का भी कोई व्यक्ति मृत श्रीमाँ की शरीर को लेने को तैयार नहीं हुआ । तब बुद्ध ने राजा से कहा कोई भी व्यक्ति मुफ्त में भी श्रीमाँ के मृत शरीर को लेने के लिए तैयार नहीं हुआ ।

उसके बाद बुद्ध ने कहा भिक्षुओं देखो जब श्रीमाँ जीवित थी तो एक रात्रि के श्रीमाँ के साथ सोने के लिए लोग सोने (Gold) का एक हजार

सिक्का भी देने को तैयार थे । अब बिना पैसा का श्रीमाँ को लेने के लिए कोई तैयार नहीं है । सभी का मन प्रसन्न करने वाली सुन्दर, प्रिय रूप शोभा से युक्त श्रीमाँ का शरीर धीरे-धीरे विनाश होता जा रहा है । इस शरीर का असली स्वभाव अपने बुद्धि से स्मरण करो ।

बुद्ध ने कहा कोई भी शरीर स्थिर नहीं होता है । नाड़ी समूह से हड्डी समूह को सुन्दर ढंग से तैयार किया हुआ अज्ञानी लोग इस शरीर को शुभ-सुन्दर ढंग से गलत समझता है । सुन्दर वस्त्र-आभूषणों से सजाने से इस शरीर का दुर्गन्ध, असूचि दुर्गन्ध यथा स्वभाव से समझना चाहिए । इस धर्म देशना को सूनने के बाद एकत्रित हुए बहुत से लोग धर्मावबोध किया। श्रीमाँ के कारण जो भिक्षु आहार छोड़ा था वह भी प्रकृति स्वभाव में आ गया । (अंक 145)

एक गरीब व्यक्ति को भोजन देने के बाद धर्मदेशना करना

वर्षा वास के बाद बुद्ध भिक्षु संघ के साथ श्रावस्ती जेतवनाराम में अपना समय बिताया । एक दिन दैनिक दिनचर्या के अनुसार सुबह बुद्ध लोक कल्याण के लिए अपने दिव्य चक्षु से संसार को देख रहे थे कि आलवीपुर में एक गरीब व्यक्ति सोवान होने के लिए हेतु समपत्ति पूर्ण कर रहा था । उसी व्यक्ति को अनुग्रह करने के लिए बुद्ध भिक्षु महासंघ को लेकर आलवीपुर तक पहुँच गये । आलवीपुरवासी बुद्ध और महासंघ को भोजन दान कराया । भोजन दान के पश्चात् अनुमोदना धर्मदेशना सुनने के लिए सभी लोग बैठ गये । बुद्ध एक गरीब आदमी के कल्याण के लिए आलवीपुर तक पद यात्रा किये । जब तक गरीब व्यक्ति बुद्ध के पास नहीं आया बुद्ध ने धर्म देशना प्रारम्भ नहीं किया । गरीब व्यक्ति अपना खोया हुआ एक बैल को ढूढ़ते-ढूढ़ते सुबह से परेशान था । बगैर भोजन-पानी के साथ ही साथ थकावट से भरे हुए गरीब व्यक्ति बुद्ध के पास जा पहुँचा और आकर बुद्ध के पास बैठ गया । भूखा-प्यास, थका हारा व्यक्ति को धर्मदेशना करने से कोई लाभ नहीं होगा । जो व्यक्ति बुद्ध और भिक्षु महासंघ को दान दिया था उससे बुद्ध ने पूछा कुछ भोजन बचा है कि नहीं । भोजनदान देने वाले ने कहा भोजन बचा हुआ है । बुद्ध ने इस गरीब व्यक्ति को बैठाकर भोजन और पानी दे दो । बुद्ध की बात को सुनकर भोजन दान देने वाले ने गरीब व्यक्ति को पेटभर अच्छा खाना खिलाया । गरीब व्यक्ति भोजन के

बाद अपना थकावट दूर करने के बाद उसी व्यक्ति को निमित्त कराकर बुद्ध ने धर्म देशना आरम्भ किया । दान-शील आदि अनुपूरक कथा से प्रारम्भ कर चतुरार्य सत्य तक धर्मदेशना किया ।

धर्मदेशना अवसाने गरीब व्यक्ति सोवान हो गया । बुद्ध धर्म देशना के बाद अपने आसन से उठकर चले गये । धर्म देशना सुनने आये उपासक-उपासिका परिषद भी बुद्ध के पीछे थोड़ी दूर जाने के बाद वापस लौट आयें। बुद्ध के साथ जाने वाले भिक्षु गरीब व्यक्ति बचा हुआ खाना देने के बारे में एक दूसरे से चर्चा कर रहे थे । बुद्ध के कान में यह बात आने से बुद्ध ने पूछा भिक्षुओं तुम लोग किस वस्तु के बारे में बात कर रहो हो। भिक्षु अपनी बात को बुद्ध के सामने रखा । बुद्ध ने कहा भिक्षुओं में तीस योजन (360 कि.मी.) पैदल मार्ग से इसीलिए इस जगह पर आया क्योंकि इस गरीब व्यक्ति का कल्याण करना था । गरीब व्यक्ति अपने खोयये हुए बैल को दिन भर खोजते-खोजते भूखा-प्यासा हमारे पास आया और भूखे-प्यासे व्यक्ति को धर्म अवबोध नहीं करा सकते । इसलिए धर्मदेशना के पहले हमने गरीब व्यक्ति को भोजन करवाया कहकर एक छोटा धर्मदेशना किये—

संसार में सभी रोगों से सबसे बड़ा रोग भूख है । संसार में सबसे बड़ा दुख गम्भीर दुःख संस्कार है । ये दोनों सत्य है, प्रत्यक्ष अवबोध करने वाले व्यक्ति निर्वाण को प्राप्त करता है । निर्वाण ही उत्कृष्ट सुख है और निर्वाण सुख से बढ़कर कोई दूसरा सुख नहीं है ।

(अंक 146)

परिच्छेद - 40

एक बुनकर कन्या भी निर्वाण लाभ प्राप्त कर सकती है

अट्ठारहवाँ वर्षावास, उन्नीसवाँ वर्षावास चालिय पर्वत पर एवं वीसवाँ वर्षावास राजगृह बेलुवन में ।

बुद्ध आलवीनगर से वर्षावास समाप्त करके और दूसरा वर्षा वास नजदीक आते ही चालिय पर्वत तक पहुँच गये । वहाँ पर एक बुनकर कन्या का कल्याण किया । कन्या की कहानी इस प्रकार है—

पूर्व समय बुद्ध आलवी नगर में रहते समय प्रदेशवासी बुद्ध और भिक्षु महासंघ को निमंत्रित कर महासंघ दान पूजा किया । भोजन दान के बाद बुद्ध अनुमोदना धर्म देशना किये । 'जिन्दगी अनित्य है, मरना नित्य है, किसी न किसी दिन मरना एक अन्त है, एक जिन्दगी मरने से अन्त होता है कितना दिन जिन्दा रहना है उसका भी कोई नियम नहीं है । मृत्यू भी एक सत्य है लेकिन कब होगा यह भी पता नहीं है' ।

यह सब सोचकर मरणानुस्मृति ध्यान करने के लिए कहा । कोई भी व्यक्ति मरणानुस्मृति ध्यान नहीं करने से मरणासन्न समय आते ही बिना इंतजार किया हुआ एक भयानक सर्प सामने आने से भयभीत होकर चिल्ला-चिल्लाकर मर जाता है । मरणानुस्मृति ध्यान करने वाला व्याक्ति पहले से ही हाथ में एक डण्डा लेकर कोई भी सर्प के लिए तैयार होकर रहने वाला व्यक्ति मरते समय कभी भी डर-भय में नहीं रहता है । इसलिए मरणानुस्मृति ध्यान करना चाहिए ।

लोग बुद्ध की बात को सूना लेकिन दिमाग में नहीं लिया और अपने दैनिक कार्य में निकल गये । बुनकर युवती उस समय सोलह वर्ष की थी और बुद्ध के उपदेश का सही ढंग से पालन किया । अपने जीवन का ज्यादा समय मरणानुस्मृति ध्यान के लिए बिताया । इस घटना के तीन वर्ष बाद बुद्ध महाकरुणा समापत्ति से दुनिया को देख रहे थे कि अपने दिव्य चक्षु

से देखा बुनकर कन्या मरणानुस्मृति ध्यान करने के कारण सोवान होने के लिए तैयार है । पाँच सौ भिक्षुओं के साथ श्रावस्ती जेतवनाराम से निकल कर आलवीपुर में अग्गालवक बिहार में प्रवेश किया ।

बुद्ध के सम्प्राप्ति का समाचार सुनकर आस-पास के लोग आकर अपने-अपने घर भोजन दान के लिए बुद्ध को निमंत्रित किया । बुनकर कन्या भी बुद्ध के आने की समाचार सुनकर सोचा पूर्ण चन्द्रमण्डल के समान चमकने वाले चेहरे से युक्त बुद्ध हमारे प्रदेश में आने से हम बहुत प्रसन्न है । मेरा सोने रंग का गुरु (बुद्ध) आज से तीन वर्ष के पहले हमने देखा था । बुद्ध का सोने रंग का शरीर देखने और उनका धर्म देशना सुनने के लिए मैं अवश्य जाऊँगी । बुनकर तरुणी के पिता जी कपड़ा बुन रहे थे क्योंकि उस कपड़े को पूरा बुनकर उसी दिन देना था । अपनी पुत्री से कहा उसी के लिए कुछ सामाग्री तैयार करके मेरे पास ले आओ । बुनकर कन्या ने सोचा पिताजी का कार्य पूर्ण करके उसके बाद धर्म देशना सुनेगे । ऐसा सोचकर कुर्सी पर बैठकर पिताजी के आज्ञा का पालन करते हुए कपड़ा बुनने का सामान तैयार किया । आलवकपुरवासी भोजन दान करने के पश्चात् अनुमोदना धर्मदेशना सुनने के लिए बैठ गये । लेकिन काफी भीड़ एकत्रित होने से भी बुद्ध बुनकर तरुणी आने के पहले धर्म देशना प्रारम्भ नहीं किया।

बुनकर कन्या कपड़ा तैयार करने का सामान पिताजी के आज्ञानुसार तैयार करके पिताजी को दिया । इसके बाद जाकर धर्मदेशना सुनने वाले लोगों के बीच में जाकर खड़ी हो गयी । वह बुद्ध की ओर देख रही थी बुद्ध ने देखा बुनकर तरुणी मेरी ओर देख रही है और निश्चिन्त होकर बुद्ध के पास गयी ।

बुद्ध अपना सिर उठाकर बुनकर कन्या को क्यों देखा कारण क्या है ? बुद्ध ने अपने दिव्य चक्षु से देखा कि पूर्व जन्म का एक अकुशल कर्म के कारण थोड़ी देर के बाद कन्या मर जायेगी । यदि उससे पहले धर्मदेशना सुना तो सोवान हो जायेगी । उसके बाद मरने से अगला जन्म तुषित दिव्य लोक में होगा । इसलिए बुद्ध ने बुनकर कन्या आने के पहले धर्म देशना शुरु नहीं किया । बुनकर तरुणी की ओर बुद्ध विशेष रूप से सिर उठाकर देखा बुनकर कन्या बुद्ध के पास आकर नमस्कार करने के बाद उनके समीप एक तरफ बैठ गयी ।

बुद्ध ने पूछा आप कहाँ से आयी है ? बुनकर कन्या बराबर मरणानुस्मृति ध्यान करने के कारण उत्तर दिया भाग्यवत मैं कहा से आयी हमें भी पता नहीं है ।

बुद्ध ने पूछा कहा जा रही हो ? बुनकर तरुणी ने बोला यह भी हमें पता नहीं है ।

बुद्ध ने पूछा यह भी तुम नहीं जानती हो ? बुनकर कन्या ने कहा मैं जानती हूँ ।

सुनने वाले सभी लोगों ने सोचा यह कन्या बहुत मनमानी कर रही है जो बुद्ध ने प्रश्न पूछा उसके लिए जो मन में आया बोल रही है । सभी लोग गुस्सा होकर चिल्लाना शुरू कर दिया तब बुद्ध ने सबको शान्त कराया ।

कहाँ से आने का तुम कहा से आया पूछने से तरुणी ऐसा जवाब क्यों दिया ? उसके लिए बुनकर कन्या उत्तर देगी । भाग्यवत मेरा एक बुनकर के घर से आने का कारण प्रकट है लेकिन आप ने पूछा कहा से आकर उत्पन्न हुआ है कहा से आकर पैदा होने के लिए प्रश्न का जवाब हमारे पास नहीं था । इसलिए हमने ऐसा उत्तर दिया । बुद्ध साधु-साधु साधु कहकर अपनी प्रसन्नता प्रकट किये और बुनकर कन्या की प्रशंसा किये । बुद्ध ने पूछा तुम जानती नहीं है पूछने से तुमने बोला जानती हूँ बोलकर क्यों जवाब दिया ? कहा भाग्यवत मैं मरूँगी वह मुझे मालूम है इसलिए जानती हूँ बोलकर जवाब दिया । उसके लिए भी बुद्ध ने साधुवाद दिया। बुद्ध ने कहा तुम जानती हो बोलने से तुमने कहा नहीं जानती हूँ इसका मतलब क्या है ? भाग्यवत कौन-सी समय कब कहाँ मरेगा ? उसके बारे में हमकों जानकारी नहीं होने के कारण यह जवाब दिया । सवालों का जवाब देने के लिए बुद्ध ने पुन: साधुवाद दिया ।

इसके पश्चात् बुद्ध ने सभी लोगों को आमंत्रित किया और आमंत्रित करके कहा इतने लोगों ने हमारे सामने धर्म देशना सुने लेकिन जो हमने बोला उस बात को कोई भी नहीं समझ सका । लेकिन एक व्यक्ति पर सभी लोग मिलकर दोषरोपण करने में लग गये क्योंकि प्रज्ञा बुद्धि विहिन व्यक्ति अन्धे होते हैं प्रज्ञा बुद्धि से युक्त व्यक्ति आँख से देखता है लेकिन आम जनता प्रज्ञा बुद्धि सम्पन्न नहीं है । अनित्य आदि ध्यान करने वाले बहुत

कम होते हैं । पक्षी पकड़ने वाले बहेलियाँ के जाल से कुछ पक्षी मुक्त होकर आजादी से घूमता है । उसी प्रकार संसार में बहुत कम लोग सुगति प्राप्त करके निवार्ण अवबोध करते हैं । (अंक 147)

धर्मदेशना समाप्त होते ही बुनकर कन्या सोवान हो गयी और बाकि सभी श्रावकगण भी धर्म देशना से लाभ प्राप्त किया । बुनकर कन्या अपने पिताजी के पास वापस आयी और थकान के कारण खड़े-खड़े ही सो गयी । बुनकर के लिए ले आया हुआ लकड़ी का एक कोना सिर पर लगने से तुरन्त नीद से जाग गयी । लेकिन एक लकड़ी पहले जैसे सजानी थी जो बुनकर कन्या के सिर पर लग गयी । जिससे वह उसी स्थान पर मर गयी । बुनकर कन्या के पिताजी ने देखा उसकी पुत्री लहुलुहान होकर मरी बड़ी है । उसे देखने के बाद बहुत शोक भरित हो गये और सोचा मेरा शोक दूर करने का एक गुरु है वह बुद्ध है । बुद्ध के पास जाकर शोक भरित हृदय से घटना के बारे में सब कुछ बताया । बुद्ध बुनकर को एक छोटा धर्मदेशना किये ।

'शोक मत करो इसी ढंग से तुम्हारे बच्चे मर गये जब-जब तुम रोये उस आसु को एकत्रित किया जाय तो चार महासमुद्र जल से भी ज्यादा है कह कर धर्म देशना करके अनमतग्ग कथा की देशना की'।
(अंक 148)

धर्मदेशना सुनने के पश्चात् बुनकर का शोक कम हो गया । उसके बाद बुद्ध के पास प्रव्रज्या उपसम्पादा लेकर ध्यान करने के कारण अरहत पद प्राप्त किया ।

उन्नीसवाँ वर्षावास

उन्नीसवाँ वर्षावास बुद्ध चालिय पर्वत पर ही बिताया । इसके बाद उन्नीसवाँ वर्षावास राजगृह वेणुवनाराम में बिताया । (इन सभी वर्षावास के समय भी कई घटना और कई धर्मदेशना हुआ लेकिन ग्रन्थ का आकार बहुत बड़ा न हो इसलिए सभी घटना को लिखना सम्भव नहीं है) ।

अंगुलिमाल को अपने वस में लेना

कौशल राजा के पुरोहित का नाम भार्गव था और भार्गव के पत्नी का नाम मन्तानी थी । दोनों ब्राह्मण परिवार के थे । उनका एक पुत्र था जिसका

नाम अहिंसक था । उस समय भारतवर्ष में सबसे बड़ा अध्ययन केन्द्र तक्षशीला था जहाँ दिशापामुख तक्षशीला के सबसे प्रमुख विद्वान थे अहिंसक को अच्छी शिक्षा देने के लिए भार्गव पुरोहित अपने पुत्र अहिंसक को दिशापामुख आचार्य के अधिन कर दिया । दिशापामुख आचार्य के अधिन अहिंसक बहुत सुशील छात्र के हिसाब से ठीक तरह से अध्ययन किया । जिस कारण आचार्य अहिंसक के उपर विशेष ध्यान देना शुरू कर दिया। इस घटना को देखने के पश्चात् बाकि शिष्यगण अहिंसक से द्वेष ईर्ष्या करना शुरू कर दिया और सोचे आचार्य और अहिंसक के बीच फूट डालकर दोनों को अलग कर देगे । अच्छा छात्र होने के नाते अहिंसक कभी-कभी आचार्य के घर भी जाता था । विरोधी छात्रों को मौका मिला और सभी ने मिलकर एक कहानी बनायी कि अहिंसक का सम्बन्ध गलत ढंग से आचार्य की पत्नी के साथ हो रहा है ।

यह बुरी खबर आचार्य के कान में आने के बाद आचार्य दिशापामुख बहुत क्रोधित हो गये । आचार्य ने सोचा किसी तरह उपाय करके अहिंसक को जान से मरवा देगे । लेकिन आचार्य ने सोचा ऐसा करने से लोग कहेगे कि इतना बड़ा आचार्य और इतना घटिया काम भी करता है । जिससे हमारी बदनामी होगा और पढ़ने आने वाले शिष्य एवम् शिष्या भी कम हो जायेंगे। इसपर आचार्य ने सोचा इसको मरवाने का कोई दूसरा उपाय करना होगा। आचार्य के दिल में अहिंसक के खिलाफ गंदे विचार चलते रहे । अहिंसक अपनी शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात् आचार्य दिशापामुख के पास जाकर कहा आचार्य जी मेरा अध्ययन का कार्य पूर्ण हो गया है । इसलिए मैं आपको गुरु दक्षिणा देना चाहता हूँ ।

आचार्य ने कहा तुमने शिक्षा अच्छा प्राप्त किया है । इसकी दक्षिणा के लिए एक-एक आदमी से एक अंगुली काटकर एक हजार अंगुली का माला मेरे लिए भेट करो । आचार्य ने सोचा यदि किसी जिन्दा व्यक्ति का अंगुली काटने गया तो कोई न कोई इसका जान ले लेगा । आचार्य ने कहा यदि तुमने यह गुरु पूजा नहीं किया तो जो-जो तुमने हमसे प्राप्त किया है वह सभी शिक्षा निष्फल होगा । अहिंसक ने आचार्य के सामने वादा किया कि हम आपके लिए यह करूँगा । अहिंसक तक्षशीला से निकलकर कोशलराज्य में पहुँच गया वहाँ पहुँचकर इंसानों की अंगुली काटने का हथियार बनवाया । जंगल में छिपकर रास्ते पर जाने वाले व्यक्तियों को पकड़कर एक-

एक व्यक्ति का एक-एक अंगुली कटाना शुरू कर दिया । इस भयानक घटना के कारण लकड़ी काटने और पशु चराने के लिए जंगल में आने-जाने वालों का सिलसिला बन्द हो गया । जंगल में लोगों के न आने से अहिंसक रात्रि में किसी के घर में जबरदस्ती घुसकर अंगुली काटना शुरू कर दिया । पूरा कौशलराज्य में इससे हा-हाकार मच गया । अंगुली काटकर कही अलग रखने से जानवर के खाने के डर से एक-एक अंगुली कटे हुए को बाँधकर एक माला बनाकर उसे अपने गले में पहन लिया । सम्पूर्ण कोशल राज्य में अहिंसक अंगुलीमाल के नाम से प्रसिद्ध हो गया ।

कोशल राज्य की जनता इस घटना से त्रस्त एवम् परेशान होकर प्रसेन्नजीत कोशल राजा के पास आकर सम्पूर्ण कहानी को विस्तार पूर्वक बता दिया । राजा ने जनता से कहा इस अँगुलीमाल को पकड़ने के लिए कल ही सैनिकों को भेज दूँगा । इतना कहने के बाद जनता को वापस भेज दिया । इस बात की खबर भार्गव पुरोहित को चला कि यह हमारा प्रिय पुत्र अहिंसक है । घर जाकर अपनी प्रिय भार्या मन्तानी को घटना के बारे में सबकुछ विस्तार पूर्वक बता दिया । मन्तानी ब्राह्मणी भार्गव ब्राह्मण से कहा आप घबराओं नहीं मैं जाकर अपने प्रिय पुत्र को ले आऊँगी । ब्राह्मण ने कहा यह उसके उपर विश्वास करना मुश्किल है । उसे लाने के लिए तुम नहीं मैं जाऊँगा । मन्तानी ब्राह्मणी ने कहा मैं उसकी माता हूँ । वह हमारी बात मानेगा इसलिए मैं ही जाऊँगी ।

दूसरे दिन सुबह बुद्ध महा करुणा समापत्ति से दुनिया को देख रहे थे तो देखे कि अंहिसक अंगुलिमाल बनकर इतना बड़ा काण्ड करना शुरु कर दिया और यदि मैं समय पर नहीं पहुॅचा तो वह अपनी माता को भी मार डालेगा । उसका अकुशल कर्म पंच आनन्तर्य पाप कर्म करके महा नरक में पहुँच कर बहुत दिनों तक उसे दुख झेलना पड़ेगा । यदि हम उसके सामने जाने से और धर्मदेशना सुनने, व प्रव्रज्या होने और ध्यान करने से अरहत होगा । ऐसा सोचकर बुद्ध श्रावस्ती जेतवना राम से पैदल जिस स्थान पर अंगुलिमाल रहता था वहाँ शाम तक पैदल ही पहुँच गये । जब बुद्ध अकेले जा रहे थे तो लोगों ने कहा उधर मत जाइए उधर अंगुलिमाल नाम एक खतरनाक डाकू है जो आप को भी नुकसान पहुँचायेंगा । बुद्ध चुपचाप से आगे बढ़ रहे थे कि अंगुलिमाल ने देखा बाकि एक अंगुलि की आवश्यकता है और एक व्यक्ति आ रहा है । बुद्ध ने अधिष्ठान किया बुद्ध

और अंगुलिमाल के बीच दूरी का फासला रखकर बुद्ध एक स्थान पर रुक गये । अंगुलिमाल को लगा बुद्ध आ रहा है अंगुलिमाल बहुत तेजी से बुद्ध के पीछे दौड़ रहा था । बुद्ध अपने स्वभाव से चल रहा था । इसी प्रकार दोनों बहुत दूर तक चले गये । इतना दूर दौड़ने के बाद अंगुलिमाल थक गया । बुद्ध से कहा श्रमण तुम क्यों दौड़ रहा है । तुम रुक जाओ बुद्ध ने कहा हम तो रुका हुआ है रुकना तुम्हीं को है ।

अंगुलीमाल ने सोचा यह श्रमण कह रहा है मैं तो रुका हूँ और मुझे ही रुकने के लिए कह रहा है । अंगुलीमाल सोचा चलते-चलते श्रमण कहता है मैं रुका हुआ हूँ । यह क्या बात है इसके बारे में श्रमण से पूछना होगा। अंगुलीमाल अंगुली काटने से ज्यादा उसके मन में इसी शब्द का विचार-विमर्श करने के लिए मन व्याकूल हो गया । बुद्ध के पास जाकर पूछा आप कैसे रुके हुए हैं ? और मैं कैसे नहीं रुका हुआ हूँ । इसका कारण पूछा बुद्ध ने कहा मैं हिंसा से पूर्णरूप में मुक्त हूँ, हमारे चित्त में शान्ति और मैत्री गुण भरा हुआ है इसलिए मैं रुका हुआ हूँ । लेकिन तुम ऐसे नहीं है तुम ऐसे गुण से युक्त भी नहीं है । तुम मरने के बाद नरक में जाने के लिए कुछ गलत करने के लिए दौड़ रहे हो इसलिए तुम रुके नहीं हो।

अंगुलीमाल सिद्धार्थ गौतम के बारे में पहले से सुना हुआ था । मन में आया जो हमने पहले सुना था । सिद्धार्थ यही हो सकता है फिर मन में आया शायद हमारे उपकार के लिए यहाँ आया होगा । अपना हथियार बुद्ध के सामने रखकर वादा किया कि आज के बाद हम सभी पापों से मुक्त हो जायेगे । हमे आप अपने शासन में प्रव्रज्या दीजिए । बुद्ध अंगुलीमाल को साथ लेकर श्रावस्ती जेतवनाराम गये । येही भिक्षु भाव से अंगुलीमाल को प्रव्रज्या दिया ।

अंगुलीमाल की माता अपने पुत्र अहिंसक को पूरे वनान्तर में खोजा लेकिन नहीं मिलने से वह वापस आने घर चली गयी ।

राजाप्रशेन्नजीत अंगुलीमाल को पकड़ने के लिए अपनी सेना को लेकर निकल पड़े । राजा प्रशेन्नजीत अहिंसक को खोजने जाते समय जेतवनाराम में बुद्ध को प्रणाम करने के लिए उनके पास गये । राजा ने कहा भाग्यवत मैं और मेरी सेना अंगुलीमाल को पकड़ने के लिए जा रहा है । बुद्ध के पास भिक्षुबनकर रहने वाले अंगुलीमाल को बुद्ध ने राजा को दिखाया । बुद्ध

द्वारा राजा कोशल का अंगुलीमाल से परिचय करवाते समय राजा की सेना अगुलीमाल को देखते ही घबराकर भाग गयी । राजा भी घबरा गया बुद्ध ने कहा अब अंगुलीमाल प्रव्रज्जित उपसम्पन्न अनुशासित भिक्षु है । वह अब किसी चींटी को भी नुकसान नहीं पहुँचायेगा । बुद्ध की बात सुनने के बाद राजा प्रशेन्नजीत ने कहा इतना चण्ड भयानक एक व्यक्ति को बुद्ध कैसे अपनी शिक्षा से नियन्त्रित किया । बहुत आश्चर्य की बात है । मैं कैसे भिक्षु अंगुलीमाल का उपस्थाय उपासक के रूप में सेवा करूँगा ।

अरहत होने के पश्चात् भी अंगुलीमाल भिक्षाटन के लिए गाँव में जाते थे । गाँव के बालक कोई चिड़िया और कुत्ता को पत्थर मारते थे वह सब पत्थर अंगुलीमाल के सिर पर लग जाता था । पिण्डपात से लौटते समय पूरा शरीर खून से लथपथ रहता था । अंगुलीमाल ने कारण पूछा तो बुद्ध ने कहा जो तुम इस जन्म में दुष्ट चेतना से एक-एक अंगुली के लिए इतने इंसान को जान से मारा । अरहत होने से भी पंचस्कन्ध कब तक है जब तक इसी पाप का फल सभी को भोगना होगा ।

इस घटना को लेकर बुद्ध ने अंगुलीमाल से कहा तुम इतना अपकृत्य करने के बाद भी तुम्हारा पुण्य जागृति हुआ । अरहत भी प्राप्त किया इस लिए लोक कल्याण के लिए तुम एक सत्य क्रिया करो ।

अंगुलीमाल ने सत्यक्रिया में आर्यभाव (अरहत) प्राप्त करने के बाद अपने चित्त में कोई भी हिंसक चेतना उत्पन्न नहीं हुआ है । इसी अहिंसक सत्यक्रिया से किसी माँ के पेट में बच्चा होने से उसको पैदा होते समय ये हमारे सत्यक्रिया की शक्ति से माता को एवम् बच्चा को कोई भी कष्ट नहीं होगा ।

ऐसा अधिष्ठान कराकर अंगुलीमाल ने कहा—'यतो हं भगिनि अरियाय' कह कर एक सत्य क्रिया का वाक्य बोला । इसी वाक्य को अंगुलीमाल सूत्र पाठ के नाम से जाना जाता है । (थेरवादी बौद्ध देशों में कोई भी महिला को बच्चा पैदा होने के समय नजदीक आते ही बौद्ध भिक्षु लोग जाकर सुबह-शाम इसी सूत्र बाकि एक दो सूत्र को सुनाने से पैदा होते समय माँ और बच्चा को कोई कष्ट नहीं होता है) ।

परिच्छेद - 41

नवकोटि लाख मूल्य का हार श्रावस्ती जेतवनाराम में भूलना

इक्किसवाँ वर्षावास श्रावस्ती जेतवनाराम में

बुद्ध बीसवाँ वर्षावास राजगृह में बिताकर वर्षावास समाप्त होने के बाद इक्किसवाँ वर्षावास नजदीक आते ही श्रावस्ती जेतवनाराम में पहुँच गये। इक्किसवें वर्षावास से लेकर चौवालिसवें वर्षावास का समय श्रावस्ती में ही रहे। चौबीस वर्षावास श्रास्वती में ही बिताया। अट्ठारहवाँ वर्षावास जेतवनाराम बाकि छः वर्षावास विशाखा महाउपसिका द्वारा निर्मित पूर्वाराम में बिताया। वर्षाऋतु समाप्त होने के पश्चात् बुद्ध जनपद चारिका में निकलते थे। बुद्ध ज्यादातर वर्षावास श्रावस्ती जेतवनाराम एवम् पूर्वाराम में इसलिए बिताया क्योंकि अनाथपिण्डिक सेठ एवं विशाखा महाउपासिका का गुण महत्त्व को देखते हुए।

शुरु के बीस वर्षों में नागसमान नागित, उपवान, सुनख्खत्त, साग्गन, राध, मेघिय, चुन्न श्रामणेर जैसे लोग बुद्ध को बार-बार उपस्थान किया। भिक्षु आनन्द भी कभी-कभी बुद्ध का उपस्थान किया। कोई भी भिक्षु निरन्तर बुद्ध को उपस्थाय करने के लिए सक्षम नहीं था। बुद्धत्व के बीस वर्ष बीतने के बाद बुद्ध अपने गन्ध कुटि में भिक्षुओं से कहाँ मेरे लिए नित्य एक उपस्थाय की आवश्यकता हैं। बुद्ध की बात सुनकर सारिपुत्र अरहत, अरहत मौद्गलयायन जैसे महाश्रावक भिक्षु बुद्ध का उपस्थाय करने के लिए इच्छा व्यक्त किया। लेकिन बुद्ध ने किसी को स्वीकार नहीं किया। सभी के बीच में भिक्षु आनन्द चूपचाप से बैठे थे। सभी भिक्षुओं ने कहा आनन्द इस उत्कृष्ट कार्य के लिए सबके योग्य है। इसलिए इस पद को आप माँगिये। भिक्षु आनन्द ने कहा कोई पद माँगकर लेना अच्छा नहीं होता है। यदि बुद्ध की इच्छा है तो स्वयं ही बतायेंगे। तब मैं तैयार हूँ। बुद्ध ने कहा भिक्षु आनन्द को किसी की आज्ञा की आवश्यकता नहीं है, वह स्वयं मेरा

अग्रउपस्थाय का कार्यभार सम्भालेगा । सभी भिक्षु लोग इस बात को सहर्ष अनुमोदन किया । लेकिन भिक्षु आनन्द ने सबके सामने चार प्रतिक्षेप (इंकार) रखा है—

(1) जो बुद्ध को सबसे किमती चिवर मिलता है, वह कोई भी चिवर आनन्द नहीं लेगा ।

(2) बुद्ध द्वारा भिक्षाटन में प्राप्त करने वाला प्रनीत भोजन किसी भी कारणवस आनन्द को नहीं देना है ।

(3) बुद्ध जिस गन्ध कुटि में रहते हैं उस गन्ध कुटि में आनन्द को किसी कारणवस नहीं रहना है ।

(4) बुद्ध जो कोई भी निमन्त्रण स्वीकार करेंगे, उस निमन्त्रण में आनन्द को नहीं ले जाना है ।

चार आयाचना

इसके पश्चात् भिक्षु आनन्द ने चार आयाचना भी की है—

(1) आनन्द जो कोई भी निमन्त्रण स्वीकार करेगा, उस निमन्त्रण में बुद्ध को जाना जरूरी है ।

(2) बाहर से कोई अतिथि बुद्ध को मिलने आने पर उन लोगों को बुद्ध के पास ले जाने का अनुमति चाहिए ।

(3) यदि हमारे दिमाग के अन्दर कोई शंका हो तो हमें किसी भी समय बुद्ध के पास निवारण के लिए पास जाने की अनुमति चाहिए ।

(4) बुद्ध आनन्द की अनुपस्थिति में कोई भी धर्मदेशना किया, तो वह धर्मदेशना बुद्ध को दोबारा आनन्द के सामने करना आवश्यक है ।

उस दिन से भिक्षु आनन्द बुद्ध के लिए शीत-उष्ण जल का सम्पादन करना, तीन प्रकार का दातुन तैयार करना, श्रीपाद व शरीर का मालिश करके सन्तप्त करना । बुद्ध के गन्ध कुटि का बच्चकुटि (शौचालय) को साफ सुथरा रखना, गन्ध कुटि को झाड़ू देकर साफ करना व सजाना जैसे निरन्तर कार्यों में आनन्द अपना समय बिताते थे । कौन-सा सामान किस समय बुद्ध को जरूरत पड़ेगा, सोचकर हर वक्त बुद्ध के आस-पास ही टहलते थे । रात्रि समय में बुद्ध की सुरक्षा के लिए एक बड़ा दीप लेकर गन्ध कुटि के आस-पास रहते थे । ऐसा इसलिए किया है कि यदि रात्रि

को भी बुद्ध को कोई चीज की जरूरत हो तो उसके लिए आनन्द सदैव तैयार रहते थे । यदि आनन्द आराम से सो गया है, तो अग्र उपस्थाय का कर्तव्य वह पूर्ण नहीं कर पाता । इसलिए भिक्षु आनन्द दिन रात अपना अग्र उपस्थाय का कार्य सर्वप्रकार से निभाया ।

पूर्वाराम पूजा

श्रावस्ती नगर के पूर्णवर्धन सेठ की पत्नी का नाम विशाखा था । विशाखा की जन्म भूमि भद्दीयपुर है । विशाखा जब सात वर्ष की थी तभी बुद्ध का उपदेश सुनकर प्रसन्न हो गयी । शादी होने के बाद अपने ससुर मिगार सेठ के साथ पूरा परिवार को बुद्ध शासन में प्रसाद कराकर बुद्ध की सेवा में लगा दिया । धर्म का इतना सेवा करने के कारण ससुर ने विशाखा को मातृ का स्नेह दिया । जिसके कारण विशाखा को मिगार माता के नाम से भी जाना जाता है ।

विशाखा जेतवनाराम में धर्मदेशना सूनने के लिए प्रतिदिन जाती थी। एक दिन विशाखा के गले का हार धर्म सभा मण्डप में भूल से कहीं गिर गया । लेकिन मिलने के बाद विशाखा ने सोचा इस हार का मालिक बुद्ध है । ऐसा सोचकर हार को बेचकर उसी पैसे से बुद्ध को एक विहार बनवाने का अधिष्ठान किया । उस समय हार की किमत नव कोटि लाख मूल्य था। उसी पैसे से श्रावस्ती में पूर्व दिशा में एक जमीन खरीद कर बुद्ध और भिक्षु महासंघ को दो मंजिले का एक बहुत बड़ा विहार बनवाकर बुद्ध प्रमुख महासंघ को पूजा किया । उस विहार को पूर्वाराम विहार के नाम से जाना जाता है । बुद्धत्व प्राप्ति के बीस साल बाद वज्जीरट (वर्तमान वैशाली) देश में एक बहुत बड़ा दुर्भिक्ष हुआ ।

उसी वज्जीरट प्रदेश में सुद्दीन्न नाम का एक भिक्षु था दुर्भिक्ष के कारण सुद्दीन्न भिक्षु वैशाली नगर में चले गये । वैशाली नगर के कलन्दक ग्राम में सुद्दीन्न भिक्षु अपने पिताजी के घर पर जाकर दूसरे दिन गृहस्थ जीवन के समय की उसकी भार्या (पत्नी) सुद्दीन्न भिक्षु को अपने आकर्षण से वस में ले लिया । अपने बस में लेने के बाद पूर्व जैसे सम्बन्ध बना लिया जैसे पहले पति-पत्नी थे । बुद्धत्व से लेकर बीस साल तक बुद्ध भिक्षुओं का ओवाद प्राप्ति मोक्ष से विनय कर्म का कार्य कराते थे । ओवाद प्राति मोक्ष निम्नलिखित है—

'सब्ब पापस्य अकरणं कुसलस्य उपसंपाद ।
सचित्त परियोदपनं, एतं बुद्धानंसासनं' ॥
'खन्ति परमं तपो तितिक्खा,
निब्बानं परमं बदन्ति बुद्धा ।
नहि पब्वज्जितो परुपघाति,
समणो होति परं विहेठयन्तो' ॥ (धम्मपद)

अर्थ—(1) सभी पापों को नहीं करना, कुशल कर्मों का संचय करना, अपने चित्त को शुद्ध करना यही बुद्धों का धर्म है ।

(2) सहन शीलता और क्षमा-शीलता परम तप है, बुद्ध लोग निर्वाण को उत्तम बताते है । दूसरों का घात करने वाला और सताने वाला प्रव्रज्जित श्रमण नहीं होता है ।

'अनूपवादो अनूपघातो पातिमोक्खे च संवरो ।
मत्तञ्ञुता च भत्तस्मित्तस्मिं पन्तञ्च सायनासनं' ॥ (3)
अधिचित्ते च आयोगो एतं बुद्धान सासनं । (धम्मपद)

अर्थ—(3) निन्दा न करना, घात न करना, प्राति मोक्ष में संयम रखना, भोजन में मात्रा जानना, एकान्तवास, चित्त को योग में लगाना—यहीं बुद्धों की शिक्षा है ।

इसी को ओवाद प्राति मोक्ष कहते हैं ।

(बुद्ध के द्वारा देशित प्राति मोक्ष में बौद्ध भिक्षुओं का विनयकर्म का उल्लेख मिलता है । इस प्राति मोक्ष में चार पाराजिका बौद्ध भिक्षुओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है । बुद्धत्व के बीस साल के बाद वैशाली नगर का सुदीन्न भिक्षु अपने पितृ गाँव कलन्द में जाकर अपने पूर्व गृहस्थ जीवन की स्त्री के साथ संसर्ग में लिप्त हो गया । इसी घटना को लेकर बुद्ध ने भिक्षुओं को प्रथम पाराजिका शिक्षा पद का नियम बनाया । कोई भिक्षु उपसम्पदा लेने के बाद किसी भी स्त्री के साथ संसर्ग करेगा तो उसका भिक्षुत्व उसी समय समाप्त हो जायेगा । चार पारीजिका से प्रथम पारीजिका स्त्री संसर्ग रूप में दिखाया है ।)

बुद्धत्व प्राप्ति के बिसवाँ साल में वर्षा ऋतु के बाद बुद्ध श्रावस्ती में समय बिताया । उसी समय बुद्ध ने ओवाद प्राति मोक्ष देशना करने से इन्कार किया । और उसी समय उसी स्थान पर आनापाति मोक्ष देशना प्रारम्भ किया ।

इसका एक कारण है, श्रावस्ती पूर्वाराम में बुद्ध पूर्णिमा के दिन बहुत से भिक्षु संघ के साथ समय बिताये । प्रथम याम समाप्त होने के पश्चात भिक्षु आनन्द बुद्ध के पास जाकर कहा कि भिक्षु गण बहुत देर से खड़े हैं इसलिए ओवाद प्राति मोक्ष देशना करना आवश्यक है । लेकिन बुद्ध ने कोई उत्तर नहीं दिया निशब्द ही रहे । दूसरा याम समाप्त होने के पश्चात् प्रातिमोक्ष देशना के लिए आयाचना किया । उस समय भी बुद्ध चुप रहे । आखिरी बार भी बुद्ध के पास जाकर प्रातिमोक्ष के लिए आयाचना किया । लेकिन तीसरी बार आयाचना करने पर बुद्ध ने आनन्द से कहा मेरे भिक्षुगण अपवित्र है ।

कौन भिक्षु भिक्षुगण के बीच में अपवित्र है ? बोलकर अरहत मौदगल यायन ने विचार-विमर्श किया । विचार-विमर्श के पश्चात् देखा एक दुशील भिक्षु भिक्षुसंघ के बीच में है । अरहत महामौदगलयायन भिक्षुसंघ के बाद उस भिक्षु को कहा आयुष्मान उठो, तुम्हारे असलियत को बुद्ध ने देख लिया है । भिक्षुसंघ के बीच में रहने का कोई अधिकार आप को नहीं है । लेकिन वह भिक्षु अरहत महामौदगलयायन की बात नहीं सुना, दूसरी और तिसरी बार उठकर जाने के लिए कहने पर भी नहीं गया । इसके बाद अरहत मौदगलयायन उस भिक्षु का हाथ पकड़कर उस स्थान से बाहर निकाल कर दरवाजा बन्द कर दिया । बुद्ध के पास जाकर कहा प्रातिमोक्ष देशना के लिये योग्य समय है ।

बुद्ध ने कहा महामौदगलयायन आश्चर्य की बात है ये कम पुण्य वाला व्यक्ति हाथ पकड़कर बाहर निकालने के बाद बाहर निकला । बुद्ध ने कहा महामौदमलयायन महासमुद्र में आश्चर्य आठ है । उसी तरह बुद्ध शासन में भी आश्चर्य आठ है ।

महासमुद्र के आठ आश्चर्य

(1) महासमुद्र की ओर पृथ्वी से क्रमशः ढाल होता है ।

(2) समुद्र अपनी लहर सीमा का उलंघन नहीं करते हैं ।

(3) समुद्र शुरु होते ही गहरा नहीं होता है ।

(4) समुद्र कभी कोई गन्दगी अपने पास नहीं रखता है ।

(5) चाहे जितनी भी गन्दगी हो समुद्र उसे अपने किनारों पर लाकर छोड़ देता है ।

(6) कई नामों से बहुत-सी नदियाँ समुद्र में आ मिलते हैं लेकिन सभी का नाम छोड़कर उस जल को समुद्र का नाम दिया जाता है ।

(7) वर्षा हो, न हो, नदी नालों से पानी आये या न आये लेकिन समुद्र का पानी न ज्यादा होता है न कभी कम होता है ।

(8) समुद्र का पानी एक रस होता है अर्थात नमक का रस होता है। समुद्र में मोती-हीरा जैसे रत्नों के साथ विशाल प्राणी भी रहते हैं ।

शासन का आश्चर्य आठ

(1) शासन में शिक्षा क्रम से विकसित करना है ।

(2) ऐसा नहीं करने से निर्वाण प्राप्त नहीं हो सकता है ।

(3) सही बुद्ध श्रावक बुद्ध के नियम को अपने जीवन के बराबर समझकर पालन करता है । दुस्शील व्यक्ति संघ के साथ नहीं रहता है ।

(4) दुस्सील भिक्षु संघ से दूर रहता है ।

(5) विविध गोत्र से विविध गोत्र नाम से आने वाला व्यक्ति अपना मूल गोत्र छोड़कर शाक्य पुत्र का निर्धारित नाम लेता है। जीतना लोग निर्वाण प्राप्त करेगा लेकिन निर्वाण प्राप्त करने वालो का आने-जाने का कभी-कमी नहीं होता है ।

(6) इस शासन में एक रस होता है उसी रस को विमुक्ति रस कहते हैं ।

(7) इस शासन में सैंतीस बोधिक पाक्षिक धर्म जैसा रत्न होता है।

(8) इसी शासन में सारिपुत्र और महामौदगलयायन जैसे महागुण सम्पन्न व्यक्ति भी रहते हैं ।

बुद्ध महासमुद्र का आठ आश्चर्य एवम् बुद्ध शासन के आठ आश्चर्य की देशना किया। भिक्षुओं आज के बाद प्रातिमोक्ष देशना भी करूँगा। तुम लोग प्रातिमोक्ष देशना करो। ऐसा कहकर बुद्ध आनापाति मोक्ष देशना का नियम बनाया । (अंक 149)

परिच्छेद - 42

बुद्ध का दर्शन नहीं होने से लोगों का दुखी होना

आनन्द बोधि वृक्ष का रोपण

बुद्ध कभी-कभी श्रावस्ती से धर्म कार्य के लिए बाहर की चारिका करते थे । उस समय बहुत से उपासक-उपासिका सुगन्ध पुष्प (फूल) जैसे वस्तु को लेकर बुद्ध का दर्शन के लिए जेतवनाराम में आते थे । बुद्ध का दर्शन नहीं होने से लोग दुखी होते थे । पूजा करने के लिए कोई जगह भी निर्धारित नहीं था । इसलिए फूल जैसे चीज को बुद्ध जिस स्थान पर रहते थे उसी गन्ध कुटि के समीप रखकर चले जाते थे । इस घटना को अनाथपिण्डिक सेठ जैसे लोग देख रहे थे । सोचा जो बुद्ध पूजा के लिए लोग आते हैं वह सभी वस्तु हम लोग ले लेंगे और बुद्ध के आने के बाद बुद्ध के हाथ में दे देंगे । बुद्ध वापस जेतवनराम में आने पर इसी के बारे में चर्चा हुआ ।

भिक्षु आनन्द ने बुद्ध से पूछा पूज्य वस्तु के बारे में और बुद्ध का विहार में नहीं होने से पूजा का स्थान निर्धारित करने के लिए अनुरोध किया । बुद्ध ने कहा आनन्द हमारे शासन में पूजा वस्तु तीन है । (1) शारीरिक (2) उद्देशिक और (3) पारिभोगिक । शारीरिक पूजा धातु बुद्ध के शरीर के साथ सम्बन्ध है जैसे केश, दाँत, महापरिनिर्वाण के बाद हड्डी । उद्देश्य पूजा के मूर्ति, धर्मग्रन्थ जैसे वस्तु आता है । पारिभोगिक पूजा के लिए बुद्ध का परिभोग (इस्तेमाल) किया हुआ पात्र, चीवर, बुद्धत्व प्राप्ति के समय छाया लिया हुआ बोधिवृक्ष आता है । यह तीनो हमारे नहीं रहने पर इसे पूजा सत्कार किया जा सकता है । इसलिए जो गया में जैश्री महाबोधि है, उस जैश्री महाबोधि का एक फल लाकर जेतवनाराम में रोपित कराकर हमारे नहीं रहने से पूजा सत्कार कर सकते हैं ।

भिक्षु आनन्द इस बात की जानकारी महाराजा प्रसेन्नजीत कोशल को दिया । प्रसेन्नजीत कोशल राजा को इस उत्तम कार्य के लिए ज्यादा देर न करके मन में आने से श्रावस्ती जेतवनाराम के सामने एक गड्ढा खोदवाया। गया शिर्ष के जैश्री महाबोधि से एक फल लाकर देने का अनुरोध बुद्ध अरहत

महामौदगलयायन से किया । इस घटना से सभी को दर्शन करने के लिए अरहत महामौदालयायन इर्दी द्वारा आसमान से जाकर जैश्री महाबोधि के समीप जाकर गिरने को तैयार एक पका हुआ बीज को जमीन पर न गिरने देकर अपने चीवर के कोने में रखकर जेतवनाराम में आकर भिक्षु आनन्द के हाथ में दे दिया । भिक्षु आनन्द बोधिवृक्ष का बीज लेकर राजा प्रसेन्न जीत को दे दिया । राजा प्रसेन्नजीत कोशल सोने का मंजूसा में सजाकर अपने सिर पर रखकर तीन बार उस गढ्ढे का परिक्रमा किया । गड्ढे की प्रदक्षिणा करने के बाद बोधिवृक्ष के साथ सोने का मंजूसा अनाथपिण्डिक सेठ के हाथ में दे दिया । अनाथपिण्डिक सेठ सोने के मंजूसा में सुगन्धित द्रव्य पूरा भर दिया । सोने की मंजूसा में नीचे छेद करके और राजा कोशल भिक्षु आनन्द, महामौदगलयायन और भिक्षु संघ के माध्यम से बोधिवृक्ष का रोपण किया। भिक्षु आनन्द के निर्देश से यह बोधिवृक्ष इस स्थान पर पहले आया। सभी लोगों के दिल के अन्दर प्रसन्नता और आनन्द होकर रोपण करने के कारण उस बोधिवृक्ष को आनन्द बोधि के नाम से जाना जाता है।

भिक्षु आनन्द के अनुरोध पर बुद्ध पूरा एक रात्रि का समय बोधिवृक्ष के समीप समापत्ति मुद्रा से समय बिताया । इसलिए आनन्द बोधि पारिभोगिक चैत्य के रूप में जाना जाता है । वर्तमान समय में श्रावस्ती जेतवनाराम में देखने को मिलता है ।

जीवक द्वारा आम का बगीचा बुद्ध को पूजा करना

जीवक बुद्ध के समय का राजवैद्य था । बुद्ध के साथ जीवक वैद्य का सम्बन्ध भी बहुत गहरा था । राजवैद्य जीवक को कुमार भट्ट जीवक के नाम से भी जाना जाता था । जीवक का एक बहुत बड़ा आम का बगीचा राजगृह में था । जीवक अपने आम के बगीचे में एक बहुत सुन्दर आराम बनवाकर बुद्ध प्रमुखभिक्षु महासंघ को पूजा किया । बुद्ध और भिक्षुमहासंघ को जनता दिन प्रतिदिन बहुत प्रसन्न करते थे । बुद्ध और भिक्षु महासंघ जनता का गौरव प्राप्त किया । बुद्ध और भिक्षुमहासंघ लाभ सत्कार के पीछे नहीं जाने से भी विविध लाभ सत्कार से लोग बुद्ध और भिक्षुमहासंघ की पूजा के लिए पीछे दौड़ते थे । इस बात को अन्य धर्म के तिर्थांकर लोग सहन नहीं कर सके। तिर्थांकर लोगों ने सोचा यदि हम लोग बुद्ध का बहुत बड़ा अपमान किया तो इससे बुद्ध की लोकप्रियता समाप्त हो जायेंगी । उसके लिए तिर्थांकर

लोग मिलकर एक नवयौवन परिव्राजिका को तैयार किया । जिसका नाम सुन्दरी था । सुन्दरी सफेद कपड़ा पहनने वाली परिव्राजक सम्प्रदाय की थी।

श्रावस्ती जेतवनाराम में प्रतिदिन बुद्ध उपदेश देते थे । उस धर्मदेशना को सुनने के लिए जनसमूह जेतवनाराम में जाते थे । धर्म देशना समाप्त होने के बाद लोग जब अपने-अपने घर जाते थे तो उसी समय सुन्दरी सजधजकर श्रावस्ती जेतवनाराम की ओर आती थी । तो लोग उससे पूछते थे कि धम्म देशना समाप्त हो गया और रात्रि भी हो गया है तो तुम अभी कहाँ जा रही हो । सुन्दरी का एक ही उत्तर था कि मैं जेतवनाराम में बुद्ध से मिलने जा रही हूँ । बुद्ध के बारे में भँली-भाँति जानने वाले लोग सुन्दरी की बात पर इतना गौर नहीं किया । जेतवनाराम का फाटक बन्द होने तक दीवार के बाहर चंक्रमण करती रहती थी और जब जेतवनाराम का दरवाजा बन्द होने के बाद वह वापस अपने घर चली जाती थी । फिर दूसरे दिन एकदम भोर में जेतवनाराम में जाकर बुद्ध के गन्ध कुटि के समीप में फूल खोजने जैसे नाटक करती थी । यह देखने के बाद लोग सुन्दरी से पूछते थे कि क्या बात है तो वह निशब्द हो जाती थी । इस प्रकार उसका कार्य चलता रहा। एक दिन रात्रि में तिर्थक लोग मिलकर चुपचाप से सुन्दरी की हत्या करवा दिया और जेतवनाराम के तालाब के पास उसे रातो-रात दफना दिया । सुबह होते ही तिर्थक लोग चिल्लाना शुरू कर दिया । इतने दिनों से श्रावस्ती जेतवनाराम में आने जाने वाली सुन्दरी नहीं है, बोलकर शोर मचाना शुरू कर दिया । सब लोग जाकर यह खबर राजा कोशल को दिया। राजा कोशल ने कहा तुम लोग कहीं से भी उसे खोज कर लाओ । तिर्थक लोग जो सुन्दरी को मारकर दफनाया था । उस स्थान से निकाल कर एक चारपाई पर रखकर नगर में ले आते समय सबसे कहना शुरू कर दिया कि श्रमण गौतम (बुद्ध) और उसका भिक्षु संघ सभी लोग मिलकर सुन्दरी को बर्वाद करके जान से मार कर छिपा दिया ।

उसके दूसरे दिन सुबह बुद्ध महाकरुणा से दुनियाँ को देख रहे थे तो तिर्थक लोगों के इस कार्य को भी देखा । बुद्ध ने सोचा इस गलत काम के लिए सफाई देने से अच्छा है चुपचाप से अपने गन्ध कुटि में ध्यान मुद्रा में बैठना । उस दिन बुद्ध भिक्षाटन के लिए भी नहीं गये । भिक्षुओं को देखते ही लोग बुद्ध और भिक्षुओ को गाली देना शुरू कर दिया । भिक्षु

आनन्द बुद्ध के पास जाकर कहा भाग्यवत अनावश्यक एक घटना को लेकर आप और भिक्षु संघ का अपमान, अपकृत्य करता है । जम्बूदीप बहुत बड़ा देश है इसलिए श्रावस्ती जेतवनाराम छोड़कर हम लोग दूसरी जगह चले जायेंगे । बुद्ध ने कहा यदि वहाँ भी ऐसा कुछ हो गया तो फिर हम कहाँ जायेंगे । भिक्षु आनन्द ने कहा जाने के लिये बहुत-सा स्थान है । बुद्ध ने कहा उस हिसाब से हम लोग कहाँ-कहाँ जायेंगे । बुद्ध ने आनन्द से कहा आनन्द जल्दबाजी मत करो, इन्तजार करो । समाज में यह अपमान का घोषा एक सप्ताह से अधिक नहीं रहता है । कोई लोग दुष्ट विचार से, कोई सत्य ही सोचकर आक्रोश करता है । तिर्थक लोग दुष्ट चित्त से झूठा प्रचार करके दोषारोपण करते हैं । उन लोगों की बात सुनकर सुनने वाले बात का विश्वास करके निन्दा करते है । मैं सर्वज्ञ हूँ, बुद्ध हूँ, निर्दोष हूँ, गुस्सा नहीं करता, आक्रोश, भय, निन्दा, पराभव मेरे लिये कोई मायने नहीं रखता है । किसी से भी द्वेष नहीं करता, मोह अन्धकार से भटकता नहीं है । इसलिए इसका चर्चा करना, इससे चिन्तीत होना छोड़ देना अच्छा है ।

सभी जगहों पर चुपचाप रहना उचित नहीं

इन सभी बातों को सुनने के बाद भिक्षु आनन्द ने बुद्ध से कहा जनता हम लोगों का अपमान करते समय हमें कैसे पेश आना चाहिए । आनन्द ने कहा निशब्द होना उचित है । इस पर बुद्ध ने कहा आप कितना ही शीलवान हो लेकिन हर स्थान पर चुप रहना उचित नहीं है ।

'कोई व्यक्ति निर्दोष हो तो झूठ बोलकर उसका अपमान करने वाला, झूठ बोलकर फँसाने वाला नरक में चला जाता है । स्वयं बहुत बड़ा पाप करके हम ऐसा नहीं किये, बोलकर बोलने वाला भी नरक में चला जाता है । ऐसे नीचकर्म करने वाले व्यक्ति परलोक में दुःख भोगने में बराबर होता है' ।

दोषारोपण करने वालों को सही तत्व सामने रखना चाहिए । प्रज्ञावान व्यक्ति को बात समझ में आने से वह चूप हो जाता है ।

कोशल राजा राजपुरुषों को सभी जगहों पर भेजकर सुन्दरी की मृत्यु के बारे में सूचना इकट्ठा किया । लेकिन राजपुरुष लोग तिर्थक लोगों से रिस्वत तो लिया लेकिन सुन्दरी को जो लोग जान से मारा था उन लोगों को पकड़ लिया । अपराधी को पकड़कर दण्ड दिया सही बात सामने आने

से तिर्थक लोगों का समाज में बहुत निन्दा हुआ । एक झूठा केस में बुद्ध और भिक्षु महासंघ को फंसाकर अपमान करने वाले तिर्थक लोगों का सच समाज के सामने उजागर हुआ । समाज में सही बात सामने आने से तिर्थकों का कार्य उजागर हुआ । समाज में सही बात सामने आने से तिर्थकों के उपर जनता बहुत गुस्सा हो गयी । समाज के लोग गुस्सा होकर तिर्थको को डण्डा, पत्थर से मारनाा और अपमान करना शुरू कर दिया । इस घटना को भिक्षु आनन्द ने बुद्ध को बताया । बुद्ध ने कहा जो लोग जैसी फसल बोया, वे लोग उसी फसल को काटा है । एक सप्ताह के पश्चात सुन्दरी परिव्राजिका की मृत शरीर हटाकर राजा कोशल आकर बुद्ध को प्रणाम किया । राजा कोशल ने बुद्ध से कहा भाग्यवत ऐसा कुछ बड़ा घटना होने से हमें भी थोड़ा सूचना देना मत भूलिए । बुद्ध ने कहा महाराज मैं शिलवान, गुणवान और निर्दोष हूँ इसलिए सभी को बताना आर्य धर्म नहीं है । इस सम्बन्ध में बुद्ध राजा कोशल को एक धर्मदेशना किया ।

एक समय बुद्ध कोशल राज्य में चारिका करते हुए कालाम नामक एक गाँव में पहुँच गये । उस गाँव में ज्यादातर क्षत्रिय लोग रहते थे । उसी प्रदेश में केशपुत्त नामक एक गाँव था । बुद्ध का आगमन सुनकर कालाम गोत्रिक जनता बुद्ध के पास आना आरम्भ कर दिया । बहुत से लोग आकर बुद्ध को नमस्ते किये और नमस्ते करके एक तरफ बैठ गये । एक कालाम किनारे खड़ा होकर बुद्ध से कहा भाग्यवत हमारे केशपुत्त गाँव में बार-बार नानाविध ब्राह्मण लोग आते रहते है और दूसरे लोगों को नीचा दिखाने का कार्य करते हैं । दूसरे ब्राह्मण के बराबर विरुद्ध बात करते है । कौन सच्चा है ? कौन झूठा है ? हम लोगों की समझ में नहीं आता है । किसका बात माने ? किसका बात न माने ? इस पर भी हम लोगों को शक होता है । इसका समाधान कैसे होगा ? आप ही बता सकते हैं । इस बात को स्पष्ट करने के लिए बुद्ध ने उपदेश दिया—कालाम ऐसे कोई एक-एक व्यक्ति नाना प्रकार एक दूसरे के विरुद्ध गलत बोलने से शंका का उत्पन्न होना स्वभाविक है। इसलिए शंका होने के जगह पर आप सभी लोगों को शंका होना स्वभाविक है ।

कालाम मैं बचपन से ऐसा सुना सोचकर कोई वस्तु एकान्त सत्य के रूप में स्वीकार नहीं करना । उस कहानी और उस मत में कोई झूठ भी हो सकता है ।

कालाम-अपनी परम्परा के लोग ये सब स्वीकार किया है । वह वस्तु भी सत्य के रूप में भी लेना सही नहीं है उसमें कुछ सत्य भी हो सकता है कुछ झुठ भी हो सकता है । कोई कह सकता है ये वस्तु ऐसा है इस तरह का खबर मिलने से उसका भी विश्वास नहीं करना है । उसमें भी कुछ सही और कुछ झूठ हो सकता है । हम लोग जो किताब पढ़ा उसमें उस किताब में ऐसा लिखा है उसमें भी कुछ सत्य और कुछ झुठ भी हो सकता है । किसी व्यक्ति के तर्क-वितर्क करके बोलने से भी उसकी बात का विश्वास नहीं करना, उसमें भी सत्य और झूठ भी हो सकता है । अनुमान से कोई वस्तु निर्णय किया तो वह भी झूठ या सत्य हो सकता है । उसे भी स्वीकार नहीं करना, जो आपने सोचकर कोई वस्तु तय करने से उसी बात को बाकि लोगों द्वारा तय करने से उसमें भी सत्य और झूठ हो सकता है । अपने से प्रिय जनक कोई वस्तु देखने से अपने को उस वस्तु में सच्चाई दिखाई देने से वह वस्तु भी स्वीकार नहीं करना है । बाहर से देखने पर वह व्यक्ति पूजा करने लायक है । इसलिए उसके कहने पर भी विश्वास नहीं करना है । शीलवन्त होने से वह व्यक्ति जो बोलता है वह भी स्वीकार नहीं करना है । ये भिक्षु हमारा आचार्य है उसके कहने पर भी विश्वास नहीं करना । आचार्य भिक्षु होने से भी गलती होने की बहुत सम्भावना है ।

यह कुशल है यह अकुशल है अपनी बुद्धि से विचार करना होगा । इसके सम्बन्ध में जो कुशलवर्ग है उसके बारे में बुद्धिमान लोग जो वर्णन किया है और जो ज्ञानवान पुरुष अकुशल कर्म का बहिष्कार किया है । यदि वह वस्तु तुम्हारे समझ में आ गया तो ये सभी अकुशल कर्म से दूर रहना, कुशल कर्म करना । कालाम—तुम्हारे चित्त में कोई लोभ उत्पन्न हुआ है इससे तुम्हारा कल्याण होगा कि विनाश होगा, यह तुम्ही सोच लो । लोभ से युक्त होकर जीव हिंसा करता है, चोरी करता है, परस्त्रि सेवन करता है, झूठ बोलता है और दूसरे लोगों को भी उसके लिए प्रेरित करता है । इन वस्तुओं से लोगों को और समाज के लिए अनिष्ट दुर्विपाक होता है ।

कालाम—द्वेष से युक्त व्यक्ति प्राणी वध करता है । मूर्ख व्यक्ति उसके अधिन आकर प्राण वध आदि सभी कुकर्म करता है । उसके लिए तथा समाज के लिए यह अनिष्ट होता है ।

कालाम—लोभ, द्वेष, मोह यह तीनों पुण्य कर्म है कि पाप कर्म है ? भाग्यवत यह तीनों अकुशल कर्म है । कालाम बचपन से मैं विश्वास करते

आया हूँ कि उसको भी स्वीकार मत करो । अपने से विचारविमर्श करने के बाद उसका कुशल पक्ष और अकुशल पक्ष के विषय में विचार-विमर्श करके निर्णय लो ।

कालाम—अलोभ-अदोष, अमोह इन तीन स्वभाव से कोई भी स्वभाव चित्त के अन्दर उत्पन्न होने से प्राणघात जैसे क्रूर अकुशल कर्म नहीं करता है । ऐसा होने से ये कुशल कर्म है ये अकुशल कर्म है यह गलत काम है कि नहीं ? भाग्यवत पुण्य कर्म ही सही कर्म है ।

बचपन से सुनते आया उसके कारण कोई कार्य स्वीकार नहीं करना। मैंने इसलिए कहा है कि अपने से सोचकर उसी कार्य का परिणाम गलत होगा । अपने से सोचकर कुशल कर्म और अकुशल कर्म जानकर अकुशल कर्म छोड़कर कुशल कर्म करने के लिए ही ।

कालाम—ऐसा अपने आपसे सोचकर, विचार-विमर्श करके कुशल कर्म और अकुशल कर्म को सही ढग से पहिचानने या जानने वाला आर्य श्रावक लोभ, द्वेष, मोह इन तीनों को अकुशल चित्त, मन से हटाकर मैत्री, करुणा, मुदिता, उपेक्षा चार ब्रह्मविहार का ध्यान करता है । विश्व के सभी प्राणियों के प्रति समभाव रखता है ऐसे व्यक्ति के चित्त में चार तरह से शान्ति उत्पन्न होता है ।

यदि कोई परलोक हो चाहे कोई कर्म का फल हो तो मरने के बाद हमको सुगति सुख मिलेगा ये चित्त को मिलने वाला प्रथम शान्ति है ।

यदि कोई दूसरा जन्म न होता तो किया हुआ कर्म का दूसरे जन्म में कोई फल नहीं मिलने का होतो लोभ आदि चित्त से दूर होकर मैत्री चित्त से युक्त होकर इस दुनियाँ में शान्ति से जीवन बितायेगा ।

गलत कार्य करने वाले को दण्ड मिलने-हम कोई गलत काम चित्त, काय व वचन से नहीं करते है । इसलिए हमें कोई मुसिवत, परेशानी होगा, ऐसा सोचकर भयभित होने का कोई कारण नहीं है । ये चित्त का तिसरा शान्ति है ।

गलत करने वाले व्यक्ति को दुख विपाक मिलने से जो हमारे तरफ से कोई गलत कार्य नहीं होने से हमें कोई दुख-परेशानी नहीं होता है— ये चित्त का चौथा शान्ति है ।

बुद्ध इस धर्मदेशना को करने के बाद कालाम ने कहा भाग्यवत यह ऐसा ही है । जो आप ने कहा यह ऐसे ही है अनुमोदना किया । अनुमोदना के बाद त्रिशरण-शरणागत बौद्ध उपासक हो गया । अपने वचन से ये बात बुद्ध के समक्ष बोलकर बुद्ध को प्रदक्षिणा करके चले गये ।

चुल्ल सुभद्रा का समागम

अनाथपिण्डिक सेठ का शहर में उग्रसेन नाम का एक मित्र था । मित्र सेन के पास चुल्ल सुभद्रा नामक एक पुत्री थी । अनाथपिण्डिक सेठ के पास आकर अपने पुत्री का विवाह अनाथपिण्डिक सेठ के पुत्र से करने का प्रस्ताव रखा । उग्रसेन निर्वस्त्र निगण्ठनाथ पुत्त का मिथ्यादृष्टि अनुयायी था। इसलिए अनाथपिण्डिक सेठ बुद्ध के पास जाकर पूछा भाग्यवत ऐसा एक प्रस्ताव आया है । हमारे पुत्र के साथ उसका विवाह करवाना ठीक है कि नहीं ? बुद्ध अपने दिव्य चक्षु से देखा उग्रसेन की पुत्री का अनाथपिण्डिक सेठ के पुत्र के साथ शादी होने से निर्वस्त्र निगण्ठनाथ पुत्त से मुक्ति पाकर सम्यक दृष्टि होने का कारण देखा । बुद्ध ने कहा उग्रसेन की लड़की के साथ अपने लड़का की शादी करवाने से उसका कल्याण होगा । कुछ दिन के बाद चुल्ल सुभद्रा उग्रसेठ की पुत्री की शादी अनाथपिण्डिक सेठ के लड़के के साथ हो गया । शादी के दिन निर्वस्त्र निगण्ठ साधु को प्रमाण करने के लिए सहेलियों के माध्यम से चुल्ल सुभद्रा को नग्न साधुओं के सामने ले जाने का प्रयास किया लेकिन सुभद्रा नग्न साधुओं के सामने जाने से हिचकिचाती थी । उग्र सेन अपनी गवाही देने के लिए आठ गृहपतियों को भेजा था । घटना के बारे में आठों व्यक्ति समीक्षा करने के बाद सेठ से कहा कन्या गलत नहीं है । सेठ ने अपनी पत्नी से कहा हमारी पुत्री निर्लज्य श्रमण निगण्ठ को प्रणाम नहीं करना चाहती है ।

सेठ ने पूछा तुम्हारा श्रमण लोग कैसा है ? चुल्ल सुभद्रा ने बुद्ध और संघ के गुण का वर्णन करते हुए कहा—

हमारे श्रमण लोग शान्त इन्द्रियों से युक्त है, शान्त चित्त से युक्त है, इन लोगों का आना-जाना, उठना-बैठना सब शान्त है, सुमधुर वचन से युक्त है, आँख नीचे किये हुए है ।

इन सभी भिक्षुगण का काय कर्म परशुद्ध है, वाक कर्म गन्दा नहीं है नमः कर्म शुद्ध है ।

हमारा श्रावक गण बाहर और अन्दर दोनों भी क्लेश मल से विरत है । शंख मोती जैसे शुद्ध है और शुद्ध गुण धर्मों से परिपूर्ण है ।

दुनिया के लोग कोई लाभ मिलने से घमण्डी हो जाता है और घमण्ड से ऊँचा हो जाता है । हानि होने से चिन्ता में पड़कर छोटा हो जाता है । लेकिन हमारे श्रमण लाभ-हानि दोनों पक्ष में बदलता नहीं है ।

यश मिलने से लोग ऊँचा दिखाना शुरु कर देता है अपयश होने से मन से दुखी होता है । हमारा श्रमण यश अपयश दोनों में बीना बदले बराबर रहता है ।

दुनिया वाले प्रसंसा से उछल-कुद करते हैं । निन्दा होने से चिन्तीत होकर छोटा हो जाता है । हमारा श्रमण निन्दा-प्रसंशा दोनो में समान रहता है ।

दुनिया वाले सुख पाने से उछल-कूद करता है दुख होने से घबरा कर रोना शुरू कर देता है । हमारा श्रमण इन सभी परिस्थितियों में कम्पित नहीं होता है । उक्त सभी गुण हमारे श्रमण लोगों के अन्दर है ।

ऐसा कहकर अपने पिताजी को विमृत कर दिया । पिताजी ने पूछा तुम्हारे श्रमण लोगों को मैं देख सकता हूँ इस पर सुभद्रा ने कहा अवश्य दिखा सकती हूँ ।

यदि ऐसा हो तो दिखाओ । चुल्ल सुभद्रा ने बुद्ध प्रमुख भिक्षु महासंघ के लिए भोजन तैयार करवाया । अपने महल के उपरी मंजिला में जाकर जेतवनाराम की ओर देखकर पंचांग नमस्कार किया और उसके बाद बुद्ध का गुण याद किया । सुगन्ध धुप सुगन्ध पुष्प से पुजा किया । कहा भाग्यवत कल बुद्ध प्रमुख भिक्षु महासंघ को भोजन दान के लिए निमंत्रित कर रही हूँ । इस संकेत से दान स्वीकार किया कि नहीं । यदि स्वीकार किया तो दिखाइए । ऐसा अधिष्ठान करके चमेली का फूल आठ बार लेकर आसमान में छोड़ दिया । ये चमेली का फूल जाकर जहाँ बुद्ध जेतवनाराम में धर्म-देशना कर रहे थे सभी लोगों के बीच से जाकर धर्मदेशना करने वाले बुद्ध के उपर एक छत्रक की तरह सज गया ।

धर्मदेशना समाप्त होने के बाद सेठ अनाथपिण्डिक बुद्ध के पास जाकर कहा भाग्यवत कल हमारे महल में दान के लिए निमंत्रित कर रहा हूँ ।

बुद्ध ने कहा गृहपति कल भोजन दान का निमंत्रण मैं पहले से स्वीकार किया है ।

अनाथपिण्डिक सेठ ने कहा भाग्यवत मैं इतने समय से आपके साथ हूँ लेकिन किसी को निमंत्रण देते नहीं देखा । बुद्ध ने कहा सेठ अनाथपिण्डिक चुल्ल सुभद्रा ने भोजन दान के लिए निमंत्रित किया है । अनाथपिण्डिक सेठ ने कहा भाग्यवत चुल्ल सुभद्रा जेतवनाराम से 240 कि.मी. की दूरी पर रहती है इतना तो मैं जनता हूँ । इसी बात को लेकर बुद्ध ने एक छोटा धर्मदेशना किया—

'सत्य पुरुष कितना ही दूर रहेगा, हिमालय पर्वत से बुद्ध की ज्ञान में प्रकट होता है । असत्य पुरुष लोग दाहिने पैर के घूटने के पास रहने से भी घना अन्धकार रात्रि में मारा हुआ तीर जैसे दिखाई नहीं देगा । इस छोटे धर्मदेशना के अवसान में बहुत से लोग स्रोतापत्ती फल प्राप्त किया है' ।

दूसरे दिन बुद्ध और पाँच सौ अरहत भिक्षु इर्दीमत से (आसमान से) उग्रदुर को पधारे । उग्रसेन बुद्ध प्रमुख महासंघ को बहुत गौर्वान्वित होकर स्वागत करते हुए एक सप्ताह तक महादान किया । महादान के अन्त में धर्मदेशना सुनने के बाद उग्रसेन के साथ बहुत से लोग धर्माववोध किया। चुल्ल सुभ्रद्रा के अनुग्रह के लिए बुद्ध अरहत अनुरुद्ध को उसी स्थान पर छोड़कर बाकि अरहत लोगों के साथ पुन: श्रावस्ती में पधारे । उस दिन से नगरवासी त्रिरत्न के लिए बहुत प्रसन्न हो गये ।

असदृश महादान

एक बार बुद्ध पाँच सौ भिक्षु लोगों के साथ जनपद चारिका में विचरण कर रहे थे । गाँव, जनपद विचरण करते हुए श्रावस्ती जेतवनाराम में पहुँच गये । राजा प्रसेन्नजीत कोशल बुद्ध के पास जाकर एक आगन्तुक महादान देने के लिये निमंत्रित किया । उसी दिन नगरवासी भी बुद्ध और भिक्षुमहासंघ के लिए दान तैयार किया । जनता ने कहा राजा से कह देना कि हमारा दान बड़ा है या राजा का दान बड़ा है । लोगों के अनुरोध पर राजा ने देखा सचमुच में हमारे दान से कई गुना बड़ा है, जनता का दान । राजा ने सोचा इस दान से बड़ा दान हम देंगे । इसी तरह जनता ने कहा इस बार हम सभी राजा के दान से बड़ा दान देंगे । दोनों पक्ष एक दूसरे को

हराने के लिए बार-बार संघदान दिया । सातवें दिन जनता ने सोचा किसी भी वस्तु का कमी नहीं होने वाला दान दिया है । राजा होते हुए भी प्रसेन्नजीत कोशल ने सोचा मैं इतना बड़ा दान नहीं दे सकता है । लज्जित और दुःखी होकर अपने शयनाशन में जाकर सोचा इसके आगे क्या करेंगे । इस पूरे घटना को देवी मल्लिका देखती रही । राजा से कहा जो जनता नहीं कर पाये उसके हिसाब से हम एक दान देने के लिए तैयारी करेंगे । देवी मल्लिका ने कहा महाराज सबसे पहले बुद्ध प्रमुख भिक्षु महासंघ पाँच सौ को बैठने के लिए एक दानशाला तैयार करना होगा और शेष भिक्षुओ को लिए भोजनशाला से बाहर आसन तैयार करना होगा । बुद्ध प्रमुख पाँच सौ भिक्षुओं को पाँच सौ छाता तैयार करवाना होगा और ये छाता सफेद वर्ण का होना चाहिए। बुद्ध प्रमुख भिक्षु महासंघ के पास छाता पकड़ने के लिए यह काम 500 हाथियों को तैयार करना होगा । भोजनशाला के मध्य में सोने का आठ से दस इस्तहार तैयार करना होगा और दो-दो भिक्षुओं के बीच में एक-एक राजकुमारी को रखना होगा । वह सभी राजकुमारियाँ बुद्ध प्रमुख भिक्षु महासंघ को सुगान्धित (स्प्रे) द्रव्य छिड़कती रहेगी । एक-एक राजकुमारी उस सुगन्ध को सोने के इस्तहार पर भी लगाना जरूरी है । बाकि राजकुमारी लोग नीलकमल का एक-एक मुट्ठी फूल लेकर सोने के मण्डप में बैठकर सुगन्धित करना जरूरी है । एक-एक राजकुमारी दो-दो भिक्षुओं के बीच में हाथ वाला पंखा लेकर पंखा झलना होगा । ऐसा व्यवस्था आपके अलावा कोई भी व्यक्ति नहीं कर सकता है । इस तरह करने से नगरवासी आपके सामने पराजित होंगे ।

देवी माल्लिका की बात सुनकर उसी के अनुसार राजा प्रसेन्नजीत सभी तैयारियाँ कर ली । बुद्ध प्रमुख भिक्षुमहासंघ को दान के लिए निमंत्रित किया। बुद्ध प्रमुख भिक्षुमहासंघ पधार कर भोजन दान किया । भोजन दान के अवसान में राजा प्रसेन्नजीत ने कहा भाग्यवत इस दानशाला में जो भी सामान होगा कहा वे सभी बुद्ध प्रमुख महासंघ का है । एक दिन के इस महादान के लिए प्रसेन्नजीत कोशल राजा ने तेरह करोड़ धनकर खर्च किये। बुद्ध के लिए जो तैयार किया गया सफेद छाता, कुर्सी, पात्र व पात्र रखने वाला, पैर रखने वाला सभी का कोई मूल्य नहीं कर पाया । इसी तरह सात दिन तक राजा ने बुद्ध प्रमुख भिक्षु महासंघ को दान दिया । ऐसा दान कोई भी नहीं दे सकता था । इसलिए इस दान को असदृश्य दान के नाम से प्रसिद्धि

मिली। इसी तरह अनाथपिण्डिक सेठ भी तीन दिन बुद्ध प्रमुख भिक्षुमहासंघ को दान दिया। विशाखा महाउपासिका भी तीन दिन ऐसे ही दान दिया। ये तीनों दान सम्पूर्ण जम्बूदीप में प्रसिद्ध हो गया।

दान विपाक

बहुत धन खर्च करके दान देने से महत्वफल होता है कि नहीं होता है ? अपने सामर्थ से महादान देने से महत्वफल होता है कि नहीं होता है ? इस महादान के बीच से यह दो बात समाज में फैल गया। समाज के इस दो बातों पर भिक्षुलोग विचार-विमर्श करने के बाद बुद्ध के पास जाकर इसे प्रस्तुत किया।

'बुद्ध ने कहा भिक्षुओं दान वस्तु बहुत होने से उस दान का महाफल नहीं मिलता है। देने वाले का चित्त पर सुद्धि और लेने वाले का गुण महत्त्व दोनों से ही दान का महत्त्व फल मिलता है। इसलिए थोड़ा सा सत्तू, थोड़ा सा कपड़ा, घास से बना हुआ चटाई, गोमूत्र के साथ मिला हुआ त्रिफला जैसे चीज देने से भी चित्त एकदम पवित्र होना चाहिए। लेने वाला व्यक्ति भी उसके योग्य पवित्र होना चाहिए। यदि दोनों पक्ष पवित्र है तो उसका फल महत्व महाअनुभव सम्पन्न होता है'।

यह सम्पूर्ण घटना पूरे देश में फैल गया। इसके कारण अपने-अपने हैसियत से श्रमण, ब्राह्मण, याचक आदि कमजोर लोग भी दान देना शुरू कर दिया। वर्तनों में पानी भरकर गर्मी के मौसम में रास्ते पर आने जाने वालों को पीने का पानी की व्यवस्था किया। पैदल चलने वालों को थक जाने पर बैठने के लिए आसन भी बनवाना शुरू कर दिया।

परिच्छेद - 43

गलत व्यक्तियों के संगत से गलत कार्य ही होता है

भिक्षु देवदत्त

बुद्ध मल्लराज्य में मल्लराजाओं के अनुप्रिय नामक गाँव के एक आम्र वन में रहते थे । उस समय शाक्य कुल से आकर भद्दीय, अनुरुद्ध, भृगू आनन्द, किम्बिल व देवदत्त छ: राजकुमार शाक्य वंश के लोग बुद्ध के पास आकर प्रव्रज्या लिया । उन लोगों के साथ उपालि नामक एक नाई भी प्रव्रज्या लिया । उन्हीं लोगों के बीच भिक्षू आनन्द पुण्य मन्तानीपुत्त भिक्षु का धर्मदेशना सुनकर सोवान हो गये । भृगू व किम्बिल दोनों वाद में ध्यान करने से विदर्शना के माध्यम से अरहत प्राप्त किया । देवदत्त भिक्षु ध्यान करने के कारण लौकिक इर्दी प्राप्त किया ।

कौशाम्बी में रहते समय बुद्ध और भिक्षुमहा संघ को महासत्कार-सम्मान मिलना शुरू हो गया । उपासक-उपासिका लोग खाने-पीने का समान, वस्त्र, दवा लाकर पूछते थे कि बुद्ध कहा है, सारिपुत्त कहाँ है, महामौदगलयायन कहा है । अस्सी महाश्रावक अरहत लोग कहा रहते है । पूछते हुए खोजते है लेकिन भिक्षु देवदत्त के बारे में पूछने वाला कोई नहीं था । भिक्षु देवदत्त ने सोचा मैं भी इन लोगों के साथ राजवंश से आकर भिक्षुवन गया और ये सभी भी राजवंश के है । लेकिन पूजा वस्तु ले आने वाले लोग सबको खोजते रहते है परन्तु हमारा नाम तक कोई नहीं लेता है । किसको प्रसन्न करके किसके माध्यम से ये लाभ सत्कार प्राप्त किया जा सकता है । राजा विम्बिसार बुद्ध के प्रथम दर्शन से ही सोवान हो गये। इसलिए सबसे पहले राजा विम्बिसार के साथ मित्रता करेगे । उसके पश्चात् राजा कोशल के साथ मित्रता करना आसान हो जायेगा इसका एक मात्र रास्ता यही है ।

मगध राजा विम्बिसार का पुत्र अजातशत्रु किसी का भी गुण-दोष के विषय में नहीं जानता था । इसलिए राजविम्बिसार के पुत्र अजात शत्रु के साथ मिलना आसान होगा । ऐसा सोचकर देवदत्त कौशाम्बी नगर से राजगृह

जाकर वहाँ इर्दी प्रातिहार्य दिखाकर राजाविम्बिसार के पुत्र अजातशत्रु को अपने वश में कर लिया ।

अजात शत्रु राजकुमार भिक्षु देवदत्त के ईदी प्रातिहार्य से प्रसन्न होकर बहुत धन खर्च करके गयाशिर्ष में एक आराम बनवा दिया । राजा अजातशत्रु के कारण भिक्षु देवदत्व को लाभ सत्कार मिलना शुरू हो गया । एक दिन बुद्ध धर्मदेशना के समय भिक्षु देवदत्त श्रावस्ती जेतवनाराम में जाकर बुद्ध से अनुरोध किया कि भिक्षु संघ की देख-रेख का कार्य अपने को देने के लिए । बुद्ध जानते थे कि भिक्षु देवदत्त का जीवन सही नहीं है । बुद्ध देवदत्त के जीवन व्यतीत करने के बारे में निन्दा किया तो देवदत्त की माता ने इंकार किया । भिक्षु देवदत्त बुद्ध के उपर गुस्सा करके वैर करना शुरू कर दिया। उसी दिन से बुद्ध से बदला लेने का कार्य आरम्भ किया ।

एक दिन भिक्षु देवदत्त अजातशत्रु के पास जाकर कहा राजकुमार पूर्व काल के लोग दीर्घायु वाले थे । आजकल के लोग अल्पायु है । जो आपके ऐसे रहने से आप कभी भी राजा नहीं बन पायेगा । आप जल्दी मर जायेगा। इसलिए आप अपने पिताजी को मार डालो तभी आप को राजगद्दी का अधिकार मिलेगा । मैं बुद्ध को मार दूँगा और बुद्ध की पदवी प्राप्त करूगा। भिक्षु देवदत्त की बात को सुन कर सोलह साल का नवयुवक राजकुमार अजात शुत्र जान से मारने लायक एक चाकू अपने वस्त्र के अन्दर छिपाकर दिन में ही अपने पिताजी को मारने के लिए चल दिया । भयभीत, शंका होने के कारण तुरन्त अन्तः पुर में घुस गया । अन्तः पुर में रहने वाले अज्ञात लोग भी अजात शत्रु की गतिविधि देखने के बाद घवरागये और घवराकर शंका होने से राजकुमार अजात शत्रु की तलाशी ली । अपने वस्त्र के अन्दर छिपाया हुआ भयानक चाकू को देखकर राजपुरुष लोगों ने पूछा यह किस काम के लिए है । अजात शत्रु ने कहा हमें पिताजी को मार डालना है । राजपुरुषों ने पूछा आप किसके कहने पर यह कार्य करने चल दिये । राजकुमार अजातशत्रु ने कहा भिक्षु देवदत्त के कहने पर हमने यह कार्य करने चल दिया । यह भयानक खबर सुनकर अमात्य लोगों ने कहा भिक्षु देवदत्त के साथ बाकि सभी भिक्षुओं को मार डालना चाहिए । किसी अमात्य ने कहा सिर्फ देवदत्त और अजातशत्रु को मारना चाहिए । किसी ने कहा हमलोग कुछ भी नहीं करेंगे । सम्पूर्ण घटना के बारे में राजबिम्बिसार को सूचना देगे जो राजा बिम्बिसार कहेंगे वहीं करेंगे । सभी लोग एक मत होकर राजकुमार

अजात शत्रु को पकड़कर राजा बिम्बिसार के समक्ष ले जाकर घटना का विवरण दिया । राजा बिम्बिसार ने सामने से पूछा पुत्र तुम हमें जान से मारने के लिए सोचा इसका कारण क्या है ? अजात शत्रु ने कहा मैं मगध का राजा बनना चाहता हूँ । राजाबिम्बिसार ने कहा पुत्र इस चीज के लिए तुम्हें हमारा जान लेने की आवश्यकता नहीं है । आप अभी पूरा मगध राज्य का राजकार्य सम्भाल लो । राजा बिम्बिसार अपने पुत्र अजातशत्रु को पुत्र स्नेह से गले लगाकर उसी समय मगध का राज्य राजकुमार अजात शत्रु को ही दे दिया ।

राजकुमार अजात शत्रु को मगध राज्य मिलने का खबर भिक्षु देवदत्त को मिला लेकिन यह खबर सुनकर भिक्षु देवदत्त सन्तुष्ट नहीं हुआ । राजा अजातशत्रु तुम राजाविम्बिसार को नहीं जानता है । तुम्हारे पिताजी इतना जल्दी तुमकों राज्य सौपा है । इसका कोई न कोई रहस्य होगा । थोड़े दिन के बाद तुम्हारे पिताजी तुमको मार डालेगा और राज्य वापस ले लेगा । यह बात सुनकर राजा अजातशत्रु का दिमाग बुरीतरह से उल्टा घूम गया । राजा अजात शत्रु ने सोचा पिताजी को मार डालना जरूरी है । अजातशत्रु ने देवदत्त से कहा पिताजी को किसी शस्त्र से मारना सम्भव नहीं है । देवदत्त ने कहा सबसे आसान तरीका है । खाना-पीना मत दो भूख से रखकर मार डालो ।

राजा अजातशत्रु ने अपने पिता बिम्बिसार को जेल में डाल दिया और आदेश दिया कि माता के अलावा कोई भी नहीं जा सकता है । चारों तरफ पहरेदारों से रखवाली करवाया । राजा बिम्बिसार की रानी नित्य राजा को देखने जाते समय पका हुआ भोजन अपने शरीर में छिपाकर राजाविम्बिसार को भोजन देती थी । उसी भोजन से राजविम्बिसार मुस्किल से जेल में जीवन बीताते थे । काफी दिन बितने के बाद भी राजा नहीं मरा इसके बारे में विचार विमर्श किया । राजा अजातशत्रु को पता चला कि अपनी माता चोरी छिपे पिताजी को भोजन ले जाती है । राजा अजातशत्रु ने एक आदेश करके राजपुरुषों से कहा माता-पिता को देखने जाते समय कुछ भी नहीं ले जाने देना है ।

उस दिन से महारानी द्वारा खाना ले जाने का आदेश नहीं होने के कारण खाना को अपने बाल के जुड़ा में छिपाकर ले जाती थी । जब और दिन बीता लेकिन राजाविम्बिसार भूख से नहीं मरा तब अजात शत्रु को पता चला कि माता-पिताजी को कैसे खाना देती है । उसके बाद राजा अजात

शत्रु ने आदेश किया कि पिताजी से मिलने जाते समय बाल का जूड़ा बाँध कर नहीं जाना है ।

उसके बाद महारानी भोजन बनाकर सोने की जूती में भोजन छिपाकर ले जाकर राजा बिम्बिसार को देती थी । इसकी भी सूचना राजा अजात शत्रु को मिला तो उसने आदेश दिया कि पिताजी को देखना हो तो जूता-चप्पल पहनकर नहीं जाना होगा । (महारानी बहुत दुखी होकर एक उपाय सोचा सुगन्धित जल से स्नान करके घी, खजूर का शक्कर सूखा हुआ किसमिस और शहद को मिलाकर चतुमधुर) बनाकर अपने शरीर में लेप करके एक चादर ओढ़कर राजा को देखने जाती थी । राजा को अपने शरीर में लगे लेप चतु मधुर को चाटने को देती थी जिससे राजा विम्बिसार उससे भी जीवित रह गये । राजा अजात शत्रु को इस बात की भी सूचना मिली कि माताजी पिताजी को देखने के लिए जाते समय अपने शरीर में लेप द्वारा भोजन ले जाती है । इस पर राजा अजातशत्रु ने पिताजी को देखने के लिए माता रानी को पूर्ण रूप से मना कर दिया ।

महारानी कारागार के दरवाजे तक जाकर राजा से थोड़ी देर बात करके रोते-रोते वापस महल में चली गयी ।

राजा बिम्बिसार का देहान्त

उस दिन से राजा बिम्बिसार का कारागार के अन्दर किसी भी तरह का खाना-पिना और मिलना-जुलना सभी चीजों को वर्जित कर दिया । लेकिन राजाबिम्बिसार मार्ग फल लाभी थे मार्ग फल सुख से अपना समय बिताते थे । राजा अजात शत्रु ने देखा ये सब कुछ वर्जित करने के बावजूद भी पिता राजा बिम्बिसार अभी भी चंक्रमण करते है । उसे रोकने का उपाय सोचकर एक नाई को बुलाया । नाई को बुलाकर उससे कहा पिताजी राजाविम्बिसार जेल के अन्दर चंक्रमण करते है उसको रोकने के लिए पैर के तलवे को चीरकर नमक और खट्टा को तेल में गरम करके उसी खाव के अन्दर आग का अगीठी डालकर पकाओ । तब भी राजा सभी दुख वेदना सहते हुए बुद्ध-धम्म, संघ त्रिरत्न का गुण याद करके समय व्यतित कर रहे थे । लेकिन कुछ ही दिनों के बाद वेदना का कष्ट सीमा पार होने के कारण राजा देहान्त होकर चातुमहाराजिका देवलोक में दिव्य राजा के नाम से उत्पन्न हुआ। राजा के देहान्त का खबर सुनकर रानी शोकाकुल होकर अपना प्राण त्याग दिया ।

बुद्ध को मारने के लिए देवदत्त का उपाय

जिस समय मगध के राजा बिम्बिसार का देहान्त हुआ उस समय बुद्ध का उम्र 72 वर्ष था। बुद्ध के अग्रउपासक बिम्बिसार को मरवाने पर देवदत्त अपना मनोरथ पुरा होने का जश्न मनाया। अब बुद्ध को जान से मारकर बुद्ध का राज्य लेना मेरे लिए बाकि है। राजा अजातशत्रु के पास जाकर। देवदत्त अपने मन की बात बता दिया। राजा भी उसके लिए अनुमति देकर राजपुरुषों से कहा जो देवदत्त कहते हैं वहीं करो।

उसके बाद देवदत्त खुश होकर एक अपराधि प्रवृत्ति के व्यक्ति को बुलाया और उससे कहा राजगृह गिज्जकूट के बगल में बुद्ध रहता है। तुम जाकर धनुष से बुद्ध को मार डालो। जिस मार्ग से तुम वहाँ जायेगा उस मार्ग से तुम वापस मत आना बल्कि तुम दूसरे मार्ग से वापस आना। यह कह कर एक धनुष-बाण देकर भेजा। एक दूसरे आदमी को बुलाकर उससे कहा बगल वाले रास्ते से एक आदमी आयेगा वह धनुषधर है। उसे जान से मारकर दूसरे रास्ते से आना और दो व्यक्तियों को बुलाकर कहा अमुक रास्ते से एक व्यक्ति आयेगा उसको मार डालों और दूसरे रास्ते से तुम लोग आ जाना। चार आदमी को बुलाकर कहा दूसरे रास्ते से दो व्यक्ति आयेगे उन दोनों को जान से मारकर तुम चार लोग उस रास्ते से न आकर दूसरे रास्ते से आ जाना। इसके बाद आठ आदमियों को बुलाया बुलाकर कहा दूसरे रास्ते से चार व्यक्ति आयेंगे। उन चारों को जान से मारकर तीसरे रास्ते आ जाना। फिर सोलह आदमियों को बुलाया और बुलाकर कहा तीसरे रास्ते से आठ व्यक्ति आयेंगे। उन आँठो व्यक्तियों को मारकर तुम सोलह लोग दूसरे रास्ते से आ जाना। जो बुद्ध को जान से मारने के लिए किसने षडयन्त्र किया इस बात का किसी को पता न चले ऐसा उपाय देवदत्त ने सोचकर किया था।

बुद्ध को जान से मारने के लिए जो धनुषवान गया वह बुद्ध को देखते ही भयभीत होकर किनारे हो गया। बुद्ध ने देखा एक व्यक्ति भयभीत होकर छिपने की कोशिश कर रहा है। बुद्ध ने उस व्यक्ति (धनुषवान) को आमंत्रित किया पुत्र घबराना नहीं इधर आओ। धनुषवान बुद्ध की मधुर वाणी सुनकर धनुष एक तरफ रखकर बुद्ध के पास गया और जिस काम के लिये आया था उस बात को बुद्ध को बताकर अपनी गलती के लिए क्षमा माँगा। धनुषवान द्वारा बुद्ध के सामने अपनी गलती स्वीकार करने के बाद बुद्ध

उसकी प्रसंशा किये और दान, शील आदि पुण्य कर्मों के बारे में क्रमशः चतुआर्य सत्य तक धर्मदेशना किये । धर्मदेशना के अवसान में धनुषवान सोवान हो गया । धनुषवान को वापस जाने के लिए जो रास्त देवदत्त ने बताया बुद्ध ने धनुषवान को कहा उस रास्ते से मत जाना दूसरे रास्ते से जाना बुद्ध की बात मानकर सोवान धनुषवान दूसरे रास्ते से चला गया । धनुषवान् को मारने के लिए देवदत्त ने उस मार्ग पर दो व्यक्ति को भेजा था धनुषवान नहीं आने के कारण उसका पता लगाने दोनों व्यक्ति आगे बढ़ गये । उस समय बुद्ध एक पेड़ के निचे समाधि मुद्रा में बैठे थे । ये दोनों व्यक्ति भी बुद्ध के पास जाकर धर्मदेशना सुनने के बाद सोवान हो गये । उन दोनों को भी बुद्ध ने बोला जिस रास्ते से तुम लोग जाने के लिए सोच रहे थे उस रास्ते से मत जाना । जो उन दोनों को जान से मारने के लिए चार पुरुषों को भेजा था । दोनों व्यक्ति नहीं आने के कारण भी वह चार व्यक्ति उन दोनों को खोजते-खोजते आगे बढ़े । उस समय भी बुद्ध समाधि मुद्रा में पेड़ के नीचे थी । बुद्ध के पास जाकर धर्मदेशना सुनने के पश्चात् ये चार व्यक्ति भी सोवान हो गये । उन चारों व्यक्तियों को भी दूसरे रास्ते से जाने के लिए बुद्ध ने कहा । उसी तरह मार्ग में रखवाली करने वाले चार आदमी को जान से मारने के लिए तैयार होकर इंतजार करते आठ व्यक्ति भी बुद्ध के पास जाकर धर्मदेशना सुनकर अनुशासित हो गये।

बुद्ध को जान से मारने के लिए देवदत्त द्वारा बुद्ध के ऊपर एक पत्थर गिराना

बुद्ध को जान से मारने के लिए देवदत्त ने सबसे पहले धनुषवान को भेजा था वह बुद्ध के पास जाकर बुद्ध की धर्मदेशना सुनने के बाद सोवान हो गया । यह सब कुछ होने के बाद सोवान धनुषवान देवदत्त के पास जाकर कहा बुद्ध महानुभाव सम्पन्न है इर्दी से युक्त है किसी भी किमत पर उसको मारना सम्भव नहीं है । यह बात सुनकर देवदत्त और गुस्सा हो गया और गुस्से में अधिष्ठान किया कि किसी भी किमत पर हम बुद्ध को मार डालेगे । बुद्ध सुबह व साम के वक्त गिज्जकूट पर्वत के नीचे चंक्रमण करते थे । देवदत्त चूपचाप गिज्जकूट पर्वत पर ऊँची जगह पर एक पत्थर था । उसी पत्थर के ऊपर एक बहुत बड़ा पत्थर था । जिसे देवदत्त चूपचाप से जाकर चंक्रमण करते समय बुद्ध के ऊपर गिरा दिया । बुद्ध का गुण और महिमा

के कारण वह पत्थर गिरते समय दो पत्थरों के बीच में फँस गया । लेकिन एक पत्थर का टुकड़ा जाकर बुद्ध के श्रीपाद में लग जाने के कारण उस स्थान पर खुन जम गया । (जो पत्थर देवदत्त ने बुद्ध के ऊपर गिराया वह पत्थर अभी भी राजगृह गिज्जकूट में देखने को मिलता है ।) बुद्ध देवदत्त को देखा और कहाँ अभाग्य पुरुष ! तुम दुष्ट चेतना से तथागत के शरीर का खून गिरा दिया । जा यह बहुत बड़ा पाप है । बुद्ध के शरीर का खून गिराना पंचआनन्तर्य पाप कर्मों में एक है । पंचआनन्तर्य कर्म बौद्ध धर्म के अनुसार महापाप गिना जाता है । मरने के बाद वह तुरन्त महानरक में जाने के कारण कल्पोतक दुष्परिणाम भोगने के कारण पाँच अकुशल कर्म पंचआनन्तर्य अकुशल कर्म से जाना जाता है—

1) माता-पिता की हत्या करना

2) अरहत को मार डालना

3) बुद्ध के शरीर से खुन बहाना

4) संघ भेद कोई गृहस्थ व्यक्ति नहीं कर सकता है बौद्ध धर्म के अनुसार संघभेद कोई उपसम्पन्न भिक्षु ही कर सकता है

5) अरहत न होते हुये अरहत जैसा दिखावा करके उपासक उपासिकाओं से लाभ सत्कार लेना ।

इसके बाद भिक्षु लोगों के बीच में इस घटना के बारे में चर्चा शुरु हो गया । बुद्ध ने भिक्षुओं को समय के अनुसार उचित चर्चा करने का देशना किया है ।

उस समय राजगृह, में नालागिरी (घनपात) नामक एक हाथी चण्ड होकर गुस्से से आदमी को मार डालने का खबर फैल गया । एक दिन देवदत्त हाथी शाला जाकर उस हाथी का देख भाल करने वाले व्यक्ति को समझा बुझाकर और कुछ प्रलोभन देकर कहा किसी समय बुद्ध राजगृह नगर में विचरण करते समय देखकर नालागिरी हाथी को बुद्ध की ओर जाने के लिए छोड़ देना वह व्यक्ति भी देवदत्त की बात मान गया ।

एक दिन बुद्ध भिक्षु महासंघ के साथ पूर्वाह्न समय भिक्षाटन के लिए शहर में चारिका कर रहे थे उसी समय हाथी का देखभाल करने वाला व्यक्ति बुद्ध का आगमन देखकर नालागिरी हाथी को बुद्ध की ओर जाने के लिए

छोड़ दिया । नालागिरी हाथी अपने सामने बुद्ध को आते देखकर उनकी ओर दौड़ पड़ा । सभी भिक्षु घबरा गये कुछ भिक्षु लोग भाग गये । कुछ बुद्ध के पास रहकर बुद्ध से हट जाने के लिए कहा । भिक्षु को बुद्ध ने कहा कोई भी प्राणी कभी भी किसी बुद्ध का प्राण नहीं ले सकता है । कहा भिक्षुओं ! घबराओ मत, कहते हुए बुद्ध आगे बढ़े । क्रोधित हाथी को देखकर नगरवासी जान बचाने के लिए भाग गये और अपने घरों का दरवाजा बन्द कर लिया । लोग बात करना शुरू किया इतना सुन्दर पुण्यवान गौतम को यह हाथी जरूर मार डालेगा किसी ने कहा हस्तीराज और मनुष्य नाम दोनों के बीच में एक संग्राम आज ही देखने को मिलेगा । बुद्ध हाथी को कैसे अपने वश में ले आयेगे सभी लोग संकोच मन से भयभीत होकर घटना का परिणाम देखने के लिए इंतजार कर रहे थे । नालागिरी हाथी बुद्ध के सामने आते ही बुद्ध मैत्री भावना शुरू कर दिया । मैत्री भावना की शक्ति से नालागिरी बुद्ध के सामने वशीभूत होकर खड़ा हो गया । बुद्ध अपने दाहिने हाथ को हाथी के कुभस्थल पर रखा उस समय नालागिरी हाथी अपने पैर की धूली अपने सुड में लेकर सिर पर डालकर बुद्ध के सामने से हटकर अपने हाथीशाला चली गयी । उसी दिन से नालागिरी हाथी बहुत शान्त स्वभाव की हो गयी नगरवासियों के बीच में चर्चा हुआ की देवदत्त बुद्ध को मारने के लिए जरुर विफल प्रयास किया है । बुद्ध द्वारा हाथी के कुभंस्थल पर दाहिना हाथ रखकर कहा—

'मां कुंजर नाममासदी
दुखं कुंजर नागमास दो,
नहीं नाग हतस्तय कुंजर
सुगति होती इतो वटं यतो ॥1॥
मा च मधो मा च षामदी,
नहि पमत्ता सुगतिं वजन्ति,
तेनत्वञ्जव तथ करिष्यामि,
येवत्तं सुगतिं गमिष्यामि' ॥2॥

(हाथी बुद्ध नाम से जाना जोने वाला हाथी राजा को परेशान करने वाला का भविष्य में सुगति नहीं होता है इसलिए हिंसा से युक्त होकर बुद्ध नाम के पास मत आना ।

बुद्ध नामक हाथी राजा के पास मादक चित्त में आने से भविष्य में

दुख विपाक भोगना होगा । नशे में मत आओ, प्रमाद मत करो नशायुक्त प्रमाद होने से सुगति में नहीं जाता है । इसलिए सुगति को जाने का रास्ता खोज लो ।)

इस घटना को देखने के बाद नगरवासी कहना शुरू कर दिया कि इर्दीगत महानुभव सम्पन्न श्रमण गौतम बुद्ध को परेशान करने के लिए देवदत्त ने बहुत गलत किया है । देवदत्त एक बहुत बड़ा पापी है । नगरवासी देवदत्त को निग्रह करना शुरू कर दिया ।

अमात्य लोग सम्पूर्ण घटना राजा अजातशत्रु को विस्तारपूर्वक बताते हुए देवदत्त को दोषी ठहरया । राजा आजातशत्रु के समझ में आया कि मैं एक दुष्ट व्यक्ति को बढ़ावा देकर बहुत बड़ा गलत किया है । ऐसा सोचकर देवदत्त के साथ सम्बन्ध तोड़ने के लिए अधिष्ठान किया है । सबसे पहले राजा अजातशत्रु ने देवदत्त व उसके अनुयायी के लिए 500 वर्तन व चावल देना बन्द कर दिया । यह समाचार सम्पूर्ण राजगृह में फैल गया जिससे देवदत्त का मनोबल गिर गया और लाभयश से भी देवदत्त एकदम निम्नस्तर पर आ गया । देवदत्त आखिरी में घर-घर जाकर भोजन माँगकर खाते थे और कुछ दिन के बाद सभी शिष्यगण देवदत्त को छोड़कर चले गये। खाना माँगने जाते समय नगरवासी देवदत्त को कहते थे तुम निर्लज्ज होकर अभी भी इस नगर में खाना माँगता है, तुमको शर्म नहीं आता है । जैसे शब्दों से देवदत्त का अपमान करते थे और बाद में पत्थर से मारक देवदत्त का पात्र भी तोड़ दिया । इसके पश्चात नगरवासी लोग मिलकर देवदत्त को राजगृह से भगा दिया ।

संघभेद

राजा अजातशत्रु ने देवदत्त का सभी सुख-सुविधा बन्द कर दिया और आम जनता भी देवदत्त को पूर्णरूप से नकार दिया । देवदत्त को कही कोई पूछने वाला नहीं मिला । इसलिए अन्त में देवदत्त ने सोचा मेरे लिए बुद्ध के सिवाय कोई मदद नहीं करेगा । ऐसा सोचकर बुद्ध के पास जाकर रहना शुरू कर दिया ।

बुद्ध के पास रहते हुए भी देवदत्त की दुष्ट चेतना कम नहीं हुआ । देवदत्त ने सोचा भिक्षुसंघ और बुद्ध के बीच फूट डालकर भिक्षुसंघ का मुखिया बन जाऊँगा । सभी लोग देवदत्त को छोड़कर जाने के वावजूद कोकालियकट-

मोर, तिष्य, समुद्रदत्त तीन भिक्षु और चूल्ल, भिक्षुणी पाँचों लोग मिलकर एक षडयन्त्र रचा। हम बुद्ध के पास जाकर बुद्ध से पाँच कारण माँगे लेकिन हम जानते है कि बुद्ध इसे कभी पूरा नहीं करेंगे। पाँच वचन इस प्रकार है—

1) भिक्षु को जीवन भर जगंल में ही रहना जरूरी है।
2) भिक्षु को सदैव कफन के कपड़ा से चीवर बनाकर पहनना चाहिए।
3) भिक्षु को जीवन भर पिण्डपात से जीविका करना जरूरी है।
4) भिक्षु को हमेशा वृक्ष मूल में ही रहना जरूरी है।
5) भिक्षु को जीवन भर शाकाहारी होना जरूरी है।

एक दिन देवदत्त बुद्ध के पास जाकर उसी पाँच वचनों को पूरा करने के लिए भिक्षुओं को आज्ञा करने के लिए माँगा। बुद्ध ने कहा यह पाँच कारण (वचन) किसी को मानना है, तो माने किसी को नहीं मानना है तो मत माने इसके लिए मैं कुछ नियोग नहीं करेगे। ऐसा कहकर देवदत्त की बात को इंकार कर दिया।

(बुद्ध की बात सुनकर देवदत्त इसलिए प्रसन्न हो गया कि वह सोचा संघ भेद करने के लिए मेरा मार्ग प्रसस्त हो गया। ऐसा सोचकर बुद्ध को प्रदक्षिणा कर चला गया। राजगृह में जाकर सभी लोगों से कहा बुद्ध से हमने इस पाँच कारण (वचन) किसी को मानना है तो माने किसी को नहीं मानना है तो मत माने इसके लिये मैं कुछ नियोग नहीं करेंगे। ऐसा कहकर देवदत्त की बात को इंकार कर दिया।)

बुद्ध की बात सुनकर देवदत्त इसलिए प्रसन्न हो गया कि वह सोचा संघ भेद करने के लिए मेरा मार्ग प्रसस्त हो गया। ऐसा सोचकर बुद्ध को प्रदक्षिण कर चला गया। राजगृह में जाकर सभी लोगों से कहा बुद्ध से हमने इस पाँच कारणों का अनुसरण करने के लिए भिक्षुओं को आज्ञा देने के लिए माँगा लेकिन बुद्ध हमारी बात नहीं सुनी फिर भी हमारे भिक्षु ये पाँच कारणों को जीवन भर पालन करेगे। ऐसा कहते हुए सम्पूर्ण राजगृह में घूमते रहे।

कुछ लोग देवदत्त की बात सुनने के बाद मन्द बुद्धि अज्ञात लोग कहना शुरू कर दिया कि देवदत्त और देवदत्त के शिष्य लोग कितना अच्छा है। सभी सरल जीवन बीताने वाले हैं। श्रमण गौतम बुद्ध बहुत सुख से

अपना जीवन बीता रहा है । ऐसा कहकर जनता देवदत्त की प्रशंसा करना शुरू कर दिया और बुद्ध का अपमान करना शुरू कर दिया । भिक्षुगण जाकर इस घटना के बारे में बुद्ध को विस्तार पूर्वक बताया । बुद्ध भिक्षु देवदत्त को बुलाया और पूछा क्या आप संघ भेद का पाप करना चाहते है ? देवदत्त ने कहा भाग्यवत यह बात सत्य है । बुद्ध ने कहा यदि यह काम आप किया तो पंचआनन्तर्य पापकर्म करने से एक कल्प तक नरक में कठोर दुख झेलना होगा । इसलिए इस बड़े पापकर्म को हाथ मत लगाना ।

देवदत्त बुद्ध को छोड़कर जाने के बाद रास्ते पर देखा भिक्षुआनन्द भिक्षाटन के लिए जा रहा है । भिक्षु देवदत्त भिक्षु आनन्द आज के बाद हम लोग बुद्ध से अलग होकर विनयकर्म करेगे । संघकर्म करेगे । पिण्डपात के बाद भिक्षु: आनन्द बुद्ध के पास जाकर जो भिक्षु देवदत्त कहा वह सभी बात बुद्ध को बता दिया । भिक्षु आनन्द की बात सुनकर बुद्ध ने कहा—

'सत्य पुरुष व्यक्ति सत्कार्य बहुत आसानी से करता है । पापी व्यक्ति कुशल कर्म नहीं कर सकता है । पापी व्यक्ति पाप बहुत आसानी से पूरा करता है । आर्य व्यक्ति कभी भी पाप नहीं कर सकता है' । (अंक 150)

एक दिन फिर भिक्षु देवदत्त एक पूर्णिमा के दिन भिक्षुओं के बीच में आकर कहा में बुद्ध से पाँच वचन माँगा । लेकिन बुद्ध हमारे बात को इंकार कर दिये । इस पाँच वचन का महत्त्व उसी भिक्षुगणों के बीच में वर्णन करना शुरू कर दिया । भिक्षु देवदत्त सम्बोधन के बाद कहा कौन इसके पक्ष में है, अपना मत प्रकट करे । नवप्रव्रज्जित उपसम्पन्न पाँच सौ वज्जिपुत्त भिक्षु देवदत्त की बातों से धोखा खाकर उसके पक्ष में अपना मत प्रकट किया। भिक्षु देवदत्त उस पाँच सौ नवयुवक भिक्षुओं को लेकर गया शीर्ष में चला गया ।

यह घटना अग्रश्रावक सारिपुत्र व महामौदगलयायन दोनों जाकर बुद्ध को सूचित किया । बुद्ध ने कहा ये नवयुवक भिक्षु स्वयं विनाश मुख में जाने के लिए तैयारी कर रहे हैं । इसलिए उन सभी को वापस लाना होगा। सारिपुत्र एवम् महामौदगलयायन दोनों उन पाँच सौ नवयुक भिक्षुओं के बीच में गये और जाकर देवदत्त के दुर्गुणों के बारे में बताया । न बुद्ध के गुण के बारे में बताया बल्कि दोनों का नाम न लेकर केवल धर्मदेशना किया। भिक्षु देवदत्त बहुत खुश हो गया और सोचा बुद्ध का अग्रश्रावक दोनों बुद्ध

को छोड़कर हमारे पास आ गया । इसका मतलब मेरा धर्म साफ है । भिक्षु कोकालिक ने कहा सारिपुत्र व महामौदगलयायन का विश्वास मत करो लेकिन भिक्षु देवदत्त ने कहा सारिपुत्र व महामौदमलयायन के बारे में हमकों कोई शक नहीं है । देवदत्त एक छोटा-सा आसन लेकर अरहत सारिपुत्र को बैठने के लिए कहा लेकिन अरहत सारिपुत्र दूसरी आसन पर बैठ गया । महामौदगलयायन अरहत भी उसके बगल में बैठ गये । भिक्षु देवदत्त काफी देर तक बैठकर धर्मदेशना करने के कारण देवदत्त ने अरहत सारिपुत्र को कहा आप हमारे नवयुवक भिक्षुओं को धर्म देशना करो । अरहत सारिपुत्र आदेशना प्रातिहार्य, अनुशासना प्रातिहार्य, दोनों क्रम से धर्मदेशना किया ।

इसके बाद अरहत महामौदगलयायन इर्दी प्रातिहार्य से धर्म देशना किया । ये धर्मदेशना सुनने के बाद पाँच सौ वाज्जिकपुत्र नवयुक भिक्षु सोवान हो गये । इसके बाद सारिपुत्र और महामौदगलयायन वहाँ से वापस बुद्ध के पास लौट आये । वाज्जिपुत्र पाँच सौ नवयुवक भिक्षु भी सारिपुत्र और महामौदगलयायन अरहत के पीछे-पीछे चले आये । सभी पाँच सौ वाज्जि पुत्र नवयुवक भिक्षु अरहत सारिपुत्र और महामौदमलयायन अरहत के पीछे जाने के कारण भिक्षु कोकालिक सारिपुत्र और महामौदगलयायन पर क्रोधित हो गया और क्रोधित होकर उस समय भिक्षु देवदत्त सो रहे थे, देवदत्त के सिने पर अपनी केहुनी से जोरदार प्रहार किया । प्रहार इतना तेज था कि भिक्षु देवदत्त उसी जगह पर खून का उल्टी करना शुरू कर दिया ।

अरहत सारिपुत्र और महामौदगलयायन अरहत दोनों को पाँच सौ भिक्षुओं के साथ आते देखकर बुद्ध के पास रहने वाले भिक्षुओं ने कहा भाग्यवत अरहत सारिपुत्र और महामौदगलयायन दोनों इधर से गये । सभी पाँच सौ भिक्षुओं को लेकर आ रहे है । उसी मातृका को सन्दर्भ कराकर बुद्ध ने लख्खनमिग जातक कहानी से धर्मदेशना किया ।

भिक्षु देवदत्त अरहत सारिपुत्र और महामौदगलयायन दोनों अग्रश्रावकों को अपने दोनों तरफ खड़ा करवाकर बुद्ध जैसे धर्मदेशना करवाने के लिए प्रयत्न किया, हास्य जनक है । यह सभी बात सुनकर बुद्ध ने बहुत-सा जातक कहानी सुनाया । इस घटना के समय बुद्ध राजगृह से निकल कर श्रावस्ती पधार कर जेतवनाराम में रहना शुरू कर दिया ।

देवदत्त द्वारा निकाली हुई निर्दोष भिक्षुणी द्वारा एक बालक को जन्म देना

राजगृह में एक सेठ की पुत्री बुद्ध शासन में भिक्षुणी बनने के लिए इच्छा व्यक्त करके अपने माता-पिता से आज्ञा माँगी । लेकिन माता-पिता ने अपनी पुत्री के अनुमति नहीं दिया । कुछ दिन बाद राजगृह के एक सेठ के साथ अपनी पुत्री की शादी कर दिया । समय आने पर उसने गर्भ धारण किया गर्भधारण होने के पश्चात् भी बुद्ध शासन में भिक्षुणी होने के लिए अपने पति से अनुरोध किया । पति भी प्रसन्न होकर एक उत्सव करके एक भिक्षुणी विहार में अपने पत्नी को भिक्षुणी बनवा दिया । कुछ समय बितने के बाद उस भिक्षुणी के शरीर से गर्भवती होने का लक्षण दिखाई देने लगा। उस विहार की प्रधान भिक्षुणी ने पूछा यह कैसे हुआ ? गर्भवती भिक्षुणी ने कहा यह पता नहीं कैसे हुआ लेकिन हमारा शील परिशुद्ध है । भिक्षुणी संघ गर्भवती भिक्षुणी को भिक्षु देवदत्त के पास ले गयी और घटना का सम्पूर्ण विवरण बताया । देवदत्त ने सोचा इसके कारण हमारा भी अपमान होगा। देवदत्त ने भिक्षुणियों को बुलाकर कहा उसका चीवर उतरवाकर नगर से बाहर कर दो । यह बात सुनकर गर्भवती भिक्षुणी ने कहा हमारा चीवर मत उतरवाइए । मैं चीवर नहीं छोड़ूँगी । मैं देवदत्त के लिए भिक्षुणी नहीं बनी। आप लोग हमें श्रावस्ती जेतवनाराम में लेकर चले और बुद्ध के समक्ष प्रस्तुत करो । भिक्षुणी लोग गर्भवती भिक्षुणी को महाकारुणिक बुद्ध के सामने ले आने का कारण भी बताया । गर्भवती भिक्षुणी को बुद्ध के समक्ष प्रस्तुत करने से बुद्ध के समझ में आया कि भिक्षुणी की यह घटना गृहस्थ जीवन में हुआ है। महाकारुणिक तथागत बुद्ध राजाप्रसेन्नजीत कोशल, आनाथपिण्डिक सेठ, महाउपासिका विशाखा, भिक्षु-भिक्षुणी परिषद को बुलाकर इस घटना का निर्णय करने के लिए विनयधर भिक्षु उपालि को सौप दिया । विनयधर भिक्षु उपालि, महाउपासिका विशाखा को बुलाकर प्रसेन्नजीत कोशल राजा के सामने अनुरोध किया कि गर्भवती भिक्षुणी की सही परीक्षा करके तत्व को सामने रखने के लिए । उसी समय उसी स्थान पर चारो तरफ से परदा घेरकर महाउपासिका विशाखा गर्भवती भिक्षुणी की परीक्षा करने के बाद विनयधर भिक्षु उपालि से कहा यह भिक्षुणी गृहस्थ जीवन में ही गर्भवती हो गयी थी और उसे निर्दोष करार दिया । जो यह मामला इतना गम्भीर था तब भी किसी को परेशान न करके किसी की अवमानना न करके इस घटना

का निर्णय सही ढंग से देने के कारण बुद्ध राजा प्रसेन्नजीत कोशल सेठ अनाथपिण्डिक सेठ विशाखा महाउपासिका विनयधर उपालि भिक्षु को साधुवाद दिया । जो निर्णय देवदत्त ने किया था यदि उसे निर्णय के अनुसार निर्णय को क्रियान्वित किया होता तो बहुत बड़ा अनर्थ हो जाता । लेकिन महाकारुणिक तथागत बुद्ध के कारण भिक्षुणी होने वाले बच्चे का और साथ-साथ सबका मर्यादा बच गया । उस भिक्षुणी को एक पुत्र पैदा हुआ । राजा प्रसेन्नजीत कोशल महाकारुणिक बुद्ध के कहने पर उस बच्चे को अपने राजमहल में ले गये । उस बच्चे का लालन-पालन करवाया और बच्चे का नामकरण काश्यप के नाम से हुआ । यह बच्चा बड़ा होने के बाद अपने माताजी के बारे में पूछता था । बार-बार पूछने पर भी घटना को छुपाने की बहुत कोशिस करने के बावजूद सफल नहीं हुए । अन्त में राजा कोशल ने कहा तुम्हारी माता जी अमुक भिक्षुणी है यह बात सुनकर काश्यप प्रसन्न हो गया और प्रसन्न होकर राजा से आज्ञा मांगा बुद्ध शासन में भिक्षु बनने के लिए । राजा प्रसेन्नजीत कोशल काश्यप को बुद्ध के पास ले जाकर प्रव्रज्या दिलाया छोटा बच्चा होने के कारण जो बुद्ध को फल और मीठा मिलता था सबसे कहते थे यह फल और मिठाई ले जाकर काश्यप को दे दो । उस समय भिक्षुशासन में श्रावस्ती में कई काश्यप होने के कारण भिक्षुओं ने बुद्ध से पूछा कौन से काश्यप को देना है । बुद्ध ने कहा कुमार काश्यप को देना है। राजा के महल में पोषक होने के कारण बुद्ध भी उस बालक भिक्षु को कुमार काश्यप का नाम दिया ।

कुमार काश्यप जिस दिन से प्रव्रज्या लिया उसी दिन से विदर्शना करने में अपना समय बिताया । बुद्ध की देशना को अपने प्राण जैसा समझकर उसका पालन किया । कुछ समय बाद कुमार काश्यप अन्धवन में चले गये। एक दिन एक ब्राह्मण कुमार काश्यप के पास आकर तेरह प्रश्न पूछा । ब्राह्मण प्रश्न पूछ कर चला गया । इसके बाद कुमार काश्यप बुद्ध के पास जाकर तेरह प्रश्नों पर विचार-विमर्श किया । बुद्ध उसी प्रश्नों पर धर्मदेशना किये। उस तेरह प्रश्नों का धर्मदेशना सुनने के बाद कुमार काश्यप अरहत पद प्राप्त किया । कुमार काश्यप की माता भिक्षुणी इतना तो जानती थी कि उसका एक पुत्र है लेकिन बारह वर्ष बितने के बाद भी अपने पुत्र को नहीं देख सकने के कारण शोकाकुल हो गयी । एक दिन शोकाकुल होकर नगर में भिक्षाटन के लिए जाते समय कुमार काश्यप श्रामणेर को देखने से प्रसन्न

होकर मेरा-पुत्र मेरा-पुत्र कहकर जोर से रोते हुए कुमार काश्यप श्रामणेर की ओर दौड़ी । लेकिन भिक्षुणी की पैर आपस में लड़खड़ाने से गिर गयी । इतना पुत्र स्नेह होने के कारण भिक्षुणी के दोनों स्तनों से दूध गिरने लगा और दूध से भीगे हुए चीवर के साथ जाकर श्रामणेर कुमार काश्यप को स्पर्श किया ।

कुमार काश्यप भी सोचा यदि हम प्रिय वचन से उससे बात नहीं किया तो शोक भरित हृदय से मृत्यु होना अनिवार्य है । ऐसा सोचकर कहा माताजी किसके लिए दौड़ रही है ? अभी भी गृहस्थ जीवन का जिन्दगी, पुत्र स्नेह छोड़ा नहीं है ? ऐसा कहकर अपने ढंग से एक छोटा धर्मदेशना किया। इस धर्मदेशना सुनकर गृहस्थ जीवन का बन्धन छोड़कर विदर्शना भावना करके कुमार काश्यप की माताजी अरहत पद प्राप्त किया । इतना पुण्य सम्पन्न कुमार काश्यप की माताजी को देवदत्तव ने चीवर छोड़कर नगर से बाहर करने की आज्ञा दिया था । लेकिन बुद्ध ने दोनों को ही शरण दिया । शाम को धर्म सभा मण्डप में इसी घटना के बारे में भिक्षु लोगों के बीच में चर्चा हुआ । सभी भिक्षुओं का कहना था कि महाकारुणिक तथागत बुद्ध लोकानुकम्पा के लिए ही अपना पूरा जीवन समर्पित किया हुआ है ।

इस घटना को लेकर बुद्ध ने कहा पूर्व जन्मों में भी ऐसे ही हुआ बोलकर निग्रोध मृग जातक कहानी से देशना किया ।

भिक्षु देवदत्त बुद्ध के दर्शन के लिए जाने का इच्छा प्रकट करना

भिक्षु देवदत्त नौ महीने तक बीमार था । देवदत्त के बीमार होने का कारण है भिक्षु कोकालिक द्वारा गुस्से से अपनी केहुनी द्वारा देवदत्त के सीने पर जोर से मारना । देवदत्त का हालत ज्यादा खराब होने के बाद अपने भिक्षुओं को बुलाकर कहा मैं बुद्ध का दर्शन करना चहता हूँ । देवदत्त के अनुयायी भिक्षुओं ने कहा जब आप ठीक-ठाक थे तो बुद्ध को कितना परेशान किये थे । अब हमलोग आपको बुद्ध के पास नहीं ले जायेंगे । देवदत्त ने कहा यह सब सही है लेकिन बुद्ध हमारे दुष्कर्म को कभी भी अन्यथा नहीं लिया । बुद्ध सदैव प्राणियों के लिए मैत्री करते है । ऐसा कहकर पुनः बुद्ध के पास जाने की इच्छा प्रकट किया । अनुयायी भिक्षु लोग विमार देवदत्त को साफ-सुथरा करके एक चारपायी पर लिटाकर ले जाने को तैयार हुए। ले जाते हुए श्रावस्ती पोखरा के पास पहुँच गये । पोखरा देखने के बाद

देवदत्त ने स्नान करने की इच्छा व्यक्त किया । ऐसा सोचकर चारपाई से उठकर दोनों पैर जमीन पर रखा । पैर जमीन पर रखते ही पृथ्वी फट गयी और देवदत्त उसमें गर्दन तक अन्दर चला गया । उसी समय देवदत्त के मुख से निम्न बात निकला—

'महाकरूणा चित्त से भरा हुआ, अग्रप्रुद्‌गल पुरुष धम्म सारथि सम्भाव से युक्त पुण्य से भरा बुद्ध के शरण में जाऊँगा । (बुद्धं शरणं गच्छामि) यह वाक्य मुख से निकलते ही देवदत्त का पूरा शरीर पृथ्वी के अन्दर सदा के लिए समा गया । इसके पश्चात् देवदत्त अविची महानरक में उत्पन्न हुआ ।

पृथ्वी फट जाने से उसके अन्दर देवदत्त को समा जाने की खबर भिक्षुओ ने बुद्ध को बताया । बुद्ध ने कहा पहले कई जन्मों में भी देवदत्त मेरे साथ ऐसा किया है । ऐसा कहकर बुद्ध ने चन्दन जातक, शान्तिवादी जातक, चुल्लधम्मपद जातक की देशना किया । देवदत्त के मरने की खबर सुनकर आम जनता बहुत खुश हो रहा है । यह खबर भी भिक्षु आनन्द ने बुद्ध को दिया । इसके सन्दर्भ में बुद्ध पिंगल जातक का धर्मदेशना किया है ।

कुतूहल से भरा हुआ भिक्षु बुद्ध से पूछा देवदत्त की उत्पत्ति कहाँ हुआ है ? बुद्ध ने कहा सबसे ज्यादा कष्टदायक अविचि महानरक में पैदा हुआ है । ऐसा कहकर एक छोटा धर्मदेशना किया—

'पाप करने वाला व्यक्ति इस लोक में भी पश्चाताप करता है, परलोक में भी पश्चाताप करता है । हमने बहुत-सा पाप किया, सोचकर बार-बार पश्चाताप करता है । दुर्गति में पैदा होकर दुःख विपाक भोगते हैं और अनेक प्रकार से पश्चाताप करता है' । (अंक 151)

बुद्ध ने धर्मदेशना किया । देवदत्त बहुत बड़ा अपराध किया लेकिन जन्मों में बहुत पुण्य भी किया है । नरक से मुक्त होकर फिर से पुण्य करके भविष्य में सट्टीस्सर नाम से पच्छेक बुद्ध होगा । (अंक 151)

राजा विम्बिसार के मरने के बाद किसी भी दिन राजा अजातशत्रु रात्रि में सो न सका । अभी सोयेंगे सोचकर आँख बन्द करने से भी नीद आते ही घबराकर जाग जाता है । देवदत्त भिक्षु के जीवित रहते ही पृथ्वी फटकर अविची महानरक में जाने का खबर सुनते ही राजा अजातशत्रु और घबरा गये ।

इसी तरह घबराहट भरा जीवन व्यतीत करते हुए अजातशत्रु ने एक दिन रात्रि को सोचा । शान्ति प्रदान करने वाले किसी आचार्य के पास जाना जरूरी है । ऐसा सोचकर छः बार आचार्य लोगों के पास गये । लेकिन उनको शान्ति नहीं मिला । एक दिन चाँदनी रात के दिन अपने अमात्यों से चर्चा किया कि शान्ति के लिए किसके पास जाना अच्छा रहेगा । अमात्य लोगों ने कहा निगण्ठनाथ पुत्र के पास जाना अच्छा है । राजा अजातशत्रु सभी की बातों को सुनकर चुप हो गया । सोचा जीवक वैद्य के साथ बात करके बुद्ध के पास जाना अच्छा रहेगा ।

उसी समय अजातशत्रु के छोटा बालक की अँगुली में एक बहुत बड़ा फोड़ा हो गया । जिस कारण बालक बहुत जोर-जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया । राजा अजातशत्रु ने अपने पुत्र की अँगुली अपने मुँह में डालकर चूसना शुरू कर दिया । गन्दगी से भरा हुआ फोड़ा फट गया । जिससे गन्दा खून और मवाद राजा अजातशत्रु के पेट में चला गया । राजा अजात शत्रु ने सोचा पिताजी मेरे लिए इससे भी अधिक कष्ट उठाया होगा । जिससे चिन्ता और बढ़ गया । देवदत्त के साथ मिलकर पिताजी को कठोर दुःख देने की घटना बार-बार एक चित्र जैसे सामने आता था । राजा अजातशत्रु का चित्त वेदना दिन पर दिन बढ़ने के कारण उससे मुक्ति पाने के लिए एक दिन बुद्ध के पास चले गये । बुद्ध के पास जाकर बुद्ध से पूछा भिक्षु जीवन बिताने से इस जन्म में कौन-सा अच्छा फल मिलता है । बुद्ध ने राजा अजातशत्रु को भिक्षु जीवन की श्रेष्ठता के बारे में विस्तार पूर्वक बताया । (इसका विस्तार पूर्वक वर्णन त्रिपिटक के सूत्रपिटक, दिघनिकाय के समाज सूत्र के अन्तर्गत है ।) राजा अजातशत्रु समग्ञफल सूत्र का धर्मदेशना सुनने के बाद बहुत प्रसन्न हो गये और प्रसन्न होकर त्रिशरण-शरणागत् उपासक भव प्राप्त किया । राजा अजातशत्रु ने जो अनजाने में कोई गलती हुआ हो तो बुद्ध से उसके लिए क्षमा याचना किया । बुद्ध राजा अजातशत्रु को क्षमा किया । क्षमा करने के बाद आपत्ति संगर्व में रहने का वर्णन करके राजा अजात शत्रु को सांत्वना दिया । राजा अजातशत्रु बुद्ध को तीन बार प्रणाम करके वहाँ से चले गये । उस दिन से राजा अजातशत्रु रात को आराम से सोता था । बुद्ध ने भिक्षुओं से कहा यदि अजातशत्रु अपने पिताजी को जान से नहीं मारता तो इसी जन्म में सोवान होना अनिवार्य था । राजा अजातशत्रु जैसे श्रद्धा से परिपूर्ण और किसी को हमने नहीं देखा है ।

परिच्छेद - 44
गृहपति होश में आ जाओ

उपालि को वश में लेना

बुद्ध श्रावस्ती में वर्षावास समाप्त होने के पश्चात् बहुत से उपासक-उपासिकाओं एवम् भिक्षु महासंघ के साथ राजगृह बेलुवनाराम में पहुँच गये। बुद्धत्व प्राप्ति के (37) सौतिस वर्ष में ज्यादा दूर तक चारिका नहीं किये। राजगृह वेलुवनाराम से एक योजन दूर (12 कि.मी.) नालन्दा में पावारिक सेठ का आम के बगीचे में एक छोटा सा विहार था उसी विहार में थोड़े दिन तक बुद्ध ठहरे ।

उस समय निगण्ठ नाथ पुत्र बहुत से शिष्यों के साथ नालन्दा अपने आश्रम में रहते थे । दिघ तपस्वी नामक एक श्रावक निगण्ठ नाथ पुत्र के आश्रम से बुद्ध के पास आकर बुद्ध से हाल चाल पूछा । उसके बाद दिघतपस्वी और बुद्ध के बीच एक संवाद शुरू हो गया ।

बुद्ध—तपस्वी पापक्रिया अर्थात् पापकर्म के लिए कितना कर्म होता है ?

दिधतपस्वी—आयुष्मत गौतम कर्म निर्धारित करना निगण्ठनाथ पुत्र को नहीं आता है । उनके धर्म के अनुसार वह दण्ड और दण्ड निर्धारित करते हैं ।

बुद्ध—तपस्वी पाप कर्म करने के लिए निगण्ठनाथ पुत्र कितना दण्ड निर्धारित करता है ?

दिघतपस्वी—आयुष्मत गौतम कायदण्ड, वचीदण्ड और मनोदण्ड जैसे पाप कर्म करने के कारण तीन दण्ड निगण्ठनाथ पुत्र निर्धारित करते है ।

बुद्ध—तपस्वी कायदण्ड, वचीदण्ड और मनोदण्ड जैसे तीन ही होता है ?

दिघतपस्वी—जी हाँ, आयुष्मत गौतम कायदण्ड एक है, वचीदण्ड दूसरा है और मनोदण्ड दोनों के साथ मिला हुआ है ।

बुद्ध—तपस्वी इन तीनों दण्डों में कौन-सा महत्व वाला होता है और कौन श्रावद्ध होता है ?

दिघतपस्वी—आयुष्मत गौतम इन तीनों में कायदण्ड का अधिक महत्व होता है । और दो दण्ड अधिक महत्व नहीं रखता है । निगण्ठनाथ पुत्र धर्म ऐसे सिखाता है ।

बुद्ध—दिघतपस्वी कायदण्ड और बाकि दोनों से क्यों महत्व रखता है ?

दिघतपस्वी—आयुष्मत गौतम कायदण्ड इन तीनों में अधिक महत्व रखता है । यह निगण्ठनाथ पुत्र निर्धारित करते हैं ।

बुद्ध—कायदण्ड को अधिक महत्व वाला कैसे निगण्ठनाथ पुत्र बताते हैं ?

दिघतपस्वी—जी हाँ । कायदण्ड का ही अधिक महत्व निगण्ठनाथ पुत्र बताते हैं ।

बुद्ध—क्या कायदण्ड का ही अधिक महत्व होता है ?

दिघतपस्वी—जी हाँ, कायदण्ड का अत्यधिक महत्व होता है, यही बताते है ।

बुद्ध—तपस्वी कायदण्ड को अधिक महत्त्व क्यों देते हैं ?

दिघतपस्वी—कायदण्ड का अत्यधिक महत्व होता है । यहीं बात निगण्ठनाथ पुत्र बताते है । भाग्यवत पाप कर्म करने के लिए आप कितना निर्धारित करते हैं ।

बुद्ध—तपस्वी तथागत दण्ड का नाम नहीं लेता है । कर्म को कर्म के हिसाब से देता है । कर्म करने के लिए कायकर्म, वचीकर्म और मनोकर्म इन तीनों को मैं निर्धारित करता हूँ ।

दिघतपस्वी—आयुष्मत गौतम क्या कायकर्म दूसरा है ? वचीकर्म उससे भी भिन्न है और मनोकर्म इन दोनों से भी अलग हैं ।

बुद्ध—जी हाँ । तपस्वी इन तीनों को हम अलग कर्म के हिसाब से देखते आ रहे है ।

दिघतपस्वी—आयुष्मत गौतम इन तीनों में कौन सबसे अधिक महत्व रखता है ?

बुद्ध—मेरे अनुसार मनोकर्म का सबसे अधिक महत्व होता है । इस प्रश्न को दिघतपस्वी तीन बार पूछा और बुद्ध तीनों बार एक ही उत्तर दिये ।

इस संवाद के बाद दिघतपस्वी अपने गुरू निगण्ठनाथ पुत्र के पास गया । उस समय निगण्ठनाथ पुत्र अपने बहुत से अनुयायियों से घिरा हुआ दिखाई दिया । निगण्ठनाथ पुत्र का जेष्ठ शिष्य, गृहस्थ और उपालि गृहपति भी बहुत से लोगों के साथ निगण्ठनाथ पुत्र के पास आकर बैठ गये ।

दिघतपस्वी को देखने के बाद निगण्ठनाथ पुत्र ने पूछा तुम कहाँ से आ रहा है ? दिघतपस्वी ने बोला मैं श्रमण गौतम के पास से आ रहा हूँ । निगण्ठनाथ पुत्र ने पूछा वहाँ कुछ बात हुआ कि नहीं ? दिघतपस्वी और बुद्ध के बीच में जो भी बातचीत हुआ वह सभी बात को दिघतपस्वी ने निगण्ठनाथ पुत्र को बता दिया । निगण्ठनाथ पुत्र सुनने के बाद साधु-साधु-साधु बोला । इसके बाद निगण्ठनाथ पुत्र ने कहा जो तुम गौतम बुद्ध को जवाब दिया वह बिल्कुल सही है । मेरे धर्म शासन में तुम पारंगत है । तीन मनोदण्ड महाकायदण्ड के बराबर नहीं होता है । पाप कर्म करने में कायदण्ड महत्व रखता है । वचीदण्ड, मनोदण्ड का इतना बड़ा महत्व नहीं होता है । दोनों का बात सुनकर उपालि गृहपति ने कहा श्रमणनाथ पुत्र मैं इसके विषय में बुद्ध के साथ संवाद करना चाहता हूँ । एक शक्ति सम्पन्न पुरुष ज्यादा बाल वाले एक बकरा को उलट-पुलट करके थका देता है । वैसे ही मैं भी इस सम्बन्ध में प्रश्न पुछकर बुद्ध को थका देगा । ऐसे बड़ी-बड़ी बात करके बुद्ध के साथ संवाद करने की इच्छा प्रकट किया है । उपालि की बात सुनकर निगण्ठनाथ पुत्र ने कहा गृहपति श्रमण गौतम के साथ संवाद करने के लिए मैं, दिघतपस्वी और तुम (उपालि) भी सक्षम है । जाओ जाकर संवाद करो । दिघतपस्वी ने कहा उपालि श्रमण गौतम के साथ संवाद करने के लिए जा रहा है । मैं उसके लिए कभी सहमति नहीं दूगाँ । श्रमण गौतम महामायावी है । दूसरे लोगों के श्रावको को अपने पक्ष में कर लेने में बहुत चतुर है । उसके पास वसीकरण का तरीका है । इसलिए हम लोगों का प्रधान उपासक उपालि को वहाँ मत भेजिए ।

दिघतपस्वी की बात सुनने के बाद निगण्ठनाथ पुत्र ने कहा तपस्वी उपालि कभी भी श्रमण गौतम का श्रावक होने की सम्भावना ही नहीं है । बल्कि श्रमण गौतम उपालि का श्रावक हो सकता है । इसलिए उपालि को बुद्ध के साथ वाद-विवाद करने के लिए जाने को कहा ।

उपालि गृहपति को बुद्ध के पास नहीं भेजने का अनुरोध दिघतपस्वी ने तीन बार किया लेकिन निगण्ठनाथ पुत्र दिघतपस्वी की बात को न सुनकर उपालि गृहपति को बुद्ध के साथ संवाद करने के लिए भेज दिया । उपालि गृहपति निगण्ठनाथ पुत्र को तीन बार प्रदक्षिणा करके पावारिक आम के बगीचे में चले गये । वहाँ पहुँचकर बुद्ध को सादर गौरव करके बुद्ध के पास बैठ गये । उपालि ने पूछा यहाँ दिघतपस्वी आया था ? बुद्ध ने कहाँ हाँ जी आया था । उपालि ने पूछा उसके साथ आप का किस विषय पर संवाद हुआ। बुद्ध ने दिघतपस्वी के बीच में जो कुछ संवाद हुआ था, विस्तारपूर्वक उपालि गृहपति को बता दिया । उपालि गृहपति साधु-साधु-साधु बोला । उपालि गृहपति ने कहा दिघतपस्वी हमारे गुरु निगण्ठनाथ पुत्र है उनके धर्म की पूरी जानकारी रखने वाला है सबसे प्रमुख व्यक्ति है । हीन मनोदण्ड, महाकायदण्ड के बराबर नहीं है क्योंकि जिस समय पाप करेगा उसी समय कायदण्ड का महत्व होता है । वचीदण्ड और मनोदण्ड ऐसा नहीं होता है। बुद्ध ने कहा गृहपति जो सत्य में रहकर बात करना है तो मैं आप के साथ बात करने को तैयार है । उपालि गृहपति ने कहा भाग्यवत सत्य के उपर आप बात-चित शुरू कर दीजिए । बुद्ध ने कहा गृहपति सादा पानी नहीं पीने वाला व्यक्ति गरम पानी पीने के लिए ही हठ करते हुए कोई असाध्य रोग होने से गरम पानी नहीं मिलने के कारण मर गया तो मरने के बाद कौन-सी जगह पर उत्पन्न होगा । इसके बारे में निगण्ठनाथ पुत्र क्या कहते हैं ? (अंक 153)

निगण्ठनाथ पुत्र का धर्म के अनुसार जल जीवेन्द्रिय पुत्र का धर्म के अनुसार जल जीवेन्द्रिय प्राणी है छोटे जल का बूँद छोटा प्राणी है । महाजल बूँद महाजल प्राणी है । इसलिए गृहस्थ लोग जो गरम पानी ठण्डा करके देता है वही पानी निगण्ठनाथ पुत्र और निगण्ठ श्रमण लोग पीते है । किसी कारण ऐसा जल नहीं मिलेगा तो क्या होगा ?

उपालि का जवाब भाग्यवत मनस्तत्व एक देव निकाय है । मनस्तत्व में मल होने के कारण उसी मनुष्य सत्यदेव में उत्पत्ति होता है । बुद्ध ने

कहा गृहपति-गृहपति थोड़ा होश में आओ और होश में आकर जवाब देना। क्यों आप ने कहा कायदण्ड का महत्व होता है और आप ने जो उत्तर दिया इससे पता चलता है मनोदण्ड ही सबसे बड़ा होता है । ऐसा बात बुद्ध का सुनकर उपालि ने सोचा निगण्ठनाथ पुत्र ने कहा गृहपति गौतम बुद्ध से बात करने के लिए सक्षम मैं दिघतपस्वी हूँ । फिर उपालि ने बोला भाग्यवत जो कुछ भी होगा कायदण्ड ही महत्वपूर्ण होता है ।

(बुद्ध की देशना सुनने के बाद उपालि गृहपति ऐसा सोचा कोमा में जाने से अश्वास-प्रश्वास करते रहते है लेकिन मर गया बोलकर नही बोलता है । चित्त निरुद्ध होने के बाद मरने का संज्ञा लेता है । च्यूति एवम् प्रतिसन्धि दोनों भी चित्त से ही होता है । इसलिए मनोदण्ड का महत्व होता है । निगण्ठनाथ पुत्र का देशना न्याय संगत नहीं है लेकिन गौतम बुद्ध की बात एकदम सही है । बुद्ध की आगे बात सुनने के लिए उपालि गृहपति अपना संवाद आगे बढ़ाया)

उपालि—भाग्यवत मनोदण्ड के अन्तर्गत होता है ?

बुद्ध—गृहपति थोड़ा होश में आकर बोलो जो आप ने पहले कहा उसके बाद कहा दोनों में बहुत अन्तर है । दोनों मेल नही खाता है ।

उपालि—भाग्यवत आप जो भी कहिए पापकर्म करते समय कायदण्ड का ही महत्व होता है वचीदण्ड, मनोदण्ड का इतना महत्व नहीं होता है।

बुद्ध—गृहपति यह नालन्दा बहुत सर्वप्रकार सम्पन्न है । बहुत-सा जनता, कोई व्यक्ति एक बहुत तेजधार वाला तलवार लेकर कहे कि मैं नालन्दा के लोगों को जान से मारकर एक मांस का पहाड़ बना देगे । क्या ऐसा हो सकता है ?

उपालि—भाग्यवत यह छोड़िये, दस-बीस, तीस-चालीस-पचास आने से भी ऐसा नहीं हो सकता है ।

बुद्ध—गृहपति इर्दीगत शक्तिशाली कोई श्रमण या ब्राह्मण आकर गुस्सा होकर कह दिया कि मैं एक छण में पूरा नालन्दा को भष्म कर देगे क्या यह हो सकता है ?

बुद्ध—गृहपति ! दण्डकारण तालिम अरण्य, मेध्यारण्य, मातागंरण्य ये सब कैसे पैदा हुआ क्या तुम जानते हो ?

उपालि—हाँ मैंने सूना है ।

बुद्ध—ये चीज कैसे हुआ तुम जानते हो ?

उपालि—भाग्यवत ऋषी मुनी लोगों का चित्त के जलने से हुआ है।

बुद्ध—गृहपति होश में आकर जवाव देना जो आपने कहा कायदण्ड के बारे में इन दोनों का कोई समावेश नहीं होता है ।

उपालि—भाग्यवत जो आपने पहले हमको बताया उसी देशना से मैं प्रसन्न हो गया । लेकिन आपके मुख से और कुछ जानने की इच्छा होने के कारण न्याय दिल से विरुद्ध सवाल पूछा । भाग्यवत कुछ दिया हुआ चीज निकाल कर दर्शाया जैसे धर्म को यथा स्वभाव से सुनने से मैं प्रसन्न हो गया । भाग्यवत मैं बुद्ध धम्म-संघ का शरण जीवन भर के लिए जाकर एक सच्चा उपासक के रूप में जीवन बीताये । इसलिए त्रिशरण शरणागत उपासक के रूप में हमें स्वीकार कर लिजिए ।

बुद्ध—गृहपति आपका यह निर्णय बहुत बड़ा है । उसके बारे में फिर से विचार करना जो आप पहले निगण्ठनाथ पुत्र को मानेते थे । अब हमारा धर्मदेशना सुनने के बाद हमारे शरण में आने से अज्ञानी लोग कहेंगे कि यह व्यक्ति समय-समय पर अपना धर्म बदलता रहता है । इसलिए अनपढ़ लोगों को कुछ बोलने के लिए मौका नहीं देना चाहिए । आप जैसे प्रसिद्ध व्यक्ति को ऐसा करने के लिए जल्दीबाजी नहीं करना चाहिए।

उपालि—भाग्यवत आपके विचार से मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ क्योंकि तीर्थक लोगों का आदत अच्छा नहीं है । वे लोगों को कोई श्रावक मिलने से कहे हैं फलाना राजा, फलाना अमात्य फलाना सेठ हम लोगों के शरण में है । ऐसा कहकर समाज में शोर मचाते हैं । ये लोग इसलिए शोर मचा करके भ्रम फैलाते हैं कि समाज के लोग प्रभावित होकर हमारे शरण में आयेंगे। जब मैं उन लोगों का श्रावक था उस समय भी शोर करते थे कि उपालि गृहपति हम लोगों का श्रावक है । लेकिन भाग्यवत आपने कहा और सोच-विचार करने के लिए जबकि वैसे और लोग नहीं है । इसलिए मैं दूसरी बार भी आपके शरण जाता हूँ ।

बुद्ध—गृहपति बहुत दिनों से आपका घर चौमुहानी के कुआँ जैसे निगण्ठ साधुओं के लिए खुला था । उन लोगों के आने से पहले जैसे दान देना, सम्मान करना, सत्कार करना अनिवार्य है ।

उपालि—भाग्यवत हमको ही देना दूसरे लोगों को नहीं देना । हमारे श्रावक को देना क्योंकि हमारे श्रावक लोगों को देने से महापुण्य होता है लेकिन दूसरे लोगों को देने से इतना पुण्य नहीं होता है । निगण्ठनाथ पुत्र और उसके श्रावक गण ऐसा कहकर आपका अपमान करने की बात हमने कई बार सुना है । लेकिन आप ऐसे नहीं है निगण्ठ साधुओं को भी दान देने के लिए आप ने कहा । भाग्यवत आप की बात से मैं अति प्रसन्न हो गया। तीसरी बार भी मैं बुद्ध के शरण में धम्म के शरण में और संघ के शरण में जाता हूँ ।

इसके बाद बुद्ध उपालि गृहपति को दानशील आदि अनुक्रम से धर्मदेशना किया । इसके पश्चात् चतुआर्य सत्य के बारे में विस्तार पूर्वक धर्मदेशना किया । धर्मदेशना के बाद उपालि गृहपति सोवान हो गया । इसके बाद बुद्ध से आज्ञा लेकर बुद्ध को तीन बार प्रदर्शना करके अपने महल में चला गया । यह खबर निगण्ठनाथ को मिलने से निगण्ठनाथ पुत्र बुद्ध और उपालि के बीच जो हुआ उनका खबर लेने के लिए निगण्ठनाथ पुत्र उपालि गृहपति के महल में चले गये । निगण्ठनाथ पुत्र पहले जैसे ही उपालि सेठ के महल में अन्दर जाने की कोशिश किये । लेकिन द्वारपाल ने निगण्ठ साधु को पहले जैसे सेठ के महल के अन्दर तुरन्त जाने नहीं दिया । द्वारपाल ने कहा हम लोगों का सेठ उपालि अब श्रमण गौतम बुद्ध का श्रावक हो गया है । यदि आप को भोजन की आवश्यकता है तो इसी स्थान पर रुकों मैं जाकर तुम्हारे लिए कुछ भोजन ले आऊँगा । लेकिन अन्दर मत आना। निगण्ठनाथ पुत्र नाराज होकर कहा हमको भोजन से मतलब नहीं है । तुम जाकर सेठ से कहो निगष्ठ नाथ पुत्र मिलने आया है । उसी के अनुसार द्वारपाल जाकर सेठ को सूचना दिया । सेठ ने कहा दरवाजा चार में उसकों बैठने के लिए आसन का बन्दोबस्त कर दो । द्वारपाल सेठ के आदेशानुसार दरवाजा संख्या चार में एक बैठने का वन्दोवस्त करके सेठ को सूचित किया। उसके अनुसार निगण्ठनाथ साधु अपने आचार्य निगण्ठनाथ पुत्र और बाकि लोगों के साथ दरवाजा संख्या चार तक गया । उपालि गृहपति उस स्थान पर सबसे ऊँचे आसन पर बैठकर कहा आप लोगो को छोटे आसन पर बैठना है तो बैठ जाओ। निगण्ठनाथ पुत्र ने कहा आप भी श्रमण गौतम के पास जाकर उसके जाल में फँसकर आया है ।

उपालि गृहपति ने कहा सम्यक सम्मबुद्ध का जो आप लोग मायाजाल कहते है वह बहुत कल्याणकारी है । उसका माया जो हमको स्नेह करने वाला, ज्ञाती समूह के लिए सभी ब्राह्मण, क्षत्रिय, गृहस्थ, देव, मनुष्य सभी के लिए कल्याणकारी है । बहुत दिनों तक कल्याणकारी है । आपके शासन में ऐसे नहीं है । भाग्यवत बुद्ध का शासन के विषय का वर्णन शुरू कर दिया ।

गृहपति सम्पूर्ण प्रदेश में राजा और प्रजा सभी लोग जानते है तो आप हमारे श्रावक है । हम जानना चाहते है कि अभी आप किसके श्रावक है ? यह बात सुनकर उपालि गृहपति खड़ा होकर अपना दक्षिणा साट्क सही ढंग से पहनकर बुद्ध कौन-सी दिशा में रहते थे उस दिशा में हाथ जोड़कर 'धीरस्म विगत मोहस्स' जैसे गाथा दस के साथ बुद्ध का गुण वर्णन किया। और करके कहा है कि बुद्ध का श्रावक हूँ ।

उपाली सेठ की बात सुनकर निगण्ठनाथ पुत्र बहुत शोक संतप्त हुआ । कहा हम लोग नष्ट हो गये निगष्ठनाथ पुत्र का आखिरी वाक्य यही था । इसके बाद निगष्ठनाथ पुत्र को दिल का दौरा पड़ने से उनके मुंख से एक पात्र भर कर खून का उल्टी किया । श्रावक लोग एक चारपाई पर लेटाकर निगण्ठनाथ पुत्र को पाँवा ले गये । कई दिनों के बाद इसी वेदना से निगण्ठनाथ पुत्र का पाँवानगर में देहान्त हो गया ।

बुद्ध पावारिक आम के बगीचे से निकलकर मल्ल राज्य के पाँवानगर में चन्द्रकुमार पुत्त के आमवन में पधारे । उस आम्र वन विहार में रहते समय पांवा नगर के मल्ल राजा लोग आकर बुद्ध से अनुरोध किया कि मल्ल राजाओं द्वारा निर्मित बुद्ध विहार में आराम करने के लिए पधारे । बुद्ध मल्ल राजा लोगों का अनुरोध स्वीकार किया । वहाँ पर बुद्ध मल्ल राजा समूह प्रमुख लोगों को धर्मदेशना किया । उस दिन सायं को सभी लोग धर्मदेशना सुनकर जाने के पश्चात बुद्ध अरहत सारिपुत्र को कहा मेरा पीठ दर्द कर रहा है इसलिए मैं थोड़ा आराम करूँगा ऐसा कहकर सारिपुत्र से बोले आप धर्मदेशना करना और बुद्ध थोड़े समय के लिए सो गये ।

उस समय पाँवानगर में निगण्ठनाथ पुत्र का देहान्त हो गया था । निगण्ठनाथ पुत्र के देहान्त के बाद श्रावक लोगों के बीच में एक बहुत बड़ा विवाद खड़ा हो गया ।

अरहत सारिपुत्त उस घटना के विषय में बुद्ध को बताया बुद्ध ने कहा कोई भी समाज में बुद्धिमान, विचारक नहीं होने से विवाद होना स्वभाविक है । लेकिन हमारे धर्म में ऐसा वाद विवाद उत्पन्न होने का अवसर नहीं के बराबर हैं । यदि कोई वाद-विवाद उत्पन्न हो गया तो एक साथ चर्चा करना जरुरी है । एक साथ चर्चा करने से समस्या का समाधान के साथ-साथ बहुत से लोगों को कल्याण भी होगा । एक ही धर्म को संक्षेप से एक धर्म, दो धर्म, तीन धर्म जैसे क्रमशः बुद्ध का देशना विस्तारपूर्वक किया। बुद्ध ने कहा अरहत सारिपुत्र आपका देशना अतिसुन्दर है । मेरे जिन्दा रहते हुए किया हुआ एक धर्म संज्ञान जैसे लगता है । इस देशना को बुद्ध महापरिनिर्वाण से आठ वर्ष पहले निगण्ठनाथ पुत्र के देहान्त के आस-पास किया था ।

परिच्छेद - 45

एक हजार सोने के सिक्के के लालच में धर्मश्रवण

छत्रपाणि उपासक

श्रावस्ती में छत्रपाणि नामक एक उपासक था । एक दिन सुबह छत्रपाणि बुद्ध के पास जाकर धर्मदेशना सुन रहा था । उसी समय राजा प्रसेन्नजीत कोशल भी बुद्ध का दर्शन करने के लिए आये । छत्रपाणि ने राजा प्रसेन्नजीत कोशल को देखने के बाद सोचा खड़ा होना चाहिए या नहीं । छत्रपाणि उपासक ने सोचा त्रैलोकनाथ बुद्ध के सामने बैठकर एक प्रादेशिय राजा के लिए क्यों खड़े हो जाये ? राजा पृथक जन होने के कारण हमसे नाराज भी हो सकता है लेकिन छत्रपाणि उपासक ने सोचा कोई बात नहीं है । हम खड़े नहीं होंगे । राजा प्रसेन्नजीत कोशल ने देखा कि छत्रपाणि देखने के बाद भी खड़ा होकर मेरा सम्मान नहीं किया । राजा प्रसेन्नजीत कोशल कुछ नहीं कहा, गुस्से से बुद्ध के पास आकर बैठ गया । बुद्ध ने जान लिया कि राजा गुस्से में हैं । बुद्ध ने राजा से कहा महाराज छत्रपाणि उपासक सत्य अवबोध किया हुआ एक पण्डित है, त्रिपिटक धर है, अच्छा-बुरा दोनों को तय करने की बुद्धि उसके पास है । बुद्ध की बात को सुनकर राजा प्रसेन्नजीत कोशल का दिल और दिमांग शान्त हो गया ।

एक दिन राजा प्रसेन्नजीत महल के सबसे उपरी तल्ले से बैठकर नगर की ओर देख रहे थे कि छत्रपाणि उपासक दिखाई दिया । भोजन के बाद चप्पल पहनकर एक छाता लेकर राजमहल के आँगन से जाते दिखाई दिया। राजा छत्रपाणि उपासक को देखकर बुलवाया छत्रपाणि जूता उतारकर छाता एक तरफ रखकर राजा को नमस्ते करके एक स्थान पर बैठ गया। उसके बाद दोनों के बीच में एक छोटा संवाद हुआ ।

उपासक—आपने हमको आने के लिए निमंत्रित किया ।

राजा—हम राजा हैं । आप भी जानते हैं ।

उपासक—नहीं महाराज मैं पहले से जानता हूँ ।

राजा—यदि ऐसा है तो बुद्ध के सामने हमें देखकर क्यों खड़ा नहीं हुआ ।

उपासक—महाराज त्रैलोक शान्तिनायक बुद्ध के पास बैठकर आप जैसे प्रादेशिय राजा को देखकर खड़ा होने से बुद्ध का अपमान होता । इसलिए हम खड़ा नहीं हुए ।

राजा—बात बिल्कुल सही है ऐसा ही होना था । आप एक धर्मधर, पण्डित होने का खबर हमकों भी था । इसलिए हमारे अन्त:पुर में रानियों को धर्मदेशना करने के लिए आमंत्रित करता हूँ ।

उपासक—महाराज यह हमसे नहीं हो पायेगा ।

राजा—क्यों नहीं हो पायेगा ?

छत्रपाणि उपासक—महलो में काम बहुत कठीन है । महलों के बारे में हमें अधिक जानकारी नहीं है । इसलिए एक नया अनजाना काम में हाथ लगाने के लिए मैं असमर्थ हूँ ।

राजा—ऐसा मत सोचना कि एक दिन हमे देखकर खड़ा नहीं होने के कारण हमारे दिल के अन्दर कोई तुमसे नाराजगी नही है । इसके लिए शंका नहीं करना ।

छत्रपाणि—महाराज गृहस्थ लोग जहाँ रहते है वहाँ बहुत झण्झट होता है । इसलिए एक बौद्ध भिक्षु को बुलाकर धर्म देशना करवाना सबसे अच्छा होगा ।

राजा—तब तो आप चले जाइए ।

उसके बाद राजा प्रसेन्नजीत बुद्ध के पास गये और वहाँ जाकर पाँच सौ भिक्षुओं के साथ अपने महल में आने के लिए बुद्ध को निमंत्रित किया।

बुद्ध ने कहा महाराज बार-बार एक स्थान पर जाना बुद्ध के चरित्र में नहीं है और बुद्ध को शोभा नहीं देता है क्योंकि बुद्ध बहुत लोगों का कल्याण करना चाहता है । राजा ने कहा भाग्यवत बात ऐसा है तो कोई न कोई एक भिक्षु उस कार्य के लिए नियुक्त कीजिए ।

बुद्ध यह काम भिक्षु आनन्द को सौपा । भिक्षु आनन्द निरन्तर महल मैं जाकर निरन्तर धर्मदेशना किया । राजा प्रसेन्नजीत को दो रानियों में

मल्लिका रानी सही ढंग से धर्म सुनकर, धारण करके, कण्ठस्थ भी करती थी । लेकिन वासभदत्था सही मन से धर्म नहीं सुनती थी । एक दिन बुद्ध ने पूछा आनन्द क्या अन्त:पुर की रानियाँ सही ढंग से धर्म सुनती है या नहीं । भिक्षु आनन्द ने बोला रानी लोग सही ढंग से धर्म सुनती है । धर्म को सीखती है । पूछा सबसे सही ढंग से धर्म कौन रानी सीखती है ? आनन्द ने कहा भाग्यवत महारानी मल्लिका सही मन से धर्म सिखती है और उनका धर्म सुनने, धर्म पालन करने का तरीका बहुत अच्छा है । आपके खानदान की ञातिपुत्र वासभदत्या ध्यान से धर्म नहीं सुनती है । भिक्षु आनन्द की बात सुनकर बुद्ध ने छोटा-सा धर्मदेशना किया—

'आनन्द मेरा देशित धर्म ध्यान से न सुनकर, ध्यान से न पढ़कर धर्म का अनुपालन नहीं करने वाले व्यक्ती को उसका फल नहीं मिलेगा । जैसे कोई पुष्प होता है उसमें सुगन्ध नहीं होता है और उस पुष्प का माला पहनने से वातावरण सुगन्धित नहीं होता है, वर्ण सुगन्ध नहीं है ऐसे ही सही ढंग से धर्म श्रवण करने वाले व्यक्ति को उसका फल मिलता है' ।

(अंक 153)

कालसेठ पुत्र

श्रास्वती में अनाथपिण्डिक सेठ का एक पुत्र था जिसका नाम कालसेठ था । अनाथपिण्डिक सेठ इतना श्रद्धावान होने के बावजूद भी सेठ का पुत्र काल कभी भी बुद्ध बिहार में जाने को तैयार नहीं था । बुद्ध भिक्षु महासंघ के साथ महल में आने पर भी बुद्ध और भिक्षु महासंघ को प्रणाम करना उचित नहीं समझता था । पिता अनाथपिण्डिक कई बार अनेक तरीके से समझाया लेकिन कालसेठ को बात समझ में नहीं आया । अनाथपिण्डिक सेठ ने सोचा अपने पुत्र को सहीं रास्ते पर लाने के लिए कुछ न कुछ उपाय करना होगा । अनाथपिण्डिक सेठ ने सोचा पूर्णिमा के दिन जेतवनाराम में जाकर अष्टशील ग्रहण करवाकर, धर्मदेशना करवाने के बाद वापस आने पर सोने के सौ सिक्के देने का वादा काल पुत्र से किया । तीन बार आग्रह करने से काल सेठ जेतवनाराम जाकर अष्टशील समाधान होकर धर्म देशना सुनने को तैयार हो गया । कालसेठ धर्मदेशना सुनने के लिए गया लेकिन उसका मन नहीं लगा । पिताजी से सोने के सिक्के लेने के लालच में सुबह जाकर जेतवनाराम के एक कोने में बैठ गया और समय बिताकर वापस महल

में आया । अनाथपिण्डिक सेठ ने सोचा मेरा पुत्र बुद्ध बिहार में जाकर अष्टांगिक शील ग्रहण करके धर्मदेशना सुनकर महल में आ रहा है । ऐसा सोचकर अनाथपिण्डिक सेठ खुश होकर अपने पुत्र को नानाविध भोजन तैयार करवाया । लेकिन जबतक सोने के सौ सिक्के कालसेठ को नहीं दिया उसने कुछ भी नहीं खाया-पिया । दूसरी बार भी सेठ अनाथपिण्डिक अपने पुत्र काल सेठ को कहा तुम जाकर बुद्ध से एक धर्मदेशना सुनकर उसका अध्ययन करके आने पर एक हजार सोने का सिक्का देने का बादा किया। काल सेठ ने सोचा बुद्ध विहार में जाकर धर्मदेशना का एक पद सुनकर तुरन्त पिताजी के पास आकर एक हजार सोने का सिक्का लूँगा । अनाथपिण्डिक के पुत्र काल सेठ के मन की बात को बुद्ध ने जान लिया। बुद्ध ने जानकर कण्ठस्थ करने का देशना न करके केवल अर्थ से ही धर्मदेशना किया ।

काल सेठ ने सोचा ठीक है इसके बाद कोई एक पद सुनेंगे उसे सिखेंगे। ऐसा सोचते-सोचते बहुत-सा धर्मदेशना सुना लेकिन एक भी पद समझ में नहीं आया परन्तु उसे धर्मदेशना का अर्थ समझ में आया । जिस कारण काल सेठ सोवान हो गया । रात भर धर्मदेशना सुनकर दूसरे दिन बुद्ध प्रमुख महासंघ के साथ अपने पुत्र काल सेठ को देखकर अनाथपिण्डिक बहुत प्रसन्न हुआ । काल सेठ ने सोचा यदि हमारे पिताजी बुद्ध के सामने सोने के सिक्के नहीं दिये तो मैं पूछूँगा नहीं । यदि सोने के सिक्के के बारे में पूछूँगा तो बुद्ध सोच सकते हैं कि सोने के सिक्के के लालच में यह शील ग्रहण किया और धर्मदेशना सुना ।

अनाथपिण्डिक सेठ बुद्ध प्रमुख महासंघ को भोजन दान करवाया । अपने हाथो से सोवानगत भी कराया, पुत्र काल सेठ को भी भोजन करवाया। उसके बाद एक हजार सोने का सिक्का भरा हुआ मंजूषा बुद्ध के सामने अपने पुत्र को दिया । पुत्र काल सेठ लज्जा से भर गया और कहा हमें सोने का सिक्कासे अब कोई मतलब नहीं है । बार-बार सेठ अनाथपिण्डिक द्वारा अनुरोध करने पर भी काल सेठ सोने का सिक्का स्वीकार नहीं किया।

सेठ ने कहा भाग्यवत आज मेरे पुत्र का स्वभाव बहुत अच्छा है । बुद्ध ने कहा ऐसा क्या बात है ? अनाथपिण्डिक सेठ ने उसकी पूरी घटना को बुद्ध को बताया बुद्ध सम्पूर्ण घटना सूनने के बाद कहा—

'गृहपति आज तुम्हारे पुत्र के लिए इतना छोटा-सा सोने का मंजूषा छोटे होने का आश्चर्य नहीं है । चक्रवर्ती राज्य प्राप्ति, दिव्य ब्रह्म सम्पत्ति, सम्पूर्ण संसार के अधिपत्य से अधिक महत्व सोवान होना अति उत्तम है। (अंक 154)

सुन्दरीक परिवाजक को अपने वश में लेना

कोशल राज्य में सुन्दरीक भारद्वाज के नाम से प्रसिद्ध एक ब्राह्मण था। एक दिन सुन्दरीक ब्राह्मण सुन्दरिका नदी के किनारे अग्नि देवता की पूजा कर रहा था । उस पूजा के लिए खीरपायस का इस्तेमाल किया था । खीरपायस अग्नि में डालकर आग जलाता था, सोचता था । आग में जलने से महाब्रह्म ने खीर भोजन किया । कुछ खीर पायस बच गया तो सोचा कोई दूसरी जाति के व्यक्ति को खीर देने से भी हमें कोई लाभ नहीं मिलेगा। महाब्रह्म के मुख से उत्पन्न कोई ब्राह्मण को देने से मैं अपने पिताजी को संताप किया जैसे होगा । ऐसा करने से उसी के कारण मैं ब्रह्मलोक में पैदा जरूर होऊँगा ।

ऐसा सोचकर एक ब्राह्मण को खोजते-खोजते इधर-उधर देख रहा था। सुन्दरीक भारद्वाज ने देखा एक वृक्ष के नीचे एक व्यक्ति सिर से पैर तक कपड़ा ओढ़कर बैठा हुआ है । वह कोई नहीं था बल्कि महाकारुणिक बुद्ध थे । परन्तु बुद्ध के बारे में सुन्दरीक भारद्वाज को कुछ भी पता नहीं था। बुद्ध उस स्थान पर इसलिए बैठ गये थे क्योंकि नित्य सुबह दुनिया को देखने से मालूम हुआ कि एक भारद्वाज एक निष्फल क्रिया में लिप्त है इसलिए उस स्थान पर जाकर चीवर से पूरा शरीर ढककर वृक्ष के नीचे बैठे गये। बुद्ध ने सोचा यदि सुन्दरीक भारद्वाज हमें पहचान लिया, तो अवश्य ही वापस चला जायेगा । सुन्दरीक भारद्वाज को अपने पास आने के लिए बुद्ध ने पूरे शरीर को ढक कर वृक्ष के नीचे बैठे । सुन्दरीक भारद्वाज ने सोचा यह ब्राह्मण पूरी रात भर ध्यान किया होगा, खुश होकर बुद्ध के पास गया । उनके मुख से चीवर हटाया सुन्दरीक भारद्वाज ने देखा यह सिर मुड़ा हुआ व्यक्ति है । उसे नहीं देना है सोचा यह तो बिल्कुल मुण्डक है । ऐसा सोचकर उधर से वापस जाने के लिए तैयार हो गया । फिर भी सोचा सिर मुड़ा हुआ कोई-कोई ब्राह्मण भी होता है, बुद्ध के पास जाकर पूछा आप कौन-सी जाति के हैं ।

बुद्ध ने सुन्दरीक भारद्वाज के प्रश्नों का जवाब इस प्रकार दिये—

'यदि कोई दान से पुष्य अधिक कमाना है तो दान लेने वाले का जाति मत पूछो बल्कि शील-समाधि के बारे में पूछो क्योंकि शील-समाधि गुण ही दक्षिणा लेने के लिए योग्य होता है । लकड़ी कोई भी हो उससे उत्पन्न होने वाला अग्नि अपना काम करता है इसलिए निम्न कुल में पैदा होने से भी उस व्यक्ति में मुनि गुण, वीर्यवान होने, ज्ञानवान, पाप को घृणा करने, पाप से दूर रहने, इन्द्रिय संगर्व होने, चार आर्यसत्य के मार्ग से क्लेश पूरा नष्ट करके, ब्रह्मचर्य मार्ग पर चलने वाले ब्राह्मण को दान स्वीकार करने के लिए योग्य होता है । इन्द्रदेव को बुलायेगे, सोमदेव को बुलायेगे, वरुण देव को बुलायेंगे ये सभी बाते निर्थरक है । उचित समय पर अरहत लोगों को बुलाकर चीवर, पिण्डपात, वेशज्जगिलानपत्त, और उचित आसन इन चार चीजों से पूजा करने से महापुण्य होता है । अचेतनिक अग्नि में पूजा भाण्ड जलाना उससे कोई लाभ नहीं होता है और ना ही उससे कोई पुण्य मिलता है' ।

बुद्ध की बात सुनकर सुन्दरीक भारद्वाज ने कहा आप जैसा कहते हैं वैसा कोई ब्राह्मण नहीं मिलने के कारण जो ब्राह्मण मिला हमने उसी को भोजन दान दिया । आज के बाद मैं ऐसा नहीं करूँगा कहकर जो अग्नि देव को चढ़ाया उससे क्या हुआ खीर बुद्ध को भेट किया । बुद्ध ने कहा देशना करने के पश्चात् जो भोजन मिलता है, वह हम स्वीकार नहीं करते है । सुन्दरीक ब्राह्मण का खीर दान को अस्वीकार किया ।

बुद्ध की बात सुनने के बाद बचा हुआ खीर पानी में डालकर बुद्ध के पास आकर बैठ गया । सुन्दरीक भारद्वाज के बैठने पर बुद्ध ने धर्मदेशना किया ।

'ब्राह्मण लकड़ी जलाने से कोई शुद्ध नहीं होता है लकड़ी जलाना आर्य धर्म के बाहर का कार्य है । यदि लकड़ी जलाने से शुद्धि मिले तो शमशानघाट पर जो लोग मुर्दे जलाते है उन लोगो को पहले शुद्ध होना चाहिए । लकड़ी का टुकड़ा जलाकर कोई शुद्धि मिलने की बात ज्ञानवन्त पुरुष कहीं पर भी उल्लेख नहीं किया है । ब्राह्मण मैं तो लकड़ी जलाकर उससे कुछ प्राप्त करने की कोशिश नहीं करता हूँ । मेरे चित्त में तो ज्ञान नाम की अग्नि जलता है । आवर्जन प्रतिबद्ध से युक्त ज्ञान नामक अग्नि जलाकर

निरन्तर चमकता हूँ । सदैव संगर्व मन से युक्त हूँ, बोधि मूल से पूर्ण किया हुआ मार्ग ब्रह्मचर्य से युक्त हूँ । इसलिए पूजा लेने के योग्य हूँ । ब्राह्मण तुम्हारा दिमाग घमण्ड से भरा हुआ है जो तुम उठाकर दिमाग में रखा हुआ है । आग, होम, द्रव्य तुम्हारे लिए बोझ है तुम्हारे चित्त में क्रोधाग्नि नष्ट करने वाला एक ही मार्ग है वह ज्ञान है । झूठ ज्ञान अग्नि को फैलने नहीं देता है वह एक तरह का राख है' ।

'ब्राह्मण आप के यज्ञ के लिए सोने चाँदी से बना हुआ चम्मच कैसे इस्तेमाल होता है ? वैसे मैं भी अपनी अग्नि के लिए मेरी जीह्वा नामक चम्मच इस्तेमाल करता हूँ । आप के यज्ञ की जगह नदी के किनारे में होता है जबकि मेरे यज्ञ की जगह जीवों के हृदय में होता है । उस व्यक्ति का शान्त चित्त हमारे यज्ञ का अग्नि जल है । यज्ञ के बाद आप सुन्दरीका नदीं में स्नान करते है । मैं तो उस जीवों को आर्य अष्टांगिक मार्ग की नदी में स्नान करवाता हूँ । जो आप नदी में नहाता है उसी स्थान पर और लोगों के स्थान करने से उस नदी का जल हिलकोरे मारता है । मेरे आर्य अष्टांगिक मार्ग के जल से हजारो-लाखों व्यक्ति नहाने से भी हिलकोरे नहीं मारता है। यह बहुत बड़ी बात है । प्रज्ञावान व्यक्तियों का प्रशंसा से परपूर्ण है । आर्य अष्टांगिक मार्ग के जल से नहाने से क्लेश साफ होता है जिससे निर्वाण की प्राप्ति होती है । आर्य अष्टांगिक मार्ग ब्रह्मचर्य, ब्रह्मभूमि, शश्वत उच्छेद दोनों दृष्टि से मुक्त होकर मध्यम मार्ग पूरा करने से संसार दुख से मुक्ति मिलता है । इसलिए सही मार्ग से जाकर चित्त के क्लेश को पूर्ण रूप से साफ करके, ऋजू चरित्र से युक्त अरहत लोगों को नमस्कार करो । उक्त धर्म गुण बढ़ने से सच्चा उत्तम मार्ग प्राप्त किया हुआ व्यक्ति को धर्मचारी कहते हैं' ।

बुद्ध की धर्मदेशना सुनने के बाद सुन्दरीक भारद्वाज ब्राह्मण बहुत प्रसन्न हो गया । त्रिशरण शरणागत होकर बुद्ध का बहुत प्रशंसा किया । उसके बाद प्रव्रज्या लेकर उपसम्पदा प्राप्त करके विदर्शना भावना करने के कारण सुन्दरीक भारद्वाज अरहत पद प्राप्त किया ।

एक मिथ्या दृष्टिक ब्राह्मण को अपने वश में लेना

अचिरवती नदी के समीप एक मिथ्यादृष्टिक ब्राह्मण खेती करता था । बुद्ध उसके खेत की तरफ से पिण्डपात के लिए जाते थे । बुद्ध अपने दिव्य चक्षु से देखा फसल तैयार होने के बाद पूरा खेत का फलस नष्ट हो जायेगा।

उसके बाद मिथ्यादृष्टिक ब्राह्मण शोक संतप्त होगा । यह जानकर बुद्ध ने सोचा उसी समय शोक संतप्त ब्राह्मण को धर्मदेशना करने से वह अवश्य सोवान होगा । ब्राह्मण जो खेती करता था बुद्ध उसके पास से ही गुजरते थे । लेकिन ब्राह्मण कभी भी बुद्ध से एक शब्द नहीं बोला । एक दिन बुद्ध स्वयं ब्राह्मण से पूछे आप क्या कर रहे हो ? ब्राह्मण ने उत्तर दिया पुण्यवान गौतम मैं अपने खेती की तैयारी कर रहा हूँ ।

बीज बोते समय भी बुद्ध उसी तरफ से गुजरे और बाली लगने पर भी उधर से ही गुजरे और जाते समय हर बार पूछते थे आप क्या कर रहें है ? ब्राह्मण जो करता था वह सब बुद्ध को बताता था । एक दिन ब्राह्मण ने कहा पूण्यवान गौतम यह फसल बोने से लेकर तैयार होने और पकने तक आप नित्य हमसे पूछते थे आप क्या कर रहा है । इससे हम दोनों के बीच बात-चीत से दोस्ती हो गयी । इसलिए फसल काटने के बाद इसका एक हिस्सा आपको भी दूगाँ । आप को बगैर दिये हम भी नहीं खायेंगे। आज के बाद हम दोनों मित्र है ।

समय बीतने के बाद धान का फसल तैयार हो गया । ब्राह्मण खेती का मुआइना करने के बाद तय किया कि कल सुबह धान का फसल काटेगे। ऐसा मन बनाकर घर जाकर सो गया । उसी रात्रि में घनघोर वर्षा और तुफान आने के कारण सम्पूर्ण फसल नष्ट हो गया । खेत में जगह-जगह गड्ढा हो गया । जब दूसरे दिन सुबह जाकर खेत को देखा तो सम्पूर्ण फसल नष्ट हो गया था । ऐसा देखकर ब्राह्मण का शोक से हालत खराब हो गया। मेरे खेत तैयार करने से लेकर फसल पकने के समय तक नित्य श्रमण गौतम इधर आया करता था । मैंने फसल तैयार होने के बाद एक हिस्सा देने का वादा किया था । लेकिन मेरा सभी इरादा भंग हो गया । ब्राह्मण शोक सन्तप्त होकर खाना-पीना छोड़कर जाकर अपने घर में सो गया ।

उस दिन उसके घर पधारे बुद्ध के आने की खबर सुनकर ब्राह्मण बुद्ध को बैठने के लिए आसन तैयार किया । ब्राह्मण का चेहरा उतरा हुआ था । जैसे लग रहा था उसका तवियत बहुत खराब है । बुद्ध ने पूछा ब्राह्मण क्या हुआ है ? ब्राह्मण खेती तैयार करने से लेकर कल रात्रि तक की सारी कहानी बुद्ध को सुनाया । हमने वादा किया था कि धान से कुछ हिस्सा आप को देगे । लेकिन एक ब्राह्मण होने से भी इस वादा को हमने पूरा

नहीं कर पाया । फसल तो बरबाद हो गया लेकिन उससे भी बड़ा अधिक शोक हम वादा पुरा नहीं कर पाया । बुद्ध ने पूछा ब्राह्मण आप शोक करने का कारण जानते हो ? ब्राह्मण ने बोला मैं नहीं जानता भाग्यवत इसके बाद ब्राह्मण ने पूछा भाग्यवत क्या आप जानते है ? बुद्ध ने बोला हाँ मैं जानता हूँ । ब्राह्मण-शोक या भय कुछ भी हो ये सभी तृष्णा के कारण ही उत्पन्न होता है । (अंक 155)

इस देशना के अवसान में ब्राह्मण सोवान हो गया ।

रज्जूमाला

गया नगर के उरुबेला जनपद में एक ब्राह्मण के घर में एक दासी थी । उस दासी को ब्राह्मण की पुत्र बधू गरीब होने से देखना नहीं चाहती थी । दासी को देखकर पुत्रवधु बहुत गुस्सा करती थी । दासी कोई गलती नहीं करती थी तब भी पुत्रवधु बाल पकड़कर मारती-पीटती थी । पीड़ा सहन के बाहर होने के कारण एक दिन दासी ने एक नाई से अपना पूरा बाल कटवा दिया । यह देखने के बाद ब्राह्मण की पुत्रबधू और गुस्सा हो गयी। उसके बाद गले में एक रस्सी लगा कर दासी को बाँधकर मारती थी । दासी के गले में हर समय माला जैसे एक रस्सी देखने के कारण सभी लोग उसको रज्जूमाला के नाम से पुकाराने लगे । नौकरानी दासी को ब्राह्मण की बहू ने इतना परेशान किया कि बर्दास्त से बाहर होकर वह एक दिन पानी लेने के बहाने घर से गगरी लेकर निकली और गगरी लेकर एक जंगल में जाकर बहुत रोई अपने आप को कही इस प्रकार जीने से क्या लाभ है ? इससे अच्छा मर जाना ठीक है । उसके बाद एक रस्सी को लेकर उसका फन्दा बनाया उसे गले में डालने से पहले चारो ओर देखा कोई है कि नहीं है।

रज्जूमाला के घटना के बारे में बुद्ध को पहले से जानकारी था । इसलिए बुद्ध पहले से ही उस जंगल में जाकर एक पेड़ के नीचे बैठ गये। फंदा बनाकर मरने के लिए तैयार होते ही रज्जूमाला ने देखा एक सोने के रंग का चमकने वाला शरीर से युक्त संयासी एक पेड़ की छाया में बैठा हुआ है । बुद्ध का रूप सौन्दर्य इतना आकर्षक था कि रज्जूमाला बुद्ध की ओर देखती रह गयी । बुद्ध महाकरुणा से रज्जूमाला को आमंत्रित किया कहा पुत्री फांसी लगाकर मरना नहीं मेरे पास आ जाओ । यह बात सुनते ही रज्जूमाला के दिल के अन्दर जो भी दुख भरा था सभी समाप्त हो गया।

अमूर्तवाणी से पूरा शरीर और चित्त दोनों ही भर गया । श्रद्धा से धीरे-धीरे बुद्ध के पास जाकर उनके दोनों श्रीपाद को स्पर्श करके प्रमाण किया । बुद्ध रज्जूमाला को सुख-दुख, यश-अपयश, लाभ-अलाभ, निन्दा-प्रशंसा जैसे चीजों के बारे में विस्तार पूर्वक धर्मदेशना किया । धर्मदेशना सुनने के बाद रज्जूमाला सोवान हो गयी । जीवन में जीवित रहते हुए किसी भी जीव की हत्या नहीं करने का वादा किया और मैत्री चित्त से भरे हुए एक आर्य कन्या रज्जूमाला सोवान हो गयी ।

इसके बाद सोचा मेरा मालिक हमको मारे या जान से भी मार देगा तो भी कोई बात नहीं है । ब्राह्मण की बहु को अपनी दुहित (पुत्री) के हिसाब से मैत्री करूँगी और सभी प्राणी सुखी हो । गगरी में पानी लेकर ब्राह्मण के घर चली गयी । रज्जूमाला जब पानी लेकर लौटी उस समय उसकी शरीर मैत्री की शक्ति से प्रभावी लग रही थी । ब्राह्मण ने देखा रज्जूमाला में कुछ न कुछ परिवर्तन हुआ है । ब्राह्मण ने पूछा पुत्री पानी लेने गयी फिर इतना समय कहाँ बिताया ? आज तुम्हारा मुखड़ा चमक रहा है पहले ऐसा नहीं था । घर का काम भी बहुत प्रेम से कर रही हो इसका कारण क्या है ? रज्जूमाला ने कहा आज मैं इस संसार के सबसे बड़े आचार्य बुद्ध की शरण में गयी थी । मेरा जीवन बुद्ध-धम्म और संघ के लिए पूजा किया है । आप लोग हमें मार डालेगे फिर भी मैं मैत्री करुगी । इससे पहले यदि हमसे कोई गलती हुई हो तो हमे क्षमा कीजिए । ब्राह्मण बहुत प्रभावित हो गया और प्रभावित होकर कहा बुद्ध एक महान आचार्य है । इसलिए रज्जूमाला का जीवन परिवर्तन कर दिया । बुढ़ा ब्राह्मण ने कहा बेटी आज से तुम हमारे घर की दासी नौकरानी नहीं है बल्कि तुम हमारी पुत्री हो । बुढ़े ब्राह्मण की पुरी बात सुनने के बाद ब्राह्मण की बहु भी रज्जूमाला को अपनी बहन समझकर व्यवहार करना शुरू कर दिया ।

परिच्छेद - 46

पिताजी हमें माफ कीजिए

पुत्रों द्वारा घर से निकाला हुआ एक अनाथ ब्राह्मण को बुद्ध द्वारा शरण

श्रावस्ती में एक अमीर ब्राह्मण था, जिसके चार पुत्र थे। चारों पुत्रों को जवान होने पर सभी का विवाह कर दिया। अपनी सम्पत्ति से सभी को बराबर हिस्सा भी दिया। सम्पत्ति का बटवारा होने के बाद ब्राह्मण की पत्नी का देहान्त हो गया। ब्राह्मण के पुत्रों के मन में शंका पैदा हुआ कि माताजी की मृत्यु हो गयी है कहीं पिता जी कोई दूसरी महिला से शादी न कर ले। यदि ऐसा हो गया तो बाकि सम्पत्ति वह महिला अवश्य हड़प लेगी। ऐसा सोचकर चारों पुत्रों ने अपने बूढ़ा पिता जी को सभी प्रकार का सुख सुविधा दिये। एक दिन बुढ़ा ब्राह्मण जब दिन में सोकर उठा चारों पुत्र आकर उसका हाथ-पैर का मालिश करना शुरू कर दिये। चारों पुत्र मालिश करते समय आपस में बात-चीत कर रहे थे कि यह गृहस्थ जीवन बहुत झंझट और परेशानी वाला जीवन है। फिर भी हमलोग मिलकर पिताजी की सेवा करेगे। अन्त में चारों ने कहा पिता जी बचा हुआ सम्पत्ति भी हम लोगों को बाँट दो। चारों पुत्रों की बात सुनकर धोखे में आकर बुढ़ा ब्राह्मण बाकि सम्पत्ति भी चारों पुत्रों के नाम कर दिया। शर्तों के अनुसार बड़ा पुत्र पिता जी की कुछ दिन सेवा किया। एक दिन बुढ़ा ब्राह्मण नहा-धोकर घर के अन्दर प्रवेश कर रहा था कि जेष्ठ पुत्र की भार्या ने पूछा क्या अपने बड़े लड़के को ज्यादा दिया है तुमने तो सबको सम्पत्ति बराबर बाट दिया है क्या उन लोगों के घर जाने का रास्ता नहीं जानता है ? बुढ़ा ब्राह्मण गुस्सा होकर अपनी बड़ी बहु को कहा तुम चण्डाल है गाली-गलौज करके अपने दूसरे पुत्र के घर चला गया। दूसरे पुत्र के घर कई दिन रहने के पश्चात् उसकी भार्या ने कहा इतना दिन इधर क्या कर रहा है ? बाकि के पास जाने का मन नहीं कर रहा है क्या ? उस बहु को गाली देकर उस घर से भी निकल गया। इसी प्रकार चारों पुत्रों के घर थोड़े-थोड़े दिन रहने के बाद चारों पुत्रों ने बुढ़ा ब्राह्मण (पिताजी) को अपने घर के अन्दर

आने के लिए मना कर दिया । बुढ़ा ब्राह्मण अनाथ हो गया खाने-पीने के लिए कुछ नहीं होने के कारण भिख माँगकर खाना शुरू कर दिया । कुछ दिनों के बाद ब्राह्मण का शरीर बहुत कमजोर हो गया । एक दिन भिक्षा मांगकर थक जाने के कारण एक खाली मकान के बरामदे में लेट गया और अपने साथ बीते हुए घटना के विषय में सोचकर परेशान हो गया । सोचते-सोचते बुढ़ा ब्राह्मण के मन में आया कुछ भी होगा मैं बुद्ध के पास जाऊगाँ। बुद्ध अवश्य मेरे लिए कल्याण का मार्ग खोजेंगे । बुढ़ा ब्राह्मण भिख माँगने वाला कटोरा और सहारा देने वाली लाठी लेकर बुद्ध के पास गया और जाकर बुद्ध को अपने जीवन की कहानी बता दिया । बुद्ध ने कहा ब्राह्मण पाँच गाथा तुमको सिखा देगे । जहाँ बहुत सी भीड़ एकत्रित हो उस स्थान पर जाओ जाकर वहाँ पर जब तुम्हारे पुत्र लोग दिखाई दे इस गाथा को पढ़ो। बुद्ध ने बुढ़ा ब्राह्मण को जो गाथा सिखाया इसका अर्थ इस प्रकार है—

(1) अपने के लिए किसी का उत्पत्ति हो गया तो उसी को निमित्त कराकर सन्तुष्ट हुआ है, उसी की उन्नति के लिए प्रार्थना किया हो । मेरे पुत्रगण अपने भार्या के साथ मिलकर जैसे कुत्ते सूअर को भगाते वैसे ही हमें भी घर से भगा दिया ।

(2) हीन, दीन, असत्य पुरुष वह सभी हमारे सन्तान होकर, राक्षस का वेश लेकर हमें पिताजी कहते थे लेकिन वह सभी हमें बुढ़ापे में घर से निकाल दिया ।

(3) जरा-जीर्ण, काम योग्य नहीं होने से अयोग्य घोड़े को बिना खाना देकर जैसे भगाते है । इसी तरह दुष्ट लोगों का पिता कमजोर होने पर खाना भी न देकर माँगने के कारण भगा दिया जिससे मैं घर-घर जाकर भीख माँगकर खाना-खाता है ।

(4) यदि किसी कारण बस मेरे पुत्रगण हमारे अनुशासन में नहीं होने से उनसे ज्यादा हमको सहारा देने वाला डण्डा उत्तम है । डण्डा के सहारे मैं चल भी सकता है कुत्ता गया जैसे जानवरों को भी हम भगा सकता है।

(5) सहारा देने वाला लाठी अधियारे में जाते समय आगे जाता है कोई जलाशय में जाने व गिरने न देकर हमको सहारा देता है ।

बुद्ध के कथनानुसार बहुत भीड़ इक्कट्ठा होने के स्थान पर जाकर

बैठकर अपने पुत्र व बहु सज-धजकर आगे वाले जन समूह के बीच में सबसे अवसर लेकर जोर से उच्चारण करता था ।

उस समय भारत वर्ष में नियमों का एक कानून था जो अमीर माता-पिता की सम्पत्ति अपने नाम से करवाने के बाद माता-पिता को संरक्षण नहीं देने वाला व्यक्ति को मृत्यू दण्ड दिया जाता था । एक दिन एक जन समूह में चारों पुत्रों के आने से वयोवृद्ध ब्राह्मण बहुत जोर-जोर सबके सामने इस गाथा का उच्चारण किया गाथा को सुनकर चारों पुत्र बहुत घबरा गये। बयो वृद्ध ब्राह्मण के पास जाकर पैर पकड़कर कहे पुज्य पिता जी हम लोगों को क्षमा कीजिए । वयोवृद्ध ब्राह्मण कोमल हृदय से कहा हमारे पुत्रों को कोई भी परेशान नहीं करना चारों पुत्र हमें सभी सुख सम्पत्ति दे रहा है । एकत्रित जन समूह ने कहा आज के बाद यदि तुम लोग अपने पिता जी की सेवा नहीं किया तो मार डालेगे ।

चारों पुत्र बहुत घबरा गये एक कुर्सी लेकर उस पर अपने पिता जी को बैठाकर उठा कर घर ले गये । घर ले जाकर सेवा सत्कार करना शुरु कर दिया । अपने-अपने भार्या से भी कहा आज के बाद पिता जी को किसी चीज की कमी नहीं होना चाहिए । वयोवृद्ध ब्राह्मण का तवियत ठीक हुआ, काय शक्ति अच्छा हुआ, शरीर का रंग भी बदल गया । एक दिन सोचा महाकारुणिक तथागत बुद्ध के नहीं होने से हमारा काम कभी नहीं होता । इसलिए बुद्ध के पास जाकर कुछ त्याग करना जरुरी है । ऐसा सोचकर बुद्ध के पास दो वस्त्र लेकर गया और बुद्ध के पास जाकर बुद्ध के श्रीषाद को नमन करके बुद्ध के श्रीपाद के सामने दोनों वस्त्र रखकर कहा भाग्यवत मेरा गुरु दक्षिणा स्वीकार कीजिए । महाकारुणिक तथागत बुद्ध भी बुढ़ा ब्राह्मण का कल्याण के लिए दोनों वस्त्र स्वीकार किये । वस्त्र स्वीकार करने के बाद बृद्ध ब्राह्मण को धर्मदेशना किया धर्मदेशना सुनकर बुढ़ा ब्राह्मण त्रिशरण शरणागत हो गया। मधुर भोजन मिलता है । चार पुत्रों का भोजन हमारे लिए बहुत ज्यादा है इसलिए हम सोच रहे है कि चार भोजन में से दो भोजन हम आपको देगे । बुद्ध ने कहा बहुत अच्छी बात है । यदि आप कहे तो मैं उसी स्थान पर आ जाऊँगा । ब्राह्मण घर जाकर अपने पुत्रों से कहा पुत्र श्रमण भाग्यवत गौतम मेरा मित्र है जो तुम लोग चार खाना देता है उसमें से दो खाना हम भाग्यवत बुद्ध को देगा । यदि किसी दिन तुम

लोगों के घर बुद्ध आ गया तो सम्मान करके अभिवादन के साथ स्वागत करके भोजन कराओ ।

दूसरे दिन बुद्ध भिक्षाटन को जाते समय वयोवृद्ध ब्राह्मण का जेष्ठ पुत्र के घर के सामने से पधारे । महाकारूणिक तथागत बुद्ध को देखने के बाद जेष्ठ पुत्र ने अभिवादन करके गौरव पूर्वक बुद्ध का पात्र अपने हाथ में लिया और बुद्ध को घर के अन्दर ले जाकर सबसे किमती आसन पर बैठाया। बुद्ध को प्रनीत भोजन कराया । इसी प्रकार बुद्ध दूसरे-तीसरे एवम् चौथे दिन तक चारों पुत्रों के घर समय-समय पर भिक्षाटन के लिए बुद्ध गये । सभी ने महाकारूणिक तथागत बुद्ध को सादर अभिवादन करके अपने घर पर अच्छा भोजन करवाया । एक दिन वयोवृद्ध ब्राह्मण के जेष्ठ पुत्र के घर पर एक उत्सव का आयोजन होना था इसलिए जेष्ठ पुत्र ने अपने पिताजी से पूछा इस उत्सव का मंगल भोजन किसको देना है । वयोवृद्ध ब्राह्मण ने कहा महाकारूणिक तथागत बुद्ध हम लोगों का मित्र है इसलिए उसके सिवाय किसी को देने की जरूरत नहीं है । जेष्ठ पुत्र ने कहा बात ऐसा है तो आप जाकर बुद्ध को निमंत्रित कीजिए । बुद्ध और पाँच सौ भिक्षु संघ के साथ मेरे घर पर भोजन दान के लिए पधारने को । महाकारुणिक बुद्ध उसी के अनुसार पाँच सौ भिक्षु लोगों के साथ वयो वृद्ध ब्राह्मण के जेष्ठ पुत्र के घर भोजन दान के लिए पधारे । ब्राह्मण का जेष्ठ पुत्र एक सुन्दर से सजाये हुए एक शाला में बुद्ध प्रमुख भिक्षु महासंघ को बैठाया । बिना पानी मिला दुध का खीर और चीज तैयार करके बुद्ध प्रमुख महासंघ को प्रनीत भोजन दान दिया । जो बुद्ध भोजन कर रहे थे । उस समय ब्राह्मण के चारों पुत्र बुद्ध के पास आकर बैठ गये । चारों ने कहा महाकारूणिक बुद्ध हम लोग चारों मिलकर पिता जी का अच्छा सेवा करता हुँ । आप बताइए हमारे पितजी पहले कैसे थे ? अब पिताजी का हालत क्या है ? बुद्ध ने कहा बहुत अच्छी बात है माता-पिता की सेवा करना पूर्व समय से बुद्धिमान लोगों का एक बहुत बड़ा गुण धर्म है । उसी को उद्देश्य करके बुद्ध ने मातु पोषक नागराज जातक से धर्म देशना की । धर्मदेशना के पश्चात् चतुआर्य सत्य विस्तार पूर्वक देशना किया । देशना अवसाने वयोवृद्ध ब्राह्मण उसके चारों पुत्र व बहुये सभी नौ लोग सोवान हो गये ।

एक गरीब किसान को राजदण्ड से मुक्ति दिलाना

एक दिन रात्रि को कुछ चोरों का समूह श्रावस्ती में एक अमीर के

घर के अन्दर घुसने के लिए सुरंग बनाकर घर का पूरा सम्पत्ति लेकर जा रहे थे । कुछ दूर जाकर एक खेत में बटवारा शुरू कर दिया । जल्दीबाजी में चोर के हाथ से एक सोने का सिक्का उस खेत में गिर गया ।

दूसरे दिन बुद्ध महाकरुणा से दुनियाँ को देख रहे थे । देखा सोने के सिक्के के कारण गरीब किसान को बहुत बड़ा नुकसान होगा सोचकर बुद्ध उस खेत में जाने के लिए निकल पड़े ।

गरीब किसान भी सुबह अपने खेत पर गया और बुद्ध भी भिक्षु आनन्द के साथ उसी खेत में पधारे । बुद्ध और आनन्द को देखकर गरीब किसान बुद्ध और आनन्द दोनों को प्रमाण करके हल जोतना शुरू कर दिया । बुद्ध भिक्षु आनन्द के साथ जिस स्थान पर सोने का सिक्का था उसस्थान पर पहुँचे। आनन्द को सोने का सिक्का दिखाया और कहा आनन्द तुम एक सर्प को देखा भिक्षु आनन्द बुद्ध की बात को सुनकर कहा हाँ देखा । बुद्ध और आनन्द की बात सुनकर गरीब किसान भी उसी स्थान पर चला गया लेकिन गरीब किसान वहाँ पर कोई सर्प नहीं देखा बल्कि एक सोने का सिक्का देखा । कोई व्यक्ति सर्प के पास जाना नहीं चाहता है ऐसे सोचकर बुद्ध सोने के सिक्के को सर्प कहा होगा । गृहस्वामी लोग अपना सामान-खोजते एक स्थान पर पहुँचे पता चला एक गरीब किसान के खेत में चोरी किया हुआ सामान का बटवारा हुआ है । वहाँ पहुँचने पर सोने का सिक्का देखने के बाद लोगों ने सोचा डकैती यही व्यक्ति डाला होगा । गरीब किसान को पकड़कर चोरी का इल्जाम लगाकर राजा प्रसेन्नजीत के पास ले गये। कोशल राजा प्रसेन्न जीत गरीब किसान को मृत्यूदण्ड का आदेश दिया । राजपुरुष लोग गरीब किसान को मारते-पिटते ले गये । उस समय गरीब किसान को याद आया बुद्ध ने आनन्द से बोले आनन्द तुम एक सर्प देखा कि नहीं देखा । आनन्द ने उत्तर दिया की देख है । गरीब किसान के मुख से यह शब्द निकलने के बाद राजपुरुषों ने पूछा ! तुम क्या बोल रहे हो ? गरीब किसान ने कहा हमको राजा के पास ले चलों तब हम बतायेंगे । राजपुरुष लोग गरीब किसान को कोशल राजा प्रसेन्नजीत के पास पुनः ले गये । गरीब किसान बीते हुए कहानी को जो बुद्ध और आनन्द के बीच बात-चीत हुआ था उस पूरी बात को राजा को बताया । राजा प्रसेन्नजीत ने गरीब किसान से पूछा जो तुम बोल रहे हो इसका आशय क्या है ? गरीब किसान ने बुद्ध और आनन्द के बीच जो बात-चीत उसके सामने हुआ था

उसको पुनः दोहराया । महाराजा कोशल ने सोचा बुद्ध जैसे श्रेष्ठ गुरु को साक्षी मानकर यह किसान जो बोल रहा है इसका मतलब इस गरीब किसान का कोई गलती नहीं है । जो करना है मैं जानता हूँ । कहकर किसान को अपने पास रोक लिया । शाम को राजा कोशल उस गरीब किसान को लेकर बुद्ध के पास गये । बुद्ध को प्रणाम करके पूछा भाग्यवत क्या इस किसान के खेत में आप और भिक्षु आनन्द दोनों गये थे ? फिर राजा ने पूछा आप वहाँ पर आप ने कुछ कहाँ था ? बुद्ध ने बताया खेत में एक सोने का सिक्का गिरा हुआ देखकर भिक्षु आनन्द से हमने कहा यह सर्प है ।

राजा प्रसेन्नजीत कोशल ने कहा भाग्यवत इस गरीब किसान के लिए आप जैसे श्रेष्ठ धर्म गुरु साक्ष्य नहीं देने से इसको मृत्यूदण्ड अवश्य मिलता लेकिन आप की बात से इसका जीवन बच गया ।

राजा की बात सुनकर बुद्ध ने कहा सोने का सिक्का इस गरीब किसान द्वारा हाथ नहीं लगाने से भी गृहस्वामी लोग इसको पकड़ लिया था ।

यह कहकर बुद्ध ने एक छोटा धर्मदेशना किया—'पश्चाताप करने वाला कोई भी काम नहीं करने चाहिए । यह देशना सुनकर गरीब किसान सोवान हो गया । (अंक-156)

द्रोन ब्राह्मण को बुद्ध द्वारा धर्मदेशना करना

एक दिन महाकारुणिक तथागत बुद्ध उकट्ठा नगर और तव्य नगर दोनों के बीच से जा रहे थे । एक वृक्ष के नीचे थोड़ा आराम करने के लिए समाधि मुद्रा में बैठ गया । द्रोन नामक एक ब्राह्मण एक अश्चर्यजनक पैर का निशान देखकर सोचा यह कोई साधारण व्यक्ति का नहीं बल्कि किसी बहुत बड़े महापुरुष का होगा । विचार विमर्श करके खोजना शुरू कर दिया । देखा बुद्ध एक वृक्ष के नीचे समाधि मुद्रा में बैठा हुआ है । अपने जीवन में कभी भी ऐसा शोभा सम्पन्न सोने रंग का शरीर से युक्त कभी किसी को नहीं देखा । द्रोन ब्राह्मण ने सोचा उसके पास जाकर उसका सम्पूर्ण जानकारी हाशिल करूँगा । बुद्ध के पास जाकर द्रोन ब्राह्मण ने सबसे पहले पूछा—

द्रोन—क्या आप कोई देवता है ?

बुद्ध—नहीं ।

द्रोन—आप कोई गन्धर्व है ?

बुद्ध—नहीं ।

द्रोन—आप कोई यक्ष है ?

बुद्ध—नहीं ।

द्रोन—आप कोई मनुष्य है ?

बुद्ध—यह भी नहीं है ।

जो बुद्ध ने उत्तर दिया वह उत्तर द्रोन ब्राह्मण के समझ में नहीं आया। द्रोन ब्राह्मण ने कहा जो-जो हमने पूछा आप सभी सवालों के लिए नहीं का जवाब दिया बताईये आप कौन है ?

बुद्ध ने कहा जो आप ने कहा देव, गन्धर्व, यक्ष और मनुष्य इन सभी के अन्दर लोभ, द्वेष, मोह, और क्लेश भरा हुआ है, जबकि हमारे अन्दर ऐसा कोई क्लेश नहीं है । इसलिए आप ने जो पूछा हम उनमें से कोई भी नहीं हूँ । जो मैंने कहा उन लोगों के अन्दर क्लेश भरा हुआ है वह क्लेश मैंने पूर्ण रूप से नष्ट कर दिया है । इसलिए मैं बुद्ध हूँ । जैसे जल में कमल होता है वह जल के उपर आकर जल को स्पर्श न करके अपना सुन्दरता दर्शाता है । उसी तरह इंसानों के बीच पैदा होकर सभी क्लेश नष्ट करके उन लोगों के उच्च स्थान पर उन लोगों के बन्धन से मुक्त होकर जी रहा हूँ । इसलिए हमको बुद्ध कहते है बुद्ध की बात सुनकर द्रोन ब्राह्मण बहुत प्रसन्न हो गया ।

परिच्छेद - 47

जिस घर में किसी की मृत्यु न हुई हो, उस घर से एक मुट्ठी सरसों का बीज ले आना

कृषा गौतमी

श्रावस्ती नगर में गरीब परिवार में गौतमी नाम की एक स्त्री थी । उसका शरीर कृष होने के कारण वह स्त्री कृषा गौतमी के नाम से समाज में जानी जाती थी । गरीब होने के कारण उसके स्वामी के परिवार के लागे कृषा गौतमी को हरवक्त परेशान करते थे । कृषा गौतमी एक पुत्र को जन्म दिया उसी दिन से उसके स्वामी के परिवार के लोग कृषा गौतमी को प्यार करना शुरू कर दिया और उसको सत्कार सम्मान अधिक देना शुरू कर दिया। छोटा बालक खेलते-खेतले खड़ा होने लायक हो गया उसी समय उसकी मृत्यू हो गयी । एक ही पुत्र का खेलते-कूदते समय मरने से कृषा गौतमी का दिमागी सन्तुलन बिगड़ गया । अधिक गरीब होने के कारण कोई मदद करने वाला भी नहीं था । कृषा अपने बच्चे के मृत शरीर उठाकर जो-जो लोग सामने आते थे उन सभी से दवा माँगती थी । एक मृत व्यक्ति का कौन-सा दवा होगा जिसे लोग सुनकर हँसना शुरू कर दिया । किसी से कोई मदद नहीं मिलने के कारण कृषा गौतमी के दिमांग का सन्तुलन और बिगड़ गया । एक सतपुरुष व्यक्ति कृषा गौतमी का दु:ख दर्द देखा और देखने के बाद कहा अम्मा आपके बच्चे को दवा देने के लिए एक वैद्य है वह बुद्ध है उसके अलावा और कोई नहीं है । नजदीक विहार में महाकारुणिक तथागत बुद्ध रहते हैं वहाँ जाने पर आपको दवा मिलेगा । ऐसा कहकर कृषा गौतमी को बुद्ध के पास भेज दिया । कृषा गौतमी मृत बालक को लेकर जेतवनाराम में चली गयी । उस समय बुद्ध धर्मासना रुढ़ विराजमान थे । कृषा गौतमी बुद्ध के पास जाकर अपने बच्चे के लिए दवा माँगा । बुद्ध ने अपने दिव्य चक्षु से देखा कि कृषा गौतमी अरहत होने के योग्य है । बुद्ध ने कहा बहन तुम मेरे पास आयी अच्छा हुआ । तुम ऐसा करो श्रावस्ती नगर में जाओ जाकर किसी के घर से सरसो का बीज माँग लाओ लेकिन उस घर का कोई कभी भी मरा नहीं हो । कृषा गौतमी बुद्ध की

आज्ञा के अनुसार नगर में घर-घर जाकर सरसों का बीज माँगा । माँगने से सरसो का बीज तो लोगों ने दिया । सरसो बीज लेते समय कृषा गौतमी ने पूछा इस घर किसी की मृत्यू तो नही हुआ है । लेकिन सरसों देने वालों ने कहा इसके बारे में मत पूछो कितने लोग कब मर गये ? जिसका कोई गिनती ही नहीं है । कृषा गौतमी ने कहा तब तो इस सरसो का कोई मतलब नहीं है और जो बुद्ध चाहता है वह सरसो यह नहीं है । इसी तरह एक घर छोड़कर दूसरा घर, तीसरा, चौथा घर जाकर पूछा और पूरे नगर में घूम लिया । कोई घर ऐसा नहीं था हर घर से कोई न कोई मरा है । सभी घरों से मरने की खबर मिला । अन्त में कृषा गौतमी के मन में आया महाकारुणिक तथागत बुद्ध हमको स्वयं समझने के लिए ही ऐसा बात बताया। ऐसा सोचकर शोक दूर करके शमशान घाट में अपने छोटे बालक के मृत शरीर को छोड़ दिया । कहा—पुत्र मैंने सोचा मृत्यू केवल तुम्हारे लिए है । अब समझ में आया यह सबके लिए बराबर है । ऐसा सोचकर मृत शरीर को शमशानघाट छोड़कर बुद्ध के पास चली गयी । महाकारुणिक तथागत बुद्ध ने पूछा बहन गौतमी तुम सरसों का बीज ले आयी क्या ? कृषा गौतमी ने कहा भाग्यवत जो सरसों का बीज लेने गयी थी अब वह कार्य समाप्त हो गया है । आप मेरा मदद कीजिए । बुद्ध ने कहा मृत्यु सर्वत्र धर्म है कहकर बुद्ध ने एक छोटा धर्मदेशना किया—कहे कभी गाँव के लोग रात्रि के समय निश्चिन्त होकर सो जाता है और उसी समय घनघोर वर्षा होने से गाँव वालों एवम् गाय-भैस को बहा ले जाता है । उसी प्रकार पंच काम सम्पत्ति में लिप्त व्यक्ति को मृत्यु के स्वभाव में मृत्यु का सामना करना स्वभाविक है । धर्मदेशना सुनने के बाद कृषा गौतमी सोवान हो गयी और सोवान होने के पश्चात् बुद्ध से अनुमति लेकर भिक्षुणी शासन में प्रव्रज्या लिया। कुछ समय बाद उपसम्पदा लेकर विदर्शना भावना करने के कारण अरहत पद प्राप्त किया ।

मिथ्यादृष्टिक कुछ बच्चों के समूह को बच्चों के हिसाब से धर्म देशना—एक दिन एक तिर्थक अवलम्बी उपासक लोगों के बच्चों और बौद्ध धर्मावलम्बी बच्चे एक साथ एक स्थान पर खेल रहे थे । तिर्थक अवलम्बी बच्चों के माता पिता अपने बच्चों को खेलने जाने से पहले कहा श्रमण गौतम के आने पर उसे देखकर नमस्ते-वन्दगी नहीं करना । बौद्ध धर्मावलम्बी बच्चों के साथ कोई बिहार में भी नही जाना । इस प्रकार शपथ दिलाकर बौद्ध

बच्चों के साथ खेलने के लिए तिर्थक अवलम्बी माता-पिता लोग अपने बच्चों को खेलने के लिए भेजा । सभी बच्चे जेतवनाराम विहार के द्वार के आस-पास खेल रहे थे । जब सभी बच्चे खेलकर थक गये और उन्हें प्यास भी लग गई । तिर्थक अवलम्बी बच्चों ने एक बौद्ध धर्मावलम्बी बच्चे से कहा तुम विहार के अन्दर जाकर पानी पीकर हम लोगों के लिए भी पानी ले आओ। बौद्ध बच्चा पानी पिया और बुद्ध के पास जाकर कहा हमारे कुछ मित्र लोग बाहर है उन लोगों के लिए पीने का पानी ले जाना है बुद्ध ने कहा ऐसा करो बाकि मित्र लोगों को भी पानी पीने के लिए यहाँ ले आओ। बौद्ध धर्मावलम्बी बालक ऐसा ही किया । बुद्ध एक छोटा-सा सरल धर्मदेशना करके मिथ्यादृण्टिक बच्चों को भी प्रसन्न करके, त्रिशरण एवम् पंचशील को ग्रहण करवाया । बच्चे जाकर घर पर अपने माता-पिता को इसके बारे में बताया । बच्चों के माता-पिता ने कहा हमारे बच्चे गलत रास्ते पर गया कहकर दुखी होकर रोना शुरू कर दिया । आस-पास के लोग कुछ बात करके मिथ्या दृष्टिक परिवारों का शोक दूर करके बाद में मिथ्यादृष्टिक परिवार वालों ने कहा सभी बच्चों को ले जाकर बुद्ध को ही देकर जेतवनाराम में त्रिशरण पंचशील ग्रहण बच्चों को बुद्ध को सुपुर्द कर दिया । जो बच्चों को लेकर मिथ्यादृष्टिक माता-पिता आये थे बुद्ध उन सभी को धर्म देशना किया। सभी मिथ्यादृष्टिक लोग त्रिरत्न शरण शरणागत हो गये । सभी बौद्ध उपासक वन गये । मिथ्यादृष्टिक परिषद त्रिशरण ग्रहण करने के बाद कई बार जेतवनाराम में जाकर धर्मदेशना सुनने से कई दिनों बाद लोग सोवान फल प्राप्त किया है ।

एक धामिन (सर्प) को तंग करने वाले बच्चों को धर्मदेशना

महाकरुणिक तथागत बुद्ध एक दिन श्रावस्ती नगर में भिक्षाटन के लिए जा रहे थे देखा गाँव के एक बच्चों का समूह डण्डा-लाठी लेकर एक धामिन को मार रहे थे । बुद्ध ने पूछा बच्चों तुम लोग ये क्या कर रहे हो ? बच्चों ने कहा हम लोग डण्डा से इस सर्प को मार रहे हैं । बुद्ध ने पूछा इसे क्यों मार रहे हो ? बच्चों ने कहा यह डँसता है इसलिए इसे मार रहा हूँ । बुद्ध ने कहा बच्चों अपने सुख के लिए किसी दूसरे को सताते हो, परेशान कर रहे हो । इसलिए तुम लोगों को कभी भी उससे सुख नहीं मिलेगा । अपने सुख सम्पत्ति के लिए दूसरे लोगों का हिंसा करना, वध करना बिल्कुल गलत है । (अंक 157)

वाशिष्टि

वैशाली नगर के एक कुल में एक सुन्दर कन्या थी जिसका नाम वाशिष्टि थी तरुण वयस्क होने के बाद उसकी शादी कर दी गयी । वाशिष्टि शादी के बाद एक पुत्र को जन्म दिया । एक दिन खेलते-कूदते समय उस बालक का मृत्यू हो गया । लाडला प्यारा-सा पुत्र का देहान्त होने के शोक से वाशिष्टि पागल हो गयी । वाशिष्टि का पागल दूर करने के लिए अनेक प्रकार की बहुत-सी दवाईयाँ दिया गया फिर भी वाशिष्टि ठीक नहीं हुई वाशिष्टि एक दिन चूप-चाप घर से निकलकर इधर-उधर घूमते-घामते मिथूल नगर में पहुँच गयी । उस समय महाकारुणिक तथागत बुद्ध भी उसी नगर में ही थे । बुद्ध को बीति संचार करते समय वाशिष्टि ने देखा । बुद्ध का रुप-काय देखते ही प्रभावित हो गयी और उसी समय उसका पागलपन भी दूर हो गयी । वाशिष्टि प्रकृति स्वभाव में आ गयी । गृहस्थ जीवन का झण्झट देखने के बाद उस जिन्दगी का लगाव छोड़कर बुद्ध से अनुमति लेकर भिक्षुणी शासन में प्रव्रज्जित हो गयी । उत्साहित होकर विदर्शना करने के कारण थोड़ी दिन के बाद वाशिष्टि अरहत पद प्राप्त किया ।

पट्टाचारा

श्रावस्ती नगर में एक सेठ की पुत्री अपने घर के नौकर के साथ चोरी छिपे मित्रता कर लिया । सेठ पुत्री एक दिन अपने नौकर मित्र के साथ घर से बहुत-सा धन एकत्रित करके भाग गये । दोनों जाकर एक गाँव में बस गये। समय आने पर सेठ पुत्री ने गर्भधारण किया । कुछ समय बितने पर सेठ पुत्री अपने माता-पिताजी के पास जाने के लिए अपने पति से अनुमति माँगा। सेठ पुत्री के पति ने कल-जायेंगे परसों जायेंगे ऐसे कहते हुए टालता रहता था । एक दिन सेठ पुत्री ने सोचा मेरा स्वामी हमें हमारे माता-पिता जी के पास कभी नहीं ले जायेंगा । एक बार उसका पति घर पर नहीं था उसी समय मौका पाकर माता-पिता जी के पास जाने के लिए घर से निकल गयी। लेकिन जाते समय आस-पास के लोगों को बता कर ही गयी ।

सेठ पुत्री का पति जब शाम को वापस घर आया तो देखा अपनी भार्या नहीं है । उसने मन में सोचा मेरे कारण एक कन्या अनाथ हो गयी और दुखी मन से रास्ते पर खोजकर उससे मुलाकात किया । सेठ पुत्री जाते समय रास्ते में ही एक बच्चे को जन्म दिया । उस समय अपने माता-पिता के

घर न जाकर वापस अपने छोटा बच्चा को लेकर पति के घर चली आयी। दूसरी गर्भधारण करने पर पूर्व जैसे माता-पिता के घर जाने के लिए निकल पड़ी। उसका पति भी अपने स्त्री के पीछे-पीछे उसको देखने के लिए उसके साथ श्रावस्ती तक चला गया। दूसरा बच्चा भी रास्ते में पैदा हुआ। बिना मौसम का बहुत तेज भयानक वर्षा में दोनों फँस गये। स्त्री ने अपने पति से कहा वर्षा से बचने के लिए कुछ उपाय कीजिए। अपनी भार्या की बात सुनकर पुरुष भी एक बगीचा में जाकर एक पेड़ का डाली तोड़ रहा था कि उस पेड़ के नीचे घास में एक विषैला सर्प ने उसे काट लिया और वह पुरुष उसी स्थान पर अपना प्राण त्याग दिया। घनघोर बारिस में स्त्री अपने नवजात बच्चे को लेकर अपने स्वामी के आने का इंतजार सुबह तक किया। सुबह होते ही छोटे बच्चे को गोद में लेकर बड़ा बच्चा का हाथ पकड़कर आगे बढ़ी। बगीचा में पहुचने पर देखा एक पेड़ के नीचे मेरा पति मरा पड़ा है। उस मृत शरीर को देखकर सेठ पुत्री शोकाकुल होकर जोर-जोर से रोना शुरू कर दिया। अपने माता-पिता के घर जाने के लिए रोते-रोते आगे बढ़ी और एक नदी के पास पहुँच गयी। नदी में वर्षा का पानी तेजी से बह रहा था। दोनों बच्चों को एक साथ नदी पार करने में असमर्थ होने के कारण दुखी सेठ पुत्री छोटे बच्चे को नदी के किनारे कुछ घास और पत्ता बिछाकर उस पर लेटा दिया। बड़े बच्चे को लेकर नदी के उस पार छोड़कर जब वापस नदी के बीच में आयी तो एक गिद्ध मांस का टुकड़ा समझ कर छोटे बच्चे को उठाकर ले जाने लगा। जब सेठ पुत्री ने देखा और देखने के बाद बीच नदी से ही चिल्लना शुरू किया। बड़ा बच्चा सोचा माँ हमको बुला रही है ऐसा सोचकर बालक नदी में कूद पड़ा और नदी की तीव्र धारा में बड़ा बच्चा बह गया। सेठ पुत्री ने रोना-चिल्लाना शुरू कर दिया और रोते-रोते कहने लगी मेरे पति को सांप ने काट लिया। छोटे पुत्र को गिद्ध उठाकर ले गया और बड़े बच्चे को नदी बहा ले गयी। इन तीनों कारणों से सेठ पुत्री विक्षिप्त मन से आगे बढ़ी। अकेले आने वाली औरत को देखकर लोगों ने पूछा आप कहाँ से आ रही हैं ? सेठ पुत्री ने बताया मैं श्रावस्ती से आ रही हूँ। इस नगर के अमूक-अमूक लोगों के बारे में कोई जानकारी है कि नहीं। लोगों ने कहा इसके बारे में न पूछकर किसी दूसरे के बारे में पूछ लीजिए। सेठ पुत्री ने कहा बाकि किसी से हमें कोई मतलब नहीं है। जिसके बारे में हम चाह रहे हैं उसी के बारे में हम पूछ रहे हैं। लोगों ने सेठ पुत्री से कहा कल रात्रि की वारिस तो

आप ने देखी होगी । इस पर सेठ पुत्री ने कहा हा देखा है उसी बारिस में मैं बहुत भीग गयी हूँ और अपनी कहानी आप लोगों को बाद में बताऊँगी। पहले उस सेठ के परिवार के बारे में हमको बताइए। लोगों ने कहा कल रात्रि के तेज बारिस में सेठ का पूरा महल गिरकर और उसी में वह गया। सेठ का पूरा परिवार भी उसी में समाप्त हो गया । तीनों का अन्तिम संस्कार का चिता वहाँ जल रहा है जिसका धुँआ दिखाई दे रहा है । यह बात सुनते ही सेठ पुत्री बेहोश होकर जमीन पर गिर गयी और शरीर पर से कपड़ा भी आधा से ज्यादा हट गया । आह ! मेरे दोनों बच्चे मर गये, मेरा पति भी मर गया । मेरे माता-पिता जी एवम् भाई भी मर गये और एक ही चिता में तीनों जल रहे है । ऐसा कह कर पागल हो गयी और चिल्ला कर दौड़ना शुरू कर दिया। पागल होने के कारण शरीर पर से सभी कपड़ा हट गया और नग्न शरीर से दौड़ने के कारण समाज के लोग उसे पगली कहकर पत्थर मार कर भगाते थे । बुद्ध ने अपने दिव्य चक्षु से देखा सेठ पुत्री अरहत होने के योग्य है। बुद्ध अपने बुद्धशक्ति से सेठ पुत्री को अपने तरफ आने का प्रबन्ध किया। सेठ पुत्री को जेतवनाराम में जाते हुए कुछ लोगों ने देखा तो सोचा पगली है । इसलिए उसे विहार में जाने की इजाजत नहीं दिया । बुद्ध के अनुरोध पर सेठ पुत्री बुद्ध के समीप पहुँच गयी और बुद्ध ने उसे अपने पास आने को कहा । बुद्ध ने अपनी बुद्धत्व शक्ति से सेठ पुत्री को प्रकृति स्वभाव में आने का अधिष्ठान किया । फलस्वरूप बुद्ध के बुद्धत्व शक्ति के कारण सेठ पुत्री अपनी प्रकृति स्वभाव में आ गयी । प्रकृति चित्त में आने के बाद सेठ पुत्री को समझ में आया कि उसके शरीर पर कोई वस्त्र नहीं है तब लज्जा होकर जमीन पर बैठ गयी । सेठ पुत्री के बैठने पर बुद्ध ने अपना चीवर उसे देकर कहा उसे ओढ लो । अपने शरीर को उसी से ढकने के कारण बुद्ध ने उसका नाम पट्टाचारा रख दिया । पट्टाचारा बुद्ध के पास बैठकर कहा भाग्यवत हमको शरण दीजिए । हमारे एक पुत्र को गिद्ध उठा ले गया । दूसरा पुत्र नदी में बह गया । हमारे स्वामी को सर्प ने डस लिया और वह मर गये। हमारे माता-पिता जी एवम् भाई तीनों एक ही चिता में जल रहे है । बुद्ध ने कहा बहन कम्पित मत हो, दुखी मत हो जहाँ तुमको मदद मिलना है उस जगह पर तुम आ गयी हो । अभी तुम पुत्र-स्वामी, माता-पिता के शोक से जो आँसू बहा रही हो संसार में पूर्व जन्मों में भी ऐसे हुआ है । यदि इस आँसू के बारे में हिसाब किया तो

वह आँसू चार महासमुद्र के जल से ज्यादा होगा। (अंक 158)

ऐसा कहकर बुद्ध ने धर्मदेशना किया । बुद्ध की बात सुनने के बाद पट्टाचारा का शोक कम हो गया बुद्ध ने कहा सबको मरना है तो चाहे पुत्र-पति और जाति किसी को बचा नहीं पायेगा । इसलिए बुद्धिमान व्यक्ति शील-सामधि के माध्यम से निर्वाण प्राप्त करता है । (अंक 159)

धर्मदेशना के बाद पट्टाचारा सोवान हो गयी । बुद्ध से भिक्षुणी शासन में प्रव्रज्जा होने की अनुमति माँगने से बुद्ध पट्टाचारा को भिक्षुणी शासन में प्रवेश दिया । पट्टाचारा ध्यान भावना करते-करते एक दिन बुद्ध का धर्म देशना सुनकर अरहत पद प्राप्त किया ।

पूर्णादासी

अनाथपिण्डिक सेठ के महल में एक दासी ने एक पुत्री को जन्म दिया। महल में 99 (निन्यानबे) दासी थी और एक पुत्री पैदा होने के कारण सौ पूरा हो गया । सौ पूरा होने के कारण उसका नाम पूर्णा रखा गया । धर्म के प्रति श्रद्धा रखने वाली पूर्णा तरुण वयस्क होने पर सिंहनाद सूत्र की देशना सुनकर सोवान हो गयी । उस समय श्रावस्ती के अचीरवती नदी में एक ब्राह्मण सुबह-शाम आत्मा की शुद्धि के लिए डुबकी लगाता था । ब्राह्मण के डुबकी लगाने की यह क्रिया सोवानगत पूर्णादासी ने देखा । पूर्णा दासी ने ब्राह्मण को समझाया नदी में डुबकी लगाने से जो सोच रहा है वह कभी नहीं मिलेगा । धर्म के अनुसार देशना कर पूर्णादासी उस ब्राह्मण को धर्म के रास्ते पर ले आयी । उद्धक सुद्धी ब्राह्मण प्रसन्न होकर त्रिशरण-पंचशील शरण समाधान हो गया । कर्म स्थान पूरा करने के बाद अरहत पद प्राप्त किया । इतने प्रसिद्ध ब्राह्मण को धर्म मार्ग पर ले आने की बात सुनकर सेठ अनाथपिणिक सेठ बहुत प्रसन्न हो गया । सेठ प्रसन्न होकर पूर्णा दासी को दासी भाव से मुक्त कर दिया । दासी भाव से मुक्त होने के बाद पुर्णा भिक्षुणी शासन में प्रव्रज्या ले लिया । पूर्णा प्रव्रज्जित होकर ध्यान करने के कारण अरहत पद प्राप्त किया है ।

कुष्ट रोगी की सेवा करना

श्रावस्ती नगर का एक कुल पुत्र बुद्ध की धर्मदेशना सुनकर बहुत प्रसन्न हो गया । कुल पुत्र प्रसन्न होने के बाद प्रव्रज्या और उपसम्पदा लेकर तिस्स

स्थवीर के नाम से प्रसिद्ध हो गया । कुछ समय बीत जाने के बाद तिस्स स्थवीर को कुष्ट रोग हो गया । प्रारम्भ में सरसों के बीज की तरह हुआ और अन्त में बेल जैसे बड़ा कुष्ट रोग हो गया । जिसके कारण सम्पूर्ण शरीर खून-मवाद से भर गया । पूरा चीवर मवाद और खून से भीग गया था । आश्रम में रहने वाले सभी लोग तिस्सभिक्षु का देखभाल करना छोड़ दिया । कुष्ट रोग से पिड़ित तिस्स भिक्षु अनाथ होकर अकेला हो गया । एक दिन सुबह महाकारुणिक बुद्ध अपने दिव्य चक्षु से दुनिया को देख रहे थे कि तिस्स स्थवीर का अरहत होने का हेतु सम्पत देखा । बुद्ध ने सोचा हमारे अलवा इस भिक्षु का मदद करने वाला कोई नहीं मिलेगा । ऐसा सोचकर रोगी तिस्स भिक्षु कहा है वहाँ पर पहुँच गये । जाकर बुद्ध स्वयं अपने हाथों से एक वर्तन साफ करके उसमें पानी भरकर गरम होने तक वहीं बैठे रहें ।

पानी गरम होने के बाद तीन और भिक्षुओं के साथ स्वयं महाकारूणिक तथागत बुद्ध रोगी भिक्षु को चारपाई पर उठाकर जहाँ पानी गरम हो रहा था उस स्थान पर ले गये । उसी समय यह दृश्य बाकि भिक्षु लोगों ने देखा और दौड़कर आकर कहा भाग्यवत कृपया आप हटिए हमलोग उठाकर ले जायेंगे । कहकर जहाँ पानी गरम हो रहा था वहाँ रोगी तिस्स भिक्षु को ले गये । बुद्ध एक छोटा नाव जैसे वर्तन मंगवाकर उसमें गरम पानी भर कर अपने हाथ से तिस्स भिक्षु का चीवर को साफ किये और चीवर को धोकर सुखने के लिए धूप में रख दिया । उसके बाद बुद्ध रोगी भिक्षु को गरम पानी से अच्छी तरह नहलाकर उसके पूरे शरीर को साफ किया । थोड़ी देर तक साफ-सफाई और नहाने का क्रम चलने के कारण धोया हुआ गन्दा चीवर सुख गया । बुद्ध अपने हाथों से सुखा हुआ साफ-सुथरा चीवर रोगी तिस्स को पहनाया । नहलाते समय जो अन्तरवास तिस्स भिक्षु पहना था बुद्ध स्वयं उसे भी अपने हाथों से साफ करके धूप में डाल दिया । गन्दा चीवर, पूरा गन्दा शरीर गरम पानी से नहा-धोकर साफ होने के बाद शरीर और मन दोनों हल्का हो गया । थोड़ा आराम मिलने के बाद बुद्ध को समझ में आया रोगी तिस्स भिक्षू का रोग पूरा ठीक नहीं होने से भी चित्त में शान्ति आ गया । बुद्ध स्वयं तिस्स भिक्षु के सिर के पास बैठकर शरीर के अनित्य-असार के बारे में धर्मदेशना किया । (अंक 160)

रोगी तिस्स भिक्षु बुद्ध का अनित्य असार धर्मदेशना सुनकर अरहत पद प्राप्त किया । कुछ समय बितने के बाद तिस्स भिक्षु का परिनिब्बाण हो गया । धर्मदेशना सुनने वाले उस समय कई लोग सोवान हो गये । रोगी अरहत तिस्स का शरीर को बुद्ध ने स्वयं अपने देख-रेख में अन्तिम संस्कार करवाया । उस अरहत भिक्षु के बचे हुए हड्डी जैसे अवशेष को लेकर एक स्तूप बनवाया ।

रोगी भिक्षु की सेवा

श्रावस्ती के एक छोटे विहार में पेट के बड़े रोग से एक भिक्षु पीड़ित था । वह इतना पीड़ित था कि मलमूत्र के लिए भी बाहर नहीं जा सकता था । वह अपने चारपाई पर ही मलमूत्र करके परेशान हो गया । एक दिन महाकारुणिक तथागत बुद्ध भिक्षु आनन्द के साथ भिक्षुओं को उपदेश देते-देते उसी रोगी भिक्षु के कुटि तक पहुँच गये । उस रोगी भिक्षु का असाध्य गन्दा शरीर देखने के बाद बुद्ध ने पूछा आप को तकलीफ क्या है ? रोगी भिक्षु ने कहा कई दिनों से हमें बहुत बड़ा पेट का दर्द है । बुद्ध ने पूछा आप की सेवा करने के लिए कोई आता है या नहीं आता है । भिक्षु ने कहा नहीं आता है । बुद्ध ने पूछा ऐसा क्यों ? भिक्षु ने कहा जब हमारा तबियत ठीक-ठाक था, तब मैं किसी का सत्कार करने नहीं गया था इसलिए मेरे सत्कार के लिए कोई नहीं आता है ।

बात सुनने के बाद महाकारुणिक तथागत बुद्ध भिक्षु आनन्द से कहें इस रोगी भिक्षु को नहलवाने के लिए पानी का प्रबन्ध कीजिए । बुद्ध ने जैसा कहा उसी तरह भिक्षु आनन्द भी पानी का प्रबन्ध किया । उस पानी से बुद्ध स्वयं रोगी भिक्षु को अपने हाथों से पानी उसके उपर डालते गये और भिक्षु आनन्द अपने हाथ से रोगी भिक्षु के शरीर की सफाई किया । उसके बाद भिक्षु आनन्द के साथ मिलकर कुछ भिक्षुगण उस भिक्षु के चारपाई को उठाकर एक साफ-सुथरे स्थान पर ले गये ।

उसके बाद महाकारुणिक तथागत बुद्ध सभी भिक्षुओं को अपने पास बुलाया और बुलाकर पूछा एक भिक्षु बहुत बीमार होकर परेशान हो रहा था। आप लोग उस भिक्षु के उपर ध्यान क्यों नहीं दिये ? भिक्षुओं ने कहा रोगी भिक्षु भी यदि हमलोगों में से किसी के बीमार होने पर कभी भी आकर हाल-

चाल तक नहीं पूछा । बुद्ध ने सभी भिक्षुओं को कहा आप सभी लोग अभी बुद्ध शासन में भिक्षु बन गये । इसलिए आप लोगों के पास कोई माता-पिता नहीं है । यदि आप लोग एक दूसरों की सेवा नहीं किये तो आप लोगों का कौन सेवा करने आयेगा ? उसी समय बुद्ध ने एक छोटा धर्मदेशना किया—कहा कोई व्यक्ति किसी रोगी का सेवा करेगा तो वह बुद्ध की सेवा समझ लो । (अंक 161)

परिच्छेद - 48

प्रेतों द्वारा गंगा नदी (वाराणसी में) के किनारे अपने द्वारा किये हुए पापकर्म को बुद्ध और जनता के सामने बताना

कोलिय महामात्य और बुद्ध का प्रेतों के साथ समागम

वाराणसी नगर के समीप दक्षिण दिशा में गंगा नदी के उस पार वासभाग्राम नामक एक ग्राम था । उसी गाँव के बगल में एक छोटा-सा गाँव था उस गाँव का नाम चुदन्थी कांगम था । उस गाँव में एक व्यक्ति था । वह व्यक्ति हिरन मारकर उसका मांस बेचकर अपना जीविका चलाता था। वह व्यक्ति जंगल में जाकर हिरन को मारकर आग में भूनकर खाता था और जो बचता था उसे बाँधकर अपने घर ले जाता था । गाँव के बच्चे जानते थे कि वह भूना हुआ मांस ले आता है । इसलिए छोटे बच्चे भूना हुआ मांस के लालच में उसके पास आते थे । वह छोटे बच्चों को भी थोड़ा-थोड़ा मांस देता था ।

एक दिन कोई शिकार नहीं मिलने के कारण दुखी होकर ओगस का फूल का माला पहन कर उसका एक गुलदस्ता बनाकर हाथ में लेकर आया। लेकिन बच्चों को यह बात मालुम नहीं था कि मांस माँगने से सभी बच्चों को फूल का छोटा-छोटा गुलदस्ता देते गया । वह व्यक्ति कई दिनों के बाद मर गया और प्रेत योनि में जन्म लिया प्रेत होने से कुरूप शरीर और नग्न था । लोगों को भय जनक दर्शन कराता था । आहार-पानी दोनों नहीं मिलने के कारण वह प्रेत बहुत पीड़ित था फिर भी अपने सिर पर एक फूल का पगड़ी बाँधता था ।

प्रेत ने एक दिन सोचा हमारे ज्ञाति समूह से कुछ खाना-पीना मिल जायेगा । ऐसा सोचकर गंगा के ऊपरी हिस्से तक चला गया । उस समय राजाविम्बिसार का कोलिय नामक एक अमात्य एक गाँव का विवाद समाप्त करवाकर सेना को जमीन के रास्ते भेजकर अपने जलमार्ग से गंगा नदी के रास्ते पश्चिम दिशा को जा रहा था । उसी समय कोलिय अमात्य उस प्रेत

को देख लिया और देखने के बाद उसका हाल-चाल पूछा । प्रेत ने कहा भूख मिटाने के लिए कुछ खोजते हुए चुन्दत्तीक गाँव में अपने याति लोगों के पास जा रहा है । कोलिय अमात्य को समझ में आया यह एक प्रेत है। कोलिय अमात्य के साथ उस नाव में एक पुरोहित था उस पुरोहित को कोलिय अमात्य ने मकुनी और चावल से भोजन कराया था । सोने रंग के दो वस्त्र को पूजा किया । उससे से जो पुण्य हुआ उसी पुण्य को प्रेत के नाम से अनुमोदन करवाया । उसी पुण्य के फलस्वरूप प्रेत पेटभर भोजन एवम् शरीर ढकने का वस्त्र भी पाया ।

कोलिय अमात्य नाँव से आते-आते दूसरे दिन सुबह होते-होते सूर्योदय तक वाराणसी नगर तक आ गया । बुद्ध अपने दिव्य चक्षु से देखकर अपने इर्दी शक्ति से इन लोगों के अनुग्रह के लिए आसमान से गंगा नदी में उपस्थित हो गये । उस दृश्य को देखकर कोलिय अमात्य बहुत प्रसन्न हो गया । नांव से उतरकर नदी के किनारे बुद्ध के लिए पत्तों से एक छोटा-सा रहने का कुटि बनवाया । उस कुटियाँ को सुगन्धित फूलों से सजवाया। बुद्ध को उस पत्ता वाले कुटि में पधारने के बाद अमात्य कोलिय जो रास्ते में आते समय एक प्रेत को देखा था, उस प्रेत के बारे में बुद्ध को बताया। कोलिय अमात्य ने बुद्ध से कहा उस प्रेत को पुण्य अनुमोदना के लिए मैं दान भी दे रहा हूँ । उस उत्कृष्ट कार्य का महत्व समझाने के लिए बुद्ध ने अधिष्ठान किया । कुछ भिक्षु अभी इसी स्थान पर एकत्रित होकर बुद्ध के अनुभव से इर्दीशक्ति से कई अरहत उस स्थान पर आ गये ।

यह खबर जब जनता को सूनने को मिला तो जनता भी एकत्रित हो गयी । प्रसन्न होकर कोलिय अमात्य बुद्ध प्रमुख भिक्षु संघ को महादान दिया।

भोजन दान के बाद वाराणसी नगर की बहुत-सी जनता एकत्रित हो गयी ।

उसी समय बुद्ध ने एकत्रित जनता को बहुत-सा प्रेत देखने के लिए अधिष्ठान किया । बुद्ध ने सभी प्रेतों से कहा आप लोग कौन-कौन सा अकुशल कर्म किया जिससे प्रेत योनि में पैदा हुआ । उसको प्रेतों से विस्तार पूर्वक उपस्थित जनता को बताने के लिए कहा ।

अपने पाप के बारे में बोलने वाले कुछ प्रेत ने कहा मैं जीवन भर ईर्ष्या, अभिमान, गुस्सा, तृष्णा, लोभ द्वेष जैसे गन्दे मन से जीवन बिताया।

किसी प्रेत ने कहा इतना धन सम्पत्ति होने के बावजूद किसी गरीब को कभी थोड़ा भी खाने-पीने को नहीं दिया । किसी प्रेत ने कहा कभी किसी को कुछ न देकर देने वालों का निग्रह करते रहे । इसी तरह एक-एक प्रेत ने अपने द्वारा किये हुए पाप सभी जनता के सामने प्रकट किया ।

यह सब सुनने के बाद कोलिय अमात्य आश्चर्य चकित होकर बुद्ध से कुछ धर्म देशना करने के लिए अनुरोध किया । बुद्ध समय के अनुसार चरितानुकूल धर्म देशना किया । देशना के अवसान में सभी प्राणी धर्मवबोध किया ।

सुलसा नगर बधु

राजगृह नगर में एक बहुत धनी सेठ था उसका एक पुत्र था । सेठ पुत्र को बहुत प्यार करता था इसलिए सोचा यदि उसको पढ़ने-लिखने में लगा दिया तो बहुत मेहनत करना पड़ेगा । सेठ नहीं चाहता था कि उसका पुत्र मेहनत करे । इसलिए सेठ ने अपने पुत्र को किसी भी शिल्प का ज्ञान नहीं दिया । समय आने पर उत्तम परिवार की एक कन्या के साथ उसकी शादी कर दिया ।

अपने माता-पिता की मृत्यु होने के बाद सेठ पुत्र शराब पीने वाले, नाच-गाना में लिप्त गन्दे लोगों के साथ समय विताता था । गुणधर्म का कोई अच्छा काम नहीं किया । शराब नाच-गाना दोनों में इतना लिप्त हो गया कि जो माता-पिता ने धन कमा कर रखा था वह सब समाप्त हो गया। अन्त में जमीन बेचना शुरू कर दिया, कभी-कभी किसी से उधार भी ले लेता था । उधार लेने के कारण बहुत-सा जमीन उधार देने वालों का हो गया ।

किसी समय दिव्य राजकुमार और दिव्य अप्सरा जैसे जीवन व्यतीत करने वाले सेठ पुत्र और उसकी पत्नी का जीने का कोई तरीका नहीं था। जिसके कारण माता-पिता की मृत्यु के बाद सड़क पर भीख माँगना शुरू कर दिया ।

एक दिन भीख माँगते समय एक चोरों के समूह से मुलाकात हो गया। चोरों ने कहा तुम पूरी तरह मजबूत हो, उम्र भी ठीक है तुम हम लोगों के साथ मिलकर चोरी से अच्छा जिन्दगी बिता सकता है । सेठ पुत्र ने कहा

मैंने कभी भी चोरी नहीं किया है तो मैं कैसे चोरी कर सकता हूँ ? चोरों के समूह ने कहा हम लोग तुम्हें सिखा देगे । इसकी चिन्ता मत करो । जैसा हम लोग कहेंगे वैसा ही करो, चोरों की बात सुनकर सेठ पुत्र चोरों के समूह के साथ हो लिया ।

एक दिन चोर समूह चोरी करने के लिए एक घर में घूसना चाहते थे । सेठ पुत्र के हाथ में एक बड़ा डण्डा दे दिया और देकर कहे कोई अपरिचित व्यक्ति आ गया तो इसी डण्डे से उसकी खूब पिटाई करना । चोरों का समूह पूरे घर का समान चोरी करके चुपके से चले गये । मूर्ख सेठ पुत्र केवल इतना देख रहा था कि कोई व्यक्ति उसके सामने आ जाय। घर का सामान चोरी होने से घर के मालिक लोग तलवार और डण्डा लेकर इधर-उधर दौड़ रहे थे । सभी का सामना सेठ पुत्र से हुआ सभी लोगों ने मिल कर सेठ पुत्र की खूब पिटाई किया । पिटाई करने के बाद ले जाकर राजा के पास पेश किया । राजा ने सेठ पुत्र को कठोर दण्ड देने के लिए दण्डाधिकारी के पास भेज दिया । सेठ पुत्र का दोनो पैर बाँधकर बध करने के लिए बध भूमि को लेकर चल दिये । रास्ते में जाते समय उन्होंने देखा नगर के एक महल से सुलसा नामक नगर बधु देख रही है । सुलसा नगर बधु सेठ पुत्र को देखने के बाद सोची यह व्यक्ति हमारे पास कितनी बार सोया है और मेरे लिए कितना धन खर्च किया है । लेकिन इसे क्या हो गया। सुलसा नगर बधु दुखी होकर चार बाटी (लिट्टी) एक पानी का बर्तन एक नौकर के हाथ में भेज कर कहीं कि इस लिट्टी खाने तक उसको परेशान नहीं करना है । यह खबर बध पुरुष को भेजा ।

उस दिन अरहत महामौदगल्यायन अपने दिव्य चक्षु से दुनियाँ को देख रहे थे । उस बलहिन सेठ पुत्र को देखा इतना वध होने के बाद भी मरने के बाद नरक गति में जाने का संकेत देखा । सोचा मैं जाकर उसके सुगति प्राप्ति के लिए कुछ उससे दान लेगे । ऐसा सोचकर उसी जगह पर अरहत महामौदगल्यायन पहुँच गये ।

अरहत महामौदगल्यायन को आते देखकर सेठ पुत्र खुश हो गया । सोचा हमको तो मरना ही है इस लिट्टी (बाटी) से हमको क्या मिलेगा । यह लिट्टी मरने के पहले किसी महापुरुष को पूजा करेंगे । अरहत महामौदगल्यायन को देखने के बाद सेठ पुत्र उस लिट्टी को अरहत महामौदगल्यायन को पूजा किया । उस व्यक्ति को प्रसन्न करने के लिए अरहत

महामौदगल्यायन उसे देखने लायक एक स्थान पर बैठकर उस लिट्टी को भोजन के रूप में लिया ।

यह सब घटना होने के बाद वधपुरुष (जल्लाद) सेठ पुत्र को बध करने के स्थान पर ले जाकर उसका सिर कलम करके मार डाला । मरणोपरान्त सेठ पुत्र एक पर्वत के ऊपर बहुत बड़ा बरगद पेड़ के देवता के रुप में पैदा हुआ ।

एक दिन सुलसा नगर बधु अपने उद्यान के लिए जा रही थी । वृक्ष देवता उसे देखा और देखने के बाद वृक्ष देवता का दिल पुनः सुलसा के ऊपर लग गया । सुलसा को अपने वस में लेकर वृक्ष देवता अपने साथ ले गया । सुलसा नगर बधु को अपने बीता हुआ पूरी कहानी सुनाया ।

अपनी पुत्री को नहीं देखने से सुलसा की माता रोते-रोते घूम रही थी। जिससे-जिससे मुलाकात हुआ सभी ने कहा जाकर अरहत महामौदगल्यायन से मुलाकात कर पूछो ! वह महा इर्दी मान है वही सुलसा के बारे में कुछ बता सकते है । सभी लोगों की बात को सुनकर सुलसा की माता अरहत महामौदगल्यायन के पास चली गयी और जाकर अपने पुत्री के बारे में पूछ-ताछ किया ।

अरहत महामौदगल्यायन ने कहा आज से सातवें दिन राजगृह वेणूवनाराम में जो धर्म देशना होगा उस भीड़ के आखिरी में सुलसा देखने को मिलेगी ।

सुलसा नगर बधू एक सप्ताह तक वृक्ष देवता के साथ समय बिताया। एक सप्ताह बीतने के बाद सुलसा नगर वधु ने वृक्ष देवता से कहा हमें घर पर नहीं होने से हमारे माता-पिता जी शोक करते होंगे । इसलिए घर तक पहुँचाने के लिए वृक्ष देवता से प्रार्थना किया । वृक्ष देवता सुलसा की बात को मानकर सुलसा को राजगृह वेणूवनाराम में ले जाकर जो लोग धर्म देशना सुन रहे थे उनके आखिरी स्थान पर छोड़कर वृक्ष देवता अन्तर्ध्यान हो गया । सुलसा नगर बधु को देखने के बाद सभी लोग उसके बीते हुए कहानी को पूछना शुरू कर दिया । सुलसा नगर वधु ने भी अपना बीता हुआ कहानी सभी को सुनाया । सुलसा नगर वधु ने कहा सेठ का पुत्र अपने जीवन काल में कोई भी पुण्य का काम नहीं किया था लेकिन अरहत महामौदगल्यायन को आखिरी समय में कुछ दान देने के कारण वृक्ष देवता

के रूप में पैदा होने का कहानी बतायी । सुलसा नगर बधु की कहानी का अर्थ निकालते हुए लोगों ने कहा अरहत भिक्षु कहीं भी होगा वह पृथक् जन के लिए एक अनुत्तर पुण्य श्रोत है । सुलसा की बात सुनकर लोग अति प्रसन्न हो गये । उस दिन बुद्ध जो धर्मदेशना कर रहे थे । उसके बाद एक जनसमूह बुद्ध के सामने जाकर इस कहानी को प्रस्तुत किया । उसी कहानी को मातृका करके बुद्ध एक छोटा-सा धर्म देशना किया ।

"अरहत भिक्षु सही ढ़ग से तैयार किया हुआ खेत जैसे होता है । देने वाले व्यक्ति किसान जैसे होते है । जो दान के लिए वस्तु इस्तेमाल करता है वह बीज होता है । इन तीनों अंग सम्पूर्ण दान देने से महासुख विपाक मिलता है ।

उक्त देशना के अनुसार पुण्य बीज होता है पुण्य बीज बोना पुण्य खेत तीनों कारण प्रेत एवम् मनुष्य दोनों के कल्याण के लिए होता है । ये दान पुण्य कर्म का फल प्रेत लोग परिभोग करता है । इस पुण्य के कारण उन्हीं लोगों का कल्याण वंश की वृद्धि होता है । यदि कोई व्यक्ति पुण्य करके प्रेत लोगों का पुण्य अनुमोदना करते है तो उसके कारण वह व्यक्ति सकृदागामी होता है । इस धर्म देशना को सुनकर अनेक लोगों ने धर्म का लाभ प्राप्त किया" ।

साकेत के ब्राह्मण का समागम

एक दिन बुद्ध भिक्षु महासंघ के साथ साकेत नगर में भिक्षाटन कर रहे थे । उसी नगर का एक धनी ब्राह्मण जरूरी कार्य से उधर से गुजरते समय उसे बुद्ध का दर्शन हो गया । बुढ़ा ब्राह्मण बुद्ध को देखने के बाद कहा पुत्र हम तुमको बहुत दिनों से नहीं देखा । ऐसा कहते हुए रोते-रोते आगे बढ़ा । बुद्ध ने भिक्षुओं से कहा इस बुढ़ा ब्राह्मण को जो बोल रहा है बोलने दो चुप मत कराना ।

बुढ़ा ब्राह्मण बुद्ध के पास आकर पुत्र स्नेह दिखाकर बुद्ध के श्री शरीर को पकड़कर कहना शुरू कर दिया । हम लोग पुत्र कितने दिनों से अलग होकर समय बिताया । बुद्ध ने भिक्षुओं से कहा यदि इस ब्राह्मण को ऐसा करने नहीं दिया होता तो वह इसी स्थान पर मर जाता । इसलिए उसको ऐसा करने के लिए मैंने कुछ नहीं बोला । बाद में बुढ़ा धनी ब्राह्मण कहा भाग्यवत आप और आप के भिक्षुमहा संघ को दान दे सकता हूँ । इसलिए

मेरा निमन्त्रण स्वीकार कीजिए । बुढ़ा ब्राह्मण पूर्ण सन्तुष्ट होकर बुद्ध का पात्रा अपने हाथ में लेकर हमारा पुत्र आया, हमारा पुत्र आया कहकर आसन तैयार करो कहते हुए अपने घर पर सन्देशा भेजा । बुढ़ा ब्राह्मण की पत्नी खबर मिलते ही बहुत प्रसन्न होकर आसन तैयार करना शुरू कर दिया । बुद्ध भिक्षु महासंघ के साथ आते देखते ही वयोवृद्ध ब्राह्मणी भी इतना प्रसन्न होकर जोर-जोर से कहना शुरु कर दिया कि हमारा पुत्र आ रहा है हमारा पुत्र आ रहा है । बुद्ध के पास दौड़कर बुद्ध का दोनों श्रीपाद को स्पर्श करके अभिवादन करके अपने घर तक ले गयी । बुद्ध प्रमुख भिक्षुमहासंघ को प्रनीत भोजन कराया । बुद्ध भोजनोपरान्त धर्मदेशना किया । धर्म देशना सुनकर वयोवृद्ध ब्राह्मण पति-पत्नी दोनों सोवान हो गये । बुढ़ा ब्राह्मण बुद्ध से कहा जब तक साकेत नगर में आप अपने भिक्षु संघ के साथ रहेंगे । तब तक आप सभी हमारे घर से ही भोजन स्वीकार कीजिए । बुद्ध ने कहा बुद्ध पुरुष सदैव एक जगह से भोजन स्वीकार नहीं करते कहकर बूढ़ा ब्राह्मण का निमंत्रण अस्वीकार कर दिया । तब बृद्ध ब्राह्मण ने कहा कम से कम भिक्षाटन के समय इधर आकर हमारे यहाँ से भिक्षा लेकर हम लोगों को धर्मदेशना कर दीजिए । बुद्ध उस निमन्त्रण को स्वीकार किया । बुद्ध को इतना प्यार करने के कारण लोग उन दोनों बुढ़ा ब्राह्मण पति-पत्नी को बुद्ध के माता-पिता के नाम से व्यवहार करना शुरु कर दिया । वह कुल साकेत नगर में बुद्ध कुल के नाम से प्रसिद्ध हो गया ।

भिक्षु आनन्द ने कहा मैं बुद्ध के माता-पिता दोनों को जानता हूँ । ये दोनों बुढ़ा ब्राह्मण और ब्राह्मणी किस कारण आप का माता-पिता-बेटा जैसा व्यवहार कर रहा है, भिक्षु आनन्द यह बात बुद्ध से पूछा—बुद्ध ने कहा आनन्द पूर्व के जन्मों में ये दोनों मेरे माता-पिता जी के रूप में पैदा हुआ था । उसी पुर्व जन्म का स्नेह फिर से उत्पन्न होने के कारण ये दोनों मेरे साथ ऐसा व्यवहार कर रहा है ।

बुद्ध साकेत नगर से निकल कर श्रावस्ती को पधारे । वयोवृद्ध ब्राह्मण और उसकी पत्नी अरहत भिक्षुओं से धर्मदेशना सुनकर सकृदागामी पद प्राप्त करने के बाद कुछ समय बितने पर परिनिर्वाण प्राप्त कर गये । प्रदेशवासी दोनों के मृत शरीर को दो लकड़ी के बक्से में रखकर उसे सजाकर दाह संस्कार करने के स्थान पर ले गये । बुद्ध महा करुणा से दुनिया को देख रहे थे । देखा यदि हम ये दोनों ब्राह्मण पति-पत्नी के दाह संस्कार में जाने

से बहुत लोगों का कल्याण होगा । ऐसा सोचकर बुद्ध उस स्थान पर चले गये । एकत्रित जन समूह बुद्ध को देखकर कहना शुरु कर दिया कि अपने माता-पिता के अन्तिम संस्कार के लिए बुद्ध भी पधारे हैं । एकत्रित जन समूह बुद्ध को नमन किया । दोनों के मृत शरीर को एक जूलुस के रूप में शमशान तक ले गये । दोनों सकृदागामी होने के कारण जनता ने पूछा इनका दाह संस्कार कैसा करना है ? बुद्ध ने कहा ये दोनों सकृदागामी है इसलिए इन दोनों के मृत शरीर को अरहत जैसे लोगों की तरह दाहसंस्कार करना है । निर्देश देकर एकत्रित जनसमूह को जरा-सूत्र के माध्यम से धर्मदेशना किया । (जरा-सूत्र सूत्तपिटक के सूत्त निपात में मिलता है ।)

चत्र (चत्त) मानवक समागम

सतेव्य नगर में एक धनी ब्राह्मण को एक पुत्र था । पढ़ने-लिखने का उम्र आने पर ब्राह्मण ने अपने पुत्र को उकट्ठा नगर के सुप्रसिद्ध आचार्य पोक्खर साथी पण्डित के पास ले गये । ज्ञानवन्त होने के कारण मानवक बहुत जल्द वेदान्त वेद का ज्ञान और शिल्प ज्ञान में निपुण हो गया । अपना अध्ययन पूरा करने के बाद चत्र मानवक अपने आचार्य के पास जाकर कहा हमारी शिक्षा पूर्ण हो गई और मैं आपको गुरु दक्षिणा देना चाहता हूँ । आप क्या लेना चाहेंगे ? आचार्य ने कहा गुरु दक्षिणा शिष्य लोगों की हैशियत के अनुसार ही होता है । तुम्हारे हैशियत के अनुसार दस सोने का सिक्का हुआ । चत्र मानवक आचार्य से अनुमति लेकर गुरु दक्षिणा लेने के लिए वापस अपने पिताजी के पास आया । अपने माता-पिता जी से बात करके दस सोने का सिक्का लेकर एक पोटली बाँधकर आचार्य के पास जाने के लिए निकल पड़ा । सोने का सिक्का ले आने की खबर डकैतों को पहले से पता चल गया था । डकैत लोग चत्र मानवक के आने तक रास्ते पर एक छोटा बगीचा में छिपे रहे । बुद्ध महाकरुणा से दुनियाँ को देख रहे थे देखा चत्र मानवक महा अकुशल कर्म के कारण आज अपना जीवन गवाँयेगा। बुद्ध सोचे उसके पहले हम जाकर चत्र मानवक को त्रिशरण पंचशील ग्रहण करवाकर उसको दिव्य लोक का रास्ता दिखायेंगे । ऐसा सोचकर बुद्ध जाकर एक वृक्ष मूल के नीचे समाधि मुद्रा में बैठ गये । पैदल चलते-चलते चत्र मानवक भी देखा वृक्ष के नीचे एक बहुत सौम्य स्वभाव वाला एक श्रमण बैठा हुआ है । बुद्ध के पास जाने से बुद्ध ने पूछा तुम

त्रिशरण पंचशील जानते हो मानवक ने कहा भाग्यवत यह क्या है ? बुद्ध ने मानवक को त्रिशरण पंचशील दोनों के बारे में विस्तार पूर्वक बताकर त्रिशरण पंचशील ग्रहण करने का उपाय भी बताया। नवयुवक होने के कारण मानवक को त्रिशरण पंचशील में रूची लेने के लिए तीन-तीन गाथा के रुप में उसको कण्ठस्थ करने के लिए बतलाया।

गाथा

'यो वद तं पव रोमनु जेसू, शाक्यमुनि भगवा कत किच्चो।
पारगतो बल विरीय समंगी, तं सुमतं सरनत्थ मु पेमि ।।
राग-विराग मने ज म शोकं, धम्ममसं कत मप्पटिकूलं।
मधुरमि मं पबु नं सुचि भत्तं, धम्ममि मं सरनत्थमु पेमि ।।
यत्थ च दिन्नमहाफल माहु, चतुसू सुचि सु पुरिष युगेसू।
अट्ट च पुग्गल धम्म दसोस संघ मि मं सरनत्थमु पेमि ।।

इस तीनों गाथा को कण्स्थ करने के लिए बोलकर त्रिशरण पंचशील ग्रहण करने एवम् पाालन करने के अनुसार देशना किया। पंचशील के बारे में सोचकर त्रिशरण का गुण याद करते हुए बुद्ध से अनुमति लेकर जाने के लिए रास्ते पर चल दिया। बुद्ध ने सोचा यदि चत्र मानवक किसी कारण से मर गया तो दिव्य लोक में उत्पन्न होने के लिए त्रिशरण और पंचशील उसका मदद करेगा। इसके पश्चात् बुद्ध जेतवनाराम में चले गये।

त्रिशरण पंचशील के बारे में सोचते-सोचते चत्र मानवक आगे बढ़ा। जंगल में पहले से छिपे हुए चोर ने एक विष युक्त बाण से चत्र मानवक को मारा। विषयुक्त बाण शरीर में लगने के कारण चत्र मानवक का उसी स्थान पर मृत्यु हो गयी। चोर लोग सोने का सिक्का से बँधा पोटली लेकर वहाँ से भाग गये। जिस प्रकार सोता हुआ व्यक्ति जैसे जग जाता है, उसी प्रकार तावतिन्स दिव्य लोक में उत्पत्ति हो गया।

सेतव्य नगर को जाने वाले लोग चत्र मानवक का मृत शरीर देखकर चत्र के माता-पिता जी और सेतव्य उकट्ठा नगर के पोक्खर साथी ब्राह्मण को भी मृत चत्र मानवक के बारे में बता दिया। दोनों नगर से आकर लोग रोते-चिल्लाते एक लकड़ी का चीता बनाकर दाह संस्कार करना शुरू कर दिया यह घटना देखने के लिए बुद्ध इर्दी शक्ति से आकर वृक्ष मूल के नीचे

समाधि मुद्रा में बैठ गये । चत्र दिव्य पुत्र को बुद्ध के कारण इतना अच्छा जीवन मिलने का हेतु के बारे में बुद्ध के पास आकर बुद्ध को नमन करके बैठ गया । दिव्य पुत्र को देखने के बाद जन समूह विस्मृत हो गया और बुद्ध के चारों तरफ एकत्रित हो गये । बुद्ध ने दिव्य पुत्र से कहा अपनी उत्पत्ति इतना अच्छी जगह पर होने का कारण स्वयं अपने मुख से बोल कर बताओ । दिव्य पुत्र अपना बिता हुआ कहानी जनता के सामने रखा। उसके बाद बुद्ध धर्मदेशना किये । उस धर्मदेशना के बाद चत्र का माता-पिता जी के साथ और भी अनेक लोग सोवान हो गये । दिव्य पुत्र तथागत बुद्ध और भिक्षुमहासंघ को नमन करके तावतिन्स दिव्य लोक में चला गया। बुद्ध अपने भिक्षु महासंघ के साथ पैदल चलने के लिए निकल पड़े । चत्र मानवक के माता-पिता और बाकि जनता भी बुद्ध के पीछे-पीछे जाकर आधे रास्ते के बाद सभी लोग अपने-अपने गन्तव्य को चले गये ।

बक ब्रह्म का समागम

महाकारुणिक तथागत बुद्ध उकट्ठा नगर के समीप शुभग वन में एक सखुआ वृक्ष के नीचे ध्यान मुद्रा में बैठे थे । उस समय बक नाम से जाना जाने वाला ब्रह्म के मन में एक शंका उत्पन्न हुआ । ब्रह्म लोक नित्य है, ध्रुव साश्वत है, नष्ट नहीं होने वाला है, कोई भी चीज जरा-जीर्ण नहीं होता है, सत्व मरता नहीं है, सत्व की उत्पत्ति नहीं होता है । इस संसार से मुक्त होकर जाने वाला कोई दूसरी जगह नहीं है । इस तरह बहुत बड़ा मिथ्या दृष्टि का विचार बक ब्रह्म के मन में उत्पन्न हुआ । उसकी चिन्ता को बुद्ध अपने दिव्य ज्ञान से देखकर तुरन्त इर्दी शक्ति से ब्रह्म लोक में जाकर विद्यमान हुए । बक ब्रह्म बुद्ध को देखकर कहा भाग्यवत पधारिए। आपका इस दिव्यलोक में स्वागत है, आप इस दिव्यलोक में बहुत दिनों के बाद पधारे है । बक ब्रह्म ने बुद्ध से कहा भाग्यवत ब्रह्मलोक नित्य है, साश्वत है, नष्ट नहीं होने वाला है, जरा-जीर्ण नहीं होने वाला है और न ही समाप्त होने वाला है, उत्पत्ति नहीं होने वाला है । इस जगह से निकल कर दूसरी जगह जाने का प्रश्न नहीं उठता है । इतना सब कुछ सुनने के बाद बुद्ध ने कहा ब्रह्म तुम्हारा चिन्ता करना गलत है । तुम अविद्या में अन्धा होकर यह सब बात कर रहा है । उस समय मार दिव्य पुत्र एक दूसरे ब्रह्म के शरीर में प्रविष्ट हो कर कहा इस व्यक्ति को परिभव मत करो श्रमण मैं ब्रह्म हूँ, महाब्रह्म हूँ । सभी को स्वीकार करके रहने वाला है । यह व्यक्ति

सभी बातों को भली-भाँति जानता है । यह वसवर्ती है, अनिविभूत है एवं कुछ एकान्त से जानता है, सभी का पिता है, उत्पत्ति करने वाला है, उत्पत्ति किया है, श्रमण तुमसे पहले ऐसे लोगों का अपमान किया हुआ है । उसको ऐसे लोगों को नहीं चाहने वाले श्रमण ब्राह्मण थे । ये सभी लोग उसके कारण पृथ्वी, आपो, तेजो, वायु, भूत, देव, प्रजापति, ब्रह्म इन सभी लोगों का आवाह्न करके मरने के बाद नरक में चले गये । ऐसा नहीं करने वाले ब्रह्म लोक में उत्पन्न हो गये । इसलिए मैं आपको कुछ कहेगे वही करो। श्रमण यह ब्रह्म क्या कहता है ? वही करो । इस ब्रह्म के बात से आगे मत जाना। यदि इस ब्रह्म की बातों को नहीं माना तो श्रमण तुम्हें समझ में आयेगा कि एक डण्डा लेकर तुम्हें कोई भगा रहा है । श्रमण तुम प्रपात में गिर जायेगा। तुमको हाथ में पकड़ने के लिए और पैर रखने के लिए कोई जगह नहीं मिलेगा । श्रमण यदि तुम ब्रह्म की बात को नही माना तो तुम्हारा बहुत बड़ा विनाश होगा । इसलिए यह ब्रह्म क्या कह रहा है वही करो । उसकी बातों से आगे मत जाओ । इस ब्रह्म की पूजा करके दिप्तीमान हो जाओ ।

बुद्ध भली-भाँति जान गये कि यह मार दिव्य पुत्र है । महाकारुणिक तथागत बुद्ध ने कहा पापी मार मैं तुमको पहचानता हूँ । तुमने क्या सोचा कि हमने तुमको पहचाना नहीं । इस बह्म लोक और अन्य ब्रह्म लोक भी हमारे अधिन है । तुम्हारे जाल में कोई फँसेगा नहीं । इस गलतफहमी में मत रहो । पापी मार मैं तुम्हारे बातों में नहीं आने वाले हैं तुम्हारे वस में भी नहीं है । इस तरह बुद्ध के कहने के बाद बक ब्रह्म ने कहा—

''भाग्यवत मैं नित्य जो होता है उसे ही नित्य कहता हूँ । कौन-सी चीज साश्वत है उसे साश्वत कहता हूँ । जो नहीं मरता है वह चीज को नहीं मरने का स्वभाव देखता हूँ । जरा-जीर्ण होने वाला भी नहीं समझता हूँ इसे छोड़कर कोई सुख समझ में नहीं आता है । इसलिए मैं भी सोचता हूँ कि आप भी इससे ज्यादा आगे कुछ नहीं जानते है । इससे आगे बुद्ध खोजने जाने से आप की आपो, तेजो, वायु, भूत देव, प्रजापित, ब्रह्म ये सभी दृढ़ता से पकड़कर उसी में लग जाने से जिसके कारण हमारे पास आकर रहेगा। मैं भी जो आप चाहेंगे वहीं करूँगा । बाकि लोगों को छोड़कर आपको हमारे मत के अन्दर लूगा ।

बक ब्रह्म की पूरी बात सुनने के बाद बुद्ध ने सोचा इस ब्रह्म का अभिमान हम छोड़वायेगे । ऐसा सोचकर बुद्ध ने कहा ब्रह्म पृथ्वी, आपों, जेतो, वायु, भूत, देव, प्रजापति और ब्रह्म ये सभी दृढ़ता से पकड़कर रहने को तैयार हो तो मैं भी एक तुम्हारे बहुत नजदीक वाला व्यक्ति बन जायेगा। तुम्हारे विचार के अनुसार रहने वाला व्यक्ति रहूँगा । जो तुम चाहेगा वह चीज हम भी करेगे । मैं अच्छी तरह जानता हूँ बाकि लोगों को हटाकर हमको ही तुम अपने साथ रखेगा । मैं यह सब जानता हूँ, ब्रह्म तुम मत सोचो मैं नादान हूँ । मैं तुम्हारा गतिच्यूति दोनों को पहचान लेता हूँ ।

वक ब्रह्म ने पूछा आप मेरा गति और च्यूति कैसे जानता है । बक ब्रह्म की बात सुनकर बुद्ध ने कहा सूर्य-चन्द्र दोनों को मिलाकर चमकते हुए तुम हजार लोक धातु अपने वस में लेते है । हीन, प्रनीत सभी प्राणियों को जानता है । सराम-विराम प्राणियों को भी जानता है । उत्पन्न होने वाले और मरने वाले को भी जानता है तुम केवल इतना जानता है । बक ब्रह्म मैं तुम्हारा गति-च्यूति, ध्यान-भाव कितना है सब जानता हूँ । बक ब्रह्म इस दुनिया में तीन काय होता है । तुम इस तीन काय को नहीं जाता है । मैं इस तीन काय को जानता हूँ । उसको तुम देखा भी नहीं होगे । ये ब्रह्म लोक के बारे में जानता भी है इस लिए तुम मेरे बराबर नहीं है । तुम हमसे बड़ा नहीं हमसे छोटा है । ब्रह्म मैं पृथ्वी, आपों तेजो, वायु इन चार चीजों के बारे में सही जानकारी प्राप्त किया हुआ हूँ । तुम इन चार चीजों के बारे में सही जानकारी प्राप्त नहीं किया है इसलिए तुम हमसे छोटा है।

बक ब्रह्म ने कहा तब तो हम कुछ नहीं कर पायेगे । मैं अर्न्तध्यान हो जाऊँगा ।

बुद्ध ने कहा सक्षम हो तो कर के दिखाओ । बक ब्रह्म अर्न्तध्यान होने के लिए बहुत कोशिश किया लेकिन नहीं हो पाया । छिपने के लिए बहुत कोशिश किया लेकिन बुद्ध बक ब्रह्म को देख रहा था ।

बुद्ध ने बक ब्रह्म से कहा देखों मैं अर्न्तध्यान होऊगा तुम देखना । बुद्ध अधिष्ठान किया कि हमारा शरीर-रूप किसी को दिखाई न दे केवल आवाज सुनायी दे । इस घटना के बाद बक ब्रह्म आदि सभी ब्रह्म परिषद बुद्ध का महाईर्दी क्षमता के बारे में विष्मृत होकर चर्चा शुरू कर दिया ।

उस समय मार दिव्य पुत्र एक ब्रह्म के शरीर में प्रविष्ट होकर कहा श्रमण तुम इतना जानकारी रखते हुए भी सम्यक सम्मबुद्ध हो तो श्रावक लोगों को तैयार करने की क्या आवश्यकता है । किसी को प्रव्रज्जित मत करो, किसी को धर्मदेशना मत करो, इन सभी के ऊपर लगाव मत रखो। आप से पहले भी सम्यक सम्मबुद्ध कहने वाले बहुत-सा श्रमण हुए, बहुत-सा शिष्य बनाकर उन लोगों के साथ लगाव रखकर मर गये । मरने के बाद निम्न योनि में पैदा हुए । लेकिन जो आप से पहले सम्यक सम्मबुद्ध कहने वाले कई लोगों ने श्रावक लोगों को नहीं बनाया । इसलिए वे लोग मरने के बाद उच्च योनि में पैदा हुए । इसलिए मैं तुमको श्रमण एक बात बता रहा हूँ उत्साह मत करो, दूसरे लोगों को उपदेश मत दो यह सब मैं तुम्हारे कल्याण के लिए बता रहा हूँ ।

यह सब बात सुनने के बाद बुद्ध ने कहा पापी मार तुम सोच रहा है कि मैं तुमको नहीं पहचान रहा हूँ जबकि तुम पापी मार है । तुम किसी के कल्याण के बारे में सोचकर ऐसा प्रवचन नहीं दे रहा है । तुम अपना काम करो मैं अपना काम करूँगा । मार दिव्य पुत्र समझ गया कि महाकारुणिक तथागत बुद्ध मुझे पहचान लिया है । तब मार दिव्य पुत्र उस स्थान से भाग गया । एकत्रित ब्रह्म परिषद को बुद्ध चर्तुआर्य सत्य का धर्मदेशना किया, जिसे सुनकर कुछ ब्रह्म लोग इस धर्मदेशना के अवसान अरहत हो गये ।

मण्डुक (मेंढक) देव पुत्र का समागम

बुद्ध एक समय चम्पानगर में घरघरा पोखरा के समीप एक बिहार में ठहरे हुए थे । दिन में भिक्षाटन करने के बाद फलसमापित्त सुख बिहरने के बाद सन्ध्या समय में मधुर स्वर से भिक्षु-भिक्षुणी, उपासक-उपसिका चारों परिषदों को धर्मदेशना करते थे ।

उस समय एक मेढ़क घरघरा पोखरे से बाहर आकर बुद्ध के मधुर स्वर में आवाज संज्ञा से सुनकर भीड़ के किनारे रह गया ।

उसी समय एक ग्वाला भी धर्मदेशना सुनने वाले लोगों को देखकर अपना लाठी (डण्डा) लेकर आया और लाठी खड़ा करके उस पर अपना ठुड्डी रखकर धर्म देशना सुनने लगा । वह ग्वाला उस मेंढक को नहीं देखा।

वह बुद्ध के मधुर स्वर से प्रसन्न होकर सुनने वाले मेंढक के शरीर पर डण्डा रखने के कारण मेंढक उसी समय मर गया । मेंढक मरणोपरान्त दिव्य लोक में एक दिव्य पुत्र के रूप में पैदा हुआ । मेंढक देवपुत्र के रूप में पैदा होने के बाद विचार किया कौन-सा इतना बड़ा हमने पुण्य किया जो दिव्य लोक मे पैदा हुआ । देखा प्रसन्न चित्त से बुद्ध का स्वर सुनने के कारण यह लाभ हमको मिला है । तुरन्त दिव्य समूह के साथ जहाँ बुद्ध धर्म देशना कर रहे थे उस स्थान पर पहुँच गये । बुद्ध ने सोचा धर्म देशना करने से अच्छा है इस दिव्य पुत्र के मुख से सब कुछ बोलना अच्छा होगा। बुद्ध ने पूछा जो तुम हमको हाथ जोड़कर नमन करता है तुम कौन हो । देव पुत्र ने कहा मैं घरघरा पोखरे का एक मेंढक था, आपका मधुर स्वर सुन रहा था ।

अचानक एक ग्वाला आकर अपना डण्डा हमारे शरीर पर रखकर वह भी बुद्ध का मधुर स्वर सुनने लगा । ग्वाला द्वारा दण्डा शरीर पर रखने से मैं दबकर मर गया । प्रसन्न चित्त से मरने के कारण मैं तावतिन्स दिव्य लोक में देव रूप में उत्पन्न हुआ । बुद्ध इस घटना का मातुका करके धर्मदेशना किये । धर्मदेशना के अवसान में देव पुत्र सोवान हो गया । उसके बाद मण्डुक देवपुत्र अपने देव परिषद के साथ तावतिन्स दिव्य लोक में चला गया ।

आनन्द सेठ समागम

श्रावस्ती नगर में आनन्द सेठ नामक एक धनी करोड़ों सम्पत्ति का मालिक था । आनन्द सेठ के पास इतना धन सम्पत्ति होने के बावजूद भी वह बहुत कंजूस था । एक दिन अपने एक पुत्र को बुलाकर कहा पुत्र तुम यह मत सोचो कि यह करोड़ों धन बहुत है। जो तुम्हारे पास धन है किसी को इस धन से एक पैसा भी किसी को नहीं देना चाहिए। बल्कि उसे बढ़ाने की कोशिश करो यदि तुम एक-एक पैसा खर्च किया तो धीरे-धीरे सभी धन समाप्त हो जायेगा । लेकिन महा कृपण सेठ अपने इतने विशाल धन को कहा छिपाकर रखा है अपने पुत्र को भी नहीं बताया । कुछ दिन के बाद महाकंजूस सेठ का देहान्त हो गया । मरणोपरान्त उसी नगर के समीप एक चण्डाल परिवार में जन्म लिया ।

आनन्द सेठ मरने के बाद उसका पुत्र मूल श्री सेठ का स्थान लिया।

आनन्द सेठ मरणोपरान्त जब चण्डाल कुल में पैदा हुआ । उसी दिन से उस चण्डाल के गाँव के गरीब लोगों को दाल-रोटी के लिए बहुत तरसना पड़ा । न कोई नौकरी मिला, ना ही कोई सही जगह मिला । चण्डाल कुल के गाँव के सभी लोग आश्चर्य होकर पता लगाना शुरू कर दिया कि इसका कारण क्या है ? जब पता चला एक चण्डालिका के कोख से पैदा हुआ बच्चा ही कारण है । गाँव के सभी लोग मिलकर उस महिला को गाँव से निकाल दिया । पैदा हुआ बच्चा भी विकलांग था । देखने में भूत-प्रेत जैसा चेहरा था । लेकिन चण्डालिन पुत्र प्रेम और बहुत स्नेह से अपने विकलांग बच्चे का लालन-पालन किया । थोड़ा बड़ा होने के बाद चण्डालिन ने कहा पुत्र तुम्हारे कारण मैं बहुत परेशानी उठाया है । तुम अब भीख माँगने के योग्य हो गया है । भीख माँगने वाला एक वर्तन हाथ में ले लो । इस नगर में भीख देने वाले बहुत-से जगह हैं । इसलिए तुम भी उधर जाकर कुछ खाकर अपनी जिन्दगी बिताओ । ऐसा कह कर उसको रवाना कर दिया।

विकलांग भीख माँगने वाला लड़का घर-घर जाकर भीख माँग रहा था। भीख माँगते-माँगते क्रमश: एक दिन अपने पुराने महल तक पहुँच गया । जाति-स्मरण हो गया कि यह हमारा महल है । लेकिन द्वारपाल लोग भी इस पर इतना ध्यान नहीं दिये । चौथे दरवाजे पर जाने के बाद मूल श्री सेठ का बच्चा लोग विकलांग विरुप भीख माँगने वाले को देखने के बाद घबरा कर चिल्लाना शुरू कर दिया । द्वारपाल लोग विरुपी-विकलांग भीखारी को पकड़ कर खूब पिटाई किया और पिटाई करके उसको उठाकर एक कुडे में डाल दिया ।

उस समय महाकारुणिक तथागत बुद्ध आनन्द भिक्षु के साथ भिक्षाटन के लिए जा रहे थे । कुड़े में पड़े हुए विकलांग विरूपी बच्चे को देखा और देखने के बाद महाकारुणिक तथागत बुद्ध उसका अतीत कहानी भिक्षु आनन्द को बताया । उसके बाद भिक्षु आनन्द सेठ मूल श्री को उस स्थान पर बुलाया और साथ-साथ घटना को देखने के लिए जन समूह भी एकत्रित हो गया।

बुद्ध मूल श्री सेठ से पूछा—सेठ जी ये विकलांग विरुप कुड़े में पड़े हुए बच्चे के बारे में जानकारी तुमको है कि नहीं ? इस पर मूल श्री ने बोला हमें कुछ पता नहीं है । बुद्ध ने कहा यह तुम्हारा पिता जी आनन्द सेठ है । लेकिन मूल श्री इस बात पर विश्वास नहीं किया तब महाकारुणिक तथागत बुद्ध ने विरूपी विकलांग चण्डाल बच्चा को आमन्त्रित किया । सेठ

आनन्द तुम जो पाँच जगह अपना धन छिपाकर रखा है वह जगह अपने पुत्र मूल श्री को बताओ । बुद्ध की बात सुनकर विरुपी विकलांग चण्डाल लड़का जो पूर्व जन्म में अपना सम्पत्ति छिपाकर रखा था वह सभी जगह मूल श्री सेठ को दिखाया । तब मूल श्री सेठ बुद्ध की बातों पर विश्वास किया और विश्वास होने के बाद कहा मैं आज के बाद त्रिशरण-शरण ग्रहण करेगे । एकत्रित जनसमूह और मूल श्री को आमन्त्रित करके बुद्ध ने एक छोटा धर्म देशना किया ।

'मेरे पास पुत्र है, मेरे पास धन है, ये दोनों के बारे में सोचकर व्यक्ति पुत्र और धन की तृष्णा में परेशान होता है । अपना ही अपने को नहीं है, मृत्यु और अकुशल कर्म भोगते समय उस व्यक्ति को न पुत्र है न धन है' ।

इस धर्मदेशना को सुनकर बहुत से लोग त्रिशरण-शरणागत हो गये।

गरहदिन्न समागम

श्रावस्ती नगर में दो मित्र रहते थे एक मित्र का नाम श्री गुप्त और दूसरे का नाम गरहदिन्न था । श्री गुप्त त्रिशरण-शरण उपासक था जबकि गरहदिन्न निगण्ठनाथ पुत्र का श्रावक था । निगण्ठनाथ साधु हरवक्त गरहदिन्न के माध्यम से त्रिरत्न का दोष बताकर निगण्ठ लोगों का वर्णन करके श्री गुप्त को निगण्ठ धर्म में लाने के लिए कोशिस किया । यह सब बात सुनकर श्रीगुप्त कई बार चुपचाप से सुन लेता था । एक दिन गरहदिन्न श्री गुप्त के त्रिरंत्न का अवगुण ढूढ़ने के लिए आया । पूछा तुम जो श्रमण बुद्ध के पास जाता है । इससे तुमको मिलता क्या है ? बुद्ध को दान देने से भी तुमको क्या मिलता है ? यदि तुम्हें दान देना ही है तो हमारे श्रावक निगण्ठ नाथ गुरुओं के पास जाकर दान दो । श्री गुप्त ने पूछा तुम्हारा साधु क्या जानता है ?

गरहदिन्न ने कहा ऐसा मत बोलो हमारा निगण्ठ साधु क्या नहीं जानता है सब कुछ जानता है ।

श्री गुप्त ने कहा तुमने बहुत बड़ा गलती किया है इतने दिनों से यह सब छिपाकर क्यो रखा था । आज तुम्हारे माध्यम से तुम्हारे निगण्ठ साधु लोगों के ज्ञान के बारे में जानकारी लूगा । इसलिए तुम जाकर अपने निगण्ठ साधुओं को हमारे यहाँ भोजन के लिए बुलाओ । निगण्ठ उपासक गरहदिन्न

बहुत खुश हो गया । गरहदिन्न खुश होकर निगण्ठ साधुओं के पास जाकर कहा श्री गुप्त निगण्ठ धर्म से प्रसन्न होकर निगण्ठ साधुओं को भोजन दान देने के लिए निमन्त्रण देने का खबर भेजा है ।

बौद्ध उपासक श्री गुप्त का निवास स्थान बहुत बड़ा था । दो मकानों के बीच में बड़ा गड्ढा खोदवा दिया । उस गड्ढे में असूची (मल) और किचड़ भरवा दिया । दोनों तरफ खम्भा गड़वा दिया, उसमें रस्सी बधवाँ कर उसे चारों तरफ कपड़ा से घेरवा दिया । जो बैठने के लिए आसन तैयार करवाया था । आगे के दो पाई और पीछे के दो पाई को रस्सी के ऊपर रखवाया। श्री गुप्त ने इसलिए ऐसा किया ताकि निगण्ठ साधु लोग बैठते ही उल्टा गिर जाय। इसलिए असूचि (मल) और किचड़ न दिखाई दे सफेद कपड़ा से ढकवा दिया । बहुत बड़ा खाली वर्तन लेकर कपड़ा से उसका मुँह बाँध कर सामने रख दिया । उस वर्तनों से व्यजंनों का सुगन्ध, चावल से घी का सुगन्ध आने का उपाय किया ।

गरहदिन्न निगण्ठ उपासक सुबह आकर श्रीगुप्त का व्यवस्था देखकर बहुत प्रसन्न हो गया । गरहदिन्न निगण्ठ आश्रम में जाकर उसका वर्णन करके पाँच सौ निगण्ठ साधुओं को भोजन करने के लिए श्रीगुप्त के घर ले गये। निगण्ठ साधु श्री गुप्त के घर आये तो श्रीगुप्त ने दोनों हाथ जोड़कर पैर छूकर अभिवादन करके कहा आप अतीत, वर्तमान और भविष्य के बारे में गहराई से जानते हैं । जिसे गरहदिन्न ने हमको सब कुछ बता दिया है । श्रीगुप्त ने कहा यदि इन तीनों काल के बारे में आप लोगों को जानकारी नहीं तो हमारे घर पर भोजन के लिए मत आना । ऐसे आने से आप लोगों को चावल का मांढ़ भी नहीं मिलेगा । श्रीगुप्त ने सोचा ये तीन कालों के बारे में जानकारी नहीं होने के बावजूद अन्दर घूस गया तो असूचि के गढ़ढे में गिरने पर खूब पिटाई करेंगे। निगण्ठ साधुओं को बैठने के लिए कपड़ा का आवरण हटाने के लिए अपने सेवकों को बोला ।

श्रीगुप्त उपासक निगण्ठ साधु लोगों को अन्दर आने के लिए आमंत्रण दिया और बैठने के लिए तैयार हो गये । नौकरों ने कहा कृपया आप लोग ठहरिए । निगण्ठ साधुओं ने कहा क्यों ? नौकरों ने कहा आप लोगों के बारे में एक-एक की जानकारी होने पर बैठने देना है । आप लोग पंक्ति बद्ध होकर खड़े हो जाइए । इसके बाद एक साथ सभी लोग बैठ जाइए। नौकरों के कहने के अनुसार निगण्ठ साधु लोगों को बैठने को तैयार होते

ही बिछाया हुआ कपड़ा हटाना शुरू कर दिया । निगण्ठ साधुओं के बैठते ही रस्सी के ऊपर रखा कुर्सी सभी उलट गये और सभी निगण्ठ साधु उसी असूचि के गड्ढे में गिर पड़े । श्रीगुप्त ने अपने महल का सभी दरवाजा बन्द करवा दिया । जो भी निगण्ठ साधु आसूचि के गड्ढे से बाहर आते उन्हें मार-पीटकर पुनः उसी गड्ढे में धकेल देते थे । खूब पिटाई करने के बाद श्रीगुप्त ने कहा आज तुम लोगों के लिए इतना काफी है । ऐसा कहकर दरवाजा खोलवा दिया और सभी निगण्ठ साधु जान बचाकर भागे श्रीगुप्त ने रास्ते पर भी चूना मिला बेल का रस गिरवा दिया था जिस पर निगण्ठ साधु फिसल कर गिर रहे थे । तो जनता ने धोखा देने का कारण बता कर और पिटाई किया ।

सभी निगण्ठ साधु रोते हुए जाकर निगण्ठ उपासक गरहदिन्न को सभी बात बताया । गरहदिन्न कुपित होकर श्रीगुप्त उपासक के उपर एक मुकदमा कर दिया लेकिन इस मुकदमे में भी गरहदिन्न और निगण्ठ साधु पराजित हो गये ।

गरहदिन्न कई दिनों तक श्रीगुप्त से कोई भी बात नहीं किया । लेकिन एक दिन चालकी दिखाते हुए दिल से श्रीगुप्त के साथ फिर से मित्रता कायम किया । उसके बाद श्रीगुप्त ने गरहदिन्न को बुद्ध के गुण के बारे में और बुद्ध को भोजन दान देने के बारे में जिससे अच्छा फल मिलता है । उसके बारे में बताया । गरहदिन्न ने कहा बहुत अच्छी बात है मैं भी बुद्ध और भिक्षु महासंघ को एक संघदान देना चाहता हूँ । तुम हमारे मित्र हो, हमारी तरफ से तुम जाकर बुद्ध प्रमुख भिक्षु महासंघ को भोजन दान के लिए निमंत्रित करो । गरहदिन्न के कथनानुसार श्रीगुप्त उपासक बुद्ध प्रमुख भिक्षु महासंघ को गरहदिन्न के घर पर भोजन दान के लिए निमंत्रित किया । बुद्ध ने उसके भोजन दान का निमन्त्रण स्वीकार किया । गहरदिन्न निगण्ठ उपासक भी बहुत लम्बा एक गड्ढा खुदवाया और उस गड्ढे में लकड़ी भरवाकर उसमें आग लगवा दिया । जब जलता हुआ आग बुझने के बाद लकड़ी के अंगीठी के आग को ढकवा दिया । उसके उपर टाट और कलश बिछवाया क्योंकि वह जानता था कि सबसे पहले बुद्ध ही उस स्थान पर पैर रखेंगे । इसलिए उस स्थान पर सड़ा लकड़ी का पटरा बिछवाया । जिस प्रकार श्रीगुप्त ने खाली वर्तन के मुख पर सफेद कपड़ा बाँध कर भोजन का बन्दोवस्त किया था । गरहदिन्न भी ठीक वैसा ही किया ।

निमंत्रण के अनुसार बुद्ध भिक्षु महासंघ के साथ भोजन दान के लिए पधारे । बुद्ध प्रमुख भिक्षु महासंघ के आने की खबर सूनकर आस-पास की जनता भी एकत्रित हो गयी । बुद्ध को आते देखकर निगण्ठ उपासक गरहदिन्न बुद्ध के सामने जाकर अभिवादन किया और अभिवादन के पश्चात् जिस प्रकार श्रीगुप्त उपासक ने किया ठीक उसी तरह गरहदिन्न भी किया। गरहदिन्न ने सोचा यदि बुद्ध सबकुछ जानते हैं तो इससे बच जायेंगे नहीं तो इसके अन्दर प्रवेश करने पर बुद्ध को समझ में आ जायेगा । गरहदिन्न ऐसा सोचते हुए बुद्ध को आगे ले गया ।

महाकारुणिक तथागत बुद्ध द्वारा सड़े हुए लकड़ी के पटरे पर पैर रखते ही सुनहरे रंग का कमल खिल गया । इसी तरह सभी भिक्षु महासंघ को बैठने के लिए भी कमल का फूल खिल गया । बुद्ध प्रमुख भिक्षु महासंघ जाकर उस पर बैठ गये ।

इतना विशाल आग का गड्ढा से इतना सुन्दर कमल का फूल खिलने से गरहदिन्न ऐसा दृश्य देखकर घबरा गया । श्रीगुप्त के पास जाकर कहा जो तुमने किया था निगण्ठ साधुओं के साथ मैं भी वैसा ही तुम्हारे बुद्ध प्रमुख भिक्षु महासंघ के लिए भोजन नहीं पकवाया केवल बर्तन रखा है किसी भी बर्तन में कुछ नहीं है । श्रीगुप्त उपासक ने कहा कोई बात नहीं है तुम अभी जाकर देखो उस बर्तनों में भोजन भरा हुआ दिखाई देगा । श्रीगुप्त की बात को सुनकर गरहदिन्न ने जाकर देखा सभी वर्तन खाने-पीने के सामानों से भरा हुआ था । ऐसा आश्चर्य के बारे में सोचते ही गरहदिन्न ने अपने हाथों से बुद्ध प्रमुख भिक्षु महासंघ को भोजन कराया । गरहदिन्न भोजन कराने के बाद बुद्ध से अनुरोध किया कि मेरे लिए अनुकम्पा करके कुछ धर्मदेशना कीजिए ऐसा कहकर बुद्ध के पास बैठ गया ।

गरहदिन्न के अनुरोध पर बुद्ध ने एक संक्षिप्त में धर्म देशना किया—

"प्रज्ञा चक्षु नहीं होने के कारण बहुत से लोग बुद्ध का और धर्म के महत्व के बारे में जानकारी नही रखता है । प्रज्ञा चक्षु का ज्ञान नहीं रखने वाला व्यक्ति संसार में अन्धा के समान होता है जब कि प्रज्ञावत व्यक्ति आँख वाला होता है ।

सड़क के किनारे कुड़ा-कचरा में जैसे कोई पुष्प उत्पन्न होता है उसी तरह क्लेश भरित ज्ञान से मुक्त लौकिक जनता के बीच में उत्पन्न होने से

भी सम्यक सम्यबुद्ध एवम् श्रावक गुण पुष्प की तरह लोगों के बीच में दिप्तीमान होता है" । (अंक 162)

इस धर्मदेशना के अवसान में बहुत से प्राणीयों ने धर्म बोध किया। निगण्ठ उपासक गरहदिन्न एवम् बौद्ध उपासक श्रीगुप्त दोनों ही सोबान हो गये ।

संध्याकाल में आग वाले गड्ढे से कमल खिलने का बात भिक्षु लोगों द्वारा चर्चा में आ गयी । सभी भिक्षुओं की बात सुनने के बाद बुद्ध ने पूर्व जन्मों में ही ऐसे कई घटना हुआ है । बोलकर खदिरंगार जातक कहानी से देशना किया ।

मट्ठकुण्डली समागम

श्रावस्ती नगर में एक बहुत बड़ा धनी सेठ था जिसका नाम अदिन्न-पुब्बक था । सेठ के पास इतना धन-सम्पत्ति होने पर भी कभी किसी को कुछ नहीं दिया । इस लिए उसे नगरवासी अदिन्नपुब्बक का नाम दिया । सेठ को एक पुत्र था पुत्र के लिए सोने का कुण्डल बनवाने के लिए सोचा यदि सोनार के माध्यम से कुण्डल बनवाया तो बहुत खर्चा होगा । इसलिए सबसे अच्छा है अपने ही हाथ से सोने का कुण्डल बनाकर अपने पुत्र को पहनायेंगे । सेठ सोने का टुकड़ा लेकर उसे काट-पीटकर अपने ही हाथ से दो कुण्डल बनाकर अपने पुत्र को पहना दिया । सेठ द्वारा बनाया हुआ कुण्डल साफ न होकर खुरदुरा और मोटा होने के कारण जनता ने उसके पुत्र को मट्ठकुण्डली के नाम से पुकारने लगे ।

मट्ठकुण्डली सोलह साल की उम्र में पीलिया रोग से पीड़ित हो गया। अदिन्न पुब्बक सेठ ने सोचा यदि किसी वैद्य को बुलाया तो उस वैद्य को दवा का पैसा देना होगा। ऐसा सोचकर किसी वैद्य को नहीं बुलाया। मट्ठ कुण्डली असाध्य रोग से पीड़ित होने के कारण मरणासन्न अवस्था में विस्तर पर पड़ा था। मट्ठकुण्डली को देखने के लिए सगे-सम्बन्धी और हितैषी आना शुरू कर दिये । अदिन्नपुब्बक ने सोचा बाहर से आने वाले लोग घर के अन्दर आकर हमारा धन सम्पत्ति देखकर अश्चर्य चकित होंगे । इसलिए सेठ ने मट्ठकुण्डली को एक चारपाई पर लेटाकर बरामदे में कर दिया ।

एक दिन सुबह तथागत बुद्ध महाकरुणा से संसार को देख रहे थे कि मट्टकुण्डली को देखा । बुद्ध मट्ठकुण्डली के घर तक जाकर उसको देखने

के स्थान पर खड़े हो गये । मट्ठकुण्डली मरणासन अवस्था में होने के बावजूद भी बुद्ध का दर्शन किया । बुद्ध का दर्शन करते ही मट्ठकुण्डली का प्राण निकल गया । बुद्ध का दर्शन मात्र से ही मट्ठकुण्डली मरणोपरान्त दिव्य लोक में उत्पन्न हुआ ।

अदिन्न पुब्बक सेठ अपने पुत्र मट्ठकुण्डली के मृत शरीर का दाह संस्कार किया । नित्य उसी स्थान पर जाकर पुत्र का नाम लेकर खूब रोता था । मट्ठकुण्डली दिव्य लोक में पैदा होने के कारण पर विचार किया मेरे पिताजी कंजूसी के कारण बीमार होने से हमको दवा नहीं दिये और मेरे मरने के बाद शमशान घाट पर आकर मेरा नाम लेकर रो रहे हैं । मट्ठकुण्डली दिव्य पुत्र ने देखा बुद्ध का दर्शन मात्र से यह सम्पत्ति मिला है । मट्ठकुण्डली तरुण वयस्क वेश लेकर जहाँ अदिन्न पुब्बक रो रहा था उसी स्थान पर पहुँचकर मट्ठकुण्डली भी रोना शुरू कर दिया ।

अदिन्न पुब्बक सेठ ने रोते हुए मट्ठकुण्डली को देखा तो पूछा तुम क्यों रो रहे हो ? मट्ठकुण्डली ने कहा हमको एक गाड़ी मिला लेकिन उसमें दो पहिया नहीं है, इसलिए मैं रो रहा हूँ । अदिन्न पुब्बक सेठ ने सोचा अपने पुत्र के रूप के अनुसार रोने वाले नवयुवक को पुत्र प्रेम से कहा— मैं तुम्हारे लिए सोने या चाँदी कैसा चाहिए ? वैसा दो पहिया मैं बनवा दूँगा किन्तु तुम रोना मत । मट्ठकुण्डली दिव्य पुत्र ने सोचा जब हम विमार थे तो धन खर्चा होने के भय से हमको दवा नहीं किया । पुत्र वेश में मेरे आने के कारण अब ऐसा बोल रहे हैं । इसलिए मट्ठकुण्डली देवपुत्र ने अदिन्न पुब्बक सेठ का निग्रह किया । मट्ठकुण्डली ने कहा हमें किसी पहिया या चक्र की आवश्यकता नहीं है । सूर्य और चन्द्र दोनों ही मेरा पहिया बनने की बात किया है । यदि मेरे लिए चक्र हिसाब से देना हो तो सूर्य और चन्द्र को दीजिए ।

अदिन्न पुब्बक सेठ ने कहा पहिये के हिसाब से सूर्य-चन्द्र दोनों ही नहीं मिल सकता है । उसको प्रार्थना करना भी एक मुर्खता की बात होगी। मट्ठकुण्डली दिव्य पुत्र ने सोचा सूर्य चन्द्र कितना ही दूर रहेगा वह आँख से दिखाई देता है । लेकिन कोई मर जाने से उसे दिखाई नहीं देता है। इसलिए हम दोनों में कौन मुर्ख है ? कहाँ जो आँख से दिखाई देता है। उसको नहीं देख लेने का प्रार्थना नहीं है तो इधर से कहाँ कैसे गया ? उस व्यक्ति के बारे में शोक करना दोनों में कौन सही है ?

अदिन्न पुब्बक उपासक दिव्य पुत्र की बात को सुनकर सबसे बड़ा मूर्ख अपने को समझकर मृतक पुत्र के बारे में शोक करना कम कर दिया । मट्ठ कुण्डली देव पुत्र ने कहा मैं मरा मट्ठ कुण्डली हूँ । बुद्ध के दर्शन मात्र से ही दिव्य लोक में उत्पन्न हुआ हूँ । अदिन्न पुत्वक सेठ ने कहा मैंने तुम्हे कभी भी दानशील आदि कोई भी पुण्य कर्म करते हुए मैंने नहीं देखा है। कौन-सा कुशल कर्म से तुम दिव्य लोक में पैदा हुआ है ।

मट्ठ कुण्डली देव पुत्र ने कहा मरणासन्न समय में मैंने महाकारुणिक तथागत बुद्ध का दर्शन किया । उस दर्शन का प्रसाद होने के कारण दिव्य लोक में उत्पन्न हुआ । मट्ठ कुण्डली देवपुत्र ने अदिन्न पुब्बक सेठ से कहा तुम भी बुद्ध के पास जाकर उनका दर्शन करो । इतना कहने के बाद दिव्य पुत्र अर्न्तध्यान हो गया ।

दुसरे दिन अदिन्न पुब्बक सेठ बुद्ध प्रमुख भिक्षु महासंघ को अपने घर पर निमंत्रित करके भोजन दान कराया । अदिन्न पुब्वक बुद्ध-धम्म-संघ के लिए विश्वास करने वाला व्यक्ति नहीं था । आस-पास के लोग सोचे आज श्रमण गौतम एक अबोध व्यक्ति के घर आने पर बहुत से सवाल पूछकर उसे थका देने का तरीका खोज लेगा । ऐसा सोचकर बहुत से लोग एकत्रित हो गये ।

अदिन्न पुब्वक सेठ ने बुद्ध से कहा आप को कोई कभी दान दिये बगैर, पूजा सत्कार ने करके भी वह व्यक्ति दिव्य लोक सम्पत्ति का लाभ प्राप्त करने की घटना आपको याद है ।

बुद्ध ने कहा इसका सबसे बड़ा उदाहरण तुम्हारा पुत्र मट्ठ कुण्डली है ऐसा सोचकर प्रार्थना किया कि मट्ठ कुण्डली देव पुत्र बुद्ध के सामने आ जाय । मट्ठ कुण्डली देवपुत्र चमकते हुए शरीर के साथ दिव्य लोक से आकर बुद्ध को नमन किया । बुद्ध मट्ठ कुण्डली देवपुत्र को सामने रखकर साक्षात् कराकर धर्मदेशना किया । अदिन्न पुब्बक सेठ बौद्ध उपासक बन गया । मट्ठ कुण्डली का चित्त प्रसाद फल मातृका कराकर बुद्ध ने छोटा-सा एक धर्मदेशना किया ।

"सभी चित्त चेतना पूर्वा गमन होता है चित्त श्रेष्ठ होता है । चित्त से ही सब कुछ उत्पन्न होता है । यदि कोई व्यक्ति प्रसन्न चित्त से कुछ सोचता है, करता है, बोलता है, उसका फल भी सुखदायक होता है । अपने शरीर

का छाया अपने को भारी नहीं होकर अपने साथ चलता है । उसी तरह व्यक्ति को उसके पुण्य कर्म का सुख फल मिलता है । इस धर्म देशना को सुनकर अदिन्न पुब्बक सेठ बहुत से लोग और मठ्ठकुण्डली देव पुत्र आदि धर्माबोधा किया है" ।

सरभ परिव्राजक समागम

सरभ नामक एक बौद्ध भिक्षू भिक्षुत्व छोड़कर परिव्राजक हो गया । वह सभी जगह पर जाकर प्रचार किया कि हम बौद्ध धर्म की बहुत अच्छी प्रकार से अध्ययन किया है । इसलिए हमने भिक्षुत्त को छोड़ दिया । सरभ राजगृह का निवासी था । लोगों के पास जाकर यही कहता था कि मैंने धर्म की अच्छी तरह से पढ़ाई किया और पढ़ाई करने के बाद चीवर छोड़ दिया । यह बात भिक्षु द्वारा बुद्ध के पास पहुँच गया ।

सप्पिनिका नदी के किनारे सरभ परिव्राजक के साथ और भी परिव्राजक लोग रहते थे । उन सभी ने बुद्ध को आमंत्रित किया और उसी साप्पिनिका नदी के किनारे परिव्राजक आश्रम में आने के लिए । बुद्ध उसी के अनुसार सप्पिनिका नदी के किनारे परिव्राजक आश्रम में जाकर उन लोगों के बीच में बैठ गये ।

परिव्राजक संघ के बीच बैठ कर बुद्ध ने सरभ परिव्राजक से पूछा तुम बुद्ध धर्म में पूर्ण रूप से पारंगत होने के कारण भिक्षुत्व को छोड़ दिया यह बात सही है या नहीं । सरभ परिव्राजक नि:शब्द हो गया । बुद्ध ने पूछा सरभ तुमने बुद्ध का धर्म कौन-सी ढंग से समझा है यदि तुम्हारा जानकारी कम है तो हमे बता दो वह मैं पूरा कर देंगे । यदि तुम्हारा जानकारी पूर्ण हो तो यह हम भी मानेंगे ।

बुद्ध इस तरह तीन बार पूछने के बाद भी सरभ परिव्राजक सिर झुकाकर चुप से रह गया । फिर से बुद्ध ने पूछा तुम बुद्ध का धर्म कैसे समझा उसके बारे में हमको विस्तार पूर्वक बताओ । उस समय भी सरभ परिव्राजक चुपचाप सिर झुकाकर रह गया ।

इसके बाद महाकारुणिक तथागत बुद्ध ने कहा मेरा सम्यक सम्मबुद्धत्त्व, मेरा विशुद्ध धर्म कारण रहित कभी कोई भी व्यक्ति नहीं देखा है । ऐसा कहकर बुद्ध सरभ परिव्राजक को धर्म देशना करके इर्दी शक्ति द्वारा आसमान

मार्ग से वहाँ से निकल गये । बुद्ध को वहाँ से वापस जाने के बाद सभी परिव्राजक लोग मिलकर सरभ परिव्राजक को गाली देना शुरू कर दिया ।

चिंचामानविका

बुद्ध और भिक्षु महासंघ को दिन प्रतिदिन लाभ सत्कार मिलना शुरु हो गया । लेकिन बाकि तिर्थक लोगों को लाभ-सत्कार मिलना कम हो गया । इसलिए सभी तिर्थक लोग मिलकर आपस में बातचित करके तय किया कि श्रमण गौतम और उसके शिष्यों को मिलने वाला लाभ-सत्कार किसी भी तरह बन्द करवाना है । ऐसा सोचकर सभी तिर्थक लोगो ने एक षडयन्त्र किया ।

तिर्थक परिव्राजको के बीच में एक चिंचा नामक सुन्दर महिला परिव्राजक थी एक दिन चिंचा मानविका नामक सुन्दर परिव्राजक तिर्थकाराम राम में चली गयी लेकिन उस समय कोई भी तिर्थक उसके साथ बात चीत नहीं किया । सबसे बड़े तिर्थक के पास जाकर तीन बार नमस्ते करने के बावजूद भी कोई बात नहीं किया । चिंचा मानविका ने वरिष्ठ गुरु से पूछा मैंने कौन-सा गलती किया है जो आप लोग हमसे बात नहीं कर रहे है । जेष्ठ तिर्थाकर ने कहा श्रमण गौतम बुद्ध पूरी दुनियाँ को अपने बस में कर रहा है और सभी लोग हम लोगों का प्रतिक्षेप कर रहा है वह बात तुम्हें दिखाई नहीं दे रहा है । चिंचा मानविका तिर्थाकर से कहा गुरुदेव जल्दबाजी मत करना, श्रमण गौतम बुद्ध को किस तरह से अपमानित करना है ? वह मैं जानती हूँ । उसका प्रबन्ध मैं करुँगी । ऐसा कहकर तिर्थक समूह को आश्वासन दिया ।

दूसरे दिन से चिंचा मानविका प्रतिदिन शाम को लाल रंग का वस्त्र पहनकर सुन्दर ढंग से सज-सवर कर सुगन्धित पुष्प लेकर अन्धेरा होते ही जेतवनाराम की ओर जाती थी । अकेले अन्धेरे में जाने से लोगों के अन्दर कौतुहल पैदा हो गया और लोगों ने चिंचा मानविका से पूछा तुम सज-सवर कर शाम के वक्त कहा जा रही हो ? चिंचा मानविका ने सबका उत्तर दिया कि हमारे आने-जाने से तुम लोगों को क्या लेना देना है । सभी लोगों के बीच शक उत्पन्न होने के अनुसार ही वह जवाब देती थी । जेतवनाराम के बगल में एक तिर्थकाराम था ।

(नोट—तिर्थकाराम का खण्डहर अवशेष आज भी श्रावस्ती के जेतवनाराम में देखने को मिलता है ।)

उसी में जाकर रात गुजार कर दूसरे दिन सुबह जेतवनाराम से निकलती थी और उधर से होकर नगर को जाती थी । जो उपासक जेतवनाराम में आते थे चिंचा मानविका से पूछा इतना सुबह तुम कहाँ से आ रही हो और रात को कहाँ थी । पूछने पर चिन्ची मानविका ने कहा हमारे आने-जाने के बारे में पूछने वाले तुम लोग कौन होते हो ? और मैं कहीं भी गयी तो तुम लोगों से क्या मतलब है ? वह लोगों के मन में शंका पैदा होने के अनुसार बात करके निकल जाती थी । वह इसी तरह दो-तीन महीना आती जाती रही । चिन्ची मानविका को सुबह-सुबह जेतवनाराम से आते देखकर लोगों ने पूछा तुम इतना सुबह कहाँ से आ रही हो ? तो उसने बतायी मैं आज रात को श्रमण गौतम के साथ सोयी थी। इसलिए श्रमण गौतम बुद्ध के पास से आ रही हूँ । लेकिन किसी ने उसकी बातों पर विश्वास नहीं किया बल्कि लोगों ने सोचा चिन्ची मजाक कर रही है । इसी तरह चार पाँच महीना बीत गया । धीरे-धीरे छः सात महीना पूरा होने के बाद चिन्ची ने अपने पेट पर गोल आकार का एक लकड़ी बाँध कर लाल वस्त्र पहन कर एक गर्भिणी महिला की तरह सबको दिखाते-दिखाते धर्म सभा मण्डप में बुद्ध के सामने पहुँच गयी । वहाँ जाकर कही—श्रमण गौतम आप धर्मदेशना कर रहे हैं । आप का बच्चा मेरे गर्भ में है । अब इसके पैदा होने का समय आ गया है । यह कहाँ पैदा होगा ? अभी तक किसी स्थान का निर्णय नहीं किया । उस समय तेल-मिर्चा जैसे सामानों की आवश्यकता होगी । उसका भी कोई प्रबन्ध नहीं है । आपका उपासक कोशल महाराज, अनाथपिण्डिक सेठ, विशाखा जैसे किसी को बोलकर हमारी व्यवस्था क्यों नहीं कर रहे हो ?

चिन्ची मानविका की बातों को सुनकर बुद्ध ने धर्मदेशना करना बन्द कर दिया । बुद्ध ने कहा जो तुम बोल रही हो उसकी सच्चाई तुम भी जानती हो और मैं भी जानता हूँ । ऐसे कहते ही पेट पर बँधा हुआ गोलाकार लकड़ी का गट्ठर जमीन पर गिर गया ।

इस घटना को देखने के बाद एकत्रित जनता गुस्से में कहना शुरू कर दिया कि यह निर्लज्जित कन्या बुद्ध जैसे पवित्र पुरुष का अपमान कर रही है । उसका ऐसा करने का कारण क्या है ? सब लोग मिलकर उसे अपमानित करके वहाँ से भगा दिया । जेतवनाराम से थोड़ी दूर आगे जाते

ही पृथ्वी अपने आप फट पड़ी और चिंची मानविका उसी अविचि महानरक में चली गयी और अविचि महानरक की अग्नि ज्वाला से वह जल गयी।

तिर्थकों ने सोचा यदि हमारा षडयन्त्र जनता को पता चल गया तो जो सत्कार-सम्मान उन लोगों द्वारा मिलता है वह भी समाप्त हो जायेगा। ऐसा सोचकर सभी तिर्थक लोग घबरा कर डर गये ।

परिच्छेद - 49

अचानक बाढ़ द्वारा राजा विरूढ़क एवं उनके सेना को बहा ले जाना

विरुढ़क द्वारा शाक्य वंश से बदला लेना

राजा विरुढ़क बहुत बड़ी सेना के साथ कपिलवस्तु पहुँच गया । शाक्य लोगों ने बात-चीत किया कि हम लोग मर जायेंगे लेकिन हम लोग किसी को जान से नहीं मारेंगे । शाक्य लोग धनुष शिल्प के माहिर थे । वे लोग इतना माहिर थे कि दुश्मनों के शरीर में बाण नहीं लगे बल्कि उनके हाथ के नीचे से, कान के बगल से तीर मारकर सभी को घबराकर, डरा कर भगा देंगे । ऐसा बोलकर युद्ध के लिए तैयार होने को दिखाया । राजा विरुढ़क कपिल वस्तु जाकर युद्ध शुरू किया । शाक्य लोगों के धनुष से निकला हुआ तीर विरुढ़क सेना के हाथ के बगल और कान के बगल से निकल जाते थे । शाक्य लोगों के धनुष प्रहार को देखकर राजा विरुढ़क ने कहा शाक्य लोग कहते हैं कि हम लोग प्राण बध नहीं करते हैं लेकिन धनुष-बाण के माध्यम से हमारे लोगों को नुकसान पहुँचा रहे हैं । राजा विरुढ़क की बात को सुनकर एक शाक्य अमात्य ने कहा आप गिनकर देखो एक भी सैनिक नहीं मरे हैं । राजा विरुढ़क अपनी सेना को गिनकर देखा एक भी कम नहीं था । राजा विरुढ़क ने सोचा बीच में ही युद्ध छोड़कर चले जायेंगे लेकिन अपनी पूरी सैनिक बिना नुकसान का बचा हुआ है । पुनः उसने बुद्ध में मन लगाया । राजा विरुढ़क ने कहा हमारे बड़े पिताजी महानामशाक्य यदि उनके बीच में हो तो उसको छोड़कर बाकि सभी शाक्य लोगों को जान से मारने के लिए कहा । शाक्य लोग जान बचाने के लिए कोई भी उपाय नहीं किये । शाक्य लोग को झूठ बोलने का भी आदत नहीं था । शाक्य कभी भी झूठ नहीं बोलते थे । इसलिए राजाविरुढ़क के सैनिक लोग पूछ-पूछ कर शाक्य लोगों का गर्दन काट दिये । शाक्य लोगों के बीच में हुण वंश के लोग थे लेकिन शाक्य लोग उन लोगों को कोई नुकसान

नहीं पहुँचाये । राजा विरुढ़क की सेना ने महानाम शाक्य हुण जन समूह को छोड़कर सभी शाक्य लोगों का सफाया कर दिया । हुण वंश के लोग बड़ा घास देखकर अपने जीवन की रक्षा किये । बाद में कई लोग तृण शाक्य के नाम से प्रसिद्ध हो गये । जो लोग बाँस में छिपकर अपना जीवन बचाया वे लोग नल शाक्य के नाम से प्रसिद्ध हो गये ।

राजा विरुढ़क शाक्य समूह को समाप्त करने के बाद समूचे कपिल वस्तु को सूनसान बनाकर श्रावस्ती जाने के लिए चल पड़े । अचीरवती नदी के पास आते-आते अन्धेरा हो गया । अन्धेरा होने के कारण उस पार नहीं जाने से नदी के किनारे ही अपना डेरा डाल दिया । गर्मी का मौसम होने के कारण ज्यादा तर लोग बालू के रेत पर ही सो गये और कुछ लोग नदी के किनारे बालू पर सो गये ।

सभी लोगों के थके होने के कारण तीब्र नीद्रा आ गयी । अचानक मौसम बदला घनघोर बारिस हो गयी । तेजी से वर्षा के कारण नदी के पानी का बहाव इतना तीब्र था कि सभी लोग पानी में बह गये । उसके बाद काशी और कोशल राज्य दोनों अराजक हो गया । इस घटना के बाद राजा अजातशुत्र श्रावस्ती में जाकर काशी और कोशल दोनों राज्य का नियन्त्रण अपने हाथ में ले लिया ।

(नोट—राजा विरुढ़क के युद्ध की कहानी श्रावस्तीवादी (महायान) ग्रन्थों में विभिन्न प्रकार से आता है) ।

राजा प्रसेन्नजीत कौशल का देहान्त

प्रसेन्नजीत कौशल राजा ने चुगलखोर की बात को सुनकर अपना सबसे ज्यादा बफादार काम करने वाला बेद्रुलुम्प सेना पति और उसके बत्तीस पुत्रों को साजिस करने के आरोप में जान से मरवा दिया । अपने को अपना सबसे ज्यादा पक्षपात करके काम करने वाले वेदुलुम्प सेनापति एवम् बत्तीस (32) पुत्रों को मार डालने से सोचा हमसे गलती हुआ है । इसके लिए राजा बहुत बड़ा पश्चाताप करते थे । उसके पश्चाताप के लिए कोई शरण नहीं मिलने के कारण तथा किसी से भी नहीं मिलने के कारण राजा कोशल वेदुलुम्प सेनापति के दामाद दिघकारायन को सेनापति का पद दे दिया । दिघकारायन हर वक्त सोचता रहता था कि राजा कोशल ने मेरे भाई एवम् पुत्रों को जान से मरवा दिया है, उसका बदला लेने के लिए मौका खोजता रहा । राजा

कोशल भी अपने किये हुए गलती के लिए दिन प्रतिदिन पश्चाताप करते रहे।

राजा प्रसेन्नजीत कौशल एक दिन किसी राजकार्य के लिए कोशल राज्य सीमा के एक गाँव में चले गये। राजा वहाँ पर अकेले नहीं गये थे बल्कि बहुत बड़ा बल सेना के साथ गये थे। उस समय उसी गाँव के समीप एक वेन्दुलुम्प नामक शाक्य ग्राम में महाकारुणिक तथागत बुद्ध के विराजमान होने का खबर मिला। राजा प्रसेन्नजीत कौशल अपना मुकुट भाण्ड दिघकारायन को दे दिया और देकर बुद्ध से मिलने वेदुलुम्प ग्राम में चले गये। दिघकारायन अमात्य ने सोचा अब दुयमन से बदला लेने का सही समय आ गया है। ऐसा सोचकर एक सेविका को और एक अश्व को डेरे पर रखकर कहा यदि कोई आकर पूछे तो बता देना हम श्रावस्ती चले गये हैं। पूरी सेना लेकर श्रावस्ती पहुँचकर राजकुमार विरुढ़क को मुकुट भाण्ड से अलंकृत करके कोशल राज्य के राजा की गद्दी पर बैठा दिया।

महाकारुणिक तथागत बुद्ध से मिलकर राजा प्रसेन्नजीत कोशल वापस अपने सैनिक डेरा पर आये तो सेविका ने कहा दिघकारायन सभी सैनिकों को साथ लेकर वापस श्रावस्ती चले गये। राजा कोशल ने सोचा अवश्य हमसे बदला लेने के लिए यह काम किया है। मैं भी उसको नहीं छोड़ूँगा। ऐसा सोचकर बचे हुए घोड़ा और सेविका दोनों को लेकर राजगृह को चले गये।

राजगृह जाते-जाते रात हो गयी और नगर का चारों तरफ से द्वार बन्द हो गया। अन्दर प्रवेश करने के लिए कोई जगह नहीं होने के कारण नगर के बाहर एक शाला में विश्राम किया। राजा दूर से आने के कारण चित्त वेदना, भूख-प्यास, थकावट, अधिक ठण्ड जैसे कारणों से महापीड़ा होने के कारण अस्सी वर्ष की आयु के राजा प्रसेन्नजीत कोशल का उसी शाला में सुबह होते-होते देहान्त हो गया।

कोशल राजा का देहान्त होने से सेविका जोर-जोर से चिल्लाना शुरु कर दिया। सेविका की आवाज को सुनकर जनता एकत्रित हो गयी। जनता द्वारा इस घटना की सूचना राजा अजातशुत्र तक पहुँचा दिया। राजा अजातशत्रु तुरन्त आकर पूरे सम्मान के साथ राजा कोशल का दाह संस्कार करवाया।

विरुढ़क राजपद प्राप्त करने के कुछ समय बाद सोचा हमको नीचा दिखाने वाले शाक्य लोगों से बदला लेने के लिए मन बना लिया । ऐसा सोचकर एक बहुत बड़ी सेना साथ लेकर शाक्य लोग जहाँ रहते थे वहाँ जाने के लिए निकल पड़ा । बुद्ध उस समय श्रावस्ती में रहते थे । बुद्ध ने अपने दिव्य चक्षु से देखा विरूढ़क के कारण शाक्य लोगों का बहुत बड़ा विनाश होने वाला है । बुद्ध इर्दी शक्ति से श्रावस्ती से कपिलवस्तु चले गये। जाकर कपिलवस्तु के नजदीक एक छोटे से जंगल में एक पेड़ के नीचे समाधि मुद्रा में बैठ गये ।

कपिलवस्तु जाते समय राजा विरुढ़क ने देखा बुद्ध एक पेड़ के नीचे बैठा हुआ है । राजा विरुढ़क बुद्ध से कहा भाग्यवत आप बीना छाया वाले पेड़ के नीचे क्यों बैठ गये है ? छाया रहित इतना पेड़ है उसके नीचे आप क्यों नहीं बैठे है ? बुद्ध ने कहा महाराज आप की बात तो सही है लेकिन **'आति लोगों की तरफ से जो हवा आती है वह सुखदायक होता है'** । राजा विरुढ़क ने सोचा बुद्ध अपने जाति समूह के विनाश के बारे में सोचकर ही जाति समूह को अनुकम्पा करके बिना छाया वाले पेड़ के नीचे बैठा हुआ है । राजा विरुढ़क गम्भीरता पूर्वक सोचकर वापस श्रावस्ती चला गया । थोड़े दिन के बाद पुनः राजा विरुढ़क शाक्य लोगों को मारने के लिए अपनी सेना के साथ निकल पड़ा । उस दिन भी बुद्ध उसी तरह एक पेड़ के नीचे खड़े हो गये । उस समय भी राजा विरुढ़क वापस चला गया । जब तीसरी बार राजा विरुढक अपनी सेना के साथ फिर से शाक्य परम्परा को नष्ट करने के लिए निकला । तीसरी बार भी बुद्ध पहले जैसे ही कियें और राजा विरुढ़क अपनी सेना के साथ वापस श्रावस्ती लौट आया।

राजा विरुढ़क चौथी बार जब शाक्य लोगों को मारने के लिए निकला तो बुद्ध ने सोचा शाक्य समूह पूर्व जन्म में कोई न कोई बहुत बड़ा पाप किया होगा । ऐसा सोचकर उसके बारे में सोचना शुरू किया । बुद्ध पुब्बे निवासनुस्मृति ज्ञान शक्ति से देखा कि पूर्व जन्म में ये लोग मिलकर एक बहुत बड़ी मछली के तालाब में जहर डालकर बहुत-सी मछलियों को मार डाला । यह अकुशल कर्म बहुत बड़ा है । जिससे शाक्य लोगों को बचाना इतना आसान नहीं है । सब कुछ समझ में आने के बाद बुद्ध नर संहार रोकने के लिए नहीं गये ।

परिच्छेद - 50

बिना नाँव के नदी को पार करना

भिक्षुओं के लिए अपरिहानि धर्मदेशना

महाकारुणिक तथागत बुद्ध वेदुलुम्प ग्राम के बाद वहाँ से निकलकर राजगृह में गिज्जकूट पर्वत पर रहना शुरू कर दिया । उस समय राजा अजातशत्रु लिच्छवी वंश को नष्ट करने के लिए मन बना रहा था । लिच्छवी राज्य और अजातशुत्र का राज्य दोनों ही गंगा नदी के दोनों तरफ आमने-सामने बसा था । पाटिलीपुत्र नगर को सभी अंगों से परिपूर्ण कराकर एक किला बनाने के लिए अपने प्रधान अमात्य सुनीध और बस्सकार दोनों लोगों को लगा दिया । एक दिन वस्सकार अमात्य बुद्ध के पास आकर उनके समीप बैठकर हाल-चाल पूछा ।

उस समय भिक्षु आनन्द बुद्ध को पंखा झल रहे थे । बुद्ध ने भिक्षु आनन्द से पूछा कि मैंने जो राजा लिच्छवी के लिए सात अपरिहानि धर्म का देशना किया था उसका पालन वे करते है कि नहीं करते है । भिक्षु आनन्द ने कहा कि लिल्छवी राजा लोग सात अपरिहानि धर्म का पूर्ण रूप से पालन करते है । यह बात सुनकर बुद्ध ने कहा यदि सातों का पालन किया तो बहुत बड़ी चीज है । यदि सातों में से एक भी पालन किया तो उन लोगों का अपरिहानि एक भी नहीं होगा । महाकारुणिक बुद्ध वस्सकार अमात्य को कहा मैं वैशाली नगर में सारन्दद चैत्य रहते समय लिच्छवी राजाओं को सात अपरिहानि धर्म का देशना किया । उस सात अपरिहानि धर्मदेशना का पालन करने तक कभी भी उन लोगों को कोई हानि नहीं होगा ।

वस्सकार ब्राह्मण अमात्य बुद्ध को छोड़कर चले जाने के पश्चात् बुद्ध ने भिक्षु आनन्द से कहा सभी भिक्षुओं को उपास्थानशाला में एकत्रित होने के लिए सन्देश भेजो । जैसा बुद्ध ने कहा उसी के अनुसार भिक्षु आनन्द भी किया । सभी भिक्षु उपास्थानशाल में उपस्थित होने के पश्चात् बुद्ध ने

भिक्षुओं को सामने रखकर सात अपरिहानि धर्म सात तरीके से पाँच धर्मदेशना और छ: का एक धर्मदेशना किया ।

प्रथम - सात अपरिहानि धर्म

(1) भिक्षु हरवक्त एकत्रित रहना चाहिए ।

(2) भिक्षुओं को एक साथ उठना-बैठना, संघ कर्म एवम् विनयधर्म करना आवश्यक है ।

(3) बुद्ध जो कोई नियम नहीं बनाया उस तरह कोई भी नियम स्वयं नहीं बनाना है । बुद्ध ने जो नियम बनाया है उसी नियम को सही ढ़ग से पालन करना ।

(4) प्रव्रज्या-उपसम्पदा के अनुसार जेष्ठ भिक्षुओं के लिए सम्मान प्रदान करना और साथ ही साथ उस भिक्षु की बात मानना ।

(5) तृष्णा में लिप्त नहीं होना ।

(6) अरण्य सेनाशन में रहकर ध्यान भावना करना ।

(7) हर क्षण विचार-विमर्श चित्त से रहना । साथ-साथ कोई भिक्षु अपने सामने नहीं आया तो इन लोगों के आने का प्रियभाव से प्रार्थना करना।

दूसरा - सात अपरिहानिधर्म

(1) चीबर का सिलाई करना, चीवर को धोना जैसे कार्यों पर पूरा समय न बिताकर समय के अनुसार जो सामने आता है उस काम को समय पर समाप्त करना ।

(2) अनाप-सनाप के बातों पर निरन्तर समय नहीं बिताना ।

(3) हर वक्त सोते नहीं रहना ।

(4) भिक्षुणियों के बीच में जाने का मन नहीं बनाना ।

(5) अकुशल किस्म के चित्त से अलग रहना और उसके साथ-साथ ऐसे व्यक्तियों से भी अलग रहना ।

(6) दुराचारी और पापी लोगों के साथ संगति नहीं करना ।

(7) प्रथम ध्यान मिलने से उसी पर रूक कर संतुष्ट न होकर आगे ध्यान बढ़ाने के लिए कोशिश करना ।

तीसरा - सात अपरिहानि धर्म

(1) श्रद्धावान होना ।

(2) पाप कर्म करने में लज्जित होना ।

(3) पाप कर्म करने में भयभित होना ।

(4) बहुत कुछ सुना हुआ व्यक्ति होना ।

(5) शुरू किया हुआ कायिक, चैतसिक विर्य से युक्त होना ।

(6) सदैव स्मृति चित्त से रहना ।

(7) प्रज्ञावन्त होना ।

चौथा - सात अपरिहानि धर्म

(1) स्मृति सम्बोध्यांग को आगे बढ़ाना ।

(2) धर्मविचय सम्बोध्यांग को आगे बढ़ाना ।

(3) वीर्य सम्बोध्यांग को आगे बढ़ाना ।

(4) प्रीति सम्बोध्यांग को आगे बढ़ाना ।

(5) प्रश्रब्धि सम्बोध्यांग को आगे बढ़ाना ।

(6) समाधि सम्बोध्यांग को आगे बढ़ाना ।

(7) उपेक्षा सम्बोध्यांग को आगे बढ़ाना ।

पाँचवा - सात अपरिहानि धर्म

(1) अनित्य संज्ञा को आगे बढ़ाना ।

(2) अनात्म संज्ञा को आगे बढ़ाना ।

(3) आदिनव संज्ञा को आगे बढ़ाना ।

(4) प्रहाण संज्ञा को आगे बढ़ाना ।

(5) अशुभ संज्ञा को आगे बढ़ाना ।

(6) विराग संज्ञा को आगे बढ़ाना ।

(7) निरोध संज्ञा को आगे बढ़ाना ।

छठवाँ - छः अपरिहानि धर्म

(1) सभी ब्रह्मचर्यों के सम्मुख और विमुख दोनों जगहों पर मैत्री चित्त रखना ।

(2) सभी ब्रह्मचयों के लिए सम्मुख एवम् विमुख दोनों जगहों पर मैत्री वाक कर्म करना ।

(3) सभी ब्रह्मचर्यों के लिए सम्मुख और विमुख दोनों जगहों पर मैत्री मनस्य कर्म करना ।

(4) जो धार्मिक चार प्रत्यय सभी ब्रह्मचारियों के बीच में साधारण ढ़ग से परिभोग करना

(5) अपने साथ रहने वाले ब्रह्मचारियों के साथ शील संयुक्त रहना।

(6) सम्यक दृष्टि से युक्त होकर सभी ब्रह्मचारियों के साथ समभाव से रहना ।

महाकारुणिक तथागत बुद्ध राजगृह गिज्जकूट पर्वत में रहकर इस तरह का अपरिहानिधर्म बहुत विस्तार पूर्वक धर्म देशना किया ।

राजगृह से अम्बलट्ठिका नगर मे प्रवेश करना

बुद्ध राजगृह से भिक्षु महासंघ से निकलकर चारिका करते हुए राजगृह और नालन्दा दोनों नगर के बीच से सजा हुआ अम्बलट्ठिका उद्यान में प्रवेश किया । यह उद्यान राजा के लिए बनवाया था । बुद्ध महापरिनिर्वाण के लिए समय आने के कारण शील का स्वभाव यही है, प्रज्ञा का स्वभाव यही है। जो शील में रहकर किया हुआ विदर्शना प्रज्ञा महत्त्व फल है । विदर्शना द्वारा मिला हुआ प्रज्ञा से कामाश्रव, भावाश्रव, दृष्टाश्रव, अविद्याश्रव, जैसे श्रव से युक्त होने का धर्म देशना किया ।

अम्बलट्ठिका से नालन्दा

भिक्षु महासंघ के साथ महाकारुणिक तथागत बुद्ध अम्बलट्ठिका से निकलकर नालन्दा के पावारिक आम्र वन में रहना शुरू किया । उसी स्थान पर बुद्ध शील, समाधि और प्रज्ञा जैसे धर्मदेशना में अपना समय बिताया।

नालन्दा से पाटिली ग्राम

महाकारुणिक तथागत बुद्ध नालन्दा के अम्बलट्ठिका से निकलकर भिक्षुमहासंघ के साथ पाटिल ग्राम में पहुँच गये । उस नगर के वासी जनता महाकारुणिक तथागत बुद्ध के आने की खबर मिलने पर बुद्ध से मिलने के लिए बुद्ध के पास एकत्रित हो गये । सभी लोगों का विचार था कि अपने-

अपने के घर में आकर रहे । सभी लोगों ने बुद्ध से याचना किया कि हमारे घर पर आकर रहने के लिए बुद्ध ने निशब्द होकर उपासक लोगों की बात को स्वीकार किया । उपासक लोग अपने-अपने आवासों में बुद्ध को आराम से रहने के लिए पूरा प्रबन्ध किया । उसी स्थान पर बुद्ध ने पाटिलग्राम के उपासक लोगों को शील पालन करने का अच्छा फल के बारे में बताया। दुशील होने के गलत परिणाम को भी बताया ।

उस समय राजा अजातशत्रु का दोनों प्रधान अमात्य सुनीध वस्सकार ने मिलकर लिच्छवी राजाओं को हराने के लिए पाटिली ग्राम में एक शहर को विकसित किया । उस समय बुद्ध उस स्थान पर जाकर कौन-सा महानुभाव सम्पन्न देवता किस स्थान पर अधिगृहित होगा । कौन-सा अल्प यस्य देवता किस जगह पर अधिगृहित होगा । और चलकर ऐसा शहर पाटिलीपुत्र के नाम से प्रसिद्ध होगा प्रसिद्ध होने के साथ-साथ उस नगर का एक भाग आग से नष्ट होगा, एक भाग नदी गंगा के पानी से वह जाने के कारण नष्ट होगा, और एक भाग नगर के लोगों का आपसी मतभेद के कारण लड़ाई-झगड़ा से नष्ट होने का भी भविष्य का दृश्य दिखाई दिया ।

गौतम द्वारा गौतम तीर्थ

सुनीध वस्सकार अमात्य बुद्ध के पास आकर अपने-अपने घर पर बुद्ध प्रमुख भिक्षु महासंघ को भोजन दान के लिए आमन्त्रित किया । दोनों का निमन्त्रण बुद्ध ने स्वीकार किया । समय आने पर बुद्ध भिक्षु महासंघ के साथ जाकर भोजन दान किया । भोजन दान के बाद बुद्ध ने **'यस्मिं पदे से कम्पेति'** गाथा से धर्मदेशना अनुमोदना किया । भोजन दान के बाद बुद्ध कौन-सी नगर द्वार से बाहर निकले उस द्वार को गौतम द्वार का नाम दिया। वहाँ से निकलकर बुद्ध गंगा नदी के किनारे समापत्ति सुख से बैठ गये । जिस स्थान पर बुद्ध गंगा नदी के किनारे समाधि सुख विहरण करके बैठे थे । उस स्थान को गौतम तीर्थ के नाम से व्यवहार करना शुरू कर दिया।

उस समय गंगा नदी पानी से भर गया । गंगा नदी पार करने के लिए लोग नाँव खोजते रहे लेकिन बुद्ध और भिक्षु महासंघ इर्दीशक्ति से एक क्षण में गंगा नदी को पार कर गये । इस घटना का मातृका करके बुद्ध ने एक उदान वाक्य किया ।

“घोर संसार सागर से तृष्णा नदी से पार होने वाले उत्तम आर्य मार्ग नाम से जाना जाने वाला नाव के माध्यम से किचड़ को स्पर्श न करके पार हो जाता है । बड़ी जल धारा से पार होने के लिए लोग नाव तैयार करता है लेकिन आर्य मार्ग से युक्त तथागत एवम् तथागत के श्रावकगण बिना नाव के नदी को पार करता है” । (उदान वाक्य)

कोटि ग्राम में पधारना

बुद्ध कोटि ग्राम में पधारने के बाद एक दिन भिक्षुओं को आमंत्रित किया । आर्यशील, आर्य समाधि, आर्य प्रज्ञा, आर्य विमुक्ति ये चार शील धर्म अवबोध-प्रतिबोध नहीं करने के कारण पूर्व जन्म में अनन्त संसार में मैं और हमारे भिक्षुगण अनन्त बार जन्म एवम् मरण का सामना करना पड़ा। इस जन्म में हम और हमारे भिक्षुगण यह सब अवबोध एवम् प्रतिबोध किया है । इसलिए हमको और हमारे भिक्षुसंघ को कोई पुर्नजन्म नहीं लेना होगा। ऐसा कहकर उसी स्थान पर शील, समाधि, प्रज्ञा इन तीनों के महत्व के बारे में प्रकाश डाला ।

ञातिक ग्राम में पधारना

कोटिग्राम में थोड़ी दिन विश्राम करने के बाद वहाँ से महाकारुणिक तथागत बुद्ध ञातिक ग्राम की ओर चले गये । उस स्थान पर मिज्जकावसत नामक एक आवास में विश्राम के लिए ठहरे । उस गाँव में शाल भिक्षु, नन्दा भिक्षुणी जैसे लोगों का देहान्त हो गया । भिक्षु आनन्द ने पूछा शाल भिक्षु, नन्दा भिक्षुणी जैसे लोग मरने के बाद किस योनि में उत्पन्न हुआ है । उसी का मातृका करके बुद्ध उस जगह पर धर्मादर्स नामक धर्म प्रमुख की देशना की । उसके बाद उसी स्थान पर महाकारुणिक तथागत बुद्ध जनवसभ सूत्र की देशना की ।

वैशाली में पधारना

ञातिक ग्राम के बाद बुद्ध वैशाली नगर में पधारकर सुप्रसिद्ध आम्रपाली नगर बधु के आम्र वन में बैठकर भिक्षुओं को आमंत्रित करके सतीपट्ठान सूत्र का देशना किया । महाकारुणिक तथागत बुद्ध का आम्र वन में आकर ठहने की सूचना आम्रपाली नगर वधु को मिला । दूसरे दिन आम्रपाली बुद्ध

के पास जाकर भिक्षु संघ के साथ भोजन दान करने के लिए अपने यहाँ पधारने का नियंत्रण दिया । संघदान के बाद आम्रपाली नगर बधु, अपना पूरा आम का बगीचा बुद्ध प्रमुख महासंघ को दान दिया । बुद्ध वैशाली में कुछ दिन ठहरने के बाद वैशाली महानगर के पश्चिम दिशा के एक जंगल में महासिंहनाद सूत्र का धर्मदेशना किया ।

परिच्छेद - 51

अधिक भोजन करने से व्यक्ति की मृत्यु

वैशाली नगर में सुनक्खत्त लिच्छवी भिक्षु बनने के बाद विदर्शना भावना करने के फलस्वरूप दिव्य चक्षु और दिव्य स्रोत दोनों प्राप्त करने का तरीका के बारे में बुद्ध से पूछा । बुद्ध ने अपने दिव्य चक्षु से देखा सुनक्खत्त पूर्व जन्म में एक शीलवान व्यक्ति को तमाचा मारने के कारण उस व्यक्ति के कान का परदा फट गया । उस व्यक्ति के कान का परदा फट जाने के बाद वह शीलवान व्यक्ति बहरा हो गया । बुद्ध ने देखा यह व्यक्ति को कभी भी दिव्य स्रोत नहीं मिलेगा । इसलिए बुद्ध ने सुनक्खत्त को दिव्य स्रोत, दिव्य चक्षु दोनों को प्राप्त करने का मार्ग के बारे में नहीं बताया । दिव्य चक्षु दिव्य स्रोत का मार्ग बुद्ध द्वारा प्रकाशित नहीं करने के कारण सुनक्खत भिक्षु बुद्ध के साथ ईर्ष्या से भरा हुआ दुश्मनी करना शुरू कर दिया ।

बुद्ध बुलू जनपद में उत्तर नामक एक ग्राम में रहते थे । उस समय सुनक्खत्त भिक्षु कुकुरवत रखने वाला कोरिक्खित्त नामक एक तिर्थक को देखा । उसे देखकर सोचा यह तो कोई अरहत जरूर होगा । बुद्ध ने कुकुर सुनक्खत्त से कहा जो तुम सोचा वह गलत है । कोरक्खित्त तिर्थक अरहत नहीं है । जरूरत से अधिक खाना खाने के कारण और सात दिन के बाद उसका देहान्त होकर कंजक असुर निकाय में उत्पन्न होने का कारण बताया । मरने के बाद सभी लोग मिलकर कोरक्खित्त तिर्थक के मृत शरीर भिरथम्भ नामक शमशान घाट पर खिचकर ले जाकर छोड़ने की बात भी बुद्ध ने बताया ।

सुनक्खत्त भिक्षु यह पूरी बात कोरक्खित तिर्थक के पास जाकर बता दिया । कोरक्खित्त तिर्थक के साथ बुद्ध को हम झूठा कर देगे । ऐसा सोचकर निराहार होकर समय बिताया । कोरक्खित्त तिर्थक का एक उपासक ने सोचा हमारा धर्म गुरु इतना दिनों से दिखाई नहीं दिया । इसलिए उसको कुछ

मधुर भोजन बनवाकर उसको देगे । उपासक भोजन ले जाकर तिर्थक के सामने रख दिया । तिर्थक के इतना मधुर भोजन देखने के बाद कोरक्खित्त निगण्ठ तिर्थक के मुँह से पानी आना शुरू हो गया । निगण्ठ तिर्थक ने कहा बुद्ध की बात सही हो या झूठा हो इतना मधुर भोजन कैसे छोड़ेगे ? सोचकर पूरा भोजन खा डाला । इतना सभी भोजन करने के बाद भोजन नहीं पचने के कारण कोरक्खित्त निगण्ठ तिर्थक का देहान्त हो गया । मरने के बाद कालकंजक नरक में उत्पन्न हो गया । उसका मृत शरीर एक स्थान पर ले जाने के लिए निगण्ठ समूह बहुत मेहनत किये लेकिन उस मृत शरीर उस स्थान को से उठा नहीं पाये । इसलिए उस मृत शरीर को उसी स्थान पर छोड़कर चले गये ।

सुनक्खत्त यह आश्चर्य देखा और देखने के बाद खुद मृत शरीर से पूछा तुम काल कंजक असुर निकाय में उत्पत्ति लेने की बात सही है कि नहीं है ? उस समय बुद्ध ने असुर को अपनी इर्दी से मृत शरीर में प्रवेश करवाया । मृत शरीर ने कहा हाँ सही है । मैं काल कंजक असुर निकाय में उत्पन्न हुआ है ।

इसके बाद बुद्ध वैशाली के कूटागारशाला में आराम कर रहे थे । उसी नगर में कालार मट्टुक नामक एक निगण्ठ था । सुनक्खत्त उसके पास जाकर बिना अनुमति के प्रश्न पूछते थे । बिना अनुमति के प्रश्न पूछने से वहाँ से सुनक्खत्त को भगा दिया । सुनक्खत्त को गलतफहमी हो गया कि हमने एक अरहत का अपमान किया । बाद में कालार मट्टुक से क्षमा माँगी ।

बुद्ध ने देखा सुनक्खत्त गलत फहमी में कालार मट्टुक के बारे में प्रसन्न होकर काम करने का तरीका देखने के बाद बुद्ध कालार मट्टुक के विषय में सुनक्खत्त को आगाह किया । कालार मट्टुक मिथ्या तपस्या करने के कारण बहुत-सा लाभ सत्कार समाज से प्राप्त किया । लेकिन मरने के बाद वह भी नरक में चला गया ।

वैशाली नगर में पाठिक पुत्र निगण्ठ नाम का एक साधु रहता था । उसको भी बहुत लाभ सत्कार मिलता था । वह हरवक्त कहता था कि हम वाद-विवाद करके बुद्ध को हरा सकता है । सुनने वाले आम जनता भी सोचा यह भी बहुत बड़ा तपस्वी है । वह सक्षम जरूर होगा । ऐसा सोचकर सभी लोग पाठिक पुत्र निगण्ठ को महासत्कार करना शुरू कर दिया ।

सुनक्खत्त परिव्राजक पाठिक पुत्र निगण्ठ की बात को सुनकर उसके पास गया । वहाँ जाकर बुद्ध के साथ वाद-विवाद करने को तैयार रहने के लिए बोला और वहाँ बुद्ध को दूसरी जगह ले जायेंगे, बोलकर पाठिक पुत्र निगण्ठ को गुमराह करके सुनक्खत्त फिर बुद्ध के पास आया । बुद्ध से कहा पाठिक पुत्र निगण्ठ आप के साथ प्रातिहार्य करने के लिए तैयार है ऐसा खबर मिलता है यह सच है या नहीं ।

बुद्ध ने कहा मैं बुद्ध हूँ । वह लोग हमारे पास आने का साहस नहीं करते हैं ।

सुनक्खत्त बोला भाग्यवत आप बिल्कुल सही उसी बात पर कायम रहिए ।

बुद्ध ने पूछा तुम ऐसे क्यों बोल रहे हो ? बाकि श्रमण लोग भी अपने को बुद्ध समझते हैं । वही साधु लोग अपने दृष्टि को छोड़ना नहीं चाहता है । कोई कारणवश सिंह बाघ वेश से बुद्ध के पास आने से बुद्ध की बात झूठा साबित होगा । ऐसा होने से हम बुद्ध को झूठा बनाकर निग्रह बनायेंगे ।

बुद्ध ने कहा जो मैं कह रहा हूँ वह कभी झूठ नहीं होता है ।

बुद्ध उसी दिन शाम को पाठिक निगण्ठ पुत्र के आराम में पहुँच गये । सुनक्खत्त परिव्राजक ने कहा वैशाली में श्रमण गौतम एवम् पाठिक पुत्र निगण्ठ का प्रातिहार्य देखेगे । बहुत बड़ा जन समूह पाठिक पुत्र के आराम में एकत्रित होगया । पाठिक पुत्र निगण्ठ बुद्ध के आने की खबर सुनते ही अपना आश्रम छोड़कर भाग गया । वहाँ से भागकर तिम्बरूक परिव्राजक के आराम में चले गये । आराम के अन्दर कोई छिपने का स्थान नहीं होने के कारण आराम के पीछे एक छोटा जंगल था उसी जंगल में एक पत्थर के उपर बैठ गया ।

बुद्ध ने सोचा यह अन्धवाला (मूर्ख) किसी की बात सुनकर उस स्थान पर वापस आ गया तो एकत्रित जनसमूह उसको मार डालेगा । इसलिए बुद्ध ने अधिष्ठान किया पाठिक पुत्र निगण्ठ का शरीर उसी पत्थर पर चिपका रहे ।

जब जनसमूह को पता चला पाठिक निगण्ठ पुत्र भाग गया और भागकर तिम्बरुक परिव्राजक के आराम में छिपने का खबर मिला । सभी लोगों ने खबर भेजा कि वापस अपने आराम में आ जाने के लिए ।

पाठिक पुत्र निगण्ठ ने कहाँ मैं अपने आराम में आ रहा हूँ । एक पुरुष सच्ची घटना को जनता के सामने जाकर बता दिया । बुद्ध ने कहा पाठिक पुत्र निगण्ठ हमारे यहाँ आने के लिए सक्षम नहीं है ।

लिच्छवी राज समूह का एक अमात्य पाठिकपुत्र निगण्ठ के पास जाकर उसको बुद्ध के पास ले आने का बहुत कोशिश किया लेकिन वह अमात्य भी सफल नहीं हुआ । वह भी वापस आकर एकत्रित जन समूह को सही बात बता दिया ।

बुद्ध ने कहा किसी भी किमत पर पाठिक पुत्र निगण्ठ परिव्राजक हमको देखने के लिए नहीं आयेगा । उसको ले आने के लिए भी कोई सक्षम नहीं है ।

उस समय जाली नामक लकड़ी का पात्रा इस्तेमाल करने वाले एक परिव्राजक और उपासक की कहानी सुना । उसने कहा हम जाकर उन्हें ले आऊँगा वह भी जाकर बहुत कोशिश किया लेकिन पाठिक पुत्र निगण्ठ उसी पत्थर में छिप गया । जालि पाठिक पुत्र निगण्ठ को बहुत गाली दिया । वह भी जाकर एकत्रित जनसमूह को पूरा कहानी बता दिया । बुद्ध ने कहा कोई भी कुछ करे पाठिक पुत्र निगण्ठ किसी भी कारण किसी भी तरीके से हम लोगों के सामने नहीं आयेगा ।

बुद्ध एकत्रित जन समूह को धर्मदेशना करके तेजा धातु सम्पत्ति के मार्ग से आसमान में चढ़कर रश्मि चमकाकर एकत्रित जन समूह को प्रभावित करके कूटागारशाला बिहार में चले गये ।

आखरी वर्षावास वेलूवनाराम में

बुद्ध आम्रपाली के आम्रवन से निकल कर वेलूवनाराम जनपद तक पहुँच गये । वेलूवनाराम में पधारने के बाद बुद्ध ने सभी भिक्षुओं से कहा वैशाली के आस-पास वर्षावास करने के लिए बताया । महाकारुणिक तथागत बुद्ध स्वयं वेणूग्राम में वर्षावास किये । वेणूग्राम में वर्षावास के दौरान बुद्ध ने अधिष्ठान किया कि आज से दस महीने के बाद मैं महापरिनिर्वाण प्राप्त करेंगे । (अपना प्राण त्याग देंगे) । उसी समय महाकारुणिक तथागत बुद्ध को लोहित पक्खन्दिका (भगन्दर-बावासीर) नामक बीमारी उत्पन्न हुआ ।

परिच्छेद - 52

शक्रदेवेन्द्र द्वारा बुद्ध की सेवा

महाकारुणिक तथागत बुद्ध को लोहित पक्खन्दिक होने का खबर शक्रदेवेन्द्र को मिला । उसी दिन रात्रि को शक्रदेवेन्द्र मनुष्य का वेश लेकर बुद्ध के पास आकर बुद्ध का हाथ-पैर दबाना शुरू कर दिया । बुद्ध ने पूछा आप कौन है ? उसने कहा मैं शक्रदेवेन्द्र हूँ । बुद्ध ने पूछा इधर क्यों आया है ? शक्रदेवेन्द्र ने कहा आप के बीमार होने के कारण मैं आप की सेवा करने के लिए यहाँ आया हूँ । बुद्ध ने कहा मनुष्य शरीर का गन्ध सौ योजन (1200 कि.मी.) तक गले में बँधा सड़ा मांस जैसे है । देवता लोगों को यह सहन नहीं होता है । इसलिए आप जाइए । हमारी सेवा के लिए बहुत से भिक्षु है बुद्ध के इस प्रकार कहने के बाद शक्रदेवेन्द्र ने कहा भाग्यवत आप का शील सुगन्ध आग्रह करने के कारण मैं चौरासी हजार योजन पार करके आपके पास आया इसलिए मैं आप की सेवा करना चाहता हूँ । ऐसा कहकर बुद्ध का बालंजन (टालेट का वर्तन) किसी को हाथ ने लगाने देकर स्वयं अपने हाथ से उठाकर सिर पर रखकर एक सुगन्धित भोजन को ले जाने बहुत खुशी से ले गया । बुद्ध अपने समापत्ति शक्ति से वीर्य का प्रयोग करके भगन्दर रोग को दस महिने तक नहीं होने के लिए नियन्त्रित किया । बुद्ध का स्वास्थ ठीक होने के बाद शक्रदेवेन्द्र सन्तुष्ट हो गया और सन्तुष्ट होकर बहुत खुशी से वहाँ से वापस चला गया। शक्रदेवेन्द्र के उपस्थान के बारे में भिक्षु संघ के बीचमें चर्चा शुरू हो गया। उसका मातृका करके महाकारुणिक तथागत बुद्ध ने 'साहु दस्सन मरियान' जैसे चार गाथाओं से इस घटना का वर्णन किया । (अंक 163)

बुद्ध का धर्म में कोई बात छिपा नहीं है एकदम खुला हुआ है । (बुद्ध धम्म संघ के बारे में)

रोगी स्वभाव से मुक्त होने के बाद महाकारुणिक तथागत बुद्ध अपने कुटि से निकलकर विहार में एक छाया में आसन ग्रहण कियें । उस समय भिक्षु आनन्द बुद्ध के पास आ गये । भिक्षु आनन्द ने कहा भाग्यवत आप

के बीमार होने से मैं बहुत शोकाकुल हुआ हूँ । लेकिन हमारे मन में आया आप आखरी उपदेश दिये बगैर महानिर्वाण प्राप्त नहीं करने का इरादा रखने के कारण मैं थोड़ा सन्तुष्ट हो गया हूँ । तथागत बुद्ध ने भिक्षु आनन्द से कहा जो मैंने अवबोध किया है उस धर्म को मैंने थोड़ा भी नहीं छिपाया सब कुछ आप लोगों के सामने देशना किया है । इसलिए सभी लोग **अत्त दिपो भवः** के अनुसार धर्म को अपने शरण में लेकर रहने का महत्त्व के बारे में भिक्षु आनन्द के सामने खास प्रकाश डाला । (अत्त दिपो भव)

बेलुबनाराम से श्रावस्ती को पधारना

वर्षा ऋत्तु समाप्त होने के बाद महाकारुणिक तथागत बुद्ध वेलुबनाराम से निकलकर श्रावस्ती में जाकर रहना शुरू कर दिया । श्रावस्ती पधारने के बाद महाकारुणिक तथागत बुद्ध ने कहा मेरे महापरिनिर्वाण के लिए और चार महीना बचा है । उनकी यह बात सुनकर भिक्षुसंघ शोकभरित होकर बुद्ध के चारों तरफ एकत्रित हो गये । पृथक् जन भिक्षु लोगों के आँख से आँसू बहना शुरू हो गया । अरहत भिक्षु लोगों ने धर्म संवेग प्रकट किया । अब क्या करेंगे ? कौन कैसे करेगा ? अब क्या होगा ? इसके बाद क्या करेंगे ? जैसे बात करते-करते सभी भिक्षु संघ विचार-विमर्श कर रहे थे । लेकिन एक भिक्षु जिसका नाम धर्माराम था वह किसी के पास न जाकर चुपचाप बैठा हुआ था कुछ पूछने से भी जवाब नहीं देता था । धर्माराम भिक्षु बुद्ध के जीवन काल में ही निर्वाण अवबोध के लिए भरपूर कोशिस किया लेकिन नहीं पाने के कारण चूप से रह गया । कोई भिक्षु जाकर कहा देखिए धर्माराम भिक्षु आप से कोई स्नेह नहीं करता है । यह बात सुनकर बुद्ध ने धर्माराम भिक्षु को अपने पास बुलाया और बुलाकर पूछा जो सभी भिक्षु बोल रहे है वह सही है या नहीं । उसके बाद भिक्षु धर्माराम अपने मन की पूरी बात तथागत बुद्ध को बताया । धर्माराम भिक्षु की बात को सुनकर बुद्ध तीन बार साधु-साधु-साधु बोले । बुद्ध ने कहा—

'भिक्षुओं यदि कोई भिक्षु मेरे लिए स्नेह करता है तो उसे धर्माराम जैसे हो जाना चाहिए । सुगन्धित पुष्प, सुगन्ध धुप जैसे चीजों को पूजा करने वाले मेरे पूजा नहीं करते बल्कि धर्मानुसार प्रतिपत्ति से अपना जीवन व्यतीत करना ही मेरा पूजा होता है' । (अंक 164)

परिच्छेद - 53

अरहत सारिपुत्त का परिनिर्वाण कार्तिक पूर्णिमा को

महाकारुणिक तथागत बुद्ध श्रावस्ती में रहते समय एक दिन कहा मैं अब सात दिन से ज्यादा जीवित नही रहूँगा । इसलिए अपने माताजी को सम्यक दृष्टि प्रतिष्ठा करके जन्म स्थान पर ही परिनिर्वाण करने की बात कही । महाकारुणिक तथागत बुद्ध के पास जाकर प्रणाम करके उनसे अनुमति लेकर भिक्षु महासंघ के साथ अपने जन्म स्थान नालक गाँव को चले गये। नालक गाँव जाकर अपने पूज्य माता जी को धर्मदेशना किया । उस धर्मदेशना को सुनकर अरहत सारिपुत्र की पुज्य माता जी सोवान हो गयी । उसी दिन भोर में सारिपुत्र अरहत परिनिर्वाण को प्राप्त किया । भिक्षु चुन्द्र सारिपुत्र का पात्रा और चीवर जला हुआ शरीर का अवशेष लेकर श्रावस्ती जेतवनाराम में जाकर भिक्षु आनन्द के साथ तथागत बुद्ध के पास गये । बुद्ध ने कहा सारिपुत्र अरहत का अवशेष भरा हुआ छननी को अपने दोनों हाथों से स्वीकार किया। उसे स्वीकार करने के बाद अरहत सारिपुत्र का कितना गुण था उसका वर्णन किया । तथागत बुद्ध ने वर्णन करने के बाद अरहत सारिपुत्र के नाम पर एक स्तूप बनवाया । स्तूप बनवाकर बाकि भिक्षुओं के साथ राजगृह में चले गये ।

अरहत महामौदगल्यायन का परिनिर्वाण

अरहत महामौदगल्यायन दिव्य लोक और नरक सभी जगहों पर चारिका करके आकर इस पृथ्वी पर जो जीव पुण्य और पाप जो-जो किया उसको विपाक (फल) के बारे में जनता को विस्तारपूर्वक बताया ।

अरहत महामौदगल्यायन की बात सुनकर जनता बुद्ध का ज्यादा से ज्यादा सत्कार करना शुरू कर दिया । महाकारुणिक तथागत बुद्ध को ज्यादा सत्कार सम्मान अहरत महामौदगल्यायन के कारण मिलने से अन्यतिर्थक समूह एकत्रित होकर अरहत महामौदगल्यायन को जान से मारने के लिए एक कार्यक्रम बनाया । अन्य तिर्थक लोग अपने उपासक समूह से पैसा इकट्ठा

किया और उस पैसे को माफियाँ लोगों को दे दिया। माफिया लोगों को बताया कि जो काल शिला पर्वत में रहने वाला अरहत महामौदगल्यायन को जान से मारने का बन्दोवस्त करो। माफियाँ लोग कालशीला पर्वत में जाकर अरहत महामौदगल्यायन को जान से मारने के लिए घेर लिया। अरहत महामौदगल्यायन को इसकी जानकारी हो गयी। अरहत महामौदगल्यायन एक सूक्ष्म शरीर के माध्यम से कहाँ से निकल गये। माफिया लोगों को अरहत महामौदगल्यायन को नहीं देखने से वहाँ से निराश होकर वापस चले गये। उसके बाद दूसरे दिन भी आकर अरहत महामौदगल्यायन को जान से मारने के लिए घेर लिया। उस दिन भी अरहत महामौदगल्यायन अपनी इर्दी शक्ति से आसमान से बाहर चले गये। अरहत महामौदगल्यायन ने सोचा हमें जान से मारने के लिए ये माफिया लोग हमारे पीछे क्यों पड़े हैं ? इसका मतलब है मैं कोई न कोई बहुत बड़ा पाप कर्म किया होगा। ऐसा सोचकर उसी जगह पर रह गया। माफिया लोग आकर अरहत महामौदगल्यायन की खूब पिटाई की और हड्डी तक तोड़ दिया। सब कुछ होने के बाद माफियाँ लोगों ने सोचा अरहत महामौदगल्यायन का प्राण निकल गया। ऐसा सोचकर अरहत महामौदगल्यायन को एक जंगल में फेककर चले गये। अरहत महामौदगल्यायन अपने ध्यान शक्ति से शरीर को यथा स्वरूप करके आसमान से राजगृह में बुद्ध के पास आकर कालशिला प्रदेश में परिनिर्वाण होने की सूचना दिया। बुद्ध ने अरहत महामौदगल्यायन से आग्रह किया एक छोटा सा धर्मदेशना करने के लिए। अरहत महामौदगल्यायन अनेक प्रकार के इर्दी प्रातिहार्य दिखाकर छोटा-सा धर्मदेशना किया। महाकारुणिक तथागत बुद्ध का श्रीपाद पदम को स्पर्श करके नमन किया। इसके बाद कालशिला जंगल में जाकर परिनिर्वाण प्राप्त किया। अरहत सारिपुत्र के परिनिर्वाण के दो हफ्ते के बाद अरहत महामौदगल्यायन का परिनिर्वाण अवस्था के दिन हुआ।

महाकारुणिक तथागत बुद्ध महामौदगल्यायन अरहत के शारीरिक अवशेष धातु की अन्तर्गत करके एक स्तूप बनवाया। महाकारुणिक तथागत बुद्ध राजगृह से निकलकर क्रमशः चलते-चलते गंगा नदी के किनारे समाधि मुद्रा में बैठकर अरहत सारिपुत्र व अरहत महामौदगल्यायन के परिनिर्वाण को लेकर धर्मदेशना किया। इसके पश्चात् वहाँ से निकलकर दक्षिण दिशा मे उरुवेला गाँव में पहुँच गये।

उरुबेला गाँव से निकलकर महाकारुणिक तथागत बुद्ध सुबह के समय

में वैशाली पधारे । दूसरे दिन भिक्षाटन करने के पश्चात् शाम को चौपाल चैत्य तक पहुँच गये । उस समय महाकारुणिक तथागत बुद्ध आनन्द को आमंत्रित किया और कहा चार इर्दी पाद (दिखाना जरूरी है) प्राप्त किया हुआ ज्ञानी पुरुष (बुद्ध पुरुष) के चाहने से एक कल्प या उससे ज्यादा समय तक जीवित रह सकता है । यह बात बुद्ध तीन बार भिक्षु आनन्द को बताया। उसी समय वसवर्ती मार एक भयंकर दृश्य दिखाकर भिक्षु आनन्द का दिमाग उस तरफ से हटा दिया । इसलिए बुद्ध को और जीवित रहने को निमंत्रित करने के लिए भिक्षु आनन्द भूल गये और बुद्ध से आज्ञा लेकर भिक्षु आनन्द एक पेड़ के नीचे बैठ गये ।

भिक्षु आनन्द बुद्ध को छोड़ कर हटने के थोड़ी देर बाद वसवर्ती मार बुद्ध के पास आ गया । महाकारुणिक तथागत बुद्ध के पास आकर बुद्ध ने कहा आज से तीन महीना बीतने के बाद बुद्ध ने महापरिनिर्वाण प्राप्त करने की सूचना दिया ।

वसवर्ती मार की बात को सुनकर बुद्ध तीन महिना समापत्ति सुख विवहरण किया । उसके बाद समापत्ति दुख विवहरण नहीं लगने के लिए अधिष्ठान किया । (आप्रुसंस्कार हल) उसी समय एक बहुत बड़ा भूकम्प शुरु हो गया । आसमान में मेघनाद शुरू हो गया । उसी अवस्था में महाकारुणिक तथागत बुद्ध के श्रीमुख से यह शब्द निकला ।

"बुद्ध मुनि पुर्नभवः का जन्म देने वाला कर्म को पूर्ण रुप से छोड़ा है । जैसे युद्ध भूमि में सेनापति युद्ध को जितना है उसी तरह विदर्शना भावना के माध्यम से सभी क्लेश युद्ध को जितता है । समथ भावना के माध्यम से क्लेश राशि से मुक्त हो गया है । प्रहिन क्लेश से युक्त व्यक्ति उसे कोई डर नहीं है । इसलिए अभीत बुद्ध मुनि आयु संस्कार छोड़ दिया कह कर प्रीति वाक्य अपने श्रीमुख से निकाला" । (अंक 165)

महाकारुणिक तथामत बुद्ध का अन्तिम उपदेश

महापरिनिब्बाण-सुत्त (ईसा पूर्व 484-83)

[1]ऐसा मैंने सुना—एक समय भगवान् राजगृह में गृध्रकूट-पर्वत पर विहार करते थे ।

1. दी.नि. 2:3 (16)

उस समय राजा मगध अजातशत्रु वैदही पुत्र [1]वज्जी चढ़ाई (= अभियान) करना चाहता था। वह ऐसा कहता था—'मैं इन ऐसे महर्द्धिक (= वैभव-शाली), = ऐसा महानुभाव, वज्जियों को उच्छिन्न करूंगा, वज्जियों का विनाश करूंगा, उन पर आफत ढाऊंगा'।

तब ०जातशत्रु० ने मगध के महामात्य (= महामंत्री) वर्षाकार ब्राह्मण को कहा—'आओ ब्राह्मण ! जहाँ भगवान् हैं, वहाँ जाओ। जाकर मेरे वचन से भगवान् के पैरों में सिर वंदना करो। आरोग्य = अल्प-आतंक, लघु-उत्थान (= फुरती), सुखविहार पूछो—'भंते ! राजा० वंदना करता है, आरोग्य० पूछता है'। और यह यह कहो—'भते ! राजा० वज्जियों पर चढ़ाई करना चाहता है, वह ऐसा कहता है—'मैं इन ०वज्जियों को उच्छिन्न करूंगा०'। भगवान् जैसा तुम्हें उत्तर दे, उसे समझकर (आकर) कहो, तथागत अयथार्थ (= वितथ) नहीं बोला करते'।

'अच्छा भो !' कहा वर्षकार ब्राह्मण अच्छे-अच्छे यानों को जुड़वाकर बहुत अच्छे यान पर आरूढ़ हो, अच्छे यानों के साथ राजगृह से निकला; (और) जहाँ गृध्रकूट-पर्वत था, वहाँ चला। जितनी यान की भूमि थी, उतनी यान से जाकर, यान से उतर पैदल ही जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया। जाकर भगवान् के साथ संमोदन कर एक ओर बैठा; एक ओर बैठकर भगवान् को बोला—

'गौतम !० 'राजा० आप गौतम के पैरों में सिर वंदना करता है०। ०वज्जियों को उच्छिन्न करूँगा०'।

---

1. अं.क. 'गंगा के घाट के पास आधा योजन अजातशत्रु का राज्य था, और आधा योजन लिच्छिवियों का।····· । वहाँ पर्वत के पाद (जड़) से बहुमूल्य सुगंध-वाला माल उतरता था। उसको सुनकर अजातशत्रु के 'आज जाऊँ कलजाऊँ' करते ही, सुगन्ध-वाला माल उतरता था। उसको सुनकर अजातशत्रु के 'आज जाऊँ कलजाऊँ' करते ही, लिच्छिवि एक राय, एकमत हो पहले ही जाकर सब ले लेते थे। अजातशत्रु पीछे जाकर उसे समाचार को पा क्रुद्ध हो चला जाता था। वह दूसरे वर्ष भी वैसा ही करते थे। तब उसने अत्यंत कुपित हो·····सोचा—'गण (= प्रजातंत्र) के साथ युद्ध मुश्किल है (उनका) एक भी प्रहार बेकार नहीं जाता। किसी एक पंडित के साथ मंत्रणा करके काम करना अच्छा होगा।····· (सोच) उसने वर्षकार ब्राह्मण को भेजा।

उस समय आयुष्मान् आनंद भगवान् के पीछे (खड़े) भगवान् को पंखा झल रहे थे । तब भगवान् ने आयुष्मान् आनंद को आमंत्रित किया—

'आनंद ! क्या तूने सुना है, (1) वज्जी बराबर (बैठक में) इकट्ठा (= सन्निपात) होने वाले हैं = सन्निपात-बहुल हैं ?'

'सुना है, भंते ! वज्जी बराबर०' ।

'आनंद ! जब तक वज्जी (बैठक में) इकट्ठा होने वाले रहेंगे = सन्निपात-बहुल रहेंगे; (तब तक) आनंद ! वज्जियों की वृद्धि ही समझना, हानि नहीं । (2) क्या आनंद ! तूने सुना है, वज्जी एक हो [1]बैठक करते हैं, एक हो उत्थान करते हैं; वज्जी एक हो करणीय (= कर्त्तव्य) को करते हैं ?'

'सुना है, भंते !० ।'

'आनंद ! जब तक० । (3) क्या ०सुना है, वज्जी अ-प्रज्ञप्त (= गैरकानूनी) को प्रज्ञप्त (= विंहित) नहीं करते, प्रज्ञप्त (= विहित) का अच्छेद नहीं करते । जैसे प्रज्ञप्त है, वैसे ही पुराने [2]वज्जि-धर्म (= वज्जि नियम), को ग्रहण कर, बर्ताव करते हैं ?

---

1. अ.क. 'आवश्यक बैठक के विगुल (= सन्निपात-भेरी)......के शब्द के सुनते ही खाते हुए भी, आभूषण पहनते भी, वस्त्र पहनते भी, अध-खाए ही, अध-भूषित ही, वस्त्र हपनते हुए ही......एक (= समय) हो जमा होते हैं, जमा हो सोचकर मंत्रणाकर, कर्त्तव्य करते हैं......।'

2. अ.क. '...पहले न किए, शुल्क, या बलि (= कर) या दंड को लेने वाला अ-प्रज्ञप्त करते हैं ।...। पुराना वज्जि-धर्म था,.....पहले वज्जि राजा लोग 'यह चोर है = अपराधी है; (कह) लाकर दिखलाने से, 'इस चोर को बांधो' न कह, विनिश्चय-महामात्य (= न्यायधीश) को देते हैं, वह विचार अचोर होने पर छोड़ देते, यदि चोर होता, तो अपने कुछ न कहकर, 'व्यवहारिक' को देते । वह भी विचार का अचोर होने पर न छोड़ देते, यदि चोर होता, तो 'सूत्रधार' को दे देते । वह भी वैसा ही कर सेनापति को, सेनापति उपराज को, उपराज राजा (—राष्ट्रपति) को, राजा विचारकर यदि अचोर होता तो छोड़ देता; यदि चोर होता, तो प्रवेणी-पुस्तक (कानून किताब) बंचवाता । उसमें—'जिसने यह किया उसको ऐसा दंड हो' लिखा रहता । राजा उसकी क्रिया को उसके मिलाकर, उसके अनुसार दंड करता।

'भंते ! मैंने यह सुना है' ।

'आनंद० ! जब तक कि० । (4) क्या आनंद ! तूने सुना है—वज्जियों के जो महल्लक (वृद्ध) हैं, उनका (वह) सत्कार करते हैं, = गुरुकार करते हैं, पूजते हैं; उनकी (बात) सुनने योग्य मानते हैं' । 'भंते ! सुना है०' ।

आनंद ! तब तक कि० । (5) क्या सुना है—जो वह कुछ-स्त्रियाँ हैं, कुल-कुमारियाँ हैं, उन्हें (वह) छीनकर, जबर्दस्ती नहीं बसाते' ? 'भंते सुना है०' ?

'आनंद ! ०जब तक । (6) क्या० सुना है—**वज्जियों** के (नगर के) भीतर या बाहर के जो चैत्य (= चौरा=देव-स्थान) हैं, उनका सत्कार करते हैं, ०पूजते हैं । उनके लिए पहले किए गएदान को, पहले की गई धर्मानुसार बलि (= वृत्ति) को, लोप नहीं करते' ?

'भंते ! सुना है०' ?

'जब तक० । (7) क्या सुना है,—वज्जी लोग अर्हतों (= पूज्यों) की अच्छी तरह धार्मिक (= धर्मनुसार) रक्षा = आवरण, = गुप्ति करते हैं । किसलिए ? भविष्य अर्हत् राज्य में आवें, आए अर्हत् राज्य में सुख से विहार करें' । 'सुना है भंते ! ०' ।

जब तक०' ।

तब भगवान् ने ०वर्षकार ब्राह्मण को आमंत्रित किया—

'ब्राह्मण ! एक समय में वेसाली में सारन्दद-चैत्य में विहार करता था । वहाँ मैंने वज्जियों को यह सात अपरिहाणीय-धर्म (= अ-पतन के नियम) कहे । जब तक ब्राह्मण ! यह सात अपरिहाणीय-धर्म वज्जियों में रहेंगे; इन सात अपरिहाणीय-धर्मों में वज्जी (लोग) दिखलाई पड़ेगे; (तब तक) ब्राह्मण ! वज्जियों की वृद्धि ही समझना परि हानि नहीं' ।

ऐसा कहने पर ०वर्षकार ब्राह्मण भगवान् को बोला—

'हे गौतम ! एक भी अपरिहाणीय-धर्म से वज्जियों की वृद्धि ही समझनी होगी, सात अ-परिहाणीय धर्मों की तो बात ही क्या है ? हे गौतम ! राजा० को उपलाप (= रिश्वत देना), या आपस में फूट को छोड़, युद्ध करना ठीक

नहीं । हन्त ! हे गौतम ! अब हम जाते हैं, हम बहुत-कृत्य = बहु-करणीय (= बहुत काम वाले) हैं०'

'ब्राह्मण ! जिसका तू काल समझता है०'

तब **मगध-महामात्य वर्षकार** ब्राह्मण भगवान् के भाषण को अभिनंदनकर, अनुमोदनकर आसन से उठकर, [1]चला गया । तब भगवान् ने ०वर्षकार ब्राह्मण के जाने के थोड़ी ही देर बाद आयुष्मान् आनंद को आमंत्रित किया—

---

1. अ.क. 'राजा के पास गया । राजा ने उससे पूछा—'आचार्य ! भगवान् ने क्या कहा ? । उसने कहा—'भे ! श्रमण0 के कथन से तो वज्जियों को किसी प्रकार भी लिया नहीं जा सकता । हाँ, उपलापन और आपस में फूट होने से लिया जा सकता है' । तब राजा ने कहा—'उपलापन से हमारे हाथी घोड़े खर्च होंगे, भेद (= फूट) से ही पकड़ना चाहिए । (फिर) क्या करेंगे' ?

   'तो महाराज ! वज्जियों को लेकर तुम परिषद् में बात उठाओ । तब मैं—'महाराज ! तुम्हें उनसे क्या है ? अपनी कृषि, वाणिज्य करके यह राजा (= प्रजातंत्र के सभासद्) जीयें'—कहकर चला जाऊँगा । तब तुम बोलना—'क्योंजी ! यह ब्राह्मण वज्जियों के सम्बन्ध में होती बात को रोकता है । उसी दिन में उन (= वज्जियों) के लिए भेंट (= पर्णाकार) भेजूँगा; उसे भी पकड़कर मेरे ऊपर दोषारोपण कर बंधन, ताड़न आदि न कर छुरे से मुण्डन करा मुझे नगर से निकाल देना । तब मैं कहूँगा—मैंने तेरा नगर (= प्राकर) और परिखा (= खाई) बनवाई है; मैं दुर्बल······तथा गम्भीर स्थानों को जानता हूँ, अब जल्दी (तुझे) सीधा करूँगा' । ऐसा सुनकर बोलन—'तुम जाओ' ।

   'राजा ने सब (वैसा ही) किया । लिच्छिवियों ने उसके निकालने (= निष्क्रमण) को सुनकर कहा—'ब्राह्मण मायावी (= शठ) है, उसे गंगा ने उतरने दो' । तब किन्हीं-किन्हीं के 'हमारे लिए कहने से तो वह (राजा) ऐसा करता है' कहने पर—'तो भणे ! आने दो' । उसने जाकर लिच्छिवियों द्वारा—'किसलिए आए' ? पूछे जाने पर (सब) हाल कह दिया । लिच्छिवियों ने—'थोड़ी सी बात के लिए इतना भारी दंड करना युक्त नहीं था' कहकर—'वहाँ तुम्हारा क्या पद (= स्थानांतर) था'—पूछा । मैं विनिश्रय-महामात्य था'—(कहने पर)—'यहाँ भी (तुम्हारा) वही पद रहे'—कहा । वह सुन्दर तौर से विनिश्रय (= इंसाफ) करता था । राजकुमार

'जाओ **आनंद** ! तुम जितने भिक्खु राजगृह के आसपास विहरते है; उन सबका उपस्थानशाला में एकत्रित करो' ।

'अच्छा भंते' !·····भंते ! भिक्खुसंघ को एकत्रित कर दिया, अब भगवान् जिसका समय समझें ।

तब भगवान् आसन से उठकर जहाँ उपस्थानशाला थी,—वहाँ जा, बिछे आसन पर बैठे । बैठकर भगवान् ने भिक्खुओं को आमंत्रित किया—'भिक्खुओ ! तुम्हें सात अपरिहाणीय-धर्म उपदेश करता हूँ, उन्हें सुनो कहता हूँ' ।

उसके पास विद्या (शिल्प) ग्रहण करते थे । अपने गुणों से प्रतिष्ठित हो जाने पर उसने एक दिन एक लिच्छिवि को एक ओर ले जाकर—'खेत (= केदार = क्यारी) जोतते हैं' ? 'हां, जोतते हैं' । 'दो बैल जोतकर' ? 'हां, दो बैल जोतकर'—कहकर लौट आया । तब उसको दूसरे के—आचार्य ! (उसने) क्या कहा' ?—पूछने पर, उसने कह दिया । (तब) 'मेरा विश्वास न कर, यह ठीक-ठीक नहीं बतलाता' (सोच) उसने बिगाड़ कर लिया । ब्राह्मण दूसरे दिन भी एक लिच्छिवि को एक ओर ले जाकर 'किस व्यंजन (= तेमन = तरकारी) से भोजन किया' पूछकर, लौटने पर, उसने भी दूसरे न पूछकर, न विश्वास कर वैसे ही बिगाड़ कर लिया । ब्राह्मण किसी दूसरे दिन एक लिच्छिवि को एकांत में ले जाकर—'बड़े गरीब हो न' ?—पूछा 'किसने ऐसा कहा' ? 'अमुक लिच्छिवि ने' । दूसरे को भी एक ओर ले जाकर—'तुम कायर हो क्या' ? 'किसने ऐसा कहा' 'अमुक लिच्छिनि ने' । इस प्रकार दूसरे के ने कहे हुए को कहते तीन वर्ष (482-80 ईसा पूर्व) में उन राजाओं में परस्पर ऐसी फूट डाल दी, कि दो एक रास्ते भी न आते थे । वैसा करके जमा होने का नगारा (= सन्निपात-भेरी) बजवाया ।

लिच्छिवि—'मालिक (= ईश्वर) लोग जमा हों—कहकर नहीं जमा हुए । तब उस ब्राह्मण राजा को जल्दी आने के लिए खबर (= शासन) भेजी । राजा सुनकर सैनिक नगारा (= बलभेरी) बजा के निकला । वैशालीवालों ने सुनकर भेरी बजवाई—'(आओ चलें) राजा को गंगा न उतरने दें' । उसको भी सुनकर 'देव-राज लोग जाएँ' आदि कहकर लोग नहीं जमा हुए । (तब) भेरी बजवाई—'नगर में घुसने न दें, (नगर) द्वार बन्द करके रहें' । एक भी नहीं जमा हुआ । (राजा अजातशत्रु) खुले द्वारों में ही घुसकर सबको तबहकर (= अनयव्यसन पापेत्त्वा) चला गया ।

······'अच्छा भंते' !

(1) भिक्खुओ ! जब तक भिक्खु बार-बार (= अभीक्ष्णं) इकट्ठा होने वाले = सन्निपात-बहुल रहेंगे; (तब तक) भिक्खुओं की वृद्धि समझना, हानि नहीं । (2) तब तक भिक्खुओ ! भिक्खु एक हो बैठक करेंगे, एक हो उत्थान करेंगे; एक हो संघ के कारणीय (कामों) को करेंगे; (तब तक) भिक्खुओ ! भिक्खुओं की वृद्धि ही समझना, हानि नहीं । (3) तब तक ०अप्रज्ञप्तों (= अविहितों) को प्रज्ञप्त नहीं करेंगे, प्रज्ञप्त का उच्छेद नहीं करेंगे; प्रज्ञप्त शिक्षा पदों (= विहित भिक्खु-नियमों) के अनुसार बर्तेंगें० । (4) जब तक० जो वह रत्तज्ञ (= धर्मानुरागी) चिरप्रव्रजित संघ के पिता, संघ के नायक, थेर भिक्खु हैं, उनका सत्कार करेंगे गुरुकार करेंगे, मानेंगे, पूजेंगे, उन (की बात) को सुनने योग्य मानेंगे० । (5) जब तक पुनः पुनः उत्पन्न होने वाली तृष्णा के वश में नहीं पड़ेंगे० । (6) जब तक० भिक्खु, आरण्यक-शयनासन (= बन की कुटियों) की इच्छा वाले रहेंगे० । (7) तब तक भिक्खुओ ! हर एक भिक्खु यह याद रखेगा, कि अनागत (= भविष्य) में सुन्दर सब्रह्मचारी आवें, आए हुए (= आगत) सुन्दर सब्रह्मचारी सुख से विहरें; (तब तक)० । भिक्खुओ ! जब तक यह सात अ-परिहाणीय धर्म (भिक्खुओं में) रहेंगे; (जब तक) भिक्खु इन सात अ-परिहाणीय धर्मों में दिखाई देंगे; (तब तक)० ।

'भिक्खुओ ! और भी सात अ-परिहाणीय धर्मों को कहता हूँ । उसे सुनो० ।····· । (1) भिक्खुओ ! जब तक भिक्खु (सारे दिन चीवर आदि के) काम में लगे रहने वाले (= कर्माराम) = कर्मरत = कर्मारामता-युक्त नहीं होंगे । (तब तक)० । (2) जब तक भिक्खु बकवाद में लगे रहने वाले (= भस्साराम), = भस्सरस्त = भस्सारामता-युक्त नहीं होंगे । (3) ०निद्राराम = निद्रा-रत = निद्रारामता-युक्त नहीं होंगे० । (4) संगणिकाराम (= भीड़ को पसंद करने वाले) = संगणिक-रत = संगणिकारामता युक्त नहीं होंगे० । (5) ०पापेच्छ (= बद्नीयत) = पाप-इच्छाओं के वश में नहीं होंगे० । (6) ० पाप-मित्र (= बुरे मित्रों वाले), = पाप सहाय, बुराई की ओर रुझान वाले न होंगे० । (7) ०थोड़े से विशेष (= योग-साफल्य) को पाकर बीच में न छोड़ देंगे० ।०।

'भिक्खुओ ! और भी सात अ-परिहाणीय धर्मों को कहता हूँ ।·····। (1) भिक्खुओ ! जब तक भिक्खु श्रद्धालु होंगे० । (2)० (पाप से)

लज्जाशील (= ह्रीमान्) होंगे० । (3) ०(पाप से) भय खाने वाले (= अपत्रपी) होंगे । (4) ०बहुश्रुत० (5) ०प्रज्ञावान् होंगे० ।० ।

'भिक्खुओ ! और भी सात अ-परिहाणीय धर्मों को० । (1) भिक्खुओं ! जब तक भिक्खु स्मृति-संबोध्यंग की भावना करेंगे० । (2) ०धर्म-विजय संबोध्यंग की० । (3) ०वीर्य-सं० । (4) प्रीति सं० (5) ० प्रश्नब्धि-सं० (6) ० समाधि-सं० । (7) उपेक्षा-संबोध्यंग की ।० ।० ।

'भिक्खुओ ! और भी सात अपरिहाणीय धर्मों को कहता हूँ ।.....। (1) भिक्खुओ ! जब तक भिक्खु अनित्य-संज्ञा की भावना करेंगे० (2) ० अनात्यसंज्ञा० । (3) ०अशुभसंज्ञा० । (4) ०आदिनव (= दुष्परि-णाम)-संज्ञा० । (5) प्रहाण-(=त्याग)० । (6) ०विरागसंज्ञा० (7) ० निरोध-संज्ञा० ।० ।

'भिक्खुओ ! और भी छ अ परिहाणीय धर्मों को कहता हूँ० ।.....। (1) जब तक भिक्खु सब्रह्मचारियों (= गुरुभाइयों) में गुप्त और प्रकट, मैत्रीपूर्ण कायिक कर्म उपस्थित रखेंगे० । (2) ०मैत्रीपूर्ण वाचिक-कर्म उपस्थित रखेंगे । (4) ०जब तक भिक्खु धार्मिक, धर्म से प्राप्त जो लाभ हैं—अंत में पात्र में चुपड़ने मात्र भी—वैसे लाभों को (भी) शीलवान् स-ब्रह्मचारी भिक्खुओं में बाँटकर भोग करने वाले होंगे० (5) ०जब तक भिक्खु जो वह अखंड = अ-छिद्र, अ-कल्मष = भुजिस्स, विद्वानों से प्रशंसित, अ-निंदित, समाधि की ओर (ले) जाने वाले, शील हैं, वैसे शीलों में शील-श्रामण्य-युक्त हो सब्रह्मचारियों के साथ गुप्त भी प्रकट भी विहरेंगे० । (6) जो वह आर्य (= उत्तम), नैर्याणिक (= पार कराने वाली, वैसा करने वाले को अच्छी प्रकार दुखक्षय की ओर ले जाने वाली दृष्टि है, वैसी दृष्टि से दृष्टि-श्रामण्य-युक्त हो, सब्रह्मचारियों के साथ गुप्त भी प्रकट भी विहरेंगे० । भिक्खुओ ! जब तक यह छ अ-परिहाणीय धर्म० ।

वहाँ राजगृह में गृध्रकूट-पर्वत पर विहार करते हुए भगवन् बहुत करके भिक्खुओं को यही धर्मकथा कहते थे—ऐसा शील है, ऐसी समाधि है, ऐसी प्रज्ञा है । शील से परिभावित समाधि महाफल वाली = महानृशंस वाली होती है । प्रज्ञा से परिभावित चित्त अच्छी तरह [1]अस्रवों,—कामास्नव भवास्रव, दृष्टि-आस्रव से मुक्त होता है ।

---

1. देखो आस्रव ।

(अम्बलट्ठिका में)

तब भगवान् ने **राजगृह** में इच्छानुसार विहार कर आयुष्मान् **आनंद** को आमंत्रित किया—

'चलो आनंद ! जहाँ [1]**अम्बलट्ठिका** है, वहाँ चलें' ।

'अच्छा, भंते' !·····

भगवान् महान् भिक्खुसंघ के साथ जहाँ अम्बलट्ठिका थी, वहाँ पहुँचे। वहाँ भगवान् अम्बलट्ठिका में **राजागारक** में विहार करते थे । वहाँ राजागारक में भी भगवान् भिक्खुओं को बहुत करके यही धर्म-कथा कहते थे—० ।

भगवान् ने अम्बलट्ठिका में यथेच्छ विहार करके आयुष्मान् आनंद को आमंत्रित (सम्बोधित) किया—

'चलो आनंद ! जहाँ नालंदा है, वहाँ चलें' ।

'अच्छा भंते' ।·····

वहाँ से भिक्खुसंघ के साथ तब भगवान् जहाँ नालंदा थी, वहाँ पहुँचे। वहाँ भगवान् [2]नालंदा में प्रावारिक-अम्बवन में विहार करते थे । तब आयुष्मान् [3]सारिपुत्त जहाँ भगवान् थे वहाँ गए । जाकर भगवान् को अभिवादन कर एक ओर बैठे । एक ओर बैठे आयुष्मान सारिपुत्त ने भगवान् को कहा—

'भंते ! मैं ऐसा प्रसन्न (= विचार वाला) हूँ—'सम्बोधि (= परम ज्ञान) में भगवान् से बढ़कर या भूयस्तर कोई दूसरा श्रमण ब्राह्मण न हुआ, न होगा, न इस समय है' ।

'**सारिपुत्त** ! तूने यह बहुत उदार (= बड़ी)= आर्षभी वाणी कही: एकांश सिंहनाद·····किया—'मैं प्रसन्न हूँ० । सारिपुत्त ! जो वहा अतीतकाल में अर्हत् सम्यक्-सम्बुद्ध हुए, क्या (तूने) उन सब भगवानों को (अपने) चित्त से जान लिया; कि यह भगवान् ऐसे शील वाले, ऐसी प्रज्ञा वाले, ऐसे विहार वाले, ऐसी विमुक्ति वाले थे' ?

---

1. वर्तमान सिलाव (?) जि. पटना ।
2. मिलाओ सं.नि. 45:2:2 ।
3. सारिपुत्त का निर्वाण पहले ही हो चुकने से, पाठ भाणकों के प्रमाद से यहाँ आया मालूम होता है ।

'नहीं भंते' !

'सारिपुत्त ! जो वह भविष्यकाल में अर्हत् सम्बुद्ध होंगे, क्या उन सब भगवानों को चित्त से जान लिया०' ?

'नहीं भंते' !

'सारिपुत्त ! इस समय मैं अर्हत् सम्यक सम्बुद्ध हूँ, क्या चित्त से जान लिया, (कि मैं) ऐसी प्रज्ञावाला० हूँ' ?

'नहीं भंते' !

सारिपुत्त ! तेरा अतीत, अनागत (= भविष्य), प्रत्युत्पन्न (= वर्तमान) अर्हत् सम्यक्-सम्बुद्धों के विषय में चेतः-परिज्ञान (= पर-चित्तज्ञान) नहीं है; तो सारिपुत्त ! तूने क्यों यह बहुत उदार आर्षभी वाणी कही०' ?

'भंते ! अतीत-अनागत-प्रत्युत्पन्न अर्हत् सम्यक्-सम्बुद्धों में मुझे चेतः-परिज्ञान नहीं है; किन्तु (सबकी) धर्म-अन्वय (= धर्म-समानता) विदित है। जैसे कि भंते ! राजा का सीमांत-नगर दृढ़ नींव वाल, दृढ़-प्रकार वाला, एक द्वारा वाला हो। वहाँ अज्ञातों (= अपरिचितों) को निवारण करने वाला, ज्ञातों (= परिचितों) को प्रवेश कराने वाला पंडित-व्यक्त, मेधावी द्वारपाल हो। वहाँ नगर के चारों ओर अनुपर्याय (= बारी-बारी से) मार्ग पर घूमते हुए (मनुष्य), प्रकार में अन्ततो बिल्ली के निकलने भर की भी सन्धि = विवर न पाए; । उसको ऐसा हो—'जो कोई बड़े-बड़े प्राणी इस नगर में प्रवेश करते हैं; सभी इसी द्वार से० । ऐसे ही भंते ! मैंने धर्म-अन्वय जान लिया—'जो वह अतीतकाल में अर्हत् सम्यक्-सम्बुद्ध हुए, वह सब भगवान् भी चित्त के उपक्लेश (= मल), प्रज्ञा को दुर्बल करने वाले, पाँचों नीवरणों[1] को छोड़ चारों स्मृति-प्रस्थानों[2] में चित्त को सुप्रतिष्ठित कर, सात बोध्यंगों को यथार्थ से भावना कर, सर्वश्रेष्ठ (= अनुत्तर) सम्यक्-सम्बोधि (= परमज्ञान) को अभिसम्बोधन किए थे (= जाना था)। और भंते ! अनागत में भी जो अर्हत् सम्यक्-सम्बुद्ध होंगे; वह सब भी भगवान्० । भंते ! इस समय भगवान् अर्हत् सम्यक्-सम्बुद्ध ने भी चित्त के उपक्लेश०' ।

वहाँ नालंदा में प्रावारिक-अम्बवन में विहार करते, भगवान् भिक्खुओं को बहुत करके यही कहते थे० ।

---

1. पृष्ठ 206-207
2. पृष्ठ 151

(पाटलिग्राम में)

तब भगवान् ने नालंदा में इच्छानुसार विहार कर, आयुष्मान् **आनंद** को आमंत्रित किया—

'आनंद ! चलो, जहाँ **पाटलिग्राम** है, वहाँ चलें' ।

'भंते ! अच्छा'

तब·····भिक्खुसंघ के साथ भगवान् जहाँ पाटलिग्राम था, वहाँ गए । ·····उपासकों ने सुना कि भगवान् पटलिग्राम आए हैं । तब·····उपासक जहाँ भगवान् थे, वहाँ गए । जाकर भगवान् को अभिवादन कर एक ओर बैठ गए । एक ओर बैठे हुए·····उपासकों ने भगवान् को यह कहा—

'भंते ! भगवान् हमारे [1]**आवसथागार** (= अतिथिशाला) को स्वीकार करें' । भगवान् ने मौन से स्वीकार किया ।

तब उपासक भगवान् की स्वीकृति को जान आसन से उठ, भगवान् को अभिवादन कर, प्रदक्षिणा कर जहाँ आवसथागार था, वहाँ गए० । तब ·····भगवान् सायंकाल को पहनकर पात्र चीवर ले भिक्खुसंघ के साथ[2] ०आवसथागार में प्रविष्ट हो बीच के खम्भे के पास पूर्वाभिमुख बैठे० । तब भगवान् न·····उपासकों को आमंत्रित किया—

'गृहपतियो ! दुराचार से दुष्शील (= दुराचारी) के यह पाँच दुष्परिणाम हैं । कौन से पाँच ?०[3] ।'

---

1. उदान अ.क. 8:6 'भगवान् कब पाटलिग्राम में गए ? श्रावस्ती में धर्म-सेनापति (= सारिपुत्त) का चैत्य बनवा, वहाँ सेनिकलकर राजगृह में वास करते, वहाँ आयुष्मान् महामौद्गल्यायन का चैत्य बनवाकर, वहाँ से निकलकर अंबलट्ठिकामें वासकर; अ-त्वरित चारिका से जनपद-चारिका करते; वहाँ-वहाँ एक रात वास करते, लोकानुग्रह करते, क्रमशः पाटलिग्राम पहुँचे ।·····। पाटलिग्राम में अजातशत्रु और लिच्छिवि राजाओं के आदमी समय-समय पर, आकर घर के मालिकों को घर से निकालकर, मास भी आधा मास भी बस रहते थे । इससे पाटलिग्राम-वासियों ने नित्य पीड़ित हो—'उनके आने पर यह (हमारा) वासस्थान होगा'—(सोचकर)·····नगर के बीच में महाशाला बनवाई । उसी का नाम था 'आवसथागार' । वह उसीदनि समापत हुआ था ।
2. देखो पृष्ठ 554
3. देखो पृष्ठ 557

तब भगवान् ने बहुत रात तक·····उपासकों को धार्मिक-कथा से संदर्शित·····समुत्तेजित कर·····उद्योगजित किया—

'गृहपतियों, रात क्षीण हो गई, जिसका तुम समय समझते हो (वैसा करो)' ।

'अच्छा भंते' !·····पाटलिग्राम-वासी·····उपासक·····आसन से उठकर भगवान् को अभिवादन कर, प्रदक्षिणा कर चले गए । तब पाटलिग्रामिक उपासकों के चले जाने के थोडत्री ही देर बाद भगवान् शून्य-आगार में चले गए ।

उस समय **सुनीध** (= सुनीथ) और **वर्षकार** मगध के महामात्य पाटलिग्राम में वज्जियों को रोकने के लिए नगर बसाते थे·····। भगवान् ने रात के प्रत्यूष-समय (= भिनसार) को उठकर आयुष्मानृ **आनंद** को आमंत्रित किया—

'आनंद ! पाटलिग्राम में कौन नगर बना रहा है' ?

'भंते ! **सुनीध** और **वर्षकार** मगध-महामात्य, वज्जियों के रोकने के लिए नगर बसा रहे हैं' ।

'आनंद ! जैसे त्रयस्त्रिश के देवताओं के साथ मंत्रणा करके मगध के महामात्य सुनीध, वर्षकार, **वज्जियों** के रोकने के लिए नगर बना रहे हैं। आनंद ! मैंने दिव्य अमानुष नेत्र से देखा—बहु-सहस्त्र देवता यहाँ पाटलिग्राम में वास्तु (= घर, निवास) ग्रहण कर रहे हैं । जिस प्रदेश में महाशक्ति-शाली (= महेसक्ख) देवता वास-ग्रहण कर रहे हैं, वहाँ महाशक्ति-शाली राजाओं और राज-महामात्यों का चित्त, घर बनाने को करेगा । जिस प्रदेश में मध्यम देवता वास ग्रहण कर रहे हैं, वहाँ मध्यम राजाओं और राज-महामात्यों का पित्त घर बनाने को करेगा । जिस प्रदेश में नीच देवता० वहाँ नीच राजाओं० । आनंद ! जितने (भी) आर्य-आयतन (= आर्यों के निवास) हैं, जितने (भी) वणिक्-पथ (= व्यापार-मार्ग) हैं, (उनमें) यह पाटलिपुत्र पुट-भेदन (= माल की गांठ जहाँ तोड़ी जाए) अग्र (= प्रधान)—नगर होगा। पाटलिपुत्र के तीन अंतराय (= विघ्न) होंगे: आग, पानी और आपस की फूट' ।

तब **मगध-महामात्य सुनीध** और **वर्षकार** जहाँ भगवान् थे, वहाँ गए; जाकर भगवान् के साथ संमोदकर·····एक ओर खड़े·····भगवान् को बोले—

'भिक्खुसंघ के साथ आप गौतम हमारा आज का भात स्वीकार करें'। भगवान् ने मौन से स्वीकार किया।

तब० सुनीध वर्षकार ने भगवान् की स्वीकृति जानकर, जहाँ उनका आवसथ (= डेरा) था, वहाँ गए। जाकर अपने आवसथ में उत्तम खाद्य-भोज्य तैयार करा (उन्होंने) भगवान् को समय की सूचना दी.....।

तब भगवान् पूर्वाह्न समय पहनकर, पात्र चीवर ले भिक्खुसंघ के साथ जहाँ **मगध-महामात्य सुनीध**, और **वर्षकार** का आवसथ था, वहाँ गए; जाकर बिछे आसन पर बैठे। तब सुनीध, वर्षकार ने बुद्ध-प्रमुख भिक्खुसंघ को अपने हाथ से उत्तम खाद्य-भोज्य से संतर्पित-संप्रवारित किया। तब० सुनीध वर्षकार, भगवान् के भोजनकर पात्र से हाथ हटा लेने पर, दूसरा नीचा आसन लेकर एक ओर बैठ गए। एक ओर बैठे हुए मगध-महामात्य सुनीध, वर्षकार को भगवान् ने इन गाथाओं से (दान) अनुमोद किया—

'जिस प्रदेश (में) पंडित पुरुष, शीलवान्, संयमी,
ब्रह्मचारियों को भोजन कराकर वास करता है ॥1॥
वहाँ जो देवता हैं, उन्हें दक्षिणा (= दान-भाग) देनी चाहिए।
वह देवता पूजित हो पूजा करती हैं, मानित हो मानती हैं ॥2॥
तब (वह) औरस पुत्र की भाँति इस पर अनुकम्पा करती हैं।
देवताओं से अनुकंपित हो पुरुष सदा मंगल देखता है ॥3॥

तब भगवान्० सुनीध और वर्षकार को इन गाथाओं से अनुमोदन कर, आसन से उठकर चले गए।

उस समय० **सुनीध, वर्षकार** भगवान् के पीछे-पीछे चल रह थे—'श्रमण गौतम आज जिस द्वार से निकलेंगे, वह **गौतम-द्वार**.....होगा। जिस तीर्थ (= घाट)से गंगानदी पार होंगे, वह **गौतम-तीर्थ**.....होगा। तब भगवान् जिस द्वार से निकले वह गौतम-द्वार.....हुआ। भगवान् जहाँ गंगा-नदी है, वहाँ गए। उस समय गंगा करारों बराबर भरी, करार पर बैठे कौवे के पीने योग्य थी। कोई आदमी नाव खोजते थे, कोई० बेड़ा (= उलुम्प) खोजते थे, कोई० बेड़ा (= कुल्ल) बाँधते थे। तब भगवान्, जैसे कि बलवान् पुरुष समेंटी बाँह को (सहजही) फैलाई बाँह को समेट ले, ऐसे ही भिक्खुसंघ के साथ **गंगा** नदी के इस पार से अंतर्धान हो, परले तीर पर जा खड़े

हुए । भगवान् ने उन मनुष्यों को देखा, कोई-कोई नाव खोज रहे थे० । तब भगवान् ने इस अर्थ को जानकर, उसी समय यह उदान कहा—

'(पंडित) छोटे जलाशयों (= पल्लवों) को छोड़ समुद्र और नदियों को सेतु से तरते हैं । (जब तक) लोग कुल्ल बाँधते रहते हैं, (तब तक) मेधावी जन तर गए रहते हैं' ।

(कोटिग्राम में)

तब भगवान् ने आयुष्मान् आनंद को आमंत्रित किया—

'आओ आनंद ! जहाँ कोटिग्राम है, वहाँ चलें' । 'अच्छा भंते' !

तब भगवान् महाभिक्खुसंघ के साथ जहाँ कोटिग्राम था, वहाँ गए । वहाँ भगवान् काटि-ग्राम में विहार करते थे । भगवान् ने भिक्खुओं को आमंत्रित किया—

'भिक्खुओ ! चारों [1]आर्य-सत्यों के अनुबोध (= बोध) = प्रतिवेध न होने से इस प्रकार दीर्घकाल से (यह) दौड़ना = संसरण (= आवागमन) 'मेरा और तुम्हारा' हो रहा है । कौन से चारों ? भिक्खुओ ! दुख आर्य-सत्य के बोध = प्रतिबोध न होने से० । दुखिनिरोध० । दुख-निरोध-गामिनी प्रतिपद्० । भिक्खुओ ! सो इस दुख आर्य-सत्य को अनुबोध = प्रतिबोध किया = (तो) भवतृष्णा उच्छिन्न हो गई, भवनेत्री (= तृष्णा) क्षीण हो गई'—

भगवान् ने यह कहा ।.....

वहाँ कोटिग्राम में विहार करते भी भगवान्, भिक्खुओं को बहुत करके यही धर्म कथा कहते थे० ।० ।

(नादिका में)

तब भगान् ने कोटिग्राम में इच्छानुसार विहार कर, आयुष्मान् आनंद को आमंत्रित किया—

'आओ आनंद ! जहाँ [2]नादिका (= नाटिका) है, वहाँ चले' ।

---

1. देखो पृष्ठ 161-162
2. 'एक ज्ञातृयों (= जाति = ज्ञातृ = ज्ञातर = जातर = जतरिया = जथरिया = जैथरिया) के गाँव में' । नादिका = ज्ञातृका = नत्तिका = लत्तिका = रत्तिका = रत्ती, जिसके नाम से वर्तमान रत्ती परगना (जि. मुजफ्फरपुर) है ।

'अच्छा भंते' !

तब भगवान् महान् भिक्खुसंघ के साथ जहाँ नादिका है, वहाँ गए । वहाँ नादिका में भगवान् गिंजकावसथ में विहार करते थे.....। वहाँ नादिका में विहार करते भी भगवान् ने भिक्खुओं को यही धर्मकथा० ।

(वेसाली में)

०तब भगवान् महाभिक्खुसंघ के साथ जहाँ वेसाली थी, वहाँ गए । वहाँ वेसाली में अम्बपाली वन में विहार करते थे । वहाँ भगवान् ने भिक्खुओं को आमंत्रित किया—

भिक्खुओ ! स्मृति और संप्रजन्य के साथ विहार करो, यही हमारा अनुशासन है ।........'

अम्बपाली गणिका ने सुना—भगवान् वेसाली में आ गए हैं; और वेसाली में मेरे अम्बवन में विहार करते हैं । अम्बपाली गणिका सुंदर-सुंदर (= भद्र) यानों को जुड़वा कर, सुंदर यान पर चढ़, सुंदर यानों के साथ वेसाली से निकली; और जहाँ उसका आराम था, वहाँ चली । जितनी यान की भूमि थी, उतनी यान से जाकर, यान से उतर पैदल ही जहाँ भगवान् थे, वहाँ गई । जाकर भगवान् को अभिवादन कर एक ओर बैठ गई । एक ओर बैठी अम्बपाली गणिका को भगवान् ने धार्मिक कथा से संदर्शित समुत्तेजित्.....किया । तब अम्बपाली गणिका भगवान् को यह बोली—

'भंते ! भिक्खुसंघ के साथ भगवानृ मेरा कल को भोजन स्वीकार करें' ।

भगवान् न मौन से स्वीकार किया ।

तब अम्बपाली गणिका भगवान् की स्वीकृति को जान, आसन से उठ भगवान् को अभिवादन कर प्रदक्षिणा कर चली गई ।

वेसाली के **लिच्छिवियों** ने सुना—'भगवान् वेसाली में आए हैं' । तब वह लिच्छिवि० सुन्दर यानों पर आरूढ़ हो० वेसाली से निकले । उनसे कोई-कोई लिच्छिवि नीले-नील वर्ण नील-वस्त्र नील-अलंकार-वाले थे । कोई-कोई लिच्छिवि पीले = पीतवर्ण० थे । ०लोहित (= लाल)० ।० अवदात (= सफेद) = । **अम्बपाली गणिका** ने तरुण-तरुण लिच्छिवियों के धुरों से धुरा, चक्कों से चक्का, जूये से जूआ टकराया । उन लिच्छिवियों ने अम्बपाली गणिका को कहा—

'जे ! अम्बपाली ! क्यों तरुण-तरुण (= दहर) लिच्छिवियों के धुरों से धुरा टकराती है ।०'

'आर्यपुत्रो ! क्योंकि मैंने भिक्खुसंघ के साथ भगवान् को कल के भोजन के लिए आमंत्रित किया है' ।

'जे अम्बपाली ! सौ हजार से भी इस भात (= भोजन) को (हमें करने के लिए) दे दे' ।

'**आर्यपुत्रो** ! यदि वेसाली जनपद भी दो, तो भी इस महान् भात को न दूँगी' ।

तब उन लिच्छिवियों ने अंगुलियाँ फोड़ीं—

'अरे ! हमें अंबिका ने जीत लिया, अरे ! हमें अंबिका ने वंचित कर दिया' ।

तब यह **लिच्छिव** जहाँ **अम्बपाली**-वन था, वहाँ गए । भगवान् ने दूर से ही लिच्छिवियों को आते देखा । देखकर भिक्खुओं को आमंत्रित (सम्बोधित) किया—

'अवलोकन करो भिक्खुओ ! लिच्छिवियों की परिषद् को । अवलोकर करो भिक्खुओ ! लिच्छिवियों की परिषद् को । भिक्खुओ ! लिच्छिवि-परिषद् को त्रयस्त्रिंश (देव)-परिषद् समझो (= उपसंहरथ)' ।

तब वह लिच्छिवि० रथ से उतरकर पैदल ही जहाँ भगवान् थे, वहाँ···· जाकर भगवान् को अभिवादन कर एक ओर बैठे । एक ओर बैठे लिच्छिवियों को भगवान् ने धार्मिक-कथा से० समुत्तेजित० किया । तब वह लिच्छिवि ०भगवान् को बोले—

'भंते ! भिक्खुसंघ के साथ भगवान् हमारा कल का भोजन स्वीकार करें' ।

'लिच्छिवियो ! कल तो स्वीकार कर लिया है, मैंने **अम्बपाली-गणिका** को भोजन' ।

तब उन लिच्छिवियों ने अंगुलियाँ फोड़ीं—

'अरे ! हमें अंबिका ने जीत लिया । अरे ! हमें अंबिका ने वंचित कर दिया' ।

तब वे लिच्छिवी भगवान् के भाषण को अभिनंदित कर अनुमोदित कर, आसन से उठकर भगवान् को अभिवादन कर प्रदक्षिणा कर चले गए।

अम्बपाली गणिका ने उस रात बीतने पर, अपने आराम में उत्तम खाद्य-भोज्य तैयार कर, भगवान् को समय सूचित किया····· । भगवान् पूर्वाह्न समय पहनकर पात्र चीवर ले भिक्खुसंघ के साथ जहाँ अम्बपाली का परोसने से स्थान था, वहाँ गए । जाकर-प्रज्ञप्त (= बिछे) आसन पर बैठे । तब अम्बपाली गणिका ने बुद्ध-प्रमुख भिक्खुसंघ के अने हाथ से उत्तम खाद्य-भोज्य द्वारा संतर्पित = सम्प्रवारित किया । तब अम्बपाली गणिका भगवान् के भोजन कर० लेने पर, एक नीचा आसन लेकर एक ओर बैठी । एक ओर बैठी अम्बपाली गणिका भगवान् को बोली—

'भंते ! मैं इस आराम को बुद्ध-प्रमुख भिक्खुसंघ को देती हूँ ।'[1]

भगवान् ने आराम को स्वीकार किया । तब भगवान् अम्बपाली० को धार्मिक कथा से० समुत्तेजित० कर, आसन से उठकर चले गए ।

वहाँ वेसाली में विहार करते भी भगवान् भिक्खुओं को बहुत करके यही धर्म-कथा कहते थे० ।

(वेलुव-ग्राम में)

०तब भगवान् महाभिक्खुसंघ के साथ जहाँ वेलुव-गामक (= वेणु-ग्राम) था, वहाँ गए । वहाँ भगवान् वेलुव-गामक में विहरते थे । भगवान् ने वहाँ भिक्खुओं को आमंत्रित (सम्बोधित) किया—

'जाओ भिक्खुओ ! तुम वेसाली के चारों ओर मित्र परिचित·····देखकर वर्षावास करो । मैं यहीं वेलुवगाम में वर्षावास करूँगा' ।

'अच्छा भंते !'·····

वर्षावास में भगवान् को कड़ी बीमारी उत्पन्न हुई, भारी मरणांतक पीड़ा होने लगी । उसे भगवान् ने स्मृति-सम्प्रजन्य के साथ बिना दुख करते, स्वीकार (= सहन) किया । उस समय भगवान् को ऐसा हुआ—'मेरे लिए यह उचित नहीं, कि मैं उपस्थाकों (= सेवकों) को बिना पूछे, भिक्खुसंघ को बिना अवलोकन किए, परिनिर्वाण करूँ । क्यों न मैं इस आबाधा (= व्याधि) को हटाकर, जीवन-संस्कार का अधिष्ठाता बन, विहार करूँ ?

1. मिलाओ सं.नि. 45:1:9

भगवान् उस व्याधि को वीर्य (= मनोबल) से हटाकर जीवन-संस्कार (प्राण-शक्ति) के अधिष्ठाता बन, विहार करने लगे । तब भगवान् की वह बीमारी शांत हो गई ।

भगवान् बीमारी से उठ, रोग से अभी-अभी मुक्त हो, विहार से (बाहर) निकल कर विहार की छाया में बिछे आसन पर बैठे । तब आयुष्मान् आनंद जहाँ भगवान् थे, वहाँ गए । जाकर भगवान् को अभिवादन कर एक ओर बैठे । एक ओर बैठे आयुष्मान् आनं ने भगवान् को यह कहा—

'भंते ! भगवान् को सुखी देखा ! भंते ! मैंने भगवान् को अच्छा हुआ देखा ! भंते ! मेरा शरीर शून्य हो गया था । मुझे दिशाएँ भी सूझ न पड़ती थीं । भगवान् की बीमारी से (मुझे) धर्म (= बात) भी नहीं भान होते थे । भंते ! कुछ आश्वासन मात्र रह गया था—भगवान् तब तक परिनिर्वाण नहीं करेंगे; जब तक भिक्खुसंघ को कुछ कह न लेंगे' ।

'आनंद ! भिक्खुसंघ क्या चाहता है ? आनंद ! मैंने न-अंदर न-बाहर करके धर्म-उपदेश कर दिए । आनंद ! धर्मों में तथागत को (कोई) आचार्य-मुष्टि (= रहस्य) नहीं है । आनंद ! जिसको ऐसा हो कि मैं भिक्खुसंघ को धारण करता हूँ, भिक्खुसंघ मेरे उद्देश्य से है, वह जरूर आनंद ! भिक्खुसंघ के लिए कुछ कहे । आनंद ! तथागत को ऐसा नहीं……है । आनंद ! तथागत भिक्खुसंघ के लिए क्या कहेंगे ? आनंद ! मैं जीर्ण = वृद्ध = महल्लक = अध्वगत = वयः प्राप्त हूँ । अस्सी वर्ष की मेरी उम्र है । आनंद ! जैसे जीर्ण-शकट बाँध-बूँधकर चलता है, ऐसे ही आनंद ! मानो तथागत का शरीर बाँध-बूँधकर चल रहा है । आनंद ! जिस समय तथागत सारे निमित्तों के मन में करने से, किन्हीं-किन्हीं वेदनाओं के निरुद्ध होने से, निमित्त-रहित चित्त की समाधि (= एकाग्रता) को प्राप्त हो विहरते हैं, उस समय……तथागत का शरीर अच्छा (= फासुकतर) होता है । इसलिए आनंद ! आत्मदीप = आत्मशरण = अनन्य-शरण, धर्मदीप = धर्म शरण = अनन्य-शरण हो विहरो०[1] ।……।'

तब भगवान् पूर्वाह्न समय पहनकर पात्र-चीवर ले **वेसाली** में पिंड के लिए प्रविष्ट हुए । वेसाली में पिंडचार कर, भोजनोपरांत……आयुष्मान् **आनंद** को बोले—

---

1. देखो पृष्ठ 576

'आनंद ! आसनी उठाओ, जहाँ **चापाल-चैत्य** है, वहाँ दिन के विहार के लिए चलेंगे' ।

'अच्छा भंते' ! कह आयुष्मान् आनदं आसनी से भगवान् के पीछे-पीछे चले । तब भगवान् जहाँ **चापाल-चैत्य** था, वहाँ गए । जाकार बिछे आसन पर बैठे । आयुष्मान् आनंद भी अभिवादन कर,.......। एक ओर बैठे आयुष्मान् आनं को भगवान् ने यह कहा—

'आनंद; रमणीय है **वेसाली** । रमणीय है **उदयन चैत्य** । **०गोतमक-चैत्य; ०सत्तम्बक** (= सप्त-आम्रक) चैत्य, **०बहु-पुत्रक-चैत्य, ०सारन्दद-चैत्य;** रमणीय है **चापाल-चैत्य** ।.......। रमणीय है आनंद ! (राजगृह में) **गृध्रकूट** । ०(कपिलवस्तु में) **न्यग्रोधाराम । ०चोरप्रपात । ०वैभार** (-गिरि) की बगल में कालशिला ।० **सीतवन में सर्प-शौंडिक** (= सप्प-सोण्डिक) पहाड़ (= पब्हार) । **तपोदपाराम० ।० वेणुवन कलंदक-निवाप । ०जीवकम्ब-वन । ०मद्रकुक्षि** (= मद्दकुच्छि) **मृग-दाव** ।

'आनंद ! मैंने पहले ही कह दिया है—सभी प्रियों = मनापों से जुदाई० होती है.......।

तथागत ने यह बात कही,—जल्दी ही तथागत का परिनिर्वाण होगा; आज से तीन मास बाद तथागत परिनिर्वाण प्राप्त होंगे ।.......। आओ आनंद ! जहाँ **महावन कूटागारशाला** है, वहाँ चले' ।

'अच्छा भंते' !

भगवान् आयुष्मान् **आनंद** के साथ जहाँ महावन् कूटागार-शाला थी, वहाँ गए । जाकर आयुष्मान् आनंद को बोले—'आनंद ! जाओ वेसाली के पास जितने भिक्खु विहार करते हैं, उन सबको उपस्थानशाला में एकत्रित करो' ।.......

तब भगवान् जहाँ उपस्थान-शाला थी वहाँ गए । जाकर बिछे आसन पर बैठे बैठकर भगवान् ने भिक्खुओं को आमंत्रित किया—

'इसलिए भिक्खुओ ! मैंने जो धर्म-उपदेश किया है, उसे तुम अच्छी तौर से सीखकर सेवन करना, भावना करना, बढ़ाना; जिसमें यह ब्रह्मचर्य अध्वनीय = चिरस्थायी हो; यह (ब्रह्मचर्य) बहुजन-हितार्थ बहुजन-सुखार्थ,

लोकानुकंपार्थ, देव-मनुष्यों के अर्थ, हित, सुख के लिए हो । भिक्खुओ ! मैंने वह कौन से धर्म, अभिज्ञात कर, उपदेश किए हैं, जिन्हें अच्छी तरह सीखकर० ? जैसे कि (1) चार स्मृति-प्रस्थान, (2) चार सम्यक्-प्रधान, (3) चार ऋद्धिपाद, (4) पाँच इंद्रिय, (6) पाँचबल, (7) सात बोध्यंग, (8) आर्य आष्टांगिक-मार्ग·······। हन्त ! भिक्खुओ ! तुम्हें कहता हूँ—संस्कार (= कृतवस्तु) नाश होने वाले (= वयधम्मा) हैं, प्रमादरहित हो सम्पादन करो । अचिरकाल में ही तथागत का परिनिर्वाण होगा । आज से तीन मास बाद तथागत परिनिर्वाण पाएँगे' ।

(कुसीनारा की ओर 483 ईसा पूर्व)

तब भगवान् पूर्वाह्न समय पहन कर पात्र चीवर ले वेसाली में पिंडचार कर, भोजनोपरांत नागावलोकन (= हाथी की तरह सारे शरीर को घुमाकर दृष्टिपात) से **वेसाली** को देखकर आयुष्मान् आनंद को कहा—

'**आनंद** ! तथागत का यह अंतिम **वेसाली**-दर्शन होगा । आओ आनंद ! जहाँ **भण्डगाम** है वहाँ चलें ।

'अच्छा भंते' !·······

तब महा भिक्खुसंघ के साथ भगवान् जहाँ भण्डगाम था, वहाँ पहुँचे। वहाँ भगवान् भण्डगाम में विहार करते थे ।·······। वहा भण्डगाम में विहार करते भी भगवान्० ।

०जहाँ **अम्बगाम** (= आम्रग्राम)० । ० जहाँ **जम्बूगाम** (= जम्बुग्राम)० । ०जहाँ **भोगनगर०** ।

(भोगनगर में)

वहाँ भोगनगर में भगवान् आनंद-चैत्य में विहार करते थे । वहाँ भगवान् ने भिक्खुओं को आमंत्रित किया—

'भिक्खुओ ! चार महाप्रदेश तुम्हें उपदेश करता हूँ, उन्हें सुनो, अच्छी तरह मन में करो, भाषण करता हूँ' ।

'भंते ! अच्छा' !

·····(1) भिक्खुओ ! यदि (कोई) भिक्खु ऐसा कहे—आवुसो ! मैंने इसे भगवान् के मुख से सुना, मुख से ग्रहण किया है; यह धर्म है, यह

विनय है, यह शास्ता का शासन है । भिक्खुओं ! उस भिक्खु के भाषण को न अभिनंदन करना, न निंदा करना । अभिनंदन न कर निंदा न कर; उन पदव्यंजनों को अच्छी तरह सीखकर, सूत्र से तुलना करना, विनय में देखना। यदि वह सूत्र से तुलना करने पर, विनय में देखने पर,न सूत्र में उतरते हैं, न विनय में दिखाई पड़ते हैं; तो विश्वास करना कि अवश्य यह भगवान् का वचन नहीं है, इस भिक्खु का ही दुर्गृहीत है । ऐसा (होने पर) भिक्खुओ ! उसको छोड़ देना । यदि वह सूत्र से तुलना करने पर, विनय के देखने पर, सूत्र में भी उतरता है, विनय में भी दिखाई देता है; तो विश्वास करना कि अवश्य यह भगवान् का वचन है; इस भिक्खु का यह सुगृहीत है । भिक्खुओ ! इस प्रथम महाप्रदेश धारण करना ।

'(2) भिक्खुओ ! यदि (कोई) भिक्खु ऐसा कहे—आवुसो ! अमुक आवास में थेर-युक्त = प्रमुख-युक्त संघ विहार करता है । यह उस संघ के मुख से सुना, मुख से ग्रहण किया । यह धर्म है, यह विनय है, यह शास्ता का शासन है ।० । ते विश्वास करना, कि अवश्य उन भगवान् का वचन है, इसे संघ ने सुगृहीत किया । भिक्खुओ ! यह दूसरा महाप्रदेश धारण करना ।

(3) ०भिक्खु ऐसा कहे—'आवुसो ! अमुक आवास में बहुत से बहुश्रुत, आगत-आगत (= आगमज्ञ) धर्म-धर, विनय-धर, मात्रिकाधर, थेर भिक्खु विहार करते हैं । यह उन थेरों के मुख से सुना, मुख से ग्रहण किया। यह धर्म है ।० ।० ।

'(4) भिक्खुओं ! (यदि) भिक्खु ऐसा कहे—अमुक आवास में एक बहुश्रुत० थेर भिक्खु विहार करता है । यह मैंने उस थेर के मुख से सुना है, मुख से ग्रहण किया है । यह धर्म है, यह विनय० । भिक्खुओ ! इस चतुर्थ महाप्रदेश धारण करना । भिक्खुओ ! इन चार महाप्रदेशों को धारण करना' ।

वहाँ भोग-नगर में विहार करते भी भगवान् भिक्खुओं को बहुत करके यही धर्म कथा कहते थे० ।

(पावा में)

०तब भगवान् महाभिक्खुसंघ में साथ पावा थी, वहाँ गए । वहाँ पावा

में [1]भगवान् चुन्द कर्मार (= सोनार)—पुत्र के आम्बवन में विहार करते थे।

चुन्द कर्मारपुत्र ने सुना—भगवान् पावा में आए हैं; पावा में मेरे अम्बवन में विहार करते हैं । तब चुन्द कर्मार-पुत्र जहाँ भगवान् थे, वहाँ जाकर भगवान् को अभिवादन कर एक ओर बैठा । एक ओर बैठे चुन्द कर्मार पुत्र को भगवान् ने धार्मिक कथा से ०समुत्तेजित० किया । तब चुन्दने भगवान् की धार्मिक कथा से ०समुत्तेजित० हो भगवान् को यह कहा—

'भंते ! भिक्खुसंघ के साथ भगवान् मेरा कल का भोजन स्वीकार करें' ।

भगवान् ने मौन से स्वीकार किया ।

तब चुन्द कर्मार-पुत्र ने उस रात के बीतने पर उत्तम खाद्य भोज्य (और) बहुत सा [2]**शूकर-मार्दव** (= सूकर मद्दव) तैयार करवा, भगवान् को काल की सूचना दी······। तब भगवानृ पूर्वाह्ण समय पहन कर पात्र-चीवर ले भिक्खुसंघ के साथ, जहाँ चुन्द कर्मार-पुत्र का घर था, वहाँ गए । जाकर बिछे आसन पर बैठे ।·····। (भोजन कर)·····एक और बैठे चुन्द कर्मार-पुत्र को भगवान् धार्मिक कथा से ०समुत्तेजित० कर आसन से उठकर चल दिए।

तब चुन्द कर्मार-पुत्र का भात (= भोजन) खाकर भगवान् को खून गिरने की, कड़ी बीमारी उत्पन्न हुई, मरणांतक सख्य पीड़ा होने लगी । उसे भगवान् ने स्मृति-सम्प्रजन्ययुक्त हो, बिना दुखित हुए, स्वीकार (= सहन) किया । तब भगवान् ने आयुष्मान आनंद को आमंत्रित किया—

'आओ **आनंद** ! जहाँ [3]**कुसीनारा** है, वहाँ चले' । 'अच्छा भंते' ।

---

1. मिलाओ उदान 8:5
2. अ.क. 'न बहुत तरुण न बहुत बूढ़े (= जीर्ण) एक (वर्ष) बड़े सूअर का बना मांस; वह मृदु भी, स्निग्ध भी होता है······ । कोई-कोई कहते हैं—नर्म चावल (= ओदन) को पाँच गोरस से जूस पकाने के विधान का नाम है, जैसे गोपान (= गवपान) पाक का नाम है । कोई कहते हैं—शूकर मार्दव नामक रसायन-विधि है, वह रसायन-शास्त्र में आती है । उसे चुन्द ने भगवान् का परिनिर्वाण न हो, इसके लिए तैयार कराया था' ।
3. उदान अ.क. (8:5) पावा से कुसीनारा 6 गव्यूति (3/4 योजन) है । इस बीच में पच्चीस-पच्चीस स्थानों में बैठ कर, बड़ी हिम्मत करके जाते हुए (मध्याह्न से चल के) सूर्यास्त-समय भगवान् कुसीनारा पहुँचे' ।

तब भगवान् मार्ग से हटकर एक वृक्ष के नीचे गए। जाकर आयुष्मान् आनंद को कहा—

'आनंद ! मेरे लिए चौपेती संघाटी बिछा दे, मैं थक गया हूँ, बैठूँगा'।

'अच्छा भंते' !·······आयुष्मान् आनंद ने चौपेती संघाटी बिछा दी, भगवान् बिछे आसन पर बैठे।·······। उस समय आलार कालाम का शिष्य पुक्कुस मल्ल-पुत्र कुसीनारा और पावा के बीच रास्ते में जा रहा था। पुक्कुस मल्ल-पुत्र ने भगवान् को एक वृक्ष के नीचे बैठे देखा। देखकर जहाँ भगवान् थे वहाँ·······जाकर भगवान् को अभिवादन कर एक ओर बैठ गया। पुक्कुस ने० भगवान् को कहा—

'आश्चर्य भंते ! अद्भुत भंते ! प्रव्रजित (लोग) शांततर विहार से विहरते हैं······।·····।' आज से भंते ! मुझे अंजलिबद्ध शरणागत उपासक धारण करें'।·····

तब **पुक्कुस०** भगवान् के धार्मिक-कथा से० समुत्तेजित० हो, आसन से उठकर, भगवान् को अभिवादन कर, प्रदक्षिणा कर चला गया।·······

(भगवान् ने आनंद को कहा)—

'आज **आनंद,** रात के पिछले पहर (= याम) कुसीनारा के [1]**उपवत्तन** शालवन में जोड़े शाली (साखू) वृक्षों के बीच तथागत निर्वाण प्राप्त होंगे। आओ आनंद ! जहाँ ककुत्था (= ककुत्सा) नदी है, वहाँ चलें'।

'अच्छा भंते'।·······

तब महाभिक्खुसंघ के साथ भगवान् जहाँ ककुत्था नदी थी, वहाँ गए। जाकर ककुत्था नदी को अवगाहन कर, स्नानकर, पानकर, उतरकर, जहाँ [2]**अम्बवन** (= अम्बवन) था, वहाँ गए। जाकर आयुष्मान् चुन्दक को बोले—

'चुंदक ! मेरे लिए चौपेती संघाटी बिछा दे। चुन्दक थक गया हूँ, लेटूँगा'।

'अच्छा भंते' !

---

1. कुशीनगर, जिला-देवरिया।
2. अ.क. 'उसी नदी के तीर अम्बवन'।

तब भगवान् पैर पर पैर रखकर, स्मृतिसम्प्रजन्य के साथ, उत्थान-संज्ञा मन में करके, दाहिनी करवट सिंह-शय्या से लेटे । आयुष्मान् चुन्दक वहीं भगवान् के सामने बैठे ।.......

तब भगवान् ने आयुष्मान **आनंद** के कहा—

'आनंद ! शायद को **चुन्द कर्म्मार** पुत्र को क्षुब्ध करे (= विप्पटिसारं उपदहेय) (और कहे)—'आवुस चुन्द ! अलाभ है तुझे तूने दुर्लभ कमाया, जो कि तथागत तेरे पिंडपात को भोजनकर परिनिर्वाण को प्राप्त हुए' आनंद ! चुन्द कर्मार-पुत्र की इस चिंता को दूर करना (और कहना)—आवुस ! लाभ है तुझे, तूने सुलाभ कमाया, जो कि तथागत तेरे पिडपात को भोजनकर परिनिर्वाण को प्राप्त हुए । आवुस चुन्द ! मैंने यह भगवान् के मुख से सुना, मुख से ग्रहण किया—'यह दो पिंड-पात समान फल वाले = समान विपाक वाले हैं, दूसरे पिंडपातों से बहुत ही महाफल-प्रद = महापृशंसतर हैं । कौन से दो ? (1) जिस पिंडपात (= भिक्ख) को भोजनकर तथागत अनुत्तर सम्यक्-सम्बोधि (= बुद्धत्त्व) को प्राप्त हुए, (2) और जिस पिंडपात को भोजनकर तथागत अन् -उपादिशेष निर्वाणधातु (= दुख-कारण-रहित निर्वाण) को प्राप्त हुए ।.......

तब भगवान् ने आयुष्मान् **आनंद** को आमंत्रित किया—

'आओ आनंद ! जहाँ [1]**हिरण्यवती** नदी का परला तीर है, जहाँ कुसीनारा उपवत्तर मल्लो का शालवन है, वहाँ चले' । 'अच्छा भंते' ।

तब भगवान् महाभिक्खुसंघ के साथ जहाँ **हिरण्यवती०** मल्लो का **शालवन** था, वहाँ गए । जाकर आयुष्मान आनंद को बोले—

'आनंद ! यमक (= जुड़वें)—शालों के बीच में उत्तर की ओर सिरहान

---

1. अ.क. 'जैसे (अनुराधपुर लंका में) कलम्ब-नदी के तीर से राजमाता-विहार-द्वार से थूपाराम जाना होता है, ऐसे ही हिरण्यवती के परले । तीर से शलवन उद्यान (है) । जैसे अनुराधपुर का थूपाराम है, वैसे ही वह कुसीनारा का है । जैसे थूपाराम से, दक्षिण-द्वार हो नगर में प्रवेश करने का मार्ग पूर्वमुँह हो, जाके उत्तर की ओर मुड़ता है; ऐसे ही उद्यान से शालपंक्ति पूर्व-मुँह जाकर उत्तर की ओर मुड़ी है । इसीलिए वह उपवत्तन कहा जता है' ।

कर चारपाई (= मंचक) बिछा दे । थका हूँ, आनंद ! लेटूँगा' । 'अच्छ भंते' !.......

तब भगवान्० दाहिनी करवट हो सिंहशय्या से लेटे ।.......

'आनंद ! श्रद्धालु कुलपुत्र के लिए यह चार स्थान दर्शनीय संवेजनीय (= वैराग्य-प्रद) हैं । कौन से चार ? (1) 'यहाँ तथागत उत्पन्न हुए (= लुम्बिनी)' यह स्थान श्रद्धालु० ! (2) 'यहाँ तथागत ने अनुत्तर सम्यक्-सम्बोधि को प्राप्त किया' (= बोधगया)० । (3) 'यहाँ तथागत अनुपादि-शेष निर्वाण-धातु को प्राप्त हुए (= कुसीनारा)० ।० यह चार स्थान दर्शनीय० है । आनंद ! श्रद्धालु भिक्खु भिक्खुणियां उपासक उपासिकाएँ (भविष्य में) आवेंगी, 'यहाँ तथागत उत्पन्न हुए',० 'यहाँ तथागत० निर्वाण० को प्राप्त हुए' ।.......'

'भंते ! हम स्त्रियों के साथ कैसे बर्ताव करेंगे' ?

'अ-दर्शन (= न देखना), आनंद' !

'दर्शन होने पर भगवान् कैसे बर्ताव करेंगे' ?

'आलाप (= बात न करना), आनंद' !

'बात करने वाले को कैसा करना चाहिए' ?

'स्मृति (= मन) को सम्भाले रखना चाहिए' ?

'भंते ! तथागत के शरीर को हम कैसे करेंगे' ?

'**आनंद** ! तथागत की शरीर-पूजा से तुम परवाह न करना । तुम आनंद सच्चे पदार्थ (= सदर्थ) के लिए प्रयत्न करना, सत्-अर्थ के लिए उद्योग करना । सत्-अर्थ में अप्रमादी, उद्योगी स्व-संयमी हो विरहना । हे, आनंद ! तथागत में अत्यंत अनुरक्त क्षत्रिय पंडित भी, ब्राह्मण पंडित भी, गृहपति पंडित भी, वह तथागत की शरीर-पूजा करेंगे' ।

'भंते ! तथागत के शरीर को कैसे करना चाहिए' ?

'जैसे आनंद ! राजा चक्रवर्ती के शरीर के साथ करना होता है, वैसे तथागत के शरीर को करना चाहिए' ।

'भंते ! राजा चक्रवर्ती के शरीर के साथ कैसे किया जाता है' ?

'आनंद ! राजा चक्रवर्ती के शरीर को नए वस्त्र से लपेटते हैं; नए वस्त्र से लपेटकर धुनी रूई से लपेटते हैं । धुनी रूई से लपेटकर नए वस्त्र

लपेटते हैं ।·······। इस प्रकार पलेटकर·······तेल की लोहद्रोणी (= दोन) में रखकर, दूसरी लोह-द्रोणी से ढांककर, सभी गंधों (वाले काष्ठ) की चिता बनाकर, राजा चक्रवर्ती के शरीर को जलाते हैं; जलाकर बड़े चौरास्ते पर राजा चक्रवर्ती का स्तूप बनाते हैं' ।·······।

तब आयुष्मान् आनंद विहार में जाकर कपिसीस (= खूंटी) के पकड़कर रोते खड़े हुए—'हाय ! मैं शैक्ष्य = सकरणीय हूँ । और जो मेरे अनुकंपक शास्त हैं, उनका परिनिर्वाण हो रहा है !'!

भगवान् ने भिक्खुओं को आमंत्रित किया—'भिक्खुओ ! आनंद कहाँ है' ?

'यह भंते ! आयुष्मान् आनंद विहार (= कोठरी) में जाकर० रोते खड़े हैं०' ।

'आ ! भिक्खु ! मेरे वचन से तू आनंद को कह—'आवुस आनंद ! शास्ता तुम्हें बुला रहे हैं'। 'अच्छा, भंते' !·······

आयुष्मान् **आनंद**·······जहाँ भगवान् थे, वहाँ·······आकर·······अभिवादन कर एक ओर बैठे ।·······आयुष्मान् आनंद को भगवान् ने कहा—

'नहीं आनंद ! मत शोक करो, मत रोओ ! मैंने तो आनंद ! पहले ही कह दिया है—सभी प्रियों = मनापों से जुदाई० होती है, सो वह आनंद ! कहाँ मिलने वाला है । जो कुछ जात (= उत्पन्न) = भूत = संस्कृत है, सो नाश होने वाला है । 'हाय ! वह नाश न हो' ।·······यह सम्भव नहीं। आनंद तूने दीर्घरात्र (= चिरकाल) तक हित-सुख अप्रमाण मैत्रीपूर्ण कायिक-कर्म से तथागत की सेवा की है । मैत्रीपूर्ण वाचिक कर्म से० । ०मैत्रीपूर्ण मानसिक कर्म से० । आनंद ! तू कृतपुण्य है । प्रधान (= निर्वाण-साधन) में लग जल्दी अनास्रव (= मुक्त) होजा' ।

·······आयुष्मान् आनंद ने भगवान् को यह कहा—

'भंते ! मत इस क्षुद्र नगले (= नगरक) में,जंगलीनगले में शाखा-नगर में परिनिर्वाण को प्राप्त होवें । भंते ! और भी महानगर हैं; जैसे कि चम्पा, राजगृह, श्रावस्ती, साकेत, कौशाम्बी, वाराणसी । वहाँ भगवान् परिनिर्वाण करें । वहाँ बहुत से क्षत्रिय महाशाल (= ० महाधनी), ब्राह्मण-महाशाल, गृहपति महाशाल तथागत के भक्त हैं; वह तथागत के शरीर की पूजा करेंगे' ।

'मत **आनंद** ! ऐसा कह; मत आनंद ! ऐसा कह—'इस क्षुद्र नगले०' । पूर्वकाल में आनंद ! यह कुसीनारा राजा सुदर्शन की कुशावती नामक राजधानी थी ।......। आनंद ! कुसीनारा में जाकर कुसीनारावासी मल्लों को कह—'वशिष्ठो ! आज रात के पिछले पहर तथागत का परिनिर्वाण होगा। चले वसिष्टो ! चलो वसिष्टो ! पीछे अफसोस मत करना—'हमारे ग्रामक्षेत्र में तथागत का परिनिर्वाण हुआ, लेकिन हम अंतिम काल में तथागत का दर्शन न कर पाए' ।

'अच्छा भंते' !......आयुष्मान् आनंद चीवर पहनकर, पात्र-चीवर ले, अकेले ही कुसीनारा में प्रविष्ट हुए । उस समय **कुसीनारावासी** मल्ल किसी काम में संस्थागार में जमा हुए थे । तब आयुष्मान आनंद जहाँ कुसीनारा के मल्लों का संस्थागार था, वहाँ गए । जाकर कुसीनारावसी मल्लों को यह बोले—'**वसिष्टो** !०' ।

आयुष्मान् **आनंद** से यह सुनकर मल्ल, मल्ल-पुत्र, मल्ल-वधुएं, मल्ल-भार्या में दुखित दुर्मना दुख-समर्पित-चित्त हो, कोई-कोई बालों को बिखेर रोते थे, बांह पकड़कर क्रंदन करते थे, कटे (पेड़) से गिरते थे, (भूमि पर) लोटते थे—बहुत जल्दी भगवान् निर्ब्रण प्राप्त हो रहे हैं, बहुत जल्दी सुगत निर्वाण प्राप्त हो रहे हैं० । बहुत जल्दी लोक-चक्षु अंतर्धान हो रहे हैं । तब मल्ल० दुखित० हो, जहाँ उपवत्तन मल्लों का शालवन था, वहाँ गए ।

तब आयुष्मान् आनंद को यह हुआ—'यदि मैं **कुसीनारा** के मल्लें को एक-एक करके भगवान् की वंदना करवाऊँगा; तो भगवान् (सभी) कुसीनारा के **मल्लों** से अवंदित ही होंगे, और यह रात बीत जाएगी । क्यों न में कुसीनारा के मल्लों के एक-एक कुल के क्रम से भगवान् की वंदना करवाऊँ—'भंते ! अमुक नामक मल्ल स-पुत्र, स-भार्या, स-परिषद, स-अमात्य भगवान् के चरणों को सिर से वंदना करता है' । तब आयुष्मान् आनंद ने कुसीनारा के मल्लों को एक-एक कुल के क्रम में भगवान् की वंदना करवायी—० । इस उपाय से आयुष्मान् आनंद ने, प्रथम याम में (= छः से दस बजे रात तक) कुसीनारा के मल्लों से भगवान् की वंदना करवा दी ।

उस समय कुसीनारा में **सुभद्र** नामक **परिव्राजक** वास करता था । सुभद्र परिव्राजक ने सुना, आज रात को पिछले पहर श्रमण गौतम का

परिनिर्वाण होगा तब सुभद्र परिव्राजक को ऐसा हुआ—मैंने वृद्ध-महल्लक आचाय्र-प्राचार्य परिव्राजकों को यह कहते सुनाहै—'कदाचित् कभी ही तथागत अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध उत्पन्न हुआ करते हैं' । और आज रात के पिछले पहर श्रमण गौतम का परिनिर्वाण होगा, और मुझे यह संशय (= कंखधम्म) उत्पन्न है;······इस प्रकार में श्रमण गौतम में प्रसन्न (= श्रद्धावान्) हूँ । श्रमण **गौतम** मुझे वैसा, धर्म उपदेश कर सकते हैं; जिससे मेरा यह संशय हट जाए' ।

तब सुभद्र परिव्राजक जहाँ उपवत्तन मल्लों का शालवन था, जहाँ आयुष्मान् आनंद थे, वहाँ गया । जाकार आयुष्मान **आनंद** को बोला—

'हे आनंद ! मैंने वृद्ध महल्लक० परिव्राजकों कोयह कहते सुना है० । सो मैं श्रमण गौतम का दर्शन पाऊँ' ?

ऐसा कहने पर आयुष्मान् आनंद से सुभद्र परिव्राजक को कहा—

'नहं आवुस ! सुभद्र ! तथागत को तकलीफ मत दो । भगवान् थके हुए हैं' । दूसरी बार भी सुभद्र परिव्राजक ने० ।० ।

तीसरी बार भी० ।

भगवान् ने आयुष्मान् आनंद का सुभद्र परिव्राजक के साथ का कथा-संलाप सुन लिया । तब भगवान् ने आयुष्मान आनंद को कहा—

'नहीं आनंद ! मत **सुभद्र** को मना करो । सुभद्र को तथागत का दर्शन पाने दो । जो कुछ सुभद्र पूछेगा, वह आज्ञा (= परम-ज्ञान) की चाह से ही पूछेगा; तकलीफ देने की चाह से नहीं । पूछने पर जो में उसे कहूँगा, उसे जल्दी ही जान लेगा' ।

तब आयुष्मान् आनंद ने सुभद्र परिव्राजक को कहा—

'जाओ आवुस सुभद्र ! भगवान् तुम्हें आज्ञा देते हैं' ।

तब सुभद्र परिव्राजक जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया । जाकर भगवान् के साथ संमोदनकर······एक ओर बैठा । एक ओर बैठे······बोला ।

'हे गौतम ! जो श्रमण ब्राह्मण संघी = गणी = गणाचार्य, प्रसिद्ध यशस्वी तीर्थंकर, बहुत लोगों द्वारा उत्तम माने जाते वाले हैं, जैसे कि—**पूर्ण काश्यप, मक्खलि गोसाल, अजित केसकम्बल, पकुध कच्चायन,**

संजय बेलट्ठिपुत्त, निगंठ नाथपुत्त । (क्या) वह सभी अपने दावा (= प्रतिज्ञा) को (वैसा) जानते, (या) सभी (वैसा) नहीं जानते; (या) कोई-कोई वैसा जानते, कोई-कोई वैसा नहीं जानते ! । ……।'

'[1]नहीं सुभद्र ! जाने दो—'वह सभी अपने दावा को० । सुभद्र ! तुम्हें धर्म० उपदेश करता हूँ; उसे सुनो, अच्छी तरह मन में (धारण) करो, भाषण करता हूँ' ।

'अच्छा भंते' ! सुभद्र परिव्राजक ने भगवान् को कहा । भगवान् ने यह कहा—

'सुभद्र ! जिस धर्म-विनय में आर्य आष्टांगिक मार्ग उपलब्ध नहीं होता, वहाँ (प्रथम) श्रमण (स्रोत आपन्न) भी उपलब्ध नहीं होता; द्वितीय श्रमण (= सकृदागामी) भी उपलब्ध नहीं होता; तृतीय श्रमण (= अनागामी) भी उपलब्ध नहीं होता; चतुर्थ श्रमण (= अर्हत्) भी उपलब्ध नहीं होता । सुभद्र ! जिस धर्म-विनय में आर्य-आष्टांगिक-मार्ग उपलब्ध होता है, वहाँ श्रमण भी होता है० । सुभद्र ! इस धर्म-विनय में आर्य आष्टांगिक-मार्ग उपलब्ध होता है; सुभद्र ! यहा श्रमण० भी, वहाँ ०द्वितीय श्रमण भी, यहाँ ०तृतीय श्रमण भी, यहाँ ०चतुर्थ श्रमण भी है । दूसरे वाद (= मत) श्रमणों से शून्य हैं। सुभद्र ! यहाँ (यदि) भिक्खु ठीक से विहार करें (तो) लोक अर्हतों से शून्य न होवे' ।

'**सुभद्र** ! उन्तीस वर्ष की अवस्था में कुशल (= मंगल) का खोजी हो, मैं प्रव्रजित हुआ । सुभद्र ! जब मैं प्रव्रजित हुआ तब से इक्कावन वर्ष हुए । न्याय-धर्म (= आर्य-धर्म = सत्य-धर्म) के एक देश को देखने वाला यहाँ से बाहर कोई नहीं है ॥1,2॥'……।

ऐसा कहने पर सुभद्र परिव्राजक भगवान् को कहा—

'आश्चर्य भंते ! अद्भुत भंते !० मैं भगवान् की शरण जाता हूँ, धर्म और भिक्खुसंघ की भी । भंते ! मुझे भगवान् के पास से मिले, उपसम्पदा मिले' ।

---

1. अ.क. 'पहले पहर में मल्लों को धर्म-देशानाकर, विचले पहर सुभद्र को, पिछले पहर भिक्खुसंघ को उपदेश दे बहुत भोरे ही परिनिर्वाण……।'

'सुभद्र ! जो कोई भूतपूर्व अन्य-तैर्थिक (= दूसरे पंथ का) इस धर्म ......में प्रव्रज्या......उपसम्पदा चाहता है । वह चार मास परिवास (= परीक्षार्थ वास) करता है । चार मास के बाद, आरब्ध-चित्त भिक्खु प्रव्रजित करते हैं, भिक्खु होने के लिए उपसम्पन्न करते हैं' ।......

'भंते ! यदि भूत-पूर्व अन्य-तैर्थिक इस धर्म-विनय में प्रव्रज्या० उपसम्पदा चहने-पर, चार मास परिवास करता है० । तो भंते ! मै चार वर्ष परिवास करूँगा । चार वर्षों के बाद आरब्ध चित्त भिक्खु मुझे प्रव्रजित करें' ।

तब भगवान् ने आयुष्मान् आनंद को कहा—'तो आनंद ! सुभद्र को प्रव्रजित करो' ।

'अच्छा भंते' !......

तब **सुभद्र परिव्राजक** को आयुष्मान् आनंद ने कहा—

'आवुस !......लाभ है तुम्हें, सुलाभ हुआ तुम्हें; जो यहाँ शास्ता के सम्मुख अंतेवासी (= शिष्य) के अभिषेक से अभिषिक्त हुए' ।

सुभद्र परिव्राजक ने भगवान् के पास प्रव्रज्या पाई, उपसम्पदा पाई । उपसम्पदा होने के अचिर ही में आयुष्मान् सुभद्र......आत्मसंयमी हो विहार करते जल्दी ही जिसके लिए कुलपुत्र० प्रव्रजित होते है; उस अनुत्तर ब्रह्मचर्य फल को इसी जन्म में स्वयं जानकर, साक्षात्कार कर, प्राप्त कर विहरने लगे ।० । सुभद्र अर्हतों में से एक हुए । वह भगवान् के अंतिम......शिष्य हुए ।

तब भगवान् ने आयुष्मान् आनंद को कहा—

'आनंद ! शायद तुम हो ऐसा हो—(1) अतीत-शास्ता (= चल गुरु) का (यह) प्रवचन (= उपदेश) है, (अब) हमारा शास्ता नहीं है । आनंद ! ऐसा मत देखना । मैंने जो धर्म और विनय उपदेश किएहैं, प्रज्ञप्त (= विहित) किए है; मेरे बाद वही तुम्हारा शास्ता (= गुरु) है । (2) आनंद ! जैसे आजकल भिक्खु एक-दूसरे को 'आवुस' कहकर पुकाराते हैं, मेरे बादऐसा कहकर न पुकारें । आनंद ! थेर (= उपसम्पदा प्रव्रज्यों में अधिक दिन का) भिक्खु नवक-तर (= अपने से कम समय के) भिक्खु कोनाम से, या गोत्र से, या 'आवुस' कहकर पुकारें । नवक-तर भिक्खु थेर को 'भंते' या

'आयुष्मान्' कहकर पुकारें । (3) इच्छा होने पर संघ मेरे बाद क्षुद्र-अनुक्षुद्र (= छोटे-छोटे) शिक्षापदों (= भिक्खु-नियमों) को छोड़ दे । (4) आनंद ! मेरे बाद छन्न भिक्खु को ब्रह्मदंड करना चाहिए' ।

'भंते ! ब्रह्मदंड क्या है' ?

'आनंद ! छन्न, भिक्खुओं को जो चाहे सो कहे, भिक्खुओं को उसने न बोलना चाहिए, न उपदेश = अनुशासन करना चाहिए' ।

तब भगवान् ने भिक्खुओं को आमंत्रित किया—

'भिक्खुओ ! (यदि) बुद्ध, धम्म, संघ में एक भिक्खु को भी कुछ शंका हो, (तो) पूछ ले । भिक्खुओं ! पीछे अफसोस मत करना—'शास्ता हमारे सम्मुख थे, (किन्तु) हम भगवान् के समाने कुद न पूछे सके' ।

ऐसा कहने पर वह भिक्खु चुप रहे । दूसरी बार भी भगवान् बुद्ध० । ०। तीसरी बार भी० ।० ।......

तब भगवान् ने भिक्खुओं को आमंत्रित किया—

'हन्त भिक्खुओं ! अब तुम्हें कहा हूँ—'संस्कार (= कृतवस्तु) व्यय-धर्मा (= नाशवान्) हैं; अप्रमाद के साथ (= आलस न कर) (जीवन के लक्ष्य को) सम्पादन करो' ।—यह तथागत का अंतिम वचन है ।

परिच्छेद - 54

भूकम्प पैदा होने की आठ अवस्था (बौद्ध धर्म के अनुसार)

महाकारुणिक तथागत बुद्ध द्वारा आयु संस्कार छोड़ने के बाद एक बहुत बड़ा भूकम्प आया । भिक्षु आनन्द जाकर बुद्ध से पूछा इस समय भूकम्प होने का मतलब क्या है ? महाकारुणिक तथागत बुद्ध ने कहा-पृथ्वी गर्भ के धातु कम्पन से, बहुत बड़ा पुण्यवान व्यक्तियों का इर्दी भाव से, पारमिता पूर्ण करने के बाद बोधिसत्व व्यक्तियों का गर्भधारण के समय ऐसे व्यक्तियों के उत्पत्ति के समय, बुद्धत्व प्राप्ति होने के समय, धर्मचक्र देशना के समय, बुद्ध का आयु संस्कार छोड़ते समय, बुद्ध के महापरिनिर्वाण के समय इस प्रकार भूमि कम्पित होने की आठ परिस्थिति बुद्ध ने भिक्षु आनन्द को बताया ।

महाकारुणिक तथागत बुद्ध की बात को सुनकर भिक्षु आनन्द शोकाकुल होकर बुद्ध के पास जाकर आयाचना की एक कल्प तक जिन्दा रहने के लिए । बुद्ध ने भिक्षु आनन्द को कहा यह सब अनुरोध आयु संस्कार के पहले होना चाहिए था । यह कहकर भिक्षु आनन्द के अनुरोध को बुद्ध ने प्रतिक्षेप किया । आज से तीन महीने के बाद महापरिनिर्वाण होने का बात बताया ।

इसके बाद बुद्ध महावन का कूटागारशाला में पधारे । भिक्षु आनन्द को कहा आस पास जितने भिक्षु होगे सभी को उपस्थानशाला में बुलाओ । महाकारुणिक तथागत बुद्ध की बात सुनकर भिक्षु आनन्द आस-पास के सभी भिक्षुओं को उपस्थानशाला में बुलाया । सभी भिक्षुगण एकत्रित होने के बाद महाकारुणिक तथागत बुद्ध ने सभी भिक्षुओं को आमंत्रित करके चार सतिपट्ठान, चार सम्यक प्रधान, चार इर्दी पाद पाँचइन्द्रिय, पंचबल, सात सम्बोध्यांग, आर्य अण्टांगिक मार्ग जैसे बुद्ध के देशना के अनुसार बोधि पाक्षिक धर्म सही ढंग से अध्ययन करके प्रायोगिक स्तर पर ले आने की कोशिश की । तत्पश्चात सभी भिक्षुओं को आमंत्रित करके एक छोट-सा धर्म-देशना की—

'भिक्षुओं ! मैं महाकरुणा से आप सभी लोगों को आमंत्रित करता हूँ। सभी संस्कार नष्ट होने का स्वभाव है अपने चित्त को परिशुद्ध करके गुण-धर्म को आगे बढ़ाओ । थोड़े दिन के बाद हमारा महापरिनिर्वाण होगा । आज से तीन महिने के बाद मैं महापरिनिर्वाण को प्राप्त करूँगा' ।

(अंक 166)

उसके बाद महाप्रजापति गौतमी व यशोधरा भिक्षुणी दोनों बुद्ध के पास आकर नमन किया और नमन करके बुद्ध से अनुमति लेकर परिनिर्वाण प्राप्त किया ।

उसके बाद महाकारुणिक तथागत बुद्ध वैशाली से निकलकर भाण्ड ग्राम में पधारे । उधर बुद्ध भिक्षुओं को आमंत्रित करके आर्य शील, आर्य समाधि, आर्य प्रज्ञा, आर्य विमुक्ति यह चार धर्म अवबोध प्रतिबोध नहीं करने के कारण अपने साथ-साथ यह भिक्षु संघ भी संसार में बहुत दिनों तक कई रुपों में उत्पत्ति और मरण के स्वभाव का सामना किया कहकर उपदेश दिया। लेकिन अभी यह चार धर्म अवबोध प्रतिबोध करने के कारण, तृण्णा पूरा नष्ट करने के कारण फिर से कोई उत्पत्ति नहीं होगा । ऐसा करने से कोई उत्पत्ति नहीं होगा । ऐसा कहकर शील समाधि, प्रज्ञा विमुक्ति यह सभी चिजों के बारे में चर्चा करते-करते समय बिताया । इसके पश्चात् महाकारुणिक तथागत बुद्ध भाण्ड ग्राम से निकलकर क्रमानुसार हस्तिग्राम, आम्रगाम, जम्बुग्राम इन्हीं ग्रामी से होते हुए ओघनगर के आनन्द चैत्य नामक स्थान पर ठहरे आनन्द चैत्य स्थान पर ठहर कर भिक्षु लोगों को आमंत्रित करके महा अपदान धर्म का देशना किया । (अंक 167)

ओघनगर व आनन्द चैत्य से निकलकर पाँवानगर के चुन्द करमार पुत्र के आम के बगीचे में विहरण करते थे । बुद्ध अपने आम के बगीचे में आने की खबर सुनकर चुन्दकरमार पुत्र बहुत खुश हो गया । बुद्ध के पास जाकर चुन्द्रकरमार पुत्र धर्मदेशना सुना । धर्मदेशना सुनकर दूसरे दिन अपने घर पर भिक्षु महासंघ के साथ महाकारुणिक तथागत बुद्ध को भोजन दान के लिए आने को आमंत्रित किया । बुद्ध प्रमुख भिक्षु महासंघ को चुन्द करमार पुत्र को अनुमोदना धर्मदेशना करने के बाद महाकारुणिक तथागत बुद्ध वहाँ से निकल गये । महाकारुणिक तथागत बुद्ध का भगन्दर रोग जो वेलुबनाराम में हुआ था । वह फिर शुरू हो गया । वेलुबनाराम में बुद्ध ने अधिष्ठान किया कि दस महीने तक वह रोग फिर नहीं होना । उसी हिसाब

से भगन्दर रोग दब गया था लेकिन दस महीना समाप्त होते ही चुन्द करमार पुत्र का भोजन दान के बाद भगन्दर रोग पुनः उत्पन्न हो गया । चुन्दकरमार का भोजन मृदु था इसलिए रोग असाध्य नहीं हुआ । यदि यह भोजन नहीं किये होते तो यह रोग असाध्य होता । उस समय समापत्ति शक्ति से रोग को दवा देते थे लेकिन सर्वज्ञ बुद्ध होने से भी पंचस्कन्ध के स्वभाव को समझने के लिए समापत्ति से रोग को दबाया नहीं। भिक्षु संघ से बात करके उस रोग को उसी हिसाब से वैसे ही रहने दिया।

महाकारुणिक तथागत बुद्ध क्रमशः भिक्षु महासंघ के साथ कुशीनारानगर जाते समय शरीर का अप्रानिक होने के कारण आराम करने के लिए पेड़ के नीचे बैठ गये । ज्यादा थकावट अप्रानिक गति होने से भिक्षु आनन्द को आमंत्रित करके जल मँगवाकर पी लिया । उस समय आलार कालाम तपस्वी का पुक्कुस नाम के मल्ल राजकुमार कुशीनारा से पांवा नगर को जाते समय पेड़ के नीचे बैठा हुआ बुद्ध को देखकर बुद्ध के पास जाकर बैठ गया । तथागत बुद्ध ने पुक्कुस मल्ल राज पुत्र को त्रिशरण पंचशील देकर धर्म देशना किया । पुक्कुस मल्ल राज पुत्र ने सोने का दो वस्त्र बुद्ध को पूजा किया। बुद्ध उसके दोनों वस्त्रों को स्वीकार किया । दूसरा वस्त्र भिक्षु आनन्द को प्रदान किया । पुक्कुस मल्ल राज पुत्र जाने के बाद भिक्षु आनन्द जो अपने को वस्त्र मिला था । उस वस्त्र को बुद्ध के लिए जमीन पर बिछा दिया । बुद्ध ने एक वस्त्र पहनकर दूसरा ओढ़ लिया । उस दिन जो बुद्ध ने भोजन किया वह भोजन कुछ विशेष था । बुद्ध ने सोचा यह भोजन भी विशेष था क्योंकि पूर्व बुद्ध पुरुषों जैसे इसी भोजन के बाद ही मैं भी महापरिनिर्वाण तक पहुँच जाऊँगा । बुद्ध का चित्त सौमनस्य से भर गया । जिस कारण बुद्ध का शरीर चमकना शुरू हो गया ।

उसके बाद महाकारुणिक तथागत बुद्ध भिक्षुमहासंघ के साथ कुकुत्था नदी के पास चले गये । कुकुत्था नदी में भिक्षुओं के साथ स्नान करके पानी भी पिया । इसके बाद कुकुत्था नदी के किनारे एक आम के बगीचे में जाकर आराम किया । उस समय भिक्षु आनन्द बुद्ध का जल साटिक (भिक्षुओं का अन्तरावास लुग्गी जैसे पहने वाला बुद्ध के विनय के अनुसार बना हुआ एक वस्त्र है) को धोकर निचोड़ने में देरी होने से नदी से बाहर आने में भिक्षु आनन्द को देर हो गयी । भिक्षु आनन्द को आने में देरी होने से बगल में चुन्द स्थविर था । उसको आमंत्रित करके युगल चीवर बिछाकर

सिंह सैया से लेट गये। थोड़ी देर के बाद भिक्षु आनन्द बुद्ध के पास आये। उस समय महाकारुणिक तथागत बुद्ध ने भिक्षु आनन्द से कहा आनन्द जो मैं बुद्धत्व प्राप्त करने के पहले दिन जो सुजाता ने मेरे लिए खीर भोजन दान दिया था उसी प्रकार महापरिनिर्वाण के पहले जो चुन्द करमार पुत्र भोजन दान दिया दोनों का पुण्य बराबर है। (अंक 168)

महाकारुणिक तथागत बुद्ध कुकुत्था नदी से चलकर हिरण्यवती नदी को पार करके कुशीनारा नगर में प्रवेश किया। कुशीनारा नगर में उपवर्तन नाम से प्रसिद्ध मल्ल राजाओं का सुन्दर साल (साखुआ) उद्यान में प्रवेश किया। उसी साल सखुआ उद्यान में मल्ल राजा लोगों को आराम करने के लिए एक पलंग था। उसी पलंग को दो सखुआ वृक्षों के बीच में रखने के लिए आनन्द को कहा। आनन्द बुद्ध के कथनानुसार श्रीपलंग को पलंग के लम्बाई के बराबर दो सखुआ पेड़ के बीच में महाकारुणिक तथागत बुद्ध को विश्राम करने के लिए उस पलंग को तैयार किया। बुद्ध सिंह सैया से उल पलंग पर लेट गये।

परिच्छेद - 55

महापरिनिर्वाण के लिए परिनिर्वाण आसन पर लेटना

महाकारुणिक तथागत बुद्ध उस पलंग के आसन पर लेटने के बाद दिव्य ब्रह्म समूह आसमान से सुगन्ध, सुगन्धित पुष्प गिरना शुरू कर दिया। गीत गाकर महाकारुणिक तथागत बुद्ध की पूजा किया। यह सब देखने के बाद बुद्ध आनन्द स्थवीर को आमंत्रित किया। कहा आनन्द आमीष पूजा तथागत का सही पूजा नहीं है। कोई-कोई भिक्षु-भिक्षुणी, उपासक-उपासिका लोकोत्तर धर्म के अनुसार प्रतिपत्ती सम्पन्न करता है तो वही बुद्ध का असली पूजा है। (अंक 169)

उस समय भिक्षु उपवान महाकरुणिक तथागत बुद्ध के लिए पंखा से हवा झल रहे थे। उपवान भिक्षु महानुभाव सम्पन्न अरहत होने के कारण देवता लोग भी उपवान भिक्षु को इधर-उधर करने में असमर्थ थे। बुद्ध ने सोचा यदि हमारा दर्शन करने के लिए देवता लोगों को अवसर नहीं देने से इससे देवता लोगों को कष्ट होगा। ऐसा सोचकर महाकारुणिक तथागत बुद्ध अरहत उपवान से कहा थोड़ी देर के लिए अपने स्थान से हट जाने को। देवता लोगों को जगह बनाकर बुद्ध दर्शन के लिए बुद्ध के कथनानुसार अरहत भिक्षु उपवान उस स्थान से हट गये। अनागामी और अरहत देवता लोगों को छोड़कर बाकि देवता समूह रोते शोकाकुल होकर बुद्ध के चारों तरफ एकत्रित हो गये।

उस समय भिक्षु आनन्द महाकारुणिक तथागत बुद्ध से कुछ प्रश्न पूछा जिसका तथागत बुद्ध ने उत्तर दिया—

'बुद्ध शासन में श्रद्धावान व्यक्तियों को दर्शन करने योग्य चार स्थान है जिसे देखने के बाद महाकारुणिक तथागत बुद्ध के प्रति संवेदना उत्पन्न होता है–

(1) सिद्धार्थ कुमार का जन्म स्थान–लुम्बिनी, (2) बुद्धत्व प्राप्ति का

स्थान-बोध गया, (2) प्रथम उपदेश-धम्मचक्क पवत्तन सूत्र का स्थान इसी पतन मृगदाय सारनाथ वाराणसी, (4) महापरिनिर्वाण स्थल कुशीनारा' ।

उसके बाद भिक्षु आनन्द ने पूछा भिक्षु स्त्रियों के लिए किस ढंग से पेश आना है ? फिर भिक्षु आनन्द ने पूछा बुद्ध के महापरिनिर्वाण (देहान्त) के बाद बुद्ध के मृत शरीर को किस ढंग से क्रिया कर्म करना होगा ? बुद्ध ने कहा बुद्ध के शरीर की पूजा करने के लिए समय व्यर्थ मत करो। क्षत्रिय, ब्राह्मण, श्रमण आदि सभी लोग बुद्ध शरीर का निरन्तर पूजा करते है ।

फिर से भिक्षु आनन्द ने बुद्ध से पूछा महापरिनिर्वाण के बाद बुद्ध के मृत शरीर को जलाने या दफनाने का तरीका क्या है ?

बुद्ध ने कहा—जैसे किसी चक्रवर्ती राजा के मृत शरीर को जलाने का प्रबन्ध किया जाता है, उसी प्रकार महाकारुणिक तथागत बुद्ध के मृत शरीर को ऐसे ही करना चाहिए । ऐसा करने से महापुण्य मिलने की बात आनन्द से कही । उसके बाद बुद्ध ने कहा सम्यक सम्मबुद्ध पच्छेक बुद्ध, अरहत, चक्रवर्ती राजा इन चारों लोगों का देहान्त होने के बाद इनके नाम पर स्तूप बनाना योग्य है । यह सभी बाते सुनने के बाद भिक्षु आनन्द को समझ में आया कि इसका मतलब महाकारुणिक तथागत बुद्ध को आज ही महापरिनिर्वाण को प्राप्त होना है । यह सोचकर शोकभरित दिल से उस जगह से हटकर उसी मण्डप के एक द्वार के कोने में सटकर चिन्ता भरित हो गया । आनन्द भिक्षु चिन्ता भरित होकर कहा—

"मैं अरहत होने के लिए जो करना था वह अभी पूरा नहीं किया । मेरे लिए महाकरुणा से अनुशासना करने वाले महाकारुणिक तथागत बुद्ध आज महापिरनिर्वाण प्राप्त करेगे । कल से मुँह धोने का पानी मैं किसको दूँगा, किसका पैर धोऊगाँ, किसका शयनासन तैयार करूँगा, किसका पात्रा चीवर लेकर जाऊगाँ" ।

इसी तरह भिक्षु आनन्द रोते-गाते अकेले विलाप करते रहे । बुद्ध ने भिक्षुओं से पूछा भिक्षु आनन्द कहाँ है । भिक्षुओं ने कहा भाग्यवत भिक्षु आनन्द एक कोने में जाकर रो रहा है । बुद्ध ने कहा भिक्षु आनन्द को हमारे पास बुलाकर ले आओ । बुद्ध के कहने पर भिक्षु लोग जाकर भिक्षु

आनन्द को बुद्ध के पास ले गये । भिक्षु आनन्द रोते-रोते महाकारुणिक तथागत बुद्ध के पास आकर महाकारुणिक तथागत बुद्ध को नमन किया । इसके बाद बुद्ध ने कहा—

'आनन्द रोना मत, शोक नहीं करना, सभी प्रिय चीजों से अलग होने वाले स्वभाव के बारे में मैं पहले से आप को कहा है । जो उत्पन्न होता है उसमें नष्ट होने का, टूटने का स्वभाव होता है । ऐसे स्वभाव के चीज टूटेगा नहीं टूटेगा सोचकर न बदलेगा, सोचकर कोई सोचेगा वह कभी सम्भव नहीं है' ।

आनन्द आप बहुत दिन हमारे हृदय के सामने और बाद में भी हमारा बहुत सेवा किया । आनन्द आप बहुत पुण्य किया हुआ है । इसलिए प्रमाद मत हो आप जल्द ही अरहत प्राप्त करने वाला है । ऐसा कहकर बुद्ध ने भिक्षु आनन्द का बहुत गुणों का वर्णन किया । उसके बाद भिक्षु आनन्द ने बुद्ध से कहा भाग्यवत कुशीनारा बहुत छोटा-सा शहर है । इस स्थान पर महापरिनिर्वाण मत करना । चम्पा श्रावस्ती, साकेंत, कोशाम्बी, वाराणसी ऐसे कोई एक प्रसिद्ध नगर में महापरिनिर्वाण प्राप्त करने के लिए अनुरोध किया भिक्षु आनन्द की बात को सुनकर महाकारुणिक तथागत बुद्ध ने कहा—भिक्षु आनन्द ऐसा मत सोचना कुशीनारा कोई छोटा शहर नहीं है। पूर्व समय महा सुदर्शन चक्रवर्ती राजा का निवास स्थान भी है । कुशीनारा में रहकर महासुदर्शन सूत्र से देशना किया ।

(महासूदर्शन सूत्र दिघनिकाय में मिलता है ।)

बुद्ध आनन्द को बुलाकर कहा जाकर मल्ल राजाओं को सूचना दे दो। उसी दिन परिश्चम याम में महापरिनिर्वाण प्राप्त करने की खबर देना है । उसी के अनुसार भिक्षु आनन्द जाकर मल्ल राजाओं को बुद्ध के महा-परिनिर्वाण के खबर की सूचना दिया । मल्ल राजा लोग शोकभरित होकर, आकर महाकारुणिक तथागत बुद्ध का अन्तिम दर्शन भी किया और नमन भी किया ।

उसी समय कुशीनारा नगर में एक सुभद्र नामक परिव्राजक था । उसको पता लगा महाकारुणिक तथा बुद्ध उसी दिन पश्चिम याम में महापरिनिर्वाण प्राप्त करने का खबर मिला । उस सुभद्र परिव्राजक के अन्दर कुछ सवाल

था सोचा महाकारुणिक तथागत बुद्ध महापरिनिर्वाण प्राप्त करने के पहले किसी तरह प्रश्नों का उत्तर लेकर अपना शंका दूर करेंगे । लेकिन भिक्षु आनन्द सुभद्र परिव्राजक से कहा अब तथागत बुद्ध का आखिरी समय है इसलिए बात कराकर बुद्ध को तंग नहीं करना है । ऐसा कहकर भिक्षु आनन्द ने सुभद्र परिव्राजक का मुलाकात करने वाला कार्यक्रम का प्रतिक्षेप किया । दोनों का संवाद बुद्ध को सुनाई दिया । महाकारुणिक तथागत बुद्ध ने कहा आनन्द ऐसा मत करना । अपने दिल के अन्दर कोई प्रश्न होतो सुभद्र परिव्राजक को पूछने का मौका देना चाहिए । बुद्ध की आज्ञा मिलने के बाद सुभद्र परिव्राजक बुद्ध से पूछा पूर्ण काश्यप तिर्थांकर समूह जो-जो दुख से मुक्ति पाकर उस मुक्त मार्ग हमलोग जानते है यह सही है या नहीं ? जो ये लोग बोल रहे थे धर्म तर्क संगत है कि नहीं बुद्ध से पूछा । तब बुद्ध ने सुभद्र को कहा वह सभी बात छोड़ो जो मैं कह रहा हूँ उसे सुनो—

‘सुभद्र कोई भी शासन में आर्य अष्टांगिक मार्ग नहीं होने से प्रथम श्रमण व्यक्ति (सोवान व्यक्ति) नहीं होने से दूसरा श्रमण (सकृदागामी) तिसरा श्रमण व्यक्ति (अनागामी व्यक्ति) चौथा श्रमण (अरहत व्यक्ति) नहीं होने से कोई भी शासन में चार तरह का श्रमण होते है । सुभद्र हमारे शासन में आर्य अष्टांगिक मार्ग है इसलिए चार श्रमण भी है । सोवान आदि चार फल के लिए विदर्शना भावना करने वाले चार व्यक्ति, कर्मस्थ चार व्यक्ति, कलस्थ चार व्यक्ति, उसी ढंग का सोलह श्रमण नहीं होने से बाकि दृष्टि मिथ्या दृष्टिक होता है सुभद्र इस बारह प्रकार के भिक्षु सही ढंग से होने से उस सही भिक्षु अपने को लाभ मिलता है । वह मार्ग बाकि लोगों को भी बोलने से मार्गफल प्राप्त करने वाले व्यक्ति और भी बहुत होगे । उसी तरह इस संसार को अरहत लोगों से भर जाना स्वभाविक है’ ।

सुभद्र 29 (उन्तीस) वर्ष की आयु में मैंने सत्य खोजने के लिए प्रव्रज्या लिया था । उस दिन से आज तक मेरा समय 51 (इक्यावन) वर्ष हो गया । 51 साल के अन्दर मैंने आर्य मार्ग फल प्राप्ति के लिए विदर्शना भावना करने वाले किसी भी व्यक्ति को अपने शासन से बाहर हमने नहीं देखा । भविष्य में भी नहीं होगा, इसलिए आर्य अष्टांगिक मार्ग से बाहर कोई भी शासन में आर्य अष्टांगिक मार्ग प्राप्त कोई भी व्यक्ति कभी भी नहीं होता है । (अंक 170)

बुद्ध की बात को सुनकर सुभद्र परिव्राजक बुद्ध से प्रव्रज्या एवम् उपसम्पदा माँगा । बुद्ध की अनुमति लेकर भिक्षु आनन्द सुभद्र परिव्राजक को प्रव्रज्या करवाया । जीवन के आखिरी मुहुर्त में भी तथागत बुद्ध ने प्रव्रज्जित सुभद्र को उपसम्पदा कराकर कर्मस्थान की कर्म देशना किया । सुभद्र भिक्षु महाकारुणिक तथागत बुद्ध से कर्म स्थान लेकर उसी जगह एक स्थान पर जाकर ध्यान करने के फलस्वरूप अरहत प्राप्ति का लाभ लिया। तत्पश्चात महाकारुणिक तथागत बुद्ध के पास जाकर तथागत बुद्ध को नमन करके बगल में बैठ गया । सुभद्र भिक्षु महाकारुणिक तथागत बुद्ध के जीवन का आखिरी उपसम्पन्न अरहत भिक्षु के नाम से जाना जाता है ।

धर्म को शास्ता का स्थान देना

महाकारुणिक तथागत बुद्ध भिक्षु आनन्द को आमंत्रित किया कहा—आनन्द मेरे देहान्त के बाद धर्म एवम् विनय दोनों को अपना गुरु मानना उसके बाद कहा—मेरे जीवित रहते समय सभी भिक्षु लोग एक दूसरे को आयुष्मान कह कर आमंत्रित करते थे । लेकिन हमारे देहान्त के बाद जेष्ठ भिक्षु, नवक भिक्षु और श्रामणेर के लिए नाम से नहीं तो आयुष्मान शब्द से आमंत्रित करना । नवक भिक्षु श्रामणेर जेष्ठ भिक्षु को स्वाभिमानी नहीं तो आयुष्मान, हंस जैसे शब्दों से आमंत्रित करना चाहिए ।

उसके बाद महाकारुणिक तथागत बुद्ध सभी भिक्षुओं को आमंत्रित करके कहा सभी संस्कार नष्ट होने वाले स्वभाव की है । इसलिए सत्ति (चित्त) से अपने जीवन का कर्तव्य पूरा करना चाहिए । (अंक 171)

उसके बाद महाकारुणिक तथागत बुद्ध प्रथम ध्यान में प्रवेश किया, उसे छोड़कर द्वितीय ध्यान में प्रवेश किया इसके बाद तृतीय ध्यान में प्रवेश किया । तत्पश्चात चतुर्थक ध्यान में प्रवेश किया, आकाश, अनन्त समापत्ति में प्रवेश । उसके बाद विज्ञान, अनन्त समापत्ति में प्रवेश किया । आकिंञ्च-ञ्ञायतन समापत्ति में प्रवेश नैवसंज्ञा और नासंज्ञा समापत्ति में प्रवेश, उसके बाद निरोध समापत्ति में प्रवेश किया । फिर निरोध समापत्ति छोड़कर नैवसंज्ञानासंज्ञायतन, आकिंच्चन्यायतन, विज्ञानानत्यायतन, आकाशानन्त्या-यतन, फिर चतुर्थक ध्यान, तृतीयक ध्यान, द्वितीयक ध्यान, प्रथम ध्यान सभी में प्रवेश करके चतुर्थक ध्यान का अनुलोम-प्रतिलोम और फिर अनुलोम के अनुसार ध्यान पूर्ण किया ।

दूसरे दिन अरुणोदय के पहले चतुर्थक ध्यान से ही प्रतिष्ठित होकर महाकारुणिक तथागत बुद्ध, शान्तिनायक अंगीरस, भाग्यवत अरहत सम्यक सम्मबुद्ध सभी संस्कार अनित्य स्वभाव, विश्व को अपने से आदर्श कराकर निरुपदी शेष महापरिनिर्वाण धातु से महापरिनिर्वाण प्राप्त किया है ।

महाकारुणिक तथागत बुद्ध अपना प्राण त्याग करते समय भयानक एकाएक धरती कम्पित हो गया । आसमान भी गर्जना किया ।

महाकारुणिक तथागत बुद्ध का महापरिनिर्वाण के तुरन्त बाद सहामपति महाब्रह्म ने कहा विश्व के प्रीति पुदगल, जगताचार्य जैसे महापिरिनिर्वाण प्राप्त किया है । इसी तरह लोक धातु का सभी प्राणी समूह जितेन्द्रिय समाप्त होने के बाद शरीर को इस दुनियाँ में छोड़कर जायेगे ।

'सब्बे व निक्कि विसन्ति भूता लोके समुस्यं यथा एतादिशो सत्त लोके अपप्टि पुग्गलो' । सहामपत्ति महाब्रह्म ने कहा ।

शक्रदेवेन्द्र ने कहा–'अहो सभी संस्कार अनित्य है जन्म और मरण, उत्पत्ति और नष्ट के स्वभाव से युक्त है उत्पत्ति होता है साथ–साथ निरुद्ध भी होता है । इसलिए उससे मुक्ति पाना ही सुख है' ।

'अनिच्चा वत संङ्गारा, उप्पादवय-धम्मिनो ।
उप्पज्जित्वा निरुज्झन्ति, तेसं उपसमो सुखो' ॥

उसके बाद अनुरूद्ध भिक्षु ने कहा आयुष स्थिर चित्त से युक्त अष्टलोक धर्म से कम्पित नहीं होता है । कम्पित नहीं होने वाला स्वभाव से युक्त निर्वाण आरम्भ करके देहान्त हुआ । मेरे शास्त्र गुरु बुद्ध का अश्वास-प्रश्वास निरुद्ध हो गया है उस महाशास्ता को अपने चित्त से वेदना से स्वीकार किया है। जैसे तेल समाप्त होने के बाद दीप धीरे से बुझ जाता है उसी तरह मेरा आचार्य चित्त विमोक्ष हो गया है ।

भिक्षु आनन्द का शोक प्रकट

भिक्षु आनन्द ने कहा सकल उत्तम गुणों से परिपूर्ण सर्वज्ञ बुद्ध का महापरिनिर्वाण के साथ भयानक रोवाँ खड़ा होने वाला भूचलन हो गया है। अहो बहुत बड़ा आश्चर्य है ।

'तदासि यं हिमसनकं तदासि लोमध्सनं

सब्ब कार करुप नेने ।
समबुद्धे परिनिवुद्धे' ।

अनुरुद्ध शोक प्रकट

'नाहु अस्सा स पश्सारंग,
ठित चित्तस्य तादिनो ।
अनेजो सनिप्रारम्भ यंकाल मकरिमुनि
असल्लि नेन चित्तेन, वेदनं अजवास्यी' ।।

महाकारुणिक तथागत बुद्ध का महापरिनिर्वाण के बाद पृथक्जन सभी भिक्षु रोना शुरू कर दिया । अरहत भिक्षु अनित्यता के बारे में चिन्ताकर रहे थे । जो पृथक्जन भिक्षु रो रहे थे भिक्षु अनुरुद्ध सबके पास आकर संस्कारों के अनित्यता के बारे में बता देते थे । रोने से कभी किसी को कोई लाभ नहीं होने की बात बतायी । उस समय भिक्षु आनन्द और अनुरुद्ध दोनों भी अन्तिम धर्म कथा से युक्त होकर समय बिताया ।

परिच्छेद - 56

सर्वज्ञ मृत शरीर का दाहसंस्कार करना

सुबह होने के बाद अनुरुद्ध भिक्षु के नियमानुसार भिक्षु आनन्द जाकर मल्लराजाओं को महाकारुणिक तथागत बुद्ध के महापरिनिर्वाण की सूचना दिया। समाचार सुनने के बाद मल्ल राजा लोग और नगरवासी सभी लोग शोक भरित होकर कुशीनारा सखुआ उद्यान में एकत्रित हुए । मल्ल राजा लोगों के नियम के अनुसार सात दिन तक नृत्य-गीत, सुगन्ध जैसे चीजों से बुद्ध के शरीर का पूजा किया । सात दिन के बाद उपवर्तन साखु उद्यान से निकालकर महाकारुणिक तथागत बुद्ध का श्रीशरीर मल्यराजओं का मुकुट बन्धन नामक स्थान पर ले जाकर रखा । भिक्षु आनन्द के नियमानुसार महाकारुणिक तथागत बुद्ध का श्रीशरीर को नया कसीय वस्त्र से ढक दिया। उसके बाद पतला सूती कपड़ा से ढँककर पुन: कसीय वस्त्र से ढका । उसी तरह पाँच सौ बार कसीय वस्त्र और पाँच सौ बार सफेद सूती कपड़ा से ढका। ढकने के बाद सुगन्ध, चन्दन तेल से भरा हुआ सोने के ताबूद में रख लिया । उस ताबूद को दूसरा सोने वाले ताबूद में डाल दिया । इक्कीस फीट ऊँचा चन्दन लकड़ी से निर्मित किया हुआ चिता में अन्दर कर दिया। उसके बाद वाल माध्यम, वयस्क चार मल्ल राजा सुगन्धित जल से नहाकर पवित्र होकर नया वस्त्र पहनकर चिता को मुखाग्नि दिया । लेकिन चिता में आग नहीं पकड़ा तो मल्ल राजा आश्चर्यचकित हो गये । आश्चर्यचकित होकर भिक्षु अनुरुद्ध से पूछा इसका कारण क्या है ? भिक्षु अनुरुद्ध ने कहा लगभग सभी भिक्षु इस दाह संस्कार में शामिल है लेकिन महाकाश्यप अरहत अभी तक इस स्थान पर नहीं आये । अरहत महाकाश्यप के आने तक चिता में आग नहीं पकड़ने की बात भिक्षु अनुरुद्ध ने मल्ल राजाओं को बताया। थोड़ी देर बाद अरहत महाकाश्यप चिता के पास पहुँच गये और पहुँचकर चीवर को एकांस करके तीन बार प्रदर्शना किया । आखिरी में महाकारुणिक तथागत बुद्ध का श्रीपाद युगल को नमस्कार किया । अरहत महाकाश्यप के साथ पाँच सौ भिक्षु भी आये थे । वह सभी भिक्षु भी महाकारुणिक तथागत बुद्ध की

देह का दर्शन किया । अरहत महाकाश्यप दर्शन करने के थोड़ी देर बाद चिता में अपने आप आग पकड़ लिया ।

महाकारुणिक तथागत बुद्ध की प्रार्थना के अनुसार चार दन्त धातु दो अकुधातु, एक ललाट धातु नहीं जलने के लिए अधिष्ठान किया । वह जलने के बाद बिखरा नहीं । महाकरुणिक तथागत बुद्ध का श्रीदेह का अवशेष धातु (हड्डी) सरसों, चना, चावल, मूंग जैसे प्रमाण के हिसाब से बिखर गया। चिता में श्रीशरीर जलने के बाद मल्ल राजा लोग सुगन्धित जल से चिता के आग को बुझा दिया ।

धातु पूजा

महाकारुणिक तथागत बुद्ध के श्री शरीर का दाह संस्कार करने के बाद मल्ल राजा लोग सम्पूर्ण कुशीनारा नगर को दिव्य लोक जैसे सजाया। महाकारुणिक तथागत बुद्ध का शारीरिक धातु को सोने का बना हुआ विशेष मंजूषा के अन्दर रखकर सुन्दर ढंग से सजाया । सजाकर एक हाथी के उपर रखकर कुशीनारा नगर में लेकर आये । कुशीनारा नगर के सन्तागारशाला में रखकर सात दिन तक मल्ल राजाओं के साथ नगरवासी नृत्य-गीत से सर्वज्ञ धातु की पूजा किया ।

परिच्छेद - 57
सर्वज्ञ धातु का बटवारा

महाकारुणिक तथागत बुद्ध का महापरिनिर्वाण होना और दाह संस्कार समाप्त होने की खबर सम्पूर्ण जम्बूदीप में फैल गया । सबसे पहले मगधेश्वर अजातशत्रु, वैशाली के लिच्छवी राजा लोग, कपिलवस्तु के शाक्य राजा लोग अल्लकप्प देश के बुलि राजा लोग, राम ग्रामवासी कोलिय राजा, वेददिप नगर वेद ब्राह्मण लोग, पांवा नगर के मल्ल राजा, सभी लोग कुशीनारा में आकर जो महाकारुणिक तथागत बुद्ध का सर्वज्ञ धातु कहाँ रखा था, वही पर इकट्ठा होकर उस स्थान को घेर लिया । घेर कर कहा हम लोगों को महाकारुणिक तथागत बुद्ध के नाम से स्तूप बनवाना है इसलिए हम लोगों को बुद्ध का शरीर का बचा हुआ कुछ अंश चाहिए । ऐसा बोलकर मल्ल राजाओं को खबर किया । मल्ल राजा लोगों ने कहा ये स्वर्ण कार्य हमारे राज्य में हुआ है इसलिए किसी को कुछ नहीं देगे । यदि युद्ध करना है तो हम लोग बुद्ध के लिए तैयार है । मल्ल राजाओं ने सभी राजाओं को खबर भेजा । उसके कारण कुशीनारा में बहुत बड़ा आन्दोलन शुरू हो गया। उसी समय एक ब्राह्मण जिसका नाम द्रोन था । द्रोन ब्राह्मण ने सभी राजाओं को समझाया और समझाकर सर्वज्ञ शरीर के धातु को आठ भागों में बाँटा। आखिरी में द्रोन ब्राह्मण को भी नहीं बचा । उसने कहा मेरे लिए कुछ नहीं बचा इसलिए जो सर्वज्ञ धातु को हमने सभी को बाटा है और जिस सोने के मंजूषा में धातु रखा था उसी सोने का मंजूषा को सभी राजाओं को सहमति से अपने पास रखा ।

पिप्पलिवन का मोरिय राजा लोग बहुत बाद में आया । इन लोगों को महाकारुणिक तथागत बुद्ध के श्रीशरीर का धातु नहीं मिलने के कारण जिस स्थान पर महाकारुणिक तथागत, बुद्ध का दाह संस्कार किया गया था। उस स्थान से जला हुआ कोयला राख ले जाकर अपने-अपने स्थान पर स्तूप बनवाया । द्रोन ब्राह्मण सोने का मंजूषा रखकर एक स्तूप बनवाया उसी स्तूप को कुम्भुतप चैत्य का नाम दिया ।

मोरिय राजा लोगों द्वारा चिता का कोयला-राख ले जाकर बनवाया हुआ अंगार नामक चैत्य दो हैं । बाकि सर्वज्ञ धातु से बना हुआ चैत्य आठ हैं । उस समय तक सम्पूर्ण जम्बूदीप में महाकारुणिक तथागत बुद्ध के नाम से केवल दस स्तूप ही था ।

परिच्छेद - 58

बुद्ध का तुरित और अतुरित चारिका

महाकारुणिक तथागत बुद्ध कहीं भी रहे उनकी दिनचर्या एक ही तरह होता था । दिन को पाँच भाग में बाँट कर समय के अनुसार पूर्वप्रथम कार्य, पश्चात भक्त कृत्य प्रथम याम कृत्य, मध्य याम कृत्य, पश्चिम याम कृत्य के अनुसार अपना समय बाटा हुआ था ।

पूर्व प्रथम कार्य के अनुसार महाकारुणिक तथागत बुद्ध भोर में नींद से उठकर मुँह धोना दातुन करना जैसे कृत्य में अपना समय बिताते थे । पिण्डपात का समय आने तक विवेक सो लेता है । उसके बाद विनयानुकूल चीवर पहन कर कभी अकेले कभी भिक्षु संघ के साथ पिण्डपात के लिए जाते थे । कभी प्रकृति के तरीके से, कभी इर्दी प्रातिहार्य से चलते थे । उस आश्चर्य को देखने के बाद आज बुद्ध आयेंगे बोलकर जनता को पता चलता है । उसी के अनुसार जनता बुद्ध की पूजा के लिए सुन्दर ढ़ग से साफ सुधरा कपड़ा पहन कर लोगों को दस भिक्षु दीजिए । कोई-कोई हम लोगों को पाँच भिक्षु दीजिए कह कर शक्ति के अनुसार भिक्षु लोगों को अपने घर पर बुलाकर भोजन दान कराते थे । उसके बाद बुद्ध या कोई भिक्षु समय के अनुसार, व्यक्ति के अनुसार धर्मदेशना करते थे । यह धर्मदेशना सुनने के बाद कोई त्रिशरण शरणागत होता तो कोई पंचशील ग्रहण करता था । कोई सोवान फल मार्ग प्राप्त करता था । धर्मदेशना के बाद महा-कारुणिक तथागत बुद्ध अकेले किसी विहार में जाकर बाकि भिक्षुओं के आने तक इन्तजार करते थे । कोई उपस्थायक भिक्षु आकर सभी भिक्षु आने की सूचना देने पर बुद्ध अपने गन्धकुटि में प्रवेश करते थे । बुद्ध का यह पूर्व प्रथम कृत्य है ।

पश्चात्य कृत्य—उसके बाद जो उपस्थापक भिक्षु उपासक का बन्दोबस्त करते हैं । उसी आसन पर बैठकर पाँव को धोकर भिक्षुओं को आमंत्रित करते थे । भिक्षुओं ! धोखेबाज वाले चित्त से काम मत करो अपने चित्त

का सही ढंग से पालन करो । बुद्धोत्पत्ति बहुत दुर्लभ है, मनुष्य का जन्म भी बहुत दुलर्भ है, भिक्षुत्व मिलना भी दुर्लभ है, धर्म देशना सुनना भी दुर्लभ है । उसी तरह धर्म कथा से भिक्षुओं को अनुशासन करते थे । उसी समय कोई भिक्षु महाकारुणिक तथागत बुद्ध से कर्मस्थान के बारे में विचार करते थे। बुद्ध भिक्षुओं को नियम के अनुसार कर्मस्थान का मार्ग बताते थे। कर्म स्थान लेने के बाद कर्मस्थानलाभी भिक्षु अपने-अपने स्थान पर चले जाते थे । अपने-अपने स्थान का अर्थ यही है कि अरण्य, वृक्ष मूल, पर्वत, गुफा जैसे इत्यादि । उसके बाद यदि शरीर को आराम की जरूरत हो तो थोड़ी देर तक सिंह सैय्या से विश्राम करते थे । नहीं तो दुनिया के दुखी-परेशान व्यक्तियों के उपर अपने दिव्य चक्षु से उन लोगों को मदद देने के लिए सोचते थे । उसके बाद धर्म सभा मण्डप में आकर एकत्रित भिक्षुओं को धर्मदेशना करते थे । उसके पश्चात् धर्म सभा मण्डप से निकल कर जाते थे । उस समय तक सांम हो जाता था ।

प्रथमयाम कृत्य

धीरे-धीरे रात्रि होना शुरु हो जाता है । यदि शरीर को पानी से धोकर साफ सुधरा करने की जरूरत हो तो उपस्थायिक भिक्षुओं द्वारा तैयार किया हुआ जल से अपने शरीर को स्वच्छ और साफ करते थे । शरीर साफ-सुथरा करने के बाद गन्धकुटि के बरामदे में तैयार किये आसन पर बैठकर थोड़ी समय के लिए चित्त विदेक सुख प्राप्त करते थे । उस समय कोई भिक्षु आकर कर्मस्थान धर्मदेशना जैसे विषयों के बारे में खूब चर्चा करते थे। बुद्ध का प्रथम याम कृत्य यही हैं ।

मध्ययाम कृत्य

रात्रि मध्य याम में बुद्ध के पास कोई भी इंसान नहीं आते-जाते और नाही कोई भिक्षु आता-जाता था । उस समय दिव्य ब्रह्मलोक से देवता अपने-अपने प्रश्न बुद्ध के पास ले आकर उसका चर्चा करके समाधान करते थे। यह मध्ययाम कृत्य है ।

पश्चिम याम कृत्य

पश्चिम याम कृत्य तीन भाग में होता है प्रथम भाग में चक्रमण करना। चक्रमण इसलिए करते है कि शरीर के अन्दर का अंगों के योग को सही

ढ़ग से चलाने के लिए दूसरा भाग है । गन्धकुटि में जाकर दक्षिण दिशा को मुंख को खोलकर सिंह सैय्या से विश्राम करना । इसके बाद पूर्व बुद्ध पुरुषों जैसे दुनिया को दिव्य चक्षु से देखते रहते थे । यह कृत्य भोर में होता था ।

बुद्ध का चारिका विधि

(1) तुरित चारिका

बुद्ध के अनुसार उनके जीवन में दो तरह का चारिका होता था पहला तुरित चारिका दूसरा अतुरित चारिका । बहुत जल्द धर्म अवबोध करने के योग्य कोई व्यक्ति बहुत दूर रहने से उसको धर्मदेशना करने के लिए बुद्ध इर्दी बल से तुरन्त जाते थे उसे तुरित चारिका कहते है । जैसे पिप्पलिमानवक से मिलने के लिए बुद्ध एक क्षण में तीन गाँव पार किया। आलवक यक्ष को धर्मदेशना करने के लिए तीस योजन (360 कि.मी.) अंगुलिमाल को धर्मदेशना करने के लिए तीस योजन, पुक्कुस साथी राजा से मिलने के लिए एक सौ बीस योजन, धनीय गोपाल से मिलने के लिए सात सौ योजन, वनवासीतिस्य श्रामणेर से मिलने के लिए एक सौ तेइस योजन, दूर बुद्ध एक क्षण में इर्दीशक्ति से पहुँच गये । प्रकृति ढंग से न जाकर बुद्ध इर्दी शक्ति से एक क्षण में अपने गन्तव्य तक पहुचने के लिए तुरित चारिका के नाम से जाना जाता है ।

अतुरित चारिका

ग्राम, नगर, अनुक्रम से शैर करना, पिण्डपात के लिए जाना लोगों के अनुकम्पा के लिए पैदल चलना अतुरित चारिका के नाम से जाना जाता है । अतुरित चारिका के अनुसार बुद्ध जम्बूदीप से महामण्डल, महामण्डल अन्तर मण्डल तीनों प्रदेशों से एक प्रदेश में जाते रहे । इससे भी महामण्डल सौ योजन के अनुसार है । अन्तर मण्डल तीन सौ योजन है ।

कोई कारणवस महामण्डल में जाना चाहते तो वर्षावास पूरा होने के बाद पूर्णिमा अथवा अमवस्या के दिन भिक्षु महासंघ के साथ निकल जाते थे । बुद्ध महामण्डल में अपना चारिका प्रारम्भ करने की सूचना जनता को मिलने से सौ योजन दूर से भी जनता बुद्ध दर्शन के लिए, दान देने के लिए एकत्रित होते थे । इतना अधिक जनता एकत्रित होने से अन्य लाब्धिक

परिव्राजक लोगों के बीच में खलबली मच जाता था । हम लोगों का धर्म छोड़कर यह जनता यदि बुद्ध का धर्म स्वीकार किया तो हम लोगों की महाहानि होगी । सम्यक दृष्टि उपासक लोग बुद्ध अपने पास आने से पहले जाकर बुद्ध का स्वागत करते थे । बुद्ध एक-एक गाँव में दो से तीन दिन बिताकर आमिष पूजा स्वीकार करते धर्मदेशना करते हुए चारिका करते रहते थे । कोई चारिका नौ महीने के बाद समाप्त होता था । उसके पश्चात् भिक्षु महासंघ के साथ मध्यमण्डल में जाने के लिए निकल जाते थे । मध्य मण्डल का चारिका आठ महीने में समाप्त करे देते थे । यदि कोई भिक्षु वर्षा वास नहीं किया तो कर्म स्थान लेकर भावना करने से और दो तीन माह मध्यमण्डल में व्यतीत करते थे । उसके बाद भिक्षु संघ के साथ उत्तर मण्डल के लिए निकल जाते थे । अन्तरमण्डल की भी चारिका करते हुए, लोगो को अनुग्रहित करते हुए सात महीने में समाप्त हो जाता था ।

चारिका के लिए कारण

बुद्ध इस तरह चारिका इसलिए करते थे ताकि गरीब, अशिक्षित, वयोबृद्ध, रोग ग्रस्त जैसे लोग बुद्ध का दर्शन के लिए कही नहीं जा सकता था । लेकिन बुद्ध स्वत: उन लोगों के पास जाने से वे लोग पूजा करके पुण्य अर्जित कर लेते थे । इसलिए बुद्ध तुरित चाकिरका से अतुरित चारिका को महत्व देते थे ।

एक जगह पर बैठने से ज्यादा चलने में शरीर का स्वास्थ भी सही रहता है । धर्मदेशना करने के लिए भी बहुत-सा निमित्त भी मिलता है । भिक्षुओं के लिए शिक्षा पद निर्धारित करने का मौका मिलता है । किसी गाँव में प्रज्ञावन्त व्यक्ति मिलने से चतुसत्य अवबोध के लिए भी अवसर मिलता था । बुद्ध-धम्म-संघ तीनों शरण में प्रतिष्ठित करने के लिए भी बहुत अवसर मिलता था । मनुष्यों को प्राणघात से मुक्ति कराना अदिन्नदाना से मुक्त करना, काममिथ्याचारा से मुक्त करना, मुसावाद से मुक्त कराना, मद्यपान से मुक्त कराना कोई एक माध्यम है । आम जनता बुद्ध का धर्म देशना सुनकर उस धर्म देशना के अनुसार जीवन व्यक्ति करने से प्रथमध्यान, द्वितीयध्यान, तृतीयध्यान, चतुर्थकध्यान, आकाशानन्त्यायतन, विज्ञानानन्त्ययायतन, आकिंच्चन्यायतन ध्यान, नैवसंज्ञानासंज्ञायतन ध्यान जैसे अष्ट समापत्ति प्राप्त

करने का अवसर मिलता है ।

ज्यादा पैदल चलने से बहुत लोगों से मुलाकात होने से बुद्ध का धर्मदेशना सुनकर विदर्शना भावना करने से स्रोतापत्ती मार्ग, स्रोतापत्ति फल, सकृदागामी मार्ग, सकृदागामी फल, अनागामी मार्ग,अनागामी फल, अरहत मार्ग, अरहतफल, निर्वाण जैसे धर्म अवबोध करने का भी मौका ज्यादा मिलने के कारण अतुरित चारिका को ज्यादा महत्व देते थे ।

अतुरित चारिका दो प्रकार के होते है । अतुरित चारिका निरन्तर होता है । किसी को मातृका करके चारिका करना भी अनिवद्ध चारिका होता है। धर्मावबोध करने के लायक व्यक्ति के पास जाना अनिवध चारिका होता है।

बुद्ध का धर्मदेशना करने का तरिका

महाकारुणिक तथागत बुद्ध अपने से ही कभी-कभी धर्मदेशना करते थे । दूसरे लोगों का इरादा देखने के बाद भी उसी हिसाब से धर्मदेशना करते थे । कोई घटना होने से उसी सन्दर्भ में भी धर्मदेशना करते थे । कोई सवाला पूछता है उसके समाधान के लिए भी धर्मदेशना करते थे ।

धर्मदेशना करते समय किसी स्थान पर साधु शब्द सुनने से बुद्ध फल समापत्ति सुख अनुभव करता है । साधु नाद समाप्त होने के बाद फल समापत्ति से मुक्त होकर कौन-सा धर्मदेशना जहाँ रोकते थे उसे उसी जगह से पुनः धर्मदेशना शुरुकर देते थे । कोई भी व्यक्ति धर्मदेशना सुनने के बाद कम से कम त्रिशरण समाधान नहीं होने से भी धर्मदेशना सुनने से भविष्य में उस व्यक्ति का कल्याण होने को हो तो उसी जगह से भी धर्मदेशना करते थे । सच्चक ब्राह्मण को धर्मदेशना एक उदाहरण है । कोई व्यक्ति मराणासन्न होने से भी भिक्षाटन के समय होते हुए भी उस व्यक्ति को धर्मदेशना करते थे । दानचरिया, कथावस्तु इसका उदाहरण है । किसी व्यक्ति का अपने से कोई भी सम्बन्ध नहीं होने वाला अनावश्यक प्रश्न तैयार कराकर बुद्ध के पास आकर पूछते है । जैसे व्यक्तियों का इरादा बुद्ध समझते थे । वैसे व्यक्तियों का मन तैयार होने तक बुद्ध निशब्द होते थे । उसका बुद्धि उसी हिसाब से तैयार होने से उसको उत्तर देते थे ।

कोई-कोई व्यक्ति पण्डित मान से बुद्ध के पास आकर प्रश्न पुछते थे। दिल और दिमाग (चित्त) मान से भरा होने के कारण किसी भी धर्म को समझने में सक्षम नहीं होता है । इसलिए उस व्यक्ति का मान कम होने तक समय के अनुसार काम लेते थे । कभी-कभी मान (घमण्ड) से भरा हुआ पण्डित कोई प्रश्न पूछने पर ऐसे जवाब देते थे कि उस मान भरा हुआ ब्राह्मण को कुछ समझ में नहीं आता था । ब्राह्मण उसको समझ न पाने से सर्माता था । धीरे-धीरे उसका घमण्ड कम होने के बाद सरल तरीके से धर्मदेशना करते थे । ओघ तरण सूत्र उसका उदाहरण है ।

महाकारुणिक तथागत बुद्ध का वर्षावास का स्थान

प्रथम वर्षावास	- वाराणसी इसी पतन मृगदाय सारनाथ में
दूसरा वर्षावास	- राजगृह वेलूवनाराम में
तीसरा वर्षावास	- राजगृह वेलूवनाराम में
चौथा वर्षावास	- राजगृह वेलूवनाराम में
पाँचवाँ वर्षावास	- वैशाली कूटागारशाला में
छठवाँ वर्षावास	- मकुल पर्वत में
सातवाँ वर्षावास	- तावतिन्स दिव्यलोक में
आठवाँ वर्षावास	- सुन्सुमारगिरि भेशकलां वन में
नौवाँ वर्षावास	- कौशाम्बी के घोषिताराम में
दसवाँ वर्षावास	- पारलेय्य वन में
ग्यारहवाँ वर्षावास	- राजगृह वेलूवनाराम में
बारहवाँ वर्षावास	- वेरंजना नगर में
तेरहवाँ वर्षावास	- चालिय पर्वत में
चौदहवाँ वर्षावास	- श्रावस्ती जेतवनाराम में
पन्द्रहवाँ वर्षावास	- कपिलवस्तु के निग्रोधाराम में
सोलहवाँ वर्षावास	- अलाऊ प्रदेश में
सत्रहवाँ वर्षावास	- राजगृह में
अट्ठारहवाँ वर्षावास	- चालिय पर्वत में
उन्नीसवाँ वर्षावास	- चालिय पर्वत में
बीसवाँ वर्षावास	- राजगृह में
इक्कीस से चौवालिसवाँ वर्षावास	- श्रावस्ती जेतवनाराम और विशाखा के पूर्वाराम में
पैतालिसवाँ वर्षावास	- वैशाली वेलुग्राम में

(अट्ठकथा और जातककथा के अनुसार)

●

भगवान् बुद्ध का महासमागम

	महासमागम	समय	स्थान
1.	धर्मचर्क प्रवर्तन समागम	प्रथम वर्ष	इसी पत्तन मृगदाय सारनाथ
2.	नालक सूत्र समागम	प्रथम वर्ष	इसी पत्तन मृगदाय सारनाथ
3.	गंगाअवरोहन समागम	प्रथम वर्ष	इसी पत्तन मृगदाय सारनाथ
4.	बुद्ध वंश देशना समागम	दूसरा वर्ष	कपिलवस्तु
5.	चर्यापिटक देशना	दूसरा वर्ष	कपिलवस्तु नगर
6.	महामंगल सूत्र देशना	तीसरे वर्ष	श्रावस्ती जेतवनाराम
7.	पराभव सूत्र	चौथे वर्ष	श्रावस्ती जेतवनाराम
8.	महासमय सूत्र	पाँचवें वर्ष	कपिलवस्तु नगर
9.	सम्मापरिब्बाजनिय सूत्र	पाँचवें वर्ष	कपिलवस्तु नगर
10.	चुल्लवियूह सूत्र	....	....
11.	महावियूह सूत्र	....	....
12.	तुवटक सूत्र	....	....
13.	पूरा भेद सूत्र	....	....
14.	कलह विवाद सूत्र	....	....
15.	यमक महाप्रातिहार्य	सातवें वर्ष	श्रावस्ती में
16.	अभिधर्मदेशना	....	तावतिन्स दिव्य लोक
17.	देवारोहन	....	संकस पुरा
18.	परायण सूत्र	ग्यारहवें वर्ष	मगध क्षेत्र
19.	शक्क पइथा सूत्र	तेरहवें	श्रावस्ती में
20.	चुल्ल राहुलोवाद सूत्र	....	....
21.	आलवक सूत्र	सोलहवें वर्ष	आलवीपुर
22.	समचित्त परियाय सूत्र	बीसवें वर्ष	श्रावस्तीपुर
23.	ब्रह्मनिमन्थनीय सूत्र	....	ब्रह्मलोक में
24.	मार तज्जनीय सूत्र	....	सुंसुमार गिरि

●

सामान्य देशना समागम

1.	एरक पत्रक नागराज समागम	प्रथम वर्ष	वाराणसी इसी पत्तन सारथान
2.	सुमनमालाकार समागम	दूसरा वर्ष	राजगृह में
3.	जम्बू आजिवक समागम	तीसरा वर्ष	राजगृह में
4.	उग्गसेनसमागम	चौथा वर्ष	राजगृह में
5.	सूनापरान्त वानिज	आठवाँ वर्ष	सूनापरन्त
6.	श्रीमती दर्शनालाभी	सत्रहवाँ वर्ष	राजगृह में
7.	पेशकार दुहित्रु	अठ्ठारहवाँ वर्ष	आलवीपुर में
8.	चुल्ल शुभद्रा	बीसवें वर्ष के बाद	उग्गपुर में
9.	धनपाल समागम	अन्तिम दस वर्ष	राजगृह में
10.	पाटिक पुत्र समागम	परिनिर्वाण वर्ष	वैशाली
11.	कोलिय माहमात्म समागम		वाराणसी
12.	सुलषा नगर शोभनीय समागम		राजगृह में
13.	साकेत ब्राह्मण समागम		साकेत
14.	गरहदिन्न आदि समागम		साकेत
15.	आनन्द सेठ समागम		श्रावस्ती
16.	मुण्डकदेव पुत्र समागम		चम्पापुर
17.	मट्ठकुण्डली देवपुत्र समागम		श्रावस्ती
18.	शरभ परिव्राजक समागम		वैशाली

●

अस्सी महाश्रावक

1. अञ्ञाकोण्डिन्य महाथेर
2. वप्प महाथेर
3. भद्दीय महाथेर
4. महानाम महाथेर
5. अश्जी महाथेर
6. नालक महाथेर
7. यश महाथेर
8. विमल महाथेर
9. शुबाहु महाथेर
10. पुण्य जी महाथेर
11. गवाम्पपति महाथेर
12. उरुवेल काश्यप महाथेर
13. नदी काश्यप महाथेर
14. गया काश्यप महाथेर

15. सारिपुत्त महाथेर
16. महामौदगल्यापन महाथेर
17. महाकाश्यप महाथेर
18. महाकत्यापन महाथेर
19. महाकुटित्त महाथेर
20. महाकप्पिन महाथेर
21. महाचुन्द महाथेर
22. अनुरुद्ध महाथेर
23. कंखा रेवत महाथेर
24. आनन्द महाथेर
25. नन्दक महाथेर
26. भगु महाथेर
27. नन्द महाथेर
28. किम्बिल महाथेर
29. भद्दीय महाथेर
30. राहुल महाथेर
31. सिवली महाथेर
32. उपालि महाथेर
33. दब्ब महाथेर
34. उपसेन महाथेर
35. खदिरवनिय रेवत महाथेर
36. पुण्यमन्तानी पुत्त महाथेर
37. पुण्य (सूनापरान्त) महाथेर
38. सोन (कुटिकन्न) महाथेर
39. सोन (कोलिविस) महाथेर
40. राध महाथेर
41. सुभूति महाथेर
42. अंगुलिमाल महाथेर
43. वक्कलि महाथेर
44. कालूदायी महाथेर
45. महाउदायी महाथेर
46. पिलिन्द बच्च महाथेर
47. शोभित महाथेर
48. कुमार कश्यप महाथेर
49. रट्टपाल महाथेर
50. वंगिसं महाथेर
51. सहिय महाथेर
52. सेल महाथेर
53. उपवान महाथेर
54. मेघिय महाथेर
55. सागत महाथेर
56. नागित महाथेर
57. लखुण्टक भद्दीय महाथेर
58. पिण्डोल भारद्वाज महाथेर
59. महापंतक महाथेर
60. चुल्लपन्तक महाथेर
61. वक्कुल महाथेर
62. कोण्डधान महाथेर
63. दारुविर्य महाथेर
64. यशोण महाथेर
65. अजीत महाथेर
66. तिष्य मित्तैय महाथेर
67. कुन्नक महाथेर
68. मेत्तगु महाथेर
69. दोतक महाथेर
70. उपशिव महाथेर
71. नन्द महाथेर
72. खेमक महाथेर

73. तोदैइय महाथेर
74. कप्प महाथेर
75. चतुकन्नी महाथेर
76. भदाउद महाथेर
77. उदय महाथेर
78. पोशाल महाथेर
79. मोघराज महाथेर
80. पिंग्गिय महाथेर

•

विशेष स्थान पाने वाले भिक्षु

(अपने अध्यात्मिक शक्ति के अनुसार)

1. अञ्ञा कोण्डिन्य—सबसे बड़ा बुद्धिमान लोगों के बीच में अग्र
2. सारिपुत्त—महाप्रज्ञा से युक्त में अग्र
3. महामौदगल्यायन—इर्दीगत लोगों में अग्र
4. महाकाश्यप—धूतवादी में अग्र
5. अनुरुद्ध—दिव्य चक्षु में अग्र
6. कालिगोधा पुत्त भद्दीय—मधुर स्वर में अग्र
7. लखुण्ट भद्दीय—मधुर स्वर में अग्र
8. पिण्डोल भारद्वाज—सिंहनाद करने वालों में अग्र
9. पुण्य मन्तानी पुत्त—धर्मदेशना करने वालों में अग्र
10. महाकच्यायन—छोटी बातों को विस्तार पूर्वक बोलने में अग्र
11. चुल्ल पन्तक—मनो में रूपनिर्माण में अग्र
12. महापन्तक—अरुपोध्यान के माध्यम से अहरत होने में अग्र
13. सुबुति—वीना मलल का विहरण में अग्र
14. सुबुति—आध्यात्मिक साफ-सुथरा वालों में अग्र
15. रेवत (खदीरवानिय)—अरण्य में रहने वालों में अग्र
16. कंखा रेवत—ध्यान में लिप्त रहने में अग्र
17. सोन (कोलिय विर्स)—अराब्ध विर्य में श्रेष्ठ
18. सोन (कुटिकन्न)—मनाप बात करने वालों में अग्र
19. सिवली—प्रत्यय लाभी लोगों में अग्र
20. वक्कलि—श्रद्धा अधिक रखने वालों में अग्र
21. राहुल—शिक्षा कार्य में अग्र
22. रट्ठपाल—श्रद्धा से प्रव्रज्या होने वालों में अग्र

23. कोण्डधान—सबसे पहले प्रत्यय मिलने वालों में अग्र
24. वंगिस—जल्द समझने वालों में अग्र
25. उपसेन—सभी लोगों को प्रसन्न करने वाली में अग्र (वंगन्त ब्रह्मण)
26. दब्ब—शयनाशन तैयार करने में अग्र
27. पिलिन्द बच्च—देवता लोगों को प्रिय में अग्र
28. बाहिय (दारुविर्य)—तुरन्त अभिज्ञा प्रााप्त करने में अग्र
29. कुमार काश्यप—विचित्र धर्म कातिक लोगों के बीच में अग्र
30. कोट्टित—प्रतिसंचित में अग्र
31. आनन्द—उपास्थान लोगों से धारण स्मृति, जो जो बुद्ध ने वोला वह सब याद रखने में समर्थ ।
32. उरुवेल काश्यप—अधिक उपासक लोगों को बनाने में अग्र
33. कालुदायी—बहुत से कुल को प्रसन्न करने में अग्र
34. बक्कुल—निरोग सम्पत्ति में अग्र
35. शोभित—पुब्बेनिवासानुस्मृति याद करने में अग्र
36. उपालि—विनयधर लोगों में अग्र
37. नन्द—भिक्षुणि लोगों को उपदेश देने में अग्र
38. नन्द—इन्द्रिय संवग्र में युक्त में अग्र
39. महाकप्पिन—विक्षाववाद में अग्र
40. सागत—तेजो समापत्ति में जाने में अग्र
41. राघ—धर्मदेशना को समझने वालों में अग्र
42. मोघराज—रुक्ष चिवर धारण करने में अग्र

•

अपने प्रज्ञा के अनुसार विशेष स्थान प्राप्त भिक्षुणी

1. महाप्रजावति गौतमी—अधिक जानने वालों में अग्र
2. खेमा—महाज्ञानी में अग्र
3. उत्पलवन्ना—इर्दी दिखाने वालों में अग्र
4. धम्मदिन्ना—धर्म कायिक लोगों से अग्र
5. नन्दा—ध्यान करने वालों में अग्र
6. पटाचार्या—विनय घर लोगों में अग्र

7. सोना—अराध्य विर्य वालों से अग्र
8. शकुला—दिव्य चक्षु वालों से अग्र
9. भद्दाकुण्डल केशा—तुरन्त अभिज्ञा लोगों से प्राप्ति में अग्र
10. भद्दा कपिलानि—पूर्व जाति स्मरण करने वालों से अग्र
11. भद्दा कच्चायन (यशोधरा)—महा अभिज्ञा ज्ञान लाभी में अग्र
12. किसा गौतमी—रुक्ष चीवर धारण करने में अग्र
13. सिंगाल माता—अधिक श्रद्धा लोगों में अग्र

•

अपने विशेषता के अनुसार पदवी लाभी उपासक

1. तपस्तु बल्लिक सहोदर—प्रथम शरणागत उपासक
2. सुदत्त (अनाथपिण्डिक)—अग्रदायक
3. चित्तगृहपति—अग्र धर्मकायिक
4. हत्थकालवक राजा—शिव संग्रह से अपने देश वासियों में सग्रह करने वालों में अग्र
5. महानाम शाक्य राजा—अग्र भोजन देने वालों में अग्र
6. उग्ग गृहपति—जो चाहता है, वह देने वालो में अग्र
7. उग्गत गृहपति—अग्र संघो उपस्थायक
8. सुर अम्बट—अचल श्रद्धा से युक्त
9. जीवक कुमार बच्च—व्यक्तिगत प्रासद
10. नकुल पितु महापति—बात विश्वास करने वालों में अग्र

•

विशेष पदवी लाभी उपासिका

1. सुजाता (सेनानी सेठ की पुत्री)—बुद्ध को देखने के बाद सबसे पहले शरण समाधान होना
2. विशाखा (विगार माता)—अग्र दायिका
3. कुजुत्तरा—बहुश्रुत लोगों में अग्र
4. शामावती—मैत्रीचित्त युक्त लोगों में अग्र
5. उत्तरा (नन्दमाता)—ध्यान में अग्र

6. सुप्पवासा (कोलिय द्रुहित्रु)—प्रनीत भोजन देने वालों में अग्र
7. सुप्रिया—अग्र गिलानो उपस्थायिका
8. कातियानि—अचल श्रद्धा से युक्त
9. नकुल माता—विश्वासी लोगों में अग्र
10. काली—समाचार मिलने पर बुद्ध का गुण सुनकर प्रसाद करने वालों में अग्र ।

●

बुद्ध चरित्र से सम्बन्ध रखने वाले विशेष पूर्णिमा

1. वैशाख पूर्णिमा (मई)	-	सिद्धार्थ की उत्पत्ति, बुद्धत्व, बुद्धत्व के बाद प्रथम बार कपिलवस्तु पधारना, तीसरी बार सिंहल द्वीप में पधारना महापरिनिर्वाण ।
2. वैशाख अमावस्या	-	काल देवल तपस्वी का सिद्धार्थ बोधिसत्व का दर्शन ।
3. जेष्ठ पूर्णिमा (जून)	-	बोधि सत्व का नाम करण करना ।
4. अषाढ़ी पूर्णिमा (जुलाई)	-	महामाया बोधिसत्व का गर्भ धारण करना, महानिष्क्रमण (गृहत्याग), धम्म-चक्क पवत्तन सूत्र का देशना करना।
5. आषाढ़ी अमावस्या (जुलाई)	-	बोधिसत्व राजा विम्बिसार से मुलाकात करना ।
6. कुआर पूर्णिमा (अक्टूबर)	-	देवारोहण, मैत्री बोधिसत्व का प्रव्रज्या ।
7. माघ पूर्णिमा (जनवरी)	-	महासंघ सन्निपात हो अग्र श्रावक लोगों की नियुक्ति, अववाद प्रातिमोक्ष देशना प्रारम्भ ।
8. वैशाख अमावस्या	-	दूसरी बार श्रीलंका पधारना
9. पौष पूर्णिमा	-	प्रथम बार श्रीलंका द्वीप पहुँचना ।

●

बुद्ध शासन में सबसे ज्यादा आयु प्राप्त करने वाले

1. विशाखा महाउपासिका	-	120 वर्ष
2. पोक्कर सादी ब्राह्मण	-	120 वर्ष
3. ब्रह्मयु ब्राह्मण	-	120 वर्ष
4. सेल	-	120 वर्ष
5. पावारिय भिक्षु	-	120 वर्ष
6. भिक्षु आनन्द	-	120 वर्ष
7. महाकाश्यप	-	120 वर्ष
8. अनुरुद्ध	-	150 वर्ष
9. वक्कुल स्थवीर	-	160 वर्ष

•

इतिहास

पुरातन जम्बूदीप (वर्तमान भारत)

हिमालय पर्वत में स्थित जम्बू वृक्ष नाम से प्रसिद्ध एक पर्वत शृखला के कारण पूरातन समय से भारत वर्ष को बौद्ध साहित्य में जम्बूदीप के नाम से जाना जाता है । वर्तमान समय में जम्बूदीप को भारत (इण्डिया) के नाम से जाना जाता है । बुद्ध वंश के अनुसार जम्बूद्वीप से बाहर किसी भी देश में बोधिसत्व (बुद्ध) की उत्पत्ति नहीं होता है ।

जम्बूदीप का विभाजन (उस समय के अनुसार)

महामण्डल, मध्यमण्डल, अन्तमण्डल के नाम से सम्पूर्ण जम्बूदीप तीन भागों में बटा हुआ अट्ठकथा विवरण में उल्लेख मिलता है । महामण्डल नौ सौ योजन, मध्यमण्डल नौ सौ योजन और अन्त:मण्डल तीन सौ योजन है ।

इधर मध्यमण्डल के नाम से जाने जाना वाला मध्यदेश के नाम से गिनती में आता है । मध्यजनपद का प्रमाण चारो तरफ से नौ सौ योजन है ।

मध्यजनपद का सीमा पूरब से कजंगला निगम ग्राम, उत्तर में असिरगंज पर्वत, परिचम में चूना नामक प्रसिद्ध ब्राह्मण ग्राम और दक्षिण में सललवती

नदी था । मध्यदेश का आकार बड़ा ढोल के आकार जैसा था । बुद्ध आदि महा श्रेष्ठ पुरुष उसी श्रेष्ठ भूमि में उत्पन्न हुए है । टापू से युक्त भूमि मध्यदेश के नाम से जाना जाता है । अपरगोयान, पूर्वविदेह, उत्तर कुरु बाकि तीन महाद्वीप के लिए प्रत्यन्त देश है । गोयान का अर्थ है । चरवाहा लोगों का समूह । मध्यदेश के पश्चिम में अपर गोयान है । जम्बूदीप के पूर्व दिशा में विदेह है, उत्तर दिशा में उत्तर कुरु देश है । उत्तर कुरु के नाम से दो देश का उल्लेख मिलता है ।

हिमालय पर्वत के उत्तर दिशा में तिब्बत राज्य के उत्तर चारों तरफ पहाड़ से घिरा हुआ एक गुप्त प्रदेश है । उसी गुप्त प्रदेश में जो योगी रहते है इन लोगों की अनुमति के बिना उधर कोई नहीं जा सकता है । दूसरा उत्तर कुरु उत्तर अमेरिका का एक प्रदेश है । वर्तमान कोरिया पूरातन समय में कुरु दीप के नाम से जाना जाता है । बाद में कोरिया हो गया । उत्तर दिशा में उत्तर कुरु है उससे भी उत्तर दिशा में उत्तर कुरु है जिसे ओट्टर कोरा के नाम से जाना जाता है । वर्तमान समय में उत्तर कोरिया है । मेगस्थनिज इतिहासकार के अनुसार ओट्टर कोरा उत्तर कोरिया हो गया है ।

यह विभाजन आज से पचास हजार वर्ष से पहले पृथ्वी के स्थापना के अनुसार निर्धारित किया हुआ है ।

बुद्ध के समय में जम्बूदीप हर तरह से परिपूर्ण था । उसी के अनुसार जम्बूदीप को सोलह जनपदो में विभाजित किया गया था । अंग, मगध, काशी, कोशल, वज्जी, मल्ल, चेतिय, वत्स, कुरु, पंचाल, मगध, सुरसेना, अश्क, अवात्ति, गन्धार, कम्बोज, ऐसे सोलह जनपद थे । इनमें से शाक्य देश पूर्ण रूप से सम्पन्न होने के बावजूद कोशल जनपद के उत्तर का एक प्रान्त राज्य के हिसाब से देखा जाता था । कोशल जनपद का राजा शाक्य राजा लोगों को कार्य के लिए हस्तक्षेप नहीं करते थे । लेकिन शाक्य जनपद में कोई मृत्यू दण्ड देना हो तो कोशल राजा का अनुमति लेना अनिवार्य था। बाकि सभी काम शाक्य राजाओं के मुताबिक होता था ।

अंग-मगध

अंग जनपद मगध देश के पूर्व दिशा में स्थित था । चम्पा नदी दोनों राज्यों की सीमा थी । अंग जनपद का राजधानी चम्पापुर के नाम से जाना जाता था । चम्पानगर में जो चम्पा नदी थी, वह गंगा नदी में जाकर मिलती

थी। चम्पा जनपद उसी के आस-पास बसा हुआ था। मजबूत दिवारों से घिरा हुआ चम्पानगर आति सुन्दर था। पूर्व समय में इस नगर को मालीनी, कालचम्पा नाम से भी जाना जाता था। बाद में चम्पानगर के नाम से प्रसिद्ध हो गया। चम्पापुर के लोग नाव के माध्यम से स्वर्ण भूमि को जाने वाले व्यापारियों के कारण भी यह नगर बहुत प्रसिद्ध था। उसके अलावा कोच्चीन चीन देश से आकर बसने के कारण उस भूमि को चम्पा के नाम से जाना जाता है। बुद्ध के समय में जम्बूदीप का सुप्रसिद्ध महानगर छः था। चम्पापुर जिसमें से एक था। चम्पापुर में घरघरा नाम से प्रसिद्ध एक रानी थी। उसी रानी ने अपने नाम से एक बहुत बड़ा पोखरा बनवाया था। उस पोखरे को भी घरघरा के नाम से जाना जाता था। उस नगर में चम्पापुर और चम्पानगर के नाम से छोटा-सा दो गाँव अभी देखने को मिलता है। ये दोनों गाँव भागलपुर के आस-पास चाँद नदी के किनारे देखने को मिलता है। पुराना चम्पा नदी को वर्तमान समय में चाँद नदी के नाम से जाना जाता है। बुद्ध के समय में तीन सौ शिष्यों के साथ सोनदण्ड नामक एक सुप्रसिद्ध ब्राह्मण था।

कंजगला

बुद्ध के समय में मध्य देश से पूर्व सीमा पर बहुत से शिष्य लोगों के साथ कंजगला में पराश्रय एक ब्राह्मण था। चम्पानगर से कंजगलापुर के लिए छाछठ मील (66 मील) जाना पड़ता था। इसी स्थान पर मच्छिम संयुक्त निकाय के अन्तर्गत इन्द्रिय भावना सूत्र बहुत से उपासक लोगों को बुद्ध ने दिया था।

उगापुर

उगापुर सेठ का पुत्र के साथ अनाथपिण्डिक सेठ की दुहित्रु चुल्ल सुभद्रा का विवाह हो गया। उगापुर का प्रधान सेठ जैन लब्धिक थे। चुल्ल सुभद्रा का विवाह होने के बाद पूरा परिवार बौद्ध धर्म को स्वीकार किया है।

अस्सपुर

अस्सपुर एक नियम ग्राम है उसी स्थान पर महाकारुणिक तथागत बुद्ध ने महा अस्सपुर सूत्र, चुल्ल अस्सपुर सूत्र का देशना किया था।

अंगुत्तराप जनपद

अंगुत्तराप जनपद अंग देश का बहुत बड़ा प्रदेश है । अंगुत्तराप जनपद के बीच में एक नदी बहती थी उस नदी का नाम महामही नदी था । इसी नगरों के बीच में अंगुत्तराप नगर, आयन नगर, भद्दीयनगर बुद्ध काल में प्रसिद्ध नगरो में था । इसमें भी आयनगर बहुत बड़ा व्यवसाय का केन्द्र था । भद्दीयनगर बड़े सेठ लोगों का वास स्थान था । शामावती व विशाखा, दोनों का जन्म भूमि भद्दीयपुर था । बुद्धत्व प्राप्त करने के बाद बुद्ध अंगरट्ट, अगुत्तराप जनपद में चारिका करते भद्दीयपुर तक चले गये । उस समय विशाखा की उम्र सात वर्ष था । बुद्ध का धर्मदेशना सुनकर विशाखा सोवान हो गयी । भद्दीयपुर में जतियवन के नाम से प्रसिद्ध एक उद्यान था जहाँ महाकारुणिक तथागत बुद्ध ठहरते थे ।

मगध

महाकारुणिक तथागत बुद्ध के समय में मगध बुद्ध शासन का एक प्रमुख केन्द्र हुआ करता था । उत्तर दिशा में गंगा नदी पूर्व दिशा से चम्पा नदी पश्चिम से सोन नदी और दक्षिण दिशा में विन्ध्यप पर्वत से मगध राज्य की सीमाये निर्धारित हुआ करती थी ।

राजगृह

राजगृह मगध राज्य का राजधानी थी । राजगृह गंगा नदी से दक्षिण दिशा में पाँच योजन (60 कि.मी.) दूर था । पूर्वकाल में राजगृह को वसमति नाम से जाना जाता था । एक राजा ने इस नगर को वसाया था । राजगृह को मगधपुर गृह विजपुर, नाम से भी जाना था । बुद्ध काल में इस स्थान को राजगृह मगध दोनों नाम से जाना जाता था । वेभार, वेपुल्ल, गिज्जकूट, ऋषीगृह, पाण्डव जैसे पर्वत समूहों से राजगृह चारों तरफ से घिरा हुआ था। इन पाँच पर्वतों को वैभार गिरि, वेपुल्लगिरि, वरहगिरि, वृषभगिरि, ऋषीगिरि, नाम से जाना जाता है । पूर्व काल में ही बहुत से राजाओ को निवास स्थान होने के कारण इस जगह को राजगृह के नाम से जाना जाता है ।

मगधानग् गृहभजंम्

मगधजनपद के बारे में गृहभय का शब्द पालिग्रन्थ में आता है । मगध जनपद के नाम से कैक्यय जनपद में गिरिगृज नाम से एक नगर था ।

चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा विवरण में इस नगर को कुसागार नाम दिया था ।

गयाशिर्ष के बगल में पहाड़ों से घिरा हुआ वर्तमान राजगृह के नाम से प्रसिद्ध स्थान पूराना राजगृह के नाम से जाना जाता है । राजगृह से लेकर कपिलवस्तु की दूरी साठ योजन (720 कि.मी.) है । गंगा नदी के लिए ऋषीनगर से पाँच योजन (60 कि.मी.) है । गंगा नदी से वैशली नगर तीन योजन (36 कि.मी.) है । वैशाली नगर से राजगृह की दूरी आठ योजन (96 कि.मी.) है । राजगृह से अनोमा नदी की दूरी तीस योजन (360 कि.मी.) है । राजगृह के आस-पास में ताड़ीवन वेलूवनाराम, शीतवन मदकुच्ची मृगद्वाव, जीवकम्बवन, लट्ठीवन, मोरपिपाक जैसे स्थानों में बुद्धवास किया है । गिज्जकूट पर्वत से नीचे जाने के लिए और निचे से ऊपर जाने के लिए राजाविम्बिसार ने एक रास्ता बनवाया ।

गिज्जकूट पर्वत और आस-पास पर्वतों में बुद्ध के अलावा अरहन्त लोगों का वास था । आज भी छोटे-छोटे गुफा मिलते है । मोरपिपाक, ऋषीगिरि पर्वत कालसिला वैभार पर्वत, सप्तपाणी गुफा शीतवन (शिवकवन) के नाम से जाना जाने वाला शमशान घाट सप्तसोण्डिक, पब्बहार, ईन्दशाला गुहा, पिप्पली गुहा इसे गरम पानी का कुण्ड कहा जाता है । इसलिए इसे तपोदाराम के नाम से जाना जाता है । तपोदा पालि भाषा में गरम पानी को कहते है । वर्तमान समय में भी उस प्रकार तपोदा नदी देखने को मिलता है । इन्दशाला गुहा में महाकारुणिक तथागत बुद्ध सक्क पञ्ञा सूत्र की देशना किया । इन्दशाला गुहा के चारों तरफ छोटे-छोटे गुफाओं में भिक्षु रहते थे ।

सूकरखत लेन

सूकरखत लेन गिज्जकूट पर्वत में स्थित था । इसी स्थान पर महाकारुणिक तथागत बुद्ध अरहत सारिपुत्त के दामाद दिघनख परिव्राजक को वेदना परिग्रहा सूत्त (दिघनखसूत्त) का देशना करने के बाद दिघनख परिव्राजक अरहत हो गया ।

दूसरा, तिसरा, चौथा, सत्रहवाँ और बीसवाँ वर्षावास महाकारुणिक तथागत बुद्ध राजगृह में ही बिताया । संजय नामक सुप्रसिद्ध आचार्य उसी स्थान के एक आश्रम में रहते थे । बुद्ध के आने के बाद लौकिक और

लोकोत्तर दोनों प्रकार से सबसे बड़ा नुकसान संजय आचार्य को हुआ । सारिपुत्त और मौदगलयायन दोनों बुद्ध का श्रावक होने के पहले संजय परिब्राजक के श्रावक थे ।

नालन्दा

नालन्दा राजगृह से एक योजन (12 कि.मी.) दूर है । नालन्दा में अम्बलट्टीका नाम से प्रसिद्ध एक उद्यान था । उस उद्यान में राजा लोगों के क्रिडा के लिए एक महल बना हुआ था । महाकारुणिक तथागत बुद्ध ब्रह्मजाल सूत्र की देशना इसी स्थान पर किया था ।

दुष्पावारिक

दुष्पावारिक नाम से प्रसिद्ध एक सेठ ने अपना पावारिकाम्व उद्यान में बुद्ध को एक विहार बनवा दिया ।

जैन मुनि निगण्ठनाथपुत्त

नालन्दा वासी थे ।

अम्बसण्डा निगम ग्राम

यह नियम ग्राम राजगृह से पूर्व दिशा तथा उत्तर दिशा में वेदशिक पर्वत में इन्द्रसाल स्थित है । इसी इन्द्रसाल गुफा में महाकारुणिक तथागत बुद्ध रहते थे । उसी दौरान एक दिन शक्र देवेन्द्र बुद्ध के पास आकर कई प्रश्न पूछा । प्रश्नों के उत्तर के लिए महाकारुणिक तथागत बुद्ध सक्क पञ्आ सूत्र की देशना किया । (यह सूत्र सूत्तपिटक के दिघनिकाय में मिलता है)।

कल्लवाल गुत्त ग्राम इसी गाँव के मगध राजा के सीमा के शासन में था ।

मगध क्षेत्र

मगध देश बहुत सा खेतों से घना होने के कारण मगध क्षेत्र के नाम से जाना जाता था । मगध क्षेत्र में बुद्ध के लिए पाषाण चैत्य नामक स्थान पर एक बिहार बनवाया था । उस बिहार को पाषाण चेतिय बिहार के नाम से जाना जाता है ।

अन्धक विन्ध्यग्राम

राजगृह से तीन योजन दूर (36 कि.मी.) सप्पिनिका नदी के समीप बसा हुआ था । इस स्थान पर एक उपासक बुद्ध के लिए एक विहार बनवाया था । महाकारुणिक तथागत बुद्ध अन्धकविन्ध्य सूत्र की देशना इसी स्थान पर किया था ।

महातिर्थ महाब्रह्मण ग्राम में महाकाश्यप अरहत का जन्म भूमि है ।

नालक ग्राम

नालक ग्राम मगध देश के पूर्व दिशा में वसा हुआ एक ब्राह्मण ग्राम है । अरहत सारिपुत्र का उत्पत्ति और परिनिर्वाण दोनों इसी स्थान पर हुआ था ।

चिन्तग्राम

चिन्त ग्राम राजा विम्बिसार के अधिन एक मण्डलीय राजा द्वारा प्रबुद्ध रखा हुआ एक ग्राम है । मण्डलीय राज्य के पुत्र जयन्तकुमार पौल महाकारुणिक तथागत बुद्ध के शासन में प्रव्रज्या ग्रहण की थी ।

उरुवेला जनपद

बहुत से तपस्वीयों द्वारा ले आकर एकत्रित किया हुआ बालु के कारण इस स्थान को उरुवेला के नाम से जाना जाता था । पालि अट्ठकथा के अनुसार बहुत सा बेल का पेड़ होने के कारण उरुविल्ला के नाम से जाना जाता था । संस्कृत बौद्ध ग्रन्थों में भी इसका उल्लेख मिलता है ।

सेनानी निगम ग्राम

मगधेश्वर राजा विम्बिसार का सेनापति के कारण उस स्थान को सेनानी निगम ग्राम के नाम से जाना जाता था । सिद्धार्थ राजकुमार बुद्धत्व प्राप्त करने के लिए पूर्व दिन खिर पायास उसी सेनापति की पुत्री सुजाता ने दिया था ।

गया

गया नाम से प्रसिद्ध एक राजर्षि द्वारा बसाये हुए स्थान को गया के नाम से जाना जाता है । जयश्री महाबोधि से 10 कि.मी. दूर गया है ।

नेरन्जना नदी भी गया होते हुए बहती है । गया निगम ग्राम के द्वार पर गया पोक्करनी है । उसी के आस-पास विशाल चार पत्थर रखकर एक पलंग जैसा एक समतल पत्थर है । उस स्थान को ढकित मंच के नाम से जाना जाता है। उस स्थान का आशय कराकर सुचिलोम नाम से प्रसिद्ध एक यक्ष था यक्ष का भवन भी उसी स्थान पर था । सुचिलोम के स्थान पर बुद्ध भी ठहरे थे । गया तीर्थ के आस-पास हाथी के सिर जैसा एक पहाड़ था। उसी पर्वत के उपर एक हजार भिक्षु को रहने के लिए बहुत बड़ा समतल पत्थर था। गया तीर्थ उसी विशाल समतल पर्वत पर बुद्ध भी ठहरे थे । जटिल भिक्षुओं को आदित्य पर्याय सूत्र का देशना भी इसी स्थान पर किया था । राजा अजातशुत्र द्वारा भिक्षु देवदत्त के लिए इसी स्थान पर एक विहार बनाया गया था। संघ भेद कराकर पाँच सौ भिक्षुओं को भिक्षु देवदत्त ने इसी स्थान पर ले गया था । वर्तमान समय में बुद्ध गया के नाम से बोधिमण्ड प्रदेश जाना जाता है ।

रोहित वास्तु, उरुवेल काश्यप अनालय, सारथीपुर, ये सभी ग्राम जयश्री महाबोधि से उत्तर दिशा में है ।

पाटिलीग्राम

बुद्ध काल में मगध देश के उत्तर दिशा में गंगा नदी के किनारे पाटिली ग्राम का एक देशी बन्दरगाह था । बुद्ध के महापरिनिवार्ण वर्ष के समय राजा अजात शत्रु इस स्थान को महानगर का स्वरूप दिया । उस समय से इस नगर को पाटिलीपुत्र के नाम से जाना जाता था । नगर का निर्माण करते समय बुद्ध उस स्थान पर आते थे । वहाँ से जब बुद्ध निकले उस स्थान को गौतम द्वार के नाम से जाना जाता था। गौतम द्वार से जब बुद्ध बन्दरगाह पर गये उस स्थान को गौतम तीर्थ के नाम से जाना जाता है ।

इष्टकावती, दिघराजी, नामक मगध में दो गाँव था । इष्टकावती गाँव में अरुवती के नाम से प्रसिद्ध एक बुद्ध बिहार भी था ।

दक्षिणगिरि प्रदेश

राजगृह नगर के चारों तरफ पहाड़ था । उसी पहाड़ों के दक्षिण दिशा में दक्षिणा गिरि जनपद था । एकनाल इसी जनपद का प्रधान था ।

महाकारुणिक तथागत बुद्ध ग्यारहवी वर्षावास इसी स्थान पर किया था । इस स्थान पर बुद्ध कसी भारद्वाज सूत्र की देशना किया था ।

भानुमत गाँव

कूट दन्त नाम से प्रसिद्ध एक ब्राह्मण भानुमति ग्राम में था । कूटदन्त ब्राह्मण त्रिशरण सरणागत एक बौद्ध उपासक हो गया । उसके पश्चात् पूरा भानुमत गाँव बौद्धमय हो गया ।

पंचशाल

पंचशाल भी एक कट्टर ब्राह्मणों का गाँव था । उसी गाँव में बुद्ध एक दिन पिण्डपात करने गये थे । लेकिन कोई भी ब्राह्मण बुद्ध को कुछ भी पिण्डपात में नहीं दिया । विशेष उल्लेख मगध देश के पूरातन लोग किकट स्थान के नाम से जानते थे । बुद्ध के समय में अंग मगध दोनों देशों का भूमि प्रमाण तीन सौ योजन (3600 कि.मी.) था । दोनों राज्यों में लगभग अस्सी हजार आबादी था । बुद्ध के समय में अंग जनपद समूद्र के किनारे तक फैला था । मगध अंग जनपद के अधीन था । कभी-कभी दोनों देशों के लिए अलग-अलग राजा भी थे । सिद्धार्थ बोधिसत्व बुद्धत्व प्राप्त करने के पहले अंग मगध दोनों देशों का राजा के बीच में युद्ध होता था । प्रथम बार अंगाधिपति ब्रह्मदत्त राजा ने मगधेश्वर भद्दीय राजा को पराजित किया। लेकिन बाद में भद्दीय राजा के पुत्र बिम्बिसार राजकुमार युद्ध करके ब्राह्मदत्त राजा को मार दिया । इसके बाद अंग देश पर कब्जा कर लिया । उसी दिन से अंग जनपद मगध राज्य के अधीन हो गया । बिम्बिसार राजकुमार अंगदेश के चम्पानगर में रहते हुए पूरे राज्य का कार्य करते थे । पिता जी का देहान्त होने के बाद राजगृह आकर अंगमगध दोनों राज्यों पर शासन किया । बुद्ध शासन में अंग देश का राजा बिम्बिसार के अधीन रहते थे। उस राजा को अंग राजा के नाम से भी जानते थे । अंग और मगध दोनों राज्यों के बीच सिन्ध साविर देशों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध अच्छा चल रहा था ।

धर्म

इस राज्य में समय बितते ही पूर्ण काश्यप आदि शड आचार्यों का अनुयायी बहुत से हो गये । तथागत बुद्ध के आने के बाद सभी दृष्टिक

अन्धकार में डूब गये । रामश्री पुत्त उद्दक तपस्वी का आश्रम भी मगध में हुआ करता था ।

काशी

काशी राज्य की सीमा किसी ग्रन्थ में देखने को नहीं मिलता है । जम्बूद्वीप के सोलह जनपदों के बीच में काशी बहुत समृद्ध था । उस समय काशी राज्य का भूमि प्रमाण दो हजार कि.मी. से ज्यादा होने का अनुमान है । एक समय दक्षिण भारत का अरक नामक एक जनपद भी काशी जनपद के अधिन था । एक समय कोशल राज्य भी काशी जनपद के अधीन था। काशी राज्य बहुत सम्पन्न होने के बावजूद भी बाद में कमजोर होने से बुद्ध काल में काशी राज्य कोशल राज्य के अधीन हो गया ।

वाराणसी

वाराणसी काशी देश की राजधानी थी । वाराणसी में गंगा नदी बहती है । वरुणा और अस्सी दोनों नदियों के बीच बसा हुआ शहर को वाराणसी का नाम दिया था । वाराणसी बनारस के नाम से भी जाना जाता है । धीरे-धीरे इसकी राजधानी में बहुत गाँव व नगर जुड़ने के कारण सोलह योजन (190 कि.मी.) तक फैल गया । वाराणसी नगर में विविध सम्प्रदाय के लोग एकत्रित होकर उसी सम्प्रदाय की दृष्टि के बारे में चर्चा करते थे । नगर में समय प्रभात के नाम प्रसिद्ध एक शाला भी था । बहुत से तपस्वी एकत्रित होकर वहाँ चर्चा करने का एक स्थान था । उस स्थान को ऋषीपत्तन के नाम से जाना जाता है । महाकारुणिक तथागत बुद्ध अपना पहला उपदेश धम्मचक्क पवत्तन सूत्र देशना के बाद अपना पहला वर्षावास इसीपत्तन (ऋषीपत्तन) में बिताया । वाराणसी नगर से बुद्ध गया जयश्री महाबोधि 200 कि.मी के आस-पास है ।

विशेष उल्लेख

वाराणसी नगर के पूर्व-उत्तर दिशा में वरुणा नदी से 5 कि.मी. की दूरी पर ऋषीपत्तन मृगदाय है । इस शहर के चारो तरफ बहुत बड़ा एक प्राकार था । उस समय थेरवाद सम्प्रदाय के सम्मित्ति सम्प्रदाय को सिखने वाले सौ के आस-पास शिष्य भिक्षु इस स्थान पर रहते थे । प्राकार के अन्दर दौ सौ फीट ऊँचा एक विहार भी था । उस विहार के मध्य में धम्म चक्क

सूत्र मुद्रा का तांबे का बहुत बड़ा बुद्ध मूर्ति था । इस स्तूप के बगल में अञञ्या कोण्डिन्य जैसे पाँच भिक्षुओं का तपस्या स्थल पर एक स्तूप था। उसके बगल में सिद्धार्थ की उत्पत्ति और बुद्धत्व दर्शाने के लिए पाँच सौ पच्छेक बुद्ध परिनिर्वाण करने के स्थान पर भी एक स्तूप था । उसके बाद मैत्री बोधिसत्व नियत विवरण (भविष्य में बुद्धत्व प्राप्त करने की अनुमति) का उसी स्थान पर एक स्तूप था । इन सभी बातों का उल्लेख चीनी यात्री ह्वेनसांग अपने भ्रमण यात्रा के दौरान किया है ।

बुनकर ग्राम

वाराणसी के समीप एक बुनकर ग्राम था । वाराणसी नगर गंगा नदी के उसपार वासभ नाम से प्रसिद्ध एक ग्राम था उस ग्राम को पार करने के बाद चुन्ददत्तिक नाम से प्रसिद्ध एक गाँव था । इन सबके विषय में ज्यादा कोई विस्तारपूर्वक जानकारी नहीं मिलता है । राजा बिम्बिसार का कोलियनाम की महामात्य एक गाँव के बाद-विवाद को समझौता कराकर वापसी में जलमार्ग से नीचे (पूर्व) की तरफ जा रहे थे । उसी समय चुन्ददत्तिक गाँव से गंगा नदी के उपर (पश्चिम) की तरफ जाने वाला एक अजीव से प्रेत को देखा । वाराणसी के समीप मगध राज्य के अधीन एक जनपद था इसलिए मगध राज्य काशी जनपद तक फैला हुआ था । केवट्ट द्वार नाम से प्रसिद्ध एक गाँव वाराणसी द्वार के समीप बसा था ।

कोशल राज्य

पश्चिम से पंचाल राज्य, दक्षिण से गंगा नदी पूर्व से सदा नीरा (गण्डकनदी) उत्तर से नैपाली पहाड़ ये सभी कौशल जनपद की सीमा थी। आयोध्या नाम से प्रसिद्ध प्रदेश पूराना कोशल राज्य की भूमि का ज्यादा हिस्सा के अन्तर्गत आता था । उत्तर कोशल दक्षिण कोशल जैसे नामों से कोशल देश विभाजित था । बुद्ध के समय में उत्तर कोशल का राजधानी श्रावस्ती था । दक्षिण कोशल की राजधानी कुशवती था । लेकिन बुद्ध के समय में कुशवती के नाम से बहुत बड़ा कोई नगर का उल्लेख नहीं मिलता है । श्रावस्ती कोशल राज्य का राजधानी के रूप में मान्यता प्राप्त था । बुद्ध काल में कोशल राज्य में तीन प्रसिद्ध नगर थे । श्रावस्ती, साकेत, अयोध्या था।

श्रावस्ती

श्रावस्ती अचीरवती के किनारे बसा हुआ था । नदी वक्र होने के कारण उत्तर दक्षिण दोनों तरफ से नदी था । प्रसेन्नजीत कोशल महाराजा का राजधानी भी श्रावस्ती था । बुद्ध काल में अनाथपिण्डिक सेठ विशाखा जैसे श्रद्धावान उपासक-उपासिका के कारण श्रावस्ती धार्मिक दृष्टि से चमकता था । महाकारुणिक तथागत बुद्ध अपने जीवन का अधिकतर समय श्रावस्ती में व्यतीत किया था । श्रावस्ती जन प्रिय होने के कारण बहुत से जनता का कोशल आने जाने के कारण अश्व (घोड़ा), हाथी जैसो के कारण हरदम बहुत शोर होता था । लेनदेन करने वाले व्यापारी भी बहुत होते थे । अचीरवती नदी के दक्षिण दिशा में जेतवनाराम था । उसके साथ-साथ प्रसेन्नजीत कोशल राजा द्वारा किया हुआ राजकाराम विहार भी था । श्रावस्ती के पूर्व दिशा में विशाखा महाउपासिका द्वारा किया हुआ पूर्वाराम था । श्रावस्ती से कपिलवस्तु 15 योजन (180 कि.मी.) दूरी पर है ।

ह्वेनसांग चीनी यात्री श्रावस्ती जाते समय बुद्ध विहारों का नीव दिखाई देन का उल्लेख किया है । एक मंदिर में मुर्ति था वह मुर्ति भी बुद्ध मात्रु दिव्य पुत्र को धर्म देशना करने के लिए स्वर्ग में जाने वाले का दर्शन का मूर्ति था । उद्देन राजा द्वारा चन्दन की लकड़ी का एक बुद्ध प्रतिमा बनवाया। उसी बात को लेकर प्रसेन्नजीत कोशल महाराजा भी बुद्ध का एक प्रतिमा बनवाया । (ह्वेवसांग वार्ता के अनुसार) ।

संघाराम से करीब सौ फीट पूर्व दिशा में बहुत बड़ा जल से मरा हुआ एक पोखरा था । तथागत बुद्ध को जहर देकर मारने का प्रयास करने वाले देवदत्व इसी स्थान पर नरक में जाने का कहानी सूनने को मिलता है । उस पोखरा के दक्षिण तरफ बुद्ध को तंग करने वाले देवदत्त के अनुयायी कोकालीक जो जमीन फाड़ कर नरक में चला गया, वह जमीन भी है । वहाँ से सौ फीट दूर जो चिंचीमानविका भी नरक में चली गयी वह भी स्थान है । वर्षा ऋतु में जब गंगा नदी उफान पर होने के बावजूद भी उस पोखरे का पानी पोखरे से बाहर नहीं जाता है । उस तालाब (पोखरा) की गहराई भी इतना है कि किसी को पता नहीं है । जो बुद्ध थे तब उस स्थान पर पूर्ण काश्यप का धर्म प्रचलित था साथ ही साथ मक्खली घोषाल आजीवक का धर्म भी प्रचलित था । उस स्थान पर बुद्ध को पधारने के बाद दोनों

का धर्मदर्शन लुप्त हो गया । अचीरवती नदी के समीप विशाखा महाउपासिका द्वारा किया हुआ पूर्वाराम था । उस जगह रहने वाले ज्ञानू सोनी, पिंग्गल कोच्च, सुन्दरीक भारद्वाज, असलायन, एसुकारी, शुभसंघाराव, जैसे सुप्रसिद्ध ब्राह्मण गृह पति समूह बौद्ध उपासक बन गये ।

विदेह देश वासियों के साथ श्रावस्ती वासियों का व्यापार सम्बन्ध बहुत अच्छा था । वर्तमान समय में श्रावस्ती सहित-महित के नाम से जाना-जाता था । प्राचीन अचिरवती नदी वर्तमान समय में राप्ति नदी के नाम से जाना जाता है । पूरातन समय में श्रावस्ती धर्म पत्तन, धर्मपूरी जैसे नामों से भी प्रचलित था । श्रावस्त ऋषी का भूमिवास होने के कारण उस स्थान को श्रावस्ती का नाम दिया था । सर्वसम्पन्न होने के कारण सर्वम्मती के नाम से भी जाना जाता था । जेतवनाराम से थोड़ी दूर अन्धवन नामक एक भंयंकर जंगल था । तपस्या करने वाले साधु-सन्त ऋषी-मुनि अन्धवन में ध्यान-साधना के लिए जाते थे ।

अयोध्या

श्रावसती के दक्षिण तरफ सरजू नदी के किनारे अयोध्या नगर वसा हुआ है । बुद्ध काल में अयोध्या इतना प्रसिद्ध नहीं था । लेकिन बुद्ध काल के पहले अयोध्या एक प्रसिद्ध नगर था । अयोध्या में भी बुद्ध धर्मदेशना किया था ।

साकेत

श्रावस्ती के दक्षिण में सात योजन (80 कि.मी.) की दूरी पर अयोध्या नगर के आस-पास साकेत है । सिद्धार्थ बोधिसत्व बुद्धत्व प्राप्त करने के बाद राजा कोशल ने साकेत नगर को बसाया । राजा कोशल साकेत नगर का निर्माण करने के बाद अनेक धनी लोग साकेत में आकर अपना निवास स्थान बनाया । जम्बूद्वीप का उस समय का महानगर छ: थे । जिसमें से साकेत भी एक था । साकेत के आस-पास कालाराम, कण्टकी वन, अंजन वन के नाम से तीन आराम थे । यह तीनों आराम कालकसेठ द्वारा बनवाया गया था । कालकसेठ पहले मिथ्यादृष्टिक थे बाद में बुद्ध का धर्मदेशना सुनकर सोवान हो गये ।

मतीग्राम

कोशल जनपद में पर्वत पाद में बसा हुआ मतीग्राम बहुत बड़ा आवादी वाला ग्राम था ।

पन्दीकधा

यह एक निगम ग्राम था इस निगम ग्राम में भी कुछ ठहरे थे ।

शक्कनिगम ग्राम

राजगृह के समीप में शक्क निगम ग्राम था । शक्कनिगम ग्राम में कोलिय नामक एक बहुत कंजूस सेठ था । अरहत महागौदगल्यायन ने उस कंजूस सेठ को धर्मदेशना करके बुद्ध शासन में त्रिशरण शरणागत कराया।

पाण्डुपुर

श्रावस्ती के आस-पास एक छोटा सा गाँव है उस गाँव के बारे में कोई विशेष उल्लेख कही नहीं मिलता है ।

सेतव्यपुर

सेतव्यपुर कोशल राज्य ब्राह्मणों से भरा हुआ एक गाँव था । इसी स्थान पर सिंरिसपा नाम से प्रसिद्ध बन में बुद्ध ठहरे थे । सेतव्य के सिंरिसपा बन श्रावस्ती एवम् सेतव्य के बीच में बसा हुआ था ।

उकट्ठापुर

उकट्ठापुर राजा प्रसेन्नजीत कोशल द्वारा सुप्रसिद्ध ब्राह्मण पोक्कर साती के लिए एक त्याग के रूप में दिया था । जम्बूद्वीप के विविध प्रदेशों से शिल्पशास्त्र ग्रहण करने के लिए शिष्य लोग पोक्करसाती ब्राह्मण के पास आते थे ।

इच्छानंगलग्राम

इच्छानंगलग्राम सम्पूर्ण रूप से ब्राह्मणों का गाँव था । यह उकट्ठा नगर के समीप था । उस गाँव में वेद वेदांग पर चर्चा करने के लिए एक वेदशाला था ।

दूनगाँव

यह गाँव सुप्रसिद्ध ब्राह्मण ग्राम था शालावतिका, ओपशाद शाला, नगरविन्द मनसाकट, वेनागपुर, दण्डकप्पक, केशपुत्त यह सभी श्रावस्ती के अगल-बगल में बसा हुआ गाँव है । शालावतिका के लोहिच्च ब्राह्मण ओपशाद चंकीब्राह्मण, कापिक मानव जैसे सुप्रसिद्ध ब्राह्मण परिसद समूह के रुप में बौद्ध धर्म स्वीकार किया था । इसी कारण वहाँ बौद्ध धर्म का बोलबाला था ।

शाक्य जनपद

शाक्य जपनद कोशल राज्य के अन्तर्गत आता था । हिमालय पर्वत की दक्षिणी तराई में शाक्य जनपद बसा हुआ था । शाक्य जनपद की सीमा का कहीं भी सहीं उल्लेख नहीं मिलता है । शाक्य जनपद का राजा शुद्धोदन के होने का उल्लेख पालि साहित्य में देखने को मिलता है । बोधिसत्व कपिलवस्तु में राजा शुद्धोदन के बाद कौन सा राजा ने कपिलवस्तु का सिंहासन सम्हाला इसका विवरण कही नहीं मिलता है । लेकिन सिद्धार्थ राजकुमार द्वारा बुद्धत्व प्राप्त करने के बाद भद्दीय एवम् महानामा दोनों शाक्य राजा का गद्दी सम्हालने की बात मिलता है । कोई समस्या होने पर एकत्रित होकर संवाद करने के लिए कपिलवस्तु का समतागार शाला में शाक्य लोग इकट्ठा होते थे । शाक्य राजा लोग और शाक्य राजवंश के लोग अपने को अतिश्रेष्ठ शक्ति-सम्पन्न समझते थे । कोशल जैसे राजा लोगों को निम्नस्तर का समझते थे । जम्बूद्वीप में शाक्य वंश को भी श्रेष्ठ मानते थे । कोलिय वंश के साथ शुरु से ही सम्बन्ध रखने वाले भी अपने को कम नहीं समझते थे । शाक्यकोलिय दोनों का वास भूमि रोहिणी नदी के दोनो तट पर था। शाक्य समूह अधिक शक्तिशाली होने के कारण राज्य चलाने का कार्य शाक्य लोग ही करता था । इसलिए कोलिय राजा भी शाक्य जनपद का एक हिस्सा हुआ करते थे । शाक्य और कोलिय दोनों परम्परा राजवंश का होने के कारण भी धान के खेत में रुचि लेते थे । शाक्य वंश के लोग धार्मिक शत पुरुष धर्म का पालन करते थे ।

1. कपिलवस्तु

कपिलवस्तु रोहिणी नदी के समीप वसा हुआ था । कपिलवस्तु शाक्य

जनपद की राजधानी है । कपिलवस्तु और वहाँ की जनता का वर्णन कवि लोगों ने दिव्य लोक के स्वरूप में वर्णन किया है । कपिलवस्तु नगर राजा लोगों के समतागार जैसे से परिपूर्ण था । अतीत काल में बोधिसत्व कपिल तपस्वी का वास स्थान था जहाँ कपिलवस्तु वसा हुआ था । इसलिए उसका नाम कपिलवस्तु रखा । जहाँ पर राजा शुद्धोदन राज्य करते थे । बहुत विशाल प्रकार बनवाकर चार लोहे का दरवाजा लगवाया था । श्रावस्ती कपिलवस्तु से पन्द्रह योजन (180 कि.मी.) दूर है । राजगृह से साठ योजन (720 कि.मी.) है । कपिलवस्तु को पदरियायी नाम से जाना जाता था रोहिणी नदी कोहाना के नाम से जानी जाती थी । चीनी यात्री ह्वेनसांग द्वारा निम्नलिखित वर्णन मिलते है—कपिलवस्तु राजधानी चारों तरफ से ली चार सौ है कपिलवस्तु नगर में एक हजार नगर जनशून्य होकर जरावास हो गया। महानगर के नष्टावशेष से ढका हुआ था । राजा शुद्धोधन का राजमहल का भूमि भाग चौदह ली के बराबर था । वहाँ के सभी भवन ईट से निर्मित थे । उसका नींव अभी भी बहुत मजबूत दिखाई पड़ता था बहुत ऊँचा भी था । उसके आस-पास में आवादी बहुत कम थी । कोई भी महाराजा नहीं है । अलग-अलग नगर अलग-अलग राजाओं के अधीन था । जमीन काफी उपजाऊ थी । खेती-बारी बहुत उन्नत थी तथा मौसम भी अनुकूल था । जनता मृदुभाषी थी । हजारो की संख्या में जराजीर्ण संघाराम देखने को मिलता था। राजमहल के बगल में अभी भी तीस भिक्षु रहने वाला एक संघाराम दिखाई पड़ता था । वह थरेवाद सम्प्रदाप व सम्मति सम्प्रदाय के अनुयायी भिक्षु थे । नष्टावशेष के अन्दर बहुत बड़ा चार नीव दिखाई देता है जो राजा शुद्धोदन के महल का नष्टावशेष है । महल के बगल में एक महल में राजा शुद्धोदन का प्रतिमा रखा था । उसके ठीक बगल में रानी महामाया का शयनागार था । उसी के एक भवन में रानी महामाया की मूर्ति रखी थी। उसी के बगल में एक विहार था । बोधिसत्व के गर्भधारण के समय रानी उसी स्थान पर सोयी थी । यह कहानी उस भवन में भित्ति चित्र के हिसाब से दर्शाया गया था । उसी के आस-पास आसित ऋषी द्वारा सिद्धार्थ बोधिसत्व को स्वीकार करने के स्थान पर एक स्तूप बना था ।

कपिलवस्तु नगर के पश्चिम द्वार पर एक स्तूप था । कुमार देवदत्त एक हाथी के बच्चे के सिर पर मार कर उसे मार डाला । उस हाथी के बच्चे के मृत शरीर को राजकुमार सिद्धार्थ उठाकर राजधानी के दिवाल के उस पार कर दिया । उसके बगल में बोधिसत्व सिद्धार्थ और यशोधरा का

शयनागार भी है उसी स्थान पर यशोधरा राहुलकुमार को अपने छाती से लगाकर सो जाने का एक-एक बहुत सुन्दर भित्ती चित्र दिखाई देता है । उस विहार के अन्दर बोधिसत्व सिद्धार्थ द्वारा शिल्प ग्रहण करने का भी एक चित्र दर्शाया गया था ।

कपिलवसतु नगर के आस-पास एक विहार था उस विहार के अन्दर राजकुमार सिद्धार्थ सफेद हाथी के उपर बैठकर सैर करने का एक प्रतिमा बनाया गया था । सिद्धार्थ बोधिसत्व के महाभिनिष्क्रमण (गृहत्याग) को भी दर्शाया गया था नगर के चारो दरवाजे के बगल में जराजिर्ण व्यक्ति, रोगी व्यक्ति, मृत शरीर और प्रव्रज्जित व्यक्तियों इन चारों चित्रों का एक-एक विहार अलग-अलग बनवाया गया था । महल से थोड़ी दूर दक्षिण दिशा में बुद्धत्व के बाद राजा शुद्धोदन सबसे पहले बुद्ध से मुलाकात करने का संकेत का भी एक स्तूप है ।

नगर के दक्षिण दिशा में सर्वज्ञधातु रखकर निर्मित किया हुआ एक स्तूप है । स्तूप के आगे तीस फीट ऊँचा एक विशाल शिला खम्भ है । जिस पर सिंह का रूप दिखाई देता है । उसी शिला खम्भे पर राजाधर्मा शोक द्वारा बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद का पूरा विवरण का सकेत किया हुआ है ।

नगर से 40 कि.मी. की दूरी पर हल जोतने का मंगल उत्सव के दिन राजकुमार सिद्धार्थ द्वारा प्रथम ध्यान करने के स्थान पर एक स्तूप मिलता है ।

नगर से थोड़ी दूर पर राजा विरुढ़क द्वारा शाक्य राजाओं का स्मृति शेष याद करने के लिए बनवाया गया हजारो छोटे-छोटे स्तूप देखने को मिलता है । उसी हजारों स्तूप के दक्षिण दिशा में छोटा स्तूप चार देखने को मिलता है । शाक्य राजाओं द्वारा चार दुश्मन राजाओं के सेना को पराजित करने के स्थान पर स्तूप बना हुआ है । विरुढ़क राजकुमार शाक्यों के खिलाफ युद्ध प्रकाश करने के बाद चार शाक्य राजकुमार आगे बढ़कर राजा विरुढ़क की सेना को पराजित किया । यह खबर शाक्य समूह के बीच फैल गया। शाक्य वंश परम्परा के अनुसार ऐसा कार्य निन्दनीय है । उसे अकुशल कर्म जैसे मानता है । ऐसा मानकर चारों राजकुमारों को कपिलवस्तु से निकाल दिया। चारों राजकुमार कपिलवस्तु से निकाले जाने के बाद हिमालय की ओर चले गये । इनमें से एक भद्दायन एक राज्य का राजा हो गया, एक हिमतल

में राजा हो गया, एक कौशाम्बी देश में राजा हो गया । एक उसी स्थान पर राम परम्परा के अभिन्य चलाता रहा ।

नगर से दक्षिण भाग में शाक्यों द्वारा बनवाकर बुद्ध को पूजा किया हुआ निग्रोधा राम है । वहाँ संघाराम के बगल में एक स्तूप है । प्रजापति गौतमी महाकरुणिक तथागत बुद्ध को उसी स्थान पर किमती (महार्गा) एक वस्त्र की पूजा की थी ।

नगर के पूर्वी दिशा में दरवाजे के अन्दर महामार्ग के बाये तरफ कुमार सिद्धार्थ का धनुष शिल्प अभ्यास करने वाले स्थान पर बना हुआ एक स्तूप है । नगर से बाहर एक देवालय भी था जिसमें नेत्र झुका हुआ एक प्रतिमा भी था । बोधिसत्व सिद्धार्थ के जन्म दिन पर राजा शुद्धोदन लुम्बिनी से आते समय शाक्य राजाओं को शुभ कामनाओं के लिए और सिद्धार्थ को नमस्ते करने वाले स्थान पर यह देवालय बना हुआ है । बोधिसत्व सिद्धार्थ को उस देवालय के अन्दर ले जाते ही देवरूप खड़ा होकर बोधिसत्व सिद्धार्थ को नमन इसी स्थान पर किया था ।

नगर के दक्षिण द्वार से बाहर बाये तरफ एक स्तूप है । बोधिसत्व सिद्धार्थ द्वारा चलाया हुआ एक तीर जमीन में धसने के कारण वहाँ से एक जलधारा निकला और उसी स्थान पर एक तालाब बन गया जिस तालाब का नाम सरकूप के नाम से जाना जाता था । इस सरकूप तालाब का जल और किचड़ रोग निवारण के लिए ग्राम वासी अदृश्य शक्ति होने का विश्वास करते थे ।

2. लुम्बिनी

लुम्बिनी नाम से प्रसिद्ध एक राजकुमारी द्वारा निर्मित राजोद्यान के समीप वसे हुए भाग को लुम्बिनी के नाम से जाना जाता है । लुम्बिनी राजोद्यान सिद्धार्थ बोधिसत्व का जन्म भूमि भी है । लुम्बिनी कपिलवस्तु एवम् देउदाह के बीच में है । राजा धर्माशोक लुम्बिनी का दर्शन करने गये थे उसी समय उस स्थान पर एक शीलालेख सहित बहुत बड़ा शिलास्तम्भ बनवाकर उसके उपर एक अश्व का बहुत बड़ा मूर्ति रखवाया था । उस शिलालेख सहित शिलास्तम्भ भी अभी देखने को मिलता है । चीनी यात्री ह्वेनसांग के कथनानुसार लुम्बिनी का मूल नाम रुकमीनी दाह है । शुरू से रुक्मिनी के नाम से जाना जाने वाला स्थान को लुम्बिनी का नाम दिया । लुम्बिनी

राजोद्यान में शाक्य राजकुमारों को स्नान करने के लिए एक तालाब भी था। उस तालाब का पानी नीले रंग का साफ-सुथरा था । उस पोखरे के उत्तर दिशा में 25 फीट दूर जाने से एक अशोक वृक्ष है । बैशाख पूर्णिमा के दिन बोधिसत्व सिद्धार्थ का जन्म इसी स्थान पर होने का उल्लेख मिलता है । उस स्थान से पूर्व दिशा में नागों द्वारा बोधिसत्व को स्नान करवाने का संकेत के लिए राजा अशोक द्वारा बनवाया हुआ एक स्तूप है ।

उस स्तूप के पूर्व दिशा में साफ सुथरा दो जल स्रोत है । बोधिसत्व के उत्पत्ति के बाद एक जल स्रोत से सादा पानी और एक जल स्रोत से गरम पानी निकलने की बात लोग मानते है । उस जल स्रोत के बगल में दो स्तूप भी देखने को मिलता है । उस जल स्रोत के दक्षिण दिशा में जो शक्रदेवेन्द्र बोधिसत्व सिद्धार्थ को अपने दोनों हाथों से लेने वाले स्थान पर एक स्तूप बना हुआ है । उसके बगल में जो बोधिसत्व को चार दिशाओं के देवता धृतराष्ट्र, विरुढ़, विरुपक्ष, वैष्णव चारो को याद करने के लिए चार स्तूप बना हुआ है ।

वहाँ से थोड़ी दूरी पर राजा अशोक द्वारा बनवाया हुआ एक स्तूप है। बाद में इस पाषाण स्तम्भ को कोई नाग दो टुकड़ा करके जमीन पर गिराने का जनकथा है । उसके बगल में एक छोटी नदी है । जिसे तेलनदी के नाम से जाना जाता था । बोधिसत्व सिद्धार्थ को जन्म देने के बाद महारानी महामाया इसी नदी में नहा-धोकर साफ-सुथरा हुई थी । वहाँ से सौ कि.मी. उत्तर दिशा में रामाग्राम है ।

3. देऊदाहपुर

देऊदाहपुर सुप्रबुद्ध शाक्य राजाओं का वास भूमि था । यह भी शाक्य जनपद था । चातुमा, सामगाम, शोमवृक्ष, शीलवती देववत्थू, नामरागा, उलूम्प ये सभी शाक्य जनपद के ग्राम थे । महाकारुणिक तथागत बुद्ध महापरिनिर्वाण से पहले उलूम्प नाम से प्रसिद्ध शाक्य ग्राम में जाकर रहते समय राजा कोशल भी बुद्ध के पास आकर धर्म देशना सुनकर चले गये। राजा कोशल धर्मदेशना सुनते समय राजा का प्रधान अमात्य राजा को बुद्ध के पास छोड़कर जाकर उनके पुत्र विरुढ़क राजकुमार को राजगद्दी पर बैठा दिया । राजा कोशल अकेले पड़ गये । शरण लेने के लिए अपने दामाद राजा अजातशुत्र के पास राजगृह को चल दिये । राजा कोशल को जाते-जाते रात्रि हो गया नगर का सभी दरवाजा चारों तरफ से बन्द था । राजा

कोशल नगर से बाहर रात्रि बिताने के लिए रुके। काफी थकावट था अचानक अकारण राजगद्दी जाने का भी बहुत शोक व दुख था। राजा की उम्र 80 वर्ष था। काफी वयोवृद्ध एवम् कमजोर राजा का उसी स्थान पर देहान्त हो गया।

हलीदिदवसन, सज्जीनील, शाकुम, उत्तरका, कक्करपट्ट ये सभी ग्राम कोलिय राजा के निगम ग्राम थे। शाक्य समूह गौतम गोत्र का था। इसलिए सिद्धार्थ बोधिसत्व, भिक्षुआनन्द जैसे लोग गौतम शब्द का इस्तेमाल किया।

कोलिय राजा लोग व्यगपज्ज नाम से जाने जाते थे। उन लोगों का व्यगपज्य परम्परा का मूल नामी राम ग्राम था। कोलनगर, व्यग्रपद्द दोनों भी उसी एक जैसा व्यवहार करते थे। राजा शुद्धोदन कोशल राज्य के लिए भी महाराजा होने का उल्लेख किसी भी जगह पर अंकित नहीं है। केवल शाक्य जनपदों में ही राज्य किया है। शाक्य राजा शुद्धोदन के देहान्त होने के बाद शाक्य राज्य राजा कोशल के अधीन हो गया। इसका विवरण अट्ठकथा में मिलता है। बुद्ध के समय में काशी और कोशल दोनों राज्य कोशल महाराजा के अधीन था।

आलवीपुर

आलवीपुर का आँठवीपुर के नाम से संस्कृत ग्रन्थों में उल्लेख है। कोशल जपनद के अधीन एक अलग प्रान्त एक राजा के द्वारा आलवीपुर पर अलग शासन करते थे। आलवीपुर से श्रावस्ती तीस योजन (360 कि.मी.) दूर है।

4. आलवीरट्ट

आलवी राज्य में अग्गालक चैत्य, स्थान पर बौद्ध भिक्षु रहते थे। आलवक राज्य का राजा हत्थालवक नाम से प्रसिद्ध था। हत्थालवक एक बौद्ध उपासक था। चार संग्रह वस्तु के माध्यम से अपने राज्य का देखभाल करते थे। जो इस प्रकार था—दान, प्रिपवचन, समानता और समान न्याय।

5. वज्जीराज्य

वज्जीराज्य विदेह, लिच्छवी नातिक समान गोत्र से युक्त क्षत्रिय परिषद के समान चण्डसे राज्य होता था। उन लोगों के बीच में विदेह लिच्छवी दोनों गोत्र और लोगों से ज्यादा शक्ति सम्पन्न थे। लिच्छवी राजा लोगों का अंगनगर वैशाली था। विदेह राजा लोगों का अंगनगर मिथिला था। नातिक

राजा लोगों का अंगनगर कुन्दपुर था अन्य राजा लोगों का अंगनगर किसी भी ग्रन्थ में देखने को नहीं मिलता है । बुद्ध के समय में विशालापुर वज्जी राजाओं का अंगनगर था । वज्जिराज्य गणतन्त्र होने के वावजूद राज्य की सीमा कहाँ तक था ? उल्लेख नहीं मिलता है । लेकिन वज्जीराज्य एक गणतन्त्र के रूप में भारत के इतिहास के पन्नों में अभी भी चर्चा का विषय बना हुआ है । सुप्रसिद्ध नगर शोभनी श्रीमां भी वज्जी निवासिनी थी ।

वैशाली

वैशाली वज्जीराज्य की राजधानी थी । इसे वज्जी ग्राम के नाम से भी जाना जाता था । गंगा नदी से तीन योजन (36 कि.मी.) दूर उत्तर दिशा में वैशाली बसा हुआ था । राजगृह गंगा नदीं से आठ योजन (96. कि.मी. दूर दक्षिण दिशा में बसा था । उस नगर के बाहर सुप्रसिद्ध घनघोर महावन हिमालय तक फैला हुआ था । महावन में माहकारुणिक तथागत बुद्ध अपना पाँचवा वर्षावास कूटागारशाला में किया था । बैशाली के चारों तरफ एक से एक दूर समानुपातिक ढंग से तीन प्रकार था । सात हजार सात सौ सात लिच्छवी राजाओं ने वैशालीपुर में राज्य किये हैं । वैशाली नगर के आस-पास उद्देन चैत्य, गौमत चैत्य, मत्स्य चैत्य, सारंग चैत्य, चापाल चैत्य जैसे महा चैत्थ थे । आम्रपाली का आम्रवन में भी बुद्ध समय बिताते थे । आम्रपाली वन वर्तमान समय में गण्डकी नदी के अन्तर्गत आता है । उस स्थान को वर्तमान में बेसापुर के नाम से जाना जाता है ।

बेलुग्राम

बुद्ध अपने जीवन का आखिरी वर्षा वास बेलुग्राम में बिताया । संस्कृत ग्रन्थों में बेलुग्राम वैलुग्राम के नाम से प्रसिद्ध है ।

भाण्डग्राम

कोटिग्राम, कुन्दग्राम, कुन्दपुर नाम से भी जाना जाता था । कोटिग्राम वैशाली के आस पास था । नातिक व मातिक दोनों गाँव मिलकर कोटिग्राम हुआ करता था ।

कोल्लाग (नातिक)

बौद्ध ग्रन्थों में कोल्लाग को नातिक का नाम दिया है । कुन्दग्राम छोड़कर यातिक को दूसरा ग्राम से जाना जाता है । इधर गिज्ज का वसना

(खपरैल से ढका हुआ मकान) नाम से एक बुद्ध विहार भी था। बुद्ध इसी स्थान पर ठहरे थे। गोसिग कालवन भी कुल्लाग ग्राम के आस-पास था।

मिथिला

मिथिला पूर्व समय में विदेह राज्य की राजधानी था। यह एक शक्ति सम्पन्न राज्य था। बाद में विदेह लिच्छवी समूह के साथ मिलकर एक समूह सरकार बनाया। उस दिन से वैशाली प्रधान अंग नगर होने के साथ-साथ मिथिला राज्य की राजधानी हुआ करती थी। वर्तमान समय में नैपात सीमा में जनकपुर नामक पुन्नागाँव पूराने मिथिला के अन्तर्गत था। सम्पन्न समय में मिथिला का भूमि प्रमाण सात योजन (84 कि.मी.) के आस-पास था। इसी स्थान पर मिथिला में बुद्ध ठहरे थे।

धम्मकुण्डपुर

विदेह राज्य के मध्य में वसा हुआ पर्वत श्रृखला से युक्त धम्मकुण्ड महि नदी के किनारे वसा हुआ था। महिनदी भोपाल को अनुग्रह के लिए बुद्ध धम्मकुण्ड में पधारे थे। वर्तमान समय में इस स्थान को धानकुण्ड के नाम से जाना जाता है।

बहुत प्रबल वज्ज जपनद बुद्ध का महापरिनिर्वाण से तीन वर्ष के बाद अजातशत्रु राजा द्वारा निर्मित कराया गया। उसी समय से वज्जी जनपद भी मगध देश के अधीन हो गया। बुद्ध के पहले कई सत वर्ष के पूर्व पार्श्वनाथ नाम से प्रसिद्ध जैन गुरु इस प्रदेश में अपना प्रभाव जमा रखा था। उस समय लिच्छवी राज्य में जैनधर्म प्रचलित था। निगण्ठनाथ पुत्त पैदा होने के बाद जैन धर्म का प्रचार-प्रसार अधिक हो गया। इसका एक विशेष कारण था कि निगण्ठ नाथ पुत्त उसी प्रदेश के एक सम्पन्न क्षत्रिय कुल में हुए थे। लिच्छवी राज परम्परा जात परम्परा से था। कुन्दकोटि ग्राम वासी सिद्धार्थ नाम से प्रसिद्ध क्षत्रिय इसका भार्या विदेह दत्ता (विशाला) था। चेत लिच्छवी राजा की पुत्री क्षत्राणी का पुत्र वर्तमान महावीर के नाम से जैन धर्म में प्रकट हो गया। वर्तमान महावीर निगण्ठनाथ पुत्त उस समय बहुत से श्रावक परिषद के साथ सुप्रसिद्ध एक जैन गुरु के रूप में उभर कर सामने आये।

6. मल्ल जनपद

दक्षिण वज्जिरट्ठ जनपद भी मल्लजनपद का सीमा है । मल्लजनपद वासी श्रद्धा से भरे हुए बौद्ध समूह के थे । मल्ल राजाओ को वासेट्ठ नाम से भी जाना जाता था । मल्ल राज परम्परा कोक्काक राज वंश से आया था । पूरातन समय में राजा का शासन होने से भी बाद में मगध देश का भद्दीय राजाओं से उस प्रदेश का देखभाल होता था । मल्लराज्य समूह राज्य था । मल्ल और लिच्छवी दोनों राज्य सटे होने के कारण कभी मित्रता तो कभी शत्रुता देखने को मिलता था । राजा कोशल का सेना पति बन्दुल मल्लराजवंश का था । वन्दुल सेनापति द्वारा पाँच सौ लिच्छवी राजवंश के लोगों को मरवा दिया ।

कुशीनारा

कुशीनारा बुद्ध के समय में एक छोटा नगर था । उसके पहले कुशवती नाम से बहुत सम्पन्न राज्य होने का भी उल्लेख मिलता है । हिरण्यवती (अचीररवती) नदी के पूर्व में गण्डकी नदी जहाँ पर मिलती है उस स्थान पर कुशीनगर बसा हुआ है । वर्तमान समय में कुशीनगर जिले में कुशीनारा बसा हुआ है । बुद्ध का महापरिनिर्वाण चैत्य खुदाई के समय उस जगह से निकला था उस स्थान पर मिला हुआ एक तांम्र पत्र में महापरिनिर्वाण चैत्य ताम्र पत्र पर इर्दी का वाक्य लिखा था । कुशीनारा नगर हिरण्यवती नदी के तट के किनारे उपवत्तन नामक शाल उद्यान में महाकारुणिक तथागत बुद्ध का महापरिनिर्वाण हुआ था ।

पाँवा

पाँवा बुद्ध काल में मल्ल राजाओं का राजधानी थी । पाँवा नगर के मध्य में उपहतक नामक प्रसिद्ध एक समतागार शाला था । उसी समतागार शाला को स्वीकार करके बुद्ध उसमें पधारे थे । उस समय पाँवापुर में निगण्ठनाथ पुत्त का देहान्त हो गया । निमण्ठनाथ पुत्त के देहान्त के बाद उसके धर्म के बारे में अनुयायी लोग विविध मत फैलाकर लड़ाई-झगड़ा करते थे । यह बात सुनने के बाद सारिपुत्त अरहत बुद्ध से अनुमति लेकर उन लोगों के बीच में बुद्ध के धर्म का ऐसे स्थिति पैदा नहीं होने के लिए संगिति सूत्र का देशना किया । पाँवा नगर में चुन्दकरमार पुत्र का एक आम का बगीचा भी था । बुद्ध उसी आम वन में कभी-कभी पधारते थे ।

अनुप्रिय नगर

अनुप्रिय नगर अनोमा नदी के किनारे बसा हुआ । मल्ल राजाओं का एक छोटा-सा नगर था । यह नगर अनुप्रिय निगम ग्राम के नाम से जाना जाता था इसी स्थान पर मल्लराजाओं का एक आम का बहुत बड़ा बगीचा बुद्धत्व प्राप्ति के थोड़े दिनों के बाद बुद्ध उस आम्रवन में पधारे । भद्दीय, अनुरुद्ध, आनन्द, भृगु, किम्बिल, देवदत्त और उपालि ये सात लोग बुद्ध के पास आकर अनुप्रिय आम्रवन में प्रव्रज्या लिया था । धम्ममल्ल भिक्षु का जात भूमि भी अनुप्रिय नगर था । कपिलवस्तु से अनुप्रिय नगर की दूरी तीस योजन (360 कि.मी.) है । गोरखपुर जनपद में आजकल अऊमी नाम से प्रसिद्ध नदी अनोमा नदी है ।

7. चेतियरट्ठ

चेतियदेश कुरुदेश के सीमापर कोशल राज्य से दक्षिण में यमुना नदी के तट पर बसा हुआ था । उसकी दक्षिणी सीमा विन्ध्यपर्वत समूह है । वर्तमान समय में बड़हलगंज नाम से प्रसिद्ध इलाका उसके पास सटा हुआ एक पूराना गाँव है । उस देश को छेदी नाम के व्यवहार से जाना गया। इधर भद्दवतिका पुर के समीप में अम्बातीर्थ था ।

8. वत्सदेश

वत्सदेश अवन्ति जनपद के उत्तर दिशा में यमुना नदी के किनारे बसा हुआ था । इस स्थान को वंश जनपद के नाम से भी जाना जाता था । बुद्ध काल में परन्तप राजा के पुत्र उद्दैनी (उदायन) राजा इसी स्थान पर राज्य करते थे । उस समय अवन्तिदेश का राजा चण्ड प्रज्योत राजा की दुहितु (पुत्री) वासलदत्ता उद्दैन राजा का रानी बनी थी । बोधिराजकुमार उद्दैन राजा का पुत्र था ।

हस्तिनापुर

हस्तिनापुर में पूर्व समय एक बहुत प्रवल राजा था बुद्ध काल में इन नगर को हाथिनी नगर का नाम दिया था । हस्थिनी एक छोटा सा नगर था।

चुल्लकोट्टित

भिक्षू रट्ठपाल का जन्म भूमि चुल्लकोट्टित था । महाधनी सेठ लोगों

का निगम ग्राम था । कुरुरट्ट का मौसम बहुत सुखदायक था । इसलिए कुरुरट्ट वासी शेष जनता से अधिक निरोगी व सम्पन्न थे । कुरुरट्ट वासीयों की बुद्धि साफ सुथरा था । गम्भीर धर्म सुनकर समझना एवम् उसे धारण करना इन लोगों की विशेषता थी । इसीलिए बुद्ध महासतीपट्ठान, महानिधान सतीपट्ठान, सरोपम, रुखोपम, मागन्धी, अनिच्च सप्पाप जैसे गम्भीर सूत्र का धर्म देशना किया है । रट्टपाल सूत्र का भी इसी स्थान पर देशना किया है । इस गाँव के लोग कभी भी निरर्थक बात करके समय नष्ट नहीं करते थे । दास-दासी भी सतीपट्ठान सूत्र का कुछ अंश लेकर ध्यान भावना करते थे । ध्यान भावना नहीं करना लज्जा का कारण हुआ करते थे । बाद में कुरुरट्ट भी एक समूह गणराज्य के रुप में काम किया ।

कौशाम्बी

कौशाम्बी वंशदेश की राजधानी थी । कौशाम्बी का उस समय उद्दैन राजा था । कौशाम्बी यमूना नदीं के किनारे बसा था । यदि वाराणसी से कौशम्बी को जलमार्ग से जाने पर तीस योजन (360 कि.मी.) पार करना पड़ता था । खद्दरीकाराम, घोसिताराम, कुक्कुटाराम, पावारिक आम्रवन, नाम से चार सुप्रसिद्ध विहार कोशाम्बी में था । बुद्ध अपना नौवा वर्षावास घोसिताराम में किया था । इस नगर के नदी के किनारे उद्दक नाम से प्रसिद्ध वन में पिण्डोल भारद्वाज भिक्षु का धर्मदेशना सुनकर राजा उद्दैन बौद्ध धर्म स्वीकार किये । वर्तमान समय में इलाहाबाद नगर से चलीस कि.मी. दूर उत्तर दिशा में कौशाम्बी में बुद्ध कालिन बोद्ध विहार, संघाराम जैसो का नष्टावशेष आज भी देखने को मिलता है ।

प्रयाग प्रतिष्ठान

प्रयाग प्रतिष्ठान गंगा नदी के किनारे बसा हुआ है । सोरईपुर भी इसके आस पास है ।

बालकलोनकार ग्राम

कौशाम्बी नगर से कोशल राज्य के बराबर बालकलोनकार देश बसा हुआ था । पारलेईवन में पधारते समय बुद्ध बालकलोनकार ग्राम में जाकर भिक्षु भृगु को धर्म देशना किया था ।

भग्गरट्ट

भग्ग जनपद वंश देश के अन्तर्गत आता था भग्गदेश का सुनसुमार गिरि नगर के समीप वेषकलां नामक प्रसिद्ध एक वन में बुद्ध अपना आठवाँ वर्षावास किया है ।

9. कुरुरट्ठ (कुरुदेश)

पूर्व से पंचाल देश दक्षिण से मत्स्य देश कुरुरट्ठ की सीमा है । बाकि देशों की सीमा का उल्लेख नहीं मिलता है । कुरुरट्ठ की भूमि प्रमाण तीन सौ योजन (3600 कि.मी.) है । युधिष्ठीर परम्परा के एक राजा इधर राज्य करते थे । लेकिन बुद्ध के समय में एक कौरव परम्परा का कुरुरट्ठ देश का राजा के हिसाब से राज्य करते थे ।

इन्द्रप्रस्थ

इन्द्रप्रस्थपुर राजधानी है और राजा का एक उद्यान में भिक्षुरट्टपाल ने राजा को धर्मदेशना किया था । इन्द्रप्रस्थ नगर सात योजन (84 कि.मी.) लम्बा-चौड़ा था । वर्तमान समय में इस स्थान को इन्द्रप्रस्थ गाँव के नाम से जाना जाता है । वर्तमान समय में इन्द्रप्रस्थ दिल्ली राजधानी में सटा हुआ दिखाई देता है ।

हस्तीनापुर

हस्तीनापुर एक सम्पन्न राज्य था । बुद्ध काल में हस्तीनापुर एक हस्थीनी नामक छोटा-सा शहर था ।

चुल्लकोट्टित

भिसूरट्टपाल का जन्म भूमि चुल्लकोट्टित में था । उस समय वहाँ बहुत धनी लोग रहते थे ।

10. पंचाल देश

कुरु देश के पूर्व दिशा में पंचाल देश बसा हुआ था । पंचाल के बीच में भागीरथी नदी के उत्तर भाग में उत्तर पंचाल दक्षिण भाग में दक्षिण पंचाल बसा हुआ था । बुद्ध काल में दोनों देशों में किस तरह का शासन व्यवस्था था कोई उल्लेख नहीं मिलता है ।

कम्पिल

कम्पिल नगर के राजा संजय राज्य छोड़कर निगण्ठनाथ पुत्त के शासन में प्रव्रज्या लेने का उल्लेख उत्तराध्यान सूत्र में पढ़ने को मिलता है । उसके बाद पंचाल में एक समूहराज्य होने का मत ऐतिहासिक है । बुद्ध काल के पहले पंचाल बहुत बड़ा सम्पन्न राज्य के रुप में उभरा था । कम्पिलपुर दक्षिण पंचाल का राजधानी था । वर्तमान में इस स्थान को कम्पिल के नाम से जाना जाता है । उत्तर पंचाल का प्रधान राजधानी अभीछत्रपुर था । अभिछत्रपुर वर्तमान समय में रामनगर के नाम से जाना जाता है ।

कान्यकुब्जपुर

यह एक सुप्रसिद्ध नगर था और गंगानदी के किनारे बसा हुआ था। वर्तमान समय में कान्यकुव्ज कानुज के नाम से जाना जाता है । एक समय कान्यकुब्ज महोदय के नाम से भी जाना जाता था ।

11. मत्स्य देश

कुरु देश के दक्षिण दिशा में यमुना नदीं के आस पास मत्सय देश होने का उल्लेख मिलता है । विराटपुर मत्स्थ देश की राजधानी थी । वर्तमान समय में जयपुर से उत्तर दिशा में 40 कि.मी. दूर है । विराट उस समय इसी प्रदेश समूह राज्य में होने का उल्लेख मिलता है

12. सूरसेना

सूरसेना राज्य मत्स्य देश से यमुना नदी के दक्षिण दिशा में बसा हुआ था । बुद्ध के समय में सूरसेन राजा का राज्य में अवन्तिपुत्र नामक एक राजा राज्य करता था ।

मथुरा

मथुरा सूरसेन राज्य की राजधानी थी । मथूरा यमुना नदी के तट पर बसा हुआ है । राजा का निवास स्थान भी मथुरा ही था । बुद्ध कई बार इस स्थान पर पधारे है । वर्तमान समय में इस स्थान को मथूरा के नाम से जाना जाता है । दक्षिण भारत में तीन तिल्लीवेली प्रदेश में मट्टूरा नामक एक नगर था । भारत वर्ष में उत्तर भारत में इसी नाम से और एक नगर था । सूरसेन राज्य में बसा हुआ नगर वर्तमान में मथुरा भूमि है ।

बेरंजानगर

बेरंजानगर मथूर नगर के आस-पास बसा हुआ था ।

13. अश्क

अश्क जनपद गोदावरी व नर्मदा (महिष्यति) इन दोनों नदियों के बीच में बसा हुआ था । गोदावरी नदीं के उसपार मूलक जनपद था । इन दोनों जनपदों में आन्ध्रा-तेलगु राजा लोग राज्य करते थे । ये सभी देश पानीपथ के नाम से जाना जाता था । कलिंग देश बुद्ध काल में अश्क जनपद के अधीन था । पोतनपुर संस्कृत ग्रन्थों में पोपन्न के नाम से जाना जाता था। पोतन अश्क देश की राजधानी थी । सतिष्ठ्ठान मूलक देश की राजधानी थी । यह राजधानी गोदावरी नदी के किनारे बसा हुआ था । वर्तमान समय में इस स्थान के पैइतान के नाम से जाना जाता है । ग्रिक इतिहास में इस स्थान को पैताना के नाम से जाना जाता था ।

वर्तमान इलाहाबाद कुछ समय तक प्रयाग नगर के नाम से जाना जाता था । अतीतकाल में प्रयाग को पतिट्ठान के नाम से जाना जाता था । गोदावरी नदी दो भागों में बटने के स्थान से तीन योजन (36 कि.मी.) दूर एक छोटा से द्विप है । राजा कोशल के पुरोहित बाबरी ब्राह्मण इसी स्थान पर आकर एक आश्रम बनाकर तपस्या किया था । सिद्धार्थ को बुद्धत्व प्राप्त होने के बाद इस समाचार को सुनकर बुद्ध का दर्शन के लिए तिष्य, मित्तैय, पुन्नक, मित्तगु, द्योतक, उपशिव, नन्द, हेमक, तोदैप्य, कत्तप, चतुकन्नी भदाऊद, पोषाल, मोघराज, पिंग्गिय सभी को बुद्ध का दर्शन के लिए भेजा था । उत्तर भारत से जाने वाले व्यक्तियों के बतिट्ठान, माहाहिष्यति, उज्जैनी, मोनंद्ध, वेदिसा वनसावत्थी, कौशाम्बी, साकेत, वैशाली, राजगृह इन सभी स्थान, नगर होते हुए मगध क्षेत्र का पाषाण चैत्य विहार में आकर बुद्ध से मुलाकात की है । दन्तपुर भी अश्क देश में होने का अनुमान है ।

14. अवन्तिजनपद

अवन्तिजनपद दक्षिणापथ के उत्तर में बसा हुआ था । बुद्ध महापरिनिर्वाण के बारह सत वर्ष के बाद अवंत्तिपुर आलवक देश के नाम से जाना जाता था । अवन्ति उत्तर अवन्विक दक्षिण अवन्तिक के नाम से

दो भाग था । दक्षिण अवन्ति को दक्षिणापथ के नाम जाना जाता था । वर्तमान समय में मालवा-निवर दोनों प्रदेश उसके समीप मध्यदेश की सीमा में है। मध्य देश का कोई प्रदेश पूरातन समय में अवन्ति देश के अन्तर्गत होने का उल्लेख है । बुद्ध काल में अवन्तिक देश के राजा चण्डप्रज्योत के नाम से जाना जाता था । चण्डप्रज्योत एक बौद्ध राजा थे । अवन्तिक में कुरिधर नगर पपात, पब्बत, मक्क्रकटक, गाँवों के आस-पास भिक्षु महाकाश्यप का आश्रम था ।

उज्जैन

ग्रीक वासी उज्जैन को उजैने के नाम से लोग जानते थे । बुद्ध काले अवन्ति देश का राजधानी उज्जैन था । महाकच्चायन अरहत का जन्म भूमि भी उज्जैन था । श्रीलंका में बौद्ध धर्म का संदेश लेकर जाने वाले अरहत महिन्द्र का जन्म भूमि भी उज्जैन था । अवन्ति देश के पूर्व में नर्मदा नदी के किनारे बसा हुआ है ।

माहिष्यति

अवन्ति देश का दक्षिण जनपद का एक प्रधान नगर के रुप में माहिष्यति प्रसिद्ध था । अवन्ति देश की राजधानी भी महिष्यति मादिण्पति थी । नर्मदा नदी के किनारे बसा हुआ है । माहिष्यति वर्तमान समय में मानधातु के नाम से जाना जाता है ।

कोरिरधर

कोरिरधर अवन्तिदेश के अन्तर्गत ही था । लेकिन उस देश के सीमा का कोई उल्लेख नहीं मिलता है । कोरिरधर में एक काली नाम की महिला थी जो बुद्ध शासन में प्रव्रज्या लेकर बाद में काली सोवान उपासिका हो गयी। काली भिक्षुणी बनने के पहले एक पुत्र को जन्म दिया । बड़ा होकर उसका पुत्र सोन कुटिकन्न प्रव्रज्या लेकर बुद्ध शासन में महाश्रावक पदवी प्राप्त किया।

विदिशा

माहिष्यतिपुर श्रावस्ती जाने के रास्ते में वेत्रवती नदी है । उसी नदी के तट पर विदिशा बसा हुआ है । अरहत सारिपुत्त और महामौदगल्यायन

अरहत दोनों अग्रश्रावक लोगों का शारिरीक धातु रखकर बना हुआ दो विशाल स्तूप अभी भी देखने को मिलता है । राजा अशोक का प्रथम रानी एक विदिशा की राजकुमारी थी । वर्तमान समय में विदिशा मध्यप्रदेश में है । अरहत सारिपुत्र और महामौदगल्यायन दोनों का शरीर अवशेष धातु रखा हुआ चैत्य विदिशा से थोड़ी दूर में सोनी नामक एक स्थान पर अभी भी देखने को मिलता है ।

गोनद्धपुर

गोनद्धपुर उज्जैन और विदिशा दोनो के बीच में बसा था ।

15. गन्धार देश

गन्धार देश जम्बूदीप का उत्तरापथ में है । काश्मीर भी गन्धार के अन्तर्गत आता है । बुद्ध के समय में पुक्कू साती नामक एक प्रसिद्ध राजा गन्धार में राज्य करते थे । पुक्कूसाती राजा, राजा विम्बिसार का एक घनिष्ठ मित्र था । राजा पुक्कूसाती बाद मे बुद्ध के पास आकर धर्मदेशना सुन अनागामी हो गया । उक्कलपुर भी उत्तरापथ का एक नगर था । पुष्करवती नगर उवकलपुर के आस-पास था । बुद्ध का प्रथम दो उपासक तपस्सु व बल्लिक दोनों बुद्ध का केश धातु रखकर उक्कलपुर में एक चैत्य बनवाया था । बंगाल के बन्दरगाह के समीप उड़िया नगर को भी उक्कलपुर के नाम से जाना जाता था । तक्षशीला गंधार की राजधानी थी । बुद्ध गन्धार देश पधारने का कोई भी उल्लेख किसी भी ग्रन्थ में पढ़ने को नहीं मिलता है। पुक्करवती नगर सिन्धू नदी की एक शाखा सुवास्तु नदी के किनारे बसा हुआ था । तपस्सु व बल्लिक दोनों पुक्करवती के सार्थवाहक का पुत्र है । आसितांजन नगर पुक्करवतीपुर के समीप में बसा हुआ था । तपस्तु व वल्लिक दोनों का जात भूमि आसितांजन है । पुक्करसाती बुद्ध शासन में प्रव्रज्या लिया । सिद्धार्थ गौतम बुद्धत्व प्राप्त करने के आस-पास राजा पोक्करसाती प्रव्रज्या लेने के बाद वहाँ कौन सिहांसनारुढ़ हुआ कोई विवरण नहीं मिलता है । जैन भक्ति नग्न जीत उस समय वल सम्पन्न होने के कारण पुक्कूसाती के बाद नग्नजीत को सिहांसनारुढ़ होने को अनुमान करते है। जैन धर्म ग्रन्थ उत्तराध्यान सूत्र के अनुसार पंचाल देश का राजा विरुप विदेह देश का नामी राजा था । कलिंग देश का करकण्ड राजा ये तीनों निगष्ठनाथ पुत्र का शरणागत व्यक्तियों में से थे ।

16. कम्बोज

कम्बोज देश जम्बूदीप के उत्तरापथ की तरफ है कम्बोज देश के लोग सदाचार, शिष्टाचार से सम्पन्न एवम् धर्मों से युक्त नहीं थे । कम्बोज देश के लोग रुग्र स्वभाव के थे । कम्बोज घोड़ो के लिए प्रसिद्ध था । बुद्ध विरंजापुर में वर्षावास करते समय उत्तरापथ से आया हुआ घोड़ो का व्यापार करने वाला व्यापारी बुद्ध प्रमुख भिक्षुमहासंघ को खान-पान से अनुग्रहित किया था ।

द्वारिकापुर जम्बूदीप के दक्षिण में बसा हुआ था । द्वारिकापुर कम्बोज की राजधानी थी । उसके समीप में रामपुर के नाम से एक और नगर था। (वियतनाम देश के दक्षिणी भाग में कम्बोज के नाम से एक छोटा सा राज्य है जो इस ग्रन्थ में उल्लेख किया हुआ कम्बोज नहीं है ।)

भद्र देश के नाम से एक देश था लेकिन सोलह जनपदों में किसके अन्तर्गत आता था इसका उल्लेख नहीं है । भद्र देश की राजधानी को सागलपुर के नाम से जाना जाता था । वर्तमान समय में भद्र पंजाब प्रान्त के अन्तर्गत आता है । सिन्धु देश वर्तमान राजपुताना सहारा के दक्षिण दिशा से सिन्धु नदी के दोनो तरफ बसा हुआ है । श्रावस्ती से व्यापारिक सम्बन्ध सिन्धु देश के साथ अच्छा था । राजपुताना सहारा के दक्षिण में अवन्तिदेश से पश्चिम विन्ध्यापर्वत के समीप उत्तर दिशा में बसा था । सोविर देश की राजधानी रोरुक के नाम से जाना जाता है । सोविर देश भी व्यापार सम्बन्ध में श्रावस्ती के साथ बहुत अच्छा तालुकात रखता था । बुद्धकाल में सोविर देश में तिस्य नामक एक राजा राज्य कर रहा था । राजा विम्बिसार का मित्र होने के कारण एक सोने के पत्र पर बुद्ध चरित का चित्रांकन करवा कर पटिच्यसमुत्पाद लिखवाकर तिस्थ राजा को भेट किया था । यह सब अध्ययन करने के बाद राजा तिस्य बुद्ध के पास आकर प्रव्रज्या ग्रहण किया था ।

अपरान्त देश

दक्षिण भारत में समुद्र के किनारे भारुकच्छ और सुप्पारक दोनों अपरान्त देश का बन्दरगाह था । इस देश की सूनापरान्त देश के नाम से जाना जाता था ।

बाहियय देश, अजीतदेश, अल्लकप्पदेश, वेटद्विप, देश, आलवीदेश, कोकालिक देश, पत्तुन देश, पानीपथदेश, बुलूजनपद ये सभी सोलह से किस जनपद के अन्तर्गत था किसी भी ग्रन्थ में उल्लेख नहीं मिलता है । भद्रावती और चेतीय के नाम से दो जनपद था दोनों का अंग नगर भद्रावती था । वर्तमान समय में बतल के नाम से जाना जाता है । अल्लकप्प, वेटद्वीप दोनों एक दूसरे से सटा था । बुद्धत्व के साठ वर्ष पहले भद्रवती व चेतीय देश का दोनों राजा राज्य छोड़कर अलग-अलग पर्वतों में जाकर तपस्वी होने का उल्लेख धम्मपद अट्ठकथा में मिलता है । कोशाम्बी के राजा उद्दैनी कुमार काल में वेट्द्वीप के तपस्वी के पास जाकर शिल्प शिक्षा ग्रहण किया था। वेटद्वीप देश वर्तमान समय में वेतियो के नाम से जाना जाता है । वेतियाँ गोरखपुर शहर से पूर्व दिशा में है । कोकालिक देश भिक्षु कोकालिक का जन्म भूमि है । पत्तुन्न देश रेशमी वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध था । कुरुजनपद में उत्तर कानियम ग्राम में बुद्ध ठहरते थे । दिघलम्बकपुर एक अरण्य था उसी अरण्य में बुद्ध ठहरते थे । उस समय दिघलम्बकपुर में एक ब्राह्मण परिवार का नवयुवक लच्च उपद्रव से पीड़ित था । उसे दोष मुक्त करने के लिए बुद्ध के आदेशानुसार भिक्षुमहासंघ सात दिन तक परित्राण पाठ करने का उल्लेख मिलता है ।

मुण्डनिगम

मुण्डनिगम विन्ध्यपर्वत समूह में स्थित है । केशपुत्तपुर में कालाम ग्रोत्रिक लोगों का वर्चस्व था । हस्तीग्राम में वज्जीरट्ट का बज्जी राजा था जो मल्ल राज्य के अधीन था । हस्तीग्राम में बनाराम नामक एक चैत्य था। अट्ठनगर में कुकुट्ठाराम नाम से प्रसिद्ध एक स्तूप था । चालिकापुर किजित्ला नदी के किनारे बसा था । इस स्थान को चालिका के नाम से भी जाना जाता था पिप्पली वन मोरिय वंश राजा लोगों का नगर था । वेलूकन्टकीपुर, मन्तावनीपुर, मातुलापुर किस राज्य के अधीन था विवरण नहीं मिलता है।

बौद्ध-भारत की धार्मिक स्थिति एवम् उस समय के प्रसिद्ध छः गुरुओं का दर्शन

पालि-त्रिपिटक के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि महाकारुणिक बुद्ध के समय वैदिक कालीन यज्ञों का प्रचलन था[1], दूसरी ओर आत्मा और ब्रह्म के तादात्म्य सम्बन्धी सिद्धान्त के प्रति भी बड़ी जिज्ञासा थी[2] । यज्ञों के रूप में ऐसे-ऐसे यज्ञों का वर्णन मिलता है जिनमें न केवल बहुत से प्राणियों की बलि दी जाती थी अपितु जिनमें प्रभूत धन का व्यय भी होता था । इसके अतिरिक्त उन यज्ञों को कराने में विभिन्न वर्गों के लोगों को तरह-तरह के कष्ट उठाने पड़ते थे[3] । आत्म-चिन्तन भी अपनी चरम सीमा पर था । ब्रह्मजालसूत्र से यह विदित होता है कि उस समय जन्म से पहले और मरने के बाद की स्थिति को लेकर अनेक प्रकार के मत थे[4] । उस समय लोक एवं आत्मा के विषय में वास्तविक ज्ञान प्राप्त करने के लिये बुद्धिजीवी-वर्ग व्याकुल रहता था । यदि कदाचित् यह ज्ञात होता था कि अमुक व्यक्ति से वास्तविक ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है तो जिज्ञासु पुरुष उस व्यक्ति के पास अवश्य पहुँचता था[5] ।

---

1. (क) तेन को पन समयेन कूटदन्तस्स ब्राह्मणस्स महायञ्ञो उपक्खटो होति ।
   (दी०नि० खण्ड 1, पृ० 109)
   (ख) सो एचमाह—एत्तका उसभा हञ्ञन्तु यञ्ञत्थाय....।
   (म०नि० खण्ड 2, पृ० 9)
2. दी०नि० खण्ड 1, पृ० 200-201
3. ये पिस्स ते होन्ति दासा ति वा पेस्सा ति वा कम्मकरा ति वा ते ।
   पि दण्डतज्जिता भयतज्जिता अस्सुमुखा रूढ़माना परिकम्मानि करोन्ति ।।
   (म०नि० खण्ड 2, पृ० 419)
4. इमेहि खो ते, भिक्खवे, समणब्राह्मणा पुब्बन्तकप्पिका च अपरन्तकप्पिका च पुब्बन्तापरन्तकप्पिका चापुब्बन्तापरन्तानुदिट्ठिनो पुब्बन्तापरन्तं आरब्भ अनेकविहितानि अधिमुत्तिपदानि अभिवदन्ति द्वासट्ठिया वत्थूहि ।
   (दी०नि० खण्ड 1, पृ० 34)
5. (क) .... सोणदण्डोभो ब्राह्मणो एवमाह-आगमेन्तु किर भवन्तो, सोणदण्डो पि ब्राह्मणो समणं गोतमं दस्सनाय उपसंकमिस्सतीति ।
   (दी०नि० खण्ड 1, पृ० 98)
   (ख) कच्चि नु त्वं, आवुसो, अमतं अधिगतो ति ? ....गच्छाम मयं, आवुसो भववतो सन्तिके, सो नो भगवा सत्था ।
   (महावग्गो, पृ० 40-41)

जनसाधारण के मानस पटल पर यह बात अच्छी तरह से अंकित हो चुकी थी कि संसार एवं आत्मा सम्बन्धी ज्ञान के लिए तपस्या तथा उससे उत्पन्न होने वाला ध्यान आवश्यक है। यही कारण था कि अगर कोई व्यक्ति तपस्वी के रूप में समाज में जाता था तो उसकी अत्यधिक पूजा होती थी। इस प्रसंग में बुद्ध के समय ख्याति प्राप्त छः तीर्थांकरों का विवरण देना आवश्यक प्रतीत होता है। इन छः तीर्थांकरों के नाम हैं—पूर्ण कश्यप, मक्खलि गोसाल, अजित केसकम्बल, पकुध कच्चायन, निगण्ठ नाथपुत्र तथा संजय बेलट्ठपुत्त। ये सभी श्रमण-परम्परा के थे। श्रमण शब्द 'श्रम' धातु से बना है जिसका अर्थ होता है—परिश्रम करना। श्रमण यह परिश्रम तपस्या के रूप में करता है। इन छः तीर्थांकरो के विषय में कहा गया है कि 'वे संघी थे, गणी थे, गणाचार्य थे, विख्यात थे, यशस्वी थे, तीर्थंकर थे, समाज में साधु समझे जाते थे, अनुभवी थे, बहुत समय से प्रव्रजित थे उन्होंने बहुत कुछ देखा तथा वे आयु में बड़े थे[1]।

समाज में तीर्थांकरों की पूर्वोक्त कीर्ति से यह स्पष्ट होता है कि समाज के लोग उन्हें पर्याप्त सम्मान देते थे। अब यह देखना है कि उक्त तीर्थांकरों का आचारविचार क्या था ? जिसके कारण उन्हें समाज के लोग सम्मान देते थे। उनमें से कुछ तीर्थांकरों के विषय में सुमंगलविलासिनी ग्रन्थ में महत्वपूर्ण सूचनायें उपलब्ध होती हैं जो इस प्रकार हैं—

पूरण कस्सप (पूर्ण कश्यप)

यह एक कुल में दासपुत्र के रूप में उत्पन्न हुआ था। इससे पूर्व उस कुल में 99 दास थे और इसके उत्पन्न होते ही कुल के दासों की संख्या 100 हो गयी थी। अतः 100 संख्या के पूर्ण होने के कारण इसका नाम पूरण रखा गया। कस्यप इसके गोत्र का नाम था। अपने को दासता से मुक्त करने के लिए यह उस कुल से भाग गया। रास्ते में चोरों ने इसके कपड़े छीन लिए थे जिससे वह नग्न हो गया था। चूँकि वह तृणों या पत्तों से अपने शरीर को ढँकना नहीं जानता था, अतः उसने नग्नवेश में ही एक

1. अयं, देव, पूरणो कस्सपो.... मक्खलि गोसालो....अजितो कोसकम्बलो....पकुधो कच्चायनो....संजयो वेलट्ठपुत्तो.....निगण्ठो नाटपुत्तो संघी चेव गणी च गणाचरियो च, जातो यसस्सी, तित्थकरो, साधुसम्मतो बहुजनस्स, रत्तञ्ञू, चिरपब्बजितो, अद्धगतो, वयो अनुपत्तो। (दी०नि० खण्ड 1, पृ० 41-42)

ग्राम में प्रवेश किया । उसके नग्न वेश को देखकर ग्रामवासियों ने उसे सन्तोषी अर्हत् समझा और उसका भोजन आदि के द्वारा सत्कार-सम्मान किया। पूर्ण कश्यप ने भी अपने सत्कार-सम्मान में नग्न रूप को ही प्रधान कारण जानकर भविष्य में भी नग्न ही रहने का संकल्प कर लिया। अपनी नग्नता के विषय में पूछे जाने पर वह कहता था कि जो पापी होता है वह लज्जावश कपड़े धारण करता है । चूँकि मैं पाप रहित हूँ, अतः मुझे लज्जा नहीं है और न ही कपड़े धारण करने की आवश्यकता है । उसके बाद उसने प्रव्रज्या ग्रहण की तत्पश्चात् उसको आचार्य मानकर उससे पाँच सौ लोगों ने प्रव्रज्या ग्रहण की[1] ।

मक्खलि गोसाल

इनकी माता एक कुल में दासी थी । अपनी स्वामी से कुपित हो जाने पर वह एक गोशाला में रहने लगी थीं । वहीं जन्म होने के कारण इन्हं गोसाल कहा जाने लगा । जब गोसाल बड़ा हुआ तो उसके स्वामी ने कीचड़-युक्त जमीन पर तेल का घट देकर गिराना मत (माखलि) का निर्देश दिया। तत्पश्चात् स्वामी के भय से वह भागा । स्वामी ने भी उसका पीछा किया और उसके कपड़े पकड़ में आ गये । गोसाल कपड़ों को छोड़कर नग्नावस्था में ही भाग गया किसी ग्राम में पहुँचने पर लोगों ने उसे सन्तोषी अर्हत् समझकर पूर्ण कश्यप जैसा ही सत्कार किया[2] ।

मक्खलि गोसाल आजीवक सम्प्रदाय के संस्थापक थे । जेतवन के पीछे आजीविकों का एक स्थान था । वे पंचाग्नि तापते थे, उकड़ूँ बैठते थे और चमगादड़ की भाँति हवा में झूलते थे । पालि-त्रिपिटक में इनके आचार को

1. तत्थ पूरणोति तस्स सत्थुपटिञ्ञस्स नामं । कस्सपोति गोत्तं । सो फिर अञ्ञतरस्स कुलस्स एकूनदाससतं पूरयमानो जातो तेनस्स पूरणो ति नामं अंकुंस ।..... सो किमहं एत्थ वसामी ति पलायि । अथस्स चोरा वत्थानि अच्छिन्दिसु । सो...... जातरूपेनेव एकं गामं पाविसि । मनुस्सा तं दिस्वा अयं समणो अरहा अप्पिच्छो, नत्थि इमिना सदिसो ति पूवभत्तादीनि गहेत्वा उपसंकमन्ति । सो मयूहं साटकं अनिवत्थभावेन इदं उप्पन्नं ति ततो पट्ठाया साटकं लभित्वा पि न निवासेसि । .....तस्य सन्तिके अञ्ञेपि पंचसातमनुस्सा पब्बजिंसु । (सुमंगल० खण्ड 1, पृ० 162-63)
2. एत्थ पन मक्खनी ति तस्स नामं । गोसालाय जातत्ता गोसालो ति दुतियं नामं । ....सो पमादेन खलित्वा पतित्वा सामिकस्स भयेन पलायित्तुं आर द्धो । .....सो साटकं छड्डेत्वा अचेलको हुत्वा पलायि । सेसे पूरणसदिसमेव । (वही, पृ० 164)

मुक्ताचार कहा गया है[1] । एक जगह उन्हें उस माता का पुत्र बताया गया है जिसके पुत्र मर जाते है[2] ।

अजित केसकम्बल

इसका नाम अजीत था । चूँकि ये केशों का कम्बल धारण करते थे अत: इन्हें केशकम्बल कहा जाता था । उनका कम्बल किसी पशुविशेष के केशों से निर्मित न होकर मनुष्यों के केशों से बना होता था जो कि अत्यन्त निकृष्ट माना जाता था[3] । इसके अनेक कारण थे, जैसे—मनुष्यों के केशों से निर्मित कम्बल जाड़े में शीत, गर्मी में गर्म, देखने में खराब तथा दुर्गन्ध से युक्त होता था[4] । चूँकि वे पूर्वोक्त कम्बल को धारण कर कठिन तपस्या करते थे, अत: ये समाज में अपनी अलग पहचान बनाये हुए थे ।

पकुध कच्चायन

इनका नाम पकुध था तथा गोत्र कच्चायन, अत: इन्हें पकुध कच्चायन कहते थे । पकुध नामकरण के पीछे भी एक घटना जुड़ी हुई है । ये दरिद्र कुल की एक विधवा की कोख से उत्पन्न हुए थे । चूँकि उस विधवा ने ककुध वृक्ष के नीचे इन्हें जन्म दिया था, अत: ककुध वृक्ष की शाखा के रूप में इनका नाम पकुध पड़ गया था । एक ब्राह्मण ने अपने घर मे लाकर इनका पालन-पोषण किया । किन्तु जब ब्राह्मण मर गया तो इन्होंने अपने को असहाय समझकर प्रव्रज्या ग्रहण कर ली थी[5] । इनकी तपस्या की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि ये शीतल जल का सेवन नहीं करते थे । यहाँ

---

1. म०नि० खण्ड 1, पृ० 109-110 तथा बौद्ध धर्म-दर्शन (आचार्य नरेन्द्र देव) (पृ० 4)
2. पुत्तमताय पुत्ता । (म०नि० खण्ड 2, पृ० 223)
3. अजितो ति तस्स नामं । केसकम्बलं धारेती ति केसकम्बलो । तत्व केसकम्बलं नाम मनुस्सकेसेहि कतकम्बलो । (सुमंगल० खण्ड 1, पृ० 164)
4. ....यानि कानिचि तन्ताबुतानं बत्थानं, केसकम्बलो तेसं पटिकिट्ठो अक्खायति । केसकम्बलो, भिक्खवे, सीते सीतो....दुक्खसम्फस्सो ।
(अ०नि० खण्ड 1, पृ० 264)
5. पकुधो ति तस्स नामं । कच्चायनो ति गोत्तं सीनुदकपटिक्खित्तको एस । वच्चं कत्वा पि उदककिच्चं न करोति.....नदिं वा मग्गोदकं वा अतिक्कम्म सीलं में भिन्न ति वालिकथूपं कत्वा सीलं अधिट्ठाय गच्छति । (सुमंगल० खण्ड 1, पृ० 164)

तक कि शौचादि में भी उष्ण जल का ही सेवन करते थे । नदी-नाला पार करते समय ये पानी के ऊपर बालू का रास्ता बनाकर उस पर से पार करते थे । ऐसा करते समय वे यह मानते थे कि उन्होंने शील का पालन किया है ।

संजय बेलट्ठपुत्त

संजय इनका नाम था तथा बेलट्ठ नामक दास का पुत्र होने के कारण इन्हें बेलट्ठपुत्त कहा जाता था । इनका संजय नाम इसलिए पड़ा क्योंकि इनके मस्तिष्क पर संज के समान आकार विशेष था[1] ।

निगण्ठ नाथपुत्त

इनके जीवन के विषय में सुमंगलविलासिनी ग्रन्थ में विशेष कुछ नहीं मिलता है । वहाँ केवल इतना ही कहा गया है कि चूँकि ये यह कहते थे कि हमारे अन्दर क्लेश रूपी गाँठ नहीं हैं, अतः इन्हें निगण्ठ कहा जाता था । ये नाट (ज्ञातृ) पुत्र थे, अतः इन्हें नाथपुत्त कहा जाता था[2] ।

यहाँ यह बता देना आवश्यक है कि निगण्ठ नाथपुत्त जैनियों के अन्तिम तीर्थंकर भगवानृ महावीर का ही नाम है तथा जैनागमों में उनके विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है । चूँकि पालि-त्रिपिटक में निगण्ठ नाथपुत्त के उल्लेख अनेक स्थलों पर आये हैं[3] । अतः यहाँ जैन ग्रन्थों के आधार पर उनके जीवनचरित का संक्षिप्त विवरण देना समुचित प्रतीत होता है ।

जैनागमों पर आधारित ग्रन्थों से ज्ञात होता है कि भगवानृ महावीर का जन्म वैशाली के उत्तर में स्थित कुण्डपुर में हुआ था । उनके पिता सिद्धार्थ कुण्डपुर के राजा थे और उनकी माता विशाला देवी लिच्छविवंशी राजा चेटक की पुत्री थी[4] । उनका पैतृक गोत्र नाथ, नाट (संस्कृत ज्ञातृ) था । माता-

---

1. वहीं, (पृ० 165 तथा बुद्धिस्टिक स्टडीज, पृ० 83)
2. अम्हाकं गण्ठनकिलेसो पलिबन्दनकिलेसो पलिबन्दनकिलेसो नत्थि, किलेसगण्ठरहिता मयं ति एवंवादिताय लद्धनामवसेन निगण्ठो नाटस्स पुत्तो नाटपुत्तो ।
(सुमंगल खण्ड 1, पृ० 165)
3. (दी०नि० खण्ड 1, पृ० 43,50; म०नि० खण्ड 1, पृ० 248, 308; खण्ड 2, पृ० 43-45, 49,55,67,225,257; खण्ड 3, पृ० 6,37 आदि ।)
4. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान, (पृ० 22)

पिता के स्वर्गवासी हो जाने के बाद उन्होंने घर-बार त्याग दिया । बारह वर्ष की कठिन तपस्या के बाद उन्हें सर्वज्ञता की प्राप्ति हुई । उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम तीस वर्ष सर्वज्ञ के रूप में व्यतीत किये । तत्पश्चात कार्तिक कृष्ण अमावस्या के दिन वे निर्वाण को प्राप्त हुए[1] ।

दीघनिकाय के सामज्जफलसुत्त से विदित होता है कि वे चातुर्याम संवर के उपदेशक थे । ये चार संवर इस प्रकार हैं—जल के व्यवहार का वारण करना सभी पापों का वारण करना, सभी पापों के वारण से धुतपाप होना तथा सभी पापों के वारण में लगा रहना[2] । जैन ग्रन्थों से विदित होता है कि भगवान महावीर के दो सौ पचास वर्ष पूर्व भगवानृ पार्श्वनाथ हुए थे । इन्होंने ही चातुर्याम धर्म का उपदेश दिया था । ये चातुर्याम (प्राकृत में चाउज्जाम) है—सर्व प्राणातिक्रम से विरमण, सर्व मृषावाद से विरमण, सर्व अदत्तादान से विरमण तथा सर्व बहिस्थादान से विरमण । भगवान् पार्श्वनाथ द्वारा उपदिष्ट उक्त चातुर्याम धर्म भगवान महावीर के समय में भी प्रचलित था तथा भगवान् महावीर के माता-पिता उस चातुर्याम धर्म के अनुयायी थे। भगवान् महावीर ने चातुर्याम धर्म में ब्रह्मचर्य नामक एक व्रत और जोड़कर पाँच व्रतों का उपदेश दिया था[3] ।

उत्तराध्ययनसूत्र से यह स्पष्ट होता है कि पार्श्वनाथ और महावीर के बीच दो प्रकार के मतभेद प्रमुख थे—प्रथम का सम्बन्ध व्रतों से था और दूसरे का वस्त्रों से । पार्श्वनाथ ने चार व्रतों का उपदेश दिया था जबकि महावीर ने पाँच व्रतों का[4] । पार्श्वनाथ ने साधुओं को वस्त्र धारण करने की अनुमति दी थी जबकि महावीर ने वस्त्र धारण का निषेध किया[5] । महाकारुणिक बुद्ध के समय दोनों ही महापुरुषों के द्वारा उपदिष्ट धर्म का प्रचलन था ।

---

1. (क) जैन धर्म-दर्शन (पृ० 12-14)
   (ख) निगण्ठोनाटपुत्तो सब्बञ्ञूसब्बदस्सावी । (म०नि० खण्ड 3, पृ० 16)
2. इध, महाराज, निगण्ठो चातुर्यामसंवरसंवुतो होति..... सब्बवारि-वारितो च होति सब्बवारियुतो च सब्बवारिधुतो च सब्बवारिफुटो च । (दी०नि० खण्ड 1, पृ० 50)
3. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान (पृ० 21-22)
4. चाउज्जामो ये जो धम्मो जो इमो पंचसिक्खिओ ।
   देसिओ वद्धमाणेणं पासेण य महामुणी ।। (उत्तरा० 23.12)
5. अचेलगो ये जो धम्मो जो इमो संतरूत्तरो ।
   एककज्जपवन्नाणं विसेस किन्नुकारणं ।। (वही, 23,13)

इस प्रसंग में यह कहना अनुचित न होगा कि दीघनिकाय में निगण्ठ नाथपुत्त के जिस चातुर्याम संवर का उल्लेख मिलता है, उसका सम्बन्ध भगवान् महावीर के धर्म से न होकर पार्श्वनाथ की परम्परा से होना चाहिए। इसके साथ ही चातुर्याम संवर में जिन चार संवरों का उल्लेख मिलता है, उसका सम्बन्ध भगवान् महावीर के धर्म से न होकर पार्श्वनाथ की परम्परा से होना चाहिए । इसके साथ ही चातुर्याम संवर में जिन चार संवरों का उल्लेख मिलता है, उसका सम्बन्ध भगवान् महावीर के धर्म से न होकर पार्श्वनाथ की परम्परा से होना चाहिए । इसके साथ ही चातुर्याम संवर में जिन चार संवरों का उल्लेख दीघनिकाय में है, वह निश्चित रूप में जैनागमों में मेल नहीं खाता है । यहाँ जैनागमों में वर्णित चातुर्याम को ही प्रामाणिक मानना चाहिए । इसी प्रकार बौद्ध धर्म में जो संघ सम्बन्धी उपोसथ, वर्षावास आदि की व्यवस्थाएँ स्वीकार की गई हैं, वे सभी पार्श्वनाथ की परम्परा में भी विहित थीं[1] ।

जैन-परम्परा में मुनियों के लिए अट्ठाईस मूल गुणों का विधान किया गया है । इनमें पाँच महाव्रत, पाँच समिति, पाँच इन्द्रियों को वश में रखना, छः आवश्यक क्रियाएँ तथा सात प्रकार की विशिष्ट साधनाएँ समाविष्ट हैं । सात प्रकार की विशिष्ट साधनाएँ इस प्रकार हैं—समय-समय पर अपने हाथों के केशलौंच करना, नग्न रहना, स्नान न करना, खड़े रहकर आहार ग्रहण करना तथा दोपहर तक एक बार भोजन करना[2] । मज्झिमनिकाय से इस बात की पुष्टि होती है कि बुद्ध के समय कठिन तपस्या में उक्त सात प्रकार की साधनाओं का भी प्रचलन था[3] । मज्झिमनिकाय के ही देवतहसुत्त से यह भी ज्ञात होता है कि उस समय निगण्ठ अपने पूर्वकृत कर्मों के क्षय के लिए इन कठोर तपश्चर्याओं को करते थे[4] । इस प्रकार की कठिन तपस्याओं का प्रभाव जन-सामान्य पर बहुत अधिक पड़ता था क्योंकि जन सामान्य कठिन से कठिन तपस्या करने वाले को अधिक से अधिक सम्मान देता था ।

1. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान, (पृ० 22)
2. वही, (पृ० 266)
3. म०नि० खण्ड 1, पृ० 107-110
4. पुराणानं कम्मानं तपसा व्यन्तीभावा, नवानं, कम्मानं अकरणा....

(म०नि० खण्ड 3, पृ० 4)

तीर्थंकरों की दार्शनिक विचार-धारा

यहाँ पर उक्त छः तीर्थंकरो की विचारधारों को प्रस्तुत करना समुचित प्रतीत होता है । कारण, उससे तत्कालीन योग-साधना का स्वरूप स्पष्ट होगा।

पूरण कस्सप अक्रियावाद के प्रचारक थे । उनके मतानुसार संसार में न तो पाप है और न ही पुण्य । मनुष्य यदि हिंसा, असत्य-भाषण, चोरी, परस्त्री गमन आदि कर्म करे अथवा करवाये तो भी उसे उन कार्यों से पाप नहीं होता है और यदि मनुष्य दान, दम, संयम आदि गुणों से युक्त हो तथा बोले तो भी उसे पुण्य का लाभ नहीं होता है[1] ।

मक्खलि गोसाल नियतिवाद का प्रचारक था। उसके मतानुसार प्राणियों के सांसारिक दुःखों का कोई कारण नहीं होता है और न ही सांसारिक दुःखों से मुक्ति का कोई कारण होता है । प्राणी का संसार में परिभ्रमण एवं विशुद्धि दोनों ही अकारण होती है । चाहे मूर्ख हो या पण्डित सभी प्राणी चौरासी हजार महाकल्प व्यतीत कर दुःख का अन्त करेंगे[2] । गोसाल कैसे नियतिवाद का घोर समर्थक बन गया ? इस विषय में भगवती सूत्र नामक जैनागम में कथा आयी है । उसके अनुसार एक बार गोसाल ने एक तिल के पौधे को देखकर भगवान् महावीर से पूछा कि भगवन् ! यह तिल का पौधा फलेगा या नहीं और ये सात तिलपुष्प के जीव मरकर कहाँ उत्पन्न होंगे ? भगवान् महावीर ने कहा कि यह तिल का पौधा फलेगा और ये सात तिलपुष्प के जीव मरकर इसी तिल के पौधे की एक फली में सात तिलों के रूप में होंगे, महावीर को झूठा सिद्ध करने के लिये यद्यपि गोसाल ने उस तिल के पौधे को उखाड़कर फेंक दिया किन्तु वर्षा में वह तिल का पौधा जम

---

1. एवं वुत्ते, भन्ते पूरणो कस्सपो मं एतदवोच—करोतो खो.....पाणमतिपातापयतो अदिन्नं आदियतो परदारं गच्छतो मुसा भणतो करोतो न रीयति पापं ।.....उत्तरं चो पि गंगाय तीरं गच्छेय्य ददन्तो दापेन्तो यजन्तो यजापेन्तो, नत्थि ततोनिदानं पुञ्ञं....
(दी०नि० खण्ड 1, पृ० 46)
2. नत्थि, महाराज, हेतु, नत्थि पच्चययो सन्तानं संकिलेसाय....नत्थि हेतु, नत्थि पच्चयो सन्तानं विसुद्धया ।....चुल्लासीति महाकप्पिनो सतसनस्सानि यानि बाले च पण्डिते च सन्धावित्वां मंसरित्वा दुक्खस्सन्तं करस्सन्ति । (वही, पृ० 46-47)
3. जैन धर्म-दर्शन (पृ० 33-34)

गया और एक फली में सात तिल हुए । यह देखकर गोसाल नियतिवाद का घोर समर्थक बन गया था[1] ।

अजित केसकम्बल अच्छेदवाद का प्रचारक था । उसके मतानुसार दान, यज्ञ, होम आदि नहीं है । दान आदि पुण्य कर्मों का न तो अच्छा फल है और न ही हिंसा आदि पाप कर्मों का बुरा फल । मनुष्य चार महाभूतों से बना है । जब मनुष्य मरता है तो पृथ्वी, जल, तेज तथा वायु अपने-अपने महाभूतों में विलीन हो जाते हैं और इन्द्रियाँ आकाश में लीन हो जाती हैं । मूर्ख और पण्डित दोनों ही मरने के बाद किसी भी रूप में नहीं रहते है[1] ।

पकुध कच्चायन अकृततावाद का प्रचारक था । उसके मतानुसार जगत् में सात पदार्थों की सत्ता है पृथ्वी, जल, तेज, वायु, सुख, दु:ख और जीव। ये सभी तत्व किसी भी तरह विकार को प्राप्त नहीं होते हैं । यहाँ न कोई मरने वाला है, न हनन करने वाला । अत: शास्त्र से मारने पर भी हिंसा इसलिए नहीं होती है क्योंकि वह शस्त्र सात तत्वों पर न गिरकर खाली जगह पर गिरता है[2] ।

संजय बेलट्ठपुत्त अनिश्चयवाद का प्रचारक था । उसके मतानुसार परलोक, देवता, अच्छे या बुरे कर्म का फल आदि के विषय में निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता है क्योंकि परलोक आदि है या नहीं है—इस विषय में वह निश्चित रूप से नहीं जानता है[3] ।

निगण्ठ नाथपुत्त के चातुर्याम संवर के विषय में पालि-त्रिपिटक में जो वर्णन मिलता है, वह जैनागमों से मेल नहीं खाता है, अत: उसके विषय में यहाँ विवेचन नहीं किया जा रहा है । चातुर्याम संवर के विषय में इससे पूर्व कहा भी जा चुका है ।

---

1. नत्थि, महाराज, दिन्नं, नत्थि यिट्ठं, नत्थि हुतं, नत्थि सुकतदुक्कटानं कम्मानं फलं विपाको तेसं तुच्छं मुसा विलापो ये केचि अत्थिकवादं वदन्ति । वाले च पण्डिते च पण्डिते च कायस्य भेदा उच्छिज्जन्ति विनस्सन्ति, न होन्ति परं मरणा ति ।
(दी०नि० खण्ड 1, पृ० 48)
2. सत्तिमे, महाराज, काया अकटा अकटविद्या—तत्थ नत्थि हन्ता वा घातेता....। यो पि तिण्हेन सत्थेन सीसं छिन्दति, न कोचि किंचि जीविता वोरोपेति, सत्तन्नं त्वेव कायानमन्तरेन सत्थं विवरमनुपतती ति । (वही, पृ० 49)
3. अत्थि परो लोको ति इति ये मं पुच्छसि, अत्थि परो लोको ति इति च मे अस्स.... इति ते नं व्याकरेय्यं । एवं ति पि मे नो, तथा ति पि में नो अञ्ञथा ति पि में नो, नो ति पि नो, नो नो ति पि मे नो । (वही, पृ० 51)

समीक्षा

उपर्युक्त तीर्थंकरों के मतों को सरसरी दृष्टि से देखने पर यही प्रतीत होता है कि ये मत समाज को किसी निश्चित मार्ग का प्रदर्शन नहीं करते थे । इसके साथ ही इन मतवादों से समाज में अराजकता कि स्थिति को बढ़ावा मिल सकता था, क्योंकि इन मतवादों में न तो अच्छे कार्यों को करने के लिये प्रेरणा दी गयी है और न ही बुरे कार्यों को छोड़ने के लिये किसी तरह का कोई उपदेश ही है । अत: जनसामान्य के मन में अगर यह जिज्ञासा हो कि ऐसे मतवादों के प्रचारकों के लिये समाज में सम्मान क्यों दिया जाता था ? तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है । इस इस जिज्ञासा को शान्त करने के लिये इन मतवादों का सूक्ष्मता से परीक्षण करना होगा ।

इन तीर्थंकरों के मतवादों में किसी सिद्धान्त-विशेष के विधान को अपेक्षा कुछ बातों का निषेध परिलक्षित होता है । अत: यह कहना अनुचित न होगा कि समाज में इन मतवादों के प्रचारकों का इसलिए सम्मान था क्योंकि उन्होंने धर्म के नाम पर चल रहे पाखण्डों का विरोध किया था । दूसरे शब्दों में समाज में धर्म के नाम पर कुछ ऐसी बातें प्रचलित थीं जिन्हें जन-सामान्य नहीं चाहता था । उनमें कुछ इस प्रकार हैं—

(क) आहार शुद्धि

उस समय कुछ तपस्वी आहार से शुद्धि पर विश्वास करते थे । उनकी धारणा थी कि कम से कम आहार लेने से सांसारिक भोगों में आसक्ति रूपी दूषित प्रवृत्ति समाप्त हो जाती है और व्यक्ति अपने को पाप कर्म से शुद्ध कर लेता है[1] ।

(ख) उदक-शुद्धि

कुछ तपस्वी यह मानते कि गंगा, यमुना आदि पवित्र नदियों में स्नान करने से पाप धुल जाते हैं । फलत: पवित्र नदियों में तथा जलाशयों में स्नान कर अपने को शुद्ध बनाने की भी प्रवृत्ति देखी जाती थी[2] ।

---

1. सन्ति खो पन, सारिपुत्त, एके समणब्राह्मणा एवंवादिनो एवंदिट्ठिनो आहारेन सुद्धीति । (म०नि० खण्ड 1,पृ० 112)
2. लोकसम्मता हि, भो गोतम, बाहुका नदी बहुजनस्य, पुञ्ञसम्मता हि, भो गोतम, बाहुका नदी बहुजनस्स । बाहुकाय च पन नदिया बहुजनो पापकम्पं कतं पवाहेती ति । (वही, पृ० 52)

(ग) यज्ञ-हवन

उस समय यज्ञ तथा हवन का भी प्रचलन था । तपस्वियों की मान्यता थी कि अग्नि-परिचर्या अथवा विभिन्न प्रकार के यज्ञ करने से पुण्य का संचय होता है[1] ।

(घ) ब्रह्म-सलोकता

बुद्धकालीन भारत में ब्राह्मणों के मन में यह विश्वास था कि ऐतरेय ब्राह्मण, तैत्तिरीय ब्राह्मण आदि ब्राह्मण-ग्रन्थों में ब्रह्मा की सलोकता को पहुँचाने वाला मार्ग है । अत: मार्ग पर चलकर ब्रह्मा के साथ निवास करने की क्षमता को प्राप्त किया जा सकता है[2] ।

(ङ) आत्मा एवं लोक सम्बन्धी विभिन्न मत

महाकारुणिक बुद्ध का समय आत्मा एवं लोक सम्बन्धी विभिन्न मान्यताओं का समय था । इनके सम्बन्ध में विचारों की बाढ़ सी आ गयी थी । दीघ-निकाय में उल्लिखित बासठ मिथ्या दृष्टियाँ इस बात की पुष्टि के लिये पर्याप्त हैं कि उस समय मनुष्य जन्म से पहले तथा मरने के बाद की स्थिति को जानने के लिये आतुर था । जन्म से पूर्व की स्थिति से सम्बन्धित 18 तथा मरण के उपरान्त की स्थिति से सम्बन्धित 44 मतों से यह स्पष्ट होता है कि उस समय के धार्मिक एवं बुद्धिजीवी मनुष्य अपने-अपने नवीन वादों का प्रचार कर रहे थे[3] । जब कि जन-सामान्य अपने को इस भूल-भूलैया से निकालने के लिये उत्सुक था ।

पूरण कस्सप आदि तीर्थंकरों ने जन-सामान्य को इन्हीं उलझनों से उबारने का प्रयास किया था । पूरण कस्सप ने अक्रियावाद का प्रचार कर आहार-शुद्धि, उदक-शुद्धि तथा यज्ञ हवन आदि उन प्रवृत्तियों का विरोध किया जो धर्म के नाम पर चल रही थीं । मक्खलि गोसाल ने नियतिवाद

---

1. दी० नि०, खण्ड 1, पृ० 109; (म०नि० खण्ड 1, पृ० 114)
2. अद्यमेव उजुगम्मो अयम जसायनो, निय्यानिको, निय्याति तक्करस्स ब्रहमस हव्यताय···· (दी०नि०, खण्ड 1, पृ० 199)
3. ये हि केचि, भिक्खवे, समणा वा ब्राह्मणा वा पुब्बन्तकप्पिकावा अपरन्तकप्पिका वा·····ते इमेहेव द्वासट्ठिया वत्थूहि अन्तोजालीकता एत्थ सिता वा उम्मुज्जमाना उम्मुज्जन्ति । (वही, पृ० 39)

का प्रचार कर कुछ वर्ग-विशेष के कर्तृत्व के अधिकार को चुनौती दी थी। अजित केसकम्बल ने जन्म से पूर्व एवं मरण के बाद की स्थितियों से सम्बन्धित मतवादों पर करारा प्रहार किया था । पकुध कच्चायन ने भी अक्रियवाद जैसा ही सिद्धान्त बताकर क्रियावाद के सिद्धान्तों का विरोध किया था । संजय बेलट्ठपुत्त ने परलोक सम्बन्धी मान्यता को प्रकारान्तर से अज्ञान से परिपूर्ण सिद्धान्त बताया था ।

इस प्रकार भारतीय योग-साधना में इन तीर्थंकरो का भले ही सकारात्मक योगदान न रहा हो किन्तु नकारात्मक दृष्टिकोण से इन तीर्थंकरों ने जन-सामान्य को अज्ञानपूर्ण धार्मिक क्रियाओं से उबारने के लिये अत्यधिक महत्वपूर्ण कार्य किया था । यही कारण था कि आचार-विचार मे शून्य से प्रतीत होने वाले इन तीर्थंकरों का समाज में सम्मान था और इनके अनुयायियों की संख्या भी बहुत थी ।

तापस-जीवन

बुद्धकालीन तापसों के जीवन को मुख्य रूप से दो प्रकारों से विभक्त किया जा सकता है । प्रथम प्रकार का तापस-जीवन सरल और सादा था। वे तपस्वी समाज पर कम से कम बोझ बनकर सत्य के अन्वेषण में निरत रहते थे । द्वितीय प्रकार के तापस-जीवन में अत्यन्त कठोर तपस्या की जाती थी । प्रथम प्रकार का तापस-जीवन व्यतीत करने वालों के आठ भेद बताये गये हैं जो इस प्रकार है—

1) सपुत्रभार्य, 2) उंछाचारी, 3) अन-अग्नि-पक्किक, 4) अस्वयंपाकी, 5) अश्ममुष्टिक, 6) दन्त बल्-कलिक 7) प्रवृत्तफलभोजी तथा 8) पाण्डुपलाशिक[2] । इनमें से जो केणिय जटिल की भाँति कुटुम्ब सहित वास करते थे, उन्हें सपुत्रभार्य कहा जाता था । जो कटाई, दँवाई आदि स्थलों पर जाकर विभिन्न अन्नों को इकट्ठाकर पकाकर खाते थे वे उंछाचारी कहलाते थे । जो गाँव-कस्बों से चावल की भिक्षा लेकर पकाकर खाते थे, वे अनग्निपक्कि कहे जाते थे । जो गाँव में जाकर पकी भिक्षा को ग्रहण करते थे, उन्हें अस्वयंपाकी कहते थे । जो पत्थर से अम्बाटक आदि वृक्षों के चमड़े उचाड़कर खाते थे, उन्हें अश्म-मुष्टिक कहते थे । जो दाँत से ही (छाल आदि) उचाड़कर खाते थे । वे दन्तबल्कलिक कहलाते थे । जो

1. सुमंगल० (खण्ड 1, पृ० 237)

पत्थर, डण्डे आदि के द्वारा फलों को गिराकर खाते थे । वे प्रवृत्तफलभोगी कहलाते थे तथा जो स्वयं गिरे फल-फूल-पत्ते खाकर जीवन-यापन करते थे। उन्हें पाण्डुपलाशिक कहा जाता था[1] । अन्तिम कोटि के तापसों को भी तीन विभागों में विभक्त किया जाता था—उत्कृष्ट, मध्यम एवं मृदुक । जो बैठने के स्थान से बिना उठे हाथ पहुँचने भर के स्थान के फल खाते थे । वे उत्कृष्ट कहलाते थे । जो एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष को नहीं जाते थे, उन्हें मध्यम कहा जाता था तथा जो जिस किसी वृक्ष के नीचे जाकर खोजकर फल खाते थे वे मृदुक कहलाते थे[2] । इन आठ प्रकार के तापस-भेदों को देखने से स्पष्ट होता है कि जीवन-यापन के तरीकों के आधार पर तापस विभक्त किये जाते थे । इनके अतिरिक्त ये भेद उत्तरोत्तर कठिन व्रत को व्यक्त करते हैं।

यदि कोई तापस उपर्युक्त प्रकारों से जीवन-यापन करने में असमर्थ रहता था तो वह कन्दमूल फलहारी बनने की इच्छा से कुदाल लेकर कन्दमूल फल खोजकर खाता था[3] । यदि कोई इसे भी पूरा नहीं कर पाता था तो वह अग्निशाला बना अनिग्नपरिचर्या (होम आदि) करता था[4] और यदि इससे भी वह अपना जीवन यापन करने में सफल नहीं हो पाता था तो यह चौरास्ते पर चार द्वारों वाला आगार बनाकर रहता था और विभिन्न दिशाओं से आने वाले श्रमण-ब्राह्मणों का अन्नजल से यथा-योग्य सत्कार करता था । बदले में श्रमण-ब्राह्मण अपने पास से विभिन्न वस्तुएँ प्रदान करते थे[5] ।

तापस-जीवन व्यतीत करने का मुख्य कारण सांसारिक भोगों से विरक्ति ही थी । अतः तापस अपनी इच्छाओं पर विजय के लिये निरन्तर प्रयत्नशील होते थे । वे वस्त्रों में विभिन्न दोषों को देखकर उनके स्थान पर बल्कल को धारण करते थे तथा पर्णकुटी के उपभोग में विभिन्न प्रकार के दोषों को देखकर पर्णकुटी के स्थान पर वृक्ष के नीचे रहना अच्छा समझते थे । तापस

---

1. वही, (पृ० 297-298 तथा बुद्धचर्या, पृ० 201-202)
2. तत्थेयय निसिन्नट्ठानतो अनुट्ठाय····· ते उककट्ठा, ये एकरूक्खतो अञ्ञरूक्खं····· ते मज्झिमा, ये तं तं रूक्खमूलां गन्त्वा······· ते मुदुका ।
   (सुमंगल० खण्ड 1, पृ० 298)
3. ···पवत्तफलभोजनतं च अनभिसम्भुणमानो कुदालपिटकं आदाथ अर वर्न अज्झोगाहति। (दी०नि० खण्ड 1, पृ० 88)
4. गामसामन्तं वा निगमसामन्तं वा अग्यागारं करित्वा अग्गिं परिचरन्तो अच्छति। वहीं,
5. ·····चातुमहापथे चतुद्वारं अगारं कत्वा····· (वहीं, पृ० 89)

यद्यपि सांसारिक भोगविलास की वस्तुओं का परित्याग कर देते थे किन्तु दैनिक उपयोग के लिये कुछ आवश्यक सामान वे अपने साथ रखते थे जिनमें मृगचर्म, झोली, दण्ड, करछुल आदि प्रमुख हैं[1] ।

तापसो के आचार से यह कहा जा सकता है कि इनकी साधना सरल थी और इसे ब्राह्मण-वर्ग के लोग अपनाते थे । सुमेध पण्डित ब्राह्मण था और गृहत्याग कर प्रारम्भ में इसी प्रकार के तापस-जीवन को अपनाया था। जटिल बन्धु अग्नि-परिचर्या में लीन रहते थे । केणिय तो संयत गृहस्थ जीवन-सा व्यतीत करता था[2] । अत: इन सब प्रसंगों से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जो ब्राह्मण सांसारिक भोगों का त्याग कर तापस-जीवन व्यतीत करता था, वह पूर्वोक्त आठ प्रकारों में से किसी एक को अपनाता था।

श्रमणों की तपस्या अपेक्षाकृत कठोर थी । मज्झिमनिकाय में श्रमणों की तपस्या के चार अंगों उल्लेख मिलता है—(1) शरीर को कृश करने वाली कठिन तपस्या, (2) रूक्षाचार, (3) अत्यन्त जुगुप्सु होना तथा (4) एकान्त विहारी होना[3] । जो व्यक्ति शरीर को तरह-तरह के कष्ट देता है, उसका मन राग-द्वेष से दूषित नहीं होता है । जब शरीर हृष्ट-पुष्ट होता है तभी मन चंचल होकर विषयभोग की ओर प्रवृत्त होता है । इसी तथ्य को ध्यान में रखकर ही श्रमण परम्परा के अनुयायी तपश्चरण द्वारा देह को इतना अशक्त बना देते थे कि उनका मन सांसारिक भोगों में आसक्त न हो सके । दूसरे शब्दों में उस समय तपस्या से शरीर को कृश करके मन को नियंत्रित करने में अपार आस्था थी । फलत: तत्कालीन श्रमण कठोर तपस्या किया करते थे[4] । उनमें से अधिकांश नंगे रहते थे और नग्न रूप में समाज में विचरण

---

1. गेहा निक्खमित्वा····· पण्णसालं पविसित्वा साटक-युगं ओभुचित्वा वाकचीरं परिदहित्वा अजिनदी पिचम्मं एकंसं कत्वा जटामण्डलं बन्धित्वा निवंकं खारिकाजं अंसे कत्वा····कत्तरदण्डं गहेत्वा·····तं विक्खम्भेत्वा 'सोमति में पब्बज्जा, छिन्नं में गिहि-बन्धं''·····पण्णसालाय वासो दुतियो घरावासो····ति पण्णसालं पजाहित्वा रूक्खमूलं उपगन्त्वा धञ्ञविकतिं पहाय पवत्तफलभोजनो·····(महाबोधिवंसो, पृ० 3-4)
2. खु०नि० खण्ड 7, पृ० 397; महावग्गो, पृ० 25-27; खु०नि० खण्ड । पृ० 353-356
3. अभिजानामि खो पनाहं, सारिपुत्त, चतुरंगसमन्नागतं ब्रह्मचरियं चरता-तपस्सी सुदं होमि परमतपस्सी, लूखो सुदं होमि परमूलखो, जेगुच्छी सुदं होमि परमजेगुच्छी, पविवित्तो सुदं होमि परम-पविवित्तो । (म०नि० खण्ड 1, पृ० 109)
4. जैन धर्म-दर्शन (पृ० 105-106)

करते समय जरा-सा भी संकोच नहीं करते थे । वे मुक्ताचारी होते थे । कुल-पुत्र लौकिक आचार का पालन करते हुए शौच क्रिया एवं भोजनादि बैठकर ही करते थे । किन्तु कुछ श्रमण तपस्वी खड़े-खड़े ही भोजनादि करते थे। खड़े-खड़े हाथों में भोजन लेकर खाते थे और फिर हाथों को चाट कर साफ कर लेते थे । जब वे भिक्षा के लिये गाँव में जाते थे तो कोई व्यक्ति आइये अथवा ठहरिये कहकर अगर भिक्षा देता था, तो उसे वे ग्रहण नहीं करते थे । इसी प्रकार उनके लिए लायी गयी या उनके उद्देश्य से बनायी गयी भिक्षा को भी तपस्वी स्वीकार नहीं करते थे । वे निमंत्रण भी स्वीकार नहीं करते थे । तपस्वी घड़े या पथरी में से भी भिक्षा नहीं लेते थे । कारण कि उनमें से भिक्षान्न निकालते समय करछुला का प्रहार होता था । वे पटरों, डण्डों, मूसलों या भोजन करने वालों के बीच से दी गई भिक्षा को भी ग्रहण नहीं करते थे । वे गर्भिणी, दूध पिलाती या अन्य पुरुष के पास गई स्त्री से भी भिक्षा नहीं लेते थे । चन्दा करके तैयार भिक्षा भी श्रमणों को निषिद्ध थी । जहाँ कुत्ता खड़ा हो या जहाँ मक्खियाँ भनभना रही हों, वहाँ से भी भिक्षा नहीं ली जाती थी । भिक्षा में मांस सुरा, मेरय (कच्ची शराब) तथा तुषोदक (चावल की शराब) को भी ग्रहण नहीं किया जाता था[1] ।

ग्राह्य भिक्षा मिलने पर भी तपस्वी विभिन्न प्रकार के नियमों का पालन करते हुए भिक्षा ग्रहण करते थे । उदाहरण स्वरूप कोई तपस्वी एक ही घर से मिली भिक्षा लेता था, कोई एक ही घर से पर्याप्त भिक्षा न मिलने पर दो घरो की भिक्षा लेकर अपना काम चला लेता था । कोई-कोई तपस्वी तो सात घरों तक की भिक्षा को ग्रहण कर लेता था । इसी प्रकार कोई तपस्वी भिक्षा में एक ही कवल खाने वाला होता था । कोई दो कवल तो कोई कवलों की निश्चित संख्या का नियम लेकर उतने ही कवलों से अपनी भूख शान्त करता था । कुछ तपस्वी करछुला की संख्या सम्बन्धी नियम को लेकर भिक्षा लेते थे । कोई दिन में एक बार ही भिक्षा ग्रहण करते थे, कोई दो दिन में एक बार तथा कोई-कोई तो पन्द्रह दिन में केवल एक ही बार भिक्षा लेते थे ।

भिक्षा में मिलने वाली भोज्यवस्तु के विषय में भी तरह-तरह के नियम दिखाई देते थे । कुछ तपस्वी शाकाहारी थे, कुछ सांवा-भोजी थे, कुछ केवल तिन्नी ही भिक्षा में लेते थे । इसी प्रकार कोदो, वट (एक प्रकार का तृण)

1. म०नि० खण्ड 1 (पृ० 109-111)

खेत में छूटे अनाज के दानों, माँड़ खली, तृण, गोबर, वनमूल फलाहार से ही गुजारा करते थे । कुछ स्वयं गिरे फलों का ही सेवन करते थे ।

कुछ तपस्वी नग्न रहते थे, तो कुछ विभिन्न वस्त्रों में से किसी एक को धारण करते थे । इन वस्त्रों में सन के वस्त्र, श्मशान वस्त्र, शव-वस्त्र अथवा फेंके गये वस्त्र प्रमुख थे । कुछ तिरीट नामक छाल का वस्त्र के रूप में उपयोग करते थे । कुछ तपस्वी मृगचर्म, मृगचर्मखण्ड, कुशचीर या बल्कलचीर को धारण करते थे । कुछ विभिन्न कम्बलों को धारण करते थे। उनमें मनुष्यों के केशों से बने कम्बल अथवा उलूक-पक्ष से निर्मित कम्बल भी आते थे । कुद तपस्वी अपने केश-दाढ़ी अपने हाथों से नोचते थे ।

कुछ तपस्वी उकड़ूँ ही बैठे रहते थे, कुछ काँटे पर सोते थे तो कुछ रात्रि में जल में डूबे रहते थे ।

इस प्रकार बुद्ध के समय तपस्वी शरीर को कष्टप्रद विभिन्न प्रकार के आहार, वस्त्र एवं आवास सम्बन्धी क्रियाओं को करते थे । ऐसा करते समय उनका लक्ष्य यही रहता था कि उनका मन सांसारिक भोग-विलास की ओर न जाकर सत्य की प्राप्ति के लिये उद्यत हो ।

कुछ तपस्वी स्नान से भी विरक्त रहते थे । फलस्वरूप उनके तन पर मैल की पपड़ी पड़ जाती थी । फिर भी तपस्वी अपने मन में एक बार भी ऐसा विचार नहीं लाता था कि मैं इस मैल को साफ कर लूँ । यही तत्कालीन साधकों का रूक्षाचार था जिसे वे निर्विकार भाव से सहन करते थे ।

तपस्वी जुगुप्सा को धारण करता था । यहाँ जुगुप्सा का अर्थ प्राणियों की हिंसा से घृणा करने से है । तपस्वी मानता था कि सभी स्थल प्राणिमय है । अत: वह सदैव इस बात का ध्यान रखता था कि उससे किसी प्रकार के जीव-जन्तु का वध न हो जाय ।

भिक्षा खा लेने के बाद तपस्वी एकान्त प्राप्ति के लिए अरण्य में प्रवेश कर विरहते थे । यदि कदाचित् वहाँ उन्हें ग्वाले, घसियारे, लकड़हारे या वन में काम करने वाला कोई व्यक्ति दिखाई देता था तो वे उससे बात न कर गहन से गहन स्थल को चले जाते थे । कारण तपस्वी सतत् यही प्रयत्न करता था कि जिस स्थान पर वे साधन करें वह निर्जन हो । अत: वन में भी मनुष्य को देखकर वे उसी प्रकार अदृश्य होने का प्रयत्न करते थे

जिस प्रकार मृग मनुष्य को देखकर जंगल में और अन्दर जाकर अदृश्य होने का प्रयास करता है1 ।

इसके अतिरिक्त कुछ तपस्वी पशुओं के समान खाने-पीने का व्रत धारण करते थे । लोकियपुत्र पूर्ण गोव्रतिक था । इसी प्रकार अचेल सेनिय कुक्कुर व्रतिक था । गोव्रतिक पूर्ण गाय के समान ही खड़े-खड़े बिना किसी संकोच के खाता पीता था और शौचादि क्रियायें भी खड़े-खड़े ही करता था । दूसरी ओर अचेल सेनिय कुत्तों की भाँति खाने-पीने आदि की क्रियायें करता था। एक बार ये दोनों ही महाकारुणिक तथागत रुणिक बुद्ध के पास गये और गोव्रतिक पूर्ण ने अचेल सेनिय के अखण्ड कुक्कुरशील की भावना को बताकर भगवान् से उसके जन्मान्तर में होने वाले फल को पूछा । जब सेनिय को कुक्कुरव्रत की निरर्थकता के विषय में ज्ञान हुआ तो वह फूट-फूट कर रो पड़ा । यही स्थिति गोव्रतिक पूर्ण की भी हुई[2] । इससे यह स्पष्ट होता है कि जन्मान्तर में अच्छे फल की आशा से कुछ तपस्वी निरर्थक व्रतों का भी पालन करते थे ।

इस प्रकार की विभिन्न तपश्चर्याओं से तपस्वी सांसारिक भोग-विलास में अनासक्ति, दिव्यशक्ति की उपलब्धि एवं जन्मांतर में स्वर्ग प्राप्ति की कामना करते थे । तपस्वी कठोर तपस्या से ज्ञान-दर्शन की पराकाष्ठा को भी प्राप्त करना चाहते थे । चूँकि आत्मा और लोक के विषय में तरह-तरह के मतों की बाढ़-सी आ गई थी । अत: तपस्वी तपस्या के बल पर ज्ञान एवं दर्शन की पराकाष्ठा को प्राप्त करना चाहता था ।

पूर्वोक्त दो प्रकार की तपश्चर्याओं के अतिरिक्त कुछ ऐसे व्यक्ति भी थे जो सत्य की खोज के लिए परिभ्रमण किया करते थे । ऐसे लोगों को परिव्राजक की संज्ञा दी जाती थी । इन लोगों के ठहरने के स्थानों को परिव्रजाकाराम कहा जाता था[3] । परिव्राजकों में लोक एवं आत्मा के विषय

---

1. वहीं ।
2. अथ खो पुण्णों च कोलियपुत्तो गोवतिकी अचेलो च सोनियो कुक्कुरवतिको येन भगवा तेनुपसंकमिसु । ·····कुक्कुरवतं दीघरत्तं समादिन्नं ·····तस्स का गति, को अभिसम्प-रायो ति ? ····अयं, पुण्णों कोलियुपत्तो गोवतिको । तस्स तं गोवतं दीघरत्तं समादिन्नं तस्स का गति को अभि-सम्परायो ति ? (म०नि० खण्ड 2, पृ० 61-62)
3. ·····परिव्वाजको·····परिव्वाजकारामे पटिवसति । (वही, पृ० 173-255)

में सत्य जानने की इच्छा तो होती थी[1] किन्तु निश्चित उद्देश्य एवं सुसंगठित संघ के अभाव में परिव्राजक आपस में कभी-कभी ऐसी बातों में भी समय व्यतीत करते थे जिन बातों से संसार के दु:खों से मुक्ति प्राप्त नहीं की जा सकती थी। अतएव ऐसी चर्चाओं को निरर्थक कथा की संज्ञा दी जाती थी। ऐसी चर्चाओं में राजकथा, चोरकथा, महामात्य कथा, सेनाकथा, भयकथ, युद्धकथा, अन्नकथा, पानकथा, वस्त्रकथा, शयनकथा, गंधकथा, मालाकथा, ज्ञातिकथा, यानकथा, ग्रामकथा, निगमकथा, नगरकथा, जनपदकथा, स्त्रीकथा, शूरकथा, विशिखाकथा, कुम्भ स्थान कथा, पूर्वप्रेतकथा, नानात्वकथा, लोक आख्यायिका, समुद्र आख्यायिका इति भवाभवकथा प्रमुख थीं[2] ।

चूँकि परिव्राजकों के कठोर विनय सम्बन्धी नियम नहीं थे । अत: परिभ्रमण के असवर पर यदि कहीं किसी कन्या के साथ विवाह का प्रस्ताव आता था तो ये उसे स्वीकार भी कर लेते थे[3] । यह बात दूसरी है कि ऐसे परिव्राजक विवाह के बाद पत्नी के प्रभुत्व में रहते थे। ऐसे ही परिव्राजकों के कारण यह धारणा भी बन गयी थी कि कुछ लोग स्त्री-सम्पर्क को दोषास्पद नहीं मानते थे[4] । स्त्री सम्पर्क की बात को परिव्राजकों के साथ इसलिए जोड़ा जाता था क्योंकि परिव्रजाकों को संघ से निष्कासित होने का भय नहीं रहता था। किन्तु इस प्रकार स्त्री-सम्पर्क में आने वाले परिव्राजकों की संख्या कम ही थी। अधिकांश परिव्राजक सांसारिक वैभव से विहीन होकर सत्यान्वेषण में निरत थे । इसलिए उन्हें भी समाज में तापसों जैसा सम्मान मिलता था।

इस प्रकार के तापस-जीवन की झलक बुद्ध के जीवन से भी मिलती है । महाकरुणिक बुद्ध जब शुद्धोदन राजा के पुत्र सिद्धार्थ कुमार के रूप में थे तो उनको सांसारिक भोग-विलास के सभी साधन उपलब्ध थे । वृद्ध,

---

1. किं नु खो, भो गोतम, सस्सतो लोको इदमेव सच्चं मोघम त्रं ति एवंदिट्ठि भवं गोतमो ति ?
2. तेन खो पान समयेन सन्दको परिब्बाजको....अनेकविहितं तिरच्छानकथं कथेन्तिया-सेयूयथीदं राजकथं चोरकथं·····इति भवाभवकथं इति वा ।
(वही, पृ० 211, 2224, 247)
3. सुखो इ मिस्सा परिब्बाजिकाय तरूणाय मृदुकाय लोसाय बाहाय सम्फस्सो ति । ते कामेसु पातव्यतं आपज्जन्ति । (म०नि० खण्ड 1, पृ० 377)

रुग्ण, मृत एवं प्रव्रजित व्यक्तियों को देखने के बाद सिद्धार्थ कुमार का मन जब सांसारिक भोगों से विरक्त हो गया तो वे अपने प्रासाद में जाकर विभिन्न प्रकार के मनोरंजनों से उदासीन हो जल्दी ही सो गये और जब कुद समय बाद उनकी निद्रा टूटी तो उन्होंने अस्त-व्यस्त अवस्था में सोई हुई परिचारिकाओं के घृणित रूपों को देखा जिससे उन्हें भोगों के प्रति ग्लानि उत्पन्न हो गई । उन्होंने तत्काल गृहत्याग किया[1] और आलार कालाम के आश्रम में पहुँचे । वहाँ आलार कालाम ने उन्हें आकिंचन्यातन का उपदेश दिया[2] । गौतम ने आकिंचन्यातन के मर्म को समझकर यह अनुभव किया कि उतना ज्ञान शान्ति के लिए पर्याप्त नहीं है और वे वहाँ से उद्दक रामपुत्त के आश्रम में गये । वहाँ उद्दक रामपुत्त से नैवसंज्ञानासंज्ञायतन समझकर उसे भी सांसारिक दु:खों से मुक्ति के लिए अपर्याप्त समझकर[3] सिद्धार्थ शांतिपद को खोजते हुए उरूबेला पहुँचे और वहाँ अपने अन्त: से काम परिदाह को मिटाकर अनुत्तर संबोधि की प्राप्ति के लिए छ: वर्षों तक कठोर तपस्या की। उनकी कठिन तपस्या इस प्रकार थी—

सर्वप्रथम उन्होंने दाँतों के ऊपर दाँत रख जिह्वा को ऊपर तालु से सटाकर रखा । इस तपश्चर्या से बोधिसत्व को वैसा ही शारीरिक कष्ट हुआ जैसा बलवान् व्यक्ति द्वारा किसी दुर्बल व्यक्ति के शिर और कन्धों को जोर से दबाने पर दुर्बल व्यक्ति को होता है । इस प्रकार के असह्य शारीरिक कष्ट से उनके शरीर से पसीना निकला । इस तपश्चर्या के समय उन्हें न तो प्रमाद हुआ और न ही स्मृति में किसी प्रकार की हानि । इस क्रिया से कायकष्ट तो हुआ किन्तु कामतृष्णा शान्त नहीं हुई[4] ।

तब बोधिसत्व के मन में श्वासरहित ध्यान करने का विचार आया । फलत: उन्होंने आश्वास-प्रश्वास की प्रक्रिया को बन्द करने के लिए मुख और नाक के छिद्रों को बलपूर्वक बन्द कर दिया । ऐसा करने से भीतर की वायु बड़े वेग से कानों के छिद्रों से निकलने लगी । उस समय उन्हें ऐसा प्रतीत

1. निदान कथा (पृ० 144-154)
2. एवं वृत्ते, राजकुमार, आलारो कालामो आकिञ्चञ्ञायतनं पवेदेसि ।
(म०नि० खण्ड 2, पृ० 321)
3. वही, पृ० 322-323
4. वही, पृ० 326

हुआ कि मानो वह वायु लोहार की धौंकनी से निकल रही हो ऐसा करने पर भी उन्हें न तो प्रमाद हुआ ओर नही स्मृति में किसी प्रकार की क्षति हुई किन्तु इससे भी उनकी तृष्णा शान्त नहीं हुई ।

तत्पश्चात् इसी चर्या को आग्र बढ़ाते हुए उन्होंने कानों को भी बन्द कर लिया । इससे अन्दर की वायु ने उनके शिर के ऊपरी भाग में जोर से धक्का दिया और उन्हें अत्यन्त तेज त्रिशूल से शिर में मारने जैसा कष्ट हुआ । फिर अत्यन्त तीव्र वायु ने पेट को भी प्रभावित किया और गोघातक के तेज चाके के प्रहार जैसी पीड़ा हुई । तत्पश्चात् उस वायु से शरीर में अत्यधिक दाह उत्पन्न हुआ । उनकी स्थिति उस समय दुर्बलतर पुरुष के समान हो गई जिसे दो बलवान् पुरुष पकड़कर अंगारों पर तपा रहे हों ।

इस कठिन तपश्चर्या से बोधिसत्व के शरीर की हालत इतनी खराब हो गई थी कि कुछ देवता यह कहने लगे कि श्रमण गौतम मर गया, जबकि कुछ देवता यह कहने लगे कि श्रमण गौतम मर गया, जबकि कुछ देवता यह भी कहने वाले थे कि इस प्रकार रहना अर्हतों का स्वभाव है । इस भीषण स्थिति में भी बोधिसत्व की मानसिक स्थिति पूर्ववत् थी अर्थात् इससे उन्होंने ने उत्साह में मन्दता आने दी और न ही स्मृति में विकृति । किन्तु इससे भी उनके शरीर को ही कष्ट हुआ, काम तृष्णा शान्त नहीं हुई ।

जब आश्वास-प्रश्वास रहित ध्यान से कोई लाभ नहीं हुआ, तब बोधिसत्व ने आहार का त्याग कर तपस्या करेन काविचार किया । किन्तु आहार का एकदम त्याग करने से जीवित रहना सम्भव नहीं था, अत: अत्यन्त अल्प मात्रा में आहार लेना स्वीकार किया । कुछ ही दिनों में बोधिसत्व का शरीर अत्यन्त क्षीण हो गया । अस्सी वर्ष की आयु वाले व्यक्ति के शरीर के गाठों जैसे इनके अंग-प्रत्यंग हो गये । कुल्हा ऊँट के पैर जैसा हो गया, पीठ के काँटे सूअरों की ऊँची-नीची पंक्ति जैसे हो गये । पसलियाँ टेढ़ी-मेढ़ी हो गईं । आँखें गहरे कुएँ में दिखने वाले तारों जैसी दिखाई देने लगीं । सिर की खाल भी पिचक कर मुर्झा गई । पीठ के काँटे पेट की खाल से सट गये । स्थिति इस सीमा तक बिगड़ गई कि अगर वे शौच को जाते थे, तोकमजोरी के कारण गिर पड़ते थे, यदि काया को सहलाते

थे तो गड़ी जड़ वाले रोम झड़ जाते थे । उनके शरीर का उदात्त गौर वर्ण काला पड़ गया था ।

इतनी कठिन साधना के बाद भी जब उन्हें ज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई तब उनके मन में विचार आया कि बोधि-प्राप्ति का कोई दूसरा मार्ग होना चाहिए । उन्हें बचपन में जामुन के वृक्ष के नीचे प्रथम ध्यान से संबोधि-प्राप्ति का संकल्प किया । चूँकि अत्यन्त कृश शरीर से ध्यानस्थ होना सम्भव नहीं था, अत: उन्होंने स्थूल आहार लेना प्रारम्भ कर दिया । इसे देखकर उनकी सेवा में लगे हुए पंचवर्गीय भिक्षु उन्हें उद्योग से विमुख समझकर उनसे साधना उदासीन होकर ऋषिपतन मृगदाय (सारनाथ) चले गये ।

बोधिसत्व के शरीर में आहार ग्रहण करने से जब कुछ बल आया तो उन्होंने ध्यान में अपने को लगाया । उन्होंने प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ ध्यान को प्राप्त किया । इससे उनका चित्त परिशुद्ध, निर्दोष, निर्मल एवं मृदु हो गया । तत्पश्चात् उन्होंने बोधिप्राप्ति-वाली रात्रि के प्रथम प्रहर में पूर्वनिवासानुस्मृति, द्वितीय प्रहर में दिव्यचक्षु एवं पश्चिम प्रहर में प्रतीत्यसमुत्पाद का प्रत्यवेक्षण कर आस्त्रवक्षय ज्ञान को प्राप्त किया । आस्त्रवक्षय के साथ सर्वज्ञ ज्ञान को प्राप्त कर वे बुद्ध हो गये[1] ।

बुद्धत्व-प्राप्ति के बाद पंचवर्गीय भिक्षुओं को दिये गये अपने प्रथम धर्मोपदेश में उन्होंने सबसे पहले ज्ञान-प्राप्ति का मार्ग बताते कहा कि प्रव्रजितों को दो अन्तों का सेवन नहीं करना चाहिये । कारण, इन दोनों अन्तों में से किसी एक अन्त के सेवन से न तो काम तृष्णा का विनाश होता है और न ही सच्चे ज्ञान का लाभ इसके लिए तो मध्यम मार्ग अर्थात् बीच का रास्ता ही श्रेयस्कर है । ज्ञान-प्राप्ति की साधना करने वाले योगी को न तो काम सेवन में लिप्त होना चाहिये और न ही अपने शरीर को कष्ट देना चाहिए । यही बीच का रास्ता बौद्ध धर्म में 'मज्झिम पटिपदा' के नाम से विख्यात है[2] । यह मध्यम प्रतिपदा आर्य अष्टांगिक मार्ग का ही दूसरा नाम है । आर्य अष्टांगिक मार्ग में ऐसे आठ अंगों का समावेश किया गया है जिनके पालन करने से व्यक्ति शील तथा समाधि को पास कर प्रज्ञा-लाभ कर सकता है । ये आठ अंग इस प्रकार है ।

---

1. दुष्कर तपश्चर्या का वर्णन (मज्झिम निकाय खण्ड 2, पृ० 326 से 330 तक) उल्लिखित है ।
2. (म०नि० खण्ड 2, पृ० 335-338 तथा महावग्गो पृ० 13)

पालि	**हिन्दी**
1. सम्मादिट्ठि	1. सम्यक दृष्टि
2. सममासङ्कप्पो	2. सम्यक संकल्प
3. सम्मावाचा	3. सम्यक वचन
4. सम्माकम्मन्तो	4. सम्यक कर्मान्त
5. सम्माआजीवो	5. सम्यक आजिविका
6. सम्मा वायामो	6. सम्यक व्यायाम
7. सम्मासति	7. सम्यक स्मृति
8. सम्मासमधि	8. सम्यक समाधि ।

●

सूर्यराज परम्परा

1. महासम्मत	- नीमी राजा
2. रोज	- कालरजत
3. वररोज	- प्रेमकर
4. कल्यान	- अशोक (इस परम्परा के बहुत से राजा वाराणसी में राज्य किये हैं ।)
5. वरकल्यान	- उपोषत
उपोषत	- मन्धातु
6. रघु	- चर
7. अण	- उपचर
8. दशरथ	- चेतिय
9. मोच्छल	- राम
10. मुचलिन्द—	
सार-सागर-सागर	- विजय (क्रमश: और पुत्र-पौत्र उसी अनुसार पन्द्रह लोग)
11. भगीरथ रूपी	- ओकाक
12. सुरुचि	- कुश
13. प्रताप	- सुजात शाक्यवंश (इक्ष्वाकु, उल्कामुख, चार राजाओं के साथ-साथ कपिलवस्तुपुर में पुत्र और पौत्र आठ हैं। सियसुर परम्परा में जैसेन, सिंहहनु, शुद्धोदन, सिद्धार्थ बोधि-सत्व ।)
14. महाप्रताप	
15. पनाद	
16. महानाद	
17. सुदर्शन	
18. महासुदर्शन	
19. नेरू	
20. महानुरू	
21. अर्विण्मत	- इस राज परम्परा के अट्ठाईस लोग कुशावती, राजगृह, मिथिला तीन राज्यों में राज किये हैं ।

22. अर्विण्मत
23. सागर
24. मखादेव - मिथिला का राजा

यह विवरण महाबोधिवंश विवरण में उल्लेख मिलता है । विधनिकाय अट्ठकथा काा विवरण इससे थोड़ा भिन्न है ।

●

शक्यराजवंश

(जैसेन राजा से जैसेन कपीलवस्तु तक)

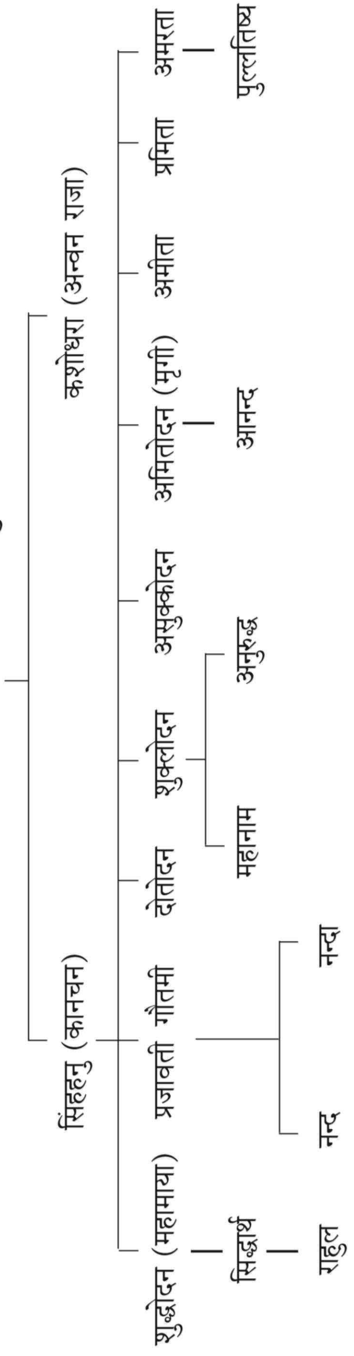

माता का परम्परा

देवदाह शाक्य (कोलीपुर)

- अंजनराजा (यशोधरा-लुम्बिनी)
  - दण्डपाणि
  - सुप्रबुद्ध (अमीता)
    - यशोधरा (सिद्धार्थ)
      - राहुल
    - देवदत्त
  - महामाया (शुद्धोदन)
  - प्रजावती गौतमी (शुद्धोदन)
- कांचना सिंहहनु राजा

राजकुमार अनुरुद्ध राजा अमितोदन का पुत्र होने का उल्लेख अगुत्तर निकाय अट्ठकथा में आता है ।

राजकुमार सिद्धार्थ का जन्मकुण्डली कौमार नाडीशास्त्र के अनुसार

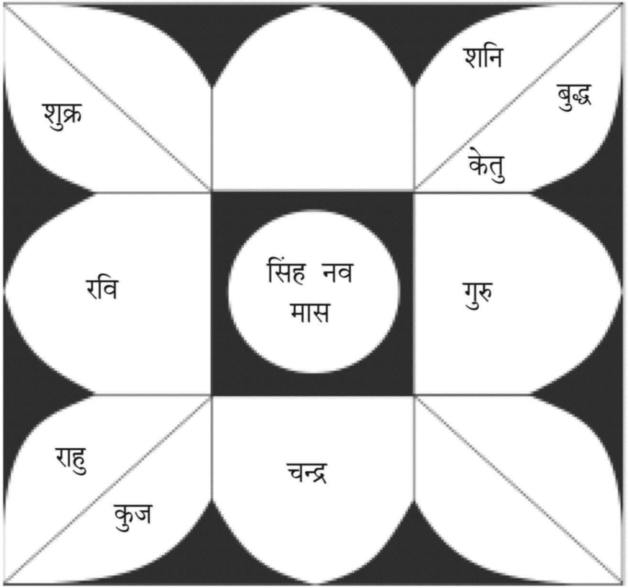

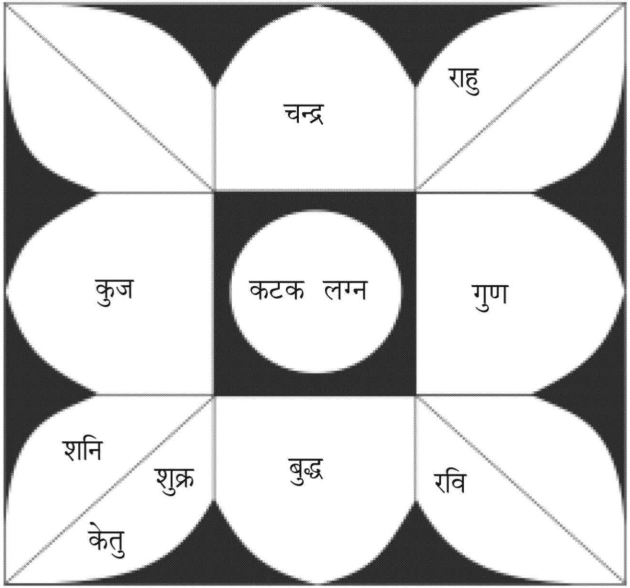

नोट—कलियुग वर्ष 2478 वैशाख पूर्णिमा के रविवार पूर्वाह्न ग्यारहवाँ घण्टे से चार मिनट में विसा नक्षत्र से कटक लग्न से सिंह नवासंक से बोधिसत्व के उत्पन्न होने का उल्लेख कौमार नाड़ी शास्त्र में उल्लेख मिलता है । उसके अनुसार बुद्ध का जीवन काल 80 वर्ष 10 महीना 15 दिन अंकित किया है । यह जन्मपत्र उसी के अनुसार बना हुआ है ।

उपग्रन्थ

महामाया का स्वप्न

अनोतप्प (मानसरोवर)

महायान ग्रन्थों के अनुसार महामाया देवी आषाढ़ी पूर्णिमा के दिन नक्षत्र उत्सव में सम्मिलित होकर अष्टांगशील ग्रहण किया । (अंक 2)

महायान ग्रन्थ ललितविस्तर में ऐसा उल्लेख संस्कृत भाषा में मिलता है । माया देवी सुख, स्वप्न, (प्रसुक्ता, इयम्) स्वप्नप्रसाद, हिमरजत, निहास्व, शड्विशाना, स्वर्णनवारुयूजंग्, सुरम्य शिर्षा:, उदरमुदगतो, गजप्रधानो, ललितविस्तर सूत्र, वज्र, गात्रसन्धि । (अंक 3)

बोधिसत्व तुषित दिव्य लोक से मनुष्य लोक में जन्म लेने के पहले अपना मुकुट मैत्री बोधिसत्व को सौप दिया । यह ललित विस्तार में मिलता है । ललितविस्तर के अनुसार पूर्णिमा के दूसरे दिन महामाया रानी अपने परिवार की स्त्रियों के साथ अशोक उद्यान में जाकर राजा शुद्धोदन को एक सन्देश भेजा । सन्देश सुनकर राजा शुद्धोदन अशोक उद्यान में चले आये। उद्यान में प्रवेश करते ही उनका शरीर बहुत भारी हो गया । विस्मित होकर विचार किया। एक क्षण में शुद्धावास कायिक एक देवता अपने शरीर का आधा भाग दिखाकर बोधिसत्व की उत्पत्ति की सूचना दिये । (अंक 4)

महायान ललितविस्तर सूत्र के अनुसार बोधिसत्व माता की सुविधा के लिए एक विशेष महल शुद्धोदन राजा ने निर्मित करवाया । शुक्र, सुयाम देवतागण की मूर्ति को भी जगह-जगह पर निर्मित किये गये । (अंक 5)

ललित विस्तर के अनुसार प्लास का वृक्ष दिया है । स्वान जियांग (हियूं-सियं) के अनुसार यह अशोक का वृक्ष है । (अंक 6)

यशोधरा देवी, चन्नमहाअमात्य, कालुदायी-अमात्य, अजानिक हस्तिराज, कन्थक अश्वराज, महाबोधिवृक्ष और चार महानिधान उसी दिन उत्पन्न होने का उल्लेख जातक अट्ठकथा में मिलता है । महामाया देवी एक यहान पर बोधिसत्व की उत्पत्ति होने का उल्लेख अश्वघोष का बुद्ध चरित (संस्कृत बुद्धचरित) में मिलता है । (अंक 7)

कलियुग वर्ष 2478 वैशाख पूर्णिमा के दिन रविवार विसा नक्षत्र से कटक लग्न के सिंह राशि में सिद्धार्थ का जन्म हुआ है । उसी के अनुसार सिद्धार्थ (बुद्ध) की आयु 80 वर्ष 10 महीना 15 दिन निर्धारित किया है। (अंक 8)

उत्पत्ति होने के थोड़े समय के बाद बात करने वालों का कई घटना दुनियाँ में विद्यमान है । इंलैण्ड के लोयडिस विकृली साप्ताहिक पत्रिका में, फ्रांस के सालुई ग्राम्य में दो महत्त्वपूर्ण घटना का उल्लेख किया हुआ है। फ्रांस के सालुईग्राम्य में अपना पुत्र पैदा होने के बाद वहाँ खुशीयाँ मना रहे थे । उधर एक व्यक्ति छोटा बच्चा से पूछा अभी कितना समय हुआ है। बच्चा साफ शब्दों में कहा दो बज रहा है । सभी लोग आश्चर्यचकित हो गये उसने कहा 1875 का साल बहुत शुभवाला साल है लेकिन आने वाला साल खून-खराबा का साल होगा ।

सिद्धार्थ बोधिसत्व एक सामान्य मनुष्य नहीं थे संसार में 1. दानवारमिता, 2. शील पारमिता, 3. नैष्क्रम्य पारमिता, 4. प्रज्ञा पारमिता, 5. वीर्य पारमिता, 6. क्षान्ति पारमिता, 7. सत्य पारमिता, 8. अधिष्ठान पारमिता, 9. मैत्री पारमिता, 10. उपेक्षा पारमिता जैसे दस पारमिता, दस उपपारमिता और दस परमत्त पारमिता, जैसे समतिन्स परमिताएँ, जैसे दस पारमिताएँ को पूरा करने के बाद सर्वज्ञ बुद्ध होने के लिए संसार में पैदा हुए । इसलिए जन्म लेते ही बात करना कोई आश्चर्य की बात नहीं है ।

पंचविध अष्टसमापत्ति (अंक 11)

32 (बत्तीस) महापुरुष लक्षण

1) भगवान् बुद्ध का पूरा तलवा समतल है ।
2) हर प्रकार से परिपूर्ण हजार चक्र उनके तलवे में हैं ।
3) उनका एड़ी लम्बा है ।
4) अँगुली लम्बा है ।
5) शरीर मुलायम है ।
6) शरीर जाली जैसा है अर्थात् अपने शरीर को किसी भी तरह से घूमा सकते हैं ।
7) उनका पैर मजबूत है ।

8) उनका जांघ मजबूत है । जैसे एनी नामक एक हिरण जो बहुत उपर से भी कूद सकता है ।
9) बुद्ध खड़ा होकर बिना झुके पैर का घुटना छू सकते थे।
10) उनका पुरुष लिंग अन्दर घुसा हुआ जैसे दिखता है ।
11) शरीर की चमड़ी सोने के रंग जैसा है ।
12) उनकी चमड़ी इतना मुलायम है कि गन्दगी नहीं रह पाता ।
13) एक जगह पर सिर्फ एक रोम है ।
14) रोम उपर घुमा हुआ है और सभी गहरी नील रंग का है ।
15) महाब्रह्म के समान सीधा शरीर है ।
16) सात स्थान में मांस ज्यादा है ।
17) उनकी छाती शेर की छाती के समान है ।
18) पीठ में सुन्दर से मांस बराबर है ।
19) उनका निग्रोध, परिमण्डल है । न ऊँचा है, न ही मोटा है ।
20) गला सुन्दर है ।
21) जो कुछ भोजन करते हैं, वह सब कुछ पचने वाले उनके शरीर में नस है ।
22) शेर के जैसा जबड़ा है ।
23) उनके 40 दाँत हैं ।
24) सभी दाँत समान हैं ।
25) दाँत के बीच में छेद नहीं है ।
26) दाँत सफेद और चमकिला है ।
27) उनकी जीभ बहुत लम्बी है ।
28) करवीक चिड़ियाँ के जैसा बहुत सुन्दर आवाज है ।
29) गहरी नील रंग का दो नेत्र हैं ।
30) छोटा गाय के बछड़े जैसा उनकी दो आँख हैं ।
31) दोनों भौंवे के बीच में उजाला रुआ जैसा उर्ण रोम हैं ।
32) उनका सिर थोड़ा उँचा है ।

ये आठ नाम अट्ठकथा में उल्लेख मिलता है लेकिन मिलिन्द-प्रश्न ग्रन्थ में राम, ध्वज, लखन, जातिमन्त्र, यज्ञ, सुयाम, सुभोज और सुदत्व के नाम से जाने जाते हैं । (अंक 13)

महावस्तु संस्कृत ग्रन्थों में बोधिसत्व का नाम सत्यबोध सिद्ध नाम से जाना जाता है। महायान ललित विस्तर ग्रन्थ में सिद्धार्थ नाम से जाना जाता है। (अंक 14)

अनादिकाल से देव ऋषी द्वारा महापुरुष लक्षण विद्या प्रदान की है। इसका उल्लेख अम्वट्ठा सूत्र अट्ठकथा में उल्लेख मिलता है। कम से कम एक महापुरुष लक्षण होने से भी उनके माता-पिता के नाम का उल्लेख होता है। वर्तमान समय में इस विद्या को नाड़ी वाक्य विद्या के नाम से जाना जाता है। कुछ ऋषि भविष्य में होने वाली घटनाएँ निश्चय से प्रकट किया है। अँगुठा देखने के बाद सम्पूर्ण भविष्यवाणी करने की विधि कई नाड़ी वाक्य में उल्लेख है। (अंक 15)

बोधि सत्व की उत्पत्ति के पश्चात् महामाया देवी का देहान्त होने का उल्लेख संस्कृत ग्रन्थों में मिलता है। महामाया रानी देव पुत्र होकर स्नेह से बोधिसत्व सिद्धार्थ कुमार के रूप में हैं। अभूत रूप से उत्पत्ति होने का वर्णन महायान ग्रन्थ ललित विस्तर सूत्र में उल्लेख है। (अंक 17)

हल जोतने का मंगल उत्सव के दिन बोधिसत्व सिद्धार्थ अपने स्थान पर बैठकर आनापान सती ध्यान करने का उल्लेख अट्ठकथा में विस्तारपूर्वक मिलता है। आसमान में ध्यान करने का उल्लेख किसी भी ग्रन्थ में नहीं मिलता है। केवल मिलिन्द प्रश्न ग्रन्थ में आसमान में बैठकर ध्यान करने का उल्लेख मिलता है। सिद्धार्थ बोधिसत्व पैदल चलने के योग्य अवस्था में अपने पिताजी शुद्धोदन महाराज के साथ उद्यान में जाते समय एक खेत में चले गये। उस खेत में एक मरे हुए सर्प और मेढक को देखा। सर्प और मेढक दोनों हल में फसकर मर जाने का संकेत था। वह दृश्य देखने के बाद संवेदना से बोधिसत्व राजकुमार सिद्धार्थ एक जामुन के पेड़ के नीचे बैठकर ध्यान किया। उस समय हिमालय पर्वत से विन्ध्याचल पर्वत को आसमान से जाने वाले पाँच ऋषि यह दृश्य देखकर बहुत प्रभावित हुए और प्रभावित होकर बोधिसत्व सिद्धार्थ का अभिवादन किया। भोजन के समय राजकुमार सिद्धार्थ दिखाई नहीं देने के कारण राजपुरुष महल में जाकर इस घटना से राजा शुद्धोदन को अवगत कराया। मन्द-मारुति में सभी पेड़-पौधे हिल-डुल रहे थे लेकिन जामुन के पेड़ की छाया स्थिर देखने के बाद राजा शुद्धोदन पुत्र सिद्धार्थ का अभिवादन किया। महायान ग्रन्थ महावत्तु में

इसका उल्लेख मिलता है । यह घटना सिद्धार्थ को उन्तीस वर्ष में होने का उल्लेख महायान बौद्ध ग्रन्थ दिव्यावदान में विस्तार पूर्वक मिलता है । (अंक 17)

बोधिसत्व सिद्धार्थ धर्म-पुण्य गुण से परिपूर्ण थे । उनके मित्रगण लोग भी धर्म, पुण्य, गुण से सम्पन्न थे । सिद्धार्थ के बचपन का एक ब्राह्मण मित्र था । उनका नाम वत्स था । (अंक 18)

ब्राह्मण सर्वमित्र द्वारा बोधिसत्व सिद्धार्थ को शिक्षा देने का उल्लेख मिलिन्द-प्रश्न में किया गया है । संस्कृत ग्रन्थों में विश्वामित्र के नाम से जाना जाता है । सर्वमित्र व विश्वमित्र दोनों को समान अर्थ में जाना जाता है । (अंक 19)

सिद्धार्थ बोधिसत्व राजकुमार द्वारा शिल्प शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् ब्राह्मी के नाम से एक विशेष लिपि की उत्पत्ति करने का उल्लेख समेन्द्र पण्डित के बुद्ध जन्म नामक ग्रन्थ में उल्लेखा मिलता है । अशोक अक्षर को भी ब्राह्मी अक्षर कहते हैं ।

वर्दमानः कुमारो, सर्व विद्याषु पारङ्गः,
लिपि प्रविनो हिनवाः, लिपि ब्राह्मी निर्गमे ।

(बुद्ध जन्म)

अर्थ—सर्वार्थ सिद्ध सिद्धार्थ कुमार सभी विद्याओं में पारंगत होने के बाद लिखने में समर्थ ब्राह्मी नामक एक विशेष अक्षर वर्ण की उत्पत्ति किया है । (अंक 20)

इस घटना का उल्लेख ललित विस्तर में मिलता है । उसी के अनुसार उल्लेख किया है । लेकिन पालिजातक अट्ठकथा में विस्तारपूर्वक इस घटना का उल्लेख नहीं किया है । सिद्धार्थ कुमार व यशोधरा का विवाह होने के बाद राजमहल में राजकुमारी का आगमन, यशोधरा की सेवा के लिए आवश्यकता होने की सूचना यशोधरा के पिताजी को राजा शुद्धोदन ने राजमहल से सन्देश भेजा । लेकिन सिद्धार्थ राजकुमार को इस बात की जानकारी न होने के कारण वह शिल्प प्रतियोगिता में भाग लेने का उल्लेख जातक अट्ठकथा में मिलता है । (अंक 21)

संसार में दोनों के सम्बन्ध के विषय में पुराने वेद का एक भाग नाडी ग्रन्थ शास्त्र में उल्लेख मिलता है । (अंक 22)

रोगी—ललितविस्तार के अनुसार रोगी के रूप में एक दिव्य पूत्र आने का उल्लेख मिलता है । (अंक 23)

राहुलो जातो अर्थात राहु ग्रह जैसे एक बन्धन हुआ है । राहु ग्रह सूर्य, चन्द्रमा दोनों को अपने वश में लाने के पश्चात् सूर्य और चन्द्रमा का प्रकाश संसार को नहीं मिलता है । हमारा गृह त्याग बाँधने वाले की उत्पत्ति हुआ है । राहुल को वासवदत्ता एवं वासत्यदत्ता के नाम से भी जाना जाता है। इन दोनों शब्द वास से वासुल व राघव शब्द से राहुल होने का अनुमान लगता है । राहुल रघु परम्परा का होने के कारण राहुल नाम दिया है । शाक्य राजा लोग राघव परम्परा के हैं । (अंक 24)

निव्बूता नूनः सा माता, निव्वूता नूनः सा पिता,
निव्वूता नूनः सा नारि, यस्सायं हे इदिशो पति ।

(कृषा गौतमी दण्डपाणि शाक्य)

राजा का पुत्री होने का विवरण चीन बौद्ध ग्रन्थों में मिलता है । माता जी भन्तों आनन्दी की माता होने का उल्लेख महायान ग्रन्थ महावत्तु में उल्लेख है । बोधिसत्व सिद्धार्थ का महाभिनष्क्रमण (गृहत्याग) एक सप्ताह के पहले कृषा गौतमी भी राजा सिद्धार्थ की एक रानी के रूप में महल में रहने का विवरण तिब्बत बौद्ध ग्रन्थों में मिलता है । (अंक 25)

महायान धर्म ग्रन्थ ललितविस्तर के अनुसार बोधि सत्व सिद्धार्थ शाक्य, कोलिय मल्ल राज्यों को पार करके अनुप्रिय ग्राम को पहुँच गये । अनुप्रिय ग्राम कपिलवतु से छः योजन (72 कि.मी.) दूर पर होने का उल्लेख के साथ-साथ चन्न व कन्थक को वापस भेजने के कारण उसी स्थान पर चन्न-कन्थक निवास के नाम से एक स्तूप होने का विवरण मिलता है ।

(अंक 26)

थेरवाद अट्ठकथा के अनुसार बोधिसत्व सिद्धार्थ का केश अपने प्रार्थना के अनुसार आसमान में ही रह गये । शक्र देवेन्द्र आकर अपने हाथों से केश को लेके एक सोने के मन्जूषा में रखकर तावतिन्स देवलोक में ले गये । तावतिन्स देवलोक में ले जाकर एक सिलुमिनि नाम से एक स्तूप बनवाया । (Assiatie Research xx 38, 309)

थेरवादी अट्ठकथा के अनुसार सिद्धार्थ राजकुमार का स्वर्णवर्ण, मुकुट

आदि किमती वस्तु घटिकार महाब्रह्म लेकर ब्रह्मलोक में सिलुमिनी स्तुप बनवाया । (अंक 27)

ललित विस्तर के अनुसार शुद्धावास देवलोक का एक देव पुत्र आदिवासी व्यक्ति के रूप में श्रमण भेष, लेकर बोधिसत्व सिद्धार्थ को तपस्वी के लिए आवश्यक वस्त्र (परिष्कार) उपलब्ध किया है । (अंक 28)

बोधिसत्व सिद्धार्थ तपस्वी भेष धारण करके आजिवाष्टांग (अष्ट गुण शील) को ग्रहण किया । शील का अर्थ काय, चित्त, मन, संयम रखना है । इन तीन द्वार को संयम में नहीं रखने से मिथ्यादृष्टि का जीवन व्यतित करना पड़ता है ।

आजिव अष्टशील में आठ अंग होता है—

1) प्राणघात नहीं करना—इनमें भी कई बातें हैं ।

2) चोरी नहीं करना—इनमें भी कई भेद हैं ।

3) अब्रह्मचर्य पालन करना—इसके भी कई भेद हैं ।

4) झूठ नहीं बोलना—इसके भी कई भेद हैं ।

5) सुरा-मेरय मद्यपान—इसके भी कई भेद हैं ।

6) विकाल भोजन—इसके भी कई भेद हैं ।

7) नाच, गाना, वादन एवं मनोरंजन से दूर रहना । आभूषण, माला नहीं पहनना, सुगन्ध का उपयोग नहीं करना ।

8) उच्च आसन या महाआसन का उपयोग नहीं करना ।

(अंक 29)

इस सन्दर्भ में पालि अट्ठकथा में कुछ उल्लेख नहीं मिलता है । संस्कृत ग्रन्थों में कुछ उल्लेख मिलता है । एक आदिवासी का भेष लेकर सिद्धार्थ तपस्वी के लिए अति आवश्यक तपस्वी परिष्कार लेकर एक देवता के आने का उल्लेख संस्कृत ग्रन्थों में मिलता है । पालि ग्रन्थों में भी उल्लेख आता है कि ब्रह्म सिद्धार्थ तपस्वी को आवश्यक समान भेट करने का उल्लेख मिलता है । सिद्धार्थ तपस्वी एक वृक्ष के नीचे बैठकर ध्यान करते थे । उसी स्थान पर किसी तपस्वी को अपने आवश्यकता के अनुसार तपस्वी परिष्कार मिलने का उल्लेख नहीं है। संस्कृत ग्रन्थों में निम्नलिखित उल्लेख मिलता है । उसी स्थान पर कुछ समय पूर्व कुछ लोग प्रव्रज्या ग्रहण करके

पच्छेक बुद्ध का बुद्धत्व प्राप्त किया है। उसी परिसर से एक तपस्वी के मन में आया कि उसके परिनिर्वाण के बाद सर्वज्ञ बुद्धत्व प्राप्त करने वाला एक लोकोत्तर उत्तम पुरुष की उत्पत्ति होगा। उसने अपना तपस्वी परिष्कार अपने परिवार के सदस्य लोगों को सौपकर कहा यह परिष्कार भविष्य के बुद्धत्व प्राप्त करने के लिए पैदा होने वाले लोकोत्तर पुण्यवान व्यक्ति को पूजा करना है । ऐसा कहकर वह हिमालय की ओर चले गये । उस व्यक्ति का नाम मातांग पच्छेक बुद्ध था । सिद्धार्थ के जन्म के दिन ही उसने परिनिर्वाण प्राप्त किया । मातांक पच्छेक बुद्ध के आगे जाते समय एक महिला मिली थी । उस महिला ने पात्र आदि सामान पुज्यनीय होने के कारण एक पेड़ के कोटर (खोल) में रखकर वृक्ष देवता की आराधना किया । बोधिसत्व की उत्पत्ति होने के बाद यह तपस्वी परिष्कार उस बोधिसत्व को प्राप्त करने के मार्ग का दिशानिर्देश करने की याचना किया। जंगल में रहने वाले आदिवासी की नजर इस तपस्वी परिष्कार के सामान पर पड़ गया । वह आदिवासी उस पोटली को उस पेड़ के कोटर से निकाल लिया । (अंक 30)

राजगृह उस समय मगधराज्य का राजधानी था । उस राजधानी को गिरीव्रर्ण नाम से भी जाना जाता है । पाण्डव, गिज्जकूट, वेभार, वेपूल्य व ऋषिगिरी पाँच पर्वतों से घिरा होने के कारण गिरिवर्ण के नाम से जाना जाता है । (अंक 30)

महायान ग्रन्थ ललित विस्तर के अनुसार तपस्वी सिद्धार्थ बोधिसत्व बेहोश होकर गिरने के बाद जो मरने की खबर एक दिव्य पुत्र तावतिन्स देवलोक में जाकर महामाया को सूचना दिया । ऐसी खबर सूनने के बाद मातृदिव्य महामाया दिव्य अप्सराओं के साथ आकर उस स्थान पर रोना शुरू कर दिया । (अंक 31)

तपस्वी सिद्धार्थ आहार लेना बन्द कर दिये । इसका उल्लेख जातक अट्ठकथा में मिलता है । मज्झिम निकाय (सूत्र पिटका का एक ग्रन्थ) अट्ठकथा में सिद्धार्थ तपस्वी कोल्लू (मंग, चना, बाजरा) उबाल कर उसके पानी को पीने का उल्लेख मिलता है । (अंक 32)

युद्ध भूमि में विजयी होने के लिए जाने वाले योद्धा जमीन पर गिरकर मरना पसन्द करता है लेकिन पराजय स्वीकार नहीं करता है । उसे संकेत

करने के लिए अपने सिर पर एक मृद्द-तृण (घास) के रूप में बाँधकर जाता है । (अंक 33)

अपने लक्ष्य को प्राप्त न करके वापस जाने वाले अनेक साधु-सन्त, मुनि-तपस्वी, श्रमण, ब्राह्मण का उल्लेख ललितविस्तर में मिलता है । (सूत्र 34)

संस्कृत श्लोक—

ऐ साद्दि नमुवे सेनाः कृष्णः बन्दो प्रतपिनः
अत्रावमाठा दृश्यन्ते एके श्रमणः ब्राह्मनः ।

(ललितविस्तर सूत्र)

सतानुसारी विज्ञान (अंक 35)

शरीर को बहुत कष्ट देने वाला इस व्रत से बुद्धत्व प्राप्त करने के लिए कभी भी उपयोगी नहीं होता है । अस्वास-प्रस्वास (आना पानसती) ध्यान इसके लिए मार्ग प्रसस्त करता है । आनापान ध्यान करने के बाद चित्त में एक स्वभाव की उत्पत्ति होती है । उस उत्पत्ति को सतानुसारी विज्ञान के नाम से जाना जाता है । (अंक 36)

दुष्कर क्रिया (अथ्थकिलमथान योग) के समय सिद्धार्थ तपस्वी को वाला, वलगुप्ता, सुप्रिया, विजय सेना, अतिमुक्त कमला, सुन्दरी, कुम्भकारी, उलुविल्लिका, जम्मकलिका, सुजाता आदि यूवतियों द्वारा उपास्थान करने का उल्लेख महायान ग्रन्थ ललितविस्तर में मिलता है । तपस्वी सिद्धार्थ के स्वास्थ के लिए सुजाता एक सौ आठ ब्राह्मणों को भोजन कराकर आशीर्वाद भी करवाती थी । एक दिन तपस्वी सिद्धार्थ ने सोचा कम से कम एक कफन का कपड़ा मिल जाय तो अच्छा है ।

उस समय सुजाता की नौकरानी राधा का देहान्त हो गया था । मृत शरीर को एक कपड़े में लपेट कर शमशान घाट में फेंक दिया । तपस्वी सिद्धार्थ उस कफन को लेकर पहन लिये । (ललित विस्तर)

सेनानी ग्राम

महा-मनधातु राजा के सेनापति का गाँव सेनानी ग्राम के नाम से जाना

जाता है । सभी दिशाओं से लोगों का आने के कारण निगम से भी जाना जाता है । सेनानी उस गाँव का प्रधान था । (महाबोधि वंश)

(अंक 37)

सुजाता सोने के पात्र के साथ-साथ खीर पूजा किया । तपस्वी बोधिसत्त्व सिद्धार्थ ने पूछा बहन यह सोने की पात्र को हम क्या करें । सुजाता ने कहा यह पात्र आपके लिए है । तपस्वी सिद्धार्थ ने कहा यह सोने का पात्र हमारे किसी काम का नहीं है । सुजाता ने कहा आपकी जो इच्छा हो उसका कीजिए । तपस्वी सिद्धार्थ भोजन करने के बाद पात्र लेकर निरंजना नदी तक गये और जाकर सोने के पात्र से लोभ मुक्त होकर उस पात्र को नेरंजना नदी में छोड़ दिया । पात्र को नदी में छोड़ते समय तपस्वी सिद्धार्थ ने सोचा हमारे अधिष्ठान पारमिता की शक्ति से हमें बुद्धत्व प्राप्त होना ही है । यदि यह बात सत्य है तो यह सोने का पात्र नदी के विपरित दिशा में अवश्य जायेगा । ऐसा कहकर अधिष्ठान किया । अधिष्ठान के फल स्वरूप सोने का पात्र विपरित दिशा में जाने के पश्चात् पानी में डूब गया । (अंक 38)

चित्तविशुद्ध—उपचार समाधि, अर्पणा समाधि, दोनों के माध्यम से ध्यान करना पंचनिवरण जैसा अकुशल चित्त को दूर करके चित्त को साफ-सुथरा करना चित्त विशुद्धि नाम से जाना जाता है । (अंक 39)

अपराजित पर्यंक चतुरांग वीर्य सोचकर बैठना—

1) शरीर से चमड़ा फटकर निकल जाने पर भी मैं बुद्धत्व प्राप्त किये वगैर इस आसन से उठूँगा नहीं ।

2) शरीर के नाड़ी (नस) निकलकर बाहर आ जाने से भी मैं वगैर बुद्धत्व प्राप्त किये इस आसन को छोड़ूँगा नहीं ।

3) शरीर की सभी हड्डी निकलने से भी मैं वगैर बुद्धत्व प्राप्त किये इस आसन से नहीं उठूँगा ।

4) सम्पूर्ण शरीर का मांस-खून सूख जाने से भी मैं बगैर बुद्धत्व प्राप्त किये इस आसन को नहीं छोड़ूँगा ।

इस चार पर्यकों से युक्त विर्य को चतुरांग विर्य के नाम से जाना जाता है । (अंक 40)

आसन—गणना के अनुसार आसन चौरासी लाख से चौरासी को

महत्त्व दिया है । इस चौरासी में बत्तीस सबसे योग्य माना जाता है । इसी बत्तीस आसन का उल्लेख घेरण्डसंहिता में मिलता है । योगी पुरुष को सिद्धि प्राप्त के योग्य बत्तीस आसनों का नाम है—1) सिद्ध आसन, 2) पद्मासन, 3) भद्रासन, 4) मुक्तासन, 5) वज्रासन, 6) स्वास्तिकासन, 7) सिंहासन, 8) गोमुख आसन, 9) विर्य आसन, 10) धनुष आसन, 11) मृतासन, 12) गुप्तासन, 13) मत्स्यासन, 14) मत्सोन आसन, 15) गोरक्षा आसन, 16) पश्चिमोत्त आसन, 17) उत्कटासन, 18) संकटासन, 19) मयूरासन, 20) कुकुट आसन, 21) कुर्मासन, 22) उत्थान मुण्डकासन, 23) उत्थान कुभआसन, 24) वृक्ष आसन, 25) मुण्डकासन, 26) गरुण आसन, 27) ब्रुसासन, 28) हल आसन, 29) मकरासन, 30) उष्ट्रासन, 31) भुजंगासन, 32) योगासन ।

इसके साथ व्रजासन का वर्णन निम्नलिखित है—एड़ी और पंजा दोनों गुदा के स्थान पर दृढ़ता से रखने पर योगी को सिद्धिदायक वज्रासन होना कहा जाता है । वज्रासन सिद्धासन के नाम से भी हठयोगी प्रदीपिका में इसका उल्लेख है । सिद्धासन वज्रासन के समान है । (अंक 41)

विश्वस्त वास्तु का शाक्य दृष्टि

1-5 - रूप आदि स्कन्ध 5 से एक आत्मा के रूप में लेना । पाँच स्कन्ध, रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार व विज्ञान ।

6-10 - आत्मा-रूप, संज्ञा, संस्कार, वेदना, विज्ञान के रूप से सोचता है ।

11-15 - रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार, विज्ञान इन पाँचों से एक-एक के माध्यम से कुछ करने को आत्मा के रूप में लेना है ।

16-20 - आत्मा को रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार, विज्ञान को मान्यता देना है । (अंक 42)

शंका सोलह प्रकार का होता है—

1) अतीत में हम कभी पैदा हुए की नहीं हुए ?

2) अतीत में हम शायद पैदा नहीं हुए ?

3) यदि हम अतीत में पैदा हुआ तो कौन था ?

4) अतीत भव में कैसे रहा ?

5) अतीत भव में कौन था ?
6) पुनः पुनरुत्पत्ति होगा की नहीं होगा ?
7) पुनरुत्पत्ति नहीं होगा ।
8) यदि पुनरुत्पत्ति हुआ तो कौन होगा ?
9) पुनरुत्पत्ति में कैसे होगा ?
10) पुनरुत्पत्ति में कौन रहेगा ? कैसा रहेगा ? देवता या जानवर।
11) अभी है ।
12) अभी नहीं है ।
13) अभी कौन है ?
14) अभी कैसे है ?
15) कहाँ से आया है ?
16) कहाँ उत्पन्न होगा ?

यह मनुष्य जीवन के बारे में सोलह प्रकार से शंका होता है ।
(अंक 43)

सतानु दशन् विथि विषय के बारे में बुद्धघोष रचित विशुद्धि मग्ग का मग्गा-मग्ग दशन् विशुद्धि निर्देश का पहला भाग से अध्ययन करना आवश्यक है । (अंक 44)

उदय व्यय ज्ञान

उदय का अर्थ है उत्पत्ति या उत्पन्न होना । व्यय का अर्थ है विनाश होना और पाँच स्कन्ध की उत्पत्ति होना, विनाश होना । अव बोध होने के ज्ञान को उदय व्यय ज्ञान कहते हैं ।

भंगानुपश्यना ज्ञान

उत्पत्ति को छोड़कर भंग स्वभाव को देखने के ज्ञान को भंगानु दर्शन ज्ञान से जाना जाता है । इसे भगानुपश्यना के नाम से भी जाना जाता है।
(अंक 46)

भयतोपट्ठान ज्ञान (भय ज्ञान)

भंग ज्ञान त्रैभूमिक धम्म स्वभाव भंग होने का अवबोध करने के ज्ञान को भयतोपट्ठान ज्ञान से जाना जाता है । (अंक 47)

आदिनवज्ञान

आदिनव ज्ञान त्रैभूमि धर्माता का दोष आदिनव देखने वाले ज्ञान को आदिनव ज्ञान कहते हैं । (अंक 48)

मोक्तुकाम्यता ज्ञान

काम, रूप-अरूप, त्रैभूमिक स्वभाव के निराशा से बचने के लिए प्रयास करने को मोक्तुकाम्यता ज्ञान कहते हैं । (अंक 49)

पटि संकानु पश्यना ज्ञान (प्रतिसंख्या ज्ञान)

मुक्त होने का उपाय बार-बार स्मरण करने से उत्पन्न होने वाले ज्ञान को पटिसंकानु ज्ञान के नाम से जाना जाता है । (अंक 50)

शंका उपेक्षा ज्ञान

दोषसहित संस्कार मध्यस्थ रूप से देखने से उत्पन्न होने वाले ज्ञान को शंका उपेक्षा ज्ञान से जाना जाता है । (अंक 51)

श्रद्धा

श्रद्धा के नाम से चित्त की चैतसिक प्रसन्नता को श्रद्धा के नाम से जाना जाता है । (अंक 52)

सच्चानु लोमिक ज्ञान

अनित्य आदि त्रिलक्षण विविध प्रकार से देखना, विदर्शना ज्ञान आठ प्रकार के मार्ग चित्त लक्षण से प्राप्ति होने वाला बोधि पाच्छिक धर्म के अनुरूप गोत्रभूज्ञान से पहले उत्पन्न होने वाला परिकर्म उपचार अनुलोम तीन कामावच्चर, महाकुशल, चित्त प्राप्त होने वाले ज्ञान को सच्चानु लोमिक ज्ञान के नाम से जाना जाता है । इस ज्ञान को सच्चानुलोम विपश्यना, शिखापत्त विपश्यना, शंका-उपेक्षा विपश्यना, उदान गामिनी विपश्यना के नाम से जाना जाता है । दुक्खानु दर्शन से प्रारम्भ होकर सत्यानुलोम ज्ञान तक नव विदर्शना के नाम से जाना जाता है । यह सभी प्रतिपक्ष ज्ञान दर्शन विशुद्धि का उप अंग है । (अंक 53)

गोत्र भू चित्त

पृथक् जन गोत्र भूज्ञान मिलने वाले सन्धि को (ज्ञान और स्रोतापन्न मार्ग के वीर्य का रास्ता) निर्वाण प्राप्ति के पहले अवबोध ज्ञान को गोत्रभूज्ञान कहते हैं । (अंक 54)

स्रोतापत्ति मार्ग

विपश्यना के माध्यम से अनित्य, दुख, अनात्म तीनों लक्षण का ध्यान भावना के माध्यम से दृढ़तापूर्वक देखने से एक स्थिति तक पहुँचने वाले चित्त को स्रोतापत्ति मार्ग चित्त के नाम से जाना जाता है । जैसे स्रोत का अर्थ है—आर्य सम्मादिट्ठी, सम्मासंकल्प आदि आठ अंगों से परिपूर्ण आर्य अष्टांगिक मार्ग है । सबसे पहले इसी स्तर में प्रवेश होना स्रोतापत्ति के नाम से जाना जाता है । (अंक 55)

स्रोतापत्ति फल - स्रोतापत्ति मार्ग, विपाक, चित्तस्रोत, उत्पत्ति फल के नाम से जाना जाता है । (अंक 56)

मग्ग पच्च्य वेक्षन, फल वेक्षन, पहिस पच्च्य वेक्षन, शेष क्लेश, पच्च्य वेक्षन । यह सभी प्रत्यय वेक्षन के नाम से जाना जाता है । (अंक 57)

प्रत्यक्ष ज्ञान

हमारा आगमन इसी मार्ग से हुआ है । उसी पुण्य के फल से हमें यह सब प्राप्त हुआ है । इसी तरह निर्वाण का अवबोध हुआ । क्लेश समाप्त हुआ । नष्ट किया हुआ क्लेश, बचे हुए क्लेश का अवलोकन करने से कामावच्चर ज्ञान के नाम से जाना जाता है । स्रोतापन्न, सकृदागामी, अनागामी फल उत्पन्न होने से कामावचर, महाकुशल अर्हत् प्राप्ति के बाद चित्त को मिलने वाला महाक्रिया यौवन से प्राप्त होता है । (अंक 58)

बार बार उत्पन्न होना दुःख है । इसलिए आत्मभाव नामक घर बनाने वाला तृष्णा के नाम से जाने जाना वाला राजगिर खोजते हुए सत्य प्रत्यक्ष करने के लिए ज्ञान चक्षु प्राप्त करने की उम्मीद से उस संसार नामक घर बनाने वाले को नहीं देखने से संसार में कई हजार बार पैदा होकर दिन-रात विचरण करता है ।

हे राजगिर ! अब हमने तुमको देख लिया है । आज के बाद भव संसार का घर बनाने का मौका तुमको नहीं मिलेगा । हमने क्लेश को पूर्ण रूप से नष्ट कर लिया है । अविद्या को समाप्त कर लिया । हमारा चित्त निर्वाण मार्ग की ओर चला गया । तृष्णा नष्ट करके अर्हत् पद प्राप्त किया है ।

अनेक जाति संसारं, सन्धाविसं अनिव्विसं ।
गहकारकं गवेसन्तो दुक्खा जाति पुनप्पुनं ॥
गहकारक दिद्वोसी, पुन गेहं न काहसि ।
सब्बा ते फासुका भग्गा, गहकूटं विसडिखतं ।
विसङ्खारगतं चित्तं, तण्हानं खयगज्झगा ॥

धम्मपद (जरावग्गो)

बुद्ध के प्रथम उपदेश के नाम से धम्मपद अट्ठकथा में उल्लेख मिलता है ।

अभिधम्म अट्ठकथ में भी ऐसा लिखा है अनेक जाति संसारं गाथा बुद्धत्व प्राप्ति के प्रथम चरण में देशना करने के कारण मनसा चिन्तिक देशना बुद्ध वचन के नाम से जाना जाता है । (अंक 59)

पटिच्चसमोत्पाद

अविद्या पच्चया संखारा
संखारा पच्चया विज्ञान
विज्ञान पच्चया नामरूप
नामरूप पच्चया सडायतन
सडायतन पच्चया स्पर्श
स्पर्श पच्चया वेदना
वेदना पच्चया तृष्णा
तृष्णा पच्चया उपादान
उपादान पच्चया भव
भव पच्चया जाति
जाति पच्चया जरामरण
शोक परिदेव

अनुलोम क्रम से अवलोकन करके इस धर्म स्वभाव के कारण ऐसा फल मिलता है । इस तरह हेतुक फल परम्परा का अवलोकन करना होता है ।

प्रतिलोम के रूप से चिन्तन मनन करना इस धर्मता को उत्पन्न होने से रोकने के कारण धर्म की उत्पत्ति रुक जाता है । इसके फलस्वरूप उत्पत्ति होने वाला कुछ धर्मता उत्पन्न नहीं होता है । हेतु निरुद्ध होने से फल निरुद्ध होता है । (अंक 60)

यदा हवे पातुभवन्ति धम्मा,
आतापिनो झायतो ब्राह्मणस्य ।
अथस्य कङ्खा वपयन्ति सव्वा,
यतो पजानाति सहेतु धम्मं ॥ (अंक 61)

दूसरे सप्ताह में अनिमिसलोचना करने के कारण देवताओं के मन में कुछ शंका पैदा हुआ । शंका दूर करने के लिए दूसरे सप्ताह के बाद अनिमिसलोचना करने के बाद आसमान में रहकर यमक प्रातिहार्य करके बोधिवृक्ष और वज्र आसन के बीच जमीन पर अवतरित होकर एक सप्ताह तक चंक्रमण किया है । इसका उल्लेख अभिधम्म अट्ठकथा में मिलता है। इस घटना का वर्णन विनयपिटक का महावग्ग अट्ठकथा में भी उल्लेख मिलता है । जिनालंकार टिका और महावग्ग अट्ठकथा दोनों एक समान है। दूसरे सप्ताह में चंक्रमण, तीसरे में अनिमिसलोचना, चौथे सप्ताह चक्रमण के समय मार दिव्य पुत्र आकर परिनिर्वाण होने की याचना किया है । इसका विवरण ललितविस्तर में मिलता है । (अंक 62)

अभिधर्म सप्त प्रकरण विचार-विमर्श किये हुए स्थान को स्वर्ण गृह के नाम से जाना जाता है । विनपपिटक का महावग्ग अट्ठकथा में देवताओं द्वारा निर्मित गृह होने के कारण रतनाघर के नाम से जाना जाता है । (अंक 63)

इससे पहले तीन सप्ताह तक बुद्ध के शरीर से षडवर्ण रश्मि नहीं निकला है । छः वर्ण रश्मि है—1) नीला—नील रंग, 2) पीत—पीला रंग, 3) लोहित—रक्तवर्ण रंग या रूधिर का रंग, 4) स्वेत—सफेद, 5) मानजेष्ट एवं 6) प्रभास्वर ।

बौद्ध समाज के लिए कोई निर्धारित झण्डा नहीं था । अमेरिकन सेनापति सर हेनरी ओल्काट व श्रीलंका के पूज्य बौद्ध भिक्षु हिक्डुवे श्री सुमंगल महास्थवीर महाबोधि सोसाइटी आफ इण्डिया के संस्थापक अनागारिक धर्मपाल तीनों ने मिलकर विश्व के बौद्ध समाज के लिए एक झण्डा बनाने की योजना तैयार किया । बहुत विचार विमर्श करने के बाद यह तय हुआ कि जो सिद्धार्थ बोधिसत्व बुद्धत्व प्राप्ति के बाद उनके शरीर से निकलते हुए रश्मि के आधार पर बौद्ध झण्डा (बुद्धिष्ट झण्डा) तैयार करने के लिए एकत्रित हुए । विचार-विमर्श करने के बाद निर्णय लिए कि छः वर्ण रश्मि से बौद्ध झण्डे को तैयार किया । अंजान भारतीय बौद्ध समाज के लोग उसको पञ्चशील झण्डा के नाम से पुकारते और जानते हैं जबकि यह गलत है । (अंक 64)

'यो ब्राह्मणो बाहितपापधम्मो,
निहुहुङ्को निक्कसावो यतन्तो ।
वेदन्तगू वुसितब्रह्मचारियो,
धम्मेन सो ब्रह्मवादं वदेय्य ।
यस्सुस्सदा नित्थि कुहिञ्चि लोके' ॥

निहुहुकं जाति से प्रसिद्ध एक ब्राह्मण हुहुं करके दूसरे लोगों को नीचा दिखाने की उसकी आदत थी । एक दिन पाँचवे सप्ताह में बुद्ध अजपाल वरगद वृक्ष के नीचे रहते समय वह बुद्ध को भी हुँ-हुँ बोलकर अपमान करते हुए, बोला ब्राह्मण कौन हैं ? ब्राह्मण का क्या धर्म है ? जैसे कई प्रश्न पूछा । उसके प्रश्न के उत्तर में बुद्ध ने उक्त गाथा कहा । (अंक 65)

'तपो कम्मा अपक्कम्मा ये न सुजन्ति मानवा ।
असुद्धो मञ्ञयसि सुद्धो, सुद्धि मग्गमपरधो' ॥

(अंक 66)

'अनत्त संहितं ञत्वा यं किञ्चि अमरं तपं ।
सव्वानहत्थवाहं होति षिया रित्तं च वम्मनि' ॥

(अंक 67)

'सील समाधि पञ्ञा मग्गं वोधाय भवायं ।
पत्तोस्मि परमं सुद्धि निहत्तोत्वमसि अन्तक' ॥

(अंक 68)

'संसरं दिघ मध्यानं वनं कत्वा सुशाशुभं।
अलं ते तेन पापिमं निहत्थो तमाईव अन्थक।
ये च कामेन वाचाय मनसा च सुसं उता।
न ते मार वसानुगा न ते मारस्य पच्चगु'॥

(अंक 69)

पाँचवे सप्ताह में मार दिव्य पुत्र के आने का विवरण जातक अट्ठकथा में उल्लेख किया गया है। यह घटना पाँचवे सप्ताह में नहीं बल्कि बुद्धत्व प्राप्ति के एक वर्ष बाद घटित होने का विवरण सूत्रपिटक का संयुक्त निकाय, संयुक्त अट्ठकथा को मिलाकर देखने से प्रत्यक्ष होता है। यह घटना जिनालंकार टीका में भी विस्तारपूर्वक उल्लेख किया हुआ है। यह घटना निम्न प्रकार से लिखा हुआ है—

मार दिव्यपुत्र का शोक एवं मार पुत्रियों की कोशिश

एक बार पुनः मार बुद्ध के पास आकर निम्न ढंग से बुद्ध और मार के बीच संवाद हुआ।

मार—शोक करने वाले बहुत चिन्तित रहते हैं, जैसे सौ हजार बार पराजित हो गया हो। क्या तुम बुद्ध प्रार्थना कर रहा है ?। दूसरों को चेहरा नहीं दिखाने लायक कोई गन्दा काम किया है ? क्यों लोगों के सामने जाकर मित्रवत बात नहीं कर रहा है ?

बुद्ध का उत्तर—शोक के सभी जड़ो को पूर्णरूप से विनाश किया है निर्दोष होने के कारण शोक नहीं करते हैं। प्रमाद, सभी तृष्णा नष्ट करके तृष्णारहित ध्यान में समय व्यतित कर रहा हूँ।

मार—अपने को स्वामित्व रखने वाला कोई चीज है। ऐसा बोलने वालों के लिए आप के दिल में कोई जगह है तो श्रमण व्यक्ति हमसे नहीं बचा है।

बुद्ध—कोई व्यक्ति यह चीज मेरा है, मेरा नहीं है कहता है मैं ऐसा कुछ भी नहीं हूँ। मैं कहाँ गया ? तुम नहीं जानते हो।

मार—यदि आप अमूर्तगामी, क्षेम मार्ग अवबोध किये होते तो इससे दूर होकर अकेले चलना चाहिए। दूसरों को उपदेश क्यों दे रहा है ?

बुद्ध—संसार से पार होने के इच्छुक व्यक्ति मार को स्थान न देकर निर्वाण के विषय में विचार करते हैं। ऐसे विचार करने वाले को हम स्कन्ध सन्तप्ति समाप्त करने के पश्चात् उत्पन्न होने वाले क्लेश से उपाधिरहित सुख अर्थात् निर्वाण के बारे में बताता हूँ।

मार—यदि गाँव या निगम गाँव के बगल में पानी का तालाब हो तो उस तालाब में कोई केकड़ा हो तो गाँव या निगम गाँव के स्त्री-पुरुष बच्चे तालाब के पास जाकर केकड़े को पानी से बाहर निकालते हैं। यदि केकड़ा डर के मारे गुस्से से पंजा मारने की कोशिश किया तो लोग उसे पत्थर-डण्डा से मार कर केकड़ा का पंजा तोड़ देगें। ऐसा होने से केकड़ा फिर पानी में जाने में असमर्थ होगा। वैसे जो हमने आपके साथ झगड़ा-झंझट किया आपने सबको उल्टा कर दिया। फिर हम कभी अब आप को कोई भी कभी देखने के लिए नहीं आऊँगा।

एक कौआ घी के रंग का एक पत्थर देखने के बाद यह सोचकर कि इसके अन्दर कुछ खाने योग्य अच्छी चीज होगी। उसको चारो ओर घुमाया बाद में समझा कि इसमें कुछ नहीं है। समझकर वापस उड़ गया। हम भी एक कौआ है जैसे सर्वज्ञ बुद्ध नाम से प्रसिद्ध महापर्वत के पास आकर उसकी कमियाँ खोजते-खोजते बहुत बार इच्छा भंग होकर यहाँ से जा रहा हूँ।

मार दिव्य पुत्र अपनी इच्छा पूर्ण नहीं होने के कारण बुद्ध के पास से निकलकर थोड़ी दूर जाकर जमीन पर चुपचाप से बैठकर शिर झुकाकर जमीन की तरफ देखते हुए समझ में नहीं आने के कारण लकड़ी का एक टुकड़ा लेकर जमीन पर लकीर खीचना शुरू कर दिया।

अपने पिता जी को खोजते हुए मार पुत्री ने अपने पिता जी के सामने आकर जमीन पर लकीर खिचते हुए पिताजी के पास आ गयी।

बोली—पिताजी आप क्यों दुःखी है ? किसके विषय में सोच रहे हैं ? यदि आपको किसी बात की चिन्ता हो तो जैसे जंगल का कोई हाथी या हथिनी पकड़कर ले आती हूँ। उसी तरह हम उस व्यक्ति को राग-रस्सी से बाँधकर ले आयेंगे। वह व्यक्ति आपके अधीन हो जायेगा।

मार ने कहा विश्व में अर्हत् सम्यक् सम्मबुद्ध किसी भी तरह के राग

से बाधा नहीं जा सकता है । वह सभी मार विषय से बाहर निकल गया। इसलिए मैं बहुत दु:खी हूँ ।

उसके बाद तृष्णा, राग व रति नामक तीन मार दिव्य पुत्रियाँ बुद्ध के पास जाकर कहाँ श्रमण गौतम हम तीनों आपकी परिचारिका होना चाहती है । बुद्ध कुछ भी न बोलकर नि:शब्द होकर समाधि में बैठे रहे ।

उसके बाद तीनों ने आपस में विचार-विमर्श किया कि पुरुषों का मन नानाविध है । हम लोग एक-एक करके अलग-अलग ढंग से कुमारी भेष लेकर सौ-सौ बुद्ध के पास जाना जरूरी है । उस तरह करने के बाद सौ-सौ सुन्दर कन्याओं ने कहा हम सभी आपकी परिचारिका होने को तैयार हैं तब भी बुद्ध कुछ न बोलकर नि:शब्द होकर समाधि में बने रहे । उसके बाद मार क्लेश पुत्रियाँ शादी होने के बावजूद सन्तान नहीं होने वाली तरुण स्त्री का भेष लेकर सौ के हिसाब से बुद्ध के पास जाकर कही हम सभी आपके पाद परिचारिका होना चाहती हूँ । बुद्ध तब भी नि:शब्द होकर समाधि मुद्रा में बैठे रहे । तीनों मार पुत्रियाँ आपस में विचार-विमर्श किया कि हमारे पिताजी की बात सत्य है । उसके पश्चात् मार पुत्रियाँ बुद्ध के पास जाकर ऐसा कहा। तृष्णा-तृष्णा शोक प्राप्त कर जंगल में चिन्तीत होता है । सौ हजार से पराजय होकर अब कुछ प्रार्थना करते हैं । दूसरों को चेहरा दिखाने के योग्य नहीं है । क्या जो मनुष्य समाज में बहुत बड़ा अपराध किया है ? जनता के बीच में क्यों नहीं जाता है ? क्या जनता के साथ कोई मित्रता करने का मन नहीं है ?

बुद्ध—हम अकेले ध्यान करते हुए प्रियसुख, क्लेश सेना नष्ट करके हितार्थ प्राप्ति, हृदय शान्ति अर्हत् सुख, अवबोध कर लिया है । इसलिए सभी लोगों के साथ मित्रता का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है ।

रति—यहाँ पूर्ण रूप से कोई विचरण में समय व्यतित करने वाला भिक्षु पचद्वारिक क्लेश महासमुद्र से पार किया है । काम, संज्ञा नष्ट करने के लिए कौन-सी ध्यान का उपयोग करता है । ऐसा कोई व्यक्ति नहीं मिला जो इससे पूर्ण रूप से बाहर हो ।

बुद्ध—चतुर्थक ध्यान से अवबोध किया हुआ, मन से युक्त शरीर अर्हत् फल, विमुक्ति से मुक्त चित्त, उत्तम व्यक्ति चतुसत्य जानकर वितर्करहित

चतुर्थक ध्यान करने वाले द्वेष नहीं करने वाले व्यक्ति को राग उत्पन्न नहीं होता है । ठीन मिद्द निवरण से मुक्त सभी क्लेश नष्ट करके अर्हत प्राप्त करते हैं । हमारे शासन में इसी तरह रहने वाले भिक्षु पचद्वारिक क्लेश सागर पार करके छ: मनोद्वारिक क्लेश काम, संज्ञा ध्यान के द्वारा दूर करके ध्यान वर्धन करके सभी काम से पूर्ण रूप से मुक्त हो जाता है ।

राग—हे श्रमण तृष्णा को पूर्णरूप से नष्ट किया हुआ है । श्रद्धावान् व्यक्ति इस श्रमण का अनुसरण करके क्लेश महासागर को पार करेगा । मृत्युराजा से बहुत से लोगों को मुक्त कराकर निर्वाण मार्ग से संसार से पार करा देगा । बहुत बड़ा खेद है ।

सर्वज्ञ बुद्ध सद्धर्म मार्ग से लोगों को निर्वाण प्राप्ति के लिए मार्ग दर्शन करता है । चतुरार्य सत्य सही तरह से अवबोध करने वाला व्यक्ति निर्वाण प्राप्त करता है । ऐसा करना क्या गलत है । बुद्ध के ऐसे बोलने से मार दिव्य पुत्रियाँ अपने पिता जी के पास गयी । मार दिव्य पुत्र ने देखा। तीनों पुत्रियाँ हमारे पास आ रही हैं । यह दृश्य देखने के बाद मार ने अपने मन में सोचा । मूर्ख कन्या-कमल के डण्डे से कोई पर्वत को हिला सकता है। कोई दाँत से लोहा चबा सकता है । बहुत बड़ा पत्थर सिर पर रखकर पाताल को खोज रहा है । अपने दिल के अन्दर बहुत बड़ा चोट लगा जैसे सन्तप्त हो बुद्ध से पराजित होकर आ रही है । ऐसा कहकर मार दिव्य पुत्र अपनी तीनों पुत्रियों के साथ अपने स्थान को चला गया । (अंक 70)

तपस्सु व बल्लुक पुस्करवती नगर के सात वाहक एक सेठ के दोनों पुत्र थे । दोनों पाँच सौ बैलगाड़ी में सामान लादकर व्यापार के लिए जाते समय बुद्धत्व के आठवे सप्ताह में पाकड़ पेड़ के नीचे बुद्ध बैठे थे । उसी जगह से गुजर रहे थे । नदी के सूखे हुए बालू में कुछ बैलगाड़ी धँस गये। जिसके कारण सभी पाँच सौ बैलगाड़ी एक स्थान पर रूक गयी । आस-पास के लोगों से जानकारी मिला कि कोई बहुत बड़ा तेजस्वी एक सन्यासी पाकड़ पेड़ के नीचे बैठकर ध्यान भावना करते हैं । वह सन्यासी बहुत बड़े शक्तिशाली है । उसके पास जाकर उस महासन्यासी को कुछ भोजन का संग्रह करने से तुम्हारी समस्या हल कर देगें । लोगों की बात सुनकर तपस्सु वल्लुक अपने लिए रास्ते में नास्ते के लिए जो तैयार कराके लाये थे । उसमें धान का लावा और मधु था जिससे बुद्ध के पास जाकर पूजा और प्रार्थना किये । पूजा और प्रार्थना के उपरान्त सभी पाँच सौ बैलगाड़ी यथा

स्थिति में आ गये । तपस्सु वल्लुक दोनों बहुत खुश हुए । दोनों बुद्ध का अभिवादन करते हुए कहा आप हम दोनों पर बहुत बड़ा उपकार किया है। इसलिए आपको याद करने के लिए और पूजा करने के लिए कुछ वस्तु दीजिए । बुद्ध अपने सिर पर हाथ रखकर थोड़ा-सा केश दोनों के हाथ में दिये । बैलगाड़ी धँसकर निकलना बुद्ध बोधिसत्व के समय पूरा किया हुआ दान परमिता का अधिष्ठान शक्ति है । तपस्सु व वल्लुक भी बुद्ध को आठवें सप्ताह के पहले दिन विशुद्ध मन से पूजा किया हुआ भोजन की शक्ति भी उसमें सम्मिलित है । तपस्सु व वल्लुक पाँच सौ बैलगाड़ी से सामान लेकर बर्मा तक जाने को था । दोनों मिलकर बुद्ध के केश की पूजा करने के लिए बर्मा की राजधानी वर्तमान यंगून कहलाता है । वही पर एक बहुत बड़ा स्तुप बनवा दिया । उस स्तूप को वर्तमान समय में श्रीयदगुण वैगोडा श्वेदगोन कहते हैं । उस समय सिंहल द्विप (श्रीलंका) और वर्मा के बीच बौद्ध धर्म के कारण सम्बन्ध मधुर थे । वर्मा के राजा से लेन-देन करके थोड़ा-सा केश धातु लेकर वर्तमान श्रीलंका में गिरीहाण्डु नामक चैत्य की स्थापना किया। (अंक 71)

'किच्छेन में अधिगतं, हलं दानि ककासितुं।
रागदोस परेतेहि, नायं धम्मो सुसम्वुधो ॥

पटिसोतगामिं, निपुणं, गम्भीरं दुद्दसं अणुं।
रागरत्ता न दक्खन्ति, तमो खन्धेन आवुटा'ति ॥

(अंक 72)

'पातुरहोसि मगधेसु पुब्बे।
धम्मो असुद्धो समलेहि चिन्तितो।
अपापुरेतं अमतस्य द्वारं।
सुणन्तु धम्मं विमलेनानुबुद्धं ॥

सेले यथा पब्बतमुद्धनिट्ठितो।
यथापि पस्से जनतं समन्ततो।
तथूपमं धम्ममयं सुमेध।
पासादमारुय्ह समन्तचक्खु।
सोकावतिण्णं जनतमपेतसोको।
अवेक्खस्सु जातिजराभिभूतं ॥

उट्ठेहि वीर विजितसङ्गाम ।
सत्थवाह अणण विचार लोके ।
देसस्सु भगवा धम्मं ।
अञ्ञातारो भविस्सन्ती'ति ।। (विनयमहावग्ग)

बुद्ध के समीप समय से पूर्णकाश्यप, निगण्ठ नाथ पुत्त, मक्खली गोशाल, अजीत केश कम्बल, पकुध कच्चान, संजय बिल्लठी पुत्त छः तिर्थक मगध देश में पैदा हुए है । इन्हीं छः शास्त्रु के धर्म प्रचार प्रसार के बीच सिद्धार्थ बोधिसत्व बुद्धत्व प्राप्त किये है । इसलिए कहा गया क्लेश सहित वाक्यों द्वारा शोध और देशना किया हुआ धर्म पहले मगध राज्य में प्रचलित हो गया । (अंक 73)

उहान्ति तञ्ञो, विपंग चित्तयो, अञ्ञं, पद परम् । (अंक 74)

बुद्ध का विचार जानने वाले एक देवता भी आलार कालाम और उद्दक रामपुत्त दोनों के देहान्त होने की खबर बुद्ध को दिया । उसके अनुसार उद्दक राम पुत्त का देहान्त हुए सात दिन बीत गया और आलारकालाम के देहान्त को पाँच दिन हो गया । उक्त कथन ह्वेसांग वार्ता के अन्तर्गत है । उद्दक रामपुत्त का देहान्त एक हफ्ते के पहले का खबर और आलार-कालाम के तीन दिन के पहले देहान्त होने की खबर ललित-विस्तर में मिलता है । (अंक 75)

जयश्री महाबोधि और गया के बीच में वर्तमान समय में दूरी बारह किमी. है । इसी दोनों के बीच उपक आजिवक से बुद्ध की मुलाकात होने का उल्लेख पेजन्य सूत ने पायासि सूत्र अट्ठकथा में उल्लेख किया है । उपक आजिवक वंगहार जनपद में जाकर एक आदिवासी इलाके में रहकर अर्थपाल नामक एक अनवर्त नाम लेकर गुपचुप से कुछ समय व्यतीत किया । अर्थपाल उसी पास गाँव वालों के साथ मनमुटाव होने के कारण बुद्ध के जेतवन में रहते समय वहाँ जाकर बुद्ध से प्रव्रज्या लेकर विदर्शना करके अनागामी पद प्राप्त किया है । (अंक 76)

बुद्ध का जवाब

'सब्बाभिभू सब्बविदूहमस्मि,
सब्बेसु धम्मेसु अनूपलित्तो ।

सब्बञ्ञहो तण्हाक्खये विमुत्तो,
सयं अभिञ्ञाय कमुद्दिसेय्यं' ॥

'न मे आचरियो अत्थि, सदिसो मे न विज्जति ।
सदेवकस्मिं लोकस्मिं, नत्थि में पटिपुग्गलो ॥

अहञ्हि अरहा लोके, अहं सत्था अनुत्तरो ।
एकोम्हि सम्मासम्बुद्धो, सीतिभूतोस्मि निब्बुतो ॥

धम्मचक्कं पवत्तेतुं, गच्छामि कासिनं पुरं ।
अन्धीभूतस्मिं लोकस्मिं, आहञ्छं अमतदुन्दुभि'न्ति ॥

मदिसा वे जिना होन्ति, पे पत्ता अनन्तजिनोति ।
जिता मे पाक का धम्मा, तस्माहमुपक जिनो'ति ॥

(विनयमहावग्ग), (अंक 77)

आर्य अष्टांगिक मार्ग—शील, समााधि, प्रज्ञा तीन अंगों से युक्त हैं—

शील → सम्यक् वचन
शील → सम्यक् कर्मान्त
शील → सम्यक् आजीविका

समाधि → सम्यक् व्यायाम
समाधि → सम्यक् जागरुकता (स्मृति)
समाधि → सम्यक् समाधि

प्रज्ञा → सम्यक् संकल्प
प्रज्ञा → सम्यक् दर्शन

(अंक 78)

दुःख सत्य

लौकिक चित्त इक्यासी (81) है । लोभ को छोड़कर केवल 51 (इक्वान) चैतसिक है । अट्ठाइस (28) रूप है । ये सभी दुःख सत्य के अन्तर्गत आता है । (अंक 79)

लोभ चैतसिक (तृष्णा) दुःख का कारण है । ये दुख समुदय सत्य के नाम से जाना जाता है । (अंक 80)

दुःख समुदय

दोनों से मुक्त होने के कारण निर्वाण, दुख निरोध सत्य है ।
(अंक 81)

निर्वाण प्राप्त करने के लिए मार्ग—आठ अंग मार्ग सत्य है ।
(अंक 82)

सत्य ज्ञान

यह दुःख है, यह दुःख का हेतु है, यह दुःख निरोध है, यह उसका मार्ग है । इन चार सत्यों को चार प्रकार से जानना सत्य ज्ञान है ।
(अंक 83)

इस प्रकार दुःख को विभाजित करके देखना आवश्यक है । दुःख का कारण (तृष्णा), समुदय को समाप्त करना जरुरी है । दुःखनिरोध (निर्वाण) को अपने ही ज्ञान से देखना जरूरी है । आर्य अष्टांगिक मार्ग वर्धन करना आवश्यक है । ऐसे चर्तुआर्य सत्य विषय (कृत्य) जानने वाले ज्ञान को कृत्य ज्ञान कहते हैं । (अंक 84)

इस कृत्य करने का अवबोध ज्ञान को कृत्य ज्ञान कहते हैं ।
(अंक 85)

इसी प्रकार एक-एक सत्य का सत्यज्ञान, कृतज्ञान, कृत्यज्ञान तीन प्रकार से, चार सत्य बारह आकार से जानने वाले ज्ञान को त्रिपरिवर्तक ज्ञानदर्शन कहते हैं । (अंक 86)

एक-एक सत्य ज्ञान का सत्यज्ञान, कृतज्ञान, कृत्यज्ञान आकार से तीन प्रकार का चार सत्य बारह आकार से देखने के ज्ञान को त्रिपरिवर्तक बारह आकार का स्वभाव को ज्ञानदर्शन कहलाता है । (अंक 87)

कोण्डिन्य तपस्वी प्रथम मार्गफल प्राप्त श्रावक है । अञ्ञा कोण्डिव्य अञ्ञासि कोण्डिन्य दोनों नाम से जाने जाते है । अज्ञात कोण्डिन्य जम्बू द्वीप के सभी संस्कृत ग्रन्थों में देखने को मिलता है । इसका अर्थ है अवबोध किया हुआ कोण्डिन्य । (अंक 88)

बुद्ध दाहिना हाथ आगे करके बोले भिक्षु इधर आ जाना । दुःख समाप्त करने के लिए ब्रह्मचर्य में सही ढंग से समय व्यतित करना इस शब्द से

किसी व्यक्ति को आमन्त्रित करने से ही प्रव्रज्जित भेष लेकर प्रव्रज्या उपसम्पदा दोनों के साथ सामने आ जाता है । यह उत्कृष्ट महाकार्य केवल बुद्ध ही कर सकता है । उसी को ये ही भिक्षु उपसम्पदा के नाम से जाना जाता है । (अंक 89)

सातागिरी नामक पर्वत का एक वासी है । हेमवत पर्वतवासी है इसलिए हेमवत अपने मित्र सातागिरी को देखने के लिए गया । दोनों भी यक्षादिपति है । (अंक 90)

सभी प्राणियों के लिए मैत्री चित्त अचल होने के कारण समचित्त होता है । (अंक 91)

मुनि गुण से युक्त

ध्यान नहीं छोड़ता है । त्रिविध, काय, दुष्चरित्र अपने चित्त में नहीं आने का विचार ध्यान युक्त होने से दुश्चरित्र से मुक्त हो जाता है । शील मात्र होने से भी दुश्चरित्र विरत से बहुत बलवान होता है । (अंक 92)

एनीजंग एक हिरण की प्रजाति है । उसका पैर पूर्णरूप से गोल एवं भरा हुआ होता है । (अंक 93)

अविद्या, तृष्णा, (दु:ख समुदय) मार का फंदा है । इसे मार फांस के नाम से जाना जाता है । (अंक 94)

चक्षु आदि अध्यात्मिक आयतन छ: रूप, रूप आदि बाह्य आयतन छ: के रूप में पुन: आयतन छ: होने के कारण स्पर्श, वेदना । इस तरह आयतन छ: होने से सत्व संस्कार से संसार पीड़ित होता है । (अंक 95)

सुधर्मत्व-धर्म स्वक्खात है, शान्त दृष्टिक है, अकालिक है इसलिए धर्म का सुगन्धत्व होता है । (हेमवत सूत्र)

'भगवा अतं गते च सूर्ये देशनं न निद्धिपरो' ।

सूरज डूबने के बाद भी धर्म चक्र सूत्र का देशना क्रम चलता रहा। सूत्तनिपात में हेमवत सूत्र अट्ठकथा है । जिसमें उल्लेख मिलता है । लेकिन मज्झिम निकाय पायासि सूत्र अट्ठकथा में 'सूर्ये धर्मानि येव देशना तिट्ठासी' बुद्ध अषाढ़ी पूर्णिमा के सन्ध्या समय में देशना प्रारम्भ किया है । (अंक 97)

चार लोगों को भिक्षाटन के लिए जाने के बाद बचे हुए तपस्वी को बुद्ध धर्म देशना करने का उल्लेख किसी-किसी ग्रन्थ में मिलता है ।
(अंक 98)

मौन व्रत

संयुक्त निकाय नालक सूत्र में मौन व्रत का विस्तार मिलता है । बाद में महाकच्चायन भिक्षु के नाम से प्रसिद्ध भिक्षु नालक भिक्षु होने का उल्लेख संस्कृत धर्म ग्रन्थों में मिलता है । लेकिन यह विवादस्पद है । मौनिय नालक भिक्षु दो दिन एक स्थान पर नहीं बैठा । जगह-जगह पर जाकर सात वर्ष तक जिन्दा रहा । मौन शिक्षा लेने के बाद कभी वापस नहीं आया ।
(मौन व्रत सूत्र) (अंक 99)

प्रारम्भ में कल्याणकारी धर्म देशना करते समय बुद्ध सबसे पहले शील-समाधि दोनों के साथ मध्य विदर्शना मार्ग है । विदर्शना मार्ग के साथ आखिरी में फल और निर्वाण के बारे में देशना करते थे । इसी तरह शील-समाधि संज्ञात कल्याण करना देशना के प्रारम्भ अन्तर्गत होने के कारण कल्याणकारी है । विदर्शना भावना के अन्तर्गत सोवान जैसे चार मार्ग विस्तार करने के कारण मध्यम भी कल्याण है । सोवान आदि फल चार निर्वाण आखिरी में देशना करने के कारण आखिरी भी कल्याण होता है । (मूल कल्याण, मध्य कल्याण और परियोसान कल्याण ।) (अंक 100)

भद्रवक—रूप से, मन से, सुन्दर होने के कारण भद्रके नाम से जाना जाता है । वर्ग बन्धन से मुक्त होने के कारण एक साथ रहने के कारण भद्रवग्गिय के नाम से जाना जाता है । यह सब कौशल राजा के सहोदर है । बुद्ध की धर्म देशना सुनने के बाद मार्गफल प्राप्ति किया लेकिन अर्हत् नहीं हुआ । (अंक 101)

बुद्ध कई बार अपने इर्दीशक्ति के माध्यम से प्रातिहार्य दिखाया है । एक दिन रात्रि को चार दिशाओं के सर्वश्रेष्ठ देवतागण धृतराष्ट्र, विरुढ़, विरूपक्ष व वैश्वन बुद्ध के पास आये । उस समय बुद्ध ने प्रातिहार्य किया है । एक दिन शक्रदेवेन्द्र धर्मदेशना सुनने आये । उस समय भी बुद्ध ने प्रातिहार्य किया । सहामपति महाब्रह्म भी बुद्ध के सामने आने से प्रातिहार्य किया है । एक बार नदी काश्यप बहुत बड़ा यज्ञ तैयार किया और बुद्ध

को आमन्त्रित किया कि आप भी उस यज्ञ में आइए । लेकिन दिल से अपने आप सोचा कि बुद्ध का इस यज्ञ में नहीं आने से अच्छा रहेगा । बुद्ध नदी काश्यप की चिन्ता से अवगत हो गये । बुद्ध भिक्षाटन के लिए उत्तर दिशा की ओर चले गये । यज्ञ में बुद्ध के नहीं आने से नदी काश्यप ने पूछा क्यों नहीं आये । बुद्ध उसका चित्त जानते थे । जानकर एक कफन मिलने से उसे धोने के लिए तालाब बनाने के लिए मिट्टी की खोदाई शुरू किया। कफन को पानी में भिगोकर पत्थर पर पटकने के लिए पत्थर निर्मित किया। तालाब में आते जाते समय पकड़ने के लिए पेड़ भी तैयार किया । कफन को सुखाने के लिए कफन से बड़ा एक पत्थर भी तैयार किया । एक दिन हिमालय से एक जामुन ले आकर नदी काश्यप को दिया । एक दिन नदी काश्यप तपस्वी अपने अनुयायियों के साथ अग्निशाला में अग्नि पूजा के लिए लकड़ी काटते समय परेशान हो रहे थे । बुद्ध उस स्थान पर जाकर बुद्धशक्ति (प्रातिहार्य) से पूरी लकड़ी कटवा दिये । एक दिन अग्निशाला में अग्नि जलाने के लिए कोशिश करने से भी अग्नि नहीं जलने के कारण बुद्ध एक ही क्षण में अग्निशाला का अग्नि जला दिये और एक दिन अग्निशाला का आग बुझाने के लिए बहुत कोशिश किया लेकिन अग्नि नहीं बुझा पाया, बुद्ध आकर आग को बुझा दिये । शीत ऋतु में पाँच सौ तपस्वी को आग तापने के लिए पाँच सौ कुण्ड बना दिया । बहुत भारी वर्षा के समय चारों ओर पानी बह रहा था, लेकिन बुद्ध के अधिष्ठान शक्ति से अपने पास पानी नहीं आया । इतना प्रातिहार्य देखने के बाद भी उरुवेला काश्यप ने कहा महाश्रमण महानुभाव सम्पन्न है लेकिन हम जैसा अर्हत् नहीं है । आखिरी में बुद्ध ने कहा उरुविला काश्यप न अर्हत् है, ना ही अर्हत् का मार्ग पद पर प्रवेश ही किया है । (अंक 102)

गया तीर्थ

गया घाट के किनारे गया के नाम से प्रसिद्ध राज ऋषियों द्वारा बसाया हुआ नगर को गय कहते हैं । गय के नाम से जाना जाने वाला यह शहर बाद में गया के नाम से प्रसिद्ध हो गया । गया शहर नेरञ्जना नदी के किनारे बसा हुआ है । गया का घाट गया तीर्थ के नाम से जाना जाता है । उस स्थान को ब्राह्मण समुदाय पाप धोने का स्थान के नाम से परिचय करवाता है । (अंक 103)

ताड़ वन में एक बरगद का बहुत बड़ा पेड़ था। उसी बरगद पेड़ के नीचे वहाँ के लोग देवता के लिए पूजा करते हैं। (अंक 104)

महानारद काश्यप जातक

इसी जातक कहानी में कर्म और कर्मफल दोनों के बारे में एक संवाद है। (अंक 105)

वैशाली लिच्छवी राजा, राजा बिम्बिसार के साथ शिल्प ग्रहण किये हुए है। बाद में बुद्ध को वैशाली पधारने के लिए निमन्त्रण देने वैशाली राजा बुद्ध के पास आया है। (अंक 106)

ये शक्र देवेन्द्र है। (अंक 107)

शक्र देवेन्द्र का बुद्ध गुण

'दन्तो दन्तेहि सह पुराणजटिलेहि, विप्पमुत्तो विप्पमुत्तेहि।
सिङ्गीनिक्खसवण्णो, राजगहं पाविसि भगवा॥

मुत्तो मुत्तेहि सह पुराणजटिलेहि, विप्पमुत्तो विप्पमुत्तेहि।
सिङ्गीनिक्खसवण्णो, राजगहं पाविसि भगवा'॥

'तिण्णो तिण्णेहि सह पुराणजटिलेहि।
विप्पमुत्तो विप्पमुत्तेहि।
सिङ्गीनिक्खसुवणो।
राजगहं पाविसि भगवा॥

सन्तो सन्तेहि सह पुराणजटिलेहि।
विप्पमुत्तो विप्पमुत्तेहि।
सिङ्गीनिक्खसवण्णो।
राजगहं पाविसि भगवा'॥

'दसवासो दसबलो, दसधम्मविदू दसभि चुपेतो।
सो दससतपरिवारो राजगहं, पाविसि भगवा'ति॥

'यो धीरो सब्बधि दन्तो, सुद्धो अप्पटिपुग्गलो।
अरहं सुगतो लोके, तस्साहं परिचारको'ति॥

(विनयपिटके महावग्ग) (अंक 108)

'अनुजानामि भिक्खवे अरामं'। (अंक 109)

तिरोकुड्ड सूत्र

सूत्र पिटक के खुद्दक पाठ तिरोकुड्ड सूत्र के अन्तर्गत है । (अंक 110)

अश्जीत भिक्षु की गाथा

'ये धम्मा हेतुप्पभवा,
वेसं हेतुं तथागतो आह ।
तेसञ्च यो निरोधो,
एवंवादी महासमणो 'ति ॥ (अंक 111)

सौ हजार

शुद्धिक पटिपदा, शुद्धिक शुन्यता, शून्य पटिपदा, शुद्धिक अप्पन्हित पटिपदा । इस पंच अंक के एक-एक में चतुष्कपंचक के हिसाब से गणित के अनुसार लोकोत्तर ध्यान क्रम दस है । ध्यान मार्ग, सतीपट्ठान, सम्यक प्रधान, इर्दीपाद, इन्द्रिय बल, बोध्यांग, सत्य, समध, विदर्शना, धर्मस्कन्ध, आयतन, धातु, आहार, स्पर्श, वेदना, संज्ञा, चेतना, चित्त । दस अंगों का फिर दस के हिसाब से मिश्रित आठ सौ अंग होता है । चन्द चित्तादि मिश्रित अंगों से नहीं होने वाला अभिश्रित दो सौ है । कुल मिलाकर नये एक हजार है । इसका सम्पूर्ण विवरण अभिधम्म पिटक के विभंग प्रकरण में सत्यविभंगा से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं । (अंक 112)

वेदना परिग्रह सूत्र ने मझिम निकाय, मझिम पन्नास में यह सूत्र अन्तर्गत होता है । (अंक 113)

'असारे सारमतिनो सारे चासारदस्सिन्नो ।
ते सारं नाधिगच्छान्ति मिच्छासङ्कप्पगोचरा' ॥

'सारञ्च सारतो ञत्वा असारञ्च असारतो ।
ते सारं अधिगच्छन्ति सम्मासङ्कप्पगोचरा' ॥

(धम्मपद, यमकवग्गो) (अंक 114)

केनिय और सेल दोनों ब्राह्मणों को जो बुद्ध धर्मदेशना किये वह सुत्तनिपात सेल सूत अट्ठकथा में विस्तार पूर्वक मिलता है । (अंक 115)

'अङ्गारिनो दानि दुमा भदन्ते,
फलेसिनो छदनं विप्पहाय ।

ते अच्चिमन्तोव पभासयन्ति,
समयो महावीर भागीरसानं' ॥(1)

'दुमानि फुल्लानि मनोरमानि,
समन्ततो सब्बदिसा पवन्ति।
पत्तं पहाय फलमाससाना,
कालो इतो पक्कमनाय वीर' ॥(2)

'नेतातिसीतं न पनातिउण्हं,
सुखा उतु अद्धनिया भदन्ते।
पस्सन्तु तं साकिया कोळिया च,
पच्छामुखं रोहिनियं तरन्तं' ॥(3)

'आसाय कसते खेत्तं, बीजं आसाय वप्पति।
आसाय वाणिजा यन्ति, समुद्दं धनहारका।
याय आसाय तिट्ठामि, सा मे आसा समिज्झतु' ॥(4)

'पुनप्पुनञ्चेव वपन्ति बीजं,
पुनप्पुनं वस्सति देवराजा।
पुनप्पुनं खेत्तं कसन्ति कस्सका,
पुनप्पुनं धञ्ञमुपेति रट्ठं' ॥(5)

'पुनप्पुन याचनका चरन्ति,
पुनप्पुनं दानपती ददन्ति।
पुनप्पुनं दानपती ददित्वा,
पुनप्पुनं सग्गमुपेन्ति ठानं ॥(6)
वीरो हवे सत्तयुगं पुनेति,
यस्मिं कुले जायति भूरिपञ्ञो।
मञ्ञामहं सक्कति देवदेवो,
तया हि जातो मुनि सच्चनामो' ॥(7)

'सुद्धोदनो नाम पिता महेसिनो,
बुद्धस्स माता पन मायनामा।
यो बोधिसत्तं परिहरिय कुच्छिना,
कायस्स भेदा तिदिवम्हि मोदयति ॥(8)

'सा गोतमी कालकता इतो चुता,
दिब्बेहि कामेहि समङ्गिभूता।
सा मोदति कामगुणेहि पञ्चहि,
परिवारिता देवगणेहि तेहि' ॥(9)

(अंक 116)

रोहिणी नदी

रोहिणी नदी शाक्य और कोलिय दोनों जनपदों के मध्य उत्तर से दक्षिण दिशा को बहती है । राजगृह रोहिणी नदी से पूरब में हैं । राजगृह से कपिलवस्तु को जाने वाले लोगों को रोहिणी नदी पार करना पड़ता है ।

(अंक 117)

अभिज्ञा पादक ध्यान

अभिज्ञा के लिए मार्ग, चौथा रूप ध्यान के माध्यम से यमक प्रातिहार्य किया है । इस तरह दिव्य मनुष्य चार दुर्गति कैसे है उसी तरह देखकर उन लोगों को भी देखने के लिए लोक विवरण नाम की एक-एक प्रातिहार्य भी किया है । आसमान में चक्रमण करते हुए धर्मदेशना किया । उस समय सारिपुत्र अरहत अपने दिव्य चक्षु से बुद्ध का यमक प्रातिहार्य देखने के बाद भिक्षु संघ के साथ कपिलवस्तु में आ गये और आकर बुद्ध से महाभिनिहार पारमी के बारे में पूछा । बुद्ध ने उसका उत्तर बुद्ध वंश व चर्यापिटक दोनों को विस्तार पूर्वक देशना की है । (बुद्ध वंश में बुद्ध का जीवन कहानी का पूरा विवरण मिलता है और चर्यापिटक में भी बुद्ध का जीवन कहानी विस्तार पूर्वक मिलता है ।) (अंक 118)

वेस्सन्तर जातक

यह एक जातक है । इसमें पालिचर्यापिटक विस्तारपूर्वक पढ़ने को मिलता है । (अंक 119)

'उत्तिट्ठे नप्पमज्जेय्य धम्मं सुचरितं चरे।
धम्मचारी सुखं सेति अस्मिं लोके परम्हि च' ॥

(धम्मपद, लोकवग्गो)

इस गाथा को संस्कृत भाषा तिब्बत धम्मपद में भी उल्लेख है ।

'उत्तिण्ठेत न प्रमाद्येत धर्मं सुचरितं चरेत।
धर्मचारी सुखं सेतेऽस्मिंल्लोके परत्र च'॥

(अंक 120)

'धम्म चरे सुचरितं न तं दुश्चरितं चरे।
धम्मचारी सुखं सेति अस्मिं लोके परम्हि च'॥

(धम्मपद, लोकवग्गो) (अंक 121)

चन्द किन्नर जातक

बोधिसत्व एक जन्म में चन्दकिन्नर के रूप में पैदा हुए । बहुत सुन्दर सुशोभित, मनमोहक होने के कारण राजा ब्रह्मदत्त उनके ऊपर तीर चला दिया। चन्द किन्नर देवताओं के सामने श्राप देते समय शक्रदेवेन्द्र आकर किन्नर के चोट को ठीक किया । (अंक 122)

मंगल धर्मदेशना

बुद्ध नन्द कुमार के महल में जाकर भोजन दान के पश्चात् अनुमोदना धर्मदेशना किया । धर्मदेशना का मुख्य पाठ किया । (अंक 123)

यशोधरा देवी शोक-व्याकुल होकर बुद्ध के पूरे शरीर का वर्णन करके कुछ गाथा तैयार किया । उसी गाथा को नरसिंह (नरसीह) गाथा के नाम से जाना जाता है । यह गाथा थेरी अपदान आदि ग्रन्थ में सविस्तारपूर्वक मिलता है । पूजावली ग्रन्थ में यशोधरा वस्तु में इसका वर्णन मिलता है । (अंक 124)

बुद्ध शासन में त्रिसरण सरणागत प्रव्रज्या सबसे पहले राहुल कुमार का हुआ है । (अंक 125)

धर्मपाल जातक कथा में पूर्व जन्म में बोधिसत्व का देहान्त होने का समाचार लेकर एक ब्राह्मण राजा शुद्धोदन के पास गया लेकिन यह बात बोधिसत्व के पिता ने विश्वास नहीं किया । विश्वास नहीं करने का कारण पूछा—उस परम्परा के लोग प्राणघात जैसे अकुशल कर्म नहीं करने के कारण अकाल मृत्यु नहीं होने का प्रमाण बोधिसत्व के पिताजी ने पेश किया । धर्मपाल जातक कथा में इसका पूरा विवरण नहीं मिलता है ।

(अंक 126)

'तन्च कम्मं कतं साधु यं कत्वा नानुतप्पति।
यस्स पतीतो सुमनो विपाकं पटिसेवति'॥

(अंक 127)

'मासे मासे कुसग्गेन बालो भुञ्जेथ भोजनं।
न सो सम्मतधम्मानं कलं अग्घति सोलसिं'॥

(धम्मपद, वालवग्गो) (अंक 128)

'मासे मासे कुसग्गेन वालो भुञ्जेथ भोजनं।
न सो सम्मतधम्मानं कलं अग्घति सोलसिं'॥

(धम्मपद, वालवग्गो) (अंक 129)

अनार्थपिण्डिक सेठ का दूसरा नाम सुदत्त है। अनाथ लोगों को भोजन कराने के कारण पश्चात् काल में सुदत्त अनाथपिण्डिक के नाम से जाना जाता है। (अंक 130)

सोलह कला

'सतं हत्थी सतं अस्सा, सतं अस्सतरीरथ।
सतं कञ्ञासहस्सानि, आमुक्कमणिमुण्डला।
एकस्स पदवीतिहारस्स, कलं नाग्घन्ति सोळसि'॥

(विनय चूलवग्ग सेनासनखन्दक)

इस तरह सुदत्त सेठ को यह वाक्य सिवक नामक पक्षी ने सुनाया।
(अंक 131)

'सब्बदा ववे सुखं सेति, ब्राह्मणो परिनिब्बुतो।
यो न लिम्पति कामेसु, सीतिभूतो निरूपधि'॥

'सब्बा आसत्तियो छेत्वा, विनेय्य हदये दरं।
उपसन्तो सुखं सेति, सन्तिं पप्पुय्य चेतसा'ति॥

(विनयपिटक चूलवग्ग)

आश्रित ग्रन्थ

1. सिद्धार्थ गौतम बुद्ध चरित (सिंहाली भाषा)
   - पूज्य वल्लगगोड आनन्द मैत्री नायक महाथेर
2. बुद्ध एण्ड हिष्ट्री इन इंग्लिश
   - नारद महाथेर
3. बुद्ध गुण नामावली (बुद्ध नाम विश्वकोष) (सिंहली भाषा)
   - ए०जी० श्री नाम भण्डार
4. द्विव्यावदान (सिंहली भाषा)
   - पूज्य अकुरटिए श्री अमरवंश नायक थेर
5. सुविसी महागुण
   - पूज्य रेरु काने चन्दविमल
6. पाँच सौ पचास जातक कहानियाँ
7. दिघनिकाथ सूत्रपिटक
8. माच्छिमनिकाय सूत्र पिटक
9. ललितविस्तर (अग्रेंजी संस्करण)
10. महावस्तु (संस्कृत एडिशन)
11. ओल्डपाथ ह्वाईटक्लाउड्स (इंग्लिश)
12. भिक्षु तिच्छनाथहंन्न
13. बुद्धचर्या - महापंडिण्डराहुल सांस्कृत्यान
14. भगवान् बुद्ध धम्मानन्द को शान्ति
15. बुद्ध और उनका धर्म
    - डॉ० वी०एम० अम्बेडकर

"Wherever the Buddha's teachings have flourished,

either in cities or countrysides,

people would gain inconceivable benefits.

The land and pepole would be enveloped in peace.

The sun and moon will shine clear and bright.

Wind and rain would appear accordingly,

and there will be no disasters.

Nations would be prosperous

and there would be no use for soldiers or weapons.

People would abide by morality and accord with laws.

They would be courteous and humble,

and everyone would be content without injustices.

There would be no thefts or violence.

The strong would not dominate the weak

and everyone would get their fair share."

~THE BUDDHA SPEAKS OF
THE INFINITE LIFE SUTRA OF
ADORNMENT, PURITY, EQUALITY
AND ENLIGHTENMENT OF
THE MAHAYANA SCHOOL~

DEDICATION OF MERIT

May the merit and virtue
accrued from this work
adorn Amitabha Buddha's Pure Land,
repay the four great kindnesses above,
and relieve the suffering of
those on the three paths below.
May those who see or hear of these efforts
generate Bodhi-mind,
spend their lives devoted to the Buddha Dharma,
and finally be reborn together in
the Land of Ultimate Bliss.
Homage to Amita Buddha!

NAMO AMITABHA

南無阿彌陀佛

【印度文 HINDI 文：悉達多太子成佛的故事】
【Prince Siddhartha to Tathagata Buddha】

財團法人佛陀教育基金會　印贈

台北市杭州南路一段五十五號十一樓

Printed and donated for free distribution by
The Corporate Body of the Buddha Educational Foundation
11F., 55, Sec. 1, Hang Chow South Road, Taipei, Taiwan, R.O.C.
Tel: 886-2-23951198 , Fax: 886-2-23913415
Email: overseas@budaedu.org
Website:http://www.budaedu.org
Mobile Web: m.budaedu.org

This book is strictly for free distribution, it is not to be sold.
यह पुस्तिका विनामूल्य वितरण के लिए है बिक्री के लिए नही ।

Printed in Taiwan
5,000 copies; September 2018
IN085-16122